ट वर्ग

ट्रक-सं., माल (सामग्री) बाही बड़का मोटर। अं. तत्सम

ट्रैक्टर-सं., हरजोतैवाला स्वचालित कल। अं. तत्सम

टक्कर-सं., एक दोसरा मे परस्पर संघर्ष सँ धक्का। मै.

टक्का-सं., मुद्रा, राजकीय विनिमय द्रव्य। टाका। मै.

टक्केकोस चलब-क्रि., मन्द चलब। गति मे तेजी नहि रहब। मै.

टकगर-विशे.,पूर्ण रुपैयावाला। मै.

टकटक-अव्यय, आँखि क' एकैठाँ स्थिर दृष्टि। मै.

टकटकी लागब-क्रि., एकैठाँ स्थिर नजरिसँ देखब। मै.

टकटोरब-क्रि., अन्हार मे ताकब (खोजब)। मै.

टकटोरिया देब-क्रि., अन्हार मे आँखि फाड़ि क' लकैले हाथक संचार करब। मै.

टक द' ताकब-क्रि., एकाएक नजरि खोलि क' ताकब। मै.

टकधुम टकधुम करब-क्रि., सदिखन बिगड़ल स्थिति मे रहैत कोनहुना निर्वाह करब। मै.

टकर टकर-अव्यय, अपलक दृष्टि। मै.

टकराएब-क्रि., मानसिक वा गतिविधि वा शरीरें परस्पर संघर्ष होएब। मै.

टक लगाएब-क्रि., प्रतीक्षा आ लोभ सँ दृष्टि गड़ौने रहब। मै.

टकसब-क्रि., हटि जाएब, कोनो प्रकारें चल जाएब। मै.

टकसाल-सं., मुद्रा (सिक्का, रुपैया) गढ़ैक स्थान। मै.

टकही-विशे., १. एक टाका सँ प्राप्त होम'वाला। २. (निन्दा मे) तुच्छ। मै.

टँकाइ-सं., १. तोसक आ शीरक टँकैक (दूर बैसबैले दूर दूर पर सीबैक) काज। २. टँकैक बोनि। मै.

टकाटुकुर-सं., रुपैया आ छोट सिक्का। रुपैया कैंचा। मै.

टँकान-सं., तोसक आदि सीबैक क्रम। मै.

टकार-सं., 'ट' अक्षर। मै.

टंकार-सं., 'ट' क ध्वनि मे गम्भीर धनुष आदिक शब्द। मै.

टँकारी-सं., टँकैवाला सूइआ। मै.

टकिया-विशे., एक टाकाक मुद्रा, एक टाका मे भेटल वस्तु। मै.

टंकी-सं., जलक सुरक्षित भंडार। अं तद्भव

टकुआ-सं., छेदैवाला लोहक पातर आ गोल पातर अस्त्र। मै.

टकुआतान-विशे., एकदम सोझ आकार भेल। टकुआ जकाँ तानल। मै.

टकुआरी-सं., १. काठ मे पातर छेद करैले लोहक टकुआ सँ मोट अस्त्र। २. टकुरी सँ पैघ सूतक पातर डोरी बँटैक साधन। मै.

टकुरी-सं., पातर छोट चकतीक छेद मे पातर काइम लगाकय तूर सँ सूत बहार करैक वस्तु। मै.

टकुरी काटब-क्रि., टकुरी नचा नचा कय सूत बहार करब। मै.

टकेसेर भाजा/टके सेर खाजा-लोकोक्ति, सस्त आ महग वस्तुक समाने भाओ। मै.

टखना-सं., टाङ आ पैरक जोड़ परक कील। हि. तत्सम

टगब-क्रि., दुर्बलता सँ अचेतन जकाँ खसैक स्थिति मे रहब। मै.

टग हलब-क्रि., अत्यन्त दुर्बलता सँ खसि पड़ैक स्थिति मे चलब। मै.

टगाएब-क्रि., उपेक्षा सँ झुका कय खसाएब। मै.

टगाह-विशे., स्वतः झुकि जाइक योग्य। मै.

टगौआ-विशे., टगबैवाला, टगि जाइवाला। मै.

टघड़न-सं., सूप सँ अन्न गड़का कय जमा कयल निःसार वस्तु तथा पृथक् कयल अन्न। विशे., अपनै टघड़ि जाइक योग्य। मै.

टघड़ब-क्रि., १. स्वतः गड़कि जाएब। २. स्वच्छन्द मनेँ जाएब। मै.

टघड़ाएब-क्रि., प्रयास सँ गड़का कय अलग करब। मै.

टघड़ाह-विशे., स्वतः गड़कि जाइवाला सब दिसक गोल। मै.

टघरौआ-विशे., स्वतः टघड़ैवाला। मै.

टघाड़-सं., पानि वा घी आदि वस्तुक टघड़ैक चिह्न। धारा रूपक प्रवाहक चिह्न। मै.

टघाड़ब-क्रि., धारा रूपें द्रव वस्तु कें प्रवाहित करब। मै.

टङगर-विशे., १. अपना टाङक भरें चलनिहार बच्चा। २. पैघ टाङवाला। मै.

टङटूटा-विशे., टूटल एक टाङवाला। मै.

टटघर-विशे., टाटक घर। मै.

टटोलब-क्रि., अदृश्य मे हाथक संचार कय ताकब। मै.

टटौ-विशे., टाटक घर। मै.

टन्टन-अव्यय, धातुक चोटक ध्वनि। मै.

टन्टनाएब-क्रि., टन्टन शब्द करब। मै.

टन्टना क'-अव्यय, उत्तेजनापूर्वक। मै.

टन्टमी-सं., रुपैया, मुद्रा। मै.

टनकब-क्रि., तरङ्गक रूपें दुखाएब। जाड़क समय मे आगि तपला सँ जाड़ सँ शान्ति पाएब। मै.

टनका-विशे., १. बातें बात मे बिगड़ि कय' रुसै-वाला। २. रौदीक द्वारें अत्यन्त सुखाएल। मै.

टनकाएब-क्रि., ताप द' क' शीतक आकुलता सँ बचाएब। मै.

टनकाह-विशे., कनेकै मे अधिक धाक सँ फूटैवाला माटिक बासन। मै.

टनकी-सं., १. माथ आदि टनकैक रोग। २. पक्षी विशेष। मै.

टनटन बाजब-क्रि., १. घंटा आदि धातुक शब्द होएब। तकरी सँ सोझाँ सोझी नै बजैक चाही तकरी सँ निधोख बाजब। मै.

टन द' रहब-क्रि., अचानक प्राण वियोग होएब। मै.

टन बाजब-क्रि., समाप्त भ' जाएब। मै.

टनमन-विशे., रोग मुक्ति सँ प्रसन्न। क्रमशः सबल। मै.

टनमनाएब-क्रि., रोग छूटैक क्रम होएब। मै.

टनाक द'-अव्यय, धातैक विकट शब्दक संग। मै.

टनाटन-अव्यय, देवाल घड़ी आ घड़ी घंटाक लगा-तार शब्द। मै.

टनाटनी-सं., कोनो वस्तुक दुलर्भता, महगी। मै.

टनाम्मनी-सं., भितरिया विगाड़ि। मै.

टप्पड़-सं., बैलगाड़ीक यात्रा मे रौद सँ बचैबे देल स्थायी रूपें झोपड़ी अकाँ छाया। मै.

टप्प द'-अव्यय, किछु विना सोचनै बुझनै बातक गप्प मे बाजि उठब। मै.

टप्पा-विशे., १. अवश्य रूपें कष्टें टपै योग्य। नुका छिपा कय सीमा टपैवाला। मै.

टप्पा टोइआ देब-क्रि., सूर्जक अभाव मे अन्हार मे थाहि थाहि चलब। मै.

टापू-सं., द्वीप दूर धरि पसरल पानि सँ घेरल स्थान। मै.

टप-सं., मोट कपड़ाक बनल चारू दिस सँ पर्दा करैक साधन। मै.

टपकनवीस-विशे., अनकर गप्पक विच्चहि मे अनावश्यक बाजि उठनिहार। मै.

टपकब-क्रि., १. अचानक उपस्थित होएब। २. धीरें धीरें ठोपें ठोपें चूअब। ३. बीचें मे बाजि उठब। मै.

टपका-विशे., शब्दे वा शरीरें विच्चहि मे टपकि पड़ैवाला। मै.

टपकाएब-क्रि., ठोपें ठोपें चुवाएब। बुन्दें बुन्दें खसाएब। मै.

टपकाह-विशे., १. विच्चहि मे टप द' बाजि उठै-वाला। २. ठोपें ठोपें चूबैत रहैवाला। मै.

टपकि पड़ब-क्रि., अनुचित अवसर पर अचानक उपस्थित भ' आएब। मै.

टपटप-अव्यय, अत्यन्त शीघ्रता सँ एक पर एक तुरन्त लगातार। मै.

टपटप करब-क्रि., बिन पुछनै अनेर रहस्यक बात बाजि उठब। मै.

टपदन-अव्यय, शीघ्रता सँ। मै.

टप द' बाजब-क्रि., १. बिन पुछनो प्रौढ़ लोकक गप्पक बीच मे बेन्नाक बाजि उठब। २. शीघ्रता सँ उत्तर देब। मै.

टपब-क्रि., १. पार उतरब। २. अचानक पहुँचब। मै.

टपाएब-क्रि., १. पार उतारब। २. (लाक्षणिक) चोराएब। मै.

टपाक सन-अव्यय, अतिशीघ्रता सँ। मै.

टपान टपब-क्रि., कष्ट उठा कय कठिनता सँ पार उतरब। मै.

टब-सं., गोल, नाम आ महींर पानि रखैक बासन। अं. तत्सम

टभकब-क्रि., १. अधिकता सँ आमद होएब। २. गाछ सँ फलक पाकि पाकि अधिक खसब। मै.

टभका-विशे., १. आनक गप मे अनेर बाजि उठै-बाला। सं., माछ बझबैक हेतु बाँसक कामि सँ बीनल गोल आ मामसल वस्तु। मै.

टभकि उठब-क्रि., अनावश्यक बेमेल बात बाजि उठब। मै.

टभटभ करब-क्रि., अपना सँ श्रेष्ठक गप मे नेन्ना भुटका सभक बीच बीच मे बाजि उठब। मै.

टभ द'-अव्यय, बिन पुछनें अपने सँ। मै.

टभनी-सं., जलाशय मे बन्सी पथैक हेतु जंगलरहित स्थान। मै.

टमटम-सं., बिना ओहारवाला घोड़ागाड़ी। मै.

टमाटर-सं., कनेक खटमधुर रस भरल भट्टासन छोट लत्ती मे फड़ैवाला व्यंजन। टोमैटो, अंग्रेजिया भाँटा। अं. तद्भव

टरकब-क्रि., चुपचाप ससकि देब। मै.

टरकाएब-क्रि., १. चुपचाप भगाएब। २. बरयाक दूर भ' जाएब। ३. बात केँ अनठा देब। मै.

टरकाओ-सं., टरकऔबक स्वभाव। मै.

टरकाहू-विशे., टरकऔबक प्रवृत्तिवाला। मै.

टरकी-सं., महुगा विशेष। मै.

टरटर-अव्यय, १. बेड़क ध्वनि। २. असम्बद्ध प्रलाप। मै.

टरटराएब-क्रि., निरन्तर ध्यान नै दै योग्य बात बजैत रहब। मै.

टरब-क्रि., बिचारपूर्वक हँटि जाएब। मै.

टरराएब-क्रि., निश्चिन्तता सँ व्यर्थ एम्हर ओम्हर घूमैत रहब। मै.

टलआएब-क्रि., दुर्बलता सँ अपनो देहक भार थम्है मे असमर्थ होएब। मै.

टल्लो देब-क्रि., कोनो बातक कहाबदी कय उचित समय पर धोखा देब। मै.

टल्लीबाजी-सं., कहल बात केँ बारम्बार अनठऽ-बैक प्रवृत्ति। मै.

टल्ली मारब-क्रि., बनियाक वस्तु तौलैक काल हाथक विशेष प्रकारक कला सँ कम तौलब। मै.

टलब-क्रि., अपन स्थान आ वचन सँ विचलित होएब। मै.

टलहा-सं., चानीक रंगक अत्यन्त अधम धातु। मै.

टलियाएब-क्रि., टाल जकाँ एकठाँ जमा करब। मै.

टसक-सं., मन मे गुम्हरैत तामस केँ व्यक्त करैबे समयक प्रतीक्षा। मै.

टसकब-क्रि., कनेको घुसकब, विचलित होएब। हिलब। मै.

टस टस करब-क्रि., दुष्टताक मनें विश्वहि मे विरोधी बात बजैक चञ्चलता करब। मै.

टँसब-क्रि., साँकरो बासन मे कोंचि कोंचि कय भरब। मै.

टसमस करब-क्रि., एको रत्ती हिलब, घसकब, चलब। मै.

टस सँ मस नै होएब-क्रि., कोनो प्रकारें अपने सँ विचलित नहि होएब। मै.

टहकब-क्रि., १. घाव पाकी मे भीतर सँ उपर चलैक रूपेँ वेदना होएब। २. जमल द्रव पदार्थक पघब। मै.

टहकाएब-क्रि., जमल तेल घी आदि द्रव केँ ताप लगा कय द्रवणशील करब। पघाएब। मै.

टह टह करब/टहटहाएब-क्रि., टहकैक कमे अधिक दर्द करब। मै.

टहटहा-विशे., (रौदक हेतु) अत्यन्त तेज बसातहीन समयक कड़ा रौद। प्रयोग-"अखन ऐ टहटहा रौद मे कत' चौबटइ ले जाइ छी।" मै.

टहल-सं., सेवा काज। मै.

टहल टिकोरा-सं., नियमपूर्वक श्रद्धा, आवेश आ स्नेह सँ सेवा, परिचर्य्या। मै.

टहलनी-विशे., घरक नियमित सेवा केनिहारि स्त्री। मै.

टहलब-क्रि., जाएब, उन्मुक्त मनें भ्रमण करब। मै.

टहल लगाएब-क्रि., द्वार द्वार पर जा कय अपन उपस्थिति जनाएब। मै.

टहलू-विशे., घरक नियमित सेवा केनिहार पुरुष। मै.

टहाटही-विशे., (इजोरियाक हेतु) स्वच्छ आकाश मे खूब प्रकाशमान चन्द्रमाक किरण। मै.

टहारम-सं., घरक भोजन आदि काजक प्रक्रिया। मै.

टहुकी-सं., गोलाएम चापट छोट बाँसक कामिक बीनल खेत सँ बहैत पानि सँ माछ छँवबैक साधन । मै.

टा

टाइँ टाइँ-अव्यय, १. टिटकी पक्षीक ध्वनि । २. एकाकीपनक हृदय मे उठल मूक हाहाकार । प्रयोग—"घर मे एकसरे टाइँ टाइँ करैत रहै छी ।" मै.

टाइँ टाइँ फिस-अव्यय, बालक भड़कताली बड़ क्रिया मे किछु नै । मै.

टाइँ टुइँ-अव्यय, धातुक बासनक उठा पैसा सँ उत्पन्न अप्रिय ध्वनि । मै.

टाइप-सं., १. बाँसक कामि सँ बीनल थोड़ पानि मे माछ मारैक हेतु उपर साँकर नीचाँ पसरल खुलता मुहवाला अस्त्र । २. अक्षर छापी करैक यन्त्र । ३. छटा । मै./अं. तत्सम

टाँक-सं., १. थोड़ दूरक सीयनि । २. गहना जोड़ैक हेतु आन द्रव्यक प्रयोग वा मिलान । मै.

टाँकनि-सं., सीयनि । मै.

टाँकब-क्रि., तूर भरल वस्तु के सीबिकय तूर जमाएब । मै.

टाँका-सं. १. कटल फूटल अंग कें सीबै मे देल सूत । २. टाँका करैवाला सूई । मै.

टाका-सं., रुपैया, बंगलादेशक मुद्रा । मै.

टाँकी-सं., गुप्ताङ्गक गुप्त रोग । मै.

टाकु-सं., देखू—"ठकुआ" । मै.

टाङ-सं., एड़ सँ उपर ठेहुना सँ नीचाक अंग । मै.

टाङब-क्रि., १. उपर लटका कय राखब । २. सुखाइले कपड़ा पसारब । मै.

टाढ़ी-सं., बैसला सन आकार एवं धारवाला कुड़हरि । मै.

टाट-सं., आवश्यकतानुसार नाम चाकर लड़पात आ बाती कर्चों सँ बनाओल अड़ पर्दा आ घेरन करैक साधन । मै.

टाँठ-विशे., सुखा कय अत्यन्त कठोर । मै.

टाटक-सं., अभिनयक द्वारा वास्तविकताक अन्हरजाली भ्रमक उत्पादन । मै.

टाटफड़क-सं., पर्दाक साधन आ माल जालक रोकैक उपाय । घेरन बेढ़न । मै.

टाटा !-अव्यय, विदा करैक आधुनिक शब्द । मै.

टाँटि-सं., झार, छोट छोट गाछ विशेष । मै.

टाटी-सं., शव (मुर्दा) लय जाइक चचरी । मै.

टाड़-सं., बाँहिक गहना विशेष । मै.

टान-सं., अप्राप्ति, महगी, दुर्लभता । मै.

टानब-क्रि., अनजानें मे चोरि सँ ल' जाएब । मै.

टाना-सं., खुट्टा कें तानि क' रखैवाला मोट तारक रस्सा । मै.

टानाटानी-सं., निरन्तर चलैवाला महगी । मै.

टाप-सं., दूर दूर पर नमहर डेग । मै.

टाप हनब-क्रि., घोड़ाक आ घोड़ा जकाँ नमहर डेग धरब । मै.

टापि-सं., देखू—"टाइप" । मै.

टापू-सं., चारूकात जलक बीच पैघ भूखण्ड । मै.

टाफी-सं., नेन्ना फुसलाओन मिठाइ । अं. तत्सम

टावर-सं., चौबट्टी परक घंटा घड़ी । अं. तत्सम

टाभनेबो-सं., फलक रूप मे खाइवाला बड़का नेबो । मै.

टामनगुड़िया-सं., लगक स्थान मे बराबरि जाइ अबैक क्रम । मै.

टायर-सं., यन्त्रवाला गाड़ीक पहियाक चक्कर मोट रबरक आवरण । मै.

टारनि-सं., कोनो वस्तु आ विषय कें अपना सँ तत्काल दूर रखैक चेष्टा । मै.

टारब-क्रि., कोनो वस्तु आ विषय कें दूर करब । हटाएब । तेजब । उपेक्षा करब । मै.

टारा-सं., घुटमुटार घैलक आकारक छोट माटिक तेल वा घी रखैक बड़का बासन । मै.

टारी-सं., टाराक आकारवाला छोट प्राचीन बासन । मै.

टाल-सं., १. धान आदिक डाँट कें सुव्यवस्थित आ सुरक्षित रखैले एकठाँ जमा कय उपर घर जकाँ चारू दिश ढाल बनाओल वस्तु । २. दूर धरि पसरल बाध । ३. ढेरक ढेर । मै.

टाल ठोकब-क्रि., परस्पर मल्ल युद्ध मे जाँघ पर उत्साहवर्द्धक चाटी मारि ध्वनि करब । मै.

टालब-क्रि., १. टाल बनाएब । २. दूर करब आ अन्ठाएब । मै.

टालमटोल-सं., अन्ठा देबाक यत्न । मै.

टाला-सं., माटिक भार उठयबाक मुसहर सभक डोरीक जाली बनाओल तराजूक तरछा जकाँ भार। मै.

टालि-सं., तौल मे कम करैले तराजू मे तौलैक काल हाथक कौशल। मै.

टालिगुल्ली खेलाएब-सं., १. किशोर सभक गुल्ली डन्टाक खेल। २. (लाक्षणिक) फुसला फुसला क' बात कें अन्दाजैक प्रयास करब। मै.

टालि मारब-क्रि., देखू—"टल्ली मारब"। मै.

टाली-सं., यन्त्र चालित गाड़ी मे जोड़ल सामग्री उगहैवाला उपर खुलता गाड़ी। ट्राली। अं. तद्भव

टाँस-विशे., १. जोर सँ कठोर ध्वनि। प्रयोग-"एकर बोली बड़ टाँस छै।" २. मिझराएल। मै.

टाहि-सं., एकाएक खूब जोरक चीत्कार। मै.

टाहि ब' उठब-क्रि., उच्च स्वरेँ करोट बाजि उठब। मै.

टाहि मारब-क्रि., जोर सँ अप्रिय शब्दें सोर करब। मै.

टि

टिक्कर-सं., खण्डक एक अंश। मै.

टिक्का-सं., कपाड़ पर सिन्दूर आदिक ठोप। मै.

टिक्की-सं., शिखाक केश। मै.

टिक्कू-विशे., पैंच टीकवाला। मै.

टिक-सं., विशेष प्रकारक चिह्न। अ. तत्सम

टिकट-सं., यात्रा आदि केर अधिकार पत्र। अं. तत्सम

टिकटिक करब-क्रि., घड़ी चलैक आ तार दैक यन्त्रक शब्द होएब। घोड़ा हँकैक शब्द होएब। मै.

टिकटिकाएब-क्रि., दीर्घ रोग सँ क्रमशः उबरैक लच्छन होएब। मै.

टिकटिकिया-सं., अशुभ सूचक गिरगिट। मै.

टिकब-क्रि., अड्डा पर अटकब। मै.

टिकरी-सं., कोनो वस्तुक छोट खण्ड। मै.

टिकहा-विशे., पैंच पैंच टीकवाला। मै.

टिकाउ-विशे., अधिक दिनधरि चम्हैवाला आ चलैवाला। मै.

टिकाएब-क्रि., अँटकाएब, रोकब, स्थान पर विश्राम कराएब। मै.

टिकान-सं., अड्डा, अँटकैक निश्चित स्थान। मै.

टिकासन-सं., टीकावाला स्थान, टीकक जड़ि। मै.

टिकिया-सं., कोनो वस्तुक गोल आ चापट छोट रूप। मै.

टिकुला-सं., आमक मंजर मे बहराएल फलक पहिल रूप। मै.

टिकुली-सं., सौन्दर्य आ सौहागक चिह्न रूपक चमकैवाला छोट कपाड़ मे सटै जोग विभिन्न आकारक पन्नी। मै.

टिकुलीहारिन-विशे., टिकुली आदि बेचैक फेरी करैवाली। पु॰ टिकुलहारा। मै.

टिकैत-विशे., विशेष चानन टीकावाला। मै.

टिकौआ-विशे., अधिक दिन धरि चम्हैवाला। मै.

टिटकारी-सं., फुसि जोश दैक बात। मै.

टिटकारी देब-क्रि., मिथ्या उत्साहक वचन सँ परतारब। मै.

टिटही-सं., टी टी बजैवाली चिड़िया। मै.

टिटियाएब-क्रि., कथूले आतुर भ' क' व्याकुल होइत रहब। मै.

टिटिम्भा-सं., कोनो काजक साधना सँ बेसी आडम्बरक प्रधानता। मै.

टिड्डी-सं., फसिलक नाश करैवाला उड़न वाजशलभ (पैंच कीड़ा)। मै.

टिनही-विशे., टीनक वासन, टीन (द्रव्य) क बनल वस्तु। मै.

टिप्पणी-सं., कोनो विषयक थोड़ शब्दें स्पष्टीकरण। सं. तत्सम

टिप्पनि-सं., जन्म कालक प्रत्येक वस्तुक विचार कय जीवन भरिक विस्तार सँ फलाफलक ज्ञान दैक लिखित पत्र। मै.

टिप्पा-विशे., १. फौड़ी टीप खेलाइक विशेष कौड़ी। २. अचक्के अलक्षित रूपें उठा क' ल' जाइवाला जानवर। मै.

टिप्पा-सं., औंठा छाप। मै.

टिप्पी-सं., ठेकान रखैले प्रतिदिनक गिनती लेल देल रेखा। मै.

टिपकब-क्रि., आनक कोनो विषयक चरचा मे अनेर बाजि उठब। मै.

टिपकाएब-क्रि., १. कोनो विषयक चरचा मे एक पक्षक बात कें ठोस करै मे सहायता करब। २. बीच बीच सँ कोनो वस्तु उठा लेब। मै.

टिपकाटिपकी-विशे., कत्ती कत्ती, गोटेक गोटेक । मै.

टिपकारी-सं., देवाल मे मसाला सँ ईंटा सभक गह बन्द करैक विधि । मै.

टिपकाह-विशे., आनक गप्पक बीच अनर्गलो व्यर्थ बाजि उठैवाला । मै.

टिपरहीट-सं., अपन भड़कतानी दैक हेतु बात बात मे आडम्बर । मै.

टिपाएब-क्रि., नोट कराएब । मै.

टिपिर टिपिर-अव्यय, गोटेक आधेक बुन्नी सँ निरन्तर वर्षा । मै.

टिपौड़िया-विशे., विशेषे वस्तुक प्रति आकांक्षा कयनिहार । मै.

टिपौटी-सं., अनुचित कार्यभारक हेतु व्यक्ति चुनाओ । मै.

टिपौड़ी-सं., विशेषे वस्तुक टा सेहन्ता । मै.

टिपौत-सं., जन्म कालक राशि नक्षत्र आदिक आधार पर कुण्डली । मै.

टिफिन-सं., थोड़ समय ले काजक बीच भोजन हेतु विश्राम । अं. तद्भव

टिमटिम करब-क्रि., बेसनक गप्पक बीच नेन्हा सभक बेर बेर बाजि उठब । मै.

टिमटिम करब/टिमटिमाएब-क्रि., क्षीण ज्योति सँ अस्तित्व मात्रक बोध करबैत रहब । मै.

टिरकब-क्रि., धोखा द' क' चलि देब । मै.

टिरकाएब-क्रि., अनका धोखा द' क' भगाएब । मै.

टिरकी देब-क्रि., धोखा दय नुका जाएब । मै.

टिरङ्गा-सं., अत्यन्त ऊँच स्थान । मै.

टिरबी-सं., परम्परागत गौरवक आग्रह । आनि । मै.

टिररी-विशे., क्षीणकाय नेरू (बच्छा बाछी) । मै.

टिरहुल्ला-सं., कृत्रिम अत्यन्त उँचगर स्थान । मै.

टिरिकबाजी-सं., दाओ लगबैक चेष्टा । अं. तद्भव

टिरीरीरी-अव्यय, भावनात्मक लोभीक असफलता मे निरादरक शब्द । मै.

टिरुआएब-क्रि., दुर्बलता सँ अधिक संचार मे असमर्थ बनब । मै.

टिरसब-क्रि., साधारणो बात मे मुह फुला लेब । मै.

टिरसाएब-क्रि., कोनो बातें तुरन्त बिगड़ाएब । मै.

टिरसाह-विशे., तुरन्त क्रुन्ध भेनिहार । स्त्री० टिरसाहि । मै.

टिल्हा-सं., शिखर जकाँ प्राकृतिक ऊँच भूमि । मै.

टी

टीक-सं., शिखा, हिन्दूक चिह्न । मै.

टीक काटब-क्रि., (लाक्षणिक) समाज मे अपमानित आ बहिष्कृत बनाएब । मै.

टीक ठाढ़ करब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त क्रोध वा भय करब । मै.

टीकर-सं., कोनो वस्तुक पैघ खण्ड । मै.

टीका--सं., १. कोनो विशेष गहन विषय कें सरलता सँ बुझबैक प्रक्रिया । २. कपाड़क ठोप । ३. चेचक आदि रोगक शल्य क्रिया द्वारा निरोधक औषधी । मै.

टीट-सं., भगाङ्कुर । योनिक अग्रभाग । स्त्रीक मूत्र मार्ग । मै.

टीन-सं., निम्न कोटिक मृदु धातुक अत्यन्त पातर पसरल वस्तु । मै.

टीप-सं., १. एक दू ठामक साधारण सीयनि । २. कोनो बातक पक्ष वा विपक्ष मे बिन पुछने दबैक प्रकृति । ३. कौड़ी टीपक खेल मे कौड़ी सँ कौड़ीक मारि । ४. औंठा छाप । ५. होटल मे बैराक देय । अं. तद्भव/मै.

टीप देब-क्रि., औंठा छाप देब । मै.

टीपब-क्रि., १. अनेर ककरो गप्पक बीच अपन मतक प्रकाश करब । २. कोनो विशेष बात कें कतौ लिखि राखब । (नोट क' लेब) मै.

टीपा-सं., कौड़ीक खेल मे कौड़ी सँ कौड़ी मारैक विधि । मै.

टीस-सं., १. आन्तरिक कोनो बातक व्यथा । २. खूब जोर सँ भीतरैं भीतर अंगक वेदना । मै.

टीसन-सं., रेलगाड़ी अँटकैक निश्चित स्थान । अं. तद्भव

टीसा टीसी-सं., दू व्यक्तिक बीच अन्तर्विरोध । मै.

टु

टुइआँ-विशे., अत्यन्त छोट जलपात्र । अनुपयोगी पात्र । मै.

टुकड़ा-विशे., पैघसन कोनो वस्तुक खण्ड । मै.

टुकनी-सं., छोट जलपात्र । मै.

टुकला-सं., बिना कोशा भेल आम। मै.

टुकुर टुकुर ताकब-क्रि., आँखि खोलने दृष्टि गड़ा क' ताकब। मै.

टुघरब-क्रि., नेना भुटकाक थाहि थाहि वा ठेहुन भरेँ चलब। मै.

टुघराएब-क्रि., १. गोल वस्तु केँ गड़काएब। २. धीरेँ धीरेँ छोट नेना केँ चलाएब। मै.

टुँघराएब-क्रि., नवजात मालक बच्चाक कनेक कनेक कोमल घास खाएब। मै.

टुट्टा-विशे., टूटल भ' क' रहैत वस्तु। मै.

टुट्टी-सं., व्यापार मे घाटा। मै.

टुट्टी लागब-क्रि., कीनि बेचै मे मूलधन मे घाटा। मै.

टुड्डी-सं., दाढ़ीवाला अंगक निचला भाग। मै.

टुङ्गी-सं., कोनो वस्तुक एकदम अगिला भाग। मै.

टुनकब-क्रि., बाते बात पर चुपचाप बिगड़ि जाएब। मै.

टुनकाएब-क्रि., बातेँ बातेँ क्रोध जगाएब। मै.

टुनकाह-विशे., १. साधारणो बात मे बिगड़ि जेनिहार। २. कनेको ठेहा लगने तुरन्त फूटैवाला बासन। मै.

टुनकी-सं., मरकी, महामारी। मै.

टुनटुनी-सं., टुनटुन बजैत रहैक प्रकृति। विद्यालय आदि मे एक स्वरेँ टुनटुन बजैक क्रम। मै.

टुनमुनियाँ-विशे., छोट आकारक वस्तु। मै.

टुना-विशे., छोट गाइक बच्चा। मै.

टुप ब'-अव्यय, नेना के जल्दी खाऔक परसारैवाला शब्द। मै.

टुरनी-सं., कोनो वस्तुक अन्तिम छोरक अगिला भाग। मै.

टुस्सा-सं., कोनो गाछ वृक्षक मूड़ी परक बहराइत प्रथम अंकुर। मै.

टुह टुह-विशे., १. फुटैक बहैक स्थिति मे पाकल। २. अपन रंग मे डग डग करैत। प्रयोग—"लाल टुह टुह भ' गेल छै।" मै.

टू

टूअर/टूगर-विशे., थोड़बे बैस मे माता पिताहीन नेना। मै.

टूटा-सं., एवम् विशे., खण्ड आ खण्डित। मै.

टूट-सं., भग्नता, भंग। मै.

टूटफाट करब-क्रि., ज्वर आ अधिक श्रम सँ अंग मे अधिक वेदना होएब। मै.

टूटब-क्रि., भंग होएब। सम्बन्धहीन होएब। मै.

टूटा टूटी-सं., आपसी बिगाड़ि। मै.

टूमटाम-सं., परक नियमित काजक संचार। हलचली। मै.

टूर खसब-क्रि., अधिक भुनाएल धानक सीस मे रौद लगला सँ सीसक टुकड़ा हैब। मै.

टूर खसाएब-क्रि., हरक फाड़ू लागल सिरौड़ मे गहूम आदिक बीयाक दाना खसाएब। मै.

टू सा !-अव्यय, आ चम्रा, आ चम्रा··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···बाउ मुह मे टू सा। मै.

टे

टें-अव्यय, १. चिलहोरिक बजैक ध्वनि। २. एहन कारो कटु शब्द। मै.

टेक-सं., १. प्रतिज्ञा। २. आत्म विश्वास। ३. आरम्भ। ४. अड़ना सीमा। मै.

टेकना-विशे., अड़ा कय रखैवाला। मै.

टेकब-क्रि., १. प्रारम्भ करब। २. भार उठौने रहब। ३. पकड़ब। ४. प्रतिज्ञा करब। ५. कसि कय बान्हब। मै.

टेक राखब-क्रि., (लाक्षणिक) प्रतिष्ठा बचाएब। मै.

टेका देब-क्रि., १. अवधि राखब। २. प्रतिज्ञा पूर्तिक अवधि देब। मै.

टेकान-विशे., कोनो वस्तु केँ टेकि रखैवाला वस्तु। टेकक निश्चित अवधि। मै.

टेङरा-सं., छोटका माछ विशेष। मै.

टेङारी-सं., छोट हथलग्गू कुड़हरिक आकारक अस्त्र। मै.

टेंट-सं., डाँर, डाँरक हरिरा। मै.

टेंटगर-विशे., (लाक्षणिक) डाँर मे रुपैया रखैवाला। मै.

टेटर-सं., १. अंगक चमड़ा मे भीतरेँ भीतर स्वभाव सँ वा चोट लगला सँ फूलि कय बनल कठोर गोल। २. (लाक्षणिक) दोष, ऐब। मै.

टेटराहा-विशे., प्राकृतिक टेटरवाला। दोष भरल। स्त्री० टेटराही। मै.

टेंटा-विशे., कत्तौ अनेर गुप्त आ मर्मौंक बात कें बाजि उठैवाला । मै.

टेंटाह-विशे., कठोर सत्य बाजि उठैवाला । मै.

टेंटियाएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) एकाकीपनक वा विवशताक अवसाद होएब । २. स्वार्थ सिद्धि नहि भेला सँ विखिन्न रहब । मै.

टेंटियाहा-विशे., कटु वचन सँ कत्तौ किछु बाजि देनिहार । स्त्री० टेंटियाही । मै.

टेंटी टापर-विशे., अत्यन्त छोट छोट । मै.

टें टें करब-क्रि., १. (लाक्षणिक आतुरता सँ दीनता देखाएब । २. सूगाक बोली । मै.

टेढ़-विशे., वक्र, कुटिल । मै.

टेढ़का-विशे., अनेक स्थान (अंग) मे मोड़वाला । मै.

टेढ़बकुची-विशे., अनेक स्थान मे पसरि मोड़ खाएब । मै.

टेढ़बराह-विशे., स्थान स्थान पर मोड़ नेने । मै.

टेढ़ी-सं., (लाक्षणिक) मिथ्या अभिमान, फूसि बड़प्पन । मै.

टेन-सं., रेलगाड़ी । अं. तद्भव

टेप-सं., बोली कें अभिलिखित (पुनः सुनय योग्य सुरक्षित) क' लैवाला यंत्र । फीता । अं. तत्सम

टेब-सं., निश्चित कालक काज । मै.

टेबब-क्रि., बहुत मे सँ कोनो वस्तु कें अपन मनोऽनुकूल बीछब । मै.

टेबा-सं., नियमित कार्य आ नियमित समयक तत्परता । मै.

टेबाएब-क्रि., अनका द्वारा कोनो वस्तु कें काजक योग्य निर्द्धारित करब । मै.

टें बाजब-क्रि., १. (लाक्षणिक) बेर पर अक्षमताक प्रदर्शन करब । २. मरि जाएब । मै.

टेबानी-सं., कोनो वस्तु कें गम्भीरता सँ टेबैक चेष्टा । मै.

टेबैक-विशे., टेबैवाला काज मे निपुण । मै.

टेम-सं., १. विधि विधान सँ आडम्बरक आग्रह आ विस्तार । २. समय । मै./अं. तद्भव

टेमबरब-क्रि., (लाक्षणिक) समाजक बीच अपन व्यवसायें ख्याति सँ गनती मे आएब । मै.

टेमरि-सं., निरर्थक परम्परा निबाहैक दुराग्रह । मै.

टेमी-सं., दीप क बाती । मै.

टेमी पाड़ब-क्रि., मधुश्रावणी मे नव कनियाँक ठेहुन पर टेमी देब । मै.

टेर-विशे., मगन, तल्लीन, गौरव भरल । मै.

टेरब-क्रि., बात कें विषय कें ध्यान दय धारणा करब । बात मानब । २. बँसुली बजबै मे मस्त होएब । ३. मगन भ' क' गाएब । मै.

टेर लगाएब-क्रि., लोक कें सजग करैले विशेष ध्वनि करब । मै.

टेरुआ-सं., चारि भुजाक बीच छेद मे पैसल डन्टीवाला सुतरी बँटैक लकड़ीक साधन विशेष । मै.

टेल्हु-विशे., अबोध बच्चा । मै.

टो

टोअब-क्रि., वचन आ आकृतिक भाव व्यञ्जना सँ भीतरी विचार अनैक चेष्टा करब । मै.

टोइआ-सं., १. घरक उपरक सब सँ उँचका भाग, माथी । २. सर्वोच्च शिखर । मै.

टोइआ करब-क्रि., अनदेखी मे छूबि छूबि डील (केशक सूक्ष्म कीड़ा) कें ताकि ताकि पकड़ब । मै.

टोक-सं., निश्चित परिधिक विस्तृत क्षेत्र । मै.

टोकगर-विशे., दूर धरि पसरल रहैवाला खेत वा खेत रखैवाला । मै.

टोक चाल-सं., परस्पर सम्बोधन आ बातचीत । मै.

टोकन-सं., १. रेलगाड़ीक टीसन सँ खूजैक प्रमाण । २. प्रतीक प्रमाण पत्र । अं. तत्सम

टोकना-सं., साँकर आ गोल उठल मुहवाला उतार पसरल पेनवाला बर्तन । मै.

टोकनि-सं., खेतक ढेपा फोड़ब । मै.

टोकब-क्रि., १. परस्पर सम्बोधन कय गप सप करब । २. कोदारि सँ खेतक जंगल साफ करब । मै.

टोकर-सं., दूर पसरल खेतक चकला । मै.

टोकरी-सं., पथोली सन बाँसक पैघ बासन । मै.

टोकाएब-क्रि., १. खेतक जंगल साफ कराएब । २. विग्रह हू गोटए मे बोलचाल कराएब । मै.

टोका चाली-सं., आपस मे बोलचाल । मै.

टोकार-सं., यथार्थताक ज्ञानक जागृति, चेतावनी, सतर्कता । एक विषयक ज्ञान सँ आन विषय मे सम्भावना कय नीक अधलाहक सचेत बुद्धि । मै.

टोकारब-सं., बहुत छोट नेन्ना कें टोकैक क्रम । मै.

टोइब-क्रि., नाम वस्तु कें छोट टुकड़ी मे खण्ड करब । मै.

टोटका-सं., तन्त्र मन्त्र आ विशेष मुद्राक प्रयोग । मै.

टोटमा-सं., विभिन्न मुद्रा आ तन्त्र मन्त्र सँ क्लेश हरैक चेष्टा । मै.

टोटल-सं., लेखा जोखाक जेर । अं. तत्सम

टोंटा-सं., कोनो वस्तु मे लागल फोंक धातुक डंटी । मै.

टोटा-सं., बाँस काठक छोट छोट खण्ड । मै.

टो टा करब-क्रि., अनदेख मे हाथ सँ छूबि छूबि वस्तु कें पकड़ि ओकर ज्ञान करब । मै.

टोंटी-सं., कोनो वस्तु मे (वर्तन मे) कोनो जलपात्र आदि मे पानि बहै लेल धातुक वर्तन मे लागल गोल नाम डन्टी । मै.

टोन-सं., बाँस काठक छोट छोट काटल टुकड़ा । मै.

टोनगर-विशे., अनेक छोट टुकड़ी करैं जोग वा कयल बाँस, काठ आ खेत । मै.

टोनटान-सं., छोट छोट टुकड़ी मे करैक प्रक्रिया । मै.

टोनब-क्रि., १. छोट छोट टुकड़ी कय काटब । २. बिगड़'बैक चेष्टा करब । मै.

टोना-सं., विशेष प्रक्रिया, मुद्रा आदि सँ शारीरिक, मानसिक उपद्रव शान्तिक विधि । मै.

टोना टापर-सं., तन्त्र मन्त्र मुद्रा आदि एवम् औषधक सम्मिलित प्रयोग । मै.

टोनामानी-सं., परस्पर बिगड़ा बिगड़ीबलि । मै.

टोनाह-विशे., कनेकें मे फूटि जाइवाला बासन । अनायास नष्ट होम'वाला वस्तु । बातें बातें खिसि-आइ वाला लोक । मै.

टोनी-सं., १. कुशियार आदि वस्तुक छोट टुकड़ी । २. मलाहक हाथ मे जाल बीनैक काल सूत लपेटल कमची । मै.

टोप-सं., पैघ आ सक्कत विदेशीय शिर पर रखैक वस्तु । मै.

टोपनि-सं., काँटी धँसबैवाला काँटी । मै.

टोप टहंकार-सं., पहिरै ओढ़ैक भड़कदार स्थिति । मै.

टोपर-सं., १. घाओक फूलैक परिधि (व्यास) । प्रयोग-"जाँघ पर गुर बेस टोपर बन्हने अछि ।" २. गोल बखारीक छप्पर । ३. अंगक जोड़ पर गरम रखैले कपड़ा आदिक लपेटन । मै.

टोपा-सं., हर जोतैं काल रौद सँ बचैक लेल चाकर गोल छायादार ताड़क पातक बनाओल माथ पर रखैक वस्तु । मै.

टोपी-सं., माथ पर रखै लेल आ संगहि कान झँपैक शिरस्त्राण वा माथक आवरण । मै.

टोबब-क्रि., हाथ सँ छूबि अपन मनें बीछब । परिख करब । अन्तःकरणक थाह लेब । मै.

टोबाइ-सं., हाथ सँ छूबि छूबि मनोऽनुकूल बूझैक चेष्टा । मै.

टोभ-सं., बिन जोतैवाला स्थान पर कत्तो कत्तो खुरपी सँ कोड़ि बीआ रोपैक प्रक्रिया । मै.

टोभब-क्रि., बिन जोतल स्थान मे खुरपी सँ कोड़ि भूमि मे बीआ देब । मै.

टोभुआ-विशे., टोभि कय उपजाओल अन्न । मै.

टोर-सं., स्थितिक आभास । मै.

टोरब-क्रि., लक्षणँ सँ स्थितिक आभास करब । मै.

टोल-सं., एक गामक भिन्न भिन्न समाजक खण्डें खण्डें बस्ती । मै.

टोला परोसा-सं., समाजक एक खण्ड आ घर लागल दोसर घरक समाज । मै.

टोली-सं., १. गामक आ समाजक एक अलङ । २. समूह, झुण्ड । मै.

टोस-सं., खेल मे समानता रहैक स्थिति मे कोनो मुद्रा (सिक्का) उछालि निश्चित चिह्नवाला पक्षक चिह्न उपर रहने हारैं जितैक निर्णय । अं. तद्भव

टोह-सं., कोनो व्यक्ति वा वस्तुक अस्तित्वक (रहैक) स्थानक ठेकान बुझैक प्रवृत्ति । मै.

टोहब-क्रि., चुप्पेंचाप पता लगाएब । ककरो अनु-संधान करब । मै.

टोह लेब-क्रि., गुप्त रूपें बातक भेद जानब । मै.

टोहियाएब-क्रि., विभिन्न रूपें विभिन्न स्थान मे विभिन्न लोकक द्वारा ककरो आ कोनो बातक पता लगाएब । मै.

टौ

टौआएब-क्रि., असहाय एवं अनुशासनहीन दशा मे लक्ष्य शून्य भ' क' एम्हर ओम्हर निरर्थक बौआएब । मै.

ठ

ठक्कर-सं., परस्पर जोर सँ ठह् शब्दक संग चोट । मै.

ठक-विशे., विश्वास द' क' अविश्वासक क्रिया कय लाभ उठौनिहार । मै.

ठकठकाएब-क्रि., साँप कुकूर आदि दुष्ट जीव कें भगवैक हेतु लाठी ठेंगा सँ भूमि पर जोर सँ ठक ठक शब्द करब । मै.

ठकठकिया-विशे., मछहर करैक क्रम मे जलाशयक माछ कें एक दिश करैक हेतु नाओ पर चढ़ि ठकठक करैत नाओ चलौनिहार । मै.

ठकठोइ-सं., निरन्तर लकड़ी पर चोट पड़ला सँ ठक ठक शब्दक क्रम । मै.

ठकठाएब-क्रि., ठकि ठकि समय टारब । मै.

ठकठुक-सं., निरन्तर कोनो वस्तु पर किछु ठोकैक कर्णकटु शब्द । मै.

ठकठेना-सं., कोनो काज मे निरर्थक विषय उठा कय बाधा दैक चेष्टा । मै.

ठक द'-अव्यय, सर्वात्मना, सम्पूर्ण रूपें । प्रयोग–"भरि राति ठक द' उपास पड़ि गेलौ ।" मै.

ठकदरुआ-विशे., धूर्त्त (ठट्ठा) परिहास करैक योग्य । मै.

ठकनिहार-विशे., वञ्चना करैवाला । मै.

ठकपनी-सं., ठकैक प्रकृति, ठकक आचरण । मै.

ठकब-क्रि., वञ्चना करब । मै.

ठकबक-सं., विवाह सँ पूर्व वरक परिछनि समयक माटिक मूर्ति आमू मे रखैक मिथिलाक विधि । मै.

ठकभार-सं., थोड़बैक वस्तु कें चङेरा भरि पसारि चङेरा भरल देखबै मात्र ले बनाओल भार । मै.

ठक मूड़ी लागब-क्रि., आश्चर्य, आकस्मिक दुःखद घटना आदि सँ ज्ञानशून्य होएब । मै.

ठकर ठकर-अव्यय, लगातार ठोकैक कटु शब्द । मै.

ठकहरबा-विशे., सतत् ठकैक प्रवृत्तिवाला । मै.

ठकहरुआ-विशे., ठकि ठकि ल' जाइवाला । मै.

ठकाइ-सं., ठकैक प्रकृति । विशे., ठकि दैवाला । मै.

ठकाएब-क्रि., अनका सँ ठकल जाएब । वञ्चित होएब । मै.

ठकान ठकब-क्रि., अचूक आ पैघ रूपे ठकि देब । मै.

ठकुआ-सं., साँच पर छापि क' पकाओल पकवान । मै.

ठकुआएब-क्रि., किंकर्तव्यविमूढ़ होएब । मै.

ठकुरपन-सं., धनिकत्वक दावी । मै.

ठकुराइन-विशे., प्रसिद्ध, श्रेष्ठ आ माननीय नारी । मै.

ठट्ठ-सं., विशेष लोकक आ वस्तुक अधिकता । मै.

ठट्ठर-सं., हड्डी मात्र, शरीरक मांसहीन अस्थि पञ्जर । मै.

ठट्ठा-सं., परिहासक विनोद । मै.

ठठनिहार-विशे., प्रतियोगिता वा कार्यभार वा दायित्व मे सक्षम आ दृढ़ रहनिहार । मै.

ठठब-क्रि., बराबरी करब, प्रतिद्वन्द्वी बनब, सोझा सोझी अड़ल रहब, भार थम्हब । मै.

ठठरी-सं., मृत अस्थि पञ्जर । मै.

ठठाइ-सं., १. ठठैक प्रकृति । २. सन्तोष सावना । मै.

ठठाएब-क्रि., उपासल रागब । मै.

ठठान-सं., सहबैक, भूखल रखैक प्रक्रिया । मै.

ठठेर ठठेरक बदला-सं., (लाक्षणिक) समान जाति आ वस्तु मे संघर्षक सफलता । मै.

ठठेरि-विशे., काँस पित्तरि धातु सभक व्यवसायी, हैहय क्षत्रिय । मै.

ठड़क्का-क्रि., उपर उठल कपल कपाड़क चानन । मै.

ठड़का-विशे., १. ठाढ़ जकाँ उपर मुहेँ उठल । २. ठाढ़ भेल अथवा कपल । मै.

ठड़कागर-विशे., करीन कें ठाढ़ जकाँ कयलै पर पानि लैक जोख करीन सँ पानि उपछैवाला कड़ा । मै.

ठड़गर-विशे., (लाक्षणिक) नमहर । मै.

ठड़ मनसा-विशे., १. ठाढ़ भय स्त्रीगण कें सतृष्ण देखनिहार । २. अधिक नाम पुरुष । मै.

ठड़ समाइ-सं., ठाढ़े ठाढ़ स्त्री कें सिन्दूर दय पत्नी सम्बन्ध करैक विधि । विधवा सँ अवैदिक पुनर्विवाहक प्रक्रिया । मै.

ठड़िया-सं., सागक एक प्रभेद । मै.

ठन्ठन गोपाल-सं., (लाक्षणिक) अन्नक अभावेँ उपास । मै.

ठनठनाएब-क्रि., क्रोध, क्षोभ आ अन्य वासना सँ सक्कत चञ्चल आ उत्तेजित होएब। मै.

ठन्डइ-सं., शीतल वस्तु मिलाओल पेय। मै.

ठन्ढक-सं., ठार, जाड़, पाला, शीत। मै.

ठन्ढा-विशे., शीतल, सर्द। मै.

ठन्ढाएब-क्रि., १. कोनो श्रमक अवधि मे विश्राम करब। २. तप्पत वस्तुक शीतल होएब। ३. (लाक्षणिक) शारीरिक मानसिक आ सामूहिक उत्तेजना एवं आवेगक शान्त होएब। मै.

ठन्ढा ठन्ढी-अव्यय, ठन्ढाक समय मे। मै.

ठन्ढी-सं., शीतलता, जाड़, पाला। मै.

ठनक-सं., १. कठोरता। २. स्पष्ट रोबदार शब्द। ३. गर्जन। मै.

ठनकब-क्रि., मेघक घोर गर्जन करब। मै.

ठनका-सं., वज्र, मेघक बिजली। मै.

ठनब-क्रि., एक दोसरा मे विरोधक उग्र रूप होएब। प्रयोग–"हुनू मे झगड़ा ठनि गेल।" मै.

ठनाक द' उठब-क्रि., १. माथ कपाड़ मे आकस्मिक चोट लागब। २. धातु वर्तनक खसला सँ आकस्मिक शब्द होएब। मै.

ठप्पा-सं., मोहर। मै.

ठप्पा पड़ब-क्रि., अभाव पड़ब। निष्क्रियता होएब। मै.

ठप पड़ब-क्रि., बन्न भय निष्क्रिय रहब। प्रयोग–"की कहू हमर काज ठप पड़ल अछि।" मै.

ठपकब-क्रि., रुकि जाएब, कोनो काजक गति अनायास रुकब। म.

ठपकाएब-क्रि., रोकब, ठप क' देब। मै.

ठमकब-क्रि., वेग तथा गतिक शान्त होएब। चलैत चलैत ठाढ़ भ' जाएब। मै.

ठमछोड़्-सं., अपन नियत स्थान सँ दोसर ठामक रहन सहन। मै.

ठमठमाएब-क्रि., १. दुविधा मे रुकि जाएब। २. कोनो वस्तुक वेग थम्हब। प्रयोग–"हुनका आइ ज्वरक वेग किछु ठमठमाएल छनि।" मै.

ठमाएब-क्रि., १. निश्चित कऽ राखब। २. कोनो वस्तुक भेटैक पता क' राखब। मै.

ठमौआ-विशे., निश्चित कय राखलवाला। मै.

ठर्रा-विशे., १. असिद्ध मदिरा। २. गाछ सँ चुआओल ताड़ी। मै.

ठरठीक-विशे., विधिपूर्वक निश्चित। मै.

ठरठेकान-सं., स्थितिक निश्चित पता। मै.

ठरद-सं., शब्द सहित मूतल मे नाकक श्वास प्रश्वास। मै.

ठरड़ पाड़ब-क्रि., जोर सँ कटु शब्द करैत सूतल मे श्वास फेंकब। मै.

ठरब-क्रि., अत्यन्त ठन्ढा होएब। मै.

ठरलहा-विशे., अत्यन्त ठन्ढा बनल। मै.

ठराएब-क्रि., शीतल बनाएब। जाड़ें विकल करब। मै.

ठरआ-विशे., बड़ी काल सँ ठन्ढाएल। मै.

ठस-विशे., १. दृढ़, सक्कत। २. कम रूपें तौलल। प्रयोग–"बनियाँ कने ठस जोखितँ छै।" मै.

ठसक-सं., १. निष्कलुष रूप। २. आत्म विश्वास। मै.

ठस ठसाएब-क्रि., सक्कत सँ पुनना लगा कय बैसाएब। कोंचि कोंचि कय भरि देब। मै.

ठँसब-क्रि., घोड़ आँट मे बेसी अँटबैक प्रयास करब। मै.

ठसाठस-अव्यय, तिल धरैक नहि स्थान रहैक स्थिति में भरब। मै.

ठहक्का-सं., जोर जोर हँसैक शब्द। मै.

ठहकब-क्रि., लोक कें सजग करैत ग्राम रक्षक आ कोतवालक अव्यक्त शब्द करब। मै.

ठहकी-सं., जोर सँ लोक कें सचेत करैक अव्यक्त शब्द। मै.

ठहठह करब-क्रि., अनका मूर्ख बनबैत अनेर बिन बातों हँसब आ हँसि हँसि नाचब। मै.

ठहरब-क्रि., टिकब, बिलमब, थम्हब, रुकब। मै.

ठहाठही-विशे., स्वच्छ आ सुन्दर इजोरिया। मै.

ठहार-सं., जोगाड़, धैर्य, आधार, आश्रय। मै.

ठही-सं., थाकनि, लगातार श्रमक द्वारें शरीरक पीड़ा। मै.

ठहुरी-सं., गाछ वृक्षक छोट छोट मूड़ीवाला अगिला डारि। मै.

ठा

ठाँ-सं., स्थान। मै.

ठाईं ठाईं-अव्यय, लकड़ी कटैक कटु शब्द। मै.

ठाओं-सं., आश्रय, स्थान, नीपल परिष्कृत भूमि। मै.

ठाकुर-सं., धनिक आ वैष्णव देवताक एवं विशेष जाति सभक उपाधि । मै.

ठाट-सं., भड़कताली, आडम्बर । मै.

ठाठ-सं., फूसक घरक बाँस काठ सँ बनल सबहत आधारवाला ढाँचा । मै.

ठाठनि-सं., घर ठठैक (बन्हैक) प्रक्रिया । मै.

ठाठब-क्रि., घर बनबै ले बाँस काठ साँचा बान्हब । मै.

ठाँठि-विशे., बिनु गर्भधारणवाली गै महींस । मै.

ठाढ़-सं., जाड़क अत्यधिक कनकनी । मै.

ठाढ़-विशे., पैर भरें उठल, (हि.) खड़ा स्त्री० ठाढ़ि । मै.

ठाढ़ि-सं., मूल सँ फुटल मुख्य शाखा, फेंग । मै.

ठाढ़े ठाढ़-अव्यय, ठाढ़े भेल मे जल्दी निपटऔवाला काज । मै.

ठाढ़ेलाल-विशे., पचीसीक खेल मे दश वा पचीसक गलती मे उठैवाला गोटी । मै.

ठान-सं., कोनो नियम चालू करैक निश्चय । मै.

ठानब-क्रि., कोनो नव नियम वा काज आरम्भ करब । मै.

ठाम-सं., स्थान । मै.

ठामठीम-अव्यय, कोनो कोनो स्थान मे । मै.

ठाँसब-क्रि., सकरतो छेद मे कोनो वस्तु सन्हियाएब, कड़ा कय बैसाएब । मै.

ठाँसा-सं., गहना गढ़ैक विभिन्न चित्रवाला सोनारक साँच । मै.

ठाँहि ब'-अव्यय, शब्दक संग कोनो वस्तु सँ मारक चोट । मै.

ठाँहि पठाँहि-अव्यय, मुहें पर स्पष्ट कहें । मै.

ठि

ठिकगर-विशे., उचित तन लगैवाला, नीक । मै.

ठिकरी-सं., तासक चोखुट चिह्नवाला पत्ती । मै.

ठिकरी करब-क्रि., लूटका जकाँ रुपैया फेंकब अर्थात् मोहहीन भ' क' खर्च करब । मै.

ठिकलहा-विशे., अनुमान द्वारा निश्चित कयलहा । मै.

ठिकाढ-विशे., अँटकर लगबैक जोग । मै.

ठिकाएब-क्रि., १. निशाना (लक्ष्य) साधब । अनुमान द्वारा अनका सँ परिमाण स्थिर कराएब । मै.

ठिकाठीक-विशे., सम तुल समय वा स्थितिवाला । प्रयोग–"ठिकाठीक दुपहरियै चलि देलियै ।" मै.

ठिकेदार -विशे., ठीका लय के काज कयनिहार । मै.

ठिकौती-विशे., निश्चित नियमक अनुसारवाला विषय । मै.

ठिकना-विशे., छोट कदिक लोक । (स्थान भेदें शब्द भेद) । हि. तद्भव

ठिठियाएब-क्रि., १. अनेर कोनो बात पर ठी ठी कय हँसैत रहब । २. कामवासनाक वेग भेने लिंगक सक्कत होएब । मै.

ठिठुआ-सं., हाथक कड़ा कयल मुड़वा आङुर । मै.

ठिठुरब-क्रि., जाड़ें हाथ पैरक शक्तिहीन भय निष्क्रिय होएब । मै.

ठिठुराहटि-सं., जाड़क ठिठुरबैक गुण । मै.

ठिन-सं., स्थान । प्रयोग–"ऐ ठिन ओइ ठिन ।" मै.

ठी

ठीआँ-सं., स्थान स्थान पर । प्रयोग–"ऐ ठीआँ नै रहि सकब ।" मै.

ठीक-विशे., प्रस्तुत, (तैयार) काज मे सक्षम (दुरुस्त) उचित, शुद्ध । मै.

ठीकठाक-विशे., प्रस्तुत, सुसज्जित, व्यवहार हेतु पूरा भेल । मै.

ठीकब-क्रि., अनुमान कय निश्चित करब । मै.

ठीकर-विशे., चौकठी रंगक तास । मै.

ठीका-सं., नियत राशि पर नियत काज पुरबैक विशेष काज । मै.

ठीका पट्टा-सं., १. ठीकाक हेतु कयल आलेख । २. ठीका कयके देल कार्यभार । मै.

ठीके-अव्यय, सरो । मै.

ठु

ठुएठक्के-अव्यय, एक मात्र केवल । मै.

ठुकुर ठुकुर-अव्यय, लगातार किछु ठोकैक मद्धिम ध्वनि । मै.

ठुड्डु-विशे., १. शाखा प्रशाखाहीन वृक्ष । २. (लाक्षणिक) निकटक सरसम्बन्धीरहित लोक । मै.

ठुड्डा-सं., १. पसारल औंठा आ तर्जनीक बराबरिक माप । २. शाखाहीन (विशे.) । मै.

ठुड्डी-सं., दाढ़ीवाला अंगक अगिला भाग । मै.

ठुड़री-विशे., १. अत्यन्त काँच लताम आदि फल। २. प्राचीन कालक लोहक छोट मुद्रा। मै.

ठुनकब-क्रि., बिना नोरक ठोह मारि मारि कानब। मै.

ठुनका-सं., मुट्ठी बान्हि मुहँ मुह हल्लुक चोट। मै.

ठुनकाएब-क्रि., ठुनका सँ मारब। मै.

ठुनकी-सं., लगातार ठुनकि कय कनैक क्रम। मै.

ठुन ठुन करब-क्रि., मनोनुकूल नहि होइक कारणेँ हरदम नेन्नाक ठुनकैक क्रम होएब। मै.

ठुमरी-सं., संगीतक राग आ लय विशेष। मै.

ठुमुक्का-सं., जोर सँ ठुनकाक मारि। मै.

ठुमुकचालि-विशे., ताल पर नर्त्तक समसन विराम दय के चलनिहार। मै.

ठुमुक ठुमुक-अव्यय, नाचक कलापूर्ण गति। मै.

ठुमुकन-सं., छोट छोट नेन्नाक चलैक क्रम। मै.

ठुमुकब-क्रि., छोट छोट नेन्नाक विशेष डेग हलब। मै.

ठुमुकी-सं., ताल ताल पर डेग देबाक प्रक्रिया। मै.

ठुसका-विशे., अधिक खाइवाला। मै.

ठुसना-विशे., १. अधिक खाइक प्रकृतिवाला। २. भीतर घुसाकय मुह मूनैक साधन। मै.

ठुसाएब-क्रि., अधिक खोआएब। मै.

ठुसान ठुसब-क्रि., मात्रा सँ अधिक खाएब तथा बासन भरब। मै.

ठू

ठूँठ-विशे., सर्वाङ्ग शून्य। मै.

ठूठ मूठ-विशे., लोक वेद आ सन्तानहीन। मै.

ठूठी-विशे., छोर्वैत छोर्वैत छोट बनल। मै.

ठूसब-क्रि., १. संकीर्ण स्थान मे अधिक भरब। २. उचित सँ वेशी खाएब। मै.

ठूसाठूसी-सं., महियों अँटैक स्थान मे अधिक भरैक प्रयास। बराबरि खाइत रहैक क्रम। मै.

ठे

ठेक-सं., १. ओर धरि पहुँचने अवरोध। २. ठेकना। ३. निशान। ४. अवधि। मै.

ठेकनगर-विशे., विषय बुझैवाला। बुझनूक। मै.

ठेकना-सं., कोनो वस्तुक अड़ैक हेतु देल साधन। मै.

ठेकनाएब-क्रि., १. मोन पाड़ब आ राखब। २. ठमाएब। मै.

ठेकनाह-विशे., विश्वास करैक योग्य। आस्था करैवाला। मै.

ठेकब-क्रि., १. ओरधरि पहुँचब। २. अगड़ब। ३. उपर वा नीचाँ लागि भ' जाएब। ४. खेत केँ समतल करैं लेल चौकी देक चेष्टा करब। ५. भीरब, पहुँचब। मै.

ठेकर-विशे., १. बर्जना कयलो पर अपन स्थान सँ टस सँ मस नहि भेनिहार। २. माथ मे उपरैं उपर लागल चोट। मै.

ठेका-सं., १. दिनक निश्चयपूर्वक अवधि। २. तबला सँ बोल बहार करैक अभ्यास। मै.

ठेकाएब-क्रि., पहुँचाएब। अन्तिम लक्ष्य धरि मिलाएब। मै.

ठेकान-सं., पता, स्थिरता, अनुसन्धान, स्मरण, निश्चित स्थान। मै.

ठेकानब-क्रि., सुमिरन करब, मोन पाड़ब, अभ्यास करब। मै.

ठेकाना-सं., पता, निश्चित स्थान। निश्चय। मै.

ठेंघुन-सं., टांग आ जाँघक जोड़। मै.

ठेंघुनियाँ-सं., ठेंघुन भरेँ चलैक चेष्टा। मै.

ठेंघुनियाँ देब–क्रि., शिशुक ठेंघुन भरेँ चलब। मै.

ठेङ्गना-विशे., किशोरावस्थाक नेन्ना। मै.

ठेङ्गा-सं., हाथ मे हल्लुक डंडा। मै.

ठेङ्गियाह-विशे., ठेङीवाला स्थान। मै.

ठेङ्गी-सं., धान पर चलैवाला जोंक। मै.

ठेंठ-विशे., १. अधम लोक। २. बाँझ। मै.

ठेंठपन-सं., नीचता। मै.

ठेंठा-विशे., कदोआ करैवाला छोट आकारक हर। मै.

ठेंठियाहा-विशे., हरदम ठें ठें क' क' हँसैवाला। मै.

ठेठी-विशे., अधिक छाटला सँ आ खिअएला सँ छोट भेल कोदारि, खुरपी आ कुड़हरि। मै.

ठेंड़ी-सं., समतलक बीच ऊँच स्थान। मै.

ठेपी-सं., सीसी बोतल आदि वस्तुक मुनना। मै.

ठेल-सं., पाछू दिश पकड़ि कय आगू दिशक गति। मै.

ठेलगाड़ी-विशे., पाछू दिश सँ धकेलि क' चलैवाला गाड़ी। मै.

ठेलब-क्रि., जोर सँ धकेलि कय गति देब। मै.

ठेलम ठेला-सं., लोकक घन भ' क' रहला सँ धकेलि धकेलि काज चलैक स्थिति । मै.

ठेला-सं., १. कठोर वस्तुक अधिक घर्षण सँ बनल सुखाएल मांस पिण्ड । २. ठेलि क' चलवैवाला दू पहियाक गाड़ी । ३. रेलक पटरी पर चलवैवाला चारि पहियाक गाड़ी । मै.

ठेलाएब-क्रि., अनका सँ जोर लगाकय आगू गति बढ़ाएब । मै.

ठेला ठेली-सं., १. एक दोसरा कें ठेलैक खेल । २. अधिक घन लोकक बिच ठेलि ठेलि कय आगू बढ़ैक स्थिति । मै.

ठेस-सं., पैर मे अचानक ठोस वस्तुक ठोकर । मै.

ठेसगर-विशे., ढीठ, निर्भीक । मै.

ठेसब-क्रि., १. चलैत चलैत पैर मे अचानक चोट-वाला ठोकर लागब । २. धोखा खाएब । मै.

ठेस लगने बुद्धि बढ़ए-लोकोक्ति, कोनो प्रकारक मानसिक वा शारीरिक धक्का लगलें चेत होइ छै । मै.

ठेसर-विशे., संकोचहीन आ बुद्धिमानी सँ निडर रहनिहार । मै.

ठेसी-सं., आत्मविश्वास सँ बनल दृढ़ता । मै.

ठेहकब-क्रि., पूर्वानुभवक कारणें संकित भय मनक चेतब । मै.

ठेहियाएब-क्रि., थाकि कय बैसब, हारब । श्रान्त होएब । मै.

ठेही-सं., १. लगातारक थाकनि सँ शारीरिक पीड़ा सँ उत्पन्न क्लेश । २. कठोर भूमिक ऊँचगर स्थान । मै.

ठो

ठोक-सं., कोनो ठोस पदार्थ कें कोनो वस्तुक भीतर वा छेद मे धँसवैक लेल तथा निःसार वा सुखाएल पदार्थक शब्द करैक लेल जोर सँ चोट । मै.

ठोक ठोका-सं., निरन्तर ठोकैक आवश्यक कम । मै.

ठोकड़ा-सं., १. चूरा कूटै मे उखरिक धान लाड़ैक चापट कयल फट्ठी । २. खेतक घास । मै.

ठोकना-सं., ठोकैक क्रिया ले सक्कत साधन । मै.

ठोकब-क्रि., कोनो वस्तु पर ऊपर सँ चोट देब । मै.

ठोकर-सं., १. कोनो ठामक आगूक अचानक जोर सँ कठिन वस्तुक आघात । संघर्ष सँ चोट । २. ताना मे कपड़ा बीनी घुरवैवाला बुट्ठ कातक लोहक कुम्भी । मै.

ठोकरा-सं., खेत मे मोट डाँटवाला छोट गाछ । मै.

ठोकराएब-क्रि., १. कोनो वस्तुक अगिला भाग सँ चोट करब । २. (लाक्षणिक) तिरस्कार सँ उपेक्षा करब । मै.

ठोकरा ओलब-क्रि., खेतक खड़पात आ जंगल बीछि क' स्वच्छ करब । मै.

ठोकलाहा-विशे., ठोकल गेलवाला । मै.

ठोकाइ-सं., १. ठोकैक बोनि । २. ठोकैक चलैवाला काज । ३. (लाक्षणिक) पिटाइ । मै.

ठोकाएब-क्रि., ठोकैक काज कराएब । मै.

ठोका जबाब-सं., बातक अपेक्षाहीन स्पष्ट उत्तर । मै.

ठोकान-सं., १. मारि पड़ैक क्रम । २. ठोकैक निरन्तर काज । मै.

ठोका नमस्कार-सं., (लाक्षणिक) तुरन्त ठाढ़े ठाढ़ विदा करब । मै.

ठोकुआ-विशे., ठोकि कय जोड़लवाला । मै.

ठोकैया-सं., ठोकैक कार्य । पिटैया । मै.

ठोड़ा-सं., कागजक बनल झोरी । मै.

ठोंठ-सं., कण्ठक अगिला भागक मोट नली । मै.

ठोंठ ठेकब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक व्यग्रता बढ़वैक कारणें भार बनल रहब । मै.

ठोंठ मोकब-क्रि., प्राण लैक विचारें कण्ठक आगूक भाग कें जोर सँ दबाएब । मै.

ठोंठ लागब-क्रि., सर्दीक प्रकोपें स्वर बहरयबा मे गल्टक संग व्यतिक्रम होएब । मै.

ठोंठियाएब-क्रि., ठोंठ पकड़ि अनादर सँ भगाएब । मै.

ठोप-सं., १. कपाड़ मे सुन्दर जकाँ चिह्न । २. पानिक वा कोनो द्रवक बिन्दु । मै.

ठोर-सं., निचला ओठ, अधर । मै.

ठोर बिजकब-क्रि., कनैक उपक्रम मे ठोरक स्पन्दन संग विकृत होएब । मै.

ठोरबिजका-विशे., ठोर बिजकवैक स्वभाववाला । मै.

ढोर बिजकाएब-क्रि., कनैक उपक्रम मे, आश्चर्य प्रकट करै मे आ घृणा व्यक्त करै मे ढोर कें संकुचित कय विकृत करब। मै.

ढोरबिदरा-विशे., ढोरक मोट रहैक द्वारें बिदरल ढोरवाला। स्त्री० ढोरबिदरी। मै.

ढोर रंगू-विशे., फसिलक पकैक क्रम मे कनेक कनेक आगू दिश रंग धयल दाना। मै.

ढोराह-विशे., अधिक फट फट अशिष्टता सँ बजनिहार। स्त्री० ढोराहि। मै.

ढोरी-सं., ढोरलागल निचला भाग। मै.

ढोला-विशे., मुहलगुआ दुलारू। मै.

ढोस-विशे., सक्कत, कठोर, दृढ़। मै.

ढोसगर-विशे., (उ.) मजबूत, कड़गर। सक्कत। मै.

ढोहर-सं., गाछक कुक्षी, गाछ मे बनल धेध। विशे., निराश। मै.

ढोहराएब-क्रि., एकाएक तमसाइत गरजि उठब। मै.

ढोहराह-विशे., अचानक तामसें गरजि उठैवाला। मै.

ढोहि ढोहि क' उठब-क्रि., बिगड़ैत तुरन्त गरजि उठब। मै.

ढोहि पाड़ब-क्रि., उच्च स्वरें कानि उठब। मै.

ढोहियाएब-क्रि., उच्च स्वरें तुरन्त तमसा उठब। मै.

ड

ड-सं., ट वर्गक तृतीय वर्ण। मै.

डंक-सं., मोस (मच्छर) आ डाँस आदि कीटक द्वारा जोर सँ सूंघ गड़ा कय शोणित चूसैक प्रक्रिया। मै.

डंक मारब-क्रि., सरीसृपक (साँप आदि जीवक) द्वारा चोट करब। मै.

डंकब-क्रि., विकट उत्कट गन्धक प्रकाश होएब। मै.

डकब-क्रि., १. कौआक बाजब। पक्षीक प्रभात काल मे प्रथम शब्द उचारब। २. उत्कट गन्ध सँ वातावरण दूषित होएब। मै.

डकरब-क्रि., बान्हल माल (गाय महिसिक) चरैक आतुरता सँ बाजब। मै.

डकसिसामी-सं., १. सामूहिक रूपें डाक करा कय कोनो वस्तु बेचैक प्रक्रिया। २. सामूहिक लोकक उपद्रव। मै.

डकहा-सं., माल जालक संक्रामक रोग विशेष। महामारी। मै.

डंका-सं., द्वन्द्व युद्धक वाद्य। मारूबाजा। मै.

डकाएब-क्रि., १. स्पष्ट रूपक उद्घोष कराएब। २. कोनो वस्तुक डाक कराएब। बजाएब। मै.

डकूहा-विशे., १. डाका दैवाला। २. (लाक्षणिक) अन्याय करैवाला। मै.

डकैती-सं., डाकूक द्वारा मारिक संग लूटि। मै.

डकौड़-विशे., बराबरि सबठाँ डाक बजनिहार। मै.

डखाना-सं., अंग्रेजी औषधालय। मै.

डगाड़-सं., केवल ढोलैक चोटवाला शब्द। मै.

डगड़ पड़ब-क्रि., ढोल मात्रक शब्द सँ विशेष घटनाक सामूहिक सूचना होएब। मै.

डगडग-विशे., कोमलता आ स्वच्छताक द्वारें भीतर सँ रसमय आभा भरल। मै.

डगडगी-सं., १. कोमलता, स्वच्छता आ सरसताक कारणें भीतर सँ छिटकैत सौन्दर्य। २. टीनक बनल विशेष प्रकारक छोट गंगाजल रखैक बासन। मै.

डगड़ा-सं., चारि ठुट्ठा पेटवाला गोलाकार बाँसक बीनल बासन। छोटका सूप। डगड़ी। मै.

डगडग-विशे., १. अपन स्थान पर स्थिर नहि भेल। २. (लाक्षणिक) विचलित रहैवाला। द्विविधा मे रहैत मनवाला। मै.

डगमगाएब-क्रि., अपन स्थान पर अस्थिर भेल डोलैत रहब। अव्यवस्थित मन होएब। मै.

डगमगाह-विशे., अस्थिर रहैवाला, डोलैवाला। मै.

डगमगी-सं., अस्थिरता, तारतम, विचलित रहैक स्थिति। मै.

डगर-सं., एकै स्थान मे लोकक आ मालक एकै स्थान मे चलैत रहैक कारणें बनल चिक्कन बाट। मै.

डगरना-सं., छोट छोट पातर ठाढ़िक टुकड़ी बाँसक छोट छोट खण्ड। मै.

डगाहर-सं., पाँती जोर सँ समूहक चलैक क्रम। मै.

डघड़-सं., बाट। मै.

डघड़ब-क्रि., जेर बान्हि कय चलब। मै.

डघड़ाएब-क्रि., १. जेर बनाकय एकै दिश हाँकब। २. सूप सँ मिझहर अन्न कें अलग अलग करब। मै.

डघडौनिहार-विशे., बाट धरा क' लव भेनिहार। सूप चलाकय अन्न गड़काकय अलग कयनिहार। मै.

डंटकी-सं., कोनो वस्तुक (अन्न फलक) नाल दण्ड, डाँट। मै.

डंटगर-विशे., १. सक्कत डाँटवाला। २. परिपूर्ण रूपक। ३. पूर्णतया नहि सुसिद्ध भात। मै.

डटनिहार-विशे., प्रतियोगी होइक योग्य। अड़िकय सोझाँ सोझी ठाढ़ भेनिहार। मै.

डटब-क्रि., सामना करब, सोझाँ सोझी अड़ब, निडर भेल रहब। मै.

डँटहा-विशे., डाँट (नाल) सँ भरल। मै.

डंटा-सं., बिन सजल ठेङा, कोनो रूपक दण्ड। मै.

डटाएब-क्रि., १. युद्धक हेतु दूनू पक्ष कें उत्साहित करब। २. तृप्ति सँ भोजन करब। मै.

डटा क'-अव्यय, अछिअरैं भोजन। मै.

डटान-सं., १. विरोध मे दूनू पक्षक सामना। २. उत्कृष्ट आ अधिकता भरल भोजन। ३. अत्यन्त क्रोधपूर्वक फटकार। मै.

डटुआ-सं., गहूमक सीस कतरल डाँट। मै.

डटौ-सं., अनेक फसिल आ साक्क मिलल जुलल डाँट। मै.

डँड़ेर-सं., देहक आधा पर विचला अंग। मै.

डन्टी-सं., कोनो गाछ वृक्षक पातर डारिक नाल। शाखा दण्ड। मै.

डन्ड-सं., अभियुक्त (अपराधी) क दोषक अनुसार आर्थिक वा शारीरिक दण्ड। सं. तद्भव

डन्ड प्रणाम देब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त विनीत भ' क' प्रार्थना करब। मै.

डन्डा-सं., छोट आकारक पातर सनक ठेङा। मै.

डन्डी-सं., तराजूक पलड़ा लटकबैवाला डन्डा। मै.

डन्ह-सं., आनक नीक देखि विरोधक भाव। मै.

डनिपन-सं., डानिक चालि। तन्त्रमन्त्र सँ मारण मोहन आदि प्रयोग करैक गुण। मै.

डनियाही-विशे., समाज में डानिक रूपें प्रसिद्ध स्त्री। मै.

डपट-सं., कठोर वचनक द्वारा क्रोधक प्रकाशन। मै.

डपटब-क्रि., कोनो बातक निषेध मे वा विरोध मे क्रोधें बात कहब। मै.

डपटान-सं., दवाईक रूपें कठोर शब्दक प्रयोग। मै.

डपोड़ शंख-विशे., बात बनबै मे बहुत किया मे किछु नहि कयनिहार। मै.

डपौ-सं., केराक पातक बीचवाला मोट डन्डा। निर्जीव। मै.

डपौड़-सं., केराक गाछक छाल निर्जीव। मै.

डफरा-सं., चाकर गोल एकै पीठ चाम सँ छारलवाला वाद्य विशेष। मै.

डब्बा-सं., रेलगाड़ी मे जोड़ल सवारीवाला खण्ड। मै.

डब्बूक-सं., रसदार तीमन परसैक गहींर पेट आ छोट डन्टावाला करौछ सन वासन। मै.

डबकब-क्रि., बहिकय पानिक एकठाँ जमा होएब। मै.

डबकाह-विशे., पानि जमा होइवाला स्थान। मै.

डबडब-क्रि., १. जल भरल मेघ। २. बाढ़ि भरल। ३. ज्वर आदि सँ चढ़ल आँखि। मै.

डबडबाएब-क्रि., मेघ मे जल भरि जाएब। आँखि मे नोर भरि आएब। मै.

डबडोहि-विशे., ज्ञान शून्य। किछु कहलो पर केवल मुह तकैत रहैवाला। मै.

डबरा-सं., पानि बसैवाला पैघ आ गहींर खत्ता। छोट डबरी। मै.

डबल-विशे., अनबूझ, जड़। प्रयोग-"अहूँ खूब डबल छी। एतबो नै बूझै छियै जे दू विजातीय पदार्थक मिलान सँ तेसर उत्पन्न भ जाइ छै।" मै.

डबाडब/डबोडब-विशे., चारू दिशाक कोर जल सँ भरल। मै.

डम्का-सं., १. वाद्य यन्त्र विशेष। २. चिमनी भट्ठा मे एक निश्चित ईंटाक लगाओ। मै.

डम्भा-विशे., पकैक स्थिति मे आएल फल। मै.

डमखोर-सं., केराक सजीव छाल। मै.

डमडम-अव्यय, ढोल आ डमरूक शब्द। मै.

डमरू-सं., एक हाथ मे लय के झोंक सँ डोलौला सँ बजैवाला महादेवक प्रसिद्ध वाद्य। मै.

डमरूमध्य-सं., समुद्रक भीतर धरि गेल दूनू छोर पर चाकर आ बीच मे पातर स्थल। मै.

डमहा-विशे., देखू—"डम्भा"। मै.

डमाडम-अव्यय, डंका चोट सँ उत्पन्न शब्द। मै.

डमाडोल-विशे., अनिश्चित। मै.

डर-सं., भय । मै.

डँरकस-सं., १. स्त्रीक डाँरक गहना । काञ्ची । २. पुरुषक धोती सँ अतिरिक्त पहिरन कसैक साधन । पेटी । मै.

डँरखिल-विशे., पातर डाँरवाला स्त्री वा पुरुष । मै.

डर पैसब-क्रि., सम्भावित बालक अनिष्ट सोचि कय डर होएब । आदङ्क होएब । मै.

डरपोँक-विशे., अधिक डर रखैवाला । मै.

डरब-क्रि., भयभीत होएब । मै.

डँरबासा-सं., डाँरवाला अंग । मै.

डराएब-क्रि., डर देब, डर पैसाएब । मै.

डरौडोरि-सं., सदा धारण करैवाला । डाँरक बन्धन । मै.

डरीर-सं., अक्षरक पाँती सोझ करैक रेखा । मै.

डल-सं., निर्भयतापूर्वक आचरण । प्रयोग–"हिनक डल देखियौनि जे धड़धड़ाएल सोझे घर ढुकि गेला।" मै.

डलवाह-विशे., भगता (भाओ खेलाइवाला) क सग गोहारि ले आएल डाली कें कमबद्ध राखि सुअबै-वाला सहायक । मै.

डलिया-सं., चाकर आ गोल बाँसक बीनल फूल आदि रखैक बासन । मै.

डँसब-क्रि., मधुमाछी आदिक बीन्हब, बीछ आ बिच्छू आदि जीवक डंक मारब, साँप एहन जीवक दाँत सँ काटब । मै.

डहकन-सं., मिथिलाक सभ्यताक अनुसार वैवाहिक सम्बन्धक नव कुटुम्ब कें गीतबद्ध मधुर गारि । मै.

डहब-क्रि., जरब, दग्ध होएब । मै.

डहरगोँड़ि/डहर गेँड़-विशे., वचन आ कर्मक अव्य-वस्थित । तुच्छ, अधम । मै.

डहरा-सं., सुगरक बच्चा । मै.

ढा

ढाइ-विशे., उपर सँ प्रशंसा आ भीतर सँ अधलाहक कामना कयनिहार । मै.

ढाई ढाई-सं., खाद्यक हेतु आतुरताक सतत् प्रद-र्शन । मै.

ढाइन-विशे., घृणित तन्त्र साधना कय लोकक अध-लाह आ हत्याधरि कय दैक सिद्धि करैवाली । मै.

ढाउँ ढाउँ-सं., सदिखन खयबैक चेष्टा । मै.

डाक्टर-विशे., चिकित्सक । सिद्ध विद्वान् । अं. तत्सम

डाक-सं., १. डकैती । २. शासन द्वारा बेरोक टोक पत्र एवं मुद्राक नियत स्थानक यातायात । ३. खूब जोर सँ सोर करैक चेष्टा । ४. कौआक कटु स्वरक शब्द । ५. प्रसिद्ध अनपढ़ पण्डित । ६. कीनब बेचब मे अधिक सँ अधिक दामक बात । मै.

डाकखाना-सं., पत्रालय, डाक द्वारा आएल पत्र आदिक व्यवस्थाक घर । पोस्ट आफिस । मै.

डाकगाड़ी-सं., मार्ग मे कतौ नै अँटकैवाला रेल आदि यान । मै.

डाकनि/डाकनि देब-सं./क्रि., १. जोर सँ सोर करब । २. साँपकट्टाक कान मे जोर सँ साँपक विष झारैक लेल मन्त्र पाठ करब । मै.

डाक पड़ब-क्रि., अप्रत्याशित अनहोनी शोकक घटना होएब । मै.

डाकब-क्रि., १. बढ़ि क' दाम बाजब । २. जोर सँ सोर करब । ३. भविष्यक निश्चयात्मक घोषणा करब । मै.

डाकबाबू-विशे., डाकघरक प्रधान कर्मचारी । मै.

डाका-सं., हत्या एवं लूटि सँ धनक हरण । मै.

डाका पड़ब-क्रि., १. दस्युक द्वारा हत्या आ धनक लूटि करब । २. (लाक्षणिक) अनर्थ होएब । मै.

डाकिया-विशे., डाक लय गेनिहार कर्मचारी । मै.

डाकिनि डाकिनी-अव्यय, अदृश्य भौतिक घातक शक्ति । मै.

डाकू-विशे., हत्या आ लूटि सँ धनक हरण कय-निहार । मै.

डाखाना-सं., डाक्टरक चिकित्सालय । मै.

ढाड-सं., दण्ड, ठेङ्गाक प्रहार । प्रयोग–"दैवक ढाड सभक उपर ।" मै.

ढाढर-विशे., हड्डी मात्र बाँचलवाला मांसहीन दुर्बल शरीर । मै.

ढाँट-सं., १. गाछ वृक्षक मुख्य शाखा दण्ड । २. फसिलक नाल । ३. उच्च स्वरेँ खिसियाएब । मै.

ढाँटनि-सं., जोर सँ क्रोधक शब्दे निषेध । मै.

डाँटब-क्रि., खिसियाइत दबाड़ब । गर्जनसहित तर्जन करब । मै.

डाँटी-सं., अन्नक दाना झारल डाँट, नाल । मै.

डाँटू-सं., गहूमक सीस कतरल डाँट । मै.

डाँड़-सं., १. आर्थिक दण्ड । २. उचित सँ बेसी कोनो वस्तुक दाम । मै.

डाँड़ब-क्रि., १. आर्थिक दण्ड करब । २. उचित सँ बेसी मूल्य लेब । मै.

डाँड़बान्ह-सं., दण्ड करैक कड़ा व्यवस्था । मै.

डाँड़रि-सं., १. पतझड़ । २. केराक पातक डाँट । मै.

डाँड़ लागब-क्रि., दामक अनुसार वस्तु नहि होएब । मै.

डाँड़ि-सं., रेखा, धीच । मै.

डाँड़ी-सं., १. नाओ खेबैक लग्गा आ करुआरि । २. बदरीनाथ यात्रा मे बोझो द्वारा बनाओल वाहन विशेष । मै.

डाढ़ी-सं., दूध औंटला पर वर्तनक पेन मे जमल दूधक विकार । मै.

डाक-सं., बड़का ढोल (अं. 'ड्रम') । मै.

डाबर-सं., १. पोखरि सँ छोट स्नान पानक अयोग्य जलाशय । २. हाथ मुह धोइक फैल मुहवाला धातुक बर्तन । मै.

डाबा-सं., दूध दुहैक हेतु बनाओल विशेष माटिक बासन । मै.

डाभ-सं., १. बड़क लगुआ मूड़ी । २. काँच नारिकेर । मै.

डाभ नेबो-सं., बहुत पैघ आकारक फल जकाँ खाइक योग्य नेबो । मै.

डाभी-सं., लरगुज सक्कत खड़ विशेष । मै.

डाँर-सं., १. देहक बीचक जोड़ । कटि प्रदेश । २. नाओ घुमबैक कील । मै.

डारि-सं., विभिन्न दिशा मे पसरल गाछक प्रशाखा । मै.

डालना-सं., अनेक तरकारीक मिश्रण सँ बनल तीमन । मै.

डाला-सं., बाँसक बनाओल छोट आ पैघ पसरल उत्थर बासन । मै.

डाली-सं., १. अनेक कानवाला छोट डाला । २. फलक हेतु बीनल गाछक मूल्यक अतिरिक्त देय फल । मै.

डाँस-सं., पैघ माछीक आकारक डँसैवाला कीड़ा, फतिङ्गा । मै.

डाँसब-क्रि., बिच्छू आदिक डंक मारब । माछी आदिक कीड़ाक सूँघ सँ रक्त पीयब । मै.

डाह-सं., १. ईर्ष्या । २. दाह, आनक नीक सँ शत्रुताक स्वभाव । मै.

डाहनि-सं., पीड़ित करैक प्रवृत्ति । मन मे पीड़ा दैक स्वभाव । मै.

डाहब-क्रि., १. दग्ध करब । २. जराएब । मै.

डाही-विशे., दोसराक नीक नै सहन कयनिहार । ईर्ष्या कयनिहार । मै.

डि

डिक-सं., १. तासक खेलक एक परिभाषा । (डिक्लेयर) अट्ठैसा खेल मे रंगक उद्घाटन । (अं. तद्भव) २. अव्यवस्थित रूपेँ उँचकय वस्तुक जमाओ । मै.

डिकब-क्रि., वस्तुऐ पर वस्तु राखि उँचगर कय जमा करब । मै.

डिकबाएब-क्रि., अव्यवस्थित रूपेँ जमा कराएब । मै.

डिक लागब-क्रि., जेना तेना एकठाँ जमा होएब । मै.

डिकाइ-सं., जमा करैक लगातार क्रम । मै.

डिग्गा-विशे., १. अहुँल (सर्वोच्च) वृद्धि । २. कौड़ी टिपक खेल मे राड़ मारि क' घुच्चाक कौड़ी मारैवाला कौड़ी । मै.

डिगडिगिया-सं., सामाजिक एवं राजकीय सूचना हेतु ढोलक शब्द । मै.

डिगब-क्रि., अपन स्थान आ नियम सँ विचलित होएब । मै.

डिगरी-सं., १. न्यायक संघर्ष मे जीत । डिक्री । २. उपाधि पदवी । अं. तद्भव

डिगाएब-क्रि., विचलित क' देब । मै.

डिघरी-विशे., ऊँच धनहर खेत । मै.

डिङबाज-विशे., बड़का बड़का गप हाँकि अपन महत्त्व बढ़बैक प्रयास कयनिहार । मै.

डिङबाजी-सं., गप हुँकैक प्रवृत्ति । मै.

डिट्ठा-विशे., ढीठ, धकंट, असभ्य । मै.

डिठवरवा-विशे., गारि विशेष । (दुष्ट वर्णक वर्ण संकर) । मै.

डिठौरी-सं., दृष्टि दोषें भेल घाओ । मै.

डि ंडिआएब-क्रि., पशुक आतुरताक शब्द । मै.

डिब्बा-सं., सबकट मुनना ओर्झंपनावाला धातुक बासन । मै.

डिब्बी-सं., छोट सँ छोट मुननावाला आ झँपना वाला धातुक बासन । मै.

डिब्भी-सं., माटि सँ बहराएल बीज सँ सोझ अंकुर मात्र । मै.

डिबडिब-अव्यय, ढोल केर मदु शब्द । मै.

डिबडिबाएब-क्रि., ढोलक शब्द जकाँ अनेर कथु सँ शब्द बहार करब । मै.

डिबिया-सं., १. कोनो वस्तु रखैक मुननावाला छोट बासन । २. मुह बन्न कय रखैवाला छोट कीया । मै.

डिम्भा-सं., नीक जकाँ प्रकट बीजक अंकुर । मै.

डिमडिम-अव्यय, ढोल तबला डुग्गी ढोलक मृदङ्ग आदिक मधुर शब्द । मै.

डिम्हा-सं., आँखिक भीतरक गोल अंग । मै.

डि ंरिआएब-क्रि., १. मालक बाजब । २. विकल बौआएब । मै.

डिलगरि-विशे., उच्च आ उदार आकांक्षावाली स्त्री । मै.

डिहवार-विशे., डीहक हितकारी । ग्राम देवता । मै.

डिहली-विशे., डीह जकाँ ऊँचगर खेत । मै.

डिहार-विशे., पुरान डीहवाला भूमि । मै.

डिहुली-सं., छोट पक्षी । प्रयोग—"आ गे डिहुली सामा जाइ छै सासुर किछु गहनो चाहि गे डिहुली ।" (सामाक गीत) मै.

डी

डीङ मारब-क्रि., अपन प्रशंसा मे बढ़ि चढ़ि क' बात करब । भड़कताली देब । हि. तत्सम

डीङ हाँकब-क्रि., असम्भवो बात कें क' लैक दावी करब । मै.

डीङा बोकाइ-सं., लाभ हानि कें अवधारि के काज करैक निश्चय । मै.

डीठ-सं., दृष्टि । सं. तद्भव

डील-सं., शरीरक पुष्टता एवं गठन । मै.

डीलडौं ल-सं., बहारक विशेष आडम्बर । मै.

डीह-सं., वासस्थल, वसोवास । मै.

डीही-विशे., सनातन सँ एकै डीह वा गामक वासी । प्रयोग—"भगिनमान ओ गेले छथि जे, डीही गौरव मानथि अपने ।" मै.

डु

डुग्गी-सं., पैघ मुह आ छोट पेनीवाला ढोलक आकारक तबला संग बजबैक संगीतक ताल दैवाला वाद्य । मै.

डुगडुगी-सं., राजकीय सूचनाक वाद्य । डंका । मै.

डुब्बा-सं., डूबैक स्थिति, डूबि डूबि कय नहाइक चेष्टा । डूबि मरैक वार्ता । मै.

डुबकी-सं., बारम्बार डूबिकय नहाइक व्यापार । डूबि कय पानिक भीतर छिपैक क्रिया । मै.

डुबकुनियाँ-सं., पानिक भीतर कतौ सँ कतौ डूबिये कय चल जाइक क्रिया एवं अभ्यास । मै.

डुबाएब-क्रि., १. पानि मे निमग्न कय देब । २. (लाक्षणिक) समाप्त क' देब । मै.

डुबाओ-विशे., डूबैक स्थितिवाला पानि । अथाह । मै.

डुम्मरि-सं., गुल्लरि वृक्ष । मै.

डुमरिकफूल होएब-क्रि., अदृश्य रहब । मै.

डू

डूब-सं., पानि मे निमग्न भ' क' स्नान । मै.

डूबब-क्रि., पानि मे निमुआन होएब । मै.

डूम-सं., देखु—"डूब" । मै.

डूमब-क्रि., पानि मे डूबि क' मरब । (लाक्षणिक) कोनो विषय मे निमग्न रहब । मै.

डे

डेओढ़-विशे., एकक संग आर आना मिलल । मै.

डेओढ़वाइ-विशे., डेढ़ दिन पर लगैवाली महींस । बेरा बेरीक काज । मै.

डेओढ़ा-विशे., १. मूलधनक डेढ़ गुना सूदिवाला ऋण । २. डेढ़बर वस्तु देला पर भेटैक वस्तु । ३. एक संग आर आधा मिलौला सँ बनल । मै.

डेकची-सं., गोल ठाढ़ फैलल मुहवाला रन्हा बर्तन । मै.

डेग-सं., १. चलैक चेष्टा। २. दूनू पैरक बीच चलैक काल बनल दूरीक मान। मै.

डेगहलब-क्रि., चलैक चेष्टा करब। मै.

डेगा डेगी-सं., नेन्नाक एक आध डेग चलैक चेष्टा। मै.

डेगार होएब-क्रि., तेजी सँ चलब। मै.

डेङाएब-क्रि., १. डाङ सँ मारब। २. डाङ सँ चोट-दय अन्न झारब। मै.

डेङी-सं., नाओक छोट प्रभेद। मै.

डेङौनिहार-विशे., डाङ मारनिहार। डाङ सँ अन्न झारनिहार। मै.

डेढ़-विशे., एक आ आधा। एक एकवटे आधा। मै.

डेढ़बराह-विशे., एकटा छोट आ एकटा पैघ। बेमेल। मै.

डे़ढ़बा-सं., छोट माछक समूह। मै.

डेढ़हत्थी-सं., छोटका मोटका लाठी। मै.

डेढ़ही-विशे., डेढ़बर अन्नक बदला एकबर वस्तु। मै.

डेढ़ाढ़ोढ़-विशे., डेढ़ दिन पर होइक पीनिवाला। मै.

डेढ़िया-विशे., डेढ़ दोबर। मै.

डेढ़ी-सं., काजक विस्तार। मै.

डेन-सं., बाँहिक जड़ि। मै.

डेनबाह-विशे., सहायता करैवाला। बाँहि पुरैवाला। मै.

डेबब-क्रि., १. व्यवस्थित जकाँ निर्वाह करब। २. कठोरता सँ नियम पालन करब। मै.

डेबा-सं., नियमक पालन। मनौतीक निर्वाह। मै.

डेबाएब-क्रि., व्यवस्था सँ निमाहब। नियमक पालन कराएब। मै.

डेमता-सं., १. बड़प्पनक दावी। २. कुल गौरव रक्षाक फूसि आ पतिकरनी करब। मै.

डेमसतीसे-अव्यय, निरपेक्षता आ कोनो वस्तुक तुच्छता द्योतक शब्द। मै.

डेर-विशे., भिन्न-भिन्न दिशा मे दूनू आँखिक पुतली-वाला। मै.

डेरबुक-विशे., अधिक डर रखैवाला। मै.

डेरा-सं., १. अस्थायी निवास। २. अवान्तर कौलिक महल्ला। मै.

डेराएब-क्रि., १. डर करब। २. डर पैसाएब। मै.

डेराओन-विशे., भयावह, डर उत्पन्न करैवाला। मै.

डेरान-सं., अत्यन्त डरक क्रम। मै.

डेराह-विशे., डर भरल। मै.

डेरौआ-विशे., डेरबैवाला। मै.

डेरौना-विशे., केवल डर देनिहार। प्रयोग—"उजरा मेघ मे मामू हो मामू, करिया मेघ डेरौना।" मै.

डेली-सं., माछ रखैक बाँसक बीनल गोलाकार बासन। मै.

डेलीखोंढी-सं., (लाक्षणिक) अपन नित्य व्यवहारक आवश्यक वस्तुक सब सामग्री। मै.

डो

डोकहर-सं., मछखौका पैघ पक्षी विशेष। मै.

डोकहा-सं., सूगरक बच्चा। मै.

डोका-सं., बड़का घोंघा बरसाती छोटका जलजीव। मै.

डोकनी-सं., केवाड़ मे ठोकल हवकल पैसबैक चोकठि मे ठोकल यन्त्र। मै.

डोंड़ा-सं., अधिक नाम आ चाकर कम गहींर खेत। मै.

डोभनि-सं., सस्य रोपल खेत मे घास उखाड़ैक प्रक्रिया। मै.

डोभब-क्रि., खेत कें घास उखाड़ि स्वच्छ करब। मै.

डोभी-सं., खेतक घास विशेष। मै.

डोम-सं., सब सँ पैघ हरिजन। प्राचीन कालक निम्नतम जाति। चाण्डाल। मै.

डोमकछ-सं., स्त्रीगणक परिहास पूर्वक खेलमय नृत्य विशेष। मै.

डोमरा|डोमा-विशे., डोम शब्दें व्यवहारवाला। मै.

डोमा डिगरी उठाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थ हेतु डोम जकाँ गरजि क' छवाछटि लगाएब। मै.

डोमासी-सं., डोम जातिक बस्ती। मै.

डोमिन-सं., डोमक स्त्री जाति। मै.

डोमौ-विशे., डोमक योग्य वस्तु, डोमक निर्मित बासन। मै.

डोर-सं., भावना मय आकर्षण। मै.

डोरा-सं., ताग (मोटगर)। मै.

डोरि-सं., १. डोरी तानि बनाओल डड़नी। २. यातायात मे मनोनुकूल स्थान। मै.

डोरिगर-विशे., आवर जातक अनुकूल । मै.

डोरिया-विशे., डोरा जकाँ रंग विरंगक रेखा सँ भरल । मै.

डोरियाएब-क्रि., १. डोरी पकड़ि नेने आएब । २. (लाक्षणिक) बाट धराएब । ३. दिग्दर्शन करैत लऽ जाएब । ४. अपन मत मे आनब । मै.

डोरी-सं., सावे आ आनो पदार्थ कें गुनदय कें दू वा अतिरिक्तो भला कें एक बना बन्धनक वस्तु । रज्जु । मै.

डोल-सं., इनार सँ जल बहार करैक आ जल रखैक द्रव्यक पात्र । मै.

डोलडाल-सं., पेट साफ करैक क्रिया । मै.

डोलब-क्रि., बारम्बार निराधार मे एम्हर ओम्हर होएब । मै.

डोलमडोल-विशे., अस्थिरता सँ हिलैत रहैवाला । मै.

डोलाएब-क्रि., अस्थिरता सँ हिलाएब । कँपाएब । मै.

डोली-सं., सवारी, स्त्री सवार भरल कहारक द्वारा महलधरि लऽ जाएक वस्तु । मै.

डोलौआ-विशे., हरदम डोलैत रहैक स्वभाववाला । मै.

डोह-सं., निचरस खेतवाला चोर (बाध) । मै.

डौ

डौआएब-क्रि., लक्ष्यहीन निरर्थक एम्हर सँ ओम्हर बोआएब । मै.

ढ

ढक्कन-सं., १. वस्तक कोनो अंग मूनैक वस्तु । २. कोनो डिब्बा आ वर्तनक मुह बन्न करैक वस्तु । मै.

ढक-विशे. १. कोनो यन्त्रक पेंच ढील भेला पर हिल डोल करैवाला यन्त्र । २. अनबूझ मूर्ख । मै.

ढकढक-सं. शून्य डिब्बा मे कोनो वस्तुक चोट पड़ने विशेष शब्द आ कसल नहि रहने हिलब डोलब । मै.

ढकढकाएब-क्रि., ढकढक शब्द करब । प्रयोग–"आइ भोरे रामू केवाड़ ढकढकाएब चालू कयलनि ।" मै.

ढकढियारब/ढकढियारब-क्रि., कोनो वस्तु कें तकैत तकैत सब वस्तु कें उघेनब । मै.

ढकढोल-विशे., उचित सँ बेसी पैघ । अनादर योग्य व्यक्ति । बे सम्हार । मै.

ढकना-सं., सरवाक आकारवाला पैघ माटिक वासन । वर्तन वासनक मुह झँपैवाला । मै.

ढकपेंच-सं., कोनो प्रकारें जुगुति । मै.

ढंकब-क्रि., ढकना (अँचरी) सँ वासनक मुह आ ओढ़ना सँ अपन वा आनक मुह कें झाँपब मै.

ढकर ढकर-अव्यय, वन्द वस्तुक भीतर थोड़ वस्तुक डोलैला सँ शब्द । तथा यान्त्रिक वस्तुक (कलक) मन्दगति आ तेज शब्द । मै.

ढंकसब-क्रि., हड़ुली जकाँ मुह मे ठूँसने जाएब । मै.

ढकहा-विशे., १. अनेर अधिक बात गढ़निहार । २. ढकवाला यन्त्र । मै.

ढकिया-सं., धानक बीनल पैघ पथिया । मै.

ढकोसब-सं., १. अनेक बेर खेलो पर खाएब । २. अपन बहादुरीक फूसिबखान करब । मै.

ढकोसला-सं., अपन स्वार्थक हेतु मनगढन्त बात । मै.

ढंग-सं., शैली, तूरि, व्यवहार । मै.

ढङगर-विशे., तूरिवाला । मै.

ढङीला-विशे., नाना प्रकारक ढंग धरैवाला । मै.

ढट्ठा-सं., १. बाँस सँ बनाओल घेरा । २. धोतीक आधा कें लपेटिकय बन्हैक प्रक्रिया । मै.

ढट्ठा मारब-क्रि., आधा धोती कें डाँर मे लपेटि पहिरब । मै.

ढठाएब-क्रि., धीरें धीरें निर्भीक बनब । मै.

ढठियाएब-क्रि., कोनो काज मे धीरें धीरें प्रवृत्त होएब । प्रयोग–"बच्चा पाठशाला मे पढ़ै लिखैमे ढठियाएल अछि ।" मै.

ढढ्ढर-सं., कोनो आलेख (चिट्ठी पत्री) क विस्तृत आकार । मै.

ढढ़कब-क्रि., १. द्रवणशील पदार्थक हठात् वासन सँ बहब । २. नेऊँच स्थान मे वेग सँ नीचाँ दिस ससरब । मै.

ढढ़का-सं., उतार, ढार । ढालू । मै.

ढढ़काह-विशे., ससरि खसैवाला । एक दिस अधोगामी स्थान । मै.

ढढ़हा-सं. १. बाँसक पातर कातीक बीनल अन्न रखैक पैघ वासन । २. ढढ़का पथ । मै.

ढढ़ाएब-क्रि., गाछ वृक्ष एवं फसिलक उचित सँ बेसी बढ़ि आएब । मै.

ढईया-विशे., १. थोड़ दिनक हेतु भेनिहार । प्रयोग–"शुक्रनीक सती ढईया होइ छै । एकै मास मे समाप्त ।" २. एकै व्यक्ति पर प्रसन्न भऽ कऽ खूब भरैवाला । मै.

डढौ-विशे., शरीर नाप सँ अधिक पैघ होम'वाला अंगा टोपी । मै.

डनका-विशे., १. गढ़ि गढ़ि गप्प हाँकनिहार । २. डन डन शब्द सँ अधो वायु छोड़निहार । मै.

डनकाएब-क्रि., शब्दसहित अधोवायुक त्याग करब । मै.

डनडन-अव्यय, ढोलक शब्द । मै.

डनडनाएब-क्रि., १. मेघक गम्भीर शब्द करब । २. शून्यता भरल रहब । प्रयोग—"लोक वेनेक सब घर डनडनाइत रहैत अछि ।" मै.

डनमन-विशे., अव्यवस्थित भ' क' छिड़िआएल । मै.

डनमनाएब-क्रि., अव्यवस्थित रूपेँ ओंघराएब । मै.

डनमनाह-विशे., अनेर खसै पड़ैवाला । मै.

डनमनी लागब-क्रि., बिन कारण उनटि पुनटि कय फूटि जाएब । अव्यवस्थित भ' क' खसि पड़ि जाएब । मै.

डनाक द'-अव्यय, पैघ आ स्थूल वस्तुक अचानक खसैक शब्द । मै.

डप द'-अव्यय, अचानक उपस्थित । मै.

डब्बू-विशे., (लाक्षणिक) शरीर आ बुद्धिक कुरूप । मै.

डब-सं., आकृतिक, छटा, चेहरा मोहरा, आकार प्रकार । मै.

डबगर-विशे., उचित आकृतिवाला, सुन्दर रूप रंग-वाला । मै.

डबक-सं., संकीर्ण स्थान मे पानिक जमाओ । मै.

डबकब-क्रि., साकर स्थान मे आवर्त्त रूपेँ पानि जमा होएब । मै.

डबकाएब-क्रि., थोड़ थोड़ क' संकीर्ण स्थान मे द्रव पदार्थ के एकत्र करब । मै.

डबकाह-विशे., पानि जमा होइक योग्य ऊँच स्थानक गहीँर बनल । एकठा अनावश्यक ऊँच भेला सँ दोसरठा गहीँर भ' गेने पानि जमा होइ योग्य । मै.

डबडब-अव्यय, १. शून धातु पर चोट देला सँ उठै-वाला शब्द । २. स्थूल बिन्दुक प्रादुर्भाव आ पतन । प्रयोग—"हमरा दुखित पड़ल देखितैं बोआक आँखि मे डबडब नोर भरि गेलैन ।" मै.

डबडबा कय-अव्यय, स्थूल बिन्दुक वेगपूर्ण भ' क' । मै.

डरक-सं., ढार, अधोगामी स्थान । अधः गमन । मै.

डरकब-क्रि., नीचाँ दिस जाइवाला स्थान मे अना-यास ससरब । मै.

डरकाह-विशे., निम्न गामी भूमि मे अनायास ससरै वाला । मै.

डरब-क्रि., १. प्रसन्नता सँ कृपापूर्ण होएब । २. शीतला रोगक (चेचकक) अनुकूल होएब । मै.

डररा-सं., १. देहक ढाल । २. विशेष शैली । ३. उचित क्रम । मै.

डररा ओदरब-क्रि., आगि मे पाकि गेने सिद्ध चामक अलग भ' जाएब । मै.

डरुआ-विशे., धातु केँ गलाकय आ ढारि कय बना-ओल वर्तन । मै.

डलडल-विशे., आठी आदि ढील वस्तु विशेष । मै.

डलाइ-सं., सिमटी बालु आ कंकरीट मिलाकय कोठाक छतक निर्माण । मै.

डलान-सं., अधोगामी भूमि । मै.

डलै-सं., माछ विशेष । मै.

डलैया-सं., मसाला कंकरीट जमाकय देवालक निर्माण । मै.

डलौआ-विशे., सिमटी कंकरीट जमा क' बनल । मै.

डहनाएब-क्रि., कोनो काज मे लागल नै रहला सँ अनेर ढारेँ ढारेँ घूमल फिरब । मै.

डहब-क्रि., ध्वस्त होएब । (लाक्षणिक) अचानक पैघ शोक वा निराशा सँ शक्तिहीन बनब । मै.

डहलेल-विशे., छओ पाँच नहि जाननिहार वृद्धि । मै.

डहाएब-क्रि., ध्वंस कराएब । मै.

डहु-सं., मूत्राशयक उपरका भाग । मै.

डहुरी-विशे., आनक गर्भधारण करैवाली । मै.

डहैल डहैल-अव्यय, गाइक संग मैथुनक हेतु साँढ़ केँ बजवैक शब्द । मै.

ढा

ढाँइ ढाँइ-अव्यय, पैघ ढोल ढाकक शब्द । मै.

ढाक-सं., पैघ, गोल आ नाम ढोल, ढक्का । मै.

ढाकन-सं., वासनक मुह झँपैक उत्पर पैघ ढकना । मै.

ढाँकब-क्रि., वासनक मुह बन्न करब । मै.

डाकी-सं., बाँसक कमचीक बीनल बड़का छिट्टा। मै.

डाँच-सं., १. रेखाचित्र। २. ठट्ठर। ३. कंक मात्र। मै.

डाढ-सं., १. घेरन, बाँस सँ बनाओल घेरा। २. (लाक्षणिक) बन्धन, निषेध। मै.

डाढब-क्रि., रोक लगाएब, मना करब, मनाहीक नियम करब। मै.

डाठी-सं., १. वंशानुगत स्वभाव। २. आचरण आ प्रकृति। मै.

डाढ़-सं., बड़का डड़हा। मै.

डाढस-सं., १. बोल भरोस, आश्वासन, धैर्य आ ओलाविलम। २. आडम्बरक बात। प्रयोग-"ई हुनक डाढस थिकनि जे बिना वही घूराक जाकतै नै करै छी।" मै.

डाबा-सं., दोषक उद्घोषणाकय फुटबैक चेष्टा। मै.

डाबा लगाएब-क्रि., फूसि बात गढ़ि एक दोसरा मे फूट कराएब। मै.

डाबुल-सं., पैघ पीरा रंगक बेंग। मै.

ढार-विशे., ढालू, निम्नगामी भूमि। प्रयोग-"उत्तरा ढार, पूवाढार।" मै.

ढारब-क्रि., १. धारा रूपें बसाएब। (द्रवणशील वस्तुक हेतु) २. (लाक्षणिक) एकें व्यक्ति पर प्रसन्न भ' क' खूब धन देब। मै.

ढाल-सं., १. गेंड़ाक चामक बनल अस्त्र प्रहारक चोट रोकैक साधन। २. निम्न गामी (विशे.)। मै.

ढालू-विशे., नीचाँ मुहक भूमि। मै.

ढाहब-क्रि., १. ऊँच भूमि केँ तोड़ि कोड़ि चौरस करब। २. घर आ मकान केँ तोड़ब, ध्वंस करब। मै.

ढाही-सं., माथक टक्कर। मै.

ढाही मारब-क्रि., माथ सँ माथ मे टक्कर दय लड़ब। मै.

ढि

ढिकरी-सं., छोट सँ छोट टुकरा ढेला, माटि पाथरक खण्ड। मै.

ढिठगर-विशे., धृष्ट स्वभाववाला। अधिक ढीठ। मै.

ढिठपनी-सं., निर्भयता, धृष्टता, प्रगल्भता। मै.

ढिठाइ-सं., प्रौढ़ता, निडरपना। मै.

ढिठियाएब-क्रि., ढीठ बनाएब, संकोच आ भयहीन होएब। मै.

ढिढ़की-सं., छोटी चकौ उगल पेट। मै.

ढिढ़मबदा-विशे., स्वभाव सँ विशेष नमरल पेटवाला। स्त्री० ढिढ़मदरी। (गर्भवती) मै.

ढिढ़री-विशे., (अनादर मे) आन पुरुषक गर्भधारणा कयनिहारि। मै.

ढिढुकी-सं., खेत बीच उच्चास। मै.

ढिढुकाह-विशे., बीच बीच मे उँचगर रहैवाला। मै.

ढिन्हा-सं., सामान्य उँचगर पेट। मै.

ढिप ढाप-सं., आकाश पाताल देखबैत भय आ आदङ्क बढ़बैत चेष्टा। मै.

ढिप देब-क्रि., ठकैक ध्येय सँ आकाश पाताल देखाएब। मै.

ढिबरी-सं., इजोत करैक लेल डेमी बारैवाला डिबिया। मै.

ढिमकी|ढिमरी-सं., स्वयं प्राकृतिक रूपें उगल छोट आ कठोर मांस ग्रन्थि आ मसकत मुई। मै.

ढिल्लौ|ढिली-सं., शिथिलता, मृदुता, मन्दता। मै.

ढिलौसिलौ-सं., शिथिलताक प्रवृत्ति। मै.

ढिलढिल-विशे., अत्यन्त शिथिल। मै.

ढिलढिलाह-विशे., अनवरत शिथिल रहैवाला। मै.

ढिलाइ-सं., मन्दता, निरपेक्षता। मै.

ढी

ढीठ-विशे., निडर, प्रगल्भ। मै.

ढीढ़-सं., गर्भक द्वारेँ बढ़ल पेट। मै.

ढीढ़ा-सं., पैघ पेट। मै.

ढीमक-सं., कतौ स्वतः ऊँच आ कठोर भूमि। मै.

ढील-सं., माथक छोटकीक मैंही कीड़ी। विशे., शिथिल। लड़खर। मै.

ढु

ढुकना-विशे., बिना पुछारीक आ बिन अनुमति सोझे घर आङन मे चल आइवाला। मै.

ढुकब-क्रि., अचानक आ बल सँ प्रवेश कए लेब। मै.

ढुकाएब-क्रि., बलपूर्वक पैसाएब। भीतर करब। मै.

ढुढ्ढुर-विशे., साफ, स्वच्छ, चिक्कन। मै.

ढुनकब|ढुनकाएब-क्रि., अधो वायुक शब्द करब। मै.

ढुनका-विशे., अधिक काल अधो वायुक शब्द कयनिहार । मै.

ढुलगर-विशे., अधिक डाँट पत्ती भरल अन्न । मै.

ढुलाह-विशे., अधिक डाँट पत्तीवाला । मै.

ढू

ढूँढब-क्रि., अन्वेषण करब । ताकब । मै.

ढूँढिया पसारब-क्रि., कोनो वस्तुक अन्वेषणक क्रम मे सब वस्तु कें अव्यवस्थित करब । मै.

ढूँल-सं., डाँट आ पत्तीक ढेर । मै.

ढूसि-सं., माथा मे माथा लड़ाकय युद्ध । प्रयोग–"भोरक पाषस बकरीक ढूसि, मैं बहुक झगड़ा तीनू फूसि ।" मै.

ढूह-सं., माटि आ पाथरक पुञ्ज जकाँ ऊँच भूमि । मै.

ढूहि-सं., ढूहि मे माथ सँ धक्का । माथक धक्का सँ युद्ध । मै.

ढे

ढे करब-क्रि., कण्ठ देने शब्द सहित वायुक उद्‌गार करब । उदान वायु बहार करब । मै.

ढेका-सं., धोती पहिरला सँ पाछू दिस खोंसल धोतीक छोर । मै.

ढेकार-सं., मुह देने पेट सँ वायुक निर्गम । मै.

ढेकी-सं., १. धान कुटैक गृह कार्यक कल । २. हरदिक बिन पीसल कन्द । मै.

ढेकुल-सं., बिन गोड़ावाला लोहक मदराक नमहर इनार सँ पानि खीचैक विशेष ढोल । मै.

ढेङ-सं., छोट, मोट आ भारी लकड़ीक टुकड़ा । मै.

ढेङराएब-क्रि., अधिकताक द्वारे उपेक्षित होएब । मै.

ढेङी-सं., छोट, मोट आ गीरहवाला काठक खण्ड । मै.

ढेँड/ढेँडबा-विशे., ने नेम्ना ने चेतन अवस्थावाला । मै.

ढेँढी-सं., मरुआ आदि फसिलक गुच्छावाला सीस । मै.

ढेनमा-विशे., अबोध बच्चा । स्त्री० ढेनमी । मै.

ढेप-सं., माटिक छोट गुठरी । मै.

ढेपगर-विशे., माटिक गोला सँ भरल । मै.

ढेपकेप-विशे., (अनादरक लाक्षणिक) तुच्छ, उपेक्षित । मै.

ढेपा-सं., ठोस माटिक वा ईंटा पाथरक फेंकैक योग्य गोला । मै.

ढेपाउजि-सं., ढेपा फेंकि मारि करैक अभ्यास वा मारि । मै.

ढेपियाएब-क्रि., ढेपा मारि कय भगाएब । मै.

ढेबा-सं., भेद करबैक ध्येय सँ निर्दोष के दोषी बनाएब । मै.

ढेबाहि-सं., एकक नीक अधलाह दोसरो वा आनो आन मे होइक क्रम । संक्रमण । मै.

ढेबाहि लागब-क्रि., क्रमशः कोनो प्रकृतिक पसरब । मै.

ढेर-सं., एकट्ठा कयल वस्तु । बहुत, समुदाय । मै.

ढेरियाएब-क्रि., समेटि कय एकट्ठा करब । मै.

ढेरी-सं., पुञ्ज, समूह, एकट्ठा । मै.

ढेलबाहि-सं., ढेला फेंकैक अथवा ढेपा सँ कोनो वस्तु कें मारैक अभ्यास वा प्रयास । मै.

ढेलमासु-सं., जोर सँ दूर ढेपा मारैक हेतु डोरी सँ बनाओल यन्त्र । मै.

ढेला-सं., मारैक (फेंकैक) जोग ठोस माटिक गुठरी । मै.

ढेँसब-क्रि., मालक उकासी करब । मै.

ढेँसर-सं., मरुआ आदि ढेंढीक सघन गुच्छा । मै.

ढेँसी-सं., मालक उकासी जकाँ सतत् मनुष्यक उकासी (कफक प्रकोप) । मै.

ढेहा-सं., चोट, वेग सँ विरुद्ध दिशाक वस्तु मे परस्पर आघात । मै.

ढेहियाएब-क्रि., (निन्दा मे) बिन प्रयोजन एम्हर ओम्हर कत्तौ बड़बड़ करैत बौआएब । मै.

ढेही-सं., अनेर गुड़कैक क्रम । मै.

ढेहु-सं., समुद्र आदिक बड़का तरङ्ग । मै.

ढो

ढोअब-क्रि., उठा उठाकय एक स्थान सँ दोसर स्थान पर पहुँचाएब । मै.

ढोंकब-क्रि., अविश्वसनीय बात कें बखानब । मै.

ढोंकहा-विशे., अविश्वसनीय फूसि बात गढ़निहार । मै.

ढोका-सं., सड़कक कातक अस्थायी छोट छोट फूसक दोकान । विशे., बूढ़िबक । मै.

ढोङ-सं., १. विशाल काठक खण्ड। २. कपट क्रिया। मै.

ढोङा-विशे., किछु कहला पर मुह मात्र तकैत रहै-वाला विशेष बूड़ि। देखू—"ठहक्का"। मै.

ढोङी-विशे., कपट क्रिया करै मे चतुर। मै.

ढोंढ़-सं., १. साँप विशेष। २. पैघ नाभी। मै.

ढोंढहा/ढोंढ़वा-विशे., बड़का टा बहार नमहर नाभी वाला। मै.

ढोंढ़ा-सं., बहार नमहर नाभी। मै.

ढोंढ़ी-सं., नाभी कुण्ड। मै.

ढोंढ़ो करब-क्रि., कफक अधिकता सँ विकृत उकासी करब। मै.

ढोर-सं., माल जालक जेर। मै.

ढोल-सं., ताल मात्रावाला बाजन। थोट दँ कँ बजैवाला। मै.

ढोलक-सं., संगीतक ताल मात्रावाला वाद्य (नमहर वाद्य)। मै.

ढोलकी-सं., बाबाजी सभक बाजन। मै.

ढोलढाक-सं., पीटि कँ बजबैवाला अनेक बाजन।

ढोल पीटब-क्रि., (लाक्षणिक) गुप्तो बात कँ सगरे पसारि आएब, खोलि आएब। मै.

ढोलहो-सं., ढोल बजा बजाकय बातक उद्घोष। मै.

ढोलाइ-सं., अनेक सामग्रीक एकठाँ सँ दोसर ठाम चढ़ा उतार, लँ जाएब आ लँ आनब। मै.

ढोलाएब-क्रि., ढोलाइ कराएब। मै.

ढोली-सं., पानक दू सै पातक एक मान। मै.

ढोही-विशे., विशेष प्रकारक बूड़ि। अनेर बिन बात बुझनी हँसनिहार। मै.

ढौ

ढौआ-सं., पाइ, कौड़ी, सिक्का। मै.

ढौआही-सं., छोट सँ छोट माप। आधुनिक ग्राम। मै.

ढौकी-सं., छोट सँ छोट करीन। मै.

ढौर-सं., पिठार वा चून सँ कयल उज्जर रँग। मै.

ढौरन-सं., उज्जर करैक प्रकार। मै.

ढौरब-क्रि., चून सँ वा पिठार सँ पोतब। मै.

ढौह-सं., देखू—"ढहु"। मै.

त वर्ग

त्रयोदशी-सं., पक्षक तेरहम तिथि । सं. तत्सम
त्राटक मुद्रा-सं., अधिक काल धरि एकटक सूर्य दिस तकैत रहैक योग साधना । सं. तत्सम
त्राण-सं., रक्षा, बचाओ । सं. तत्सम
त्रास-सं., १. भय । २. अनेक कारणें पियास । सं. तत्सम
त्राहि-क्रि., बचबैक प्रार्थना, रक्षा करू । सं. तत्सम
त्राहि मचब-क्रि., दलन सँ आ उत्पीड़न सँ आकुलता होएब । मै.
त्राहि त्राहि करब-क्रि., सम्भावित आपत्ति सँ बचैत लेल ईश्वर सँ प्रार्थना करब । मै.
त्रिक त्रिदवे देव-सं., ब्रह्मा विष्णु महेशक समष्टि रूप । सं. तत्सम
त्रिकटु-सं., सूँठि, मरीच आ पीपरिक समान भागक मिश्रण । कफ मूलक व्याधि मे प्रयोग होइछ । सं. तत्सम
त्रिकालदर्शी-विशे., भूत भविष्य आ वर्त्तमान मे तीनू कालक विषय बूझनिहार । सं. तत्सम
त्रिकूट-सं., लंकाक पर्वत विशेष । सं. तत्सम
त्रिगुण-सं., सत्त्व, रजस् आ तमस् ऐ तीनू गुणक समष्टि । सं. तत्सम
त्रिताल-विशे., तीन तालक संगीत । सं. तत्सम
त्रिपटांग-विशे., कोनो प्रकारें नें नजर धरैवाला । मै.
त्रिपिटक-सं., बौद्ध विद्वानक उपाधि । सं. तत्सम
त्रिपुर सुन्दरी-सं., देवी विशेष । मै.
त्रिफला-सं., हरीर, औरा बहेड़ाक समान भाग मे मिश्रित औषध । सं. तत्सम
त्रिवेणी-सं., तीन नदीक संगम स्थान । प्रयाग । सं. तत्सम
त्रिभङ्ग-सं., तीन स्थान मे टेढ़ स्थिति । (राधे श्याम) । सं. तत्सम
त्रिभुज-सं., तीन रेखाक द्वारा बनल कोण । गणित । सं. तत्सम
त्रिभुवन-सं., तीन भुवनक समष्टि । सं. तत्सम
त्रिमुहानी-सं., तीन रास्ताक समष्टि । मै.
त्रिया-सं., स्त्री जाति । मै.
त्रियाचरित-सं., स्त्री जातिक रहस्यमय आचरण । मै.
त्रिशूल-सं., महादेवक प्रसिद्ध अस्त्र । सं. तत्सम
त्रुटि-सं., दोष, कमी, हीनता । मै.
त्रेटक-विशे., उटपटाङ, जटिलता सँ कठिनाह । मै.
त्वञ्चाहञ्च-अव्यय, परस्पर वाग्युद्ध । झगड़ा । मै.
त-अव्यय, घृणा, अनादर, उपेक्षा द्योतक । प्रयोग–"त ओ बड़ बूड़ि छथि ।" मै.
तऽ-अव्यय, प्रश्नक पूरक । प्रयोग–"तऽ हमरा की कहै छी । हम चलै जाइ तऽ ।" मै.
तँ-अव्यय, १. जँ शब्दक विधेयक । प्रयोग–"जँ तों लड़बें मीता । एहि युद्ध मे तँ हम नै जयबौ ।" २. यदि क अर्थ मे जँ शब्दक प्रयोग भेला पर ओकर पूरक । प्रयोग–"जो हमरा सँ रुपैया मङता तँ हम की कहबनि ?" मै.
तऽऽ-अव्यय, उच्छ्वसित भेला पर । प्रयोग–"तऽऽ कोनहुना हिनका सँ पिण्ड छूटल ।" मै.
तक्कर-सं., वाद विवाद । मै.
तक्काहेरी-सं., ताकि हेरि कय कोनहुना निर्वाह । मै.
तक्की-सं., ताकि ताकि अनेक काज । मै.
तक्खा-सं., देवाल आदि मे बनाओल वस्तु रखैक स्थान । ताखा । मै.
तख्त-सं., चारू दिशक सम्पर्कवाला सुन्दर स्थान । मै.
तख्तपोस-सं., काठक पातर चीरा सँ बनल ऊँच खाट जकाँ सूतैक साधन । चौकी । उ. तत्सम
तख्ता-सं., काठक साम मोटाइ मे पातर चीरा । उ. तत्सम
तख्ती-सं., काठक छोट छोट चीरा । उ. तत्सम
तक्र-सं., नोन पानि सँ बनल दहीक घोर । सं. तत्सम
तक्षक-सं., प्रसिद्ध सर्प विशेष । सं. तत्सम
तक-अव्यय, पर्यन्त । मै.
तकड़ार-सं., झगड़ा पूर्वक विवाद । उ. तत्सम
तकने-अव्यय, ताकि कय, अन्वेषण कयने । मै.
तकबाएब-क्रि., १. अन्वेषण कराएब । २. देखाएब । ३. आँखि खोलाएब । मै.
तकबाक-अव्यय, तकैक, अन्वेषणीय । मै.
तकमीना-सं., देखभाल । मै.
तकर-सर्व., (निश्चयवाचक) ओ शब्दक सम्बन्धक रूप । मै.

तकरा-निश्चियवाचक सर्वनाम, कर्म कारक। मै.

तकाइ-सं., रक्षा करैक, तकैक योनि। मै.

तकाएब-क्रि., अन्वेषण कराएब, देखाएब। मै.

तकिया-सं., सिरहौना, गेन्आ। हि. तत्सम

तकैक-विशे., देखू—"तकबाक"। मै.

तखनि|तखन-अव्यय, ओहि समय मे। मै.

तखनुक|तखनुका-विशे., ओहि समयक। मै.

तगड़-सं., फूल विशेष। मै.

तगी-सं., माछ मारैक यन्त्र विशेष। मै.

तगनाइ-सं., तगैक सीबैक काज। मै.

तगवा साँप-सं., तागसन पातर अधिक नाम साँप। मै.

तगबाएब-क्रि., अनका द्वारा तुराइ तोसक भराकय सियाएब। मै.

तगमा-सं., पुरस्कार स्वरूप धातुक पदक। मै.

तगाइ-सं., १. तगैक कार्यक्रम। २. तगैक पारिश्रमिक। मै.

तगान-सं., तगैक रूपन। मै.

तगारी-सं., दिवाल जोड़ै मे मसाला उठबैक बासन। मै.

तगेदा-सं., देल वस्तु के घुमबैक हेतु बारम्बार कहब। तगाहटि। तकाजा। उ. तक़ूब

तङ-विशे., आकुल, दिक्क। मै.

तङ्ङी-सं., कठिनता, आकुलता तथा चिन्तायुक्त व्यग्रता। मै.

तड़तड़िया-सं., कोनो क्रियाक योजना मे सम्पूर्ण सामग्री। प्रयोग—"करीन लगबैक अछि तँ ओकर सब तड़तड़िया नेने चल।" मै.

तड़ब-क्रि., कोनो काज करैक हेतु सब जोड़ जोड़ैक क्रिया करब। मै.

तड़रा-सं., बीनैक वा पटबैक वा बनबैक सब साधन। मै.

तड़ार-सं., कोनो काज करैक एक एक साधन। मै.

तड़ोर-सं., रचना एवं उद्योगक सामग्रीक जोगाड़। मै.

तनछ-विशे., अपन सँ फूलि सकत। मै.

तजब-क्रि., छोड़ब। त्यागब। मै.

तट-सं., किनार, कछेर। सं. तत्सम

तड़कब-क्रि., बिजलौता छिटकब। मै.

तड़क भड़क-सं., भड़कदाली, आडम्बर, देखाउट। मै.

तड़का-सं., कायक पैर गहुता। ताटङ्क। छोट तड़की। मै.

तड़ब-सं., घरक चाल घारक चाल कोन पर टू चारक आधार करैक हेतु ठोस काठ वा बाँस। मै.

तड़गर-विशे., कड़ा, गोड़। मै.

तड़ंघब-क्रि., केतक सुखाएब, सुखबै मे उचित सँ बेसी अन्नक सुखा जाएब। मै.

तड़ड़ब-क्रि., हठात् क्रोधक द्वारेँ हाथ पैर चलाएब मै.

तड़छेबा-सं., ताड़ी चुअबै ले ताड़ के छेबैक (कतरैक) अस्त्र विशेष। मै.

तड़ड़ब-क्रि., बनेर एकजरे तामसँ गरजब। मै.

तड़तड़-अव्यय, टूटैक चमक ध्वनि। मै.

तड़तड़ाएब-क्रि., टूटै सँ पहिले शब्द करब। मै.

तड़ दऽ-अव्यय, १. तुरन्त, लगले। २. एहि रूपक शब्द कय। मै.

तड़पनिहार-विशे., तड़पैक कलावाला। मै.

तड़पब-क्रि., बेलागि कूदि कय फानि जाएब। मै.

तड़पाएब-क्रि., बेलागि फनाएब। मै.

तड़फड़-अव्यय, अत्यन्त शीघ्र। मै.

तड़फड़ाएब-क्रि., अत्यन्त शीघ्रता सँ काज करब। मै.

तड़फड़िया-विशे., तड़फड़ काज क' नैवाला। मै.

तड़ाक दऽ-अव्यय, लगले ओही क्षण। मै.

तड़ाका-अव्यय, लगले पाछूए लागल। मै.

तड़ि चूबा-विशे., १. ताड़ी चूबि एकट्ठा होइवाला बासन लबनी। २. ताड़ी चुअबैवाला पासी। मै.

तड़िपत्र-सं., प्राचीन कालक लेखन करैक ताड़क पत्र, जाहि पर हस्तलिखित पुस्तक होइत छल। मै.

तड़िपीबा-विशे., अधिक ताड़ी पीबैक अभ्यासवाला। मै.

तत्काल-अव्यय, ओही समय। मै.

तत्त|तत्ते-अव्यय, तखैक। प्रयोग—"तत्त मारि मारब जे मुह फुला देब। तत्ते नै ओ कहऽ लगला जे अकच्छ भ' गेली।" मै.

तत्तर्थ-अव्यय, ताल मात्रावाला संगीतक तबला तरक बोल। मै.

तत्पर-विशे., एकाग्र। सं. तत्सम

तत्त्व-सं., सार भाग, यथार्थता । सं. तत्सम

ततए-अव्यय, ताहि ठाम । ततय सेहो प्रयोग होइछ । मै.

ततखनात-अव्यय, ओही क्षण । मै.

ततथै-अव्यय, तबला ढोलकक बोल । मै.

ततनी/ततनै-अव्यय, ओहि थोड़ परिमाणक । मै.

ततःपर-अव्यय, तदुपरान्त । सं. तत्सम

ततबर-विशे., ताहि अनुसार । मै.

ततबा/ततबाक-अव्यय, ताहि परिमाणक । मै.

ततबो/ततबे-अव्यय, ओतबेक परिमाण मे । मै.

ततभँविता-सं., संशयात्मक शोल । मै.

ततमत-सं., तारतम्य, मनक आगू पाछू करब । मै.

ततमताएब-क्रि., तारतम्य करब । मै.

ततमा-सं., बुनकर जाति । स्त्री० ततमैनी । मै.

तताहि-अव्यय, ओही ठाम । मै.

तताएब-क्रि., उचित सँ वेशी गरम होएब । मै.

ततारब-क्रि., विशेष रूपक सुक्ख सेक करब । मै.

ततार लगाएब-क्रि., एक पाँती मे सब सँ सब के घिरा कय राखब । मै.

तते/ततेक-अव्यय, ताहि परिमाणक । मै.

तत्तै-अव्यय, ओही ठाम । मै.

तत्ती-अव्यय, ताहू ठाम । मै.

तथ्य-सं., यथार्थता । सं. तत्सम

तथा-अव्यय, ओहिना, आर, ओहि प्रकार । सं. तत्सम

तथापि-अव्यय, तैओ, ओहु रूपेँ । सं. तत्सम

तथै-अव्यय, मृदङ्ग आदिक बोल । मै.

तन्द्रा-सं., औंघी, अध निद्रा । सं. तत्सम

तन्देही-सं., तत्परता सँ सेवा, (उ.) हिफाजति । मै.

तन्नुक-विशे., कोमल, बलहीन । मै.

तन्मय-विशे., तल्लीन, एकाग्र । सं. तत्सम

तन-सं., शरीर, तनु । सं. तद्भव

तनकब-क्रि., चमड़ाक उपरी भाग पर विस्फोट जकाँ वेदना होएब । मै.

तनकाह-विशे., चमड़ा पर वेदना देवाला । मै.

तनकी-सं., चमड़ाक उपर वेदनाक विस्फोट । मै.

तनखोधी-सं., कालाक कमानी मे छेद करैवाला अस्त्र । मै.

तनतन-विशे., आन्तरिक विकार सँ भरल रहने कखनो विस्फोट करैवाला । फुटैवाला । मै.

तनतनाएब-क्रि., आन्तरिक विकार सँ भरि गेने फुटैक स्थितिक वेदना होएब । मै.

तनतनाह-विशे., जकरा क्रोध मे तन तन करऽ लगै-वाला । मै.

तनतनी-सं., १. क्रोधक आवेग । २. उपर मुहक वेदना । मै.

तनतन-अव्यय, आलापक ध्वनि । मै.

तनना-सं., कोनो वस्तु कें तनैक साधन । मै.

तनब-क्रि., आवेश (जोश) मे आएब । मै.

तनबाएब-क्रि., अनका द्वारा कोनो वस्तु विचारब, पसारब । मै.

तनभक्ति-सं., शारीरिक एवं आर्थिक बल । मै.

तनमन-सं., शरीर आ मनक संतुलन । तत्परता । मै.

तना-सं., उपरक पसार (गाछक अर्थ मे) । मै.

तनाइ-सं., कोनो वस्तु पसारैक वा विचारिकय काज करैक प्रक्रिया एवं तकर पारिश्रमिक । मै.

तनाएब-क्रि., विचारैक वस्तु के रचना करैक लेल योजना रूपेँ अनका सँ विचारवाक साहाय्य लेब । मै.

तनाओ-सं., दू पक्षक बीच विरोधक द्वारेँ संघर्षक स्थिति । मै.

तनातनी-सं., दू पक्ष मे कखनो भिड़न्त होइक स्थिति । मै.

तनिक-अव्यय, थोड़बेक । मै.

तनिक-सर्व., सम्बन्ध कारकक रूप । हुनक । मै.

तनिकर-परोक्षवृत्ती निश्चयवाचक सर्वनामक सम्बन्ध कारक, हुनकर । मै.

तनिका-परोक्षवृत्ती निश्चयवाचक सर्वनामक कर्म कारक, हुनका । मै.

तनियें-अव्यय, कनेकें । मै.

तनीमनी-अव्यय, कनेक मनेक । मै.

तनु-सं., शरीर । सं. तत्सम

तनुका-सं., देवताक रान्हल प्रसाद । मै.

तप्त-विशे., गरम । सं. तत्सम

तप्पल-विशे., धीपल । सं. तद्भव

तप्पा-सं., चूल्हा पर चढ़ले पर सँ परसल भोजन । मै.

तप-सं., १. तपस्या । २. धाह, गर्मी । सं. तत्सम

तपनाह-विशे., ताप सँ तुरन्त गरम तथा कठोर भ' जाइवाला । मै.

तपब-क्रि., तपस्या करब, साधना मे कष्ट काटब ।
मै.

तपमक-विशे., तापहीन । मै.

तपस्वी-विशे., तपस्या करैवाला । स्त्री० तपस्विनी ।
सं. तत्सम

तपसी-विशे., तापसी । तपस्या करैवाली ।
सं. तद्भव

तपाएब-क्रि., ताप भरब । गरम करब । मै.

तपेदिक-सं., राजयक्ष्मा रोग । मै.

तपेसरी-विशे., तपस्या मे लीन स्त्री । मै.

तब-अव्यय, तखन, ओकरबाद । हि. तत्सम

तऽअ-सं., पसरल (उत्थर) लोहक छोट रोटी पकबैक बर्तन । मै.

तबक-सं., पानक स्वाद एवं सौन्दर्य बढ़बैवाला उपर सँ सटैवाला सोन चानी रंगक कोमल पत्र ।
मै.

तबकल-विशे., गरम भेल । मै.

तबधल-विशे., गरमाएल, (लाक्षणिक) व्यग्रता सँ भरल । मै.

तबब-क्रि., अत्यन्त गरम होएब । मै.

तबलहा-विशे., गरम बनल । मै.

तबला-सं., संगीतक बीच ताल भरैवाला दहिना वाद्य विशेष । मै.

तबाएब-क्रि., ताप सँ भरि जाएब । मै.

तबालची-विशे., तबला बजबै मे निपुण । मै.

तबाहुटि-सं., व्यग्रता भरल मनक ताप । मै.

तम्मा-सं., मिथिला मे प्रचलित काठक बनल सिवहा नबैक नप्पा । पैली । मै.

तम्बुक-सं., अस्थायी कपड़ाक कृत्रिम घर । चलता फिरता घर । तम्बू । उ. तद्भव

तम-सं., अन्धकार । सं. तत्सम

तमकब-क्रि., एकाएक गरजि उठब । मै.

तमकुलाइन-विशे., (लाक्षणिक) तमाकूक गन्ध आ स्वाद जकाँ कटु एवं अरुचिकर वचन । मै.

तमगा-सं., सोझ कम चाकर तरुआरि जकाँ कटैवाला आ भोंकैवाला अस्त्र । मै.

तमघैल-सं., ताम्रक बनल घैलक आकारक जलपात्र ।
मै.

तमञ्चा-सं., देखू —"तमगा" । मै.

तमठाएब-क्रि., अधिक सुखबने बरकि कय बैसल रसवाला अन्न होएब । मै.

तम तम करब/तमतमाएब-क्रि., आवेग मे प्रतिक्रिया करैक लेल उद्यत होएब । मै.

तमनी-सं., कोदारि सँ खेतक माटि कोड़ैक व्यापार । मै.

तमसवीर-विशे., तमासा देखनिहार । उ. तत्सम

तमसाएब-क्रि., क्रोध करब । मै.

तमसाहु-विशे., तत्क्षण क्रोध मे अबैवाला । सतत तमसाएल प्रकृतिवाला । मै.

तमहा-विशे., तम्मा सँ नापि कय देल धानक कुट्टी मे तम्मे सँ देल चूरा । लट्ठावाला चूरा । मै.

तमाइ-सं., खेत तमैक काज । मै.

तमाइन-विशे., १. तामक रस सँ विकृत । २. तमैक प्रकार । ३. तमबैक बोनि । मै.

तमाओन-सं., खेत तमैक बोनि । मै.

तमाकू-सं., कटु स्वादवाला पातक रस । खैनी । मै.

तमाचा-सं., अत्यन्त जोर सँ थापड़क मारि । मै.

तमादी-विशे., अवधि बितने नियम सँ जयैवाला ।
उ. तत्सम

तमाल-सं., उपवनक वनस्पति विशेष । मै.

तमासा-सं., कौतुक, दृश्य । उ. तत्सम

तमाह-विशे., तामक रंग आ स्वादवाला । मै.

तमिआ-सं., तामक बनाओल पैघ जलपात्र । मै.

तमेचा-सं., देखू —"तमाचा" । मै.

तमोलि-सं., पानक व्यवसायी जाति । स्त्री० तमोलिन । मै.

तमौठ-विशे., तामल खेत । मै.

तम्बीर-सं., सितार बीणा आदि वाद्यक निचला तुम्मा । मै.

तर्क-सं., युक्ति । सं. तत्सम

तर्पण-सं., पितरक उद्देश्य मे जलाञ्जलि ।
सं. तत्सम

तर-सं., १. भीतरक अदृश्य स्थल आ निम्न प्रदेश । २. आर्द्र, सरस । मै.

तऽर-विशे., अत्यधिक रूपें तृप्त । प्रयोग—"एं: की कहू भोज मे मधुरक लेल तँ तऽर कय देलक ।" मै.

तरउपरा-सं., एकै सँ नीचाँ सँ उपर धरि झँपैवाला वस्त्र । साड़ी, मौगीक वस्त्र पहिरैक प्रक्रिया । मै.

तरक-विशे., नीचाँ दिश समतल रहैवाला बेटक संग अरत । मैं.

तरक-सं., १. प्रभात काल । २. तर्क । ३. बड़द कें दोसर ओतर फकड़ैक आदेश आओ 'तरक' । मैं.

तरकछ-सं., तर मे पहिरैवाला कच्छा, जाँघिया । मैं.

तरकट-सं., तर मे जमल दही वा अन्य पदार्थक शेष भाग । विकार । मैं.

तरकठ-सं., उपर सँ बाकल छुटलाक उपरान्त बचल काठक सारिल भाग । मैं.

तर कऽ देब-क्रि., सरसता देब, आनन्दित कऽ देब आ तोपि देब । मैं.

तरका-विशे., तर मे रहैवाला । मैं.

तरकारी-सं., व्यञ्जन । मैं.

तरख-सं., कोन पर दू चारक मिलान कय तानल रखैवाला बीचोक तानैवाला नम्मा मजबूत काठ वा बाँस । विशे., अधिक तानल । मैं.

तरखब-क्रि., थोड़ेक सुखाएब । मैं.

तरखाएब-क्रि., सुखाएब । मैं.

तरखाह-विशे., सुखाएल । मैं.

तरघुसकी-विशे., तरैं तर अर्थात् भीतरैं भीतर चुप्पेचाप पाओल द्रव्य । मैं.

तरङ्ग-सं., आवेग, पानिक हेउ, हिलकोर । सं. तत्सम

तरडब-क्रि., सूखि गेलें जोतैक अयोग्य खेत । मैं.

तरडाएब-क्रि., सुखाएल बनाएब । मैं.

तरडाह-विशे., बात कें बिना विचारनै कोधक लेल कूदि उठैवाला । मैं.

तरछन-सं., रहि रहि पेट मे भोंकैक सन दर्द । मैं.

तरछब-क्रि., रहि रहि पेट मे भोंकैक सन दर्द होएब । मैं.

तरछा-सं.,तराजूक भिन्न भिन्न पलड़ा । मैं.

तरछाएब-क्रि., एक रंग कय अलग करब । मैं.

तरनि-सं. तारण, भरण, अपन अवस्था सँ अधिक नीक अवस्था । प्रयोग—''कृष्ण तँ सुदामा कें तरनि क' देलथीन ।" मैं.

तरनिहारि-विशे., तरैक वस्तु कें घी वा तेल मे तरैवाली । मैं.

तरनी-सं., नाओ । सं. तद्भव

तरपट-सं., बीच, अन्तर, विभेद । मैं.

तरपन-सं., देखू—''तर्पण'' । सं. तद्भव

तरपब-क्रि., १. उत्कण्ठित होएब उद्वेग होयब । २. कूदि जाएब । मैं.

तरपाएब-क्रि., अधिक उद्विग्न आ पीड़ित करब । मैं.

तरपेसकी-सं., चुपचाप कयल चेष्टा । मैं.

तरपौआ-विशे., उत्कण्ठा बढ़ा कय दुख देनिहार । मैं.

तरब-क्रि., १. तेल वा घी मे भोज्य वस्तु सिद्ध करब । छानब । २. सुगति पाएब । मैं.

तरब-क्रि., पार उतरब । मैं.

तरबतर-विशे., अधिक बहल देहक द्रव सँ भीजल । मैं.

तरवा-सं., पैरक निचला सपाट भाग । मैं.

तरवाताक-सं., देहक सम्पूर्ण सेवा । मैं.

तरवा मलब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक खुशामद करब । मैं.

तरबैया-विशे., पार उतारैवाला । तरैवाला । मैं.

तरबोरा-सं., तिरछल उगल इन्द्रधनुष । मैं.

तरल-विशे., १. अस्थिर । २. तेल घीक छानल । सं. तत्सम/मैं.

तरलम-अव्यय, सैनिकक प्रस्थानक वाद्य ध्वनि । मैं.

तरलहा-विशे., तरलवाला खाद्य पदार्थ । मैं.

तरस-सं., लालसा सँ उत्कण्ठा सँ बनल आशाक बिना पूर्तियें उपजल व्यथा । मैं.

तरसब-क्रि., लालसा सँ बनल आशाक पूर्तिक बिना पीड़ा उत्पन्न होएब । मैं.

तरसाएब-क्रि., आशा बढ़ा कय लालसा बनाकय पूर्ण बिना कयने व्यथा बढ़ाएब । मैं.

तरसाह-विशे., सबले कोनो वस्तु ले तरसि जाइक स्वभाववाला । मैं.

तरहट्टी-सं., पहाड़ आदिक नीचाँ दिशुक क्षेत्र । मैं.

तरहत्थी-सं. हाथक निचला चिक्कन भाग जाहि मे मुट्ठी बान्हल जा सकैत अछि । मैं.

तरहरा-सं., धरतीक भीतर बनल सुरक्षित स्थान । मैं.

तरहा-सं., घोड़ाक पीठ परक आसन (जीन) मे निचला धँसल भाग । मैं.

तराइ-सं., कोनो ऊँच स्थानक नीचाँ समतल प्रदेश। मै.

तराउपरी-सं., तर उपर भ' क' रहैक आ रखैक प्रक्रिया। मै.

तराएब-क्रि., पार उतरबाएब, तरकारी तराएब। मै.

तराजू-सं., कोनो वस्तु तौलैक साधन वा यन्त्र। मै.

तराटक-सं., आश्चर्य, डर आदि सँ ज्ञान शून्य भेला सन्ताँ दृष्टिक स्थिरता। मै.

तराटक लगाएब-क्रि., तपस्याक साधना मे देवताक उपर एकाग्र दृष्टि बनाएब। अपलक दृष्टि राखब। मै.

तराठी-सं., तर दिशुक भाग। मै.

तरातरी-अव्यय, लगातार। तुरन्ते तुरन्त। मै.

तरान-सं., तरैक विस्तृत काज। मै.

तराबोर-विशे., उपर नीचाँ सबतरि भरल तथा जल सँ डूबल। मै.

तराय-सं., ताड़क पातक बीनल चटाइ। मै.

तरास-सं., १. डर। २. पियास। ३. छेदैक, कतरैक, छीलैक आ खतैक प्रक्रिया। मै.

तरासब-क्रि., छेदब, काटब, खतब आ कतरब। मै.

तरासनि-सं., छेदैक, कटैक आ छीलैक काज। मै.

तरिआएब-क्रि., १. नीचाँ मे जड़ि बैसाएब। २. (लाक्षणिक) धन जमा भ' जाएब। मै.

तरिऔटा-विशे., नार पोआर आदिक टालक तर मे जड़ि बैसबै योग्य वस्तु। मै.

तरी-विशे., कोनो वस्तुक सुरक्षा ले तर मे देल वस्तु। मै.

तरौ-सं., टाल आ देवाल आदिक सबकर जड़ि तथा धरती सँ दृढ़ सम्बन्ध। मै.

तरीघट्टी-सं., आन्तरिक बात आ व्यवहार। मै.

तरुआ-विशे., तरि क' बनल तरकारी। मै.

तरुआरि-सं., खाँड़ (तलवार) तलारि। सं. तद्भव

तरुण-विशे., युवक, जोआन। सं. तत्सम

तरुवर-सं., गाछी, वनस्पति विशेष। मै.

तरेगन-सं., तारागण, नक्षत्र मण्डल। सं. तद्भव

तरेठ-विशे., तर मे धरैक योग्य। मै.

तरेरब-क्रि., आँखि कटाक्ष्य देखब। मै.

तरेरा-सं., बन्सीक डोर मे बान्हल फोंकिला काठी, बन्सी मे माछ फँसैक बोध करबैक वस्तु। मै.

तरैं-सं., देखू—"तराय"। मै.

तरैन-विशे., परम्परा सँ चटल कें भरल कपल। मै.

तरोंछा-सं., १. तर मे पहिरैक वस्त्र अथवा नीचाँक वस्त्र। २. कोनो वस्तुक पेनी। मै.

तरौठ-विशे., तऽर मे रहैवाला। होइवाला। मै.

तलवा-सं., १. गुप्त आधार, कोनो वस्तुक नीचाँक अंश। २. जूताक नीचाँक अंश। मै.

तलकी-सं., १. कर्ण फूल आदि गहनाक फोंफी बला कय कान आदि मे अड़बैक धातुक सबकल कील। २. निचला अंग। मै.

तल-सं., आधारक नीचाँ अदृश्य स्थान। मै.

तलका-विशे., कनेके हर्ष विषाद मे मन कें उड़ा दैवाला अर्थात् अलगल बुद्धिवाला। मै.

तलतल-अव्यय, कोनो विशेष यात्रा वा दृश्यक अवसर पर विशेष उत्कण्ठा। मै.

तलना-सं., सेवा आ सेवाक संग उचित व्यवहारक निर्देश। मै.

तलबल-अव्यय, चञ्चल चेष्टा। मै.

तलमलाएब-क्रि., अपना भरें चलबा मे खसैक संभावना रहब। मै.

तलय-सं., आन्तरिक आशय। मै.

तलाओ-सं., १. पैघ (विस्तृत आ कृत्रिम) जलाशय। तालाब। २. अन्तर्भूमि। हि. तद्भव

तलिया/तली-सं., देखू—"तल्ली"। तरका भाग। मै.

तसफीस-सं., आपसी समझौता, निर्णयात्मक सामञ्जस्य। मै.

तसबाहि-सं., तास खेलाइक निरन्तरता। मै.

तसबीर-सं., रूपक छाया। चित्र। मै.

तसमै-सं., खीर, पायस, दूध मे रान्हल चाउर। मै.

तसर-सं., विशेष प्रकारक रेसमी वस्त्र। हि. तत्सम

तसला-सं., विशेष आकार प्रकारक भात रन्हैक हेतु धातुक अत्यन्त पैघ बर्तन। मै.

तसली-सं., तसला सँ छोट सँ छोट बर्तन। मै.

तह-सं., पसारै योग्य मृदु वस्तु कें सुन्दर ढंगें सरिआएल मोड़ पर मोड़ आ मोड़ि क' बिछबैक प्रक्रिया। मै.

तहखाना-सं., घरक भीतर भूमिगत गुप्त स्थान। उ. तत्सम

तहलहाएब-क्रि., रोव आ व्यग्रता सँ भरल अकुला-एब । मै.
तहवर्जा-विशे., व्यवहाररहित नवीन वस्तु । मै.
तहब-क्रि., एक पर एक सरियाक' पसरल वस्तु रावब । मै.
तहस नहस-विशे., ध्वस्त, ध्वंस भेला सँ अस्त व्यस्त । उ. तत्सम
तहाँ-अव्यय, ओहि ठाम । तखनें । मै.
तहाएब-क्रि., तह लगाएब । मै.
तहाड़ी-सं., अकुलाहटिक संग आवश्यकता । मै.
तहात-अव्यय, पर्यन्त, तावत् । मै.
तँहि-अव्यय, तहिना, तहिँखन । मै.
तहिना-अव्यय, ताही रूपेँ, तथा । मै.
तहिया-अव्यय, ताहि समय मे । मै.
तहियाएब-क्रि., तहँ तहँ अर्थात् एक पर एक सरिया क' बैसाएब । मै.

ता

ता-अव्यय, तावत् । मै.
ताइ-सं., माटि आ द्रव्यक वासन सँ अतिरिक्त बनल दही पौड़ैक वासन । मै.
ताँइत-सं., जीवक स्नायु सँ बनल सूत डोरी । मै.
ताई-विशे., पितियानि, दही पौड़ैक पैघ वासन । हि. तत्सम
ताओ-सं., ताप, धीक, ज्वाला । आवेश । मै.
ताक-सं., १. ठमें । २. कोनो क्रियाक उचित अवसर । ३. प्रतीक्षा । प्रयोग-१. "अनको मनक ताक कय किछु करैक चाही ।" २. "ताक पर खेती कयने उचित लाभ भ' सके छै ।" ३. "हम तँ फल प्रकाशक ताक मे छी ।" मै.
ताकनि-सं., ओगरबाहि । सावधानी सँ सतत रक्षाक भार । मै.
ताकब-क्रि., १. रक्षा करब । २. आँखि खोलि कय देखब । ३. अन्वेषण करब । मै.
ताकहेर-सं., खोज पुछारी, खरोसाक सावधानी । मै.
ताकाहेरी-सं., आवश्यकताक पूर्ति ले अभाव मे व्यग्रता । मै.
ताकुत-सं., १. तकैक चेष्टा । २. रक्षा करैक संग सेवा । मै.

ता कें-अव्यय, ओकर । प्रयोग-"कुमारि भोजन ताके दही, चूरा, चीनी आदि भोजन सामग्री । वस्त्र आ दक्षिणा ।" मै.
ताख-सं., देखू—"तबला तथा चक्का" । मै.
ताखी-सं., नेत्रा सभक वा चेतनीक जड़ीदार कङ्गर आधा माथ झँपैवाला मुसलमानी ढंगक टोपी । उ./मै.
ताग-सं., मेही डोरा । मै.
तागति-सं., दैहिक बल, ताकत । उ. तद्भव
तागनि-सं., तुराइ आदि ताग सँ सीबि नथैक प्रक्रिया । मै.
तागब-क्रि., ताग सँ सीबि कय तुराइ तोसक आदि नाथब । मै.
ताड़ब-क्रि., असमय मे क्षीण होएब । मै.
ताड़र-विशे., असमय मे अत्यन्त क्षीण । मै.
ताड़ा-सं., जीवक द्वारा चलैक योग्य गाड़ी । बैलगाड़ी वा घोड़ागाड़ी (टमटम) । मै.
ताज-सं., मुसलमानी ढंगक विशेष प्रकारक सामन्ती टोपी । मुकुट । उ. तत्सम
ताजी-विशे., तेजगर आ विशेष रोइयाँवाला कुत्ता । मै.
ताटङ्क-सं., कानक गहना विशेष । सं. तत्सम
ताड़-सं., १. ताड़क गाछ एवं फल आदि । २. अनेक काज कर्त्तव्यता एक संग सम्पन्न करैक तत्काल आवश्यकता । मै.
ताड़कुन-सं., ताड़ फलक भीतरक गुद्दा मै.
ताड़नि-सं., डाँटि डपटि कय अनुशासनक शिक्षा । मै.
ताड़ब-क्रि., डाँट डपट करब । मै.
ताड़ी-सं., ताड़क गाछ सँ चुआओल द्रव । मै.
ताड़ीखाना-सं., ताड़ी बिकाइक स्थान । मै.
ताण्डव-सं. विकट अंग चालनवाला नृत्य । सं. तत्सम
तात्पर्य-सं., आशय, अभिप्राय । सं. तत्सम
तात-विशे., प्रिय श्रेष्ठ वा कनिष्ठ (पिता वा पुत्र) क सम्बोधन । सं. तद्भव
तातल-विशे., अत्यन्त तप्पत । प्रयोग-"तातल सैकत वारि बिन्दु सम...... ... ... ।"—विद्यापति । मै.

तांति-सं., देखू—"तांइत" । मै.

तांती-सं., सूत सँ वस्त्र बीनैवाला जाति विशेष । मै.

तान-सं., १. संगीत स्वरक प्रस्तार । एक श्रुति मे अनेक ग्राम । २. कोनो वस्तुक पसार । ३. जोर सँ खींचि तनैक प्रक्रिया । मै.

तानन-सं., तनैक रूपरेखा । मै.

तानपूरा-सं., गवैयाक उत्कृष्ट वाद्य । बड़का वीणा । मै.

तानब-क्रि., खींचिकय कड़ा बनबैत पसारब । मै.

तान मारब-क्रि., उग्रता सँ कोनो वस्तुक खोभाटनि (तगेदा) करब । मै.

ताना-सं., १. कोनो वस्तु (पटिया आ वस्त्र आदि सन) बीनैक पसारल काल पुर्जा । २. करघा । मै.

तानाबाना-सं., बीनैक हेतु सब सामग्री । मै.

ताना मारब-क्रि., व्यंग्य सँ हार्दिक मर्म पर चोट करब । मै.

तानी-सं., १. जनौ आदि तागक अभग्न लम्बाइ । २. लम्बाइ मे तानल बीनैक वस्तु । मै.

ताप-सं., ज्वाला, गरमी । सं. तत्सम

तापनि-सं., तापलैक विधि वा प्रकार । मै.

तापब-क्रि., ताओ लेब, घाह सँ आड़ कें रोकब । मै.

ता पर-अव्यय, ताहि पर, तै पर । मै.

तापस-विशे., तपस्या कयनिहार । सं. तत्सम

ताबरतोड़-अव्यय, लगले लागल, निरन्तर । मै.

ताबा-सं., रोटी पकबैक माटिक तब । मै.

ताबे-अव्यय, तावत् काल । मै.

ताम-सं., अष्ट धातु मे धातु विशेष । मै.

तामड़-विशे., मकताएल (चूरा चाउर) । मै.

तामड़-विशे., वरख खेत कें कोदारि सँ माटि उल-टला पर सक्कत भेल । मै.

तामदान-सं., सामन्ती युगक चारि कहार सँ उठा-ओल जाइवाला कुर्सीसन पुरुषक सवारी । मै.

तामरस-सं., रसायन (ताम्र भस्म) औषध विशेष । मै.

तामस-सं., खीस, क्रोध । मै.

तामा-सं., १. काठ कें खोधि कय खोल जकाँ गोला-कार बनाओल अन्नक नपना, पैली । २. मण्डप आदि बिना धरनिवाला चौबारा घरक चारु कोन वाला तरख दैसबैक बीच मे छेद कयल गोल काठ । मै.

तामा मारब-क्रि., धैर्य राखब । समयक हेतु प्रतीक्षा करब । मै.

तामि-सं., प्राचीन कालक समय सूचक यन्त्र विशेष । मै.

तार-सं., १. मेही लोहक ताग । २. चीनी आदि पदार्थ कें गाढ़ कयला पर लाड़नि सँ सबैत काल अभग्न पातर रूप । मै.

तारक-विशे., तारण करैवाला । उद्धारक । सं. तद्भव

तारका-सं., तरेगन । सं. तद्भव

तारतम-सं., मनक आगाँ पाछाँ होइक भाव । संकल्प विकल्प । तारतम्य । सं. तद्भव

तार तार होएब-क्रि., रत्ती रत्ती फाटब, चाड़ब । मै.

तारनि-विशे.,१. उद्धार करैवाली । सं., २. खौलैत पानि मे द' क' अन्न कें मृदु करैक कार्यक्रम । मै.

तारब-क्रि., १. उद्धार करब । २. खौलैत पानि मे द' क' अन्न कें कोमल बनाएब । मै.

तार बजरब-क्रि., तुरन्त अनेक काज पुरबैक वा सम्पन्न करैक स्थिति होएब । मै.

तारबुज-सं., सुस्वाद पेय आ खसी मे फड़ैवाला बेंगाली फल । मै.

तारमतोर-अव्यय, एक पर एक विभिन्न क्रिया । मै.

तारा-सं., तरेगन, नक्षत्र, देवी विशेष । सं. तत्सम

ताराबाती-सं., उज्ज्वल तरेगन आ चन्द्रमाक रहने आकाशक स्वच्छता । मै.

तारिका-विशे., १. तारण करैवाली । २. चल-चित्रक अभिनेत्री । सं. तत्सम

तारिख-सं., दिनांक, तिथि । उ. तत्सम

तारु-सं., तालु । मुहक एक अंग । सं. तद्भव

तारमान करब-क्रि., व्यर्थ वस्तु सब कें एम्हर सँ ओम्हर करैत रहब । मै.

ताल-सं., १. पोखरि । २. संगीतक मात्राक प्रतीक मृदंग वा ढोलकक ध्वनि । ३. विचित्रता । मै.

ताल करब-क्रि., असम्भव एवं व्यवहारहीन वा अनु-पयुक्त बातेँ लोक कें अचका चकचा लगाएब । विचि-त्रिता करब । मै.

ताल ठोकब-क्रि., मल्ल युद्धक हेतु जांघ पर चाटी मारि ललकारा देब । मै.

तालतलबा मचब-क्रि., कनेके, एके छन मे संकटक भय सँ व्याकुल भ' क' हल्ला एवं व्यग्रता होएब। मै.

तालता-सं., सेवा बरदासि, देखरेख। मै.

ताल देब-क्रि., १. संगीत मे मात्राक ध्वनि करब। २. (लाक्षणिक) कोनो नीक वा अधलाह काज मे ककरो योग द' क' बढ़ाएब। मै.

तालब-क्रि., हाथ सँ ताल द' क' अबोध बच्चा के अंग चालन करबैक वा नचबैक विनोद करब। मै.

तालबाल करब-क्रि., विचित्र अभिनय सँ विभिन्न चेष्टा कय लोक कें घबरा देब वा विस्मय मे द' देक कपट करब। मै.

ताल मचब-क्रि., अकस्मात् घबराहटिक विचित्र परिस्थिति भ' जाएब। विकट स्थिति होएब। मै.

ताल मचाएब-क्रि., अपन मनोनुकूल नें भेला सं स्थिति कें विकट बनाएब। मै.

तालमाल करब-क्रि., आडम्बर सँ विधान आ विन्यास करब। मै.

ताल लागब-क्रि., विचित्र स्थिति उत्पन्न होएब। मै.

ताला-सं., कोनो वस्तु कें सुरक्षित कय बन्न करैक यन्त्र। यन्त्रिका। मै.

ताली-सं., ताला खोलैक पेंच। कुञ्जी। विशे., विचित्रता करै मे निपुण। मै.

ताली देब-क्रि., १. हँसी उड़ाएब। २. प्रोत्साहन करब। मै.

ताली पीटब/ताली बजाएब-क्रि., दू हाथ कें जोर सँ मिला के प्रोत्साहनक ध्वनि करब। मै.

तालीश-सं., औषध विशेष। मै.

तालु-सं., देखू—"तारु"। सं. तत्सम

तालेवर-विशे., अधिक धनवान। मै.

तावत्-अव्यय, देखू—"ताबे"। सं. तत्सम

तास-सं., खेलाइक बावन पत्ती। मै.

ताला-सं., लड़ाइक उत्साहवाला बाजा। मै.

ताहि-परोक्षवृत्ती निश्चयवाचक सर्वनाम, ओहि। मै.

ताहु-उपर्युक्त सर्वनाम पर जोर देक शब्द। ओकरो। मै.

ति

तिअ-सं., स्त्री। मै.

तिक्कत-विशे., तिक्त, तीत (रस विशेष)। सं. तद्भव

तिक्खर-विशे., तेज, कड़कड़ीआ, कड़ा। मै.

तिकड़म-सं., प्रपञ्च, षड्यन्त्र। पेंच, ढकपेंच। हि. तत्सम

तिकड़मबाज-विशे., प्रपञ्ची, ढकपेंच कयनिहार। हि. तत्सम

तिगी-सं., तासक तीन चिह्नवाला पत्ती। मै.

तितका-विशे., तीत रसवाला। मै.

तितबकली-सं., बनैया लत्तीक छोट अखाद्य फल। मै.

तित भाईट-सं., छोट गाछक वनस्पति। मै.

तितलाह्-विशे., तीतल (भीजल) सन लगैवाला। मै.

तितालाहा-विशे., भीजलवाला। मै.

तिताइ-सं., तीत रसक विशेषता। मै.

तिताइन-सं., तीत जकाँ स्वाद। मै.

तिताएब-क्रि., कोनो वस्तु कें पानि सँ भिजाएब। आर्द्र बनाएब। मै.

तिताह्-विशे., तीत स्वादवाला। मै.

तितीर-सं., पक्षि विशेष। मै.

तितुआ-सं., १. शिशुक कण्ठ लगक रोग विशेष। लवलवी लग जीह मे मांस वृद्धि भ' गेने बच्चा कें बजैक क्षमता नष्ट करैवाला रोग। २. विशेष घास। मै.

तिथि-सं., चन्द्रमाक गतिक अनुसार दिनक नाम परीव, द्वितीया, तृतीया आदि। मै.

तिन्ना-विशे., त्रिगुण, तेगुना, तिया। मै.

तिनक/तिनकर-निश्चयवाचक परोक्षवृत्ती सर्वनाम, "ओ" शब्दक सम्बन्ध कारकक रूप। मै.

तिनका-सर्वनाम, "ओ" शब्दक कर्मक रूप। मै.

तिनगुना-विशे., तेगुना, तीनबर। मै.

तिनतसिया खेलाएब-क्रि., अन्हरजाली द' क' ठकि लेब। मै.

तिनपड़िया-विशे., तीन पाड़िवाली शाड़ी। मै.

तिन पहिया-विशे., तीन पहियावाला गाड़ी, बच्चाक लरौना गाड़ी। मै.

तिनबेरिया-विशे., तीन बाटवाला स्थान । मै.

तिनपं-सं., तीन पाओवाला मान । मै.

तिनफसिला-विशे., वर्ष मे तीन उपजा देवाला खेत, तीन बेर फड़ैवाला आम । मै.

तीना तीन/तिनिया तीन-सं., एकाइक पाँत मे तीनकाँ पढ़ैक पहिल अंक शब्द । मै.

तिनलचौखा-विशे., कतौ स्थिर नै रहि घरे घरे थोड़ समय ले रहनिहार । मै.

तिमिंगिल-सं., दीर्घाकार समुद्री माछ । (एकर रूप संस्कृत मे एना वर्णित अछि) अस्ति मत्स्यस्तिमिर्नाम शतयोजन विस्तरः, तिमिंगिल गिलोऽप्यस्ति तद्गिलोऽप्यस्ति राघवः । सं. तत्सम

तिमिर-सं., अन्धकार । सं. तत्सम

तिया-सं., कोनो अंकक तेगुना केर संकेत । मै.

तियापचबा-सं., सेवा बर्दास्ति, सेवा शुश्रूषा । मै.

तिरीं-सं., तानीक सूत पर भरनीक नरी घुरबैवाला । मै.

तिरकिट धा-सं., ढोलक आदि तालक बोल । मै.

तिरंगा-विशे., तीन रंगवाला, भारतीय झंडा । मै.

तिरछट-विशे., स्वच्छताक संग एक रूपवाला । मै.

तिरछब-क्रि., छनहि एक दिश छनहि दोसर दिश झुकि झुकि अर्थात् कैर भ' क' गति होएब । मै.

तिरछा-विशे., एक दिश झुकल सन । मै.

तिरछाएब-क्रि., एक दिश झुकल सन बनाएब । मै.

तिरछाह-विशे., एक दिश कैर अर्थात् झुकल । मै.

तिरछी काटब-क्रि., भयैत रहैक कमे टेढ़ गतियेँ जाएब । मै.

तिरटब-क्रि., एक गऽर छोड़ि दोसर गऽरेँ होएब । मै.

तिरटाएब-क्रि., एक गऽर सँ दोसर गऽर धराएब । मै.

तिरपट-विशे., ऐंठि क' एक दिश ढाल आ दोसर दिश ऊँच भ' क' बे उरेब । मै.

तिरपटाह-विशे., बेमेल, विचित्र आचरण सँ कठिन करैवाला । मै.

तिरपटाह्-विशे., टेढ़ दूड़ बनि गेल । मै.

तिरपन-सं., पाँच दहाइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तिरपित-विशे., तृप्त, अघाएल । सं. तद्भव

तिरलट-विशे., तरजुक विशेषण जेकर शिखर उठि टेढ़ रहैछ । मै.

तिरसठि-सं., छऽ दहाइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तिरहुत-सं., मिथिला प्रदेश । मै.

तिरहुता-सं., तिरहुतक लिपि, मिथिलाक्षर । मै.

तिरहुताम-सं., तिरहुतक व्यवहार विचार । मै.

तिरहुतिया-विशे., तिरहुत मे होम'वाला, रहैवाला, मैथिल । मै.

तिराएब-क्रि., वृद्धि होएब, स्थितिक अनुरूप होएब । मै.

तिरानबे-संख्या, नौ दहाइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तिरिया-सं., स्त्री जाति । मै.

तिल्ली-सं., दियासलाइक काठीक मसालावाला अगिला भाग । मै.

तिल-सं., एक सूक्ष्म आ पवित्रतम अन्न विशेष । मै.

तिलक-सं., १. कपाड़ मे चाननक चिह्न, ठोप । २. वैवाहिक व्यवस्था करैक प्रक्रिया । मै.

तिलकतरी-सं., अन्न सँ बनल तिल मिलल मधुर । मै.

तिलकब-क्रि., क्रमशः फसिलक पाक आरम्भ होएब । मै.

तिलकाएब-क्रि., १. चानन लगाएब । २. विशेष व्यवस्था सँ वर केँ छेँकि राखब । मै.

तिलकुट-सं., गया तीर्थक विशेष प्रसिद्ध मधुर । मै.

तिलकोर-सं., मिथिलाक प्रसिद्ध तरुआ तरकारी । ऐ नामक लत्तीक पात के पिठार लगा क' तरल बड़ । मै.

तिलबा-सं., १. देह पर तिलक चिह्न । २. तिल सँ बनल मधुर खाद्य । मै.

तिलमिलाएब-क्रि., घुरमल जकाँ होएब । मै.

तिलसर-विशे., एकोद्दिष्ट मे तिल आ दूध मात्र दय पितरक बिना व्यञ्जनक भोजन । मै.

तिला-सं., तिलक आकार आ रंगक मांस वृद्धि । मै.

तिलाञ्जलि-सं., मृत व्यक्ति केँ देम'वाला अर्घ । सं. तत्सम/मै.

तिला सँकराँति-सं., मकर संक्रान्ति । मै.

तिलिया-सं., तिलक रंग आ आकारवाला बेन्हू । मै.

तिलिया फुलिया-सं., तिल आ फूलक कयल निखार। मै.

तिलोरि-विशे., एकी एकी, बेराबेरी। मै.

तिलौड़ी-सं., तिल मिलाकय बनाओल रौद मे सुखाओल बड़ी। मै.

तिसियौड़ा-सं., १. तीसी फुला क' बनाओल लसिगर पदार्थ। २. तीसीक डाँट। मै.

तिसियौड़ी-सं., तीसी सँ बनाओल रौद पक्कू बड़ी। मै.

तिहार-सं., त्योहार, पर्व, पावनि, उत्सव। हि. तद्भव

ती

तीआ-विशे., त्रिगुण, तीन गुना (तीन तीआ नौ)। मै.

तीख-विशे., तीक्ष्ण, तेज। सं. तद्भव

तीज-सं., तृतीया तिथि मे होमऽवाला पर्व। हरितालो आदि। तृतीया तिथि। मै.

तीत-सं., तिक्त रस, अनाकर्षक रस। मै.

तीतब-क्रि., पानि सँ आर्द्र होएब। भीजब। मै.

ती ती ती-अव्यय, पक्षी कें बजबैक शब्द। मै.

तीन-सं., एक अंकक तेसर अंक।तीन एकाँइक अंक। मै.

तीन तेरह करब-क्रि., बल सँ (स्वार्थ राखि) परगोषी आ देयादी सम्बन्ध जोड़ब। मै.

तीव्र-विशे., तेज। सं. तत्सम

तीमन-सं., रसदार (लटपटी) व्यञ्जन। मै.

तीया-सं., सेवा। विशे., तेगुना। मै.

तीर्थ-सं., देव साधनाक पवित्र स्थान। सं. तत्सम

तीर-सं., वाण, शर। मै.

तीर-सं., किनार, तट। सं. तत्सम

तीर फिरब-क्रि., बिजुरी जकाँ मस्तिष्क मे छिटकि कय ज्ञानशून्य होएब। मै.

तीरब-क्रि., नमराकय खींचब। मै.

तीरा-सं., सामयिक फूल विशेष। मै.

तीला-सं., कृत्रिम बनाओल मुहक तिल। मै.

तीस-सं., तीन दहाँइ शून्य एकाँइक अंक। मै.

तीसाँ-विशे., तीसक लगभग बैसवाला। मै.

तीसी-सं., १. तेलहन विशेष। विशे., २. तीस वर्षक बैस। ३. पूसक जाड़। (बीसी तीसी मकर पचीसी) मै.

तु

तुअ-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, सम्बन्ध कारक, तोहर। प्रयोग—"हन हन कर तुअ काता।" —विद्यापति। मै.

तुआएब-क्रि., अनायास खसाएब। मै.

तुइल-सं., कोमल आ छिम्मरिसन फल विशेष। मै.

तुइन-सं., वनस्पति विशेष, फल विशेष। मै.

तुक-सं., परस्पर मेल। पद्यक अन्तिम चरण सभक समानता। मै.

तुकबन्दी-सं., पद्यक चरणक अन्तिम शब्दक दोसर चरणक अन्तिम शब्दक संग मेल करबैत रचना प्रकार। मै.

तुच्छ-विशे., अत्यन्त हीन, हल्लुक, नगण्य। सं. तत्सम

तुतना-सं., कण्ठ सँ स्वर बहराइक यन्त्रवाला अंगक वृद्धि। मै.

तुतीया-सं., रसायन द्रव्य विशेष। मै.

तुन्न-विशे., मुह फुलल। मै.

तुन्न होएब-क्रि., मुह फुलीने मात्र सँ क्रोध प्रकट करब। मै.

तुनकब-क्रि., कनेकें मे मर्नमन क्रोधित भ' जाएब। मै.

तुनक बुद्धि-विशे., भीतरैं भीतर बिगड़ि जाइक बुद्धिवाला। मै.

तुम्मा-सं., अत्यन्त विस्तृत आशयवाला फूलल पेटवाला वासन। सुखाएल सजमनिक फोंक। मै.

तुम्मी-सं., शरीर सँ लेहु खींचैवाला यन्त्र। मै.

तुमरी-सं., फूलल पेटवाला साधारण आ छोट मन बाजा, सारंगी। साधु सभक बाजा। मै.

तुमौड़ा-सं., गोल मोल फूलल मोटरी, वासन आ पेट आदि। मै.

तुरंं-विशे., तुर्क, विजातीय रंग धातक मेल खिसिएल। मै.

तुरछब-क्रि., विशेष रूपक बिगड़ब, तमसाएब। मै.

तुरन्त-अव्यय, अत्यन्त शीघ्र। मै.

तुरभरा-विशे., तूर भरल प्राचीन कालक अंगा। ओढ़न। मै.

तुरही-सं., शंख जकाँ ध्वनि करैवाला विशेष बाजा। मै.

तुराइ-सं., तूर भरल ओढ़ना, शीरक, रजाइ। मै.

तुरिया-विशे., एकसन बैसक संगी। सहचर। मै.

तुरुक-विशे., तुर्क जातिक लोक, तुर्क। उ. तद्भव

तुरुछाह-विशे., विशेष रूपेँ तमगाइवाला। मै.

तुरुम-सं., पोथी आदि विशेष भारी वस्तु रखैवाला बड़का बड़का बकसा। मै.

तुरौरा-सं., तूर भरल छोट बच्चाक छोट गद्दी। मै.

तुल-विशे., समान, सदृश, एकरंग। सं. तत्सम

तुल-सं., प्रस्तुत। राशि विशेष। मै.

तुलना-सं., उपमा, समानता, मिलान। सं. तत्सम

तुलब-क्रि., उद्यत होएब। प्रस्तुत रहब। मै.

तुलसी-सं., औषध विशेष सं. तत्सम

तुला-सं., तराजू। तौलैक बासन। सं. तत्सम

तुलाएब-क्रि., प्रस्तुत होएब। वृत्त रहब। प्रयोग—“दामिनि आबि तुलाएल रे।” —विद्यापति। मै.

तुलादान-सं., तुला पर चढ़ि अपन बराबरि वस्तुक दान। मै.

तुलिया-सं., चित्र बनबैक हेतु बनल छोट कुच्ची। मै.

तुष्ट-विशे., तृप्त, अघाएल। सं. तत्सम

तुषार-सं., पाला, बर्फ, ओस कण। सं. तत्सम

तुसारी-सं., मकर संक्रान्ति सँ एक मासधरि प्रभात काल मे कुमारि कन्याक गौरी पूजन। मै.

तू

तूअब-क्रि., बिना कोनो कारण गाछ सँ अपनें फड़क झरि झरि खसब। नक्षत्रक प्रवेश समयक कम सम वर्षा भ' क' अशुभ लक्षण होएब। मै.

तूनब-क्रि., सड़ल तूर केँ नोचि नोचि अलग करब। मै.

तूमब-क्रि., बाड़ (तुरुक) फड़क फाँक सँ तूर छोड़ा कय पीर बनबैक हेतु पातर करब। मै.

तूर-सं., कपास, कार्पास, रुई, तूल। सं. तद्भव

तूर-विशे., एक वयसवाला। मै.

तूल करब-क्रि., अपना मत पर लाएब। प्रस्तुत करब। मै.

तूस-सं., टूस, विशेष प्रकारक ऊनी ओढ़ना। अं. तद्भव

तृ

तृण-सं., घास, दूभि। सं. तत्सम

तृतीय-विशे., तेसर। सं. तत्सम

तृतीया-सं., पक्षक तेसर तिथि। सं. तत्सम

तृप्त-विशे., अघाएल। सं. तत्सम

तृप्ति-सं., अघान, मनक भरब। सं. तत्सम

तृष्णा-सं., कामनाक विस्तार। सं. तत्सम

तृषा-सं., पियास, इच्छाक शाखा प्रशाखा। सं. तत्सम

ते

तेँ-अव्यय, ओहि कारणेँ। मै.

तेआगब-क्रि., छोड़ि देब। वर्जित करब। मै.

तेकट-सं., तीन दिशुक आपत्ति तथा काजक संकट। मै.

तेकड-सं., तीन संख्याक अशुभ वस्तु। मै.

तेकठी-सं., १. करीन ठाढ़ करै मे तीन बाँसक द्वारा आधार बनबैक सामग्री। तीन बाँसक आधार सामग्री। २. प्रेतक अर्थक तीन काठी। मै.

तेकमियाँ-विशे., तीन कामि (आधारवाला काठी) सँ बनल। तीन नोकवाला अस्त्र। मै.

तेकर-निश्चयवाचक सर्वनाम 'से' शब्दक सम्बन्ध कारकक रूप। मै.

तेकरा-निश्चयवाचक सर्वनाम 'से' शब्दक कर्मक रूप। मै.

तेकुना-सं., व्यञ्जन योग्य स्थूल कन्द। मै.

तेकुरी-सं., तेसर अंश। मै.

तेकुशा-सं., तीन कुशक समूह। मै.

तेख-सं., आनि भरल क्रोध। मै.

तेखार-सं., एकहि बेर एके खेतक तीन जोत। मै.

तेखारब-क्रि., (लाक्षणिक) दबल बात केँ खोधि खोधि उघारब। खेत केँ तीन चास करब। मै.

तेखी-सं., आनि भरल क्रोधक प्रकृति। मै.

तेखुर-सं., तिखुर, औषधिस्वरूप पौष्टिक। मै.

तेंगा-सं., गुप्ती, छड़ीक भीतर घालक अस्त्र। मै.

तेगार-सं., तीन ठाम करीन लगौने पटबैक जोगाड़। मै.

तेगुर-विशे., तीन रहस्यमय काज। मै.

तेगुना-विशे., तीन गुना, तेबर। मै.

तेगुनियाँ-विशे., तीन गुन (भत्ता) वाला डोरी। मै.

तेड़ा-सं., तृतीय यात्रा । मै.

तेज-सं., प्रकाश । विशे., तीव्र । मै.

तेज करब-क्रि., पिजाएब, चोख बनाएब, शान चढ़ाएब । तीव्र बनाएब, बढ़ाएब । मै.

तेजगर-विशे., अधिक तीव्र बुद्धिवाला, विशेष शीघ्र कटैक योग्य पातर धारवाला अस्त्र । झटकल गति । मै.

तेजपात-सं., मसालाक सुगन्धित पात । मै.

तेजब-क्रि., १. तेज बनाएब, तीव्र बनाएब । २. त्याग करब । मै.

तेजबन-सं., काँटवाला छड़ीक योग्य मोट बनैया लत्तीक काठ । मै.

तेजाब-सं., तीक्ष्ण (जलनशील) द्रव । मै.

तेजी-सं., तीव्रता, बुद्धिक प्रखरता । मै.

तेठठ-सं., तीन विभिन्न स्थान परक घर । मै.

तेढ़ी-सं., परम्परागत कुलाभिमान । मै.

तेतर-विशे., १. तीन बेटी पर जनमल बेटा । प्रयोग-"तेतरि बेटी भीतलि तेतर बेटा बांतर ।" २. तीन खुदरा सँ उठैवाला पचीसीक गोटी । मै.

तेतरि-सं., इमली (खटाइ) । मै.

तेतलिया-सं., बैलगाड़ीक विशेष अंग । मै.

तेताइ-सं., बनैया घास । मै.

तेताला-विशे., तीन तालवाला गीत । मै.

तेना-अव्यय, तथा, ताहि प्रकारें । मै.

तेनु-सं., वनस्पति विशेष । मै.

तेनुआँ-सं., बाघक आकार एवं प्रकृतिवाला बाघ सँ छोट हिंसक पशु । मै.

तेपख-विशे., तीन पखक अवधि मे होम'वाला । मै.

तेपटा-सं., तीन भाग मे कयल एक भाग । मै.

तेपत्ती-विशे., तीन पत्तीवाला गाछ । मै.

तेफसिला-विशे., तीन फसिल उपजैवाला खेत । मै.

तेबखा-सं., उड़ीद, केलाइ । मै.

तेबर-विशे., १. तीन गुनवाला । सं., २. विरोधी कोधी भावक द्वारें उग्रता । मै.

तेबराएब-क्रि., तीन गुन बनाएब । मै.

तेबारा-अव्यय, तीन बेर होम'वाला एके काज । मै.

तेबासि-विशे., तीन तीन साँझक राखल पुरान । मै.

तेमहुर-अव्यय, ताहि दिस । मै.

तेमाही-विशे., तीन मासक अवधि मे होम'वाला । मै.

तेरस-सं., त्रयोदशी । मै.

तेरह-संख्या, एक दहाइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तेरहम-विशे., पूरणार्थक विशेषण, तेरह संख्या मे पड़ैवाला । मै.

तेरहम विद्या-सं., (लाक्षणिक) मारि, पिटाइ । मै.

तेरहा-विशे., तेरह दिन पर श्राद्धक रीतिवाला । मै.

तेरही-सं., १. तेरह दिन पर श्राद्धक अवसान । २. तेरह पुरुषाक प्रति उत्सहन । मै.

तेरानबे-संख्या, नौ दहाइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तेरासी-संख्या, आठ दहाइ तीन एकाँइक अंक । मै.

तेल-सं., स्निग्ध द्रव पदार्थ । मै.

तेलकसैं-सं., तेल आ कसैं कोनो विवाह सम्बन्धी काज मे पठाओल जाइवाला विधि । मै.

तेल खरि-सं., तेलक संग खरि कें मृतक के उत्सर्ग करैक विधि । मै.

तेलगर-विशे., तेल भरल, तेल मिलाओल । मै.

तेलचट्टा-सं., १. मेही कीड़ा, दंशक जीव । २. तेल सँ मैल । मै.

तेलचिट्ठ-विशे., तेलक द्वारें चिटचिट करैवाला । मै.

तेलचिटाह-विशे., तेल सँ चिटचिट लगैवाला । मै.

तेलट-सं., तीन घरक सामञ्जस्य सँ कन्या परक आदान प्रदान । मै.

तेलबोरा-विशे., तेल मे बुबा क' रखैवाला एवं रहैवाला । मै.

तेल मरीच-सं., तेल मे मरीच मिला क' परसौतीक श्राद्धक औषध । मै.

तेलहन-सं., तेल उत्पन्न करैवाला अन्न । मै.

तेलही-विशे., तेल मे छानल पकवान, मधुर । मै.

तेलाइन-विशे., तेल लागल तथा तेलक स्वादवाला । मै.

तेलाएब-क्रि., तेल मे भिजाएब आ तेल मे मिलाएब । मै.

तेलाढ़ि-सं., पोखरि झाँखरिक पसरैवाला घास विशेष । मै.

तेलाह-विशे., तेल भरल, तेल मिसल । मै.

तेलि-सं., तेल पेरैक व्यवसायी जाति । मै.

तेलि बभना-विशे., तेलि जातिक पुरोहिती करैवाला ब्राह्मण । मै.

तेलियारी-सं. तेलि जातिक बस्ती, टोल । मै.

तेलिया सांप-सं., पातर चाली जकाँ छोट साँप । मै.

तेलियाह-विशे., (लाक्षणिक) अत्यधिक कृपण, उचितो खर्च सँ कतराइवाला । मै.

तेली-विशे., तेलि जातिवाला । स्त्री० तेलिन । मै.

तेसक्खा-विशे., तीन लोकक साक्षीवाला । मै.

तेसर-विशे., तीन संख्यावाला । मै.

तेसारि-विशे., तीन फसिलवाला खेत । मै.

तेहइआ-विशे., तीन दिन पर अबैवाला ज्वर आदि । मै.

तेहट-विशे., अलग अलग तीन स्थानक काज । मै.

तेहत्तरि-संख्या, सात दहाइ तीन एकाइक अंक । मै.

तेहन-सं., तीन प्रकारक अन्नक समुदाय । (खेत मे)। मै.

तेहन-अव्यय, ओहिना, ओहेन, ओहि प्रकारक । मै.

तेहना-विशे., ताहि प्रकारवाला । मै.

तेहनी-विशे., ताहि प्रकारक स्त्री । मै.

तेहरा-सं., एक आँच सँ तीनटा बर्तन मे पाक होइक हेतु तीन पुता (मुह) वाला भूमि मे कोड़ल चूलहा। मै.

तेहराएब-कि., कोनो काज कें तीन बेर सँ पूर्ण वा सम्पन्न करब । मै.

तेहराओन-सं., जे काज एकै बेरें सम्भव रहए तीन बेरें तकरा करैक पड़ने काजक वृद्धि । मै.

तेहराठ-सं., एकैठाँ सँ भ' सकैवाला काजक हेतु तीन तीन ठाम सँ होइक सम्भावना । मै.

तेहराइ-विशे., तीन बेर लगने भेनिहार । मै.

तेहलला-विशे., निरपेक्ष तेसर लोक । मै.

तेहाइ-विशे., तीन भाग सँ एक भाग । मै.

तेहियाएब-कि., देखू—"तहियाएब" । मै.

तेहैया-विशे., देखू—"तेहइआ" । मै.

तै

तै-निश्चयवाचक सर्वनामक अव्यय ताहि । प्रयोग—"जै गाम मे मुर्गा नै बाजय तै गाम मे प्रात नै होए की ।" मै.

तैं-अव्यय, ताहि हेतु । ओहि ले । मै.

तैं-सं., निर्णय, फरिछौट । तय । प्रयोग—"कथा तैं (तय) भ' गेल किने ।" मै.

तैओ-अव्यय, तथापि, तदपि, तहुवन । मै.

तैंतालीस-संख्या, चारि दहाइ तीन एकाइक अंक । मै.

तैंतीस-संख्या, तीन दहाइ तीन एकाइक अंक । मै.

तैलाङ्ग-सं., आन्ध्रप्रदेश । तैलङ्ग । सं. तत्सम

तैस-संख्या, दू दहाइ तीन एकाइक अंक । मै.

तैंस-सं., स्वाभिमान सँ उत्पन्न क्रोध । हि. तत्सम

तो

तों-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक कर्ता—सुनैवाला समक्षक अनादरणीय व्यक्ति । मै.

तोख-सं., मन रखैक चेष्टा । मै.

तोड़-सं., १. तोड़ैक सीमा । २. बीच मे क्रियाक तथा गतिक मन्दता । मै.

तोड़ खाएब-कि., बीच बीच मे रुकि जाएब । मै.

तोड़नि-सं., तोड़ैक क्रम । मै.

तोड़ब-कि., कथुक गाछ सँ फल फूल आ पत्ती कें अलग करब । मै.

तोड़ लायब-कि., अन्त होएब । समाप्त होएब । मै.

तोड़ा-विशे., तोड़ैवाला । मै.

तोड़ा-सं., कसिकय भरल मोटा, झोरा आ बोराक अधिकता । रुपैया रखैक झोरा । मै.

तोड़ाइ-सं., तोड़बैक लगातार काज । मै.

तोड़ाएब-कि., अनका सँ तोड़बैक काज करब । मै.

तोड़ा भरब-कि., (लाक्षणिक) इच्छानुसार बेरोक टोक ल' लेब । । मै.

तोड़िया-विशे., नीक जकाँ विशुद्धि भेला पर (दूध देब बन्न भेला पर) गर्भ धारण करैवाली विशेष महिस । मै.

तोड़ी-सं., सरिसो (गोट) क आकारवाला कारी तेलहन । मै.

तोड़ुआ-विशे., तोड़ि क' आनलवाला । मै.

तोड़ें तोड़ें-अव्यय, रुकि रुकि कय । मै.

तोतराएब-कि., बजैक काल बोल लागब । मै.

तोतराह-विशे., बोल लगने प्रवाहित रूपें वा रुकि रुकि बजैवाला । मै.

तोता-सं., सुगा पक्षी । मै.

तोन-सं., धोंधि, तोन्द । हि. तद्भव

तोनी-सं., पुरुष मूत्र मार्गक अगिला भाग । मै.

तौनुआ-विशे., अंगक कोमलतम भाग । मै.

तोप-सं., विशाल बारुदवाला मारक अस्त्र । मै.

तोपची-विशे., तोप छोड़ै मे निपुण । मै.

तोपल्तोप-सं., आवश्यकता सँ अधिक पूर्ति । मै.

तोपनि-सं., १. झापनि । २. आवश्यकता सँ अधिक पूर्ति । मै.

तोपनी-सं., दावनि । मै.

तोपब-क्रि., १. अनेक वस्तु सँ दावब । २. बहुत प्रकार सँ पूर्ति करब । मै.

तोपाएब-क्रि., १. दवाएब । २. अधिकता सँ पूर्ति कराएब । मै.

तोपान-सं., झाँपि क' दबा दैक चेष्टा । मै.

तोपुआ-विशे., सघन कय झाँपवाला । मै.

तोभ-सं., तीव्रताक गति भंग, गति रुद्धता । मै.

तोर-सं., १. वेग, झोंक । २. तोहर । मै.

तोर मारब-क्रि., रहि रहि झोंक मारब । मै.

तोरी भला के-अव्यय, विस्मय आदि मे पूरक । मै.

तोला-सं., रुपैया बराबरीक मान । मै.

तोष-सं., मनक तृष्णाक अभाव । मै.

तोसक-सं., तूर सँ भरि क' बनाओल ओछाओन । गद्दी । उ. तत्सम

तोसखाना -सं., अन्तर्गभंक गुप्त भण्डार । मै.

तोह्-सं., सीमा धरि समाप्ति । मै.

तोहर-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक सम्बन्ध । मै.

तोहरा-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक कर्मकारक । मै.

तोहि-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक कर्मक रूप । मै.

तोहें-मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामक कर्त्ता । प्रयोग– "तोहर सरिस एक तोहें माधव ।" –विद्यापति । मै.

तौ

तौजी-सं., जमीन्दारीक विशेष संख्या चिह्न । मै.

तौनी-सं., उपर देह परक दोसर वस्त्र, उत्तरीय चद्दरि । मै.

तौल-सं., अन्न आदि कें बाटक अनुसार जोख । मै.

तौल जोख-सं., बारम्बार वस्तु जोखैक कार्यक्रम । मै.

तौलब-क्रि., वस्तु कें तराजू पर बाटक बराबरि करब । मै.

तौला-सं., बड़का माटिक रन्हा बासन । भाँड़ । मै.

तौलाइ-सं., जोखि जोखि कै दैक क्रम । मै.

तौलिया-सं., फरवाला मोटगर गमछा । मै.

थ

थक्का-सं., द्रव अर्थात् दूध सन वस्तुक फटैक क्रम मे जमि क' घन बनल अनेक खण्ड । मै.

थक्की-सं., कागज पत्र समक तहियाओल भारी गुन्छा । तहियाओल कागजक गौल । मै.

थकथकाएब-क्रि., जमल सन भ' जाएब । मै.

थक द'-अव्यय, एकाएक स्तब्ध भ' क' । मै.

थकनी-सं., अत्यन्त परिश्रमक प्रभाव । मै.

थकमकाएब-क्रि., हठात् गति कें रोकि तारतम्य मे पड़ब । मै.

थकरब-क्रि., केश कें ककवा सँ संयत करब । मै.

थकाएब-क्रि., परिश्रान्त क' देब । मै.

थकान-सं., परिश्रम सँ उपजल क्लेश । मै.

थकियाएब-क्रि., एकठो थाक लगाकय राखब । मै.

थकुचनि-सं., निर्दयता सँ पिटाइ । मै.

थकुचब-क्रि., चूरि कय छिन्न भिन्न करब । मै.

थकुचा-विशे., चूरि कब अंग भंग कयल । मै.

थतमतएब-क्रि., हठात् अनिश्चित दशा मे रुकि जाएब । मै.

थथकारब-क्रि., बच्चाक बोली जकाँ थाजि बच्चा कें दुलारब । मै.

थथ मारब-क्रि., ककरो सब प्रकारक ध्यान राखि सम्हारैत पालन करब । मै.

थन-सं., स्तन, अडुआर । ऊध । मै.

थनैल-सं., दूधक विकार सँ उत्पन्न स्तनक फूलि क' वेदना । मै.

थप्पा-सं., हाथ मे रंग लगा क' पंजाक चिह्न । मै.

थपकाएब-क्रि., हल्लुक हाथक स्पर्श क' क' आराम आ प्रोत्साहन देब । मै.

थपकी-सं., हल्लुक हाथ कें मारि क' स्नेहक अभिव्यक्ति । मै.

थपड़ाएब-क्रि., थापड़ सँ मारैक सिलसिला राखब । मै.

थपड़ी-सं., हाथ पर हाथ मारि शब्द करब । मै.

थपड़ी देब-क्रि., उपहास मे दुहु हाथक संयोग कय शब्द बहार करब । मै.

थपड़ी पड़ब-क्रि., कोनो बात कें लोक प्रिय होइक प्रमाण स्वरूप सामूहिक हाथक शब्द होएब। मै.
थपथप-सं., स्नेह उत्साह बढ़बैक हल्लुक हाथ सँ बारम्बार मारि। मै.
थपथपाएब-क्रि., स्नेह उत्साह वा उत्तेजित कर' ले ककरो देह पर बारम्बार हल्लुक हाथ सँ बारम्बार मारब। मै.
थप द'-अव्यय, हल्लुक हाथक मारि द' क'। मै.
थपना-सं., स्थापना। सं. तद्भव
थपब-क्रि., १. थप्पा द' क' चिह्न बहार करब। २. थप्पा द' क' अपन अधिकार बनाएब। मै.
थपरथपर-सं., कोमल वा सरस वस्तु पर हल्लुक हाथ मारि बारम्बार बहराएल शब्द। मै.
थभकनि-सं., जैं तैं ठाँ असावधान रूपें बैसि जाइक काज। मै.
थभकब-क्रि., बेढंगें कत्तौ पसरि क' बैसब। मै.
थभका-विशे., हरदम गूँह मूत पर बैसि रहैवाला। मै.
थभकाएब-क्रि., यत्र तत्र गूँह मूत पर बैसाएब। मै.
थभ द'-अव्यय, अचानक अव्यवस्थित रूपें। मै.
थम्ह-सं., स्तम्भ, केराक गाछक मोटका अंग। मै.
थम्हगर-विशे., अधिक काल धरि टिकैवाला। मै.
थम्हब-क्रि., टिकब, अँटकब। स्थिर होएब। मै.
थम्हा-विशे., द्रव वस्तुक जमि कय बनल गोला। मै.
थम्हाएब-क्रि., पकड़ाएब, धरैले देब। अँटकाएब। मै.
थर-सं., १. माछक पैघ बच्चा। २. स्त्रीक गर्भ। प्रयोग—"गर के लगले थर।" मै.
थरथर-अव्यय, स्वाभाविक रूपें अस्थिर भ' क'। मै.
थरथराएब-क्रि., स्वाभाविक रूपें अस्थिर भ' क' काँपब। मै.
थरथरी-सं., अंगक स्वतः भीतर सँ अस्थिरता। मै.
थरथरौआ-विशे., थरथर करबैवाला। मै.
थर बान्हब-क्रि., अंग मे वा अंगक गोलाकार भ' क' फूलब। मै.
थरराएब-क्रि., भीतर सँ डरि क' स्तब्ध होएब। मै.
थरि-सं., माछजाल के बान्हल जाइवाला स्थान। मै.
थरिआएब-क्रि., जड़ि सक्कत होएब। मै.
थरि बान्हब-क्रि., थुर आ स्तन आदि अंग वा अंग विकारक स्थान बनब। मै.
थरिया-सं., छोट थारी। मै.
थरी-सं., स्थली, कृत्रिम स्थान। मै.
थल्ला-सं., अस्थायी रूपें बीज कें भूमि मे देब आ अस्थायी रूपें बीजक अंकुर कें लगाएब। मै.
थल-सं., स्थान, निश्चित ठाँम। मै.
थल कमल-सं., फूल विशेष। मै.
थलगर-विशे., थाल सँ भरल, थालवाला। थाल जकाँ माटिवाला। मै.
थलथल-विशे., १. पैर भँसैवाला। २. अध जमल दही। मै.
थल थलाएब-क्रि., १. दहीक जमबैक कम होएब। २. हल्लुक हाथें मारि मारि कय, स्नेह, दुलार आ प्रोत्साहन बढ़ाएब। मै.
थलियाएब-क्रि., रोपल गाछक जड़ि कें कोड़ि माटि हल्लुक बनाएब। मै.
थस मारब-क्रि., कोनो काज मे पाछू हँटि जाएब। मै.
थस लेब-क्रि., मन आ शरीरें असमर्थ भ' जाएब। मै.
थहियाएब-क्रि., थाह लैक चेष्टा करब। मै.

था

थाक-सं., १. विशेष परिमाण मे संञ्चित वस्तु, जमा कयल पदार्थ। २. परिश्रम। मै.
थाकनि-सं., श्रान्ति सँ उपजल शरीर कष्ट। मै.
थाकब-क्रि., परिश्रमक उपरान्त कष्ट होएब। मै.
थाकी-सं., छोट छोट आकार मे जमा कयल वस्तु। मै.
थाती-सं., गुप्त क' क' जमा कयल धन। मै.
था था-अव्यय, तबला आ ढोलक आदिक बोल। मै.
थाथा थैया-अव्यय, तबला आदि बाजनक बोल। मै.
था थैया-अव्यय, छोट बच्चा कें अपना भरें ठाढ़ आ चलन करैक प्रोत्साहनक शब्द। मै.
थान-सं., १. निश्चित माप मे तहियाएल कपड़ाक थेंट। २. देवताक पवित्र स्थान। मै.
थाना-सं., आरक्षीक केन्द्र। मै.

थाप-सं., १. निश्चय, ठेकान । २. मोहर, हाथ वा आने कोनो वस्तुक निजी चिह्न । मै.

थापक-विशे., स्थापक, कथुक स्थापना करैवाला । सं. तद्भव

थापड़-सं., हाथक पंजा पसारि कऽ मारिक प्रक्रिया । मै.

थापब-क्रि., अपन अधिकार बुझवैक चिह्न देब । मै.

थापी-सं., १. विशेष पर्वक शुभ अवसर पर सिन्दूर पिठार सँ हाथक चिह्न । २. पीटैवाला चाकर मुङरी । मै.

थाम्हब-क्रि., भार सम्हारि लेब । मै.

थार-सं., बड़का थारी । विशेष भोजन पात्र । मै.

थारी-सं., छोट पैघ सब प्रकारक भोजन पात्र । मै.

थारीपान-सं., वरक विवाहक समय पैघ थारी मे लागल पान सुपारी जनौ आदि श्रेष्ठ स्त्री वर्गक सामूहिक रूपें देवाक मिथिलाक व्यवहार । मै.

थाल-सं., कादो, जल घुलल माटि । मै.

थाला-सं., अस्थायी रूपें बीज वा अंकुर कें भूमि मे गाड़ब । मै.

थाह-सं., १. जल वा हृदयक अन्तस्तलक पकड़ । २. विस्तृत रूपें त्यागल मल । मै.

थाह पाड़ब-क्रि., बेसी दूर सँ पसारि मल त्यागब । मै.

थाहब-क्रि., १. अन्तस्तल पकड़ब । २. जाँचि कऽ डेग धरब । मै.

थि

थिकथि-क्रि., मान्यलोकक होइक वर्तमान क्रिया । मै.

थिकनि-क्रि., मान्य व्यक्तिक परोक्षवर्ती वस्तुक अस्तित्वक क्रिया । मै.

थिका-क्रि., मान्य व्यक्तिक प्रति होइक क्रिया । मै.

थितगर-विशे., सम्पत्तिशाली । मै.

थिर-विशे., स्थिर । सं. तद्भव

थिरक-सं., नृत्यक सन्दर्भ मे पाद प्रक्षेप । मै.

थिरकब-क्रि., नृत्यक रूप मे पाद प्रक्षेप करब । मै.

थिराएब-क्रि., १. स्थिर होएब । २. माल बकरीक मैथुनक इच्छा प्रकट करब । मै.

थिरौसन-सं., निश्चय रूपक स्थिरता । मै.

थी

थीक-क्रि., परोक्ष आ अपरोक्ष अनादरक क्रिया । मै.

थीत-सं., स्थिति । सं. तद्भव

थीतवृत्ति-सं., सम्पत्ति आ उद्योग । मै.

थीर-विशे., स्थिर । अचंचल । मै.

थु

थुक थुकाएब-क्रि., बारम्बार थूक फेंकैक प्रक्रिया करब । मै.

थुकना-सं., थूक फेंकैक पात्र । पिकदानी । मै.

थुक्कमथुक्का-सं., एक दोसरा पर थूक फेंकि फेंकि झगड़ा । मै.

थुकम फजीती-सं., मुह सँ थूक बहार कय परस्पर गंजन । मै.

थुकरब-क्रि., थूक जकाँ मुहक वस्तु कें फेंकब । मै.

थुकहा-सं., एक घास विशेष । विशे., अधिक थूक फेंकैवाला । मै.

थुकारब-क्रि., १. मुहक वस्तु कें थूक जकाँ फेंकब । २. (लाक्षणिक) घृणा सँ ककरो नामें थूक फेंकि तिरस्कार करब । मै.

थुली-अव्यय, कोनो खेलक बीच खेल सँ व्यक्तिगत विराम लेबाक शब्द । मै.

थुथना-सं., मुहक अगिला भाग (मनुष्यक हेतु) । मै.

थुथनाएब-क्रि., माल जालक वासना सँ कामोद्दीपन करैक चेष्टा करब, वा नेन्ह परकक दूध पीबैक चेष्टा करब । मै.

थुथुन-सं., मालजालक मुह । मै.

थुथुरमुहाँ-विशे., मालजाल सन अप्रिय मुहवाला लोक । मै.

थुनब-क्रि., १. नीक जकाँ पीटब । २. जहल मे सक्कत कऽ कऽ बन्न करब । मै.

थुम्ह-विशे., स्थूल देहक द्वारें चलै फिरै मे असमर्थ । मै.

थुम्हा-सं., माटि वा पाथरक बनाओल गोल । मै.

थुरब-क्रि., १. थकुचब । २. पीटब । मै.

थुराइ-सं., विकट रूपक मारि । मै.

थुरीथुरी करब-क्रि., १. नीक जकाँ थकुचि कऽ थुरब । २. कोनो दोष (अपराध) पर वचन सँ लज्जित करब । मै.

थुलथुल-विशे., अधिक मोट भेला सँ संचार करै मे अक्षम । मै.

थुलथुली-सं., देहक अधिक मोटाइ। मै.

थुसकुन मारब-क्रि., यत्र तत्र पसरि क' बैसि जाएब। मै.

थुस द' बैसब-क्रि., लाज संकोच वा डर सँ जाही ताही अवस्था मे पसै तसै बैसि जाएब। मै.

थुसमाथुम्ह-विशे., नहि टकसैक ध्येय सँ अचल भ' क' बैसल। मै.

थुहथुह करब-क्रि., मोट शरीर सँ दौड़ैक चेष्टा मे चलैक द्वारें विकृत चेष्टा होएब। मै.

थू

थू-अव्यय, थूक फेंकैक शब्द। मै.

थू करब-क्रि., १. (लाक्षणिक) कोनो क्रिया आ बातक त्यागक प्रतिज्ञा करब। २. थूक अर्थात् मुहक वस्तु फेंकब। मै.

थूक-सं., मुहक जमा रस। मै.

थूक चाटब-क्रि., १. (लाक्षणिक) अपराधक दण्ड स्वरूप अपने फेंकल थूक कें चाटब। २. (लाक्षणिक) अपने निरसल वस्तु कें फेर अपनें अपनाएब। मै.

थूक देब-क्रि., (लाक्षणिक) घृणा आ अक्षम्य अपराध सँ तिरस्कारपूर्वक त्याग करब। समाज मे अधम सिद्ध करब। मै.

थूथू करब-क्रि., १. अधिक थूक फेंकैक अभ्यास राखब। २. सब दिश सँ तिरस्कृत बनाएब। मै.

थूरब-क्रि., विशेष रूपक मारि देब। मै.

थे

थेथर-विशे., तिरस्कृतो भेला पर अपन स्वार्थ ले डटल रहब। मै.

थेथरिया देब-क्रि., अपमानो सहि स्वार्थ सिद्धि केर प्रतीक्षा करैत रहब। मै.

थेहगर-विशे., शरीरें काजक वृद्ध। स्त्री० थेहगरि। मै.

थै

थै थै-अव्यय, तबलाक बोल विशेष। मै.

थै थै होएब-क्रि., कोनो वस्तु यथेष्ट होएब। विशेष रूपें अर्थात् पुष्ट होएब। मै.

थैर-सं., स्थान। मै.

थैर बान्हब-क्रि., कोनो अंगक विकार सँ थाक दिस सटकत बनैत फूलब। मै.

थैला-सं., वस्तु रखैक थैला, झोरा। मै.

थैली-सं., गुप्त रूपक धन राशिक पोटरी। मै.

थैहरि लागब-क्रि., यथेष्ट भ' क' पूर्ण होएब। अगणित जमा होएब। मै.

थो

थोक-सं., एक डंटी मे असंख्यक स्थिति। मै.

थोका-सं., गुच्छा, एकत्रित सघनता, एक नाल मे असंख्यक स्थिति। मै.

थोड़-विशे., कम, अल्प। मै.

थोड़ेक-विशे., कम परिमाणवाला। मै.

थोँथ-विशे., बिन दाँतवाला। मै.

थोथरब-क्रि., बिना दाँतक प्रयोग कय अधिक चुम्बन क्रिया सँ बच्चा कें अकछाएब। मै.

थोँथा-विशे., दन्तहीन लोक। मै.

थोँथी-सं., चचन सँ प्रभाव दैवाला मुह। मै.

थोपब-क्रि., १. कोनो सरस वस्तु कें अधिक दाबब। २. (लाक्षणिक) आक्षेप वा आरोप लगाएब। मै.

थोपी-सं., १. थोपैक प्रक्रिया। २. मुह मुनैक वस्तु। ३. फुदनावाला खोपाक डोरी। मै.

थोपुआ-विशे., थोपि थोपि क' बनाओल। मै.

थोभ-सं., स्तोभ, अवरोध, समाप्ति, अन्त। सं. तद्भव

थोभ लागब-क्रि., पूर्ति भ' क' अन्त होएब। मै.

थोभ लगाएब-क्रि., बिरारक धानक बीआ उखाड़ि कय सघन कय रोपि क' खाउर लगाएब। मै.

थोभी-विशे., १. थीभ लगाओल धानक बीआ। २. धर्मक क' बैसनिहार। मै.

थोसथाम करब-क्रि., अनेक उपाय सँ झूक झगड़ा शान्त करब। मै.

थौ

थौआ-विशे., अंग अंग सँ टूटल, भग्न। मै.

थौक-सं., एकठाँ जमा कयल वस्तुक समूह। मै.

द्

दाव-विशे., कौलिक सम्पत्तिक अधिकारी, भागीदार। दायाद। सं. तद्भव

द्रव्य-सं., धातु (सोना चानी काँस ताम आदि)। सं. तत्सम

द्रव-सं., पघिलै आ बहैवाला पदार्थ। सं. तत्सम

द्रवण-सं., पघिलब, धमब । सं. तत्सम

द्रुपद-विशे., रक्षावाहिनी (स्काउट आदि) क प्रशिक्षित भेद । सं. तत्सम

द्वादशाह-सं., बारहम दिनुक श्राद्ध । सं. तत्सम

द्वादशी-सं., पक्षक बारहम तिथि । सं तत्सम

द्वार-सं., घरक अथवा आनयक आवाजाहीक बाट । सं. तत्सम

द्वारका-सं., तीर्थ विशेष । मै.

द्वेष-सं., पैर, कनारि । मै.

दऽ-अव्यय, हेतु, प्रसंग । प्रयोग—"हम हुनका दऽ तँ कहलौं । अपना दऽ अनैले कहने रही ।" मै.

द-सं., तवर्गक मध्य अक्षर दकार । मै.

द'-अव्यय, देबाक क्रिया । प्रयोग—"हुनका ई द' देबैन मोन पाड़ि क' ।" मै.

दक्ष/दच्छ-विशे., निपुण, प्रस्तुत । सं. तत्सम/सं. तद्भव

दक्षिण/दच्छिन-सं., प्रातःकाल सूर्यक मुहें ठाढ़ भेला सँ दहिना हाथक दिशा । सं. तत्सम/सं. तद्भव

दक्षिणा/दछिना-सं., कोनो कर्म (सेवा) क संतोषक द्रव्य अथवा पारिश्रमिक । सं. तत्सम/सं. तद्भव

दक-सं., तीव्र गन्ध, कटु गन्ध । मै.

द' क'-अव्यय, देबाक क्रिया क' लेला उत्तर । प्रयोग—"अपनो द' क' पलिताहि ।" मै.

दकचन-सं., असंयत रूपें अस्त्र वा कटु सँ आघातक चिह्न । मै.

दकचब-क्रि., अस्त्र सँ अन्धाधुन्ध अधे काटब । मै.

दकचमदकचा-सं., अनठेकान अस्त्रक चोटें काटैक स्थिति । मै.

दकचा-विशे., अनठेकान आधे काटल । मै.

दकड़ब-क्रि., कठोर आ सक्कत वस्तु दाँत सँ काटि काटि हूवर-हूवर खयने जाएब । मै.

दकदक-विशे., अधिक प्रकाशमान, तेज भरल । मै.

दग्ध/दगध-विशे., जरल, झरकाओल, ताप लागल । मै.

दंग-विशे., आश्चर्य चकित, मतिसुन्न । हि. तत्सम

दगदग-विशे., अधिक उज्ज्वल । मै.

दगदगाएब-क्रि., अधिक स्वच्छ कान्तिवाला होएब । मै.

दगदगी-सं., छविक स्वच्छता, लावण्यक निखार । मै.

दगधब-क्रि., (लाक्षणिक) पीड़ा अथवा क्रोध सँ मनक बिगड़ब होएब । मै.

दगधल-विशे., पीड़ा तथा क्रोधें भरल विकृत मनवाला । मै.

दगधी-विशे., सतत रोग शोक पीड़ा आ क्रोध सँ जरैत रहैवाली । एक प्रकारक गारि । मै.

दगनी-सं., दगैक हेतु बनाओल विशेष साधन । मै.

दगरिन-विशे., प्रसव करबैवाली चमैन आ नर्स आदि । मै.

दगा देब-क्रि., १. दोसराक द्वारा दाग देयाएब । २. धोखा देब, वचन द' क' मुकरि जाएब । मै.

दगा फँसा-सं., धोखा द' क' फँसबैक चेष्टा । मै.

दगाबाज-विशे., धोखा दैक प्रकृतिवाला । मै.

दड़फड़-सं., विशेष स्वार्थ साधैले दल सँ फँसाद उठा क' गरजि गरजि क' झगड़ा । मै.

दक्षिन बरिया/दक्षिनबारि-विशे., दच्छिन दिश रहै वा होइवाला । मै.

दक्षिनभर-अव्यय, दच्छिन दिशक वा दच्छिन दिश । मै.

दक्षिनाहा-विशे., दच्छिन दिशा मे भेनिहार आ रहनिहार । मै.

दछिनाही-विशे., दच्छिन दिशक बसात । मै.

दछिनाहुत-विशे., दच्छिन दिश दबल, दच्छिन दबि क' रहैत । मै.

दछिनी अड़ाँची-सं., छोट आकार एवं उज्जर सोंढ़वावाला अड़ाँची । मसाला । मै.

दड़रब-क्रि., जाँत सँ अन्न कें दू दालि अर्थात् दू फाँक बनाएब, खण्ड खण्ड करब । मै.

दड़रा-विशे., दड़रि क' खण्ड कयल अन्न । मै.

दड़री-विशे., बिन पीसल खण्ड खण्ड जाँत सँ कयल । मै.

दड़िमी-सं., १. दाड़िम दानाक रूप । २. धान विशेष । मै.

दड़ू-विशे., अभग्न, खण्डित नहि । मै.

दड़ूभर-विशे., बिन फाटल चिटल । मै.

दढ़ियल-विशे., बेसी बढ़ल दाढ़ीवाला । मै.

दण्ड-सं., १. लाठी । २. अपराधक सजै । सं. तत्सम

दण्डताल-सं., लोहक ठेङा सन बाजा । सं. तत्सम

दण्ड प्रणाम-सं., पट भ' क' नामा नामी सूति प्रणामक प्रक्रिया । सं. तत्सम

दण्ड प्रणाम देब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थ साधना स्वरूप अत्यन्त विनीत भ' क' सेवनियाँ करब । मै.

दण्डी-सं., १. दूनू पलड़ा लटकऔवाला तराजूक डण्टा। २. (विशे.) दण्ड धारण करैवाला सन्यासी। सं. तत्सम

दण्डी तराजू-सं., १. जोखैक साधन। २. तारा विशेष। मै.

दत्तक-विशे., पोसपुत्र। सं. तत्सम

दँतकट्टा-विशे., दाँत कटैक अभ्यासवाला। मै.

दँतकरारि-विशे., अनेर दाँत कर करबैत रहैवाला। (लाक्षणिक) बाझि क' आनक नीक सँ ईर्ष्या करैवाला। मै.

दँतकिच्च-विशे., १. दाँत पर दाँत बैसा क' बजैवाला, तमसाएवाला आ कोनो वस्तु के पकड़ि रखैवाला। २. असिद्ध रहैवाला अन्न। ३. बिन गुमल नै दाना झरैवाला अन्न। मै.

दँत खिस्टी-सं., दीनता सँ दाँत बहार कय प्रार्थना। मै.

दँत खिसोट-विशे., अनेरो दाँत बहार करैत हँसि क' लाज उड़बैक चेष्टा कयनिहार। मै.

दँतगर-विशे., शक्तिशाली अर्थात् सक्कत दाँतवाला। मै.

दँतनिपोड़-विशे., अनेर हँसैक मुद्रा मे दाँत बहार कय अपन मूर्खता प्रकट करैवाला। मै.

दँतब-क्रि., मावजालक दुद्धा दाँत टूटि कय दाँत होएब। मै.

दँतबाहि-सं., निरन्तर दाँतक वेदना। मै.

दँत मंजन-सं., दाँत मँजैक कृत्रिम औषध। मै.

दँतमनि-सं., दाँत मँजैक प्रक्रिया आ काठी। मै.

दँतारि-सं., दाँतक व्याधि। मै.

दँतियाएब-क्रि., (लाक्षणिक) दीनता सँ प्रार्थना करब। दाँत बहार क' क' प्रार्थना करब। मै.

दँतुल-विशे., उगल पैघ दाँतवाला। मै.

दँतुलाह-विशे., बेसी बहराएल दाँतवाला। मै.

ददरी-सं., चून सँ अतिरिक्त चून मे पैघ पैघ टुकड़ी। मै.

ददियासासु-विशे., पति वा पत्नीक पितामही। मै.

दड़ देब-क्रि., अधिकारक त्याग समेत दान करब। मै.

दन्तकथा-सं., परम्परा सँ अबैत विशेष प्रकारक खिस्सा। मै.

दन्तभर देब-क्रि., तत्परता राखब। मै.

दन्तरबा-विशे., पैघ पैघ दाँतवाला तथा दाँत बहराएल हाथी। मै.

दन्स-सं., अनिष्टक कामना भरल विरोध। मै.

दन्तार-विशे., पैघ पैघ दाँतक द्वारेँ भयंकर हाथी। मै.

दञ्न-सं., छेदवाला जल बहैक बाट। मै.

दन-अव्यय, अनिश्चय व्यंजक शब्द खण्ड। प्रयोग–"कोनदन, किदन, कथीदन आदि।" मै.

दन द'-अव्यय, अलक्षित रूपेँ उपस्थित भय। मै.

दनगर-विशे., दाना भरल, दानावाला। मै.

दनदन-अव्यय, तुरन्ते तुरन्त, एकक लगले दोसर। मै.

दनदनाएब-क्रि., कुशल आ प्रसन्नता सँ बढ़ैत रहब। मै.

दनपट-सं., पानि बहैक हेतु अस्थायी चाहा, नाली। मै.

दनफन-सं., उच्च स्वरेँ विरोध। मै.

दन्नही/द'नही-सं., बरुआ एवं नवविवाहिताक विधि पूर्वक जलाशय मे स्नान। मै.

दनाक द'-अव्यय, स्मरण, इच्छा आ चर्चा करैत मात्र ओही क्षण मे। मै.

दनाका-अव्यय, तत्क्षणात, तुरन्त, तेजी सँ। मै.

दनाइ/दनाड़-सं., १. भूर (बिल) द्वारा पानिक विशेष विस्तृत बहैत बाट। २. विशेष रूपेँ कपड़ा आदि मे फाट क' चिह्न। मै.

दनादन-अव्यय, लगले लागल, तुरन्ते तुरन्त। मै.

दनासब-क्रि., अस्त्र द्वारा सम्पूर्ण रूपक काटब। मै.

दनासी-सं., कोनो अस्त्रक धारवाला भाग। मै.

दनुज-सं., राक्षस। सं. तत्सम

दनूफ-सं., औषधक छोट वृक्ष, द्रोण। मै.

दनौड़ी-सं., धाटि मे पोस्तादाना मिला कय बनाओल अदौड़ी। मै.

दप-सं., प्रकाश सँ उत्पन्न ग्राह्। मन्थक तीव्रता। मै.

दपबऽ-अव्यय, अचानक प्रकट भ' क'। मै.

दपदप-विशे., अपन रंग मे अत्यन्त प्रकाशमान। मै.

दपाएब-क्रि., १. घात लगाएब। २. प्रकाशमान होएब। मै.

दफानब-क्रि., अनुचित ढंगेँ अधिकार करैक प्रयास करब। मै.

दफियाएब-क्रि., बल सँ अधिकार क' लेब। मै.

दब्बू-विशे., अनका सँ प्रभावित भय डरि क' दबि रहैक स्वभाववाला। मै.

दब-विशे., तुलना मे हीन। नीच, घटल। मै.

दबकब-क्रि., अवसर पर छिपि रहब। दबि (नुका) रहैक चेष्टा करब। मै.

दबकाएब-क्रि., नुका राखब। दबा क' ल' लैक चेष्टा करब। मै.

दबकान-सं., गुम क' लैक अमोघ चेष्टा। मै.

दबकाह-विशे., १. संकीर्ण बनल। २. लोकक समक्ष होइ सँ डरैवाला। मै.

दबंग-विशे., प्रभावशाली आ निर्भीक। मै.

दबदबा-सं., लोकक बीच मान्यता, समाज मे प्रभाव। मै.

दबदबाएब-क्रि., शासन मे राखब। अनुशासन सिखाएब। वश मे आनब। मै.

दबब-क्रि., १. घटब, कम होएब। २. ककरो लग हीन भ' क' वश मानब। मै.

दबाइ-सं., औषध। हि. तद्भव

दबाएब-क्रि., जाँतब। २. कम करब। ३. छाँटि काटि अपना मे मिलाएब। प्रयोग–"हमर खेत दबा लेलैन"। मै.

दबाओ-सं., बल सँ दबैक चेष्टा। दबाब। मै.

दबाचब-क्रि., दौड़ क' पकड़ि दबाएब। मै.

दबाड़-सं., जोर जोर सँ डाँटैक प्रक्रिया। मै.

दबाड़ब-क्रि., जोर सँ डाँटब। मै.

दबिया-सं., घास आ छोट छोट गाछ कटैवाला मोट धारवाला छोट खाँड़। मै.

दबियाएब-क्रि., कोनो वस्तु केँ चोरा क' दाबि राखब। मै.

दबिला-सं., भारी आ टेढ़ धारवाला खाँड़। मै.

दबीज/दबीजगर-विशे., अधिक भारी। मै.

दबैठ-विशे., संकीर्ण, जाँतल स्थान। मै.

दबैल-सं., चारू दिश सँ अनेक रूपेँ दाबल अथवा जनसञ्चारहीन स्थान। मै.

दम्भ-सं., मिथ्या अभिमान। मै.

दम्म-सं., अपन बड़ाइक बात। मै.

दम्मा-सं., साँसी रोग। मै.

दम-सं., श्वास, बल, भाफ। मै.

दमक-सं., भीतर सँ अबैवाला प्रकाश। मै.

दमकड़्-विशे., दामी कयला उत्तर नहि बिकाएल वस्तु। मै.

दमकब-क्रि., भीतर सँ प्रकाशित होइत रहब। मै.

दमकल-सं., पानि फेंकैवाला स्वचालित यन्त्र। मै.

दमगर-विशे., बलगर, भारी, बेसी दामक। मै.

दम घोंटब-क्रि., निमुन स्थान मे श्वास लै मे कष्ट होएब। मै.

दम घोंटू-विशे., दम लेबा मे कष्ट दैवाला स्थान। मै.

दम छूटब-क्रि., श्वास (प्राण) बहार भ' जाएब। मै.

दम छोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) शान्ति सँ श्वास लेब अर्थात् अथक परिश्रमक उपरान्त विश्राम करब। मै.

दमड़ी-सं., छोट सँ छोट भारतीय सिक्का। मै.

दमदम करब-क्रि., उत्साह आ आवेग सँ भरल रहब। मै.

दमन-सं., दबबैक उत्पीड़न करैक चेष्टा। सं. तत्सम

दमपोसिया-सं., मालक दाम कराकय पोसिया दैक रीति। मालक दामक अतिरिक्त दाम आ ओकर जरोह मे आधा स्वामी आ आधा पोसिया लेनिहारक रीति। मै.

दम बहराएब-क्रि., (लाक्षणिक) १. काजक व्यग्रता आ अधिकता सँ आकुलता होएब। २. प्राण बहराएब। मै.

दम भरब-क्रि., (लाक्षणिक) फूसि अपन बहादुरी देखाएब। मै.

दम मारब-क्रि., १. हुक्का चिलम केँ पीबैत श्वास खींचब। २. रान्हल भात रोटी आदिक भाफ मिझाएब। मै.

दम रोकब-क्रि., श्वास कें बन्न कय कें राखब। मै.

दम लेब-क्रि., १. बीड़ी सिगरेटक कश खीचब। २. (लाक्षणिक) क्षणे विश्राम करब। मै.

दमस-सं., ध्वनिक गम्भीरता। मै.

दमसगर-विशे., गम्भीरता आ उच्चता भरल ध्वनि। मै.

दमसब-क्रि., जोर सँ गम्भीर शब्द करब। आ गम्भीर शब्दें डाँटब। मै.

दम साधब-क्रि., श्वास रोकब। कोनो उग्र भावना मे अपना के नियन्त्रित कयने रहब। मै.

दमाइन-सं., फलाहारी मधुर स्थूल कन्द विशेष। मै.

दमाएब-क्रि., कोनो वस्तुक दाम करब। मै.

दमाही-सं., (स्थान भेदें शब्द भेद) दौनी। मै.

दय (द')-अव्यय, प्रसंग हेतु। प्रयोग—"हम अहाँ दय (अथवा, द') कहाँ किछु कहने रहियनि।" मै.

दया-सं., कृपा। सं. तत्सम

दयालु-विशे., कृपा करैक स्वभाववाला। सं. तत्सम

दर्शन-सं., देखब, देखैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

दर्शनिया-सं., श्रीवैद्यनाथ धामक मन्दिरक ध्वज देखि पड़ैवाला स्थान। मै.

दर्शनी-सं., कोनो देवताक दर्शनक काल देबाक द्रव्य। मै.

दर्शाएब-क्रि., देखाएब। प्रकट कराएब। मै.

दर-सं., १. मूल्यक क्रम। २. उत्पादन क्रम। ३. लेखा क्रम। मै.

दरक्का-सं., स्वत: फटैक विस्तार। मै.

दरक-सं., फटैक क्रम। (स्वत:) मै.

दरकब-क्रि., फाटब। (स्वत:) मै.

दरजी-विशे., सीबै फाड़ैक व्यवसायी। मै.

दरद-सं., वेदना, वेथा। मै.

दरदर-विशे., धारा प्रवाह। मै.

दरदराएब-क्रि., कड़ी वस्तु कें दाँत सँ पीसि देब। मै.

दरदी-सं., अनेक वनस्पतिक गरदी मिलल औषध। मै.

दरब-क्रि., १. अपना सँ भिन्न श्रेणी (वर्ग) मे मिलि जाएब वा पचि जाएब। मै.

दरब-सं., द्रव्य, धातु, धातु निर्मित वस्तु, रुपैया। सं. तद्भव

दरबगर-विशे., तौल मे भारी, भारी। मै.

दरबज्जा-सं., दरबाजा, द्वार, घर आङन मे प्रवेशवाला स्थान। उ. तद्भव

दरबर-सं., १. भाओ बट्टा, कोनो वस्तुक निर्धारित मूल्य। २. निश्छोह दौड़। मै.

दरबार-सं., सामन्ती खुशामदी सभा। उ. तत्सम

दरबारी-विशे., सामन्ती सभा मे आवरजातवाला। सामन्तक चाटुकारीक कला जाननिहार। मै.

दरमाहा-सं., वेतन, मासिक पारिश्रमिक। उ. तत्सम

दरमेसब-क्रि., १. गर्दनि मोकि कय लातें मुक्के अधिक पीटब। २. नीक जकाँ मरोरिक्र मेही पीसब। मै.

दरस-सं., रूपक प्रत्यक्ष। मै.

दरसाएब-क्रि., देखाएब। मै.

दरहा-सं., माटि कटला सँ बनल खद्धा। स्वत: फाटि गेने बनल वस्त्र आदिक छेद। मै.

दरही-सं., माछ विशेष। मै.

दराक द'-अव्यय, शब्दसहित अनायास। मै.

दरारि-सं., फाटि गेने बनल अवकाश (शून्य स्थान)। मै.

दरिआओ-सं., नदी, पैघ जलाशय। मै.

दरिजाएब-क्रि., निम्न वा उच्च वर्ग मे पचि वा मिलि जाएब। मै.

दरिद्र-विशे., धनहीन। अकिञ्चन। मै.

दरिद्रहा-विशे., दरिद्रता सँ भरल। मै.

दरिद्राह-विशे., अत्यन्त दरिद्र। मै.

दरिया-सं., नदी। उ. तत्सम

दरी-सं., कोनो वस्तु माड़ैक हेतु खूनि क' बनाओल स्थान। मै.

दरी-सं., सतरंजी। उ. तत्सम/मै.

दरेग-सं., दयापूर्वक सहानुभूति। उ. तद्भव

दरेर-सं., सोन्हि। मै.

दरोगा-विशे., आरक्षी अधिकारी। उ. तत्सम

दलू-विशे., दलक अगुआ मोट डाँट वानर। मै.

दल-सं., झुण्ड, एक मतवाला संगठित समाज। मै.

दळल-सं., पैघ गोला (माटिक चकला)। मै.
दलक-सं., भीतर सँ उत्पन्न कम्पन। मै.
दलकब-क्रि., स्वभावतः भीतर सँ कम्पन उठब। मै.
दलकाएब-क्रि., भीतर सँ अपने कम्पन जनाएब। मै.
दलकी-सं., भीतर सँ स्वतः उत्पन्न कम्पन। मै.
दलगर-विशे., १. दलवाला। २. अधिक गुद्दावाला। मै.
दलदल-सं., धँसैवाला पाँक (कादो)। मै.
दलदली-सं., थाल माटि। मै.
दलपति-विशे., विशेष संख्याक सैनिक टुकड़ीक नायक। मै.
दलपरदा-सं., झपासा, परतारि क' ठकि देनाइ। वातें चितें मन घुमा क' धोखा। मै.
दलपलटू-विशे., अपन दल कें दोसर सँ देनिहार। मै.
दलफुटू-विशे., दल सँ फूटि क' रहनिहार। मै.
दलबदलू-विशे., एक दल छोड़ि क' दोसर दल मे मिलनिहार। मै.
दलबन्दी-सं., अपन दल मे लोक के मिलबैक चेष्टा। मै.
दलबल-सं., अपन दलक लोक तथा अपन दलक रक्षक अर्थात् अपन परिवार आ पक्षक सम्पूर्ण लोक। मै.
दलमलाएब/दलमलीन करब-क्रि., अपन गर्जन तर्जन एवं हाक आदि ध्वनि सँ सगरे अशान्त करब। मै.
दलमली-सं., गर्जन आ उच्च स्वरें बजैक एवं बाजाक ध्वनि। मै.
दलमा-सं., लोथड़ा, कोमल स्थूल छहलैवाला पदार्थक सरस खण्ड। जमि क' बनल खण्ड। मै.
दलमेट-विशे., एक भेरक एक मुखिया। मै.
दलान-सं., बहरीक पुरुष पात्रक स्वतन्त्र बैसँ उठैक स्थान। दालान। उ. तद्भव
दलाल-विशे., कीननिहार आ बेचनिहार दुहु सँ लाभ उठौनिहार। मै.
दलाली-सं., दलालक काज। मै.
दलिपिट्ठी-सं., चिकस सानि क' गोल गोल गुलिया के दालिक संग रान्हल भोज्य पदार्थ। मै.
दलिपुरी-सं., दालि कें उसिन कय चिकसक गुलिया मे ओ दालि भरि क' बेलि कय रोटी जकां बना क' तेल वा घी मे छानल पदार्थ। मै.
दलिया-सं., १. दालि कें दरड़ि दोखड़ा कयल वस्तु। २. दालिक बेसन। मै.
दलिरन्हा-सं., दालि रन्हैवाला बर्तन। मै.
दलिसगा-सं., दालि साग संग मिला क' रान्हल तीमन। मै.
दलिहन-सं., दालिवाला अन्न। मै.
दंश-सं., कोनो कीड़ा मकोड़ाक डंक, दाँत वा सूँघ गड़ा क' काटब। सं. तत्सम
दश-संख्या, एक दहाइ शून्य एकाइक अंक। मै.
दशक-सं., दशटाक वा दश वर्षक एक मान। सं. तत्सम
दशकर्म-सं., जन्म संस्कार सँ दाह संस्कार धरि जीवनक प्रमुख दश टा कर्म। मै.
दशगर-विशे., शारीरिक वा मानसिक नीक स्थितिवाला। मै.
दश दिक्पाल-सं., दशो दिशाक स्वामी देवता। सं. तत्सम
दशधर्म करब-क्रि., पुराण मे वर्णित दशो "यम नियम" आदि दशो धर्मक आचरण करब। सं. तद्भव
दशपैसाही-सं., दश पाइक एक मानवाला सिक्का। मै.
दशम-विशे., दश संख्यावाला। मै.
दशमी-सं., १. दश दिनक देवी आराधनाक समय। दशहरा, नवरात्र। २. पक्षक दशम तिथि। सं. तद्भव
दशमूल-सं., दश टा सोरक सम्मेलन सँ बनल औषध। मै.
दशहरा-सं., दश दिनक दुर्गापूजा पर्व। मै.
दशहरी-सं., उत्तरप्रदेशक प्रसिद्ध आम विशेष। मै.
दशाहा-विशे., दश दिन पर क्षौर कर्म करैवाला। मै.
दशा-सं., अवस्था, परिस्थिति। सं. तत्सम
दशावतार-सं., विष्णुक दश प्रकारक अवतार। (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध आ कल्कि)। मै.

दशाह-सं., मृत्यु सँ दश दिन पर्य्यन्तक अशौच। सं. तत्सम

दस्त-सं., मल त्याग, अधिक मलस्राव (रोग)। मै.

दस्ती-सं., हथलग्गू कागज पत्र आदिक लघुतम कन्तोड़ी। उ. तत्सम

दस्ताना-सं., सुरक्षाक लेल हाथक आवरण अंगा। उ. तत्सम

दस्तूर-सं., प्राकृतिक रीति, परम्परागत स्वभाव। उ. तत्सम

दसी-सं., कमलक नाल, मृणाल तन्तु। मै.

दसगरवा-विशे., सार्वजनिक। मै.

दसोल-सं., नव वर वधूक मनोरञ्जनात्मक मौखिमाही विधि। मै.

दसोसोआ-सं., दश स्रोतक स्तनक दूध। मै.

दह-सं., जलाशय, पोखरि। मै.

दहकब-क्रि., भीतर सँ चमकैत ज्वालाक उपर आएब। मै.

दहदह करब-क्रि., बेसम्हार उत्तेजना करब। मै.

दहन-सं., जरबैक क्रिया। मै.

दहनाल-विशे., बाढ़ि सँ दहि जाइवाला। मै.

दहब-क्रि., भसिया जाएब, बहि जाएब। मै.

दहलब-क्रि., अधैर्य्य अन्देशा सँ अस्थिर (चंचल) होएब। मै.

दहलाएब-क्रि., अधैर्य्यक अन्देशाक बात सँ चंचल बनाएब। मै.

दहसति-सं., भीतरी डर आ आतङ्क। मै.

दहाइ-सं., दश संख्यावाला अंक। मै.

दहाएब-क्रि., भसि जाएब, भासब, बहि जाएब। मै.

दहार-सं., भसैक प्रकम। निरन्तर दहि जाइक अभ्यास। मै.

दहि जइआ-अव्यय, दुःख सूचक वाक्यालंकारक सम्बोधन। दाही जरती दुहू सँ हानिवाला। मै.

दहिन-विशे., १. (लाक्षणिक) सहायक। २. सं., दक्षिण। मै.

दहिना-विशे., दक्षिण भागवाला। मै.

दहिबाला-सं., दही मे बोरि क' बड़क भोज्य पदार्थ। मै.

दहिया-सं., फुफड़ी, कोनो वस्तु पर छारल उज्जर रंगक विकार। मै.

दहियार-विशे., दही बेचैवाला व्यवसायी। मै.

दही-सं., जमाओल, घनीकृत दूध। मै.

दहेज-सं., विवाह मे वर कें देय। मै.

दहोदिस-अव्यय, सब दिशा मे। मै.

दहोदिसिया-विशे., सब दिस मुह रखैवाला। मै.

दहोबहो-अव्यय, तीव्र वेग सँ। मै.

दहोआ भसौआ-विशे., दहा क' भासि क' आएल। मै.

दा

दा-सं., कटैक हेतु खाँड जकाँ छोट अस्त्र। मै.

दाइ-विशे., मिथिला मे पुत्री (बेटी) सम्बन्धक स्नेह सम्बोधन शब्द। आदरणीय बूढ़ि स्त्री कें दाइजी कहल जाइछ। मै.

दाओ-सं., कोनो विशेष लक्ष्य सिद्धिक हेतु अवसर आ परिस्थितिक सन्तुलन। मै.

दाओन-सं., बड़द द्वारा डाँट लागल सीसवाला अन्नक मर्दन। मै.

दाओन दोगाओन-सं., दानाक मर्दन, झारन आ ओसौनी आदि सम्मिलित अनेक काज। मै.

दाख-सं., सुखाएल छोट फल विशेष, द्राक्षा। मै.

दाग-सं., १. अमिट चिह्न। २. (लाक्षणिक) कलंक। मै.

दागनि-सं., लोह छिपा क' चिह्न करैक प्रक्रिया। मै.

दागब-क्रि., लोह छिपा क' चिह्न देब। मै.

दाढ़-सं., १. सर्प आदि जीवक दाँत गड़बैक चिह्न। २. अधिक नम्मा दाढ़ी। मै.

दाढ़ी-सं., मुहक काठ्य सँ नीचाँवाला अंग तथा ओहि मे जनमल केश आ नमहर केश। मै.

दाँत-सं., दशन, मुहक भीतर चिबबैवाला एवं कटैवाला कठोर आ सक्कत अंग। मै.

दाँत कीचब-क्रि., तामस आ अधिक कष्ट सहैक मुद्रा मे दाँत पर दाँत जोर सँ बैसा क' दाबब। मै.

दाँत खिसटब-क्रि., १. दाँत बहार क' क' निर्लज्जता प्रकट करब। २. दाँत बहार कय दीनता देखबैत प्रार्थना करब। मै.

दाँतनिपोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) केहुनो बात कें दाँत बहार कय हँसी मे उड़ा देब। मै.

दाता-विशे., दान करैवाला । मै.

दाँती लागब-क्रि., मूर्छित होएब । मूर्छाक अवस्था मे सक्कत सँ दाँत पर दाँत बैसि जाएब । मै.

दाँतें काटब-क्रि., दाँत सँ कटैक चेष्टा करब । मै.

दाँतें आङुर काटब-क्रि., (लाक्षणिक) बेर हुसने पश्चात्ताप करब । मै.

दाव-सं., १. दिनै रोज । २. महत्त्व । हि. तत्सम

दावनी-सं., आगू आगू कयल व्यवस्था । मै.

दादा-विशे., १. पितामह अथवा भाइ । २. (लाक्षणिक) प्रभावशाली नेता । सर्वोच्च अगुआ । मै.

दादुर-सं., बरसाती बेङ । मै.

दान-सं., देवाक चेष्टा वा प्रक्रिया । मै.

दानर-सं., पानि बहैक द्वारें अपनें बनल गहीर खद्धा । मै.

दानव-सं., राक्षस जाति प्रभेद । सं. तत्सम

दाना-सं., १. (लाक्षणिक) अन्न । अन्नाक वा आनो वस्तुक कण । मै.

दानी-विशे., दान करैवाला । मै.

दानो-सं., १. (लाक्षणिक) अन्हड़ तुफान । २. देखू—"दानव" । मै.

दाप-सं., एकाएक तीव्र मन्द्र । मै.

दाब-सं., १. दबैक लेल भारी वस्तु । २. दिवाल मे केवाड़ खिड़की आदिक चौकठि के उपर मे दबैवाला वस्तु । मै.

दाबनि-सं., उपर सँ दबैक हेतु निश्चित वस्तु । मै.

दाबब-क्रि., कोनो वस्तु कें कोनो भारी वस्तु सँ जाँतब । मै.

दाबा-सं., १. अधिकार करैत प्रमाण दैक चेष्टा । २. घरक न्यों (नींव) क बाम्हल कठेर । मै.

दाबि-सं., लोहक छोलनी जकाँ काठक बनाओल पाकक वस्तु कें लाड़ैक वस्तु । मै.

दाबी-सं., १. अधिकार करैक चेष्टा । २. दर्प । मै.

दाम-सं., मूल्य । कोनो वस्तुक मुद्राक रूपक देय । मै.

दामस-सं., एक प्रकारक फोंकावाला बेंचक । उपरी चर्म पर पैघ आकारक फोंकावाला फोंसरीक मैया । मै.

दामिनि-सं., बिजलौका । प्रयोग—"दामिनि आवि तुलाएल रे ।"—विद्यापति । मै.

दामी-विशे., बेशी दामवाला । मै.

दायभाग-सं., हिस्सेदारी, बाँट बखड़ाक नियम । सं. तत्सम

दायाद-विशे., हिस्सेदार, देआद । सं. तत्सम

दार-विशे., विशेषणक प्रत्यय विशेष । उदाहरण "हिस्सेदार" । सं.,—स्त्री । मै./सं. तत्सम

दारक-विशे., १. पुत्र । २. चीरैवाला । सं. तत्सम

दारन-सं., चीरै, फाड़ैक चेष्टा । सं. तद्भव

दारब-क्रि., फाड़ब, चीरब । मै.

दारमदार-सं., निश्चितरूपक निर्भरता वा दायित्व । मै.

दारा-विशे., पत्नी । प्रयोग—"आध अंग छवि दारा" । सं. तत्सम

दारिद्र-सं., दारिद्य, दरिद्रता, निर्धनता । सं. तद्भव

दारु-सं., जलाशयक कात मे बैसैक आ वस्त्र कें खिचैक सुविधा लेल देल मोट काठ । मै.

दारुन-विशे., बेजोन, भयंकर, विकट । सं. तद्भव

दारू-सं., मदिरा, मद्य । मै.

दालचीनी-सं., मसल्लाक हेतु प्रसिद्ध स्वादिष्ट गाछक छाल । मै.

दालमोट-सं., अनेक स्वादिष्ट वस्तु मरल दालिक प्रधानतावाला भोज्य पदार्थ । हि. तत्सम

दालहरदि-सं., काष्ठौषि विशेष वनस्पति । मै.

दालि-सं., दू दल मे विभक्त होमवाला भोजनक विशिष्ट आ आवश्यक अन्न । मै.

दावानल-सं., वन मे अपनें आप लगैवाला आगि । जनैया आगि । मै.

दास-विशे., सेवक । स्त्री० दासिन । सं. तत्सम

दासा-सं., केवाड़ आ पाया आदि पर दँ कँ जोड़ैवा करैत आधारवाला पट्टी । देखू—"दाब" । मै.

दासोदास-विशे., सतत आज्ञाकारी । मै.

दाह-सं., जरैक वा जरबैक रूप । सं. तत्सम

दाहा-सं., मुसलमानक मोहर्रम पर्व मे रचल लम्बाकार कागजक महजिद । मै.

दाहोबरती-सं., दहार आ रौदी । खेतीक हेतु परमनाशी स्थिति । मै.

दि

दिक्क-सं., सब दिश सँ मनक व्याकुलता । मै.

दिक करब-क्रि., मन कें व्याकुल बनाएब । मै.

दिकदारी-सं., कष्ट सँ वा कठिनता सँ निर्वाह । मै.

दिकेँसिकेँ-अव्यय, कठिनता पूर्वक । मै.

दिग्गज-विशे., १. दिशा कें टेकैवाला हाथी । २. (लाक्षणिक) कोनो गुण मे महान् । नामी । सं. तत्सम

दिग्दर्शन-सं., कोनो विषयक बाट धरओनाइ । विषयक संकेत करब । सं. तत्सम

दिग्भ्रम-सं., दिशाक उचित ज्ञानक विपर्य्यय अर्थात् भिन्नताक बोध । सं. तत्सम

दिगन्त-सं., दिशाक ओर छोर । मै.

दिगार-सं., परोपट्टा, क्षेत्र खण्ड, प्रखण्ड । मै.

दिघोँच-सं., खाद्य स्थूल पक्षी । मै.

दिन-सं., सूर्य्योदय सँ सूर्य्यास्त धरिक काल । सं. तत्सम

दिनकर-सं., सूर्य्य । सं. तत्सम

दिनक फल-सं., जाहि दिनक जे भावी । मै.

दिनक फेर-सं., समय समय मे भाग्यक परिवर्तन । मै.

दिनगर-अव्यय, दिन अछैत । समय शेष बँचैत । मै.

दिनदेखार-अव्यय, सूर्यक प्रकाश धरिक समय मे । मै.

दिन लागब-क्रि., दुर्भाग्यक संगहि रहब । मै.

दिनाइ-सं., दिनै, कुड़ियबैक तृष्णावाला चकता रूपक सघन फोंसरीवाला चर्मरोग । मै.

दिनादिनी-अव्यय, एक एक दिन कयके । मै.

दिनादिष्टी-अव्यय, दिन देखार, सभक आँखिक समक्ष । बलपूर्वक । मै.

दिनोंदिन-अव्यय, दिनानुदिन । सब दिन क' क' । एक एक दिनक क्रमें । मै.

दिनियाएब-क्रि., असमयो मे सर्वत्र व्यर्थ घूमल फिरब । मै.

दिनुका-विशे., दिन बीचक, दिन भरिक । मै.

दिनेक-अव्यय, कोनो दिन । मै.

दिपहरा-विशे., दीप रखैक आधार, दीप पकड़ि क' रखैवाला । मै.

दिब्ब-विशे., दिव्य, अति सुन्दर । सं. तद्भव

दिबड़खौकू-विशे., दिवाड़ (कीड़ा) लगला सँ खण्डित भेल । मै.

दिबड़ाभीड़-सं., दिवाड़ माटि सँ बनल टीला । मै.

दिबड़ाह-विशे., दिवाड़ लगैक प्रकृतिवाला । मै.

दिबाड़-सं., एक प्रकारक कीड़ा जे असंख्य भ' क' कोनो वस्तु कें खा क' माटि बना दैत अछि । मै.

दिबारी-सं., दीप पात्र । टेमी आ तेलक उत्थर आधार । मै.

दिबाली-सं., दीपावली । सं. तद्भव

दिमिक दिमिक-अव्यय, ठुमुक चालि सँ चलैत । मै.

दिया-अव्यय, द्वारा (मार्फत) । प्रयोग—"श्याम दिया समाद पठा देने रही ।" मै.

दियामान-विशे., समाज मे सब प्रकारे विषय प्रसिद्ध, भाग्य आ क्रिया सँ जगजियार । मै.

दियारी-सं., अस्थायी दीप । नेसल दीप । मै.

दिर दिर-अव्यय, तबलाक बोल । मै.

दिल जमाओ|दिलजमै-सं., हृदय मे विश्वास जमबैवाला, कथू पर निर्भर रहैवाला भाव । मै.

दिल मोटाओ-सं., हृदय मे उत्पन्न विरोध । मै.

दिव्य-विशे., अति सुन्दर । सं. तत्सम

दिवंगत-विशे., स्वर्गगामी । सं. तत्सम

दिवा स्वप्न-सं., दिनक सपना । (लाक्षणिक) नै होम'वाला कल्पना । मै.

दिश-अव्यय, ओर । प्रयोग—"ओइ दिश नै जाउ जंगल छै ।" मै.

दिशा-सं., दिक् समूह । मै.

दिशाभ्रम-सं., देखू—"दिग्भ्रम" । मै.

दिशेक-अव्यय, कोनो दिश । मै.

दी

दीआ|दीया-सं., दीप, माटिक बनाओल दीप । मै.

दीठ-सं., दृष्टि । सं. तद्भव

दीदी-विशे., बहिन अथवा पीसी । मै.

दीन-विशे., दुखी, दरिद्र । मै.

दीनानाथ-विशे., गरीब पर दया करैवाला । मै.

दीप-सं., दीया, प्रकाशक वस्तु । सं. तत्सम

दीपदानी-सं., दीप रखैक आधार । मै.

दीपमाला-सं., देवताक लग माला जकाँ बनल दीपक स्थान । सं. तद्भव

दीपावली-सं., सुखरात्रि । मै.

दीयठि-सं., दीप रखैक ऊँचगर काठक बासन । मै.

दीयर-सं., नदीक बीच मे जागल स्थल । मै.

दीयाबाती-सं., १. दीपावली । २. सन्ध्या काल मे दीप बारैक क्रम । मै.

दीर्घ-विशे., लम्बा, पैघ । मै.

दीर्घजीवी-विशे., अधिक दिन धरि जीवैवाला । मै.

दीर्घसूत्री-विशे., कम समय मे होम'वाला काज कें अधिक विलम्ब सँ करैवाला । मै.

दीर्घा-सं., सार्वजनिक राजकीय सभा । मै.

दीर्घायु-विशे., अधिक दिनधरि जीवैवाला । मै.

दीरा-सं., देखू—"दीयर" । मै.

दीसा फिरब-क्रि.,मल त्याग करब । मै.

दु

दुआरि-सं., द्वार, दोहारि । मै.

दुआली-सं., बरमा जकाँ काठ मे छेद करैवाला बरहीक अस्त्र, बरमा चलबैक यन्त्र । मै.

दुई-सं., एक अंकक दोसर संख्या । मै.

दुक्का-सं., दुई संख्यावाला । मै.

दुख-सं., कष्ट रोगक द्वारें क्लेश । मै.

दु:ख-सं., सामान्य कष्ट । सं. तत्सम

दुखद-विशे., दुखदायी । सं. तद्भव

दुखदैक-विशे., दुख देनिहार । मै.

दुखनामा-सं., दु:खक कथा, अनुभूत कष्टक वृत्तान्त । मै.

दुखबेफल-सं., रोग व्याधि । मै.

दुखाएब-क्रि., दर्द करब । वेदना होएब । दुख देब । मै.

दुखित-विशे., रोग व्याधि सँ गरसित । सं. तद्भव

दुखिताह-विशे., दुख बेकलवाला । मै.

दुखिया-विशे., दुखमय जीवनवाला । मै.

दुखी-विशे., अन्तर्व्यथा भरल । सं. तद्भव

दुग्गी-सं., दू टा चिह्नवाला तासक पत्ती । मै.

दुगदुग करब-क्रि., संशयक स्थिति मे आदब्धु होएब ।

दुगदुगी-सं., संशय सँ आदब्धुक स्थिति । मै.

दुगोडवा/दुगोड़ा-विशे., दू व्यक्ति चढ़ै वा बैस सकि करैवाला चौकी । मै.

दुतिया/दुतीया-सं., पक्षक दोसर तिथि । द्वितीया । सं. तद्भव/मै.

दुद्धा (दाँत)-विशे., बाल्यावस्थावाला प्रथम दाँत । मै.

दुद्धा वैष्णव-विशे., जन्मजात वैष्णव सम्प्रदाय कें मानैवाला । मै.

दुद्धी-सं., १. एहि नामक लत्ती एवं वनस्पति । २. पेरल दूध । मै.

दुधगरि-विशे., अधिक दूध दैवाली । मै.

दुधपीवा-विशे., दूध पीवैवाला बच्चा । २. दूध पियबैवाला सीसी वा यन्त्र । मै.

दुधभर-विशे., दूधक रूपें दाना भरैवाला सीस । मै.

दुधमुहाँ-विशे., दूधैंटा पर जीवैवाला कनमोटी बच्चा । मै.

दुधारि-विशे., अधिक दूधवाली । मै.

दुधारी-विशे., दुहू दिस धारवाला अस्त्र । मै.

दुधिया-विशे., दूधक रंगवाला । मै.

दुधी-सं., १. वनस्पति । २. धान विशेष । मै.

दुदुआ/दुदू-सं., शिशुक शब्द मे स्तनपान । मै.

दुन्ना/दुन्नी-विशे., दोबर, द्विगुन । प्रयोग—"दू दुन्ना चारि ।" मै.

दुपट्टा-सं., दू पाटवाला वस्त्र जोड़ि कं बनाओल ओढ़ना । मै.

दुपट्टी-विशे., १. एके रंगक दू टुकरी जोड़ि कं बनाओल वस्त्र । २. स्त्री जातिक तौनी । मै.

दुपत्ता-विशे., दू पत्तावाला अंकुर । मै.

दुपत्ती-सं., दू पत्ताक समूह । मै.

दुपहरि/दुपहरिया-सं., दू पहरक समय, दिन वा राति । मै.

दुपहरिया डाक-सं., (लाक्षणिक) शोक भरल अनिष्ट । मै.

दुबेसाही-सं., दू पाइवाला प्राचीन सिक्का । मै.

दुब्बर-विशे., दुर्बल, क्षीण । मै.

दुबराएब-क्रि., शरीरक क्षीण होएब । मै.

दुर्-अव्यय, निषेध, निवारण आ घृणाक शब्द । मै.

दुर्काल-विशे., प्रकृतिक विक्षोभ सँ विपरीत समय । मै.

दुर्ग-विशे., कठिन साध्य, कठिन । मै.

-सं., किला, गढ़ । सं. तत्सम

दुर्गति-सं., दुर्दशा । अधोगति, नरक । मै.

दुर्गम-विशे., कठिनता सँ प्राप्य, कठिन । मै.

दुर्गा-सं., आदिशक्ति । सृष्टिक मूल तत्त्व स्त्रीत्व ।

दुर्छि:-अव्यय, ककरो दुर्वृत्ति पर निन्दा घृणा अपराध आ हीनताद्योतक धिक्कार । मै.

दुर्जन-विशे., दुष्ट बुद्धिवाला । सं. तत्सम/मै.

दुर्जौ-अव्यय, मूर्खता हीनता बोध करबैक शब्द । मै.

दुर्जौ-अव्यय, स्वीक प्रयोग योग्य निन्दा निषेध घृणा व्यञ्जक शब्द । मै.

दुर्दुराएब-क्रि., हीनता बोधित निषेध आ घृणा पूर्वक कटु वचन सँ दूर हँटाएब । मै.

दुर्दुरूढ-विशे., अधलाह बातक बेसी प्रयोग कय-निहार । सं. तत्सम

दुर्धर्ष-विशे., ककरो सँ नै पछड़ैवाला । सं. तत्सम

दुर्नामी-विशे., समाजक बीच अधलाह व्यवहार सँ कलङ्कित आ प्रसिद्ध । मै.

दुर्बल-विशे., देखू—"दुब्बर" । सं. तत्सम

दुर्बीन-सं., अधिक दूरक वस्तु देखैवाला यन्त्र । हि. तत्सम

दुर्भाग्य-सं., करमघट्टू, भाग्यहीन । सं. तत्सम

दुर्भिक्ष-सं., अकाल । रौदी । सं. तत्सम

दुर्भोग-सं., दैवी दोष सँ कष्टक अधिकता । सं. तत्सम

दुर्मति-सं., दुष्टबुद्धि वा विचारवाला । सं. तत्सम

दुर्मतिया-सं., अधलाह विचार । मै.

दुर्यश-सं., समाज मे बदनामी । सं. तद्भव

दुर्व्यवहार-सं., अनुचित आरचण, अधलाह वृत्ति । सं. तत्सम

दुर्वाक्षत-सं., दूबि अक्षत सँ सम्मिलित रूपें आशी-र्वादक प्रक्रिया । मै.

दुर्वाक-सं., अधलाह बात वा शब्द । मै.

दुर्वार-विशे., नहि रोकै योग्य । नै निषेधक साध्य । सं. तत्सम

दुरगमनियाँ-विशे., द्विरागमनक अवसर पर देवाक अथवा आएल । मै.

दुरन्त-विशे., कठिनता सँ ओर लगैवाला । अन्त-हीन । सं. तत्सम

दुरस्त-विशे., १. दूर रहैवाला । २. अधलाह रूपें अन्त होम'वाला । मै.

दुराग्रह-सं., अप्रिय आग्रह । बलजोरीक आग्रह । सं. तत्सम

दुराहमन-सं., नवबधूक दोसर बेर सासुर यात्रा । देखू—"द्विरागमन" । सं. तद्भव

दुराहु/दुराहु-विशे., दूर मे रहैवाला स्थान । मै.

दुराज-विशे., दू राजाक शासनवाला प्रदेश । मै.

दुरखा-सं., द्वार प्रदेश, आङन मे प्रवेश करैक स्थान । मै.

दुरूह-विशे., अत्यन्त कठिनवाला विषय । सं. तत्सम

दुलहि-विशे., विवाहक विधि मे रहैवाली कन्या । मै.

दुलकब-क्रि., दौड़ैक क्रम मे उछलि उछलि क' डेग दैत चलब । मै.

दुलकाएब-क्रि., अपने स्थान पर उछलाएब । मै.

दुलकी-सं., उछलि उछलि क' तेजी सँ चलैक क्रम । मै.

दुलकी मारब-क्रि., उछलैत बढ़ैत तेजी सँ चलब । मै.

दुलरा-विशे., विशेष दुलार करै योग्य बच्चा । मै.

दुलराएब-क्रि., अधिक दुलारे टा करब । मै.

दुलहा-विशे., विवाहक क्रम मे रहैत वर । मै.

दुलहिन-विशे., नवबधू । मै.

दुलार-सं., अधिकतर स्नेह । मै.

दुलारब-क्रि., अधिक स्नेह करब । मै.

दुलाक-विशे., अधिक स्नेहे बिगड़ल स्वभाववाला । दुलारेटा चाहैवाला । मै.

दुविधा-सं., एके काज वा वस्तुक हेतु दू प्रकारक मनोभाव । सं. तद्भव/मै.

दुष्ट-विशे., आनक अनिष्टे टा करैवाला । सं. तत्सम

दुष्टता-सं., आनक अनहित करैक चेष्टा । सं. तत्सम

दुसवार-विशे., कठिन, असम्भव । मै.

दुहनिहार-विशे., दुहैवाला । मै.

दुहबी-विशे., घर मे उपेक्षा सँ देखल जाइवाली स्त्री । मै.

दुहाएब-क्रि., दोसरा सँ गै आ महिसक दूध निचो-ड़ब । मै.

दुहाओन-सं., दुहैक पारिश्रमिक बोनि । मै.

दुहाक-विशे., दुहैक काज मे निपुण । मै.

दुहानी-सं., दुहैक अवसर एवं क्रम । मै.

दुहौनी-सं., दुहैक काज एवं क्रम तथा बोनि । मै.

दू

दू-संख्या, देखू—"दुइ" । मै.

दूअम्मा-सं., एक डण्टी मे दू आमक शाखा । मै.

दूआँ दू-अव्यय, एकाँइ पढ़ैक प्रकार । मै.

दूकाँ दू-अव्यय, खाँत (दोनाइ) पढ़ैक प्रकार । मै.

दूआ पच्चा-सं., कौड़ी कौड़ी खेलाइक विधि । मै.

दू टा-सं., केवल दू संख्याक वस्तु । मै.

दू गो-सं., दू मात्र ।	मै.

दू गोट-सं., दू संख्यावाला मात्र ।	मै.

दू गोटे/दू गोटए-विशे., दू संख्या मे अबैवाला ।	मै.

दूत-विशे., सम्वादवाहक, सन्देशहर ।	मै.

दूति-सं., द्युति, प्रकाश । विशे.,वार्ता पहुँचौनिहारि ।	मै.

दूती-विशे., सन्देश लय जैनिहारि ।	मै.

दूतीकार-सं., दूतक द्वारा काज परिचय ।	मै.

दूध-सं., दुग्ध ।	मै.

दूधा दाँत-सं., माइक दूध पीबैक स्थिति मे जनमल दाँत ।	मै.

दून/दूना/दूनो-विशे., द्विगुण, द्विगुणित ।	मै.

दूनू-विशे., दू संख्याक सब व्यक्ति ।	मै.

दूबि/दूभि-सं., घास विशेष ।	मै.

दूभर-विशे., लालसाक संग अलभ्य ।	मै.

दूर-विशे., अधिक अलग रहैवाला ।	सं. तत्सम

दूरा-सं., द्वार, दुआर, दुरुक्खा, दोहारि ।	मै.

दूरि-विशे., विनष्ट, विरुद्ध आचरणवाला, दुर्दुसी असंस्कारी । संस्कारहीन ।	मै.

दूरि करब-क्रि., नष्ट करब ।	मै.

दूरि जाएब-क्रि., संस्कार आ सदाचारक क्षीण होएब ।	मै.

दूरि होएब-क्रि., बरबाद होएब, दुर्गुना सँ नष्ट बनब दुर्दुसी भ' जाएब ।	मै.

दूरी-सं., अलगाओक क्षेत्र ।	मै.

दूसब-क्रि., अपलाह बनाएब । वचन सँ अधम सिद्ध करब ।	मै.

दूहनि-सं., दूहैक निरन्तर क्रम ।	मै.

दूहब-क्रि., स्तन सँ रस निचोड़ब ।	मै.

दूहादूही-सं., दूहैक सिलसिला ।	मै.

दृ

दृग-सं., नयन ।	सं. तद्भव

दृढ़-विशे., सबकल ।	सं. तत्सम

दृढ़ाएब-क्रि., सबकल बनब ।	मै.

दृष्टि-सं., नजरि ।	सं. तत्सम

दृष्टि लज्जा-सं., समक्षक संकोच ।	मै.

दे

देआएब-क्रि., अनका सँ अनका दान कराएब ।	मै.

देई-विशे., देवी ।	सं. तद्भव

देऔक-सं., अनका सँ अनका देअबैक प्रक्रिया ।	मै.

देओर-विशे., पतिक छोट भाइ ।	मै.

देख-सं., नजरि रखैक चेष्टा ।	मै.

देखना-सं., मुह देखला उत्तर द्रव्य देबाक विधि ।	मै.

देखनिहार-विशे., देखैवाला । स्त्री० देखनिहारि ।	मै.

देखनुक/देखनुक्क-विशे., लालसापूर्वक आ विशेषतापूर्वक दर्शनीय, देखै योग्य ।	मै.

देखब-क्रि., १. दृष्टि मे आनब । २. (लाक्षणिक) ओलि चुकाएब ।	मै.

देखरेख-सं., लगातार ध्यानपूर्वक देखैक चेष्टा ।	मै.

देखसी-सं., दोसराक अनुकरण ।	मै.

देखाइ-सं., देखैक कम ।	मै.

देखाउ-विशे., मात्र लोक कें बुझा क' धोखा मे रखै योग्य ।	मै.

देखाएब-क्रि., दोसरा कें दर्शन कराएब ।	मै.

देखाओट/देखाओटी-सं., आडम्बर, भड़कताओ, लोक देखाओ ।	मै.

देखादेखी-सं., एक कें देखि क' दोसरा कें करैक कम ।	मै.

देखार-विशे., प्रकाश मे आएल । प्रकट, स्पष्ट ।	मै.

देखुआ-विशे., देखैवाला । सब कें देखा क' करैवाला ।	मै.

देखैक-अव्यय, देखबाक निमित्त मे ।	मै.

देखौआ-विशे., लोक कें देखबै आ बुझबैवाला ।	मै.

देखौंस-सं., एक कें देखि दोसरो कें करैक इच्छा ।	मै.

देन-विशे., देबाक आवश्यक । दातव्य ।	मै.

देनदार-विशे., दातव्यक उत्तरदायी ।	मै.

देनिहार-विशे., देवाला, दाता ।	मै.

देब-क्रि., दोसरा कें सौंपब । देबाक क्रिया ।	मै.

देब लेब-सं., देबाक आ लेबाक व्यवहार ।	मै.

देबाक-अव्यय, दैक हेतु मे ।	मै.

देवान-सं., देवताक समूह । प्रयोग-"चौदहो देवान ।"	मै.

देवानगी-विशे., विचार विमर्श करैवाला एवं लेखा जोखा मे प्रवीण, कायस्थ । दिवान ।	उ. तद्भव

देवाल-सं., ईंटा वा माटिक भीत । दिवाल ।	मै.

देवाल-विशे., देव वाला । प्रयोग–"बेर पर गरीब कें क्यो रीनो देवाल नै होइ छै ।" मै.

देवाला-सं., सर्वस्वहीनता, सब पूँजी पगहाक विनाश । दिवाला । हि. तद्भव

देवैया-विशे., दैवाला । मै.

देय-विशे., देन, दातव्य । सं. तत्सम

देयादनी-विशे., पतिक भाइक पत्नी । गोतनी । मै.

देर/देरि/देरी-अव्यय, विलम्ब । मै.

देलहा-विशे., पूर्व देल । मै.

देव-सं., अदृश्य शक्तिक केन्द्र, अति मानव । सं. तत्सम

देव डगर-सं., तारागणक रेखा । आकाशगंगा । सं. तत्सम

देवता-सं., देवी देवताक समूह । सं. तत्सम

देवता पितर-सं., पूजनीय देव समूह आ पूर्व मृत पुरुष । मै.

देवदार-सं., सररक गाछ वनस्पति विशेष । मै.

देवनागरी-सं., हिन्दी लिपि । मै.

देवाइ धर्माइ-सं., देवताक आराधना आ धर्मक आचरण । मै.

देवाक्षर-सं., देवनागरी लिपि । मै.

देवालय-सं., देवताक मन्दिर । सं. तत्सम

देवी-सं., स्त्री देवता । सं. तत्सम

देवें सेवें-अव्यय, देवताक सेवा कयला उत्तर । मै.

देश-सं., स्थान, एक विशाल क्षेत्र, राष्ट्र । सं. तत्सम

देशकओर-सं., देशक विभिन्न तट । मै.

देशकोस-सं., जनपद, देहात । विभिन्न स्थान । मै.

देशाटन-सं., विभिन्न क्षेत्रक भ्रमण । सं. तत्सम

देशान्तर-सं., १. एक स्थान सँ दोसर स्थानक भिन्नता । २. दोसर । सं. तत्सम

देशिल-विशे., क्षेत्रक बीच (भीतर) वाला । मै.

देशिला-विशे., देशक भीतर भेनिहार । मै.

देशी/देशीय-विशे., देशक वस्तु । सं. तद्भव/सं. तत्सम

देह-सं., शरीर । मै.

देहगर-विशे., पुष्ट शरीरवाला । मै.

देहदशा-सं., रूप रंग । मै.

देह देखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन उपस्थितिक दर्शन कराएब । मै.

देहरि-सं., द्वारक समीपक स्थान । मै.

देहलया मारब-क्रि., (लाक्षणिक) धैर्य सँ सहन क' लेब । मै.

देहात-सं., ग्रामीण क्षेत्र दिहात । हि. तत्सम

देहाती-विशे., ग्रामीण क्षेत्रक रहनिहार । मै.

देहाबेही-अव्यय, अपन शरीर मात्र सँ । मै.

देहिया-सं., अपन शरीर । मै.

देही-सं., प्राणी । सं. तत्सम

दै

दैक-अव्यय, देबाक (उत्तर कालिक क्रिया) । मै.

दैत्य/दैत-सं., राक्षस जाति । सं. तत्सम/सं. तद्भव

दैन्य-सं. दीनता । सं. तत्सम

दैया-विशे., आदर आ स्नेह भरल बेटी कमक सम्बोधन । मै.

दैव-सं., अदृश्य शक्ति । भाग्य । सं. तत्सम

दैवा-सं. ईश्वर । सं. तद्भव

दैवी-विशे. ईश्वरीय, दैवयोग सँ उत्पन्न । सं. तद्भव

दो

दोआरि-सं., १. घरक प्रवेश मार्ग । २. दू गोटएक बेतक आरि । मै.

दोआरि छेंकब-क्रि., विवाह आ द्विरागमन आदि शुभ काज मे धीयनि द्वारा रास्ता रोकब । मै.

दोआली-सं., बरमा (बरहीक अस्त्र) चलबैक एक अंग (साधन) विशेष । मै.

दोएम-विशे., तुलनाक दृष्टियें हीन । दोसर रंग ढंग वाला । मै.

दोकठ-सं., १. (लाक्षणिक) दू दिशक आपत्ति । २. एक डण्डा मे एक लागल दू फेरक बीचवाला शून्य स्थान । मै.

दोकड़ा-सं. प्राचीन कालक एक पाइक आधाक सिक्का । मै.

दोकड़ी-सं. प्राचीन पाइक चौठाइ भागक सिक्का । मै.

दोकम्हा-सं., दू कानक सकरल स्थान । मै.

दोकनुआँ-विशे., दोकान सँ आनल । मै.

दोकमिआँ-विशे., दू कामि द' क' बनल । दू कामि-वाला । मै.

दोकान-सं., व्यवसाय अर्थात् वस्तु जात विक्रय करैक व्यक्तिगत स्थान । मै.

दोकानदार-विशे., दोकानक अधिकारी तथा बेचै केल बैसैवाला । मै.

दोकानदारी-सं., कीनैक बेचैक व्यवसाय, व्यापार । मै.

दोखड़ब-क्रि., जोत सँ पीसैक अपेक्षया केवल खण्ड खण्ड करब । मै.

दोखड़ा-विशे., खण्ड पखण्ड कयल । मै.

दोखार-सं., दोसर जोत (खेतक समार) । मै.

दोग-सं., दू वस्तुक बीचक अत्यन्त संकीर्ण स्थान । मै.

दोगच्छा-सं., सम्मिलित दू गाछ । मै.

दोगमियाँ-विशे., दू विभिन्न जातिक कुल मूल सँ सम्बन्धित । मै.

दोगला-विशे., वर्ण संकर, विभिन्न जातिक मैं बाप वाला । मै.

दोग सान्हि-सं., अत्यन्त संकीर्ण स्थान । मै.

दोगही-सं., छोट अत्यन्त संकीर्ण गहुवाला स्थान । मै.

दोगाएब-क्रि., संकीर्ण स्थान मे नुकाएब । मै.

दोगाठी-सं., दोग सन बनल स्थान । मै.

दोगाड़-सं., दू ठाम गाड़ कय करीन सँ पटबैक स्थिति । मै.

दोगार-सं., दोगवाला स्थान । मै.

दोगैं दोगैं-अव्यय, संकीर्ण स्थान देने । मै.

दो गोला-विशे., दू दलक मतवाला । मै.

दोघारा-विशे., दू मात्र घरवाला परिवार । मै.

दोङा-सं., नव वधूक दोसर बेर सासुरक यात्रा । (स्थान भेदैं शब्द भेद) । मै.

दोच-सं., गलती, प्रमाद । मै.

दोचारन-सं., एकै व्यक्तिक द्वारा दूनू दिशक प्रेरणा । मै.

दोचारनि-विशे., दूनू दिश उकसबैवाली । मै.

दोचारा-विशे., दू चारवाला घर । मै.

दोचारी-सं., दू चार सँ बनल घर । मै.

दोजनियाँ-विशे., दू मोटएक मूर्त बैसैवाला खाट चौकी । मै.

दोजीवा-विशे., दू जीववाली गर्भवती । मै.

दोटप्पी-अव्यय, एकै क्षणक हेतु । मै.

दोठहु-सं., दू ठाम दू बेर एकै क्रिया । मै.

दोतर-विशे., लाल होइतें पहुँचल दोसर घर मे रहैवाला पचीसीक गोटी । मै.

दोतरफा-विशे., दूनू दिश मुह धरैवाला । मै.

दोदाओन-सं., १. एकै वस्तुक दू बेर दाओन । २. (लाक्षणिक) एकै बात कैं बारम्बार रगड़ । मै.

दोदिना-विशे., दू दिन होम'वाला पर्व आदि । मै.

दोदिल-विशे., संकल्प विकल्प तथा संशय सँ भरल । मै.

दोदिशाह-विशे., दूनू दिश वा दूनू विषय कैं पुष्ट करैवाला गप । मै.

दोना-सं., पात कैं मोड़ि क' बनाओल कटोरी । मै.

दोनाइ-सं., दूनाँ दुनाला खाँत । मै.

दोनाली-विशे., दू नाल अर्थात् गोलीक दू बाटवाला बन्दूक । मै.

दोपख-सं., दू पक्षक जोड़वाला अर्थात् दुपहरियाक समय । मै.

दोपट्टा-विशे., दू पट्टावाला केवाड़ । मै.

दोपटा-सं., दू टुकड़ा जोड़ल वस्त्र । डोपटा । मै.

दोपत-विशे., दू टा पातवाला अंकुर । मै.

दोपथ-सं., दू बाटक समूह । मै.

दोपहरि-सं., मध्याह्न काल । मै.

दोपाट-सं., अलग अलग दू टा भाग । मै.

दोफक्का-विशे., दू फाँक (खण्ड) कयल । मै.

दोफसिला-सं., दू समय मे होम'वाला । मै.

दोफाँक-सं., एक वस्तुक दू खण्ड । मै.

दोबगली-विशे., दूनू कात मे होइवाला, रहैवाला । मै.

दोबर-विशे., एकै वस्तुक दुना । मै.

दोबराएब-क्रि., दू बेर तहियाएब तथा दुना करब । मै.

दोबारा-विशे., दोसर बेर कयल एकै काज । मै.

दोम-सं., झोंक सँ हिलबैक प्रक्रिया । मै.

दोमंजिला-विशे., दू महल (छटाल) वाला कोठा । मै.

दोमत-सं., दू प्रकारक बुद्धि आ विचार । मै.

दोमब-क्रि., झोंक सँ हिलाएब । मै.

दोमरि-सं., दोसर बेरक बेंह क्रिया । मै.

दोमस-सं., विकल्पक (दोसर) बात । मै.

दोमसिया-विशे., दू मासक वयसवाला । मै.

दोमहला-विशे., देखू—"दो मंजिला"। मै.

दोमाएब-क्रि., अनका द्वारा झोंक देवा क' हिलाएब। मै.

दोमाड़ि चढ़ब-क्रि., (लाक्षणिक) परस्पर विपरीत दुनू बात चाहब। मै.

दोमास-सं., एके नामक दू टा मास। मलमास। मै.

दोमी-सं., (लाक्षणिक) भय उत्पन्न करा क' हृदय कें आतंकित करैक चेष्टा। मै.

दोरस-सं., १. दू टा रसक मिश्रित पदार्थ। २. पुरिबा आ पछबा दुनूक बहैक क्रम। ३. दू ऋतुक प्रभाव। मै.

दोलक-सं., देवाल घड़ी मे डोलैत रहैवाला यन्त्र। मै.

दोलखी-सं., गलीवाला वा दोमवाला स्थान। मै.

दोलड़-सं., विशेष प्रकारक धान। मै.

दोलड़ी-सं., उचित समय सँ पाछू उपजल वस्तु। मै.

दोलत्ती-सं., दुनू लातक एक संगे मारि। मै.

दोलन-सं., डोलबैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

दोलहरि-सं., दू घरक बीचक फाँक। मै.

दोला-सं., महफा वा चौपाला नामक स्त्रीक सवारी। मै.

दोलाइ-सं., पोढ़ तूर भरि क' सीरक अर्थात् बनाओल सतत ओढ़ैवाला गरम ओढ़ना। मै.

दोलेब-सं., दोसर बेरक घर लेबैक प्रक्रिया। मै.

दोलें-सं., ऐकारक मात्राक चिह्न, दू टा एकलें। मै.

दोष-सं., अपराध, पाप, घट्टी। मै.

दोष देब-क्रि., अपराध थोपब, मढ़ब। मै.

दोष लगाएब-क्रि., अनका पर गलती थोपब। मै.

दोषावह-विशे., दोष अर्थात् पाप आ अपराध दैवाला। सं. तत्सम

दोषाह-विशे., हीनता तथा ऐब भरल। मै.

दोषी-विशे., अपराधवाला। अभियोग भरल। मै.

दोस्तियारब-सं., मित्रता, दोस्ती। उ. तद्भव

दोस-सं., दू संख्या। प्रयोग—"काग की दोष।" मै.

दोस-विशे., मित्र, दोस्त। उ. तद्भव

दोसज्झा-विशे., दू व्यक्तिक साझी (हिस्सा) वाला। मै.

दोसंझी-विशे., दुनू साँझ होम'वाला। मै.

दोसर-विशे., दू संख्या मे रहैवाला। मै.

दोसराइत-विशे., दोसर संगी। मै.

दोसरि साँझ-सं., कनेक बेशी अन्हारवाला साँझ। मै.

दोसाल-सं., दू वर्षक एक मान। मै.

दोसाला-सं., बहुमूल्य ऊनी ओढ़ना। मै.

दोसाला-विशे., दू साल पुरान, दू साल मे होम'-वाला। मै.

दोसौरा-विशे., मालिक आ प्रजाक सामीदारी। मै.

दोहद-सं., दू स्थानक निर्वाह, दू ठामक रहन सहन। मै.

दोहत्थी-सं., दुनू हाथक चोट। विशे., दुनू हाथक लाठी। मै.

दोहत्थू-विशे., दू व्यक्तिक हाथ मे होइत काज। मै.

दोहद-सं., गर्भिणीक इच्छा। सं. तत्सम

दोहन-सं., दूहैक व्यवसाय। सं. तत्सम

दोहमति-सं., डेंगा, निर्मूल दोष। तोहमत। उ. तत्सम

दोहराएब-क्रि., पुनरावृत्ति करब। एके काज फेर करब। मै.

दोहरि-सं., दू टा बराबरि लम्बाइ चौड़ाइ मे साटि बनल ओढ़ना। मै.

दोहरी-विशे., दोसर बेरक बेहू काज। मै.

दोहरौनी-सं., एके काज कें दोसरो बेर करैक व्यवहार। मै.

दोहसब-क्रि., दोसर बेरक कहब। मै.

दोहलाएब-क्रि., बात काटि क' फेर फेर उक्ति करब। मै.

दोहा-सं., पद्यक एक प्रसिद्ध छन्द। मै.

दोहारा-विशे., दू तह मे प्रस्तुत। मै.

दोहारि-सं., द्वार। मै.

दौ

दौगब-क्रि., वेग सँ चलब। मै.

दौड़-सं., दौड़ैक क्रम। मै.

दौड़धूप-सं., विशेष प्रकारक दौड़ैक क्रम। मै.

दौड़ब-क्रि., विशेष वेगें चलब, धावन क्रिया। मै.

दौड़बरहा-सं., बराबरि तेजी सँ जाइ अबैक सिलसिला। मै.

दौड़ाक-विशे., दौड़ मे प्रवीण। मै.

धौड़ा धौड़ी-सं., दौड़ि दौड़ि क' अर्थात् तेजी सँ जाइ अबैक क्रम । मै.

धौड़ाहा-विशे., दौड़ल धाक लऽ आइवाला । मै.

धौँस-सं., डाँट सँ धड़दक झुण्ड सँ दानाक झारब । मै.

धौन धौना।ओन-सं., दाना झारैक ओ ओसबैक व्यापार । मै.

धौनबाह-विशे., धौनक बड़द हूँकैवाला सहायक । मै.

धौनी-सं., धौन । मै.

धौहित्र-विशे., बेटीक बेटा । स. तत्सम

ध्य

ध्यान-सं., निश्चित लक्ष्य पर मनक एकाग्रता । सं. तत्सम

ध्येय-सं., आन्तरिक विचार । सं. तत्सम

ध्राइ-अव्यय, मृदङ्गक बोल । मै.

ध्रुपद-सं., संगीतक प्रभेद । मै.

ध्रुव-सं., १. निश्चय । २. पौराणिक पुरुष । ३. पृथ्वीक धूरी रूपेँ मानल तारा । सं. तत्सम

ध्वजा-सं., पताका । सं. तत्सम

ध्वनि-सं., १. अव्यक्त शब्द । २. काव्यक चरम-शक्ति । सं. तत्सम

धक्कम धक्का-सं., अनेक बेर शारीरिक वेगेँ आघात । मै.

धक्का-सं., जोर सँ ठेलैक रूपक आघात । मै.

धक्का धुक्की-सं., बल सँ धक्का द' क' खेल । मै.

धक-सं., भय आ लज्जाक मिलल सन्देह । मै.

धकड़ब-क्रि., जतेक भ' सकए ततेक पेट मे धकेलने जाएब । मै.

धक द'-अव्यय, एकाएक अलक्षित रूपेँ । मै.

धकचुक-सं., सन्देह सँ मनक संकल्प विकल्प । मै.

धकचुकाएब-क्रि., सन्देह आ डरेँ मनक आगाँ पाछाँ करब । मै.

धकधक करब।धकधकाएब-क्रि., सन्देह आ अन्देसा सँ छातीक धमनीक तेज गति होएब । मै.

धकरबी-विशे., धाकर जकाँ मस्त आ पुष्ट स्त्री । मै.

धकल-सं., अनुमान, लगभग । मै.

धकला धकली-सं., एक दोसरा केँ ठेलि सम्बैक खेल । मै.

धकियाएब-क्रि., १. धक्का दैक चेष्टा करब । २. (लाक्षणिक) आरि छाँटि क' आनक खेत मे अपन सीमा बढ़ाएब । मै.

धकेलब-क्रि., १. धक्का द' क' ठेलब । २. धक्का द' क' दूर हटाएब । ३. जे भेटय से खयने जाएब । मै.

धखछुट्-विशे., क्रमश: लाज संकोचहीन । मै.

धखाएब-क्रि., संकोच आ सन्देह करब । मै.

धखाह-विशे., धाख सँ भरल । मै.

धगर-विशे., अत्यन्त प्रभावशाली । मै.

धड़ाएब-क्रि., लात सँ अस्तव्यस्त कराएब । मै.

धज्जी उड़ाएब-क्रि., १. चेथड़ा चेथड़ा फाड़ि क' फेंकब । २. लोकक बीच अत्यन्त लज्जित करब । मै.

धज्जी करब-क्रि., कपड़ा आदि केँ रत्ती रत्ती फाड़ब । मै.

धज्जी धज्जी होएब-क्रि., पुरान होइक कारणेँ रत्ती रत्ती फाटब । मै.

धड़क्का-अव्यय, तुरन्त आ तेजी सँ । मै.

धड़कन-सं., हृदयक धड़धड़ शब्द । मै.

धड़कब-क्रि., हृदयक धड़धड़ शब्द करब । मै.

धड़काएब-क्रि., बातचीत सँ भयभीत बनाएब । मै.

धड़की देब-क्रि., भयभीत क' क' प्रभाव जमाएब । मै.

धड़ द'-अव्यय, तुरन्त । मै.

धड़धड़-सं., एहि प्रकारक छातीक ध्वनि जे अन्देसा आ भय सँ होइत अछि । मै.

धड़धड़ाएब-क्रि., १. धड़धड़ शब्द करब । २. बेरोक टोक, निधोख जाएब आएब । मै.

धड़धड़ी-सं., अधिक जोर सँ छाती धड़कैक विकट रोग । मै.

धड़धट-अव्यय, निर्लज्जतापूर्वक बेरोकटोक । मै.

धड़पटाह-विशे., आनक अनुरोधरहित निर्लज्जता भरल । मै.

धड़फड़-सं., चंचलता भरल अगुताइ । मै.

धड़फड़ाएब-क्रि., चंचलता सँ अगुताएब । मै.

धड़फड़िया-विशे., अस्थिरतापूर्वक अगुताइवाला । मै.

धड़हर-सं., अति प्राचीन उँचगर स्थान । डीह । मै.

धड़ाक द'-अव्यय, सभले अप्रत्याशित रूपेँ । मै.

धड़ाका-अव्यय, देखू—"धड़क्का" । मै.

धड़ाधड़ि-अव्यय, लगले लागल जल्दी सँ । मै.
धड़िङ-विशे., उचित सँ बेसी लम्बा । मै.
धत्तूर-सं., फूल विशेष । सं. तत्सम
धत !-अव्यय, संकोचवाला बातक निषेधक शब्द । मै.
धतवत-अव्यय, लगभग, करीब सम्भवत: । मै.
धताएब-क्रि., बात कें पकड़ि गञ्जनक द्वारा सिर नीचाँ कराएब । दोष प्रकाशित कराकय स्वीकार कराएब । मै.
ध' तानब-क्रि., अपन उत्साह मे बिन सोचने विचारने चलि देब अथवा कोनो काज ठानि देब । मै.
धताल-विशे., अविराम आ तेजी भरल गतिवाला । मै.
धतालबूढ़-विशे., भरिम देहवाला अधिक बूढ़ । मै.
धतिङ-विशे., स्थावर बूढ़ । अत्यन्त बूढ़ । मै.
धथूर-सं., देखू—"धत्तूर" । सं. तद्भव
धधकन-सं., प्रज्ज्वलित होइक रूप । मै.
धधकब-क्रि., ज्वाला उठैत प्रज्ज्वलित होएब । मै.
धधकाएब-क्रि., प्रज्ज्वलित करब । मै.
धधकी-सं., (लाक्षणिक) अचानक क्रोधक वेग । मै.
धधरा-सं., घनीभूत ज्वाला । मै.
धधाएब-क्रि., (लाक्षणिक) मद सँ उद्दण्ड होएब । मै.
धधिकत-अव्यय, ढोलक मृदङ्गक ताल । मै.
धधियाएब-क्रि., अचानक बिना श्रमक अधिक लाभ सँ उन्मत्त बनब । मै.
धन्धा-सं., जीविकाक व्यवसाय । मै.
धन्नासेठ-विशे., आकस्मिक धनक प्राप्ति सँ बनल महाधनिक । (लाक्षणिक) । मै.
धन्य-विशे., उत्तम भाग्यशाली । सं. तत्सम
धन्वन्तरि-सं., वैद्यक शास्त्रक प्रवर्तक । मै.
धन-सं. चल अचल सम्पत्ति । मै.
धनकट्टा-विशे., धान कटैवाला बोनिहार । मै.
धनकटनी-सं., धान कटैक समय क्रम । मै.
धनखेती-विशे., धान उपजैवाला वा धान भरल खेत । मै.
धनगर-विशे., अधिक धान भरल । मै.
धनचर-सं., संगहि संग अनेक कार्य्यक चिन्ता आ व्यग्रता । मै.
धनछूहा-सं., ऐ नामक छोट पक्षी विशेष । मै.
धनतेरस-सं., पावनि विशेष, कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के धन्वन्तरि त्रयोदशी । मै.
धनपनियाँ-विशे., धानक गाछ कें वृद्धि करै मे उपयोगी पानि । आवश्यकतानुसार धानक खेतक पानि । मै.
धनबताहि-विशे., धन भेने उन्मत्त भ' गेनिहारि । मै.
धनबपहा-विशे., केवल धनखेतीवाला बाध । मै.
धनबालि-सं., मकइक डाँट मे ऊपर बहराएल सीस । मै.
धनमन्त-विशे., पूर्वापर सँ धनिक । मै.
धनमी-सं., धनुष । मै.
धनरोपनी-सं., धान रोपैक क्रम । मै.
धनवान-विशे., धनिक । सं. तद्भव
धनसीस-सं., देखू—"धनबालि" । मै.
धनहर-विशे., धान उपजैवाला खेत । मै.
धनहा-विशे., धानवाला, धानक बनल । मै.
धनाढ्य/धनाड्ढ-विशे., अधिक धनक कारणें प्रसिद्ध । सं. तत्सम/सं. तद्भव
धनि-सं., अभाव मे व्यग्रता भरल आवश्यकता पूर्तिक चिन्ता । मै.
धनिक-विशे., धनवान, धन भरल । सं. तत्सम
धनिकठेंठ-विशे., कनेके धन सँ गौरव करैवाला । मै.
धनिकत-सं., धनिकपनाक अहंकार । मै.
धनिकपन-सं., धनिक बनैक भाव । मै.
धनिकहा-विशे., धनवाला । मै.
धनिसन-सं., उपेक्षा भाव सँ अवहेलना, अनठा देबाक भाव । मै.
धनी-विशे., धन भरल लोक । सं. तत्सम
धउनी-सं., मसालाक वस्तु । मै.
धनी-विशे., उत्तम स्त्री, धन्या । सं. तद्भव
धनु-सं., राशि विशेष । सं. तद्भव
धनुष-सं., धनमी । वाण छोड़ैवाला अस्त्र । सं. तद्भव
धनुही-सं., गुलेंती, गोली मारैवाला धनुष । मै.
धनोतरि-सं., औषध विशेष । मै.
धपड़ धपड़-अव्यय, वेग सँ पैघ डेग सँ चलैक शब्द । मै.

धपड़ि चलब-क्रि., जोर सँ पैघ पैघ डेगेँ चलब । मै.
धप दऽ-अव्यय, आकस्मिक रूपेँ । मै.
धपाएब-क्रि., नुकाकय आनक चरित्र देखब । मै.
धपाक दऽ-अव्यय, अचानक जल आदि मे खसैक शब्द । मै.
धपाड़-सं., जल मे अधिक एम्हर ओम्हर चलला सँ उत्पन्न विकार । मै.
धपाड़ब-क्रि., जल मे अधिक चलि कऽ विकार जगाएब । मै.
धपधप-अव्यय, अधिक दूर धरि अड़क बिना स्थिति । मै.
धपेधप/धपोधप-विशे., दूरधरि अनावृत, चारू दिश खुलता रहने दूरधरि बेपर्द । मै.
धब्बा-सं., दाग, कलङ्क, चिह्न । मै.
धबधब-अव्यय, अप्रत्याशित रूपेँ लगले लागल । मै.
धबब-क्रि., आभासित होएब । धीरेँ धीरेँ प्रवेश करब । प्रकाशित होएब । उगब । मै.
धबाएब-क्रि., पकड़ैक हेतु नुकाएल रहब । मै.
धम्म दऽ-अव्यय, अचानक तीव्र रूपेँ । मै.
धमक्का-सं., जोर सँ विस्फोटक ध्वनि । किंवा भारी वस्तुक खसने धरतीक कम्पन समेत शब्द । उ. तद्भव/मै.
धमक-सं., भारी वस्तुक चलने वा वेग सँ खसने कनेक कम्पन सहित गम्भीर शब्द । मै.
धमकब-क्रि., भारी वस्तुक वेग सँ चलने वा खसने कम्पनसहित गम्भीर शब्द होएब । मै.
धमकाएब-क्रि., अनिष्टक सम्भावना देखाकय भय उत्पन्न कय तर्जन करब । मै.
धमकी-सं., अनिष्ट करैक डेरबैक चेष्टा सँ गर्जन । मै.
धमगज्जर-सं., एकै समय मे सब दिश गीत बाजनक उच्च ध्वनि । मै.
धमधूसर-विशे., शरीरेँ, बुद्धिये आ चालियेँ मोट । मै.
धमनभट्ठी-सं., धातु गलबैक यान्त्रिक चूल्हि । मै.
धमनी-सं., शरीर मे लेहू केँ उत्क्षेपक शिरा । सं. तत्सम
धमर धमर-अव्यय, वेग सँ चलैक विशेष ध्वनि । मै.
धमाचर-सं., जोर सँ दौड़ैत उन्मत्त जकाँ नाच । मै.
धमाका-सं., भौतिक पदार्थक विस्फोट ध्वनि । उ. तत्सम
धमाड़-सं., जोर सँ दौड़ि नाचब । भारी वस्तुक जोर सँ चलैक ध्वनि । मै.
धमाधम-अव्यय, भारी वस्तुक लगले लागल चोटक ध्वनि । मै.
धमियौ-सं., हाथक बीनल पयोजी पैनवाला छोट आसन । मै.
धर्कट-विशे., मान आ आनि चीबि कऽ स्वार्थ साधैले आतुर । मै.
धर्कन-सं., निर्लज्जता, दीनतापूर्वक याचना । मै.
धर्कनाह-विशे., निर्लज्ज भऽ कऽ याचना कय-निहार । मै.
धर्कनिया-सं., निर्लज्ज एवं दीन बनि कऽ याचना करैक चेष्टा । मै.
धर्छन-सं., दू व्यक्तिक द्वारा भारी वस्तु उगहैक बाँसक फट्ठीक चचरी । मै.
धर्छा-सं., वस्तु रखैक हेतु रस्सी सँ लटकाओल मचान जकाँ चचरी । मै.
धर्ता-विशे., धारण करैवाला । सं. तत्सम
धर्म-सं., सत्कर्मक व्यवहार, सद्भाव । पुण्य—प्रकृति सँ देल गुण धर्म थिकैक । मनुष्य, पशु, पक्षी आ कीट ऐ चारू प्रकारक जीव मात्रक जे गुण छैक सैह धर्म थिकैक । मनुष्य छोड़ि कऽ शेष तीनू जीव केँ ज्ञान सुप्त रहैत छैक तेँ ओ सब अपन धर्म (गुण) स्वयं नहि चीन्हि सकैत अछि ।

मुदा मानवक ज्ञान विकसित रहैत छैक तेँ मानव पराक मानवता मात्र धर्म थिकैक । ओहि मानवताक पोषक जतेक व्यवहार (आचार) हेतै से सबटा धर्म थिकैक । ई धर्म मूलतः दू प्रकारक होइत अछि—लौकिक आ वैदिक ।

लौकिक धर्म ओ थीक जे समाजक रीतिक अनुकूल कर्तव्य होइत अछि तथा जे समाजक हित होइत अछि जेना—परस्पर सहानुभूति, स्नेह आदि ।

वैदिक अर्थात् आध्यात्मिक धर्म ओ थीक जाहि सँ अदृश्य शक्तिक अर्जन करैक अपन आत्माक प्रबल गुण केवल ज्ञान द्वारा प्रस्फुटित होइत रहए । दया, क्षमा आदि जे दशविध धर्म भागवत सब मे

कहल गेल अछि। सब सँ बढ़ि अहंकारक त्याग मानवताक मूल धर्म थिकैक।

ई सनातन धर्म थीक जे विश्व मे कतौ पाओल जाइछ आ भविष्यो मे रहतैक। आन कोनो एकांगी सिद्धान्तवाला धर्म सम्प्रदाय सभ एही धर्मक अन्तर्गत भय जाइत अछि।

एही मानवता कें स्थिर अथवा उज्ज्वल करैक चेष्टा मे तीर्थ व्रत आदि अनेक अदृश्य शक्तिक उपासनाक समस्त मतक मृदुतावाला प्रकार धर्म कहबैत अछि। सं. तत्सम

धर्म कर्म-सं., धर्मक पोषक कर्म अर्थात् क्रिया। सं. तत्सम

धर्मतः-अव्यय, मनुष्यताक अनुकूल। सं. तत्सम

धर्मात्मा-विशे., धर्मक टा भावनावाला। सं. तत्सम

धर्मार्था-विशे., धर्म काजक हेतु निहुछल। मै.

धर्मार्थ-विशे., धर्म कार्य लेल राखल। सं. तत्सम

धर्माहु-अव्यय, धर्मपूर्वक, धर्म कें साक्षी कय। मै.

धर्मिष्ठ-विशे., धर्म मे लीन। सं. तत्सम

धर्मी-विशे., धर्मवाला। सं. तत्सम

धर्षण-सं., दबाएब, हराएब, धमकाएब। सं. तत्सम

धर-सं., शरीरक गर्दनि सँ निचला भाग। मै.

धउर-सं., कपड़ा आदि सँ कयल ओहार, पर्दा। मै.

धरखन-सं., देखू—"धर्षन"। मै.

धरड़-विशे., अत्यन्त ऊँच। मै.

धरछन-सं., भिन्न माङय वर्षा प्रार्थना। मै.

धरणी/धरती-सं., पृथ्वी। धर्त्री। सं. तत्सम/सं. तद्भव

धरती धमक-विशे., धरती कें धमकबैवाला, (लाक्षणिक) एहन जमल दही जकरा कटै मे धरती तक दलकि जाय। मै.

धरना देब-क्रि., एक प्रकारक सत्याग्रह करब। अपन स्वार्थ सिद्धि धरि द्वार नहि छोड़ब। मै.

धरनि-सं., घरक चार एवं बरेरी कें उठौने अर्थात् तनने रखैवाला नामानामी देल मोट काठ। धरैन सेहो कहबैछ। मै.

धरनी-सं., देखू—"धरणी"। सं. तद्भव

धरपट-अव्यय, बेरोकटोक। मै.

धरपटाम-विशे., बेरोकटोक तेज गतिवाला। मै.

धरपड़न-सं., स्वार्थ सिद्धिक प्रार्थना हेतु द्वारि सेवने रहब। मै.

धरब-क्रि., १. दाँत सँ काटब। २. पकड़ब। ३. राखब। मै.

धरम-सं., देखू—"धर्म"। सं. तद्भव

धरमदोष-सं., धर्म मे होम'वाला अपराध। मै.

धरमाइ-सं., धर्मरम क्रिया। मै.

धररोहि-सं., आगू पाछू ओर छोररहित पाँती। मै.

धरहर-विशे., बहुत दिन सँ जोगा कय राखल वस्तु। मै.

धरहर-सं., पोखरि आ नदीक ऊँच कछेर। मै.

धरहा-विशे., धरैवाला। मै.

धरहो-विशे., एक धारा (१० कौ०) क तौलक बासन। मै.

धरहेरि-सं., दू पक्षक मारि मे दुनू गोटा के रोकिकय पकड़ैक चेष्टा। मै.

धरहेरिया-विशे., मारि मे दुनू पक्ष कें रोकैत पकड़ैवाला। मै.

धरा-सं., पृथ्वी। सं. तत्सम

धराउ-विशे., जोगा कँ रखैवाला। मै.

धराउर-विशे., पहिने सँ राखल वस्तु। मै.

धराएब-क्रि., १. रखाएब। २. पकड़ाएब। ३. कटाएब। मै.

धराठ-विशे., अधिक दिनुक राखल। मै.

धरानि-सं., धैर्यक संग विवेक। मै.

धरानी-सं., दुर्दशा वा गति, दुर्गति। मै.

धराह-विशे., धरैक (दाँत सँ कटैक) स्वभाववाला। मै.

धरि-अव्यय, पर्यन्त। प्रयोग—"जलाशय धरि शिष्ट लोक कें अरियातैक चाही।" मै.

धरि-सं., कोनो वस्तुक। ऊँच कछेर। मै.

धरिका-सं., अम्मटक नाम नाम आ चाकर खण्ड। मै.

धरिया-सं., अबोध बच्चा कें पहिरैवाला चिप्ठी। मै.

धरियाएब-क्रि., पाँती लगाएब। मै.

धरी-सं., तौलक मानक निश्चय। मै.

धरुआ-विशे., धरल राखल। मै.

थरोहरि-सं., थाती, दिनानुदिन जमाकयल राशि। मै.

थरौआ-विशे., १. थरर्वैवाला। २. थरल राखल आन लोकक वस्तु। मै

थलैया-सं., जोर जोर सँ पिटाइ। मै.

थवल-विशे., उज्ज्वल। सं. तत्सम

थसथसाएब-क्रि., कसि क' वेग सँ दबा देब वा धँसा-एब। मै.

थसना-सं., कटि कटि क' माटिक विशाल खण्डक खसब। मै.

थसना खसाएब-क्रि., बिन बजाओल बिन आग्रहेँ आइक लोभेँ जमल रहब। मै.

धँसब-क्रि., १. नीचाँ दिशुक गति होएब। दबि जाएब। २. (लाक्षणिक) नीच संस्कारक समाज मे लोभेँ मिलि जाएब। मै.

धसमस-सं., तारतम्य। मै.

धँसलहा-विशे., दबि गेलवाला, नीचक संग मिलल-वाला। मै.

धँसाएब-क्रि., नीचाँ घुसाएब, भीतर दिस क' देब। मै.

धँसार-सं., धँसँवाला स्थान। मै.

धहगर-विशे, अत्यन्त उपर उठल, उँचगर। मै.

धहधह-विशे., अविच्छिन्न ज्वाला भरल। मै.

धहाएब-क्रि., बलक मद सँ उद्दण्ड बनल रहब। मै.

धा

धाइ-विशे., शिशु केँ अपन दूध पिया क' सब प्रकारेँ पालन करैवाली, सेविका, धात्री। मै.

धाईं-सं., जड़ि विशेष, विषहरा स्थान मे आगु जाइ-वाला विशेष औषधि। मै.

धाईं द'-अव्यय, वेगर म' क' अचानक। मै.

धाईं धाइ-अव्यय, लगले लागल। मै.

धाइम-विशे., कोनो लौकिक ग्राम देवताक विशेष साधक। मै.

धाएब-क्रि., दौड़ब। मै.

धाकर-सं., मोट आ भयंकर साँढ़। मै.

धाखब-सं., भय मिलल संकोच। मै.

धाङनि-सं., पैर सँ खूनैक (पैर राखि राखि दूषित करैक) प्रक्रिया। मै.

धाङब-क्रि., पैर रखला सँ नष्ट करब। मै.

धाङर-सं., आदिवासी जाति विशेष। मै.

धात्!-अव्यय, कोनो जीव पशु आदि केँ भगबैक शब्द। मै.

धात-सं., प्रवाह सँ आएल बालु वा माटि सँ बनल ऊँच मरुस्थल। मै.

धातु-सं., १. सोन, चानी, ताम पित्तरि, काँस, जस्ता, लोह आ राङ ई अष्ट द्रव्य। २. रस, रक्त, माँस, मेद, वसा, मज्जा, हाड़, वीर्य्य ई आठो शरीर धारण करैवाला वस्तु। ३. क्रियाक रूप बनबैवाला शब्द। सं. तत्सम

धातु खसब-क्रि., स्वप्न मे अथवा मल मूत्रक संग वीर्य्यक बहार होएब। (रोग विशेष)। मै.

धाथर-विशे., अशुभ सूचक। मै.

धाँथर-सं., अन्तहीन मोह। मै.

धाधा धिनता-अव्यय, तबला मृदङ्गक बोल। मै.

धान-सं., प्रसिद्ध अन्न विशेष। मै.

धाना-सं., उठल स्वाभाविक गर्दनि। मै.

धानी-सं., हरियर आ पीयर मिलल रंग। मै.

धाप-सं., १. बिना छतवाला घर लागल ओसारा। २. डेगक दूरी। मै.

धाबब-क्रि., १. दौड़ब। २. हुलकी देब। मै.

धाम-सं., तेज अर्थात् उग्रता भरल देवताक स्थान। सं. तत्सम

धामन-सं., विशाल साँप विशेष। मै.

धामा-सं., छितनाल मुहवाला घास पातक बीनल पैघ पथिया। मै.

धामि-विशे., देखू—"धाइम"। भगता। मै.

धामी-सं., धामाक छोट रूपवाला पथिया। मै.

धार-सं., १. नदी। २. अस्त्र आदिक कटैवाला तेज भाग। ३. ऋण बिना चुकाओल। मै.

धार-विशे., शुभवर्धक। मंगलदायी। मै.

धारक-विशे., धारण करैवाला। रखैवाला। मै.

धारकुधार-विशे., कोनो वस्तु कखनो शुभदायी आ कोनो वस्तु ककरो अशुभकारी। मै.

धारकोन-अव्यय, कत्तो कत्तो। मै.

धारणा-सं., जमल विश्वास। सं. तत्सम

धारन-सं., रखैक क्रिया। सं. तद्भव

धारनि-सं., ऋण आदि लेल वस्तु। मै.

धारब-क्रि., १. बिना चुकाओल रीन राखब । पहि-रब । २. मंगल करब । मै.

धारा-सं., नदीक जल आदिक प्रवाह वेग । मै.

धारावाही-विशे., बिना रोकल गतिवाला । सं. तत्सम

धारी-सं., पाँती । मै.

धारेश्रा बनब-क्रि., (लाक्षणिक) छानी धर्नैक दाबी करब । मै.

धाह-सं., ताप, प्रताप । मै.

धाही-सं., कनेक उगैक क्रम । मै.

धाही देब-क्रि., उगैक लच्छनवाला प्रकाश होएब । मै.

धि

धिक्-अव्यय, अधल वृत्तिवाला कें नीच बनबैक शब्द । सं. तत्सम

धिक्कार-सं., नीचता देखबैक शब्द । सं. तत्सम

धिङ रोपब-क्रि., अपन स्वार्थक हेतु उग्रता सँ जिद् करब । मै.

धिन्ना/धिनला-अव्यय, तबलाक बोल । मै.

धिपाएब-क्रि., अत्यन्त गरम बनाएब । मै.

धिया-सं., कन्या जाति, बेटी । मै.

धिरकारब-क्रि., धिक्कार देब । मै.

धी

धी-विशे., बेटी । मै.

धीआ पुता-सं., बालक बालिक, बेटा बेटी मिलल वाल वर्ग । मै.

धीङ्-अव्यय, मृदङ्गक बोल । मै.

धीपब-क्रि., अत्यन्त गरम होएब । मै.

धीपल-विशे., अत्यन्त गर्म बनल । मै.

धीपल कोढ़ि-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त आलसी । मै.

धीमड़-विशे., मन्द गतियें काज कयनिहार। एके छनक काज मे विलम्ब कयनिहार । स्त्री० धीमड़ि । मै.

धीयनि-विशे., बेटी वर्गवाली स्त्री लोकनि । मै.

धीया-विशे., बेटी । प्रयोग—"एहन बुढ़बा कें कोनो देलनि धीया ।" नचारी । मै.

धीर-विशे., धैर्य सँ आ विवेक सँ काज कयनिहार । सं. तत्सम

धीरें धीरें-अव्यय, मन्दें मन्दें । मै.

धी सोआसीन-विशे., बेटी वर्गक सोहागिन । मै.

धु

धुआँइन-विशे., धुआँक रंग एवं गन्धवाला । मै.

धुआनि ढेकार-सं., अपच द्वारें विकृत गन्धवाला ढेकार । मै.

धुआँएब-क्रि., धुआँ सँ भरि जाएब । धुआँ सँ विकृत होएब । मै.

धुक्कड़-सं., वसातक वेग सँ अथवा सघन धुआँ सँ अन्हराओल स्थिति । मै.

धुक द' उठब-क्रि., एकाएक धुआँ, ज्वाला आ वसातक वेग होएब । मै.

धुकचुकाएब-क्रि., अन्देशा सँ मनक दहलैत रहब । मै.

धुकधुक करब-क्रि., अन्देशा, डर सँ हृदय मे विशेष कम्पन होएब । मै.

धुकधुकी-सं., १. छोट बच्चाक छातीक गहना । २. अन्देशा मे हृदयक तेज कम्पन । मै.

धुकारी-सं., अधिक धधराक संग धुआँवाला आगि-बासी । मै.

धुकुर धुकुर-विशे., १. मन्द मन्द जरैवाला आगि । २. मन्द गतियें चलैवाला गाड़ी । मै.

धुजा-सं., ध्वजा । सं. तद्भव

धुत्-अव्यय, निषेधक शब्द । मै.

धुत्त-विशे., मद सँ ज्ञान ध्यानरहित । मै.

धुत्थुर बूढ़-विशे., अत्यन्त खोखरल देहवाला वृद्ध । मै.

धुतहू-सं., बड़का लम्बा सिंगा, बाजन । मै.

धुतहूर-सं., धत्तूर फूल । सं. तद्भव

धुँधकाएब-क्रि., धुआँ सँ अन्हार करब । मै.

धुँधकाल-सं., धुआँ, धौन्ह आ अधिक मेघ सघन रहला सँ अन्हरौन । मै.

धुँधराएब-क्रि., धुआँ धुरा सँ आच्छन्न रहब । मै.

धुँधराह-विशे., अन्हराएल । मै.

धुधुआएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) आडम्बरक विस्तार करब । २. अधिक धधरा करब । मै.

धुधुनमुहाँ-विशे., सदिखन धुआँनन मुह कैने रहै-वाला । मै.

धुन्ध-सं., अधिक धौन्ह सँ नहि सुझैक स्थिति । मै.

धुन्धकार-सं., धौन्ह सँ अन्धकारक स्थिति । मै.

धुनकी-सं., तूर फलक'बैक यन्त्र । मै.

धुनाइ-सं., १. (लाक्षणिक) अधिक पिटान । २. तूर धूनैक बोनि । मै.

धुनाएब-क्रि., तूर कें धुनकी सँ छिन्न भिन्न कराएब । मै.

धुनि-सं., मनक भावना । मै.

धुनियाँ-विशे., तूर कें तोड़ि छिन्न भिन्न करैवाला । मै.

धुनी-सं., स्थायी रूपक अगियासी । साधु सभक निरन्तर जरैवाला धूर । मै.

धुनेठ-सं., धुनैक यन्त्र । विशे., धुनला सँ उड़ि क' जमा भेल तूर । मै.

धुपकाठी-सं., धूपक द्रव्य भरल काठी । मै.

धुपछाँह-सं., मिलल जुलल धूप आ छाया । मै.

धुपदानी-सं., धूप जरबैक बासन । मै.

धुपबत्ती-सं., धूपवाला पदार्थ साटि बनाओल जरबैक लेल बत्ती । मै.

धुपाएब-क्रि., १. धुआँ भरि क' पकबैक काज कराएब । २. धूप मे पसारब । मै.

धुपुआ-विशे., धूप देला सँ पकाओल । मै.

धुम्मा-विशे., मोट डाँट आ नमहर शरीरवाला मूर्ख । स्त्री० धुम्मी । मै.

धुमधुमाएब-क्रि., लगातार मुक्का सँ मारब । मै.

धुमनाइन/धुमनाह-विशे., धुमनक गन्धवाला एवं धूमनवाला । मै.

धुमरी-विशे., मोटाइ आ आलस सँ भरलि स्त्री । मै.

धुमसाह-विशे., सोरगुलक संग उपद्रव करैवाला नेना । मै.

धुमसाही-सं., कोलाहलपूर्ण कार्यक व्यग्रताक संग अधिकता । मै.

धुमसिया-विशे., कोलाहल संग उपद्रावी नेना । मै.

धुमसुर-सं., कोलाहल आ उठापटकक संग अशान्ति । मै.

धुमसुर-सं., ईंटा माटि बैसाबय पीटि ठोस करैवाला भारी लोहक वस्तु । मै.

धुमुहाँ-विशे., धुआँयन अप्रसन्न मुहवाला । स्त्री० धुमुही । मै.

धुक्छिः-अव्यय, व्यक्ति कें दूषित करैवाला शब्द । मै.

धुर-अव्यय, निषेधक शब्द । मै.

धुरकिल्ली-सं., धूरी कें टेकने रहैवाला किल्ली । मै.

धुरखुर-सं., द्वार (दोहारि) क दून् कातक स्थान । मै.

धुरखार-विशे., खुलल रूप वा बेरोकटोक । मै.

धुरता-सं., मधुर गारि आ गप्पक संग परिहास । मै.

धुर धुर करब-क्रि., कुकूर आदि कें भगबैक हेतु शब्द करब । मै.

धुरन्धर-विशे., विशेष निपुण, विशेषण । सं. तत्सम

धुरपटाँग-सं., खुल्लम खुल्ला । मै.

धुरफन्दी-विशे., अनेक दाओपेंच सँ काज चलबैवाला । मै.

धुरबन्हू-विशे., विशेष देवताक हेतु निहुछि समयक प्रतीक्षा मे बान्हल । मै.

धुरबान्हब-क्रि., कबुला कय कोनो वस्तु देवताक नामे निहुछिकय राखब । मै.

धुर रपट-सं., उद्दण्डतापूर्वक व्यर्थ दौड़ धूप । मै.

धुरियाएब-क्रि., धूरा सँ भरि जाएब । धूरासन बनाएब । मै.

धुरिया साओन-सं., वर्षाक बदला धूरा उड़ैवाला साओन । मै.

धुसरी-सं., धान विशेष । विशे., अत्यन्त मोट विशाल आकारवाली स्त्री । मै.

धू

धू-सं., बहाना, छल । मै.

धूआँ-सं., जरैत वस्तु सँ वाष्पक सुखाएल आ सघन उठैत हल्लुक पदार्थ । मै.

धूआ-सं., आकार, चेहरा मोहरा । मै.

धूआँकस-सं., पक्का घर मे धूआँ बहराइक बनल विशेष बाट । मै.

धूआकाया-सं., आकृति अनुकूल शरीर । मै.

धूनब-क्रि., साधि मे द' क' केरा आदि वस्तु कें पकैं लेल फूकि कय धूआँ कसब । मै.

धूइ-सं., दू खेतक बीच देल मोट, चाकर आ समतल आरि । मै.

धू धू करब-क्रि., उमङ्ग सँ अतिशय भरब । मै.

धू धू जरब-क्रि., अत्यन्त वेग आ धधरा सँ जरब । मै.

धूनब-क्रि., यन्त्र सँ समल तूर कें अलग क' क' ढील कय फलकाएब। मै.

धूनि-सं., अधिक तापक व्याकुलता। मै.

धूनि फेंकब-क्रि., १. अधिक कपड़ा पहिरने गर्मी उमगब। २. ज्वरक वेगक उपरान्त गर्मी सँ विकलता होएब। मै.

धूप-सं., सुगन्धित पदार्थक धूआँ। मै.

धूरब-क्रि., देखू—"धूकब"। मै.

धूमधाम-सं., बाजा गाजन, शब्द आडम्बर भरल उत्सव। मै.

धूमन-सं., धूपक सुगन्धित द्रव्य। मै.

धूम करब-क्रि., कोनो वस्तुक हेतु दुराग्रह सँ बारम्बार वेग सँ इच्छा प्रकट करब। मै.

धूम मचाएब-क्रि., कोनो वस्तु ले दुराग्रह सँ बारम्बार हल्ला मचाएब। मै.

धूमस-सं., हल्ला गुल्लाक संग उठा पटक करैत नेन्ना सभक खेलाएब। मै.

धूर्त-विशे., छल करैवाला। सं. तत्सम

धूर्तइ-सं., परिहास मे छल करैक चेष्टा। मै.

धूर्तबाज-विशे., छल करैवाला। मै.

धूर्ता-सं., परिहासक छल। सं. तद्भव

धूर-सं., १. एक कट्ठाक बीसम भाग धोनक मान। २. भवैत वा सपठैत (दोसर बड़दवाला) क बाँकी दूर। मै.

धूर फड़या-अव्यय, लेश मात्रो। मै.

धूरा-सं., माटि आदि वस्तुक गर्दी, गर्दा। मै.

धूरी-सं., घूमैवा वस्तुक बीचक अड़ानी। मै.

धूलि-सं., गर्दा। सं. तत्सम

धूस-सं., अत्यन्त मोट वा गर्म ओढ़ना। मै.

धूसब-सं., दुर्जन करब। वचन सँ लज्जित करबैत दोष देखाकय आत्महीनताक बोध कराएब। मै.

धूसर-विशे., मलिन अर्थ वर्णवाला। मै.

धूह-सं., खेत पथार मे उपद्रावी पशु कें डर समेत भ्रम देबाले बनल बाड़ कयल मनुष्यक आवृत्ति। मै.

धृ

धृतपट्ठ-विशे., धैर्यहीन। मै.

धृति-सं., धैर्य। सं. तत्सम

धृष्ट-विशे., ढीठ, निर्लज्ज याचक, धकंट। सं. तत्सम

धे

धेनु-विशे., नव बियाएल गैं। मै.

धेनुआ-विशे., धेनु गायवाला दूध। मै.

धेनुआर-विशे., नव बियाएल रहैक कारणेँ अधिक दूध वाली। मै.

धेह-सं., ध्येय, आन्तरिक विचार। सं. तद्भव

धै

धैं-विशे., धाइ, धाबी। मै.

धैड़-सं., ऊँच फछेर (किनार)। मै.

धैन-सं., चिन्ता व्यग्रता सँ भरल मनोवृत्ति। मै.

धैनसन-विशे., केहनो बातक कोनो प्रतिक्रियाक अभाव। मै.

धैर्य/धैरज-सं., आत्मसंयम, आत्मबल, सहनशक्ति। सं. तत्सम

धैल धरहर-विशे., राखल छिपाओल। मै.

धैलहा-विशे., बहुत दिनक छिपा क' राखलवाला। मै.

धैवत-सं., संगीतक मूल स्वर सब मे छठम स्वर "ध" विशेष स्वर। मै.

धो

धोअनि-सं., धोएला उत्तर बाँचल पानि। मै.

धोअब-क्रि., जल सँ परिमार्जन आ परिस्कार करब। मै.

धोआ-विशे., धोएल धोती आदि वस्त्र। मै.

धोआइ-सं., धोऐक पारिश्रमिक। धोएबाक कम। मै.

धोआएब-क्रि., अनका द्वारा स्वच्छ कराएब। मै.

धोआओन-सं., धोऐक बोनि। मै.

धोएब-क्रि., स्वच्छ करब, परिमार्जन आ परिष्कार करब। मै.

धोकड़कस्सा-विशे., धोकड़ा मे कसि क' ल' जाइवाला। मै.

धोकड़ा-सं., गहींर आ साँकर सीयल सोन वा मोट कपड़ाक वासन। बोरा। मै.

धोकड़ी-सं., अंगा मे बनल वा कपड़ाक छोट छीन वस्तु रखैक स्थान। मै.

धोकनी-सं., कृत्रिम बसात दैक यन्त्र। भाथी। मै.

धोखरब-क्रि., जल आदि द्रव सँ विकार हरब, स्वच्छ होएब। मै.

धोखा-सं., भ्रम, गलती, चूक । मै.

धोखाएब-क्रि., भ्रम मे पड़ब । सन्देह करब । मै.

धोखा देब-क्रि., विश्वासघात करब । मै.

धोखोधड़ी-सं., सन्देह करैक क्रम । मै.

धोखाबाज-विशे., धोखा दैक स्वभाववाला । मै.

धोखार-सं., आघात सँ शरि क' खसल विकार । मै.

धोखारब-क्रि., जल आदि सँ आघात एवं मर्दन कय सरल विकार । मै.

धोखाह-विशे., सन्देह आ भ्रमवाला । मै.

धोंछ-विशे., नीचता भरल लोक । स्त्री० धोंछि । अत्यन्त अनादर मे धोंछिया । मै.

धोटकी-सं., ढूनू ठोर जुटला उत्तर बनल मुहक रेखा । मै.

धोतियाहा-विशे., धौत परीक्षा मे उत्तीर्ण पण्डित । पूर्व मे राज द्वार मे पण्डितक परीक्षालय धोती दय सत्कृत पण्डित । मै.

धोती-सं., पुरुषक डाँर सँ नीचाँ पहिरैवाला नमहर वस्त्र । मै.

धोधराह-विशे., अनेक धोधरि भरल गाछ । मै.

धोधरि-सं., अपनै आप गाछ मे बनल खोह । मै.

धोधार-सं., भीतरैं भीतर गाछ, पहाड़ मे स्वतः बनल बहुत दुरधरि सोन्हि । मै.

धोधि-सं., चर्बी सँ बढ़ि नमहर पेटक आकार । मै.

धोधिल-विशे., धोधिवाला । मै.

धोधैल-विशे., अधिक पैघ धोधिवाला । मै.

धोन-सं., कोनो वस्तुक धोला पर बाँचल पानि । मै.

धोनधान-सं., कोनो वस्तु कें धो क' राखल पानि । मै.

धोनहा-सं., पोछि क' फेंकल घृणावाला स्थूल वस्तु । मै.

धोनाह-विशे., बेसी नाक सँ नमरल पोटावाला । मै.

धोनि ढेकार-सं., अपच अन्नक विकृत गन्धवाला मुह देने हठात् वायु वेग । मै.

धोपचट-सं., असावधानता । मै.

धोपब-क्रि., १. आकाश पाताल देखबैत फज्झति करब । २. झाँपब । मै.

धोबि-सं., कपड़ा स्वच्छ करैक व्यवसायी जाति । मै.

धोबियाही-सं., धोबिक बस्ती तथा काजक स्थान । मै.

धोबिघट्टा-सं., धोबिक कपड़ा धोबैक नियत स्थान । मै.

धौ

धौंक-सं., ताप, ज्वालाक झोंक । मै.

धौजनि-सं., दुर्दशा भरल परिश्रम, रूटनी । मै.

धौत परीक्षा-सं., पाण्डित्यक परीक्षा लय धोती सँ सम्मानित करैक प्राचीन प्रणाली । मै.

धौन्ह-सं., प्राकृतिक वाष्पक वायुमण्डल मे सघनताक द्वारैं दिनो कें अन्धकार । मै.

धौर-अव्यय, मार्जनिक निषेधसूचक शब्द । मै.

धौरबी-विशे., पत्नी सँ अतिरिक्त केवल भोग लै राखलि स्त्री । रखैल । मै.

धौरी-विशे., लगहरि गाय । मै.

धौंस-सं., अधिक जोर सँ मुक्काक चोट । मै.

धौंस-सं., भय आतंक अनिष्टक डर सँ भरि धोखा दैक बात । मै.

न्य

न्याय-सं., उचित परिछोक । सं. तत्सम

न्यार-सं., इच्छाक प्रकाश । मै.

न्यास-सं., १. स्थापना । २. आन्तरिक विचार । सं. तत्सम/मै.

न्यौं-सं., पेनी छानब, जड़ि रोपैक प्रक्रिया । मै.

न्यौत-सं., निमन्त्रण । मै.

न-अव्यय, निषेध, अस्वीकार । मै.

नइ-अव्यय, अस्वीकार । मै.

नएँ-अव्यय, निषेधक शब्द । मै.

नओ-संख्या, एक अंकक सब सँ पैघ संख्या । नओं इकाई । मै.

नककट्टा-विशे., १. (लाक्षणिक) नाम हसबैवाला । २. काटल नाकवाला । मै.

नकका-विशे., पैघ नाकवाला । मै.

नक्कू-विशे., (लाक्षणिक) दुर्नामी । अधलाहे प्रसिद्ध । मै.

नक्तव्रत-सं., दिन रातिक व्रत । सं. तत्सम

नक्र-सं., मकर, हिंसक जलजीव । सं. तत्सम

नक्षत्र-सं., तारा (अश्विनी भरणी आदि) । सं. तत्सम

नक्षत्री-विशे., (लाक्षणिक) भाग्यशाली । सं. तत्सम

नककट्टी-सं., (लाक्षणिक) नाक कटेंक पुर्वक स्थिति। मै.

नकगर-विशे., १. (लाक्षणिक) समाज मे अग्रगण्य। २. पैघ नाकवाला। मै.

नकछेदा-विशे., छेदल नाकवाला। मै.

नकटा-सं., पक्षी विशेष। मै.

नकटी-सं., नाकक मल, नाकक सुखाएल कफ। मै.

नकडुब्बा-विशे., परम बुड़ि। देखू—"अहकक

डुबल गोरवें फुलनाल मे

नकडुब्बाजन नाक रहु छवि।

नकदड़री-सं., (लाक्षणिक) बारम्बारक तगेदा करवैक स्थिति। मै.

नकपिच्चा-विशे., पीचलसन नाकवाला। मै.

नकफेंवरा-विशे., दूर सँ पसरल नाकवाला। मै.

नकबासा-सं., नाकक अगिला भाग। मै.

नकबेसरि-सं., नाकक एक भागक छेदक गहना। मै.

नकमानि होएब-क्रि., दुर्दशा सँ काज सम्हारब। मै.

नकमुन्नी-सं., देखू—"नकबेसरि। मै.

नकल-सं., अनुकरण। उ. तत्सम

नकलनबीस-विशे., निन्दा रूपें आनक अनुकरण करेंक प्रकृतिवाला। उ. तत्सम

नकली-विशे., तत्वहीन, यथार्थतारहित। उ. तत्सम

नकलोल-सं., अज्ञ, जकर बुद्धि हठें बात नै पकड़ि सकय। मै.

नकसा-सं., कोनो क्षेत्रक मापचित्र। उ. तत्सम

नकसा लागब-क्रि., (लाक्षणिक) चिन्ता समेत आपत्ति आएब। मै.

नकहुा-विशे., (लाक्षणिक) सब ठाम नाम हसोनिहार। मै.

नकाइ-सं., हिंसक जलजीव, गोहि। मै.

नकाम-विशे., काजक अयोग्य, नाकाम। हि. तद्भव

नकार-सं., १. 'न' अक्षर। २. 'नहि' कथन। ३. अस्वीकार। मै.

नकारब-क्रि., १. अस्वीकार करब, अधलाह जानि नहि गछब। २. अनुमोदन नहि करब। मै.

नकारि-सं., नाक वेदना। २. नाक बराबरि। मै.

नकियाएब-क्रि., नाकक बलें बाजब। मै.

नकुब्बी-विशे., नाक बड़ल आम आदि फल। मै.

नकुली-सं., लग्गी आदि मे बनाओल अंकुश। मै.

नकोर-विशे., नाक जकाँ आवश्यक एवं प्रधान, (लाक्षणिक) अत्यन्त उत्तम (खेत)। मै.

नख-सं., नह। सं. तत्सम

नखड़ा-सं., अनुकरण, ढंग धरब, अवास्तविक आचरण, अभिनय। मै.

नखत-सं., नक्षत्र। सं. तद्भव

नखसिख-सं., पैरक नह सँ माथ धरिक वर्णन। मै.

नखासी-सं., खोदामा कय चित्रक निखार। नक्काशी। उ. तद्भव

नग्न-विशे., वस्त्रशून्य देह। सं. तत्सम

नग-सं., महनाक बीच मे जड़ल रत्न वा रत्नक विकल्प। उ. तत्सम

नगद-विशे., सद्यः देल मूल्यक सिक्का। उ. तत्सम

नगदी-विशे., सद्यः मूल्य दय के लेन देन। मै.

नगमिण्ठी-सं., द्विरागमन आएल कनेयाँक बनाओल नाग (परिधिवाला स्थान) क चारिम दिन मे नीपैक प्रक्रिया। मै.

नगर-सं., धनी आ सुव्यवस्थित व्यापार एवं प्रशासनिक सघन क्षेत्रक ग्राम। सं. तत्सम

नगाड़ा-सं., बड़का ढोल, बहुत दूरधरिक सूचनाक बाजन। मै.

नङ्गधड़ङ्ग-विशे., चेतनो अवस्था मे नाङट रहैवाला लोक। मै.

नङ्गट-विशे., नग्नता सँ उपद्रव कयनिहार अर्थात् शास्त्र संकोच भय छोड़ि उद्दण्ड। मै.

नङ्खर-सं., ओसरीट पर उपस्थित ओसरीट। मै.

नङटा-विशे., १. नाङ जकाँ रहैवाला बालक। २. नाङट रहनिहार। मै.

नङटाह-विशे., निर्लज्जता सँ दुष्ट प्रकृतिवाला। मै.

नङटिनियाँ-विशे., निर्लजि उद्दण्ड स्त्री, समाज मे दूषित। मै.

नङटे-विशे., नाङट भेल रहनै। मै.

नङडाह-विशे., समस्या भरल उपद्रावी। मै.

नङरा-विशे., विकृत रूपें चलैवाला, पङ्गु। मै.

नङराएब-क्रि., लङ्ज, पैर आ टाँग अबाह रहैक द्वारें विकृत चलब। मै.

नङन-विशे., नग्न । निर्वस्त्र । मै.

नङरिमोड़ देब-क्रि., (लाक्षणिक) खुशामद मे द्वार धेने रहब । मै.

नङहान-सं., १. मैथुनक हेतु साँढ़ भैंसाक गाय महिषिक उपर चढ़ैक क्रम । २. नङ्गैक स्थिति । मै.

नङोचङो-अव्यय, एक काल मे अनेक दिसक बहुत काज सँ उत्पन्न व्याकुलता । मै.

नक्षत्तर-सं., देखू—"नक्षत्र" । सं. तद्भव

नचनियाँ-विशे., नाच करैक व्यवसायवाला । मै.

नचरब-क्रि., अभाव सँ विवश होएब । मै.

नचाएब-क्रि., १. कोनो वस्तु कें घुमाएब । २. नाच कराएब । मै.

नचार-विशे., अभावक द्वारें विवश । लाचार । मै.

नचारी-सं., १. महादेवक विनोदी लीलाक गीत । २. अभाव सँ उत्पन्न विवशता । मै.

नचौनिहार-विशे., नचबैवाला । मै.

नछोर-सं., नह आदि वस्तुक आघात सँ बनल चिह्न । मै.

नछोरब-क्रि., छोट हल्लुक वस्तु सँ चमड़ा पर हल्लुक आघात करब । मै.

नजरि-सं., दृष्टि । उ. तद्भव

नट्टा-विशे., भुट्ट शरीरवाला । मै.

नट्टिन-विशे., समक लोकसँ बिना संकोच सँ नाचि गबैक व्यवसायवाली । आधा वेश्या । मै.

नट-विशे., अनेक प्रकारें लोक कें आकर्षित कय अस्थायी कपड़ घरा मे रहि चलता फिरता जीवनवाला । मै.

नटक चटक-सं., पहिरब, ओढ़ब आ वेशभूषा मे बेसी भड़कपन । मै.

नटकिया-विशे., नाटक करै मे कुशल । मै.

नटखट-विशे., उपद्रवी नेन्ना । मै.

नटखटाह-विशे., १. उनटपुलट काज । २. उपद्रव करैवाला । मै.

नटक्की-सं., संगीत आ कविता मय कथोप कथनवाला छोट नाटक । मै.

नटछट करब-क्रि., यथार्थता सँ दूर अपन उत्कर्ष जमबैक प्रयास करब । मै.

नटिनियाँ-सं., एक प्रकारक गारि । दुर्गुणी स्त्री । मै.

नटुआ-विशे., ग्राम्य नृत्यक व्यवसायवाला । मै.

नठब-क्रि., बात कें नकारात्मक वा अस्वीकार रूपें बदलि देब । मै.

नड़छब-क्रि., अचानक हाथ पैर उछालि कय फोंफें गरजि उठब । मै.

नड़छराह/नड़छाह-विशे., हाथ पैर फेंकैत फोंफें गरजैवाला । मै.

नड़तारा-सं., नगाड़ाक तर आ लग रहैवाला वस्तु । मै.

नड़पड़्या-विशे., अव्यवस्थित कर्म आ वचनवाला । मै.

नड़ बहलर-विशे., वासनाक वेग मे बहैवाला । मै.

नड़ भराह-विशे., अवढंग, शरीरें आ मने असन्तुलित रहैवाला । मै.

नड़ भसिया-विशे., ज्ञानशून्य, स्फूर्तिहीन । मै.

नड़हा उपास-सं., व्रतक दिन दिन राति उपास नै क' क' दिनभरिक उपास । मै.

नड़हा फौदार-विशे., (लाक्षणिक) स्त्री वा स्त्री पुरुष आपसी झगड़ा मे बिन पुछनो पञ्चैती करैवाला । मै.

नड़ाएब-क्रि., भोजनक क्रम मे देल वस्तु कें छोड़ि देब । मै.

नड़ाठ-विशे., नड़ाजोल, ऐंठ कय छोड़ल वस्तु । मै.

नड़ार-विशे., तृष्णा सँ माङगि के देखनिहार । मै.

नड़रा-विशे., निर्लज्ज भ' क' माङगि मेहरि मे रहैवाला । मै.

नड़राहेल हेलब-क्रि., निर्लज्जपना सँ सब ठाँ उतरि जाएब । मै.

नड़िया-सं., गाम घर मे चोरा क' घूमैवाला गीदड़ । मै.

नड़ियाठब-क्रि., (लाक्षणिक) घरपैसा गीदड़ कुकुर जकाँ भगाएब, बैलाएब । मै.

नड़िनियाँ-विशे., पुरुषक संगम चाहैक प्रकृतिवाली । मै.

नड़ेर-विशे., सतत अधलाह दृष्टि सँ मौथीक नाथू लागल रहनिहार । स्त्री० नड़री । मै.

नणचोख-विशे., अधिक मैथुन करैक स्वभाववाला । मै.

नत्थी-सं., एकठाँ बहुत पत्र आदि कें एक छेद मे बन्हैक प्रक्रिया। मै.

नञ्तञ-अव्यय, निषेधसूचक। प्रयोग-"नञ तञ एना करी जे।" मै.

न तन-अव्यय, आक्षेपक बोधक वचन। प्रयोग-"बद-मास न तन ……………………।" मै.

नतिनी-विशे., बेटीक बेटी। मै.

नथ-सं., नाकक गोलाकार बड़का गहना। मै.

नथाएब-क्रि., १. मालजाल कें नाथ पहिराएब। २. पोथी पतरा कें एकठाँ छेदि बन्हाएब। मै.

नथिया/नथुनी-सं., नाकक गोल गहना विशेष। मै.

नद-सं., बड़का चाकर धार। मै.

नदिया-सं., अत्यन्त छोट नदी। मै.

नदी-सं., सामान्य नदी। मै.

नदी फिरब-क्रि., (लाक्षणिक) मल त्यागब। मै.

नन्हका-विशे., छोटका। स्त्री० नन्हकी। मै.

नन्हिया-सं., धान विशेष। मै.

ननकिरबा-विशे., अत्यन्त छोट नेना मै.

ननघस्सी-सं., अत्यन्त कोमल घास। मै.

ननदोसि-विशे., ननदिक पति, पतिक बहिनोइ। मै.

ननविरखी-विशे., चुर्पेचुप झगड़ा लगौनिहार, छिपछिप क घातक उपद्रव कएनिहार। मै.

ननमुहाँ-विशे., मुह कें दयनीय बना क' कम बज-निहार। मै.

ननियासासु-विशे., पति आ पत्नीक नानी। मै.

ननिहर-सं., नानीक गाम, मातृक। मै.

ननू-विशे., अत्यन्त दुलारु आ स्नेह पात्र। प्रयोग-"जे ननू से मर्में ननू।" मै.

नप्पा-विशे., कोनो वस्तु नपैक लेल निश्चित कयल बासन। मै.

नपड़ा-विशे., सारहीन, काजक अयोग्य। मै.

नपना-विशे., तात्कालिक अस्थायी नपैक बासन। मै.

नपाइ-सं., नपैक अर्थात् माप करैक कार्य। मै.

नपाएब-क्रि., नाप कराएब। मै.

नपाओन-सं., नपैक काज, नपैक पारिश्रमिक। मै.

नपुंसक-विशे., हिजड़ा, पुरुषत्व आ स्त्रीत्वहीन। मै.

नपोढ़-विशे., सब प्रकारें सन्तुलित, उपयुक्त। मै.

नपौआ-विशे., १. नपैवाला। २. नपाकय आनल। मै.

नफगर-विशे., लागत सँ बेशी लाभ दैवाला। मै.

नफा-सं., खर्च सँ अधिक लाभ। मै.

नब्बे-संख्या, शून्य एकाइ नौ दहाइक अंक। मै.

नंब-विशे., नूतन, नवीन। सं. तद्भव/मै.

नबकबारि-विशे., नवका तुरक लोक, नवयुवक। मै.

नबकर्मी-विशे., नौ टा कर्म कर्यनिहार। मै.

नबका-विशे., नव आएल; नव बनल, नव भेल। मै.

नबब-क्रि., नीचब, झुकब, प्रणाम करब। मै.

नबम-विशे., नौ संख्या मे रहैवाला। सं. तद्भव

नबमी-सं., नौ संख्या मे रहैवाली, पक्षक नौ संख्याक तिथि। सं. तद्भव

नबसिक्खा/नबसिखुआ-विशे., नव नव काज सीखि क' आएल। मै.

नबाएब-क्रि., झुकाएब, लिबाएब। मै.

नबाबी देखाएब-क्रि., बाबुआनी ठाढ़ी करब। उ. तद्भव

नबारी-विशे., नव वयसवाला। मै.

नबासा-विशे., स्त्रीक नैहर दिशुक आएल धन। मै.

नबासी-संख्या, नौ एकाइ आठ दहाइक अंक। मै.

नबेत-सं., उत्सव मे अलंकृत सुन्दर द्वार तोरण। उ. तद्भव

नबेतखाना-सं., उत्सवक अवसर पर तोरण पर वाद्यनिर्याक बैसार। उ. तद्भव

नभ-सं., आकाश। सं. तत्सम

नम्मा-विशे., लम्बाकार। मै.

नम्माइ-सं., लम्बा होइक मान। मै.

नम-विशे., देखू—"नबम"। मै.

नमका-विशे., लम्बावाला। मै.

नमगर-विशे., नम्मासन। मै.

नमघोर-विशे., उचित सँ बेशी नाम लोक। मै.

नमछोर-विशे., अधिक नामसन। मै.

नमन-सं., प्रणाम, नमस्कार। सं. तत्सम

नमपोर-विशे., नम्मा नम्मा अंगवाला। मै.

नमब-क्रि., माल जालक पानि पीयब। मै.

नमउँपा-विशे., मालजाल कें पानि पीयबैवाला। मै.

नमरब-क्रि., ढील भ' क' पसरब। मै.

नमराएब-क्रि., खींचिकय बढ़ाएब । मै.
नमरान-सं., नमर'बैक प्रक्रिया । मै.
नमराह्-विशे., नमरैक स्वभाववाला । मै.
नमस्कार-सं., दूनू हाथ जोड़ि कय मात्र प्रणाम । मै.
नमस्ते-अव्यय, नमस्कार । ठाढ़े ठाढ़ हाथ जोड़ि वचन सँ प्रणाम । मै.
नमहुर-विशे., पैंथ । मै.
नमाइ-सं., लम्बाइ, नम्मा होइक मान । मै.
नमाओल-विशे., लम्बा जकाँ लगैवाला । मै.
नमी-सं., आर्द्रता । मै.
नमूना-सं., प्रतिरूप, प्रति छाया, आदर्श । उ. तत्सम
नमीर-सं., अन्न मे मिलल विभिन्न रूप वस्तु । मै.
नयन-सं., आँखि । सं. तत्सम
नर्तक-विशे., नर्त्त मे निपुण । सं. तत्सम
नर-सं., १. मनुष्य । २. पुरुष जाति । सं. तत्सम
नरक-सं., दुर्गति, अधलाह कर्मक अधलाह स्थिति । सं. तत्सम
नरकटि-सं., सरही जकाँ नमछोर मोट डाँटवाला खढ़, सरकण्डा । मै.
नरकासुर-सं., पौराणिक राक्षस विशेष । सं. तत्सम
नरछुट्टी-विशे., (लाक्षणिक) चुक्ष काया मे अत्यन्त छोट शरीरवाला । मै.
नरम-विशे., कोमल, सरस । मै.
नरमाएब-क्रि., कोमल होएब, सरस बनब । मै.
नरमी-सं., कोमलता । सरसता । मै.
नरछर लगाएब-क्रि., शर मे शर जोड़ि घात करब । मै.
नरही-विशे., १. बिना बेंटवाला कोदारि खुर्पी आदि अस्त्र । २. अधिक दिनधरि पानि जमल रहैवाला खेत । मै.
नरहेर-विशे., स्त्रीक वासना सँ पाछू लागि घूमैत रहनिहार । मै.
नराएब|निराएब-क्रि., मालजालक गर्भपात होएब । मै.
नराओन-विशे., अयोग्य, अकर्मक, अपाटक । मै.
नरालाइ-सं., नाम हराइ । दुर्यश । बदनामी । मै.
नरिया-सं., खपड़ाक प्रभेद । झँपैवाला खपड़ा । मै.
न'री-सं., बाँटल ताग, तागक लच्छा । मै.

नरुआ-सं., परिपाटीक अनुसार आँटी बनाओल झाँटल धानक डाँट । मै.
नरैठी-सं., कण्ठक मोटका नली । श्वास नली । मै.
नरैं-सं., व्यवस्थित रूपेँ लगाओल गाछी । मै.
नरैठा-सं., दाना झारल धानक नारक आँटी । मै.
नरौ-विशे., बिना साम लागल नगाड़ । मै.
नल्ली-सं., शोणित बहैवाला मोट सिरा तथा कृत्रिम नली । पाइप, ट्यूब । मै.
नल-सं., पानिक साँकर बाहा । मै.
नलकूप-सं., चापाकल । मै.
नलकूबर-सं., कुबेरक पुत्र, देवता विशेष । मै.
नलिया-सं., कृत्रिम पातर नली । मै.
नली-सं., देखू—"नल्ली" । मै.
नव-विशे., नवीन । सं. तत्सम
नवग्रह-सं., १. गहना विशेष । २. नौ ग्रहक दल (रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु) । सं. तत्सम
नवमी-सं., पक्षक न'म तिथि । सं. तत्सम
नवल-विशे., नवीन । सं. तत्सम
नशाएब-क्रि., नाश क' देब । मै.
नष्ट-विशे., दूरि भेल । सं. तत्सम
नह-सं., नख, आङुरक आगू मे बढ़ल मल । मै.
नहकट्टी-सं., नह कटैक विधि । मै.
नहकेश-सं., क्षौर कर्म, अशौचक अन्तिम कर्म । मै.
नहड़ा-सं., स्त्रीगणक भीतर मे पहिरैवाला वस्त्रक खण्ड । अन्तर्वस्त्र । मै.
नहछू-सं., समाज मे कोनो एक वर्गक विवाहक अवसर पर वर कनियाँक हाथक आङुरक नह सँ नेहू बहार कय पानक संग दूनू के लोढ़बैक मिथिलाक विधि । मै.
नहटब-क्रि., १. एके काज मे एक बेर 'हँ' कहि दोसर बेर 'नौं' करब । २. नह सँ भूमि कोड़ब । मै.
नहरनी-सं., नह कटैक अस्त्र । मै.
नहरनी दे की बनरनी दे-अव्यय, (लाक्षणिक) एहन स्थिति जाहि मे दु मे सँ किछु एक टा के दैबैक पड़य । मै.
नहरि-सं., धार रूपेँ पानि बहैक बाट । मै.
नहुला-सं., नौ टा चिह्नवाला तासक पत्ती । मै.

नहला पर दहला-विशे., (लाक्षणिक) एक पर एक बढ़ि क' रहैवाला । मै.

नहसलोक-विशे., आनक नीक नैं देखि सकैवाला । मै.

नहसपन-सं., आनक अनिष्टे टा मनवैक बुद्धि । मै.

नहसूर-सं., नहक कोन बढ़ला सँ नहक व्यथा । मै.

नहाइत-अव्यय, जकाँ, समान । मै.

नहाएब-क्रि., स्नान करब । मै.

नँहि-अव्यय, निषेध, विरुद्धक शब्द । मै.

नहिरा-सं., स्त्रीक बापक घर । मै.

नहुँ नहुँ-अव्यय, धीरेँ धीरेँ । मै.

नहेरि-सं., चूड़ी लहठीक व्यवसायी जाति, नहेरिआ । मै.

ना

ना-अव्यय, न, नहि । मै.

नाँ-सं., नाम । मै.

नाइब-सं., मानजाल कें खाइक हेतु बनाओल बाँस काठ आ सीमेन्टक पैघ बासन । मै.

नाइर-सं., हासू खुरपी आदिक बेंट मे लोह कें मोड़ि बन्धन । मै.

नाऊँच-विशे., ऊँच नहि, माथ ठेकैवाला घर आदि । मै.

नाउठ-विशे., सतरंजक खेलक चालि मे सह लगैक डरेँ अपन स्थान सँ नैं चलैवाला बादसाह । मै.

नाओ-सं., नौका, नाह । मै.

नाओँ-सं., नाम । मै.

नाओ काढ़ब-क्रि., नौका खेबब । मै.

नाओँ काढ़ब-क्रि., तन्त्र मन्त्र सँ चोरक नाम उचारब । मै.

नाक-सं., शरीरक अंग विशेष, नासिका । मै.

नाक अजबारब-क्रि., (लाक्षणिक) शुभे अवसर पर छींकब । मै.

नाक कटाएब-क्रि., (लाक्षणिक) समाजक बीच अपकर्म सँ अप्रतिष्ठित होएब । मै.

नाक गड़ाएब-क्रि., (लाक्षणिक) लोलुपता सँ कोनो वस्तु हथियबैले आग्रू भेल रहब । मै.

नाक डुबाएब-क्रि., १. समाज मे अप्रतिष्ठित बनब । २. कोनो वस्तु कें पबै लेल तृष्णा सँ भरि लागल रहब । मै.

नाक पर माछी नैं बैसँ देब-क्रि., (लाक्षणिक) मे अभिलाषा पुराएब ने अभिलाषा प्रकट करैक अवसर देब । मै.

नाक फड़काएब-क्रि., (लाक्षणिक) क्रोध प्रकट करब । मै.

नाक बोरब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो स्वार्थ साधैले चिरकाल तत्पर बनल रहब । मै.

नाक भाड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) विरोध प्रकट करब, निषेध करब । मै.

नाक भिड़ाएब-क्रि., (लाक्षणिक) बिन कारणो सबठाँ बलक प्रदर्शन करब । मै.

नाक भिनकाएब-क्रि., सदिखन सबठाँ सब कें अश्रद्धा करब । मै.

नाक भौंह टेढ़ करब-क्रि., (लाक्षणिक) असम्मति प्रकट करब, घृणा देखाएब । मै.

नाक मारब-क्रि., (लाक्षणिक) अश्रद्धा सँ विरोध करब । मै.

नाक रगड़ब-क्रि., अपन काज साधैले अत्यन्त खुशामद करैत रहब । मै.

नाकर नुकर करब-क्रि., (लाक्षणिक) चेष्टा सँ अस्वीकार तथा निषेध प्रकट करब । मै.

नाक सोंक होएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) दम घोंटैक स्थिति होएब । २. कनि काय सम्पूर्ण भरि जाएब । मै.

नाक सिकोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) घृणा करब, असम्मति प्रकट करब । मै.

नाक सुकरब-क्रि., (लाक्षणिक) घृणित मानब । मै.

नाका-सं., चोड़ क्षेत्रक हेतु पुलिसक शाखा स्थान । हि. तत्सम

नाकी देब-क्रि., नाक दबाकय बाजब । मै.

नाकी भरब-क्रि., १. सूतल मे नाकक शब्द करब । २. दीनता प्रकाश करैले नाकक बलेँ बाजि क' खुशामद करब । मै.

नाखुर-सं., पीड़ा दैवाला नहक कोनी । मै.

नाग-सं., १. पुरुष काल सर्प । स्त्री० नागिन । २. विवाहक समय मे चारू कोन पर केरा आ करची गाड़ि क' नवीन वस्त्र घेरि कय नव कनियाँक चारि दिन धरि संयम नियम सँ रहैक स्थान । मै.

नाग केशरि-सं., काश्मीरी फूल विशेष । मै.

नागफेनी-सं., काँटवाला जंगल । मै.

नागर-विशे., समाजक श्रेष्ठ । स्त्री० नागरि । मै.

नागरी-सं., कैथी लिपि विशेष । मै.

नागरिक-विशे., राज्य आ नगरवासी जनता । मै.

नागा-विशे., अनुपस्थित । सं., गैरहाजिरी । मै.

नागा-विशे., १. नागा क्षेत्र वासी । २. विशेष सम्प्रदायक साधु । मै.

नागा करब-क्रि., बीच बीच मे अनुपस्थिति करब । मै.

नागेसर-सं., देखू—'नाग केशरि । मै.

नाङ्घन-सं., कोनो वस्तुक उपर द' क' उठल डेग । मै.

नाङ्घब-क्रि., डेग हलब, कोनो स्थान कें पार करब । मै.

नाङट-विशे., निर्वस्त्र । मै.

नाङर-विशे., टाँग आ पैरक दीर्घ ढेङ भ' क' चलनिहार । खंज । मै.

नाङरि-सं., पुच्छ, पुच्छर । विशेष अंग । मै.

नाँच-सं., नृत्य, अंग विक्षेप पाद प्रक्षेप । मै.

नाँचब-क्रि., नृत्य करब । अपन धुरी पर घूमब । मै.

नाटक-सं., परोक्ष लोकक सम्पूर्ण स्वभावक अनुकरण प्रदर्शन । अभिनय । सं. तत्सम

नाटकीय-विशे., नाटक सम्बन्धी । मै.

नाट खुट-विशे., भुट्ट आकार प्रकारवाला । मै.

नाड़ी-सं., रक्त धमनक शिरा । मै.

नाढ़र-विशे., मौगी कें देखितहिं पाछू लगनिहार । स्त्री० नाढ़रि । मै.

नाढ़ि-विशे., छिनारि, बिन गर्भधारण करैवाली । मै.

नाण-सं., पुरुष लिंग । मै.

नाणिमाणि-अव्यय, (लाक्षणिक) कोनो अंगक कोनो अवस्थाक ठेकान । मै.

नाति-विशे., बेटा बेटीक बेटा । मै.

नाथ-विशे., रक्षक, स्वामी । सं. तत्सम/मै.

नाथ-सं., मालजालक नाक मे पैसाओल वश मे करैक डोरी । मै.

नाथनि-सं., मालजाल कें नथैक कार्यक्रम । मै.

नाथब-क्रि., मालजालक नाक के छेदि डोरी पैसाक' विवश करब । मै.

नाथी-सं., मालजाल के नथैवाला डोरी । मै.

नाद-सं., १. बहुत विस्तृत बासन । ध्वनिक उत्पत्तिक केन्द्र । मै./सं. तत्सम

नादि-सं., देखू—"नाद" । मै.

नाधिन धिन्ना-अव्यय, तबलाक बोल । मै.

नान्दी-सं., नाटक आदिक मंगलाचरण । सं. तत्सम

नान्हि टा-अव्यय, कनेके छोट । मै.

नाना-अव्यय, अनेक । मै.

नाना-विशे., माइक पिता । मै.

नाप-सं., कोनो वस्तुक अनुसारक मान । मै.

नापजोख-सं., मानक अनुसार नापैक आ तौलैक क्रम । मै.

नापता-विशे., निपत्ता, विलीन, खोजलो पर नहि भेटैवाला । मै.

नापब-क्रि., डंडा या आनो कोनो वस्तु अथवा तराजू सँ मान बहार करब । मै.

नापी-सं., नाप करैक क्रम । मै.

नाफल-सं., डंडा पर बनाओल दीपक आधार । मै.

नाभि-सं., देहक बीच पेट मे ढोँढ़ी । मै.

नाभी-सं., चाक आ पहियाक बीच मे धुरी पैसबैक गोलाकार शून्य । मै.

नाम-सं., कोनो व्यक्ति आ वस्तुक संकेत शब्द । मै.

नाम-विशे., लम्बा । मै.

नामक-विशे., नामवाला । मै.

नाम कमाएब-क्रि., यश उपार्जन करब । मै.

नामकरण-सं., नाम रखैक विधि । मै.

नाम करब-क्रि., सुन्दर कृत्य सँ विख्यात होएब । मै.

नाम धराएब-क्रि., ककरो हेतु निकृष्ट क' राखब । मै.

नामधारी-विशे., (लाक्षणिक) धूह मात्र बनल, केवल प्रतीक रूपें राखल । मै.

नाम निशानो नै रहब-क्रि., कोनो प्रकारक किछु कहियोक अस्तित्व नै रहब । मै.

नामवर-विशे., अत्यन्त प्रतिष्ठा संग प्रसिद्ध । लोक के पहिल नाम लैक योग्य । नामी । मै.

नाम ले-अव्यय, अस्तित्वहीन भ' क' रहैत । मै.

नाम हसाएब-क्रि., अप्रतिष्ठित बनब । निन्दा रूपें लोकक उपहासक योग्य बनब । मै.

नामी-विशे., प्रसिद्ध । मै.

नायक-विशे., १. कोनो समूहक अगुआ । २. नाटक-आदि दृश्यक पात्र । सं. तत्सम

नार-सं., १. फसिलक नमहर डण्टी । २. नवजात शिशुक नाभी सँ लागल प्रसूतीक जरायु धरि नमहर सिरा । मै.

नारक-विशे., (लाक्षणिक) अगड़लगौन लोक । मै.

नारदी भजन-सं., विरहा एवं उदासी गान । मै.

नाँ रसाइ-सं., अप्रतिष्ठा, नाम डुबबैक स्थिति । मै.

नाराच-सं., बाण, शर । सं. तत्सम

नारायण-कि., तीन प्रधान देवताक एक देव । विष्णु । मै.

नारायणी क्षेत्र-सं., गंगाधारक जल सँ सवा हाथ धरिक भूमि । मै.

नारायणी धूप-सं., धूप विशेष । धूपक विशेष पदार्थ । मै.

नारि-सं., १. देखू–"नाइर" । २. बाढ़ा (धनिवह) । ३. स्त्री । मै.

नारिकेर-सं., श्रीफल, नारियल । मै.

नारी-सं., स्त्रीजाति । सं. तत्सम/मै.

नाल-सं., १. कोनो वस्तुक पैघ डण्टा । २. बन्दूकक गोली निकसैक फोंफी । ३. घोड़ा आदि जीवक पैर मे वा जुत्ता मे ठोकैक लोह । सं. तत्सम/मै.

नाला-सं., पानिक निकास हेतु चकरगर बाट । मै.

नालिस-सं., प्रतिवादीक अभियोग विज्ञापन । मै.

नाली-सं., आङन घरक पानि बहैक संकीर्ण बाट । मै.

नाविक-विशे., नाओक चालक । सं. तत्सम

नाश-सं., समाप्ति, क्षय । सं. तत्सम

नाशी-विशे., नष्ट कयनिहार । सं. तत्सम

नाँस-सं., हरक एकदम अगिला पतरका भाग । मै.

ना सकार-सं., अस्वीकार । मै.

नासपाती-सं., फल विशेष । मै.

नासा/नासिका-सं., नाक । सं. तत्सम

नासी-सं., एकै ठाम देने अधिक पानी बहने बनल छोट नदी । मै.

नाह-विशे., नाथ, स्वामी, सं., नौका । मै.

नाहक-अव्यय, व्यर्थ । उ. तत्सम

नाहर-सं., सिंह । मै.

नाहस-सं., अनिष्ट कामना सँ कुदृष्टि । आ कुव्य-वहार । मै.

नि

निऐं-अव्यय, तरहें । मै.

निकट-अव्यय, लग । सं. तत्सम

निकती-सं., मूलवान् वस्तु तौलैक अत्यन्त छोट तराजू । सोना, हीरा जोखैक वस्तु । मै.

निकन्दन-विशे., जड़ि मूल सँ समाप्त । मै.

निकम्मा-विशे., कोनो काज उद्योग नहि कैनिहार । मै.

निकमानि-सं., परिचर्या, सेवा । मै.

निकलब-कि., बहराएब । हि. तत्सम/मै.

निकसुआ-विशे., बहार भ' क' भागैवाला । मै.

निकसब-कि., बहार भ' जाएब । मै.

निःकसरि-विशे., निश्शेष । मै.

निकहा-विशे., बढ़ियाँवाला । मै.

निकाएब-कि., बनाएब, नीक बनाएब । उपयोगी करब । मै.

निकाओन-सं., निकौला पर बहराएल अधलाह वस्तु । मै.

निकाय-सं., विभाग । सं. तत्सम

निकालब-कि., बहार करब । मै.

निकास-सं., बहारक स्थान । मै.

निकासी-सं., बहार करैक प्रक्रिया । मै.

निकेना-विशे., नीक जकाँ । मै.

निकें-विशे., आनन्दित, सर्वथा सुखी, कुशल । मै.

निकौनी-सं., खेत कें खढ़ पात सँ स्वच्छ करैक प्रक्रिया । मै.

निखट्टू-विशे., कोनो काज उद्योग मे बेलूरि । मै.

निखत्तर-सं., सत्यानाश, प्रलय । मै.

निखत्ता-सं., अतल गर्त, अत्यन्त गहींर खत्ता । मै.

निखन्नर-विशे., अनन्त, अन्तहीन । मै.

निखरब-कि., उगिकय देखार होएब । मै.

निखरलहा-विशे., उगि क' देखार भेलवाला । मै.

निखरस-विशे., सब प्रकारें स्वच्छ आ सम्पूर्ण । मै.

निखार-सं., उपर उगल चेन्ह । मै.

निखारब-कि., चित्र उगाएब । मै.

निखोरब-कि., खोंढ़का छोड़ा कय दाना बहार करब । मै.

निगम-सं., मूल शास्त्रक पोषक शास्त्र । मै.

निगमानि-सं., नीक जकाँ सेवा शुश्रूषा । मै.

निगलब-क्रि., गीर जाएब । मै.

निगोड़ी-विशे., एक प्रकारक स्त्रीगणक गारि । मै.

निघुष्ट-विशे., अत्यन्त नीच । मै.

निङ्हडब-क्रि., सब टा सड़ि जाएब । मै.

निङ्हार-सं., लालसा सँ दृष्टिपात । मै.

निङ्हारब-क्रि., आँखि गड़ा क' तृष्णा सँ देखब । मै.

निङ्हास-सं., खा क' मालजालक छोड़ल घासपात । मै.

निङहेस-सं., जमा कयल निङ्हास । मै.

निचका-विशे., नीचा मे राखल । मै.

निचगर-विशे., अधिक नीच । मै.

निचट्ट-विशे., सब ठाँ सब प्रकारक अभाव । मै.

निचपना-सं., नीचता । मै.

निचरस-विशे., नीचाँ दबल । मै.

निचला-विशे., नीचाँ मे रहैवाला । नीचाँ भागक । मै.

निचाइ-सं., नीचाँ होइक परिमाण । मै.

निचाओन-विशे., नीचाँ जकाँ । मै.

निचाट-विशे., देखू—''निचट्ट'' । मै.

निचाठ-विशे., नीचाँ दिस झुकल । मै.

निचाँस-विशे., नीचाँ दिस रहैवाला । मै.

निचित-विशे., निश्चिन्त, निश्चैन । प्रयोग—''घर सरस त' सुती निचित, मन सुखी त' गाबी गीत ।'' लोकोक्ति । मै.

निचू-विशे., १. नीचाँ स्थानवाला । २. बिना चुबै वाला । प्रयोग—''निचू घर बरसातक सुख ।'' मै.

निचैन-विशे., शान्तिपूर्वक । बिना चिंता व्यग्रता सँ भरल । मै.

निचैनी-सं., शान्तिमयता, चिन्ताव्यग्रता हीनता । मै.

निचोड़-सं., १. निष्कर्ष । २. गारि क' बहार कयल रस । मै.

निचोड़ब-क्रि., रस गारि क' बहार करब । मै.

निचोल-सं., साड़ी, स्त्रीक वस्त्र । मै.

निछक्का-विशे., बिना कोनो वस्तुक मिलल । मै.

निछच्छ-विशे., सम्पूर्ण रूपेँ उग्र आ उद्दण्ड भेल । प्रयोग—''कामेश्वर निछच्छ बताह भ' गेला ।'' मै.

निछट-विशे., सब सँ छाँटल विशेषतावाला । मै.

निछप-विशे., ककरो मे नहि छपै (मिलै) जोग । मै.

निछाउर-सं., शुभोत्सवक प्रसन्नताक प्रसाद । पुरस्कार । मै.

निछाएब-क्रि., खड़पात कालकय परियाएब । शुद्ध रूप मे वस्तु कें आनब । मै.

निछाओन -सं., बीछ बीछ क' जमा कयल दूषित खड़पात । मै.

निछाक-सं., पियासक पूर्ति । मै.

निछार-विशे., पूर्ण निकलल सीसवाला । मै.

निछुड़न-सं., अन्न सँ सूप द्वारा बहार कयल दूषित पदार्थ । मै.

निछुड़ब-क्रि., अन्न सँ दोसर अन्न वा दूषित पदार्थ बहार करब । मै.

निछुड़लहा-विशे., निछुड़ि क' फरिच्छ कयलवाला । मै.

निछोह-अव्यय, बिना आगू पाछू तकने तेजी सँ । मै.

निज-विशे., अपन । सं. तत्सम

निजगुति-सं., निश्चयात्मक विषय । मै.

निजगुती-सं., निश्चयात्मक व्यवस्था । मै.

निजर-विशे., एकदम ज्वररहित । मै.

निजाएब-क्रि., १. आत्मसात् करब । २. उद्गत होएब । मै.

निजाओल-विशे., आत्मसात् कयल । मै.

निजी-विशे., अपन अधीन वाला । मै.

निजुत-विशे., तत्पर बनाओल । मै.

निझाह-विशे., १. आन्तरिक सक्कत । २. सम्पूर्ण रूपेँ स्वस्थ । मै.

निठल्ला-विशे., उद्यमहीन, कार्यनहि कयनिहार । मै.

निठाल-सं., अभाव सँ बनल निराशा । मै.

निठुर-विशे., १. भीतर सँ निर्दय । २. शुद्ध दूध । मै.

निठोह करब-क्रि., आशा द' क' निराश करब । मै.

निठोहर-विशे., आशा द' क' निराश । मै.

निड़ड़ब-क्रि., आँखि पर जोर द' क' क्रोध प्रकट करब । मै.

निडर-विशे., भयशून्य, डरहीन । मै.

निड़ाड़ब-क्रि., क्रोधक द्वारेँ आँखि मे तीव्रता आनब । मै.

निढाल-विशे., निराशा सँ शिथिल भेल। मै.

नित्तह-अव्यय, सब दिन। मै.

नितोदिन-अव्यय, सब दिन। मै.

नित्य-विशे, १. अविनाशी। सनातन। ३. सदा। सं. तत्सम

नित-विशे., सदा। सं. तद्भव

नितम्ब-सं., डाँरक नीचाँ पाछुक अंग। मै.

नितम्बिनि-विशे., नारी-युवती। सं. तद्भव

नितराएब-क्रि., सौभाग्य सँ गर्वित होएब। मै.

नितालोर-सं., मोह माया छोड़ि क' सम्बन्ध-विच्छेद। मै.

नितान्त-अव्यय, अत्यन्त रूपेँ। सं. तत्सम

निद्रा-सं., आलस्य सँ मन बुद्धिक जड़ता। सं. तत्सम

निदरदी-विशे., निर्दय, कठोर। मै.

निदान-सं., १. कोनो बातक जड़ि। २. सब बढ़ि चढ़ि हीनता। ३. पराकाष्ठा। सं. तत्सम/मै.

निधक-विशे., बेरोकटोक, प्रकट। मै.

निधड़क-अव्यय, बेरोकटोक। मै.

निधन-विशे., धनहीन। मै.

निधप-विशे., पदहीन। मै.

निधाख-विशे., धाखरहित। मै.

निधान-सं., कोष, खजाना। सं. तत्सम

निधारब-क्रि., निश्चय करब। मै.

निधि-सं., खजाना, भण्डार। मै.

निधुन-विशे., कोनो सोच विचारक भावनाहीन। मै.

निधुवन-सं., रति, सम्भोग। मै.

निधू-विशे., धूआँरहित। मै.

निधोख-विशे., धोखाहीन। मै.

निधोर-सं., निश्चय। मै.

निन्द-सं., निद्रा। मै.

निन्दा-सं., खिधांत। आनक कुत्सितवार्ता, कुचेष्टा। मै.

निन्न-सं., देखू—"निन्द"। मै.

निन्नक सुतल-विशे., निद्राक द्वारेँ चेष्टाहीन। मै.

निन गाएब-क्रि., निश्चिन्त भ' क' सुतैक आनन्द लेब। मै.

निन बेसरम-सं., लाज संकोच सँ दूर सूतल अवस्था। मै.

निन भेर-विशे., निन्न सँ निश्चेष्ट, गाढ़ निन्न मे पड़ल। मै.

निनबासल-विशे., गाढ़ निन सँ ज्ञान ध्यान शून्य, निन्न मे लीन, निन्नक अधीन। मै.

निनाइ-सं., पेटक वायुविकार विशेष। मै.

निनाद-सं., ध्वनि। गर्दमिसान। सं. तत्सम

निनानबे-सं., नौ एकाइ नौ दहाइक अंक। मै.

निनियाँ-सं., नेन्ना केँ दुलार सँ सुतबे मे निन्नक सम्बोधन। मै.

निपट आन्हर-विशे., दुनू आँखि सँ एकदम दृष्टि-हीन। मै.

निपटब-क्रि., विरोधक फरिछाओक करब। मै.

निपटाएब-क्रि., दुनू पक्ष केँ फरिछाएब। झगड़ा फरिछाएब। मै.

निपटारा-सं., १. झगड़ाक फरिछौँक। २. देनक चुकान। मै.

निपत्ता-विशे., अन्तर्हित, विलीन, अलोपित। मै.

निपना-सं., नीपैक सामग्री ओरियाओल बासन। मै.

निपनिहारि-विशे., नीपैवाली। मै.

निपरबाहि-विशे., निश्चिन्त। मै.

निपाएब-क्रि., दोसरा सँ नीपैक काज कराएब। मै.

निपाओन-सं., नीपैक बोनि। पारिश्रमिक। मै.

निपात-सं., अन्तर्धान। सं. तत्सम

निपिया-सं., नीपैक काज। मै.

निपुआइ-विशे., सम्पूर्ण रूपेँ अन्तर्हित, समाप्त। मै.

निपुण-विशे., चतुर, कुशल। सं. तत्सम

निपुत्र/निपुत्रो/निपुत्तर-विशे., पुत्रहीन। मै.

निपोटब-क्रि., (आँखि हेतु विशेष) खोलब। मै.

निपोरब-क्रि. (दाँतक हेतु विशेष) निर्लज्ज भ' क' दाँत खोलब। मै.

निबटब-क्रि., मलमूत्रक त्यागक क्रिया सब सँ निश्चिन्त होएब। हि. तत्सम

निबल-विशे., बलहीन। मै.

निबहब-क्रि., निर्वाह करब। मै.

निबाह-सं., निर्वाह, जीवनक व्यवस्था। सं. तद्भव

निबाहब-क्रि., ककरो जीवन चलाएब। मै.

निभरौस-सं., १. आशा आ धैर्यक अभाव। २. आश्वस्तिशून्यता। ३. निराशता। मै.

निबिड़-विशे., सघन। सं. तत्सम

निम्मन-विशे., उत्तम। चैंघ। मै.

निमकी-सं., सॉस मैवोक अँचार। मै.

निमग्न-विशे., डूबल। मै.

निमरजना-सं., निर्वाह, सेवासहित जीवनक उद्योग। मै.

निमरसेबा-सं., सर्वथा अन्त, समाप्ति। मै.

निमहता-सं., निर्वाह, निर्वाहक उपाय। मै.

निमहब-क्रि., निर्वाहक उपाय करब। मै.

निमाइन-सं., शीतला रोग सँ उद्धार भेला पर प्रथम प्रथम शरीर मे औषधयुक्त तेल लगर्बैक विधि। मै.

निमाह-सं., देखू—"निवाह"। मै.

निमाहब-क्रि., १. परम्परानुसार नियम सुरक्षित राखब। २. जीवन चलाएब। मै.

निमित्त-अव्यय, हेतु, उद्देश्यक। सं. तत्सम

निमिष-सं., पल, क्षण। सं. तत्सम

निमुआन-विशे., सर्वथा अदृश्य भ' क' विलीन वा डूबल। मै.

निमुछ-विशे., बिना मोछवाला, मोछहीन। मै.

निमुछ हाथ-विशे., मुट्ठी बान्हि क' हाथक नापवाला। मै.

निमुन्न-विशे., सब दिस सँ एकदम बन्न। मै.

निमूहधन-विशे., मुह सँ नहि बाजि सकैवाला माल जाल आदि धन। मै.

निमेख-सं., क्षण मात्रक समय। मै.

निमेरा-सं., सेवा शुश्रूषा आ जीवन चलबैक उपै। मै.

निमोछिया-विशे., मोछ नहि भेलवाला। नव तरुण। मै.

नियत-विशे., निश्चित। सं. तत्सम

नियति-सं., भाग्य, विधान। सं. तत्सम

नियम-सं., सनातन विधि। सं. तत्सम

नियामक-विशे., निश्चिय पर टटल रहैवाला। सं. तत्सम

नियार-सं., देखू—"न्यार", नेआर। मै.

नियुत-विशे., नियुक्त। तैनात, काजक भारवाला। मै.

निर्कटैल-विशे., निःशेष। सब प्रकारें समाप्त। मै.

निर्गमन-सं., बहराएब। निकलब। मै.

निर्गुण-विशे., नाम रूपरहित। गुणहीन। सं. तत्सम

निर्गुनिया-विशे., उपकार नै माननैवाला, गुण नै बुझैवाला। मै.

निघिन-विशे., घिन बढ़ैक पदार्थ सँ भरल। मै.

निर्जन-विशे., लोक सब सँ शून्य। सं. तत्सम

निर्जु-विशे., अत्यन्त सुकुमार अबोध। मै.

निर्झर-सं., झरना, जलप्रपात। सं. तत्सम

निर्झरि-विशे., बेरोकटोक शुद्ध। मै.

निर्णय-सं., फैसला, उचित न्याय। निष्पक्ष विधान। सं. तत्सम

निर्णायक-विशे., निर्णय देवाला। सं. तत्सम

निर्त-सं., नृत्य, नाँच। सं. तद्भव

निर्दय-विशे., कठोर, दयारहित। सं. तत्सम|मै.

निर्दिल-विशे., दयनीय दरिद्र। अत्यन्त निर्धन। मै.

निर्दोष-विशे., दोषहीन। बिना दोषवाला। सं. तत्सम

निर्धन्ध-विशे., कोनो चिन्ता आ सोच सँ शून्य। मै.

निर्धन्धी-विशे., चिन्ता व्यग्रता सँ दूर। मै.

निर्धन-विशे., धनहीन। मै.

निर्धार-सं., विचारपूर्वक निश्चय। मै.

निर्धारण-सं., विचारि क' देल व्यवस्था। सं. तत्सम

निर्धारब-क्रि., विचारि क' निश्चित व्यवस्था करब। मै.

निर्धोख-विशे., धोखा अर्थात् भ्रम आ सन्देहरहित। मै.

निर्बल-विशे., अबल। सं. तत्सम

निर्बिखी-विशे., विष दूर करैवाला पदार्थ। मै.

निर्बुद्धि-विशे., बुद्धिहीन। सं. तत्सम

निर्बुद्धी-सं., काछु, कछुआ। मै.

निर्बोध-विशे., ज्ञान ध्यानहीन। सं. तत्सम

निर्भय-विशे., निडर, भयरहित। सं. तत्सम

निर्भर-विशे., सम्पूर्ण भरोस रखनिहार। ओठंगल। सं. तत्सम

निर्भीक-विशे., निडर। सं. तत्सम
निर्मम-विशे., ममताहीन, कठोर। सं. तत्सम
निर्मल-विशे., फरिच्छ, स्वच्छ। सं. तत्सम
निर्माण-सं., बनाइ, रचना। मै.
निर्माता-विशे., बनौनिहार, रचनाकार। मै.
निर्मोल-सं., देवताक उपरक बासि फूल पत्ती आदि। निर्माल्य। सं. तद्भव
निर्मूल-विशे., बिना जड़ि पेनक। सं. तत्सम
निर्मोह-विशे., मोह मायारहित। सं. तत्सम
निर्यात-सं., बहार जाइक प्रयास। बहार कें प्रेषण। सं. तत्सम
निर्नय-सं., देखू—"निर्णय"। सं. तद्भव
निर्लेप-विशे., बिना कोनो वस्तुक प्रभाववाला। सं. तत्सम
निर्लोक-विशे., १. निर्जन। २. लोकक कमीवाला। सं. तत्सम
निर्वंश-विशे., वंशहीन। सं. तत्सम
निर्वसन-विशे., नाङट। सं. तत्सम
निर्वाचन-सं., चुनाओ। सं. तत्सम
निर्वासन-सं., देश निकाल। मै.
निर्वाह-सं., देखू—"निवाह"। मै.
निर्विकार-विशे., कोनो वस्तुक नहि विकारवाला। मै.
निर्वीज-विशे., उकन्नन भेल। मै.
निर्वेद-सं., वैराग। मै.
निर्हेतु-विशे., बिना कारणक। मै.
निरखब-क्रि., नीक अघलाहक दृष्टियें देखब। मै.
निरखाएब-क्रि., सूक्ष्मता सँ देखाएब। मै.
निरत-विशे., तत्पर, संलग्न। मै.
निरधार/निधार-विशे., निराधार, कोनो प्रकारक बिना आश्रावाला। सं. तद्भव/मै.
निरन्त-विशे., निर्जन, जनशून्य। मै.
निरन्तर-अव्यय, लगातार। एकाकरन। सं. तत्सम
निरपराध-विशे., दोषहीन व्यक्ति। सं. तत्सम
निरलंब-विशे., सम्बन्धहीन। उसट्ठ। मै.
निरलोभ-विशे., लोभरहित। सं. तद्भव
निरसब-क्रि., भरोस छोड़ि आशाहीन अथवा घृणा सँ त्यागब। छोड़ि देब। मै.
निरसल-विशे., लोकक दृष्टि मे हीन बनल। मै.
निरहट-विशे., बात तथा हितक बात नै माननेवाला। मै.
निरहार-विशे., निराहार, अव्यक भोजनरहित। सं. तद्भव
निराइ-सं., खेत मे लागल फसिल सँ जंगल साफ करैक प्रक्रम। कमौनी। मै.
निराएब-क्रि., फसिलक कमठान करब। मै.
निराओ-विशे., वायुरहित वातावरण। मै.
निराओन-सं., खेतक कमौनीक काज। कमौनीक बोनि। मै.
निराकरण-सं., निर्णय, समाधान, उत्तर। सं. तत्सम
निराकार-विशे., नाम रूप शून्य। सं. तत्सम
निरादर-सं., अपमान। सं. तत्सम
निराधार-विशे., आश्रय वा शरणहीन। सं. तत्सम
निरापद-विशे., आपत्ति, खतराहीन। सं. तत्सम
निरामिल-विशे., आमिल वर्जित तीमन। मै.
निरामिष-विशे., मत्स्य मांसक सम्बन्धरहित। सं. तत्सम
निराल-विशे., एक मात्र। प्रयोग—"दालि आब लोक की खाइए, निराल पानि।" मै.
निराला-विशे., स्वेच्छाकारी। मै.
निराश-विशे., आशाशून्य। मै.
निराशी-विशे., स्त्रीगणक प्रति एक प्रकारक स्त्रीक गारि। मै.
निराहार-विशे., बिना भोजन कयल। सं. तत्सम
निरीह-विशे., १. अभावक द्वारें सब सेहन्ता दबा रखैवाला निर्धन। २. तृष्णा आ मोहहीन वैरागी। सं. तत्सम/मै.
निरुत्तर-विशे., उत्तर देवा मे असमर्थ। मै.
निरुद्यम-विशे., धन्धा रोजगाररहित। सं. तत्सम
निरेंठ-विशे. बिन एंठाओल पदार्थ। मै.
निरोग/निरोगि-विशे., नीरोग, कोनो रूपें नहि दोषाह। सं. तद्भव
निरोधी-विशे., रोकैवाला। सं. तद्भव
निवस्त्र-विशे., नङटे, वस्त्रहीन सं. तद्भव
निवारण-सं., रोकैक, मना करैक प्रक्रिया। सं. तत्सम
निवास-सं., पुस्तैनी वास रहब। मै.

निबिया-सं., स्त्रीगणक नुआ मे डोरक बन्हन । मै.

निविष्ट-विशे., निपुण, निष्णात । सं. तत्सम

निवेदन-सं., प्रार्थनापूर्वक कथन । सं. तत्सम

निबौरी-सं., नीमक फड़ । मै.

निश्चय-सं., ठेकान व्यवस्था । सं. तत्सम

निश्चल-विशे., अटल । सं. तत्सम

निश्चित-अव्यय, अवश्य । सं. तत्सम

निश्छल-विशे., कपट धोखारहित । सं. तत्सम

निःश्वास-सं., निसास, नीचाँ दिस नाकक वायुक त्याग । सं. तत्सम

निःशंक-विशे., शंकाहीन, बिना सन्देहवाला । सं. तत्सम

निःशेष-विशे., सम्पूर्ण । सं. तत्सम

निशभर-विशे., भरोस रखैवाला, आस्थावाला । मै.

निशच-विशे., शुद्ध । मै.

निशबद-विशे., शब्द आ संचारहीन । मै.

निशभेर-विशे., अत्यन्त गाढ़, बेसुधिबुधि भेल । मै.

निशवासर-अव्यय, अहोरात्र, राति दिन । सं. तद्भव

निशा-सं., राति । सं. तद्भव

निशाचर-सं., राति कें भ्रमण कयनिहार । सं. तत्सम

निशान-सं., चिह्न, दाग । उ. तत्सम

निशाभाग|निशीभाग-सं., मध्यराति । दुपहरिया राति । मै.

निशाल करब-क्रि., चढ़ाएब, छोड़ब । प्रयोग-"माघी अमावास्याक उठाओल गंगाजल लोक वसन्त पंचमी दिन वैद्यनाथ कें निशाल करैये । मै.

निशीडंड-सं., मध्य रात्रिक चुप्पी, शब्दहीनता । मै.

निष्कपट-विशे., निश्छल । सं. तत्सम

निष्कंटक-विशे., (लाक्षणिक) कोनो अड़चनशून्य । मै.

निष्काम-विशे., कामनाहीन । मै.

निष्कासन-सं., निकाल बहार । सं. तद्भव

निष्टंक-विशे., दोष आ बाधाहीन । मै.

निष्ठा-सं., श्रद्धापूर्वक विश्वास । सं. तत्सम

निष्णात-विशे., निपुण, प्रवीण (उ. माहिर) । सं. तत्सम

निष्पक्ष-विशे., पक्षपात (तरफदारी) रहित । सं. तत्सम

निष्फल-अव्यय, (विशे.,) फलहीन, व्यर्थ । सं. तत्सम

निषंग-सं., शर रखैक शासन । सं. तत्सम

निषाद-सं., १. वन जातिक लोक । आदिवासी । २. संगीतक सातो स्वर मे प्रथम 'सा' स्वर । सं. तत्सम

निषिद्ध-विशे., वर्जित । रोकल, हीन, नीच । सं. तत्सम

निषेध-सं., मना, रोक, वर्जन । सं. तत्सम

निस्तार-सं., विधि विधान सँ कोनो व्रतक समाप्ति । मै.

निस्तुकी-विशे., निश्चयात्मक । मै.

निस्तेज-विशे., तेजहीन, प्रकाशहीन । मै.

निस्फाल-सं., फरिछा क' निर्णय । मै.

निस्सन-विशे., सशक्त, अन्तःसार, सारगर्भित । मै.

निस्सह्-विशे., शब्द आ संचाररहित अन्धकारपूर्ण । मै.

निस्सहाय-विशे., अनाथ, बिना सहायकवाला । सं. तत्सम

निस्सार-विशे., तत्वहीन, अब्बल, खोंखला, बाकस । सं. तत्सम

निस्सीम-विशे., सीमारहित, बेहद । सं. तत्सम

निसंख-विशे., चिन्ता व्यग्रताहीन । मै.

निसंज-विशे., निःसंज्ञ, चिह्नमात्रिहीन, निश्चेष्ट । सं. तद्भव

निसद्दु-विशे., रसहीन । पानिरहित । मै.

निःसन्तान--विशे., सन्तानरहित । सं. तत्सम

निसकालब-सं., देखू—"निस्काम" । मै.

निसबति-सं., अपेक्षा । मै.

निसादर-सं., रासायनिक पदार्थ । मै.

निसाफ-सं., न्याय, इन्साफ । उ. तद्भव

निसार-सं., देखू—"निशाल" । मै.

निसास-सं., देखू—"निश्वास" । सं. तत्सम

निसास छाड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) चान्तिक अनुभव करब । मै.

निसोख-विशे., कनेको कचोट आ मात्सर्य सँ रहित । मै.

निसोहुथार-विशे., अनिरुद्ध गतिवाला, प्रवाहित रूपक । मै.

निहत्था-विशे., बिना कोनो अस्त्रवाला । मै.

निहाइ-सं., लौह पिण्ड, जकरा पर राखि क' किछु ठोकल जाइत अछि । मै.

निहाइत-विशे., अधिकतर, सम्भवतः । उ. तद्भव

निहारब-क्रि., सतृष्ण दृष्टि सँ देखब । मै.

निहुछब-क्रि., ककरो मनौती सँ ओरिया क' राखब । अलग क' क' धरब । मै.

निहुरब-क्रि., झुकब । मै.

निहोरा-सं., प्रार्थना । मै.

नी

नी-सं., शरीरक परिमाणक प्रदर्शन । प्रयोग-"बौआक कन्टिरबा तँ नी गोड़ भ' गेलैन ।" मै.

नीक-विशे., बढ़ियाँ, उत्तम । मै.

नीक नहाइत/नीक नात-विशे., नीक जकाँ, नीक सन । मै.

नीक निकुत-विशे., अनेक प्रकारक नीक वस्तुवाला भोजन । मै.

नीच-विशे., १. अधम । २. समतल सँ नीचाँ । मै.

नीचाँ-अव्यय, निम्न स्थान । मै.

नीचाँ उतरब-क्रि., अपन मर्य्यादा सँ खसि पड़ब । अधम व्यवहारक अनुसरण करब । मै.

नीचाँस-विशे., निम्नतावाला खेत । मै.

नीड़-सं., खोंता, पक्षीक वासा । सं. तत्सम

नीति-सं., लौकिक व्यवहारक व्यवस्था । सं. तत्सम

नीन-सं., निद्रा, निन्द । मै.

नीनालबैक फेरी-सं., औसरौटक द्वारेँ काजक नहि पूर्ति । मै.

नीपनि-सं., देखू—"निपिया" । मै.

नीपब-क्रि., गोबर आदि सँ भूमि कें चिक्कन करब । मै.

नीपा-सं., अधिक दूरधरि नीपैक भार । मै.

नीब-सं., १. घर मकानक तरी काटि प्रथमारम्भ । २. कलमक चंचु (नोक) । हि. तत्सम

नीवार-सं., अन्न विशेष । आउरी । सं. तत्सम

नीवी-सं., देखू—"निबिया" । सं. तत्सम

नीम-सं., तीत रसवाला वनस्पति । मै.

नीमभट्टा-सं., नीमक पातक संग भूजल भट्टाक तरकारी विशेष होइछ चैत मास मे । प्रयोग-"चैत मास मधु मासक रीती, नीम भटा कें अतिशय प्रीती ।" लोकोक्ति । मै.

नीमा-सं., धनखेतीक घास विशेष । मै.

नीयति-सं., आशय, आन्तरिक विचार, अन्तःकरण । मै.

नीर-सं., जल । देवता पर चढ़ाओल जल । मै.

नीरफूल-सं., तन्त्रमन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल आ फूल । मै.

नील-सं., रंग विशेष, रङ्गक द्रव्य । मै.

नीलम-सं., नीलमणि । मै.

नीलिमा-सं., नील रंगक आभा । सं. तत्सम

नीहु होएब-क्रि., वैभव घटब । मै.

नीहारिका-सं., धौन्ह । सं. तत्सम

नु

नुक्कड़-सं., गलीक मोड़ । मै.

नुक्कानुक्की-सं., धीयापूताक खेल विशेष । मै.

नुकाएब-क्रि., छिपब, प्रच्छन्न होएब । मै.

नुकाओन-सं., नुकबैक चेष्टा । मै.

नुकाछिपी-सं., नुकाइक प्रयास । मै.

नुकान-सं., अलक्षित रूपेँ छिपैक चेष्टा । मै.

नुकौआ-विशे., नुकाकय राखल वा देल । मै.

नुड़ियाएब-क्रि., १. अव्यवस्थित रूपेँ पसरल वस्तु कें समेटब । २. (लाक्षणिक) स्वार्थ वशेँ जग मे सतत आ बारम्बार घुमब । मै.

नुनुआँ-विशे., अत्यन्त छोट बच्चा । मै.

नुरहुरि-सं., नीपैवाला नूर रखैक वासन तथा नूर । मै.

नुरियाएब-क्रि., ढंग सँ पसरल वस्तु कें लपेटब । मै.

नुरौठा-सं., नुरियाए के सक्कत कयल वस्तु । मै.

नुरौड़-सं., नूर बनबैक वस्तु । मै.

नू

नूआ-सं., वस्त्र (विशेषतया स्त्री वस्त्र) । मै.

नूआँवस्तर-सं., सब कपड़ाक समूह मै.

नूज-विशे., चलै फिरै मे असमर्थ । टांग नै सोझ क' सकैवाला । मै.

नूजाग्रह-सं., नक्षत्रग्रहक चित्र । मै.

नूड़ा-सं., अव्यवस्थित रूपेँ नुड़िया कऽ बान्हल वस्तुक गोल । मै.

नूड़ि तानब-क्रि., एकै रेखा पर घुरि घुरि चलैत रहब । मै.

नूड़ी-सं., अव्यवस्थित रूपें मोड़ि माड़ि कय बनाओल छोट नूड़ा । मै.

नून-सं., लवण, नोन, रस विशेष । मै.

नूनू-विशे., प्रिय बच्चा । मै.

नूर-सं., नीपैक हेतु बनाओल कपड़ा आदि वस्तुक विशेष गोल । मै.

नूर गोबरौड़-सं., नीपा करैक वस्तुक बासन । मै.

नृ

नृत्य-सं., नाच । सं. तत्सम

नृप-विशे., राजा । सं. तत्सम

ने

ने-अव्यय, न, निषेध । मै.

नेआरभास-सं., कोनो काज करैक केवल कौतूहल । सेहन्ता मात्र करैक प्रयास । मै.

नेक-विशे., उचित विचारवाला, सद्भावनावाला । उ. तत्सम

नेक-सं., परिचर्या सेवा । मै.

नेकदम-सं., परिचर्या एवं संरक्षण । मै.

नेकी-सं., विवेक। मै.

नेङरा-विशे., झुकि झुकि चलैवाला, लम्ब । मै.

नेङराएब-क्रि., झुकि झुकि विकृत भ' क' चलब । मै.

नेज-सं., सामग्री । मै.

नेटा-सं., नाकक मल, नाक सँ नमरल कफ । मै.

नेठा-सं., बहुलाक उल्ली सबकत रखैले देल कपड़ा । मै.

नेठुआ-सं., कोनो वस्तुक पेनी स्थिर रखैक लेल देल जाइवाला बनाओल बीड़ा । मै.

नेड़-सं., लम्बाकार सक्कत विशेष मोट पेट सँ बहराएल मल । मै.

नेड़हा-सं., मकइ आ कटहरक बीच बीजक सक्कत आधार । मै.

नेड़हा लागब-क्रि., (लाक्षणिक) काजक पूर्ति नै क' सकब । मै.

नेड़ा/नेड़ार/नेड़ी-सं., पेटक बहराएल लम्बाकार सक्कत मल । मै.

नेड़ीबुच्ची-सं., छोट छोट नेन्नाक समूह । मै.

नेड़ी भेरी-विशे., चलै फिरैवाला, कोरा मे रहैवाला अनेक बच्चा । मै.

नेड़न बाड़न-विशे., उपेक्षा सँ दुरवस्था मे पहुँचल । मै.

नेड़ लागब-क्रि., कुकूरक मैथुन काल मे अधिक काल धरि स्वभावतः दूनूक गुप्ताङ्गक सटल रहब । मै.

नेढ़ा-विशे., दुर्गुनी आ मूर्ख किशोर । मै.

नेढ़ि-विशे., दुष्ट संगतिवाला नेना किशोर । मै.

नेढ़िया-विशे., वासना सँ अभिभूत नवीन अवस्था मे घुमैत रहैवाला । मै.

नेढ़ियाएब-क्रि., अनेर स्थान स्थान पर युवती कें देखैक लालसा सँ घुमैत रहब । मै.

नेत-सं., विचार एवं आचरण । मै.

नेता-विशे., अगुआ, दलक प्रमुख । सं. तत्सम

नेतागिरी-सं., नेता होएक काज । मै.

नेति-सं., १. नेत । २. तत्वदर्शन मे जगत् मे मिथ्याक बोध । सं. तत्सम

नेन्ना-विशे., छोट छोट किशोर । मै.

नेन्ना भुटका-विशे., अबोध बच्चाक समूह । मै.

नेन-सं., दूध सँ निकालल सार वस्तु । माखन । मै.

नेनपन-सं., नेन्नाक चालि । मै.

नेनमति-सं., नेन्नाक बुद्धि । मै.

नेनमतिया-विशे., नेना सन बुद्धिवाला । मै.

नेनी-सं., नेनी माछ विशेष । मै.

नेनी देनी-सं., लेनदेन । लेबा देबाक व्यवहार । मै.

नेनु-सं., दूध बहार कएल सत्त्व । मक्खन । मै.

नेनुआ-विशे., १. विशेष प्रकारक केरा । २. मक्खन सनो कोमल नेना । मै.

नेने आएब-क्रि., ल' क' आएब । मै.

नेनौन-विशे., नेना सन स्वभाववाला । नेना वयसक स्वभाव भरल । मै.

नेप काढ़ब-क्रि., बल सँ कनैक जिद् करैक नाटक करब । मै.

नेप चुबाएब-क्रि., बल सँ कानि अधिक स्नेहक नाटकीय प्रदर्शन । मै.

नेपथ्य-सं., नाटक मे बाहर सँ (अदृश्य) सँ कथोपकथन । सं. तत्सम

नेपुर-सं., पैरक बजैवाला गहना । सं. तद्भव

नेपोभाटिन होएब-क्रि., कोनो वस्तुक हेतु बल सँ कानि कानि क' कनैक आडम्बर बनाएब आ जिद् रोपब । मै.

नेवति-सं., उत्सव मे बनाओल सुन्दर द्वार, तोरण। मै.

नेबा-सं., सुखाएल मधुर फल। मै.

नेबाड़-सं., खाट घोरैक बेल विशेष प्रकारक अत्यन्त नमहर आ चारि आङ्गुर चाकर कपड़ा। मै.

नेबारि-सं., फूल विशेष। मै.

नेबान-सं., नव अन्न खाइक विधान। मै.

नेबो-सं., रस मात्र प्रयोजन वा अम्मत आ मधुर फल। मै.

नेम-सं., नियम व्रत। मै.

नेम टेम-सं., नियम व्रतक विशेष आडम्बर। मै.

नेर-सं., मुह सँ खसैत रस, (लार)। मै.

नेरपोछ-सं., नीक जकाँ पोछि पाछि क' सुन्दर स्थिति मे रखैक बच्चाक परिचर्य्या। मै.

नेरसरँ-सं., आँखि पिपनी आदि अंग मे भेल फोसरी अथवा घाओ। मै.

नेराह-विशे., १. अधिक नेर खसबैवाला बच्चा। २. खेत मील रहैक कारणें हरक संग माटि सटकैवाला तथा लम्बाकार माटिक ढप बनैवाला खेत। मै.

नेरू-विशे., गाइक छोट (नवजात) बच्चा। मै.

नेबेद-सं., देवताक उत्सर्गक वस्तु। सं. तद्भव

नेसब-क्रि., १. दीप बारब (जराएब)। २. (लाक्षणिक) गूढ़ भयंकर बात चुपचाप सम्बद्ध व्यक्ति कें कहि उत्तेजित करब। मै.

नेह-सं., स्नेह। सं. तद्भव

नेहरि-विशे., चूड़ी लहठीक व्यवसायी। मै.

नेहाव-सं., सोनारक काजवाला छोट छोट अस्त्रक समूह। मै.

नेहाशन-विशे., आशारहित। निराश। मै.

नेहाल-विशे., असम्भावित रूपक सुखी सम्पन्न। निहाल, कृतार्थ। उ. तद्भव

नेहाल सनाथ-विशे., (लाक्षणिक) समाप्त आ नष्ट भ्रष्ट। मै.

नेहा लगाएब-क्रि., प्रेम करब। मोह जोड़ब। मै.

नेहोँ नेहोँ-अव्यय, मन्द गति सँ। मै.

नेहोरा-सं., दीनतापूर्वक प्रार्थना। मै.

नै

नै-अव्यय, नहि, निषेध। मै.

नैँ-सं., पातर लोहाक पत्तक बनल बिना मोड़ैवाला तरकारी कटैक उपयोगी छूरी। मै.

नैँन-सं., नयन, आँखि। सं. तद्भव

नैया-सं., नाओ, नौका। मै.

नैवेद्य-सं., देवता कें उत्सर्ग कयल पदार्थ। सं. तत्सम

नैहर-सं., सासुर बसैवाली स्त्रीक पिताक घर। मै.

नो

नोक-सं., कोनो वस्तुक तेज पातर अगिला भाग। मै.

नोकगर-विशे., तेज पातर घातक अगिला भागवाला। मै.

नोक झोंक-सं., (लाक्षणिक) कटु मधुर प्रणय लीला। मै.

नोकनी-सं., कोनो वस्तु कें धँसबै योग्य तेज छोट अगिला भाग। मै.

नोकर-विशे., दास, सेवक। स्त्री० नोकरनी। मै.

नोकरसाही-सं., नोकरक भरोसें वा नोकर पर निर्भर जीवन चर्य्या। नोकरैक प्रधानता। मै.

नोकसा लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) नोक वा नोकसन मेंही आघातक बात सँ गति के अवरुद्ध करब। सामान्य आपत्ति उपस्थित करब। मै.

नोकसी-सं., फँसबै लेल बनाओल टेढ़ नोक। मै.

नोकही-सं., स्वतः बनल नोक। मै.

नोकाह-विशे., नोकवाला, नोक भरल। मै.

नोकी-सं., छोट कृत्रिम नोक, फाँस। मै.

नोख-विशे., सुन्दर, ऐंत। मै.

नोखक-विशे., सुन्दरवाला। मै.

नोखगर-विशे., सुन्दर जकाँ, अति सुन्दर। मै.

नोखी-सं., सुन्दरता। मै.

नोचनी-सं., कुड़ियैनी, होहटि रोग। मै.

नोचनी लागब-क्रि., कवाउछ आदि विषाक्त वस्तुक लगला सँ कुड़ियैनी उठब। मै.

नोच पटका-सं., नोचि नोचि क' पटकैक तामसी प्रवृत्ति। मै.

नोचब-क्रि., अनुचित रूपें पकड़ि कय बहार करब। फेंकब। खींचब। मै.

नोचाएब-क्रि., पकड़ि पकड़ि तीरब, खींचाएब। मै.

नोचा नोची-सं., परस्पर अनुचित रूपें पकड़ि खींचैक चेष्टा। मै.

नोछरनी-सं., शरीर पर उपरी आघात करैक तेज वस्तु। मै.

नोछरब-क्रि., नह आदि तथा तेहने सन अस्त्र सँ उपरी आघात करब। मै.
नोछराह-विशे., नोछरैक स्थितिवाला। मै.
नोछार-सं., नोछरैक चिह्न। मै.
नोत-सं., निमन्त्रण। मै.
नोत पिहान-सं., निमन्त्रण, लेआओन। मै.
नोतब-क्रि., निमन्त्रण देब। मै.
नोतर-सं., पचीसीक नाम घरक गोटीक खोढ़ा। मै.
नोत लेब-क्रि., भ्रातृ द्वितीया मे बहिन सँ पूजा लेब। मै.
नोतहारी-विशे., निमन्त्रित लोक। मै.
नोतौ-सं., नोत पुरैक स्थान गाम। मै.
नोन-सं., लवण, प्रमुख रस विशेष। मै.
नोनगर-विशे., अधिक नोन भरल। मै.
नोनचट-सं., सूक्ष्मदंशक कीड़ा। मै.
नोनछराइन-विशे., नोन मिलल स्वादवाला। मै.
नोनछराह-विशे., नोनक स्वादवाला। मै.
नोन झाड़र-विशे., बेशी नोन मिलाओल। मै.
नोनघरा-सं., नोन बनबैक स्थान। मै.
नोन पढ़ाएब-क्रि., तन्त्र मन्त्र सँ नोनक द्वारा वशीकरण करब। मै.
नोनपनियाँ-सं., नोनक संग इनहोर कफक औषध। मै.
नोनाइन-विशे., नोनक सम्पर्कवाला। मै.
नोनाह-विशे., नोन रखैवाला। मै.
नोनियाँ-विशे., नोन बनबैवाला। मै.
नोनियाएब-क्रि., नोन बढ़ैक कारणें घरक अंश झरब। खेत उसरार होएब। मै.
नोनियाह-विशे., नोन भरि गेने अधलाह। मै.
नोनी लागब-क्रि., भीत आ देवाल सब मे नोन बेशी भेने झरब। मै.
नोनी साग-सं., नोनक स्वाभाविक स्वादवाला स्वादिष्ट साग। मै.
नोर-सं., आँखिक पानि। अश्रु। मै.
नोराएब-क्रि., नोर भरि आएब। मै.
नोसक्कड़-विशे., अधिक नोसि लेनिहार। मै.
नोसि-सं., नाक मे लैक मादक चूर्ण। मै.
नोसिदानी-सं., नोसि रखैक बासन। मै.
नोसियाहा-विशे., नोसि लैक अभ्यासवाला। मै.

नौ

नौआ-सं., दाढ़ी केश कटैक व्यवसायी जाति। मै.
नौएँ कौएँ-अव्यय, संयोग आ दैवयोगे गोटेक। मै.
नौका-सं.; नाओ। सं. तद्भव
नौ गाँ गर्द करब-क्रि., (लाक्षणिक) सगरे प्रचार करब। मै.
नौड़ी-विशे., दासी, नोकरनी। मै.

प वर्ग

प्रकट-विशे., साक्षात् भेल । खुल्लम खुल्ला । सं. तत्सम

प्रकरण-सं., सन्दर्भ, वर्तमान मे चलैत किया । सं. तत्सम

प्रकार-सं., १. विधि । २. भेद । सं. तत्सम

प्रकाल-सं., रेखा गढ़ैक आ नपैक यन्त्र, काँटा । सं.

प्रकाश-सं., इजोत । सं. तत्सम.

प्रखर-विशे., ज्वलन्त, तेज, उज्वल । सं. तत्सम

प्रगति-सं., कोनो काज कें गति, साधनाक वृद्धि । सं. तत्सम

प्रचण्ड-विशे., वज्रबुद्धि । ने मानैवाला ने जानैवाला । सं. तत्सम

प्रचार-सं., सभक जानकारी । सब लोक कें बुझबैक प्रक्रिया । सं. तत्सम

प्रजनन-सं., जीव सँ जीवक उत्पन्न होइक विधि । सं. तत्सम

प्रजा-सं., १. संतान । २. संरक्षणक लोक समूह । सं. तत्सम

प्रजापति-सं., मानव आ मानवताक प्रवर्तक आदि पुरुष । सं. तत्सम

प्रण-सं., प्रतिज्ञा, टेक । सं. तत्सम

प्रणय-सं., स्त्री पुरुषक परस्पर आकर्षण । वासनामय प्रेम । सं. तत्सम

प्रणाम-सं., हाथ जोड़ि सिर झुकाकय पैरक स्पर्श करैत नमन । सं. तत्सम

प्रणाली-सं., क्षेत्रीय रीति तथा विधि । सं. तत्सम

प्रत्यवाय-सं., पाप कर्म । सं. तत्सम

प्रतप्त-विशे., अत्यधिक झुलसल । सं. तत्सम

प्रताप-सं., १. कठोरता भरल तेज । २. दबदबाओ । सं. तत्सम

प्रतारणा-सं., ठकि फुसियाक' आवेगक भ्रान्ति । सं. तत्सम

प्रति-अव्यय, श्राद्धक सामान्योत्सर्गक वस्तुक दान । सं.

प्रतिक्रिया-सं., कोनो विषयक लगले उचित क्रिया तथा उत्तर । सं. तत्सम

प्रतिकार-सं., उचित उपाय । सं. तत्सम

प्रतिज्ञा-सं., वचनक टेक । सं. तत्सम

प्रतिभा-सं., विषय पर शीघ्र दौड़ैवाली बुद्धि । सं. तत्सम

प्रतिमा-सं., ककरो अनुरूप गढ़ल मूर्ति । सं. तत्सम

प्रतिष्ठा-सं., समाजक बीच मान्यता । सं. तत्सम

प्रतिहारी-सं., नाट्यीय पात्र विशेष । सं. तत्सम

प्रतीक्षा-सं., ककरो आसरा रखैक, बाट तकैक क्रम । सं. तत्सम

प्रतीक-सं., बदला मे नामले देल वस्तु, चूड़ । सं. तत्सम

प्रतीति-सं., विश्वासाओ, विश्वास । सं. तत्सम

प्रथम-विशे., पहिल । सं. तत्सम

प्रथा-सं., परिपाटी, लोक परम्परा । सं. तत्सम

प्रदर-सं., स्त्रीगणक रक्तस्रावक रोग । सं. तत्सम

प्रदीप-सं., इजोत आ इजोतक साधन । सं. तत्सम

प्रदोष-सं., रात्रि स्पर्शक समय, साँझक उपरान्तवाला रातुक समय । सं. तत्सम

प्रधान-विशे., सब सँ उपर तथा आगू रहैवाला प्रमुख । सं. तत्सम

प्रबन्ध-सं., ब्योंत । सं. तत्सम

प्रबल-विशे., अधिक बलगर । सं. तत्सम

प्रबाल-सं., रत्न विशेष । सं. तत्सम

प्रभा-सं., ज्योति, इजोत । सं. तत्सम

प्रभात-सं., भोर, उषा काल । सं. तत्सम

प्रभाती-विशे., भोर मे गाओल जाइवाला गीत । सं. तत्सम

प्रभार-सं., ककरो काजक भार । काजक वहन । सं. तत्सम

प्रभारी-विशे., कार्यवाहक । सं. तत्सम

प्रभु-विशे.,सर्वशक्तिमान् । सं. तत्सम

प्रभुता-सं., शक्ति, सामर्थ्य । सं. तत्सम

प्रभेद-सं., भेदो मे भेद, अवान्तर भेद । सं. तत्सम

प्रमाण-सं., सबूत, वास्तविक । सं. तत्सम

प्रमाद-सं., गलती, अपराध । सं. तत्सम

प्रमेह-सं., अधिक मूत्रस्रावक रोग । सं. तत्सम

प्रयत्न-सं., प्रयास, उद्योग । सं. तत्सम

प्रयाग-सं., महातीर्थ विशेष । गंगा, यमुना ओ सरस्वती नदीक संगम स्थल । इलाहाबाद । सं. तत्सम

प्रयास-सं., उद्योग, यत्न । सं. तत्सम

प्रयोग-सं., परताओ, परताएब, व्यावहारिक परीक्षण। सं. तत्सम

प्रयोजन-सं., हेतु, आवश्यक, लगाएब। सं. तत्सम

प्रलाप-सं., असम्बद्ध वाक्य वचनक उच्चारण। सं. तत्सम

प्रवचन-सं., कोनो विषय कें विस्तारपूर्वक व्याख्यान। सं. तत्सम

प्रवर-विशे., सर्वश्रेष्ठ। सं., जनौक गेंठ —प्रवर दू प्रकारक होइत अछि—१. तीन आ २. पाँच। अपन गोत्र मे जे मूल पुरुष सब उत्कट ख्याति कयने छथि हुनक नाम सँ प्रवर बनल अछि। तनिके लौकनिक स्मृति मे जनौ मे गेंठ देल जाइत अछि। उदाहरण—शाण्डिल्य, काश्यप आदि अनेक गोत्र तीन प्रवरक थीक। तथा वत्स आ कात्यायन आदि पाँच प्रवरक गोत्र थीक। जेना—पाराशर गोत्रस्य शक्ति वशिष्ठ पराशेरति पञ्च प्रवराः। तथा सावर्ण्य गोत्रस्य औवंच्यवन भार्गव जामदग्न्या प्लवानेति पञ्च प्रवराः। देखू-मिथिलाक प्रचलित गोत्राध्याय। सं. तत्सम

प्रवाद-सं., गप्पक मूलक ठेकान नै लोक मे अनघोल। किम्वदन्ती। सं. तत्सम

प्रवास-सं., अपन देशकोस छोड़ि आन देश प्रदेशक वास। सं. तत्सम

प्रवासी-विशे., अपन समाज सँ दूर रहनिहार। सं. तत्सम

प्रवाह-सं., वेग, जलक गतिक तीव्रता। सं. तत्सम

प्रवीण-विशे., चतुर, दक्ष। सं. तत्सम

प्रवेश-सं., भीतर जाइक क्रिया। सं. तत्सम

प्रश्न-सं., पूछैक बात। सं. तत्सम

प्रशंसा-सं., बड़ाइ, गुणगान। सं. तत्सम

प्रसंग-सं., सन्दर्भ, विषय, मादे, मैथुन। सं. तत्सम

प्रसार-सं., पसार, अधिक दूरक क्षेत्र मे विस्तार। मै.

प्रसारण-सं., कोनो वस्तु के केन्द्रक लागि रखैत विस्तार। मै.

प्रसिद्धि-सं., ख्याति, नाम। सं. तत्सम

प्रसिद्ध-विशे., स्वनाम धन्य, नामी। सं. तत्सम

प्रहार-सं., चोट, घात, आघात। सं. तत्सम

प्रहेज-सं., आत्मसंयम, संयम, परहेज। उ. तद्भव

प्राण-सं., शरीर मे रहनिहार वायुक समूह। सं. तत्सम

प्राणी-विशे., जीवनधारी, जन्तुमात्र। सं. तत्सम

प्रात-अव्यय, रातिक अन्त आ दिनक आगमवाला मध्यकाल। प्रातः। सं. तद्भव

प्रान्त-सं., अत्यन्त दूर विस्तृत क्षेत्र, अंचल आ प्रदेश। सं. तत्सम

प्रायः/प्रायशः-अव्यय, शाइत, शायद सम्भावना मात्र भरि। सं. तत्सम

प्रिय-विशे., मनक आह्लाद करैवाला। सं. तत्सम

प्रियतम-विशे., प्रणयी। अत्यन्त प्रिय। सं. तत्सम

प्रिया-विशे., प्रेम करैवाली नारी। सं. तत्सम

प्री-विशे., प्रिय। सं. तद्भव

प्रीतम-विशे., प्रियतम। सं. तद्भव

प्रीति-सं., हृदयक अटूट परस्पर आकर्षण। सं. तत्सम

प्रेत-सं., मृत्युक उपरान्तक जीवात्मा। सं. तत्सम

प्रेम-सं., स्नेह, प्रणय। सं. तत्सम

प्रेमिका-विशे., प्रणय (वासनात्मक प्रेम) करैवाली। सं. तत्सम

प्रेमी-विशे., १. प्रणय करैवाला। (केवल स्त्रीक हेतु) २. सब सँ सामान्य स्नेह रखैवाला। सं. तत्सम

प्रेय-विशे., सब कें प्रिय लगैवाला। सं. तत्सम

प्रेयसी-विशे., प्रिय लगैवाली पत्नी। सं. तत्सम

प्रेरणा-सं., सक्रियता अनैक चेतना, मानसिक शारीरिक क्रियाक उत्साहक संवर्धन। सं. तत्सम

प्रेस-सं., छापाखाना। अं. तत्सम

प्रौढ़-विशे., अन्तर्बल भरल। सब रूपें समर्थ। पकठोस। सं. तत्सम

प्लेग-सं., महामारी विशेष। मै.

फँ-अव्यय, कार्यक गतिक निकटता एवं शीघ्रताक द्योतक शब्द। प्रयोग–"हम अयली फँ!" अर्थात् आबि गेली संह बुझू। अथवा मे नहियें कोनो विलम्ब। मै.

फ'-सं., छूर आदि धारोक मुह भीरिकय विकार रहवें लेल नहरनी आदि अस्त्रक प्रयोग। प्रयोग-"धारो कती फ' कती।" लोकोक्ति। मै.

पड-सं., पचीसीक खेल मे कौड़ी भजे मे आठ कौड़ीक बीच एकेटा चित्त उनटल रहने दश कहबैछ ओकर बीस पर गोटी चलल जाइत अछि आ दू घर आर होइत छैक जे पड कहल जाइछ। प्रयोग—"पड बारह। अर्थात् पड पर सँ बारहो भेल तँ अति उत्तम हैत।" मै.

पइन-सं., पानिक अबर जातक स्थायी बाट। मै.

पओन-सं., चारि भागक तीन भाग। मै.

पओना-विशे., ककरो सँ अवश्य प्राप्त करै जोग द्रव्य। मै.

पककड़-सं., परस्पर कोनो प्रकारक सम्मुख युद्ध। मै.

पक्का-विशे., १. निश्चित। २. पकाओल अर्थात् सक्कत आ शोधल एवं साधल वस्तु सँ बनल। ३. जाँचल वा परीक्षा कयल। ४. कोठा घर। ५. आगि मे पकाओल। मै.

पक्की-विशे., पकाओल, शोधल, ठोस, जाँचल। मै.

पक्कू-विशे., पकैक योग्य (फल आदि), पकैक क्रम-वाला। मै.

पक्ख-सं., अन्हरिया आ इजोरिया पक्ष। सं. तत्सम

पक्खा-सं., ओर, कात। प्रयोग—"घरक दछिन-बरिया पक्खा मे चोर सिन्ह द' सकैये।" मै.

पंक्ति-सं., पाँती, धारी। सं. तत्सम

पक्व-विशे., पाकल। सं. तत्सम

पक्ष-सं., भाग, खण्ड, पाँखि आ मतक मेल। सं. तत्सम

पक्षाघात-सं., लकवा रोग, शरीरक एक भागक सुन्नता। सं. तत्सम

पक्षी-सं. चिड़िया। सं. तत्सम

पकगर-विशे. ताप सँ नीक जकाँ पकाओल। मै.

पकठी-विशे., अधिक ताओ लगला सँ पाकि कय ऐंठि गेल। मै.

पकठाएब-क्रि., अधिक जोआ गेला सँ काजक जोग नै होएब। मै.

पकठाएल-विशे., अधिक जोआएल हेबाक कारणेँ अनुपयोगी। मै.

पकठोस-विशे., प्रौढ़, प्रगल्भ। आत्मबलशाली। मै.

पकठोसल-विशे., उचित वेस सँ पहिनें बनल प्रगल्भ। मै.

पकड़-सं. धरैक, ग्रहण करैक आ विवश रखैक स्थिति। मै.

पकड़ना-सं., धरैक, गहैक आधार वस्तु। मै.

पकड़ब-क्रि., धरब, विवश करब, राखब। मै.

पकड़ाएब-क्रि., धराएब, ग्रहण कराएब। मै.

पकड़ा जाएब-क्रि., १. बन्दी भ' जाएब। धराएब। २. (लाक्षणिक) कोनो गुप्त बात मे देखार होएब। मै.

पकड़ा पकड़ी-सं., एक दोसरा कें धरैक चेष्टा। मै.

पक पक करब-क्रि., भीतरें भीतर अत्यन्त तमसाएल रहब। मै.

पक पकाएब-क्रि., भीतरें भीतर कोधेँ जरैत रहब। मै.

पकवान-सं., तेल घी मे छानल खाद्य वस्तु। मै.

पकमेल-विशे., कल (कोल्हु) मे मथल माटि जे पजेवा बनबै मे काज अबैये। मै.

पकलहन-विशे., पकैक क्रम मे रहैवाला जकाँ। मै.

पकला औ पाथर-सं., (लाक्षणिक) काज सिद्धिक काल मे भयंकर आपत्ति। मै.

पकाएब-क्रि., १. आगि मे दय कठोर बनाएब। २. ताप द्वारा फल आदि कें घुलाएब। ३. जराएब। मै.

पकाओन-सं., कोनो रूपक पाकक प्रक्रिया। मै.

पकान-सं., पाक (ताप) क क्रम। मै.

पकिया-विशे., सब प्रकार सँ जाँचिकय ठोस सिद्ध कयल। मै.

पकुहा-सं., पाकल आमक सुखाएल आँठीक भीतरक सुखाएल कोइली। मै.

पकै करब-क्रि., अंगक कोनो प्रकारक आघात मे विकार उत्पन्न होएब, पीजु भरब। मै.

पकौआ-विशे., आगि मे द' क' पकाओल वस्तु। मै.

पकौड़-विशे., सिद्धो वस्तु के फेर आगि सँ ताप दय पकाओल। मै.

पकौड़ी-सं., बेसन मे अनेक मसाला द' क' चापट सन बना कय तेल मे छानल व्यञ्जन। मै.

पख-सं., पक्ष। अन्हरिया इजोरिया। सं. तत्सम

पंख-सं., चिड़ैक पाँखि वा पाँखिसन वस्तु। मै.

पंखा-सं., कृत्रिम बसात करैक पैघ साधन। मै.

पंखी-सं., कृत्रिम बसातक साधनक छोट रूप । मै.

पखरवाएब-क्रि., अनका द्वारा धोअब, पखारब, प्रक्षालन कराएब । मै.

पखरा खैर-सं., खैर, कत्थाक एक भेद । मै.

पखवारय-विशे., एक एक पक्ष पर होमʼवाला । मै.

पखाउज-सं., मृदङ्ग सन बाजन विशेष । मै.

पखान-सं., पाषाण, पाथर । मै.

पखार-सं., धोऐ मर्जैक कार्यक्रम । मै.

पखारब-क्रि., धो माजि कʼ पवित्र करब । मै.

पँखिगर-विशे., १. उड़ैक योग्य पाँखिवाला पक्षीक बच्चा । २. (लाक्षणिक) सूझि बुद्धिवाला भʼ कʼ संसार मे घूमैक योग्य । मै.

पखिना-सं., घरनिक मानिक धम्ह मे ठोकल हिर्रे डोरी सँ बँधवैवाला । मै.

पखुआ-विशे., पक्षक भीतर भेनिहार । मै.

पँखुड़ी-सं., रोपली आँकुरक दूनू दिसक पात । मै.

पखेब-सं., दीपावलीक प्रात होमʼवाला गोधनक पूजा एवं गो क्रीड़ा । मै.

पगड़ी-सं., १. अपन अपन क्षेत्रक रीतिक अनुसार सिर पर धरैवाला मोरेठा टोपी आदि । २. मैथिलक छोटसन पाग । मै.

पगलपनी-सं., अपन क्रिया सँ प्रकट बताहसन स्वभाव । मै.

पगलाहा-विशे., चीनीक संग थोड़ आप लगाओल वाला मखान आदि । मै.

पगला-विशे., बताहवा । (अनादर मे) मै.

पगलाह-विशे., अवास्तविक पागल, पागल जकाँ करैवाला । मै.

पगहा-सं., महिस आदि पशु कें वश मे रखै लेल बान्हल पैंप डोरी । मै.

पंगा (नोन)-सं., क्षारीय जल सँ जमाओल नोन । मै.

पगार-सं., कुशियार अथवा तेहनगन वस्तुक अगिला भाग अर्थात् मूड़ी । मै.

पगुआ-विशे., पानि कए अर्थात् कनेक भूजि कय बनाओल पदार्थ । मै.

पगुआ-सं., पाजु, मालजालक खाएल वस्तुक फेर चर्वणा । मै.

पगुड़ाएब-क्रि., मालजालक पाजु करब । मै.

पगुड़ी-सं., देखू—"पगुआ" । मै.

पघड़िया-सं., धारदार भारी आ मोट लोहक बाँस काठ कटैवाला चन्द्राकार टेढ़ अस्त्र, दबिया । मै.

पघारि-सं., एक रेखा दिसक दलित क्षेत्र खण्ड । निर्दिष्ट प्रखण्ड । मै.

पघिलन-सं., १. घमिकय पसरल वस्तु । २. घमैक क्रम । मै.

पघिलब-क्रि., द्रवित होएब, घमब । मै.

पघिलाएब-क्रि., ठोस वस्तु कें द्रवित करब । घमाएब । मै.

पघिलाह-विशे., घमैवाला । मै.

पँघुरी-सं., गाछ मे निकलल छोट छोट कन्टी । मै.

पङ्क-सं., थाल, कादो, पाँक । सं. तत्सम

पङ्क-विशे., नाङर, पर्त मे आसक्त । सं. तत्सम

पछवाएब-क्रि., अनका द्वारा गाछक वृक्षक अनावश्यक डारि कटवाएब । मै.

पछाड़-सं., काटल छाँटल जाइवाला डारि पातक समूह । मै.

पछाओ-सं., गाछ वृक्षक डारि पात छारैक क्रम । मै.

पछार-सं., देखू—"पछाओ" । मै.

पच्चड़-सं., कोनो अस्त्रक बेंट कें सक्कत करै लेल ठोकल छोट टुकड़ी । छोट कील । मै.

पच्चादूआ-सं., दू हिस्साक पाँच भाग । मै.

पच्ची-सं., फोंक गहना कें भारी करैले लाह वा बालु देबैक प्रक्रिया । मै.

पच्चीकारी-सं., हस्तकलाक वस्तुक सौन्दर्य वर्द्धक अनेक सूक्ष्म चित्रण । मै.

पच्छ-सं., १. अपन सिद्धान्त । २. देखू—"पक्ष" । ३. तरफदारी । सं. तद्भव

पच्छिम-सं., पश्चिम दिशा । सं. तद्भव

पच्छी-सं., पक्षी । सं. तद्भव

पंच-विशे., निर्णायक । मै.

पंचक-सं., भदवा । मै.

पचकटारि-विशे., अत्यन्त दुर्बल । मै.

पँचकठिया-सं., दाह संस्कार मे गेल लोकक द्वारा देल जरि कʼ शेष बचल देहक पाँच टा काठी पाछू दिस फेंकि मांसभक्षी कें कयल जाइवाला उत्सर्ग । मै.

पँचकड़ी-सं., पाँच टा जड़ी बूटी मिला क' बनौओल कढ़ावाला औषध । मै.

पचकन-सं. पचकैक, धँसैक, संकुचित होइक रूप विशेष । मै.

पचकब-क्रि., भीतर दिस धँसब, सुकुचब । मै.

पँचकलहा-विशे., भीतर दिस धँसैवाला, सुकुचल-वाला । मै.

पचकाएब-क्रि., सुकुचाएब, भीतर दिस धँसाएब । मै.

पँचकोरवा-सं., उपनयन कर्मक काल मे स्थान भेदें पाँच कओर दही चूड़ा खाइक विधि । मै.

पँचकौड़ी-सं. पाँच कौड़ी मे टोनाक रूपें कीनल । मै.

पंचग्रास-सं., पहिलुक पाँच कौर भोजन । सं. तत्सम

पंचड़-सं., पहियाक छेद, बसात बहराइक भूर । मै.

पचड़ा-सं., गूढ़ रूपक संघर्ष । मै.

पचड़ा पड़ब-क्रि., रहस्यमय संघर्ष होएब । मै.

पचड़ी-सं., कोनो वस्तु के सक्कत रखैले देल छोट पातर कील । मै.

पचनता-विशे., पचैवाला, पचैक योग्य । मै.

पंचनामा-सं., पंच सभक लिखित निर्णय । मै.

पचनियाँ-विशे., धीयापुता के चेचक निरोधक पाच (टीका) देमवाला । मै.

पँचनोना-सं., पाँच प्रकारक नोनक सम्मिश्रण । मै.

पचपच-विशे., यदिखन जल खसला सँ भीजल भूमि । मै.

पचपचाइन-विशे., १. घृणा सँ मुह मे जल भरि अपने मुहक विकार भरल स्वाद । २. जलक आमद सँ हरदम आर्द्र बनल । मै.

पचपचाएब-क्रि., मन एवं मुह मे कुत्सित वस्तुक दर्शन आ स्पर्श सँ घृणा सँ आर्द्रता भरब । मै.

पचपचाह-विशे., आर्द्रता सँ घृणा जगबैवाला । मै.

पचपची-सं., सतत आर्द्रता, सलाबी । मै.

पचपन-संख्या, पाँच दहाइ पाँच एकाइक अंक । मै.

पंचपात्र-सं., पूजा मे जल उठाकब देवता पर देक जलपात्र । मै.

पंचम-विशे., पाँचम संख्या मे रहैवाला । मै.

पंचमी-सं., पक्षक पाँचम तिथि । मै.

पँचमी हिस्सा-सं., पाँच भागक एक भाग । मै.

पचमेर-सं., पाँच वस्तुक (मधुरक) समूह । मै.

पँचरंगी-विशे., पाँच रंग सँ रंगल । मै.

पचर पचर-अव्यय, सरसता भरल । मै.

पचराह-विशे., सतत गील रहैवाला । मै.

पचल-विशे., अत्यन्त सिद्ध भ' क' रूप बदलल । मै.

पचहत्तरि-संख्या, पाँच एकाइ सात दहाइक अंक । मै.

पचहर-सं., स्त्रीगणक प्राचीन निकास (मल त्याग) क कृत्रिम आलय । मै.

पचाएब-क्रि., १. भोजन कें पेट मे सिद्ध कय लेब । २. देह मे उपर सँ तेल आदि स्नेहन वस्तु कें मिला लेब । ३. (लाक्षणिक) केहनो कोनो गुप्त बात तथा अपराध कें दबाकय निर्मूल बना देब । ४. रौन आदि तेल वस्तुक नै गछब । मै.

पचाओन-सं., चेचकक टीका लगबैक कार्यक्रम । मै.

पँचाग्नि-सं., जेठ मासक तबैत सूर्य, अपन आसनक चारू कोन पर धधकैत आगि, ऐ पाँचो आगिक ताप लैक व्रत, पंचाग्नि व्रत, पचाइक । सं. तत्सम

पंचानन-सं., शिव तथा सिंह । सं. तत्सम

पंचानबे-संख्या, पाँच एकाइ नौ दहाइक अंक । मै.

पंचामृत-सं., दूध, दही, घी, चीनी आ मधुक समूह सँ बनल । मै.

पंचायति-सं., पञ्च आ मुखिया आदि मिलिकय कय निर्णायक सभाक नियत स्थान । मै.

पचास-संख्या, पाँच दहाइ शून्य एकाइक अंक । मै.

पचासी-संख्या, पाँच एकाइ आठ दहाइक अंक । मै.

पंचैती-सं., पंच लोकनिक द्वारा करैक योग्य न्याय । मै.

पछ-सं., ककरो दिस रहैक निश्चय । एक दिशुक लागि । मै.

पछड़ब-क्रि., कमि जाएब, समानता मे न्यून भ' जाएब । मै.

पछड़म पछड़ा-सं., लगातार परस्पर दबाएब आ दबैक श्रम । मै.

पछता-विशे., पाछू उपजैवाला । मै.

पछताएब-क्रि., पश्चाताप करब । मै.

पछतावक-सं., पश्चाताप सँ उत्पन्न ग्लानि । मै.

पछतिया-विशे., पाछू भेनिहार । मै.

पछतौआ-विशे., १. पाछू कालक भेल। २. पश्चा-ताप उत्पन्न करैवाला। मै.

पछबरिया-विशे., पच्छिम दिश मे होइवाला तथा रहैवाला। मै.

पछबा-विशे., पच्छिम दिशक बसात। मै.

पछबारि-विशे., पच्छिम मे स्थित। मै.

पछलग्गू-विशे., १. एकक मतक समर्थन करैवाला। २. पाछू लागिकय रहैवाला। मै.

पछलगुआ-विशे., १. सब काज मे पाछू लगनिहार। संग रहनिहार। २. पुनर्विवाहवालीक पहिलुक बच्चा। मै.

पछाइत-अव्यय, पाछूकाल मे। मै.

पछाड़-सं., अशक्त पतन, खसादैक क्रम, पाछूवाला भाग। मै.

पछाड़ब-क्रि., दबा देब। बल मे नीचाँ खसाएब। मै.

पछाड़ी-सं., पाछू दिशक भाग। मै.

पछाँह-सं., पसरल छाया। मै.

पछाही-सं., पाछू दिसुक छाया, पाछू दिश सँ देल छाही। मै.

पछिमबरिया-विशे., पछिम भरक भेल। मै.

पछिमभर-अव्यय, पछिम दिश। मै.

पछिमा-विशे., पच्छिम प्रदेशक रहैवाला। मै.

पछिमाहा-विशे., पछिम प्रदेश मे होम'वाला। मै.

पछिमाहुत-विशे., पछिम दिश दबल रहैवाला। मै.

पछिया-विशे., पछवा बसात। मै.

पछिला-विशे., पाछू मे रहैवाला। मै.

पंछी-सं., पक्षी, चिड़ै। मै.

पछुआ-सं., १. गहना विशेष। २. बैलगाड़ीक पाछू दिश बढ़ल बाँसक डण्डा। मै.

पछुआणी-सं., पाछू दिशक गति। मै.

पछुआर-सं., पाछू दिशवाला स्थान। मै.

पछुऐल-सं., घरक पाछू दिशक खण्ड। मै.

पछुऐनी-सं., पाछू लागल बेहार। पाछू लागल गति। मै.

पछेर-सं., आरि के सक्कत करैले आरि लग देल माटि। मै.

पछेरा-सं., घरक दाबाक जड़ि के दृढ़ रखैले माटिक भरनि। मै.

पछोर-सं., पाछू लागल जाइक क्रम। मै.

पंजर-विशे., अत्यन्त दुर्बल शरीरवाला। मै.

पंजर करब-क्रि., विवश करब। मै.

पँजबाहि-सं., १. पाँज मे भरैक क्रम। मै.

पंजर-सं., शरीरक हड्डीक समूह। सं. तद्भव

पजरब-क्रि., आगिक ज्वलित होएब। मै.

पँजरवार-विशे., पाँज दिशक गरवाला। मै.

पजरबाहि-सं., पाँजर मे वेदनाक क्रम। मै.

पँजरा-सं., पंजरवाला शरीरक अंग। मै.

पँजरी-सं., छातीक दुनू कात हड्डीवाला भाग। मै.

पंजर होएब-क्रि., १. अति दुर्बल होएब। २. विवश होएब। मै.

पंजा-सं., पसरल हाथ। मै.

पजार-सं., आगि प्रज्ज्वलित करैक उपक्रम। मै.

पजारब-क्रि., आगि प्रज्ज्वलित करब। मै.

पंजा लड़ाएब-क्रि., हारि जीतैक विचार सँ एक दोसरक पंजा मे पंजा फँसाकय दबबैक प्रयास करब। मै.

पँजियाएब-क्रि., पाँज मे धरब। मै.

पँजियार-विशे., पंजीकार, कौलिक संबन्ध केर समाज विशेषक सम्पूर्ण लेखा अभ्यस्त रखैक कलाकार। शास्त्रीय नियमानुसार वर कन्याक बीच कौलिक संबन्धक अभाव देखि वैवाहिक निर्णय देनिहार। विशेष देखू-अधिकार माला। सं. तत्सम

पँजियारी-सं., समक कुल मूल आ सम्बन्धक लेखा रखैक कला। मै.

पजेबा-सं., ईंटा खाच मे माटिक बनल वस्तु। मै.

पँजोड़-सं., पाँज मे दाबि राखल धान आदि फसिलक अंश। मै.

पजाएब-क्रि., आगिक मिझाइक स्थिति होएब। मै.

पट्टशिष्य-विशे., कोनो संस्थाक प्रमुख शिष्य। सं. तत्सम

पट्टा-सं., १. कोनो वस्तुक बेचै मे तथा लेन देन मे लिखित पत्र। २. केवाड़क बाहि (जोड़ल जाइवाला) भाग। ३. जाँतक पाट। मै.

पट्टी-सं., १. घाओ आदि बन्हैक कपड़ा। २. एक वस्त्र खण्ड मे जोड़ल जाइवाला वस्त्र खण्ड। मै.

पट्टी पढ़ाएब-क्रि., फूसि फटक लगावझाकय विरोध कें आर गम्भीर बनबैक बात कहब। मै.

पट्ठा-विशे., १. शौर्यक काज कयनिहार नवयुवक। २. हाथीक पुरुष बच्चा। मै.

पट-सं., वस्त्र, कपड़ा। सं. तत्सम

पट-विशे., नीचाँ मुहेँ पड़ल तथा भेल। मै.

पटक्खा-सं., छोट-छोट खेलवाला विस्फोटक द्रव्य। मै.

पटकन-सं., जोर सँ धरती पर बेलागि खसबैक चेष्टा। मै.

पटकब-क्रि., जोर सँ भूमि पर बेलागि खसाएब। मै.

पट करब-क्रि., नीचाँ मुहेँ कय सुताएब, खसाएब आ औन्हब। मै.

पटका-सं., खसबैक प्रकार। मै.

पटका पटकी-सं., परस्पर खसबैक चेष्टा। मै.

पटकाही-विशे., पुरुषक देल स्त्रीगणक गारि। मै.

पट द'-अव्यय, लगले, तुरन्त। मै.

पटबेहरि-सं., चौकठिक उपर दैवाला तकथाक पट्टी। मै.

पटपट-अव्यय, १. लगले लागल। २. गाछवृक्ष आ जनशून्य। प्रयोग—"पटपट मैदान।" मै.

पटपटाएब-क्रि., निराशा सँ चिन्तित आ व्यग्र होएब। मै.

पटपटाएल फिरब-क्रि., निराशा आ अभाव सँ उपायक चिन्ता आ व्यग्रता सँ घूमब। मै.

पटपटी-सं., १. पर्वटी जड़ी विशेष। २. घास विशेष। मै.

पटब-क्रि., १. समञ्जस रहब। २. मत मिलब। ३. जल सँ सिञ्चित होएब। ४. अन्तिम निर्णय पर रुकि जाएब। मै.

पटबन-सं., सरलता सँ सिञ्चित होइवाला खेत। सिञ्चित करैक सरल मार्ग। मै.

पटबरिका-सं., प्रजा सँ लगानक संग्रह करैक कार्यभार। मै.

पटबा-सं., गहना आदि गँथैवाला एवं शृङ्गारक वस्तु बेचैवाला व्यवसायी जाति। मै.

पटबारी-विशे., प्रजा सँ लगान वसूल करैवाला कर्मचारी। मै.

पटबाहु-विशे., पटबैक काज मे सहायक। मै.

पटम्मर-सं., पट्टाम्बर। सं. तत्सम

पटर पटर-विशे., अव्यक्त शब्द। मै.

पटरानी-विशे., अभिषेक मे राजाक संगवाली रानी अभिषिक्त रानी। मै.

पटरी-सं., १. लिखै पढ़ैक काठ आदिक तख्ती। २. रेलगाड़ी चलैक लाइन। मै.

पटरी बैसब-क्रि., सभक एक मत पर आएब। मै.

पटल-सं. १. प्रकार, विभिन्न आडम्बर। २. समूह सं. तत्सम

पटसन-सं., पटुआवाला सन जूट। मै.

पटसार-विशे., कम ढालूवाला घरक चार। मै.

पटाइन-सं., मिलान, समञ्जस। मै.

पटाएब-क्रि., १. जल सँ आर्द्र बनाएब। २. फरिछाएब, निपटाएब। मै.

पटाओन-सं., पटबैक कार्यक्रम। मै.

पटाक द'-अव्यय, अविलम्ब छुटितैं। मै.

पटापटि-अव्यय, लगले लागल। मै.

पटिया-सं., मोथीक बीनल बिछाओन। मै.

पटियाएब-क्रि., ककरो अपन मत पर आनब। मै.

पटु-विशे., विशेषज्ञ, कार्य मे सक्षम। सं. तत्सम

पटुआ-सं., सन उपजैवाला फसिल। मै.

पटुआ साग-सं, स्वास्थ्यकर सागवाला पटुआ। मै.

पटेर-सं., नदी कातक ललहूर विशेष घास। मै.

पटै-सं., दुनू दिश लटकल भार उठबैक लचकीला फट्ठा कान्ह पर भार उठबैवाला। मै.

पटोटन-सं., घरगा असमर्थता सँ विकलता ,सँ पड़ल रहैक स्थिति। मै.

पटोर-सं., पाट (रेसमी) क साड़ी, पट्टाम्बर। मै.

पटोहा-विशे., ताप सँ अत्यन्त सुखाएल, मुरझाएल। मै.

पटौनी-सं., पटबैक विधि विधान। मै.

पठन पाठन-सं., पढ़ब पढ़ाएब। सं. तत्सम

पठरू-सं., बकरीक बच्चा। मै.

पठाएब-क्रि., प्रेषित करब, पहुँचाएब। मै.

पठाओन-सं., पठबैक प्रक्रिया। मै.

पठा देब-क्रि., पठबैक आदेश, पठाएब। मै.

पठार-सं., पाथरवाला भूमि, प्रदेश। मै.

पठिया-सं., बकरीक स्त्री बच्चा। मै.

पठियार-सं., सभ्यताहीन व्यवहारवाला समाज। मै.

पड़काएब-क्रि., पदैक शब्द करब। मै.

पड़पड़-अव्यय, पदैक शब्द, कड़ा वस्तुक शब्द। मै.

पड़पड़ाएब-क्रि., पदैक अधिक शब्द करब। मै.

पड़ब-क्रि., बिछाओन पर बिना निन्नक देह पसारब । मै.

पड़रू-सं., महींसक बच्चा । मै.

पड़ाइल-विशे., भगैल रहैवाला । मै.

पड़ाएब-क्रि., भागब, नुकाइक विचार सँ दौड़ब । मै.

पड़ाओ-सं., अस्थायी डेरा । शिविर । मै.

पड़ाक द'-"अव्यय" लगले शब्दसहित । मै.

पड़ाका-सं., देखू-"पटक्का" । मै.

पड़ाँवब-क्रि., आदि सँ अन्तधरि सब कथा कहब । मै.

पँडाल-सं., पण्डाल, वनवासा, अस्थायी कृत्रिम बैसें उठैक स्थान । सभा स्थान । मै.

पेंड़ुकी-सं., चड़ै विशेष । मै.

पड़ैन-सं., पड़ाइक क्रम । मै.

पड़ैन लागब-क्रि., भयावह आपत्ति सँ जड़िमूल सँ भागि जाइक स्थिति होएब । मै.

पड़ैया-विशे., भागि जाइक प्रकृतिवाला । मै.

पड़ोर-सं., तरकारी हेतु लतीवाला प्रसिद्ध फल । परवल, पटोल । मै.

पड़ोरिआ-विशे., पड़ोरक आकार प्रकारवाला । मै.

पढ़ौआ-विशे., हरदम पढ़ाइवाला । पढ़ाकय आएल व्यक्ति । मै.

पढ़नाइ-सं., पढ़ैक आवश्यक काज । मै.

पढ़निहार-विशे., पढ़ैत रहैवाला । मै.

पढ़ब-क्रि., अध्ययन करब । स्पष्ट शाब्दिक' विषय कें बुद्धि मे भरब । मै.

पढ़ब गुनब-क्रि., अभ्यास करब आ विचारब । मै.

पढ़ल-विशे., पढ़िकय ज्ञानी बनल । मै.

पढ़लहा-विशे., शिक्षित, पढ़ै लिखै मे लागल । मै.

पढ़ाइ-सं., पढ़बैक काज । मै.

पढ़ाएब-क्रि., शिक्षा देब, विषयक ज्ञान कराएब । मै.

पढ़ाओन-सं., पढ़बैक विधि वा शैली । मै.

पढ़िया-विशे., पाढ़ि अर्थात् भिन्न रूपक कोरवाला । मै.

पढ़ुआ-विशे., पढ़ैवाला, विद्यार्थी । मै.

पढ़ौआ-विशे., पढ़ौनिहार, पढ़ाओन । मै.

पढ़ौनी-सं., पढ़बैक नियत काज । मै.

पण्डा-विशे., तीर्थ मन्दिरक नियत पूजक । मै.

पण्डागिरी-सं., तीर्थ मन्दिरक पूजा पाठक नियत व्यवसाय । मै.

पण्डित-विशे., पढ़ि गुनिकय विवेकशील विद्वान् । मै.

पण्डिताइ-सं., पण्डित होइक गुण । पण्डितक व्यवसाय । मै.

पण्डिताम-सं., पण्डितक उचित व्यवहार आ विचार । मै.

पण्डितारय-सं., पण्डितक काज आ आचरण । मै.

पत्तर-सं., लोहक पत्र, चदरा, टीन । मै.

पत्तल-सं. भोजनक हेतु बिछाओल पात । मै.

पत्ता-सं., १. गाछ वृक्षक छोट पैघ सुखाएल पात । २. हरक पासो मे अर्ध गोलाकार दुहु दिश पत्ता जकाँ बढ़ल काठ । मै.

पत्ती-सं., छोट तेज लोहक कटैवाला पत्र । ब्लेड । मै.

पत्नी-विशे., विवाहिकय आनल स्त्री, गृहिणी । मै.

पत्र-सं., पात, लोहक चदरा, चीठी । सं. तत्सम

पत्रशेष-सं., पात मे वा थारी मे छोड़ल भोजनावशेष । सं. तत्सम

पत्री-सं., पुर्जी, छोट लिखित पत्र । मै.

पतक्का-सं., पताका । सं. तद्भव

पतगर-विशे., विशेष पातवाला, भोगार । मै.

पतङ्ग-सं., १. उड़ैवाला कीट, पक्षी । २. गुड्डी । सं. तत्सम

पतझर-सं., स्वाभाविक रूपेँ पात झरैक क्रम । मै.

पतन-सं., नीचाँ मुहक गति । मै.

पतना-सं., भगक दुनू कातक मांसल कोर । मै.

पतनार/पतनाल-विशे., खसैवाला स्थान, ढालू । मै.

पतनुक्का-विशे., छनै मे पातेँ पातेँ अर्थात् दोमेँ दोमेँ नुकाइवाला । मै.

पतनुकान-सं., एकदम गुप्त स्थान मे नुकाइक चेष्टा । मै.

पतनोना-सं., भोजन काल मे अलग सँ नोन खाइक अभ्यास । मै.

पतवार-सं., पानि मे धँसल चाकर तकथी लागल कीलवाला नाओ घुमबैक कल । मै.

पतरका-विशे., पातरवाला । मै.

पतरा-सं., पञ्चाङ्ग, दिन तिथि सूझैक लेखापत्र । मै.

पतराएब-क्रि., पातर करब, पातर होएब । मै.

पतलोड़ा-विशे., बिन पढ़ै लिखैक प्रवृत्ति सँ मूर्ख । मै.

पता-सं., गाँ ठेकान, प्राप्ति स्थान । मै.

पताएब-क्रि., पत्ता जकाँ शक्तिहीन भेल खसैक क्रम मे रहब । मै.

पताका-सं., ध्वजा । सं. तत्सम

पताल-सं., पाताल, धरतीक सातम तह । सं. तद्भव

पतालो-विशे., पताल दिस झुकल । मै.

पतालो-सं., बिल मे वास करैवाली । प्रयोग-"चुट्टी रे पताली रानी ।" मै.

पति-विशे., स्वामी, प्रियतम । सं. तद्भव

पति-सं., प्रतिष्ठा, मान । मै.

पतिकरनी-सं., केवल प्रतिष्ठा बचबैक नामक काज । मै.

पतित-विशे., धर्म कर्म मे खसल । सं. तत्सम

पतिताहा-विशे., धर्म, कर्म आ विचार सँ अधम । मै.

पतिया-सं., १. प्रायश्चित । २. चीठी । प्रयोग"-कै पतिया लय जाएत हे मोर प्रियतम पास ।" मै.

पतियाइक-विशे., पतिआइ जोग । मै.

पतियाएब-क्रि., विश्वासपूर्वक मानब । मै.

पतियानी-सं., सोझ पाँती, पंक्ति । मै.

पतियानी जोर सँ-अव्यय, एक एक पाँती सोझ क' क' । मै.

पतियाल-सं., देखू—"पतवार" । मै.

पतिव्रता-विशे., पतिक मनोनुकूल कयनिहारि । मै.

पतुरिया-विशे., ग्राम्य वेश्या, ठाम ठाम पर जा कय व्यवसाय करैवाली । मै.

पतेर-सं., पातक ढेरी । मै.

पतै/पतोड़-सं., कुशियारक पातक ढेर । मै.

पतौटी-सं., एक एक व्यक्तिक भोजनक हेतु बिछाओल पातक व्यवस्था । मै.

पतौड़ा-सं., पात मे धय के बान्हल वस्तुक पोटरी । मै.

पतौरी-सं., पातक बनाओल कटोरी जकाँ पुरा । मै.

पथ्य-सं., दुखिताहक हितकर भोजन । सं. तत्सम

पठ्य/पथ्य-सं., देखू—"पथ्य" । सं. तद्भव

पथ-सं., बाट, मार्ग । सं. तद्भव

पथपानि-सं., दुखिताहक खाइ पीबैक परिचर्य्या । मै.

पथरचूर-सं., पातक स्वादिष्ट तरुआ करैक पातवाला छोट जड़ी सन गाछ । पथरी रोगक औषध विशेष । मै.

पथरचोट-विशे., पाथरक लागल चोट, पाथरक प्रहार । मै.

पथरब-क्रि., अस्त्र कें पाथर पर पिजाएब । मै.

पथराएब-क्रि., (भौतिक हेतु) पाथर जकाँ अचल भय जाएब । (लाक्षणिक) पाथर जकाँ कठोर आ स्थिर बनि जाएब । मै.

पथराहा-विशे., पाथरक कणवाला, पाथर सन कठोर भ' गेलवाला । मै.

पथरी-सं., १. अश्मरी अर्थात् मूत्राशय मे पाथर भ' जाइक रोग विशेष । २. अस्त्र तेज करैवाला पाथर । मै.

पथरौटी-सं., पाथरक बनल बाटी । मै.

पथाइ-सं., गील माटि सँ साँच पर वस्तु बनबैक विधि । मै.

पथाएब-क्रि., बनका द्वारा साँच पर वस्तु बनाएब । मै.

पथार-सं., नीचाँ सुखबै लेल पसारल अन्न । मै.

पथिक-विशे., बटोही । सं. तत्सम

पथिया-सं., अन्न वा अन्य वस्तु रखैक बाँसक बीनल चंगोली सन बासन । मै.

पथुआ-विशे., पाथिकय बनाओल । मै.

पथेर-सं., पजेवा पथैक स्थान । मै.

पथेरा-विशे., ईंटा पथैवाला जन । मै.

पथैया-सं., ईंटा आदि पथैक कार्य्यक्रम । मै.

पथौटी-सं., ईंटा पथैक नियम पर देल अग्रिम राशि । मै.

पद्दा-विशे., अधिक आ अधिक जोर सँ पदैवाला । मै.

पद्दानोन-सं. बीटनोन । मै.

पद्धति-सं., कोनो विषयक क्रमबद्ध नियम तथा दिशा-निर्देश । मार्ग । सं. तत्सम

पद्म-सं., कमलक फूल । सं. तत्सम

पद्मा-सं., १. लक्ष्मी । २. नदी विशेष । सं. तत्सम

पद्मासन-सं., योग साधनाक विशेष आसन । सं. तत्सम

पद-सं., १. स्थान, प्रतिष्ठित नियुक्तिक स्थान । २. सुबन्त आ तिङन्तवाला वर्ण वा वर्ण समूह । सं. तत्सम

पदक-सं., प्रतिष्ठाक चिह्न । सं. तत्सम

पदधोत-सं., अपन शरीरक चूनें नमहर धोती । मै.

पदना-विशे., यत्र तत्र हरदम पदैत रहैवाला । मै.

पदवी-सं., प्रतिष्ठाक वैध चिह्न । बाट । सं. तत्सम

पदभार-सं., विशेष अधिकारीक कार्यक दायित्व । सं. तत्सम

पदाएब-क्रि., (लाक्षणिक) दौ कें अधिक तंग करब । मै.

पदान-सं., अत्यन्त जोर सँ पदैक चेष्टा । मै.

पदावली-सं., कोनो विशेष कविक कविता समूह । सं. तत्सम

पदुआ-विशे., सदिखन पदैवाला । मै.

पदुमकाठ-सं., वनस्पतिक वृक्ष विशेष । मै.

पन्थ-सं., बाट, पेरा । मै.

पन्द्रह-सं., पाँच एकाइ एक दहाइक अंक । मै.

पन्ना-सं., १. पत्र, कागज आदिक एक एक अंश । २. कोनो डारि वा ठहुरी सँ मुड़ी छूटैक क्रम मे पात बहराइक रूप रेखा । मै.

पन्नापोठी-सं., एक बूटी विशेष । धीयापूताक पान जकाँ वा कम मुह रङ्गवाला । मै.

पन्नी-सं., अनेक रंगवाला सक्कत आ पातर सजबैवाला कागज । मै.

पन-सं., १. संज्ञावाची मैथिली भाषाक तद्धितीय प्रत्यय । २. अवस्था । प्रयोग—"जखन तेसर पन मे लोक पहुँचैये तखन सामर्थ्य नै रहै छै ।" मै.

पनखौका-विशे., पान खयबाक अभ्यासवाला । मै.

पनपथिया-सं., पान रखैक डालीसन वासन । मै.

पनपब-क्रि., जीवित भ' क' नव पल्लव छोड़ब । मै.

पनपियाइ-सं., जलपान, प्रातः कालक अल्पाहार । मै.

पनबट्टा-सं., प्राचीन कालक गोल चापट सन द्रव्यक बनल पान रखैक दू खप्पावाला वासन । मै.

पनबसना-सं., सामान्य पान रखैक वासन । मै.

पनबीछी-सं., पान बीछैक कौतुक विशेष । विवाह मे वरक कन्यागतक आङन पहुँचला पर अङ सँ कन्या द्वारा छिरियाओल पान कें बारम्बार वरक द्वारा बीछैक विनोद विधि (मैथिल सम्प्रदायक व्यवहार विशेष) । मै.

पनमा-विशे., एवं सं., १. पानक पातक आकारवाला । २. पानक पत्तीक एक रंग विशेष । मै.

पनरहमा-विशे., पन्द्रह दिन परक अवधिवाला । मै.

पनहाएब-क्रि., स्तन मे दूध भरि आएब । मै.

पनहाओन-सं., मुइल बच्चावाली महिस कें हाथ सँ स्तन कें पनहुँबैक प्रक्रिया । मै.

पनहान-सं., गाइक दूहैक काल पनहुँबैक बेग । मै.

पनहान देब-क्रि., महिसिक बिराइक (मैथुनेच्छा प्रकट करैक) पूर्वाभास मे स्वतः स्तन मोट भ' जाएब । मै.

पनही-सं., पादत्राण । जूता । मै.

पन/पना/पनी-सं., तद्धितीय संज्ञा प्रत्यय । प्रयोग—"बूढ़िपना ।" मै.

पनाली-सं., १. नाली सँ निकालल नाली । २. सामाजिक रीति । पणाली । सं. तद्भव

पनिआएब-क्रि., १. खेत पानि सँ भरि जाएब । २. कोनो रुचिगर वस्तुक दर्शन सँ स्वादक लोभें जीह मे पानि भरि आएब । ३. (लाक्षणिक) लोभ आ तृष्णा सँ भरि ललचाएब । मै.

पनिआगर-सं., फूसक घरक ओलती मे छारैवाला खड़ कें तनने रखैले देल विशेष रूपें बिछाओल खड़ । मै.

पनिऔरा-सं., भदवारिक छोट फल विशेष । मै.

पनिकच्छा-सं., नदी, पोखरि, डबरा आ खत्ताक पानिक लगवाला स्थान । मै.

पनिकट्टी-सं., सासुर सँ बियाहि कय वरक बिदा होइक काल—जहिना पानि कें काटल नहि जा सकैत अछि तहिना कनेयाँक सोहाग आ वर बधूक प्रेमक विच्छेद नै हो—एहि तात्पर्य तथा शपथ रूपें मिथिला मे पानि कटैक मुख्य विधि । मै.

पनिकाजर-सं., बिना खत्ता बनौने पानिक भण्डारें सँ पानि करीन द्वारा सींचैक सुविधा । मै.

पनिकिरबा-सं., पानि मे रहैवाला कीरा । प्रयोग—"पानी मे पनिकिरबा मेघली राज विराजे । मै.

पनिगर-विशे., १. बेसी पानि भरल । २. तेजगर बड़द आदि । ३. लावण्यवाला । मै.

पनिगड्डा-विशे., पानि भरल गड्ढा । मै.

पनिघट-सं., अधिक पानिवाला घाट । मै.

पनिचहटा-विशे., पानि सँ सलसलाएल खेत । मै.

पनिछक्का-विशे., अधिक पानि मिलाओल दूध आ तीमन आदि । मै.

पनिछेक-सं., बहुत पानिक रोक । मै.

पनिझाओी-सं., पोखरि आदि जलाशय मे पानि बसल रहैवाला स्थान । मै.

पनिझाली-सं., अधिक ठाँ पानि पार करैवाला बाट । मै.

पनिडुब्बी-सं., जलीय शरीरवाला प्रेत । मै.

पनितौआ-सं., रसयुक्त जातिक मधुर विशेष । मै.

पनिदुद्द्र-सं., जलोदर रोग । मै.

पनिबह-सं., आकस्मिक जमा पानिक बहैक अस्थायी बाट । मै.

पनिबट-सं., आङन सँ बरिसाती पानि बहराइक बाट । मै.

पनिबाह-विशे., पानि उगहैवाला । पानिक पूर्ति करैवाला । मै.

पनिबाहा-सं., पानि बहैत रहैक हेतु नियत कयल नाली । श्रौरिगक स्थायी नाली । मै.

पनिभर-विशे., लोक कें पानि भरि कय दैक व्यवसायवाला । मै.

पनिमक-विशे., कनेक गुलाएल जर्दा बनल । मै.

पनियारी-सं., बाढ़िक द्वारें नगरे पसरल पानि । मै.

पनियाह-विशे., १. पानि भरल । २. (लाक्षणिक) किछु नीक वस्तु देखि लोभाइवाला । मै.

पनियाहा-विशे., दूध मे अधिकतर पानि दैवाला । मै.

पनिशाला-सं., धर्मक विचार सँ सामान्य लोक कें पानि पिअ'बैक घर । सं. तद्भव/मै.

पनिसहा-विशे., अधिक पानि सहैवाला । मै.

पनिसारा-विशे., सब प्रकारक वस्तु बिकाइवाला दोकान । मै.

पनिसुररा-विशे., अधिक आ पातर झोरवाला तीमन आदि । मै.

पनिसोखा-सं., मेघ मे निकसल इन्द्रधनुष । मै.

पनिसोह-विशे., पानिक अधिक स्वादवाला । मै.

पनिहारी-सं., अधिक पानिवाला समय । उचित सँ बेसी पानि पड़ने तथा लगातार अधिक दिनधरि वर्षा होइत रहने कष्टकर समय । मै.

पनी-सं., संज्ञावाचक तद्धितीय प्रत्यय । प्रयोग-"एहन पुर्णपनी नहि करू ।" मै.

पनीर-सं., औषध विशेष । मै.

पनुखब-क्रि., पुनर्जीवित होएब । फेर अंकुर जागब । मै.

पप्पा-सं., पिता, नवीनतम मिथिलो मे पिताक सम्बोधनक प्रचलित प्रति शब्द । अं. तद्भव/मै.

पपड़ा-सं., गाछ वृक्षक छाल । मै.

पपड़ी-सं., घाओ आदि परक सुखाएल चमड़ी । मै.

पपहिया-सं., जीह मुहक घाओ, अम्रलाहा । मै.

पपियाह-विशे., घृणित कुत्सित निन्दित काज आ व्यवहार करैवाला । मै.

पपीता-सं., अररनेबा फल । मै.

पपीहा-सं., मधुर बोलीवाला पक्षी विशेष । मै.

पपोहब-क्रि., इच्छानुसार खूब नीक नीक वस्तु खाएब । मै.

पबन्नी-सं., पचीसीक खेल मे बिना पउ सँ नै उठैवाला । पबहारिवाला घर मे गेल गोटी । मै.

पबनाह-विशे., पाबनिक निमित्त निहुछल । मै.

पबनी-सं., पावनि, पर्व । मै.

पबनैतिन-विशे., पावनि करैवाली स्त्री । मै.

पबनौट-सं., पावनिक वस्तुक अंश । मै.

प' बहारि-सं., पचीसीक खेल मे दश की पचीस भेला पर गोटीक निकासी । मै.

पबही-विशे., एक पाओ मानवाला । मै.

पबाइ-सं., पैर मे पहिरैक वस्तुक जोड़ाक भाग । मै.

पबाहरि-सं., प' भेला पर पचीसीक गोटीक घर सँ बहराइक क्रम । मै.

पबै-सं., दश आ पचीस भेला पर पचीसीक गोटी कें घर सँ बहार कय चालू करैक चेष्टा । मै.

पम्ह-सं., मोछ बहराइक क्रम मे नाक सँ नीचाँ मोछक स्थान मे रोइयाँक सघनता । मै.

पम्ही-सं., तैयार कयल तथा मसल आ चूरिकय दाना बहार कयल अन्न मे बाँटिक पातर पत्ती । मै.

पमरिया-विशे., पुत्रक जन्म मे नाचि गावि कय लोकक घर सँ धन कमाइवाला । मै.

पमारा-सं., वेग सँ बहराएल देहक शोणितक धारा आदि । मै.

पयोधर-सं., १. स्तन । २. मेघ । सं. तत्सम

पयोधि-सं., समुद्र । सं. तत्सम

पर्यटन-सं., भ्रमण, उद्देश्य सँ घूमैक चेष्टा । सं. तत्सम

पर्व-सं., पावनि । सं. तत्सम

पर्वत-सं., पहाड़ । सं. तत्सम

पर्वतीय-विशे., पर्वत पर होमंवाला, रहैवाला । सं. तत्सम

पर-सं., अधिकरण कारकक चिह्न । आधार । मै.

परक-विशे., आनक, उपर रहैवाला । मै.

परगट-विशे., प्रकट, बहराएल, प्रकाश भेल । मै.

परगास-सं., प्रकाश, स्पष्ट । सं. तद्भव/मै.

परगोत्री-विशे., अपन गोत्र (वंश) सँ भिन्न गोत्र-वाला । सं. तद्भव

परञ्च-अव्यय, किन्तु । सं. तत्सम

परचार-सं., प्रचार । सं. तद्भव

परचारब-क्रि., व्यापक रूपेँ सूचित क' देब । मै.

परछाँही-सं., अपन देहक छाया । मै.

परजा-सं., प्रजा, सन्तान । सं. तद्भव/मै.

परजाति-विशे., भिन्न जातिवाला । सं. तत्सम

परत-सं., भिन्न भिन्न रूपक जमल तह । मै.

परतच्छ-विशे., प्रत्यक्ष । सं. तद्भव

परतर-सं., स्वभावक समानता । मै.

परता-विशे., बिना जोत कोड़वाला खेत । मै.

परतौं-अव्यय, बाद मे रहला सँ । मै.

परताएब-क्रि., जाँचब, परीक्षा कय अनुभव लेब । मै.

परताएल-विशे., अनुभव कयल । मै.

परताओल परतावी बुद्धिक बिनाश-लोकोक्ति, अनुभव कैले वस्तुक जँ फेर अनुभव करी तँ मूर्खेत कहाबय । मै.

परतान-सं., पटिया आदि बीनैक हेतु छेद मे डोरी पहिराओल कसैवाला बीनैक साधन । प्रतान । मै.

परता परब-क्रि., लगताक लाभ होएब । मै.

परतार-सं., फुसियबैक ढंग । मै.

परतारब-क्रि., फुसियाकय मन बहला देब । मै.

परती-विशे., बिन जोतैवाला घास भरल भूमि । मै.

परतीत-सं., आस्थापूर्वक विश्वास । प्रतीति । सं. तद्भव

परती परांत-सं., बिन जोतलाहा भूमिक विस्तार । मै.

परतुआ-विशे., प्रातः कालवाला जलपान । मै.

परथन-सं. सोहारी बेलैक हेतु सुखाएल चिकस । मै.

परथर-सं., देखू—"प्रथर" । मै.

परदा-सं., १. घुघ्घाजुल । २. आड़ । ३. अड़क साधन । मै.

परदादा-विशे., प्रपितामह । मै.

परदेशी/परदेसिया-विशे., आन प्रदेशक लोक, अनतय रहैवाला । मै.

पर धी-विशे., आनक बेटी । मै.

परन्तु-अव्यय, देखू—"परञ्च" । मै.

परना-सं., पारणा, व्रतक उपरान्त भोजन । मै.

परनामी-सं., प्रणाम करैक संग दैक वस्तु । मै.

परपट-विशे., बिना कोनो अड़ घातवाला । प्रयोग—"कोशी कातक दूरधरि परपट मैदान ।" मै.

परपन-विशे., प्रपन्न । श्रद्धा । प्रयोग—"अपवित्र स्थान मे अथवा मे मन परपन नै होइ छै ।" सं. तद्भव

परब-सं., पावनि । सं. तद्भव

परबतिया-विशे., पर्वतक लोक । मै.

परबल-सं., १. परोड़ । २. आनक बल । मै.

परबरिस-सं., निर्वाह । उ. तद्भव

परबा-सं., कबूतर, कपोत । मै.

परबार्यांजि-सं., धान विशेष । मै.

परबाहि-सं., संकोचपूर्वक अपेक्षा, सोच विचार । मै.

परबी-सं., पावनिक अवसरक अंश । मै.

परबुद्धी-विशे., आनक देल बुद्धिक अनुकूले चलनिहार । मै.

परबोधब-क्रि., स्नेहपूर्वक बुझाएब । मै.

परभाखछय-सं., अरुचिपूर्वक असम्मति । मै.

परभुत/परभुता-सं., प्रभुत्व, प्रभुता । सामर्थ्य । शक्ति । सं. तद्भव

परम-विशे., सब सँ पैघ, सब सँ अधिक । सं. तत्सम

परमात्मा-सं., व्यापक पुरुष, ईश्वर । सं. तत्सम

परमाद बारब-क्रि., अपन दोषक शंका आ आनक गौरवक हानि तथा एकर उनटा बुझब । मै.

परमादी-विशे., प्रमाद कयनिहार । मै.

परमान-सं., प्रमाण, नियम । मै.

परमार्थ-सं., आनक नीक, परोपकार । मै.

परमेश्वर-सं., सर्वशक्तिमान देवता । मै.

परस्पर-अव्यय, आपस मे । सं. तत्सम

परस-सं., स्पर्श । सं. तद्भव

परसन-सं., १. फेर फेर भोजन कालक वस्तुक याचना एवं देवाक कम । २. विशे. ,प्रसन्न । मै.

परसमनि-सं., स्पर्शमणि । मणि विशेष । मै.

परसब-क्रि., भोजनक काल भोजन कयनिहार कें भोजन देब अथवा पात मे राखब । मै.

परसाएब-क्रि., १. भोज्य वस्तुक वितरण कराएब । २. फलक अत्यधिक पाकब । मै.

परसाद-सं. प्रसाद, विशेष नैवेद्य । सं. तद्भव

परसाबी-सं., १. प्रसाद बनबैक वस्तु । २. प्रसन्नताक फल । मै.

परसुका-विशे., परसूवाला । मै.

परसू-सं., काल्हि सँ पहिलुक (अग्रिम) दिन । मै.

परसौत-सं., प्रसूती स्त्रीक स्वाभाविक रोग । मै.

परसौती-विशे., नव नव बच्चा भेल स्त्री । मै.

परहेज-सं., सम्पर्क एवं संगक वर्जना । उ. तत्सम

पराइत-अव्यय, बाद मे । मै.

पराओ-सं., चलता फिरता डेरा । मै.

पराग-सं., फूलक धूलि । सं. तत्सम

परात-सं. १. प्रातःकाल । २. बड़का थार । मै.

परांत-सं., बहुत दूरधरि बिन जोतल भूमि । मै.

पराती-सं., प्रभात कालक गीत । मै.

परान-सं., १. प्राण । २. पराम्न, आनक अन्न । सं. तद्भव

परानी-सं., प्राणी । सं. तद्भव

परापति-सं., प्राप्ति । सं. तद्भव

पराभव-सं., पराजय हारि, अनेक रूपक संकट । सं. तत्सम

परार-विशे., अपन सम्बन्ध आ अनुबन्ध सँ भिन्न लोक । मै.

परि-सं., १. तुलना, उपमा । प्रयोग—"अधिक दावी कयनिहार कें दुर्योधनक परि होइत छै ।" २. उपाय । प्रयोग—"माइ गे कोन परि राखब भाइ केर मान ।"—सामा गीत । मै.

परिकठ-सं., कोनो वस्तु कें चीरैं फाड़ै काल तर मे देबाला लकड़ी । मै.

परिकन्हा-सं., कन्हा लगाकय जोर लगबैक युक्ति । मै.

परिकब-क्रि., बारम्बार अनेक स्वार्थ साधैक हेतु पहुँचल करब । एकै ठाँ दौड़ करब । मै.

परिकर-विशे., सहायक । परिचारक । सं. तत्सम

परिकरमा-सं., परिक्रमा, चारू दिश भ्रमण । सं. तद्भव

परिकल-विशे., अपन प्रयोजन सिद्धि हेतु एकै ठाँ लक्ष्य बनौनिहार । मै.

परिकाएब-क्रि., बारम्बार स्वार्थक गर बैसाकय ककरो अबैक अवसर देब । मै.

परिकाओल-विशे., एक बेर नीक कयनो दोसरो बेरक हेतु लोभ जगाओल । मै.

परिका परब-क्रि., एक दिनुक प्रयोजन सिद्ध होइक स्थान पर बारम्बार पहुँचैक नियम जकाँ बना लेब । मै.

परिकौआ-विशे., बारम्बार परिकाओल । मै.

परिखा-सं., १. बलि कटै सँ पहिने छागरक शरीरक तेजी सँ कम्पन । २. जाँच । सं. तद्भव

परिचय-सं., लोकक वा वस्तुक नाँ ठेकानक ज्ञान । सं. तत्सम

परिचर्या-सं., सेवा शुश्रूषा । सं. तत्सम

परिचायक-विशे., बुझौनिहार, परिचय देयौनिहार । सं. तत्सम

परिचारक-विशे., सेवा कयनिहार । सं. तत्सम

परिचित-विशे., चिन्हार । सं. तत्सम

परिचिताह-विशे., परिचित जकाँ लगैवाला । मै.

परिछनि-सं., स्नेह सम्मान आ शुभकामनाक विशेष प्रकारक स्त्री वर्गक करैक लौकिक विधि । मै.

परिछनियाँ-विशे., परिछनि करैवाली स्त्री । मै.

परिछब-क्रि., स्नेह सम्मान आ शुभकामना भरल शुभ अवसर विशेषक लौकिक विधि करब । मै.

परिछाएब-क्रि., परिछनि कराएब । मै.

परिछाँही-सं., नाम लै देल कृत्रिम छाया । मै.

परिजन-सं., अपन लगक जन समूह । सं. तत्सम

परिणाम-सं., अन्तक फल । सं. तत्सम

परिपक्व-विशे., नीक जकाँ पाकल । सं. तत्सम

परिपाटी-सं., प्रचलन, रीति । सं. तत्सम

परिबा-सं., पक्षक प्रथम तिथि । (अनादर मे) मै.

परिमल-सं., १. सुगन्धित द्रव्य । २. नौसिका एक प्रभेद । सं. तत्सम

परिमाण-सं., देखाओल मान । अटकर । सं. तत्सम

परिमित-विशे., थोड़, अल्पमात्रा । सं. तत्सम

परिया भोगब-क्रि., कयल अवलाह काजक भोग करब । मै.

परि लागब-क्रि., प्राप्त होएब, पकड़ै मे आएब । मै.

परिवार-सं., सम्मिलित आश्रमक लोक । (प्राचीन परिवारक सामाजिक व्यवस्था) पिता माता, स्त्री आ सन्तान (विच्छिन्न परिवारक आधुनिक वैधानिक व्यवस्था) । सं. तत्सम

परिश्रम-सं., पाकनि, खटनी, उद्यम । सं. तत्सम

परी-सं., काल्पनिक देव योनिक गन्धर्व कन्या । मै.

परीक्षा-सं., लिखित वा मौखिक बौद्धिक जाँच । सं. तत्सम

परीब-सं., १. परी । २. कोनो पक्षक पहिल तिथि । मै.

परुकाँ-सं., बीतल वा अग्रिम (अबैवाला) वर्ष । मै.

परेख-सं., देखितैं वा सुनितैं बूझैक शक्ति । प्रेक्षा । मै.

परेखब-क्रि., देखैत सुनैत मात्र बूझि जाएब । मै.

परेखी-विशे., देखैत सुनैत देरी बूझि जाइवाला । मै.

परेड-सं., सैनिकक अनुशासनबद्ध प्रशिक्षण क्रम । अं. तत्सम

परेत-सं., मृतात्मा । प्रेत । सं. तद्भव

परेम-सं., स्नेह, प्रणय । प्रेम । सं. तद्भव

परैया-विशे., सम्बन्ध आ सम्पर्क सँ बाहरक लोक । मै.

परोक्ष/परोछ-विशे., नजरिबाहर रहैवाला । सं. तत्सम/सं. तद्भव

परोजन-सं., प्रयोजन । सं. तद्भव

परोठा-सं., घी औंस औंसकय' मोड़ि पकाओल रोटी । मै.

परोड़-सं., व्यञ्जनक प्रसिद्ध फल । मै.

परोपट्टा-सं., क्षेत्र खण्ड, स्थानक समीप चारू कातक विस्तृत क्षेत्र । प्रान्त । मै.

परोभिन-विशे., सम्बन्धी सँ भिन्न लोक । मै.

परोस-सं., घर लगक स्थान । मै.

परोसिया/परोसी-विशे., घरक लग मे रहनिहार । मै.

पल्लव-सं., गाछक ठढ़ुरीक मुड़ी समेत पात । मै.

पल्ला-सं., कोनो जोड़ा वस्तुक एक अंग । मै.

पल्ला पड़ब-क्रि., संपर्क होएब । मै.

पल-सं., सूक्ष्मतम काल । सं. तत्सम

पलक-सं., पिपनी खसै उठैक क्षण आ प्रक्रिया । सं. तत्सम

पलखति-सं., अवकाश, कार्यहीन समय । मै.

पलगर-विशे., दूर । मै.

पलङ्ग-सं., सुतैक उँचगर सुन्दर साधन । मै.

पलङड़ी-सं., छोट आ विन्यासरहित पलङ्ग । मै.

पलड़ा-सं., पलङ्ग, सामान्य खाट । मै.

पलड़ी-सं., छोट छीन खाट । मै.

पलटन-सं., १. सैनिक समूह, सेना । २. घूमब । मै.

पलटनियाँ-विशे., सेना मे रहैवाला । सं., घर घूमैक क्रम, उनटब पुलटब । मै.

पलटब-क्रि., घ'र घूमि जाएब । मै.

पलटाएब-क्रि., घर घुमाएब । मै.

पलटान-सं., बराबरि घर घूमैक क्रम । मै.

पलड़ा-सं., तराजूक दुनू भागक डाली । लटकैवाला वस्तु । मै.

पलथा-सं., आसन विशेष । दुनू जाँघ दिश दुनू पैर चाकर कय मोड़ि बैसैक प्रक्रिया । मै.

पलथी मारब-क्रि., पलथा आसन सँ बैसब । मै.

पलना-सं., अत्यन्त छोट नेन्नाक झूला । मै.

पलपल-विशे., बाड़ू र छैतैं योग्य कोमल । गुलगुल । मै.

पलपलहा-विशे., पलपल करैवाला । मै.

पलपलाएब-क्रि., अधिक पाक आ कोमलता सँ गुल-गुलाएब । मै.

पलब-क्रि., पालित होएब । मै.

पलछल-विशे., पुष्ट भेल, इच्छानुसार भोगक हेतु राखल पड़ल । मै.

पलहासब-क्रि., छाँटि कय आ कतरि कय सोझ करब । मै.

पलाइब-क्रि., डाँट पातक केवल खूब वृद्धि होएब । मै.

पलाकी-सं., साग विशेष । मै.

पलाँचब-क्रि., हल्लुके हाथेँ सरि करब, समतल बना-एब । मै.

पलान-सं., बाँसक टोला लगाकय सोझ रखैक कम। मै.

पलानि पड़ब-क्रि., कोनो काज मे आग्रह आ दृढ़ता सँ लागि पड़ब। मै.

पलानी-सं., घरक संग वा अतिरिक्तो स्थान मे जोड़ल अलग चार। मै.

पलायन-सं., भागैक प्रवृत्ति। सं. तत्सम

पलार-सं., ऊँच पर सँ नीचाँ दिस जलक प्रवाह। मै.

पलारी-सं., ऊँच सँ नीचाँ दिस जलक प्रवाहक वेग। मै.

पलाश-सं., लाल फूल आ ओकर बड़का वनस्पति। मै.

पलास पीपरि-सं., औषध विशेष। मै.

पलासी-सं., पलासक बीआ। मै.

पलिताइन-विशे., अश्रद्ध लगैवाला। मै.

पलिताह-विशे., असद्ध रहैवाला। स्त्री० पलिताहि। घिनौन। मै.

पलिया-सं., धान विशेष। मै.

पलियाएब-क्रि., अस्तव्यस्त रूपेँ एकठाँ जमा करब। मै.

पलीत-विशे., घिनाओन रहैवाला, घृणित काज करैवाला। मै.

पलीन-विशे., चौरस कयल, एक रंग चिक्कन कयल। मै.

पलेन-सं., लकड़ी केँ चिक्कन आ शुद्ध करैवाला कमारक अस्त्र। मै.

पलै-सं., मांसवाला खण्ड। माछक मांसल टुकड़ा। मै.

पवन-सं., बसात। सं. तत्सम

पवित्र-विशे., शुद्ध, स्वच्छ, निर्विकार। सं. तत्सम

पवित्री-सं., १. चानी वा सोनक मड़ल औंठी। २. कमरखुआक कामौर मे लटकाओल अलग सँ कुश आ गंगा जलक सीसी। सं. तत्सम

पश्चात्-अव्यय, पाछू काल। सं. तत्सम

पश्चात्ताप-सं., देखू—"पछताबक"। सं. तत्सम

पश्चिम-सं., पूबक उनटा दिशा, पाछू। सं. तत्सम

पशमिना-सं., कन्दहार देशक मेही ऊन। उ. तत्सम

पशु-सं., अज्ञानी, चारि पैरवाला जीव। सं. तत्सम

पशुत-सं., पशुता। सं. तत्सम

पष्ट-विशे., साफ, खुलिकय कहल वा झलकल, स्पष्ट। सं. तद्भव

पस्त-विशे., दबल, मसल, दुर्दशा कयल। उ. तत्सम

पसड़ा-सं., तराजूक एक दिस कनेक बेसी भार। मै.

पसर-सं., रातुक अन्तक समय, महिसिक चरैक भोरका बेर। मै.

पसरब-क्रि., चारू दिस अधिक दूरधरि फैल बनब। विस्तृत होएब। मै.

पसरहट्टा-सं., अनेक वस्तु पसारिकय बिकाइवाला स्थान। मै.

पसरा पसरौअलि-सं., अनेक बेसी पसार करैक प्रक्रिया। मै.

पसली-सं., पैर आ पुट्ठीक जोड़वाला अंग। मै.

पसाएब-क्रि., भात सँ माण गारब। कोनो वस्तु सँ गारि (ससाकय) द्रव बहार करब। मै.

पसाओन-विशे., पसाकय बहार कयल द्रव। मै.

पसाठ-सं., कोनो कुड़हरि, खन्ती आदि अस्त्रक धारक पछिला भाग। मै.

पसार-सं., १. विस्तार, फैलाओ। २. लोहार, कमारक काजक स्थान, आयोजन। मै.

पसारब-क्रि., विस्तार करब। फैलाएब। मै.

पसारी-विशे., विशेष काजक विशेष व्यवसायी। कुम्हार, सोनार, डोम, चमार आदि। मै.

पसाहनि-सं., देहक सौन्दर्य बढ़बैक प्रसाधन। मुहक चित्र रचना। मै.

पसाही-सं., क्रमश: एकठाँ सँ दोसरो ठाँ बढ़ैत आगिक गति। (लाक्षणिक) एकठाँ सँ दोसर ठाँ वार्ता पसरैक कम। मै.

पसिझब-क्रि., घमि घमि कय चूअब। मै.

पसिन्न-विशे., प्रिय लागैवाला, मनोनुकूल होमैवाला। मै.

पसीझ-सं., औषधीय वनस्पति विशेष। मै.

पसीबा-विशे., (अनादर मे) पासी जातिक लोक। मै.

पसेना-सं., देहजल, रोमकूप सँ बहराएल स्वेद। मै.

पसेरी-सं., पाँच कीलोक एक परिमाण। मै.

पह-सं., मुख्य नदीक पातर शाखा नदी। मै.

पहटन-सं., लकड़ी कें कतरि कय सोझ आ चौरस करैक क्रम । मै.

पहटब-क्रि., लकड़ीक सिल कें छीलि कय गोला सँ चौकोर आ सोझ करब । मै.

पहटा-सं., १. बाँसक कमची सँ बनल माछ फँसबैक साधन । २. समतल करैवाला छोट गोलायम काठक पट्टी । मै.

पँहति-सं., भोजनक हेतु बैसल लोकक पाँती । मै.

पहथ-सं., हाथ पसारिकय बनाओल परिमाण । मै.

पहपटि-सं., समस्या मे समस्याक उत्पत्ति सँ परिस्थितिक विकटता । मै.

पहपटिया-विशे., पहपटि उत्पन्न करैवाला । मै.

पहर-सं., तीन घंटाक एक मान । प्रहर । मै.

पहर रतिया-सं., एक पहरक राति । मै.

पहरा-सं., रक्षा, ताकुत करैक सावधानता । मै.

पहरिया/पहरुआ/पहरूदार-विशे., पहरा करैवाला नियुक्त व्यक्ति । मै.

पहलमान-विशे., मल्लयुद्ध विशेषज्ञ, सरी खेलाइवाला । मै.

पहलमानी-सं., सरी खेलाइक कला, मल्लयुद्धक वृत्ति । मै.

पहलेज-सं., लत्ती मे फड़ैवाला स्वादिष्ट फल । मै.

पहाड़-सं., पर्वत । मै.

पहाड़ा-सं., अंक आ अक्षर सीखैवाला प्रारम्भिक शिक्षाक पोथी । मै.

पहाड़ी-विशे., १. पहाड़ पर रहैवाला । २. छोट लोटक लोक । मै.

पहिया-सं., गड़कैवाला गोल चक्का (चक्र) । मै.

पहियाएब-क्रि., एक रेखा आ परिधि मे होएब । पाहि मे अर्थात् सोझाँ सोझी काज करैत चलब । मै.

पहिमर-विशे., पँच पाहिवाला । मै.

पहिने-अव्यय, प्रथमहि, आरम्भ मे, आदि मे । मै.

पहिरन-सं., पहिरैक, देह मे धरैक वस्त्र आ भूषण । मै.

पहिरना-सं., नित्तह पहिरैक वस्त्र । मै.

पहिरब-क्रि., देह मे धरब, उपर वा नीचा सँ देह-लगाएब । मै.

पहिराएब-क्रि., देह मे वस्त्रक सज्जा करब, ग्रहण कराएब । मै.

पहिल-विशे., एक संख्या मे रहैवाला । मै.

पहिला-विशे., आगू मे रहैवाला । मै.

पहिलुका-विशे., पुरान समयवाला, पहिल स्थान मे रहैवाला । मै.

पहिलौठ-विशे., पहिल बेर बच्चा दैवाली । मै.

पहिलौठा-विशे., पहिल होम'वाला बच्चा । मै.

पही-सं., माछ मारैक पसरल पैघ साधन । मै.

पहुँ-विशे., प्रियतम, पति । मै.

पहुँच-सं., पहुँचैक गति । मै.

पहुँचनामा-सं., पहुँचि जाइक वार्ताक पत्र । मै.

पहुँचब-क्रि., जाएब, लक्ष्य प्राप्त करब । मै.

पहुँचा-सं., हाथक गट्टा सँ उपरवाला अंग । मै.

पहुँचाएब-क्रि., लक्ष्य पर धरि द' आएब । मै.

पहुँची-सं., पहुँचाक गहना विशेष । मै.

पहुनघरा-सं., अतिथि, घर पाहुन रहैक घर । मै.

पहुनबाहि-सं., पाहुन अबै जाइक क्रम । मै.

पहुना-विशे., जमाय आ बहिनो सम्बन्धवाला । मै.

पहुनाइ-सं., कतौ पाहुन बनैक काज । मै.

पहुलाठ-सं., पोन सँ ऊपरक आ कातक अंग । मै.

पहेली-सं., बुझौअलि । हि. तत्सम

पा

पाइ-सं., सब सँ छोट सिक्का । मै.

पाइट-सं., खेत आरिक कात करोट । प्रान्त । प्रयोग- "ऐ बेर ऐ पाइट मे धान नै उगजलै ।" मै.

पाउज-सं., माल जालक खाएल घास पातक फेर निगलैक चेष्टा । मै.

पाएब-क्रि., प्राप्त करब । मै.

पाओ-सं., एक वस्तुक चारिम भाग । १/४ । मै.

पाक-सं., १. रन्हैक प्रक्रिया । २. कसिकय डोरी आदि वस्तु मे भत्ता मे घुन दैक विधि । ३. शोध आ शुद्धि । सं. तत्सम

पाँक-सं., लसियाएल माटिवाला थाल । मै.

पाकड़ि-सं., वृक्ष विशेष । पकौटी । मै.

पाकनि-सं., १. आगिसँ पकैक चिह्न । २. गूर आदि पाओक पकैक क्रम । मै.

पाकब-क्रि., १. आगि सँ दग्ध होएब । २. फल आदि वस्तुक सिद्ध होएब । मै.

पाँका लागब-क्रि., (लाक्षणिक) फँसि क' अन्तिम (मृत्यु) क स्थिति मे पड़ल रहब । मै.

पाँकी-सं., पाँक मिलल माटि। मै.

पाखी-सं., पर्फक मूण। मै.

पाखड़ि-सं., धानक प्रभेद विशेष। मै.

पाखण्डी-विशे., एक पक्षीय धर्मक चर्चा कय आन सम्प्रदायक कुचेष्टा कयनिहार। ईश्वर कें नहि मान-निहार। मै.

पाँखि-सं., पक्षीक पंख। उड़ैक प्राकृतिक साधन। मै.

पाँखुर-सं., पीठ दिस बाँहिक जोड़वाला अंग। मै.

पाग-सं., मैथिलक शिर पर रखैक अर्थात् टोपी जकाँ धरैक विशिष्ट शिरक आवरण। मै.

पागब-क्रि., बर्तन मे घी आ चीनीक संग भोज्य पदार्थ के राखि थोड़ आँच सँ थोड़ भूजब। मै.

पागल-विशे., १. बताह। २. थोड़ आँच सँ भूजल भोज्य पदार्थ मखान आदि। मै.

पागु करब-क्रि., माल जालक खाएल वस्तुक चिबा-एब। बिन दाँतवाला लोकक अनेर मुह लाड़ब। मै.

पागुर-सं., देखू-"पाउज"। मै.

पाङ-सं., गाछक डारि पात कें छँटैं कटैक कम। मै.

पाङड़-विशे., गाछक काटल छाँटल डारि पात। मै.

पाङनि-सं., गाछ वृक्षक डारि पात कें कटैक उप-क्रम। मै.

पाङब-क्रि., गाछ वृक्षक अनावश्यक डारि पात कें काटि छाँटिकय झाड़ब। मै.

पाँच-संख्या, एक अंकक पाँचम संख्या। पाँच एकाइ मात्र। मै.

पाच-सं., चेनवाक टीका। मै.

पाचक-विशे., १. पटेक अन्न कें पचबैवाला औषध। २. श्राद्ध कर्म मे नियुक्त कयल पिण्डक पाक करै-वाला। ३. भनसिया। मै.

पाचड़-सं., कोदारि आदिक बेंट गनकत रखैक कील। मै.

पाचन-सं., पचबैक शक्तिवाला तथा पचैवाला। मै.

पाचनि-सं., १. पचबैक शक्ति। २. पाच दैक विधि। मै.

पाचब-क्रि., १. पाच देब। २. (लाक्षणिक) खोधि खोधि कय तत्त्व बहार करब। क्षत विक्षत कय शोणित चूसब। ३. अर्थ लोचब। मै.

पाँचम-विशे., पाँच संख्या मे रहैवाला। मै.

पाछाँ-अव्यय, पाछू दिस। मै.

पाछाँ पाछाँ-अव्यय, पाछू लागल। मै.

पाछु-अव्यय, पाछू दिस। मै.

पाछु धरब-क्रि., पाछू लागल संग होएब। मै.

पाछू-अव्यय, पश्चात् काल, पाछू दिस। मै.

पाछू आयब-क्रि., कालक अन्तर कय आयब। मै.

पाँज-सं., बाँहि मोड़िकय धरैक जोग बोझ। मै.

पाँजर-सं., बाँहिक तरवाला अंग। छाती कातक अंग। मै.

पाँजा-सं., दूनू हाथ मोड़िकय उठबैवाला बोझ। मै.

पाँजि-सं., पञ्जी प्रबन्ध, जाति एवं मैथिलक कौलिक डेराक व्यवस्था। मै.

पाजी-विशे., सिखौलो बुझौलो उत्तर अपने मने दुष्टतापूर्ण व्यवहार कयनिहार। मै.

पाजु-सं., माल जालक खाएल वस्तुक पुनि चर्वणा। मै.

पाजेब-सं., स्त्री पैरक गहना। मै.

पाट-सं., १. धोबिक कपड़ा खीचैक काठ। २. जला-शयक जलमय स्थानक विस्तार अर्थात् चकराइ। ३. पटुआ फसिल। ४. पक्ष। प्रयोग—"पूटर हमर विरोधीक पाट ध' लेलनि।" मै.

पाटन-सं., व्यापन, सन्तति पसार। मै.

पाटनि-सं., फैलाओ, दूर धरि कयल छाप। मै.

पाटब-क्रि., व्याप्त होएब। मै.

पाटा-सं., १. जोतल खेतक माटि कें समतल करै-वाला चौकी। २. देवालक पलस्तर करैवाला नाम मोट चौकोर लकड़ी। मै.

पाटापाटी-सं., झगड़ा, गोलैसी, दलबन्दी। मै.

पाटि-सं., प्रशिक्षण, अभ्यास धराएब। माल जालक (घोड़ा बड़द आदिक) शिक्षा। मै.

पाटी-सं., १. दल, पक्ष। २. लिखैक तख्ती, प्रार-म्भिक शिक्षाक बच्चाक लिखैक पट्टी। मै.

पाठ-सं., प्रत्यह पढ़ैक एक प्रकारक मान। पढ़बाक अवधि। नियत विषय। सं. तत्सम

पाठक-विशे., पढ़ैवाला। सं. तत्सम

पाठशाला-सं., पढ़ैक घर स्थान। सं. तत्सम

पाठा-सं. हाथीक पुरुष बच्चा, छागर। मै.

पाठि-सं., नियमानुसार काजक अभ्यास। मै.

पाठि लगाएब-क्रि., संग लागल काज कराकय अभ्यास कराएब। अनुशासनबद्ध करब। मै.

पाठी-सं., बकरीक स्त्री बच्चा। मै.

पाइनि-सं., गोयठा पाइक बनाओल स्थान । मै.

पाइन-सं., पथेबा पथैक स्थान । मै.

पाइब-क्रि., १. सुताएब । २. रावब । ३. गील वस्तु कें खाँच वा साँच मे द' क' विभिन्न आकारक बनाएब । (जेना-ठकुआ, पूरी, ईंटा, खपड़ा, गोयठा, गोरहा आदि । मै.

पाँइरि-सं., बुनबुना, फोंका । प्रयोग—"ओठ फुट पाँइरि "। मै.

पाड़ा-सं., महिसिक पुरुष बच्चा । स्त्री० पाड़ी । मै.

पाढ़-सं., पोखरिक महार, भीड़ा । मै.

पाढ़ि-सं., विभिन्न रंगक कपड़ाक कोर, किनार । मै.

पाण्डिल-सं., केवाड़क विशेष पट्टा गढ़ै मे रखल पट्टीक समूह । मै.

पाण्डु-सं. रोग विशेष । मै.

पाणि-सं., हाथ । सं. तत्सम

पाणिग्रहण-सं., विवाह । सं. तत्सम

पात्र-सं., १. बासन । २. विशे., योग्य । ३. पितृ-कर्म करौनिहार आ ओकर दान लेनिहार । सं. तत्सम

पात-सं., खाइक हेतु गाछ वृक्षक पत्र । सामान्य गाछ सभक पत्ता । मै.

पातक-सं., पाप । सं. तत्सम

पातकी-विशे., महापाप कयनिहार । मै.

पातर-विशे., शरीरक क्षीण । दुर्बल, दुब्बर । मै.

पातर-सं., प्रान्तर, दूरधरि घर आ गाछ वृक्ष आदि सँ शून्य क्षेत्र । सं. तद्भव

पातरि-सं., दूधक संग वा दूधे मे रान्हल पदार्थक पात्र मे पसारल नैवेद्य । देवी देवताक हेतु पायसक प्रसाद । मै.

पाता-सं., सम्मानसीम निमन्त्रणक पैच विशिष्ट पत्र । मै.

पाताल-सं., देखू—"पताल" । मै.

पांति/पाँती-सं., पंक्ति । मै.

पाति-सं., बाँहि (केहुनी सँ उपर)क गहना । मै.

पातित-सं., पातित्य, पतितपना । सं. तद्भव

पातिब-विशे., नवविवाहित कनियाँ । मै.

पातिल-सं., शुभक अवसर पर आगू मे राखल जाइ-वाला रंगल ढौरल पैल सन बासन । मै.

पाती-विशे., खसैवाला । सं. तत्सम

पाथब-क्रि., गील वस्तु कें आकार द' क' बनाएब । मै.

पाथर-सं., पाषाण, प्रस्तर । मेघ सँ खसल बर्फक गोलाकार वर्षा बिन्दु । मै.

पाथरि-सं., कोनो वस्तु पथैक स्थान । मै.

पथेय-सं., बटखर्चा । मै.

पाद-सं., १. चरण । सं. तद्भव । २. अधोवायु । मै.

पादब-क्रि., नीचाँक अंग सँ वायु छोड़ब । मै.

पान-सं., १. मुखशुद्धिक पात । २. पीबैक प्रक्रिया । सं. तत्सम/मै.

पानि-सं., १. जल । २. (लाक्षणिक) दया आ प्रतिष्ठा । मै.

पानि पानि क' देब-क्रि., दोष कें प्रमाणित कय अत्यन्त लज्जित करब । मै.

पाप-सं., अधलाह कर्म । सं. तत्सम

पापड़-सं., बेसनक मसाला भरल व्यञ्जनक पत्र । मै.

पापड़ बेलब-क्रि., (लाक्षणिक) कष्टकर आ अधिक श्रमवाला काज करब । मै.

पापी-विशे., अधलाह कर्म करैवाला । मै.

पाबनि-सं., पर्व, देवताक उपासनाक विशेष तिथि । मै.

पाबनि तिहार-सं., पर्व आ उत्सवक अवसर । मै.

पाबब-क्रि., छूबि आ पकड़ि सकब । प्राप्त करब । मै.

पाबस-सं., बरिसात समयक प्रसिद्ध गीतक राग । बरिसातक समय । मै.

पाभरि-अव्यय, एक पाओक मान मे । मै.

पामर-विशे., नीच विचार आ व्यवहारवाला । सं. तत्सम

पाय-सं., पैर, चरण । प्रयोग-"परसल माय पाय तुअ पानी ।"—विद्यापति । मै.

पायब-क्रि., प्राप्त करब । प्रयोग-"सपनहु नहि पायब सखि हे हमर उदेश ।" मै.

पायल-सं., पैरक गहना, पैंरी । हि. तत्सम

पायस-सं., खीर, दूध मे रान्हल भोज्य । सं तत्सम

पाया-सं., कोठा आ मकानक ईंटाक जोड़ल खम्भा । मै.

पार्वण-सं., विशेष अवसर पर पितर सभक विशेष उपासना । सं. तत्सम

पार्वती-सं., देवी गौरी, शिवपत्नी । सं. तत्सम

पार-सं., १. दोसर तट, किनार । २. उद्धार । ३. खेप । मै.

पार उतरब-क्रि., उद्धार होएब, कष्ट आ चिन्ता सँ मुक्त होएब । मै.

पार करब-क्रि., चुपचाप वस्तु केँ गुम करब । मै.

पारघाटी-सं., पानि केँ जेना तेना पार करैवाला स्थान । मै.

पार लागब-क्रि., काज सम्पन्न होएब, सामर्थ्यक अधीन रहब । मै.

पारस-सं., १. परसल भोजन । २. पारसमणि । मै.

पारा-सं., पारद, चमकदार भारी बढ़ै घटैवाला द्रव । मै.

पारापारी-सं., अव्यय, समय बान्हि कय बेराबेरी । मै.

पाराबटन-सं., समतल करैवाला पारावाला काठक पट्टी । मै.

पारावार-सं., (लाक्षणिक) समुद्र, बिना ओर छोर। प्रयोग-"की कहू हमरा तँ दुखक पारवार ने रहल" । सं. तत्सम

पारी-सं., १. खेप, काजक बाँटल बेर । २. मैथुनक हेतु महिस पर महिसाक चढ़ैक खेप । मै.

पाल-सं., नाओ चलबैक हेतु नाओ पर पसारिकय टाङल मोट कपड़ा । मै.

पालक-विशे., १. पालन करैवाला । २. सं., साग विशेष । मै.

पालकी-सं., छोट महफासन खुजल आ कहार सँ उठबैवाला सवारी । पाल्यङ्की । मै.

पाल खाएब-क्रि., मैथुन सँ माल जालक गर्भधारण करब । मै.

पालट-सं., एकै घर मे वर कनियाँक वा कोनो वस्तुक बदला बदली । मै.

पालतू-विशे., पालित होमवाला, पालै योग्य । मै.

पालन-सं., भोजन छाजन आदि सँ रक्षा करैक व्यवस्था । जीवन निर्वाह । सं. तत्सम

पालपाल कय पाएब-क्रि., बहुत दिन आश प्रयल वा चाहल अप्राप्य वस्तुक अनायास प्राप्त कय अत्यधिक प्रसन्न भ' जाएब । मै.

पालब-क्रि., जीवन निर्वाह करब । मै.

पाला-सं., १. शीत, ओस, प्रालेय, शीतलहरी । २. दोकानदारक अन्न संग्रह । मै.

पालि-सं., सन्तान, वंशक गति । मै.

पालित-विशे., जीवननिर्वाह कयल । सं. तत्सम

पालिस-सं., कोनो वस्तु पर देल लेप । अं. तत्सम

पाली-सं., अपन बस्तीक पास परोसक गामक समूह, एक संस्कृतिवाला समाज । मै.

पालो-सं., युग काष्ठ, हर जोतै मे बड़दक कान्ह पर रहैवाला हरवाहक अंग । मै.

पावक-सं., आगि । सं. तत्सम

पाश-सं., फन्दावाला डोरी । सं. तत्सम

पाशविकता-सं., पशुक आचरणवाला गुण । सं. तत्सम

पास-सं., कुड़हरि कोदारि आदि अस्त्र मे बेंट पैस-बैक गोलाकार छेद । मै.

पास-विशे., परीक्षा मे जाँचल योग्य । अं. तद्भव

पास-अव्यय, निकट, प्रयोग-"के पतिया लय जाएत हे मोर प्रियतम पास ।" मै.

पास होएब-क्रि., १. उत्तीर्ण होएब । २. निकलि जाएब । हि. तद्भव

पासङ्ग-सं., तराजूक पलड़ा मे असमानता । मै.

पासनि-सं., लकड़ी मे सक्कत कय कील ठोकैक लेल कोदारिक पास जकाँ छेदक विधान । मै.

पासब-क्रि., लकड़ीक छेद मे सक्कत कय कील ठोकब । मै.

पासा-सं., जूआ खेलाइक कृत्रिम गुल्ली । मै.

पासा खेलाएब-क्रि., (लाक्षणिक) जूआ खेलाइक जकाँ अपन भाग्य अजमबइक चेष्टा करब । मै.

पासा फेंकब-क्रि., (लाक्षणिक) सफलता असफलता हुनु अवधारिकय प्रयास करब । मै.

पासि-सं., खाट वा चौकीक चारू कातक सक्कत लकड़ीक डण्टा । मै.

पासी-सं., ताड़ी चुआ कय व्यवसाय करैक जाति । मै.

पाहन-सं., पाषाण, पाथर । मै.

पाहि-सं., खेत मे रोपैक आ कटैक सोझ आगूक क्षेत्र । मै.

पाहि लागब-क्रि., खेतक ऐ आरि सँ ओहि आरि धरि अपन छानल क्षेत्र समाप्त होएब । मै.

पाही पट्टी-विशे., आन गाम रहनिहार भूस्वामी। मै.

पाहुन-विशे., अभ्यागत तथा जमाय बहिनो। मै.

पाहुन परक-विशे., अतिथि अभ्यागत। मै.

पाहुर पढ़ब-क्रि., सुगरक बच्चाक बलि देब। मै.

पि

पिअ-विशे., प्रिय, प्रणयी, पति। मै.

पिआएब-क्रि., पान कराएब। मै.

पिआक-विशे., अधिक मद्य पिबैवाला। मै.

पिआस-सं., पानि पीबैक प्रबल इच्छा, पिपासा। मै.

पिक्की-सं., जोर सँ सोर करैक ध्वनि। मै.

पिक-सं., कोकिल, पपीहा, मधुर ध्वनिवाला पक्षी। सं. तत्सम

पिकदानी-सं., मुह सँ पानक रस फेंकैक द्रव्यक बासन। मै.

पिच्च-सं., आँखि मे लगबैक पिचला सँ बहराइवाला अंग्रेजी औषध। मै.

पिच्ची-सं., आँखि मे बहराएल आँखिक विकार स्वरूप मल। मै.

पिच्छड़-विशे., पैरक स्वतः ससरैवाला स्थान। मै.

पिचक-सं., १. स्वतः धँसैक वा सिकुड़ि जाइक क्रम। २. मलमार्ग सँ कनेक अकस्मात् मलक निर्गम। मै.

पिचकब-क्रि., १. मलमार्ग सँ स्वतः अकस्मात् मलक बहरा जाएब। २. दबब, सिकुड़ब। मै.

पिचकलहा-विशे., १. सिकुड़ि कय धँसलवाला। २. मलमार्ग सँ कनेक स्वतः बहराएल मलवाला। मै.

पिचकाह-विशे., १. दबि कय धँसिकय सिकुड़ि जाइवाला। २. कनेक मलक स्वतः बहार भ' जाइवाला नेना। मै.

पिचकारी-सं., फुहारा जकाँ दबला सँ वा जोर देला सँ जल छोड़ैवाला यन्त्र। मै.

पिचरा-विशे., बिना विखण्डित भेल चूरल। मै.

पिचरा पिचरा-विशे., दाबल गेने बिना विभक्त भेल चूर्ण भ' क' पसरल। मै.

पिचाएब-क्रि., दबिकय चूरल भ' जाएब। मै.

पिचाठ-सं., पिचला सँ उत्पन्न विकलता। मै.

पिचाहट-सं., पीचल गेने भयंकरता। मै.

पिचाश-सं., पिशाच। मै.

पिछड़ब-क्रि., १. स्वतः वा विवश भ' क' पैर सँ ससरि जाएब। २. (लाक्षणिक) अवसर चूकि जाएब। मै.

पिछड़लहा-विशे., पिछड़लवाला। मै.

पिछड़ा-सं., १. पिछड़ैवाला स्थान। २. सभ्यता संस्कृति सँ हीन पिछड़ा वर्ग। मै.

पिछड़ाह-विशे., पिछड़ैक योग्य। मै.

पिजबैया-विशे., धारदार वस्तु कें तेज करबैवाला। मै.

पिंजर-सं., चारू कात सँ हड्डीक छड़ सँ बन्न कयल छाती आ पांजरवाला अंग। मै.

पिंजड़ा-सं., चारू कात सँ लोहक छड़ सँ बन्न कयल वस्तु। पशु पक्षीक स्थान। मै.

पिजाएब-क्रि., अस्त्र कें तेज करब। मै.

पिजाठ-सं., अस्त्र पिजबैक आधार पर बनल चिह्न। मै.

पिजुआएब-क्रि., घाओ पर विकार भरि जाएब। मै.

पिजुआह-विशे., पीजु (विकार) भरल घाओ। मै.

पिजौनिहार-विशे., अस्त्र कें तेज करैवाला। मै.

पिट्ठा-सं., चिक्कसक गोल मोल आ चापट कय बनाओल प्रसाद। मै.

पिट्ठा पहलवान-विशे., मोट डाँट हड़गर कठगर। मै.

पिट्ठी-सं., चिक्कसक गोल मोट मसाला भरल पकाओल खाद्य पदार्थ। मै.

पिट्ठू-विशे., पक्षपात करैवाला, पाट ध' क' विरोध करैक उत्साह बढ़बैवाला। मै.

पिटना-सं., पीटैक, ठोकैक आ मारैक साधन। मै.

पिटपिट करब-क्रि., आनक विरोधक काज मे व्यर्थ अपन बहादुरी देखाएब। मै.

पिटबाएब-क्रि., अनका सँ मारि खोआएब। मै.

पिटाइ-सं., मारि पड़ैक स्थिति आ क्रम। मै.

पिटाएब-क्रि., मारि खाएब। (लाक्षणिक) क्षति मे पड़ि जाएब। मै.

पिटान-सं., पीटैक भयंकरता एवं क्रम। मै.

पिढुआ-विशे., पीढि (ठोकि) क' बनाओल धातुक आसन। मै.

पिठकट-विशे., पीठ (खोईंचा) दियक गुदाक बनल तरकारी। (कटहर, कदीमा आदिक) मै.

पिठपोहक-विशे., पृष्ठ पोषक, सहायक। मै.

पिठबन-सं., वनस्पति विशेष। मै.

पिठबा-विशे., चाकर चौरस मोट डाँट। मै.

पिठममोड़-सं., पीठें परक बेहार। मै.

पिठराइन-विशे., पिठारक स्वादवाला, पिठार लागल। मै.

पिठार-सं., अरवा चाउरक पानिक संग पिसान। मै.

पिठारी-सं., अत्यन्त छोट नेन्नाक इन्द्रियक विकार। मै.

पिठियाएल-क्रि., पाछू लागल दौड़ब आ जाएब। मै.

पिठियाघाओ-सं., पीठ परक अनदेखक घाओ। मै.

पिठियाठोक-सं., पाछूए लागल जाइक आ बेहारैक कम। मै.

पिठिया पीठ-विशे., थोड़ अन्तर मे एकक उपरान्त एक। मै.

पिड़ाएब-क्रि., पीड़ा देब तथा पीड़ित होएब। मै.

पिड़ार-सं., पैघ फल आ फूलवाला वृक्ष। मै.

पिड़िया-सं., छोटसन पीढ़ी (चबूतरा)। मै.

पिड़ौआ-विशे., पीड़ा दैवाला। मै.

पिढ़िया-सं., चेपासन चाकर आ छोट पीढ़ी। मै.

पिण्ड-सं., श्राद्ध मे पितर कें उत्सर्ग करैक लेल अन्नक बनाओल गोलाकार वस्तु। सं. तत्सम

पिण्डा-सं., १. ग्राम्य भाषा मे पिण्ड। २. ऊँच कय बनाओल चबूतरा। मै.

पिण्डखजूर-सं., छहोरा। सं. तद्भव

पिण्डली-सं., शरीरक जोड़ एवम् कील परक चक तथा विशेष अंगक मांस गुठरी। सं. तत्सम

पिण्डश्याम-विशे., थोड़ेक कारी शरीरक रंगवाला। सं. तत्सम

पित्त-सं., शरीर धारण करबैवाला आग्नेय तत्वक शरीरक विशेष तत्व। त्रिदोष मे एक दोष तथा ओकर कोशिका। सं. तत्सम

पित्तरि-सं., पीयर रंगक एक धातु। मै.

पित्ती-विशे., पिताक छोट आ पैघ भाइ, काका। पितृव्य। मै.

पितमरू-विशे., तामस कें दबा दैक स्वभाववाला, क्रोधहीन। मै.

पितर-सं., मुइल पुरुखा। सं. तद्भव

पितरपच्छ-सं., एक पक्ष भरिक पितरक निमित्त खोजर्वक पर्व। आश्विन कृष्ण पक्ष। मै.

पितराइन-विशे., १. पित्तरिक विकृत स्वादवाला। २. मुइल स्त्री सम्बन्धी। मै.

पितराह-विशे., पित्तरिक विकारयुक्त। मै.

पितरिया-विशे., पित्तरि धातुक बनल वर्तन। मै.

पिता-विशे., एवं सं., जन्मदाता, बाप। सं. तत्सम

पिताएब-क्रि., मनक व्याकुल होएब, तप्त होएब आ तमसाएब। मै.

पितौंट-विशे., भूख पिआसक संग परिश्रमक द्वारें पित्त बढ़ने विकृत मन। मै.

पितामह-विशे., पिताक पिता। सं. तत्सम

पिताह-विशे., १. पित्तक विकारवाला। २. तम-साह। मै.

पितिआइन-विशे., काकी। पित्तीक पत्नी। मै.

पितिऔत-विशे., पित्तीक पुत्रक सम्बन्धें भाइ वा बहिन। मै.

पितियौताक पितिऔत-विशे., बापैक पितियौत भाइक पुत्र। मै.

पितौंजिया/पितौंहिया-सं., एक वनस्पति विशेष। मै.

पितौंटनि-सं., भूख पिआस सें मनक व्याकुलताक बीच परिश्रम। मै.

पिनकब-क्रि., एकाएक तामस मे आबि जाएब। मै.

पिनकाएब-क्रि., हठात् क्रोध जगा देब। मै.

पिनकाह-विशे., एकाएक खिसिया उठैवाला। मै.

पिनकी-विशे., अचानक बिगड़ैक स्वभाववाला। मै.

पिनाक-सं., महादेवक धनुष। सं. तत्सम

पिप्पड़-सं., बड़का देववृक्ष विशेष। मै.

पिप्परि-सं., औषध विशेष। मै.

पिपनी-सं., आँखिक पलक केश। मै.

पिपरपत्ता-सं., पिपड़क पातसन कानक गहना। मै.

पिपरमिन्ट-सं., कर्पूरसन स्वच्छ स्वादिष्ट आ सुग-न्धित द्रव्य विशेष। मै.

पिपरा-सं., रब्बी फसिलक संग उपजैवाला अखाद्य दाना, मसुरीक आकार प्रकारवाला। मै.

पिपरी-सं., मेहीं कीट चुट्टी । मै.

पिपरीटा-सं., पिपड़क छाल आ जमानि आदि औष-धक द्वारा बनाओल परसौतीक पानि । मै.

पिपहिया-विशे., पिपही बजबैवाला बजनियाँ । मै.

पिपही-सं., १. सुर्दक बाजनक एक बसुरी जकाँ बजबैवाला बाजन विशेष । २. आमक आँठी सँ बहराएल अंकुर । मै.

पिपासा-सं., पिआस । सं. तत्सम

पिपियाएब-क्रि., कोनो वस्तु सँ बारम्बार बेसुरा ध्वनि बहार करब । मै.

पिपीलिका-सं., चुट्टी पिपरी । मै.

पियक्कड़-विशे., अधिक ताड़ी दारु पिबैवाला । मै.

पिया-विशे., प्रिय स्वामी । मै.

पियासल-विशे., पानि पीबैक इच्छा सँ आतुर । मै.

पियोरी-सं., पशाहुनि मे पीयर रंगक खड़ी । मै.

पिरीत-सं., प्रीति । विशे., प्रीत । सं. तद्भव

पिरुकिया-सं., बीच मे मीठ कूटि द' क' मड़ल पक-वान विशेष । मै.

पिरोअब-क्रि., मालाक हेतु दानाक छेद मे ताग के सन्हिया कय माला गाँथब । हि. तद्भव

पिरौछ-विशे., पीयर रंगक छविवाला, पीयर जकाँ लगैवाला । मै.

पिल्ला-सं., कुत्ताक पुरुष बच्चा । स्त्री० पिल्ली । मै.

पिल्लू-सं., बिना प्रभाखावाला पिनाओन स्थल मे रहैवाला ससरैवाला जीव । मै.

पिल्ही-सं., पेटक बामा कात रहैवाला रक्त कोशिका आ रक्त ग्रन्थि । बढ़ि गेने रोगक रूपवाला । सं. तद्भव

पिल्ही चमकब-क्रि., (लाक्षणिक) आदङ्क संग चौंकब । मै.

पिल्ही कटाएब-क्रि., (लाक्षणिक) सतत अत्यन्त खिन्न जकाँ रहब । मै.

पिलपिलाह-विशे., अत्यन्त दुर्बल कांतिवाला । मै.

पिलब-क्रि., घुच्चा (खाधि) मे गोटी वा गोली लागब । मै.

पिलाएब-क्रि., घुच्चा मे गोटी लगाएब । मै.

पिलाओ-सं., पिलबैक अभ्यास । मै.

पिलाठ-सं., ठोकैक समकात वस्तु कील काँटी आदि । मै.

पिलान-सं., घुच्चा मे गोली लगबैक क्रम । मै.

पिलास-सं., चुट्टा जकाँ पकड़िकय खींचि तोड़ैवाला अस्त्र विशेष । मै.

पिलिया-सं., कुतिया । मै.

पिलुआ-सं., पिल्लू, कीड़ा । मै.

पिलुआह-विशे., पीलु भरल । मै.

पिलुआहा-विशे., पीलु होम'वाला, पीलु उत्पन्न करै-वाला । मै.

पिशाच-सं., शरीरहीन उपद्रावी देवयोनि । सं. तत्सम

पिशुन-विशे., चुगलखोर, दुष्ट । सं. तत्सम

पिष्टपेषण-सं., (लाक्षणिक) बुझले बातक दुहो-अलि । सं. तत्सम

पिस्ता-सं., मेवा विशेष । मै.

पिसनियाँ/पिसनिहारि-विशे., पीसैक काज करै-वाली । मै.

पिसाओन-सं., पीसैक पारिश्रमिक । मै.

पिसान-सं., १. मेहीं बुकनी । २. पीसैक क्रम । मै.

पिसिआ-सं., पीसैक दीर्घकालक कार्यक्रम । मै.

पिसिया-विशे., दीदी, बापक बहिन । मै.

पिसियौत-विशे., पिसियाक पुत्र होइक सम्बन्धे भाइ सम्बन्धी । मै.

पिसीमाल-विशे., पीसल जकाँ बनाओल । मै.

पिसुआ-विशे., पीसि कय प्रस्तुत कयल । मै.

पिसू !-अव्यय, बिलाइ कें सोर करैक शब्द । मै.

पिहकारी-सं., निन्दाक रूप मे विकृत शब्द । मै.

पिहना-सं., कोठीक उपरक मुनना । मै.

पीह पाह मचब-क्रि., आनन्द आ उल्लासक शब्द होएब । मै.

पिहानी-सं., कथा, देहाती खिस्सा । मै.

पिहुआ-सं., १. जल पक्षी । २. जनमौटी बच्चा कें पिअबैक हेतु बनाओल तुरक बत्ती । ३. (लाक्ष-णिक) अत्यन्त छोट निधुं बच्चा । मै.

पी

पी-विशे., प्रियतम, प्रणयी, प्रेमी । (स्त्रीक हेतु) । मै.

पीक-सं., मुहँ मे बनल पानक रस । मै.

पीचनि-सं., भारी वस्तु सँ दाबि कय चूरैक क्रम। मै.

पीचब-क्रि., कोनो वस्तु कें भारी वस्तु सँ दाबिकय चूरिकय नष्ट करब, तोड़ब। मै.

पीछू-अव्यय, प्रत्येक। प्रयोग—"घर पीछू एक एक रूपैया कय बेहरी लागत।" मै.

पीजु-सं., घाओक द्रवित विकार। मै.

पीटनि-सं., ठोकैक तथा सक्कत कय बैसबैक आ मारैक प्रक्रिया। मै.

पीटब-क्रि., १. कोठा बान्हि ऊपर ठोस छत बनाएब। २. कोनो सक्कत वस्तु सँ ढील माटि आदि कें ठोकि सक्कत करब। उलाड़न देब। मै.

पीटा पीटी-सं., १. परस्पर मारैक क्रम। २. ठोकैक लगातार कार्यक्रम। मै.

पीठ-सं., १. देहक पाछूक अर्थात् छाती आ पेटक विपरीत दिशाक सपाट अंग। २. देवताक आवाहनक प्रसिद्ध स्थान। (सं. तत्सम) ३. पत्रक दूनू भाग। मै.

पीठ देखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) पड़ाएब। मै.

पीठापीठी-विशे., क्रम लागल। एकक उपरान्त दोसर। प्रयोग—"लल्लू आ गल्लू पीठापीठी सहोदरे थिका।" मै.

पीठू-विशे., देखू—"पिट्ठू"। मै.

पीड़ा-सं., व्यथा, आन्तरिक दुःख। सं. तत्सम

पीँड़ा-सं., ऊँच कयल पूजा आदिक पवित्र स्थान, चबूतरा। प्रयोग—"आङन मे कुलवधू कें सब दिन तुलसी पीँड़ा नीपैक चाही।" मै.

पीँड़ी-सं., छोट ऊँच कयल पूजनीय स्थान। प्रयोग—"कोन घर मे गोसाउनिक पीँड़ी नहि रहैत अछि।" मै.

पीढ़ा-सं., छोट सन बैसैक निमित्त बनल तख्ती। मै.

पीढ़ी-सं., व्यवस्थित जकाँ बैसैक हेतु नाम चाकर एकजनिया तख्ताक बनल वस्तु। काष्ठ पीठिका। मै.

पीताम्बरी-सं., पीयर रंगक रेशमी वस्त्र। कृष्णक प्रसिद्ध वस्त्र। मै.

पीनी-सं., चिलम हुक्का सँ धूम्रपानक हेतु तमाकू सँ बनाओल मसाला। मै.

पीपड़-सं., बड़का वृक्ष विशेष। पिप्पड़। मै.

पीपा-सं., नाम आ गोल बासन। मै.

पीब-क्रि., १. भविष्यत् कालक पीबैक क्रिया। २. पीजु। मै.

पीयब-क्रि., पान करब। मै.

पीयर-सं., एवं विशे., हरदिक रंग वा रंगवाला। मै.

पीयर हूसि-विशे., अत्यन्त पीयर रंगवाला। मै.

पीर-सं., बाड़ (तूर) कें तूनिकय सोझ नाम तहियाओल टकुरी कटै जोग तूर। मै.

पीरा-विशे., पीयर रंगवाला। मै.

पीरी-सं., पीयर रंगक छवि। पीयरपना। मै.

पीलिया-सं., कमला रोग। मै.

पीलु/पीलू-सं., देखू—"पिल्लू"। मै.

पीसब-क्रि., कण कण मेंही करब, गर्दी बनाएब। मै.

पीसी-विशे., बापक बहिन। पु० पीसा। मै.

पु

पुईं पुईं-अव्यय, खेल मे मारैक ध्वनि। प्रयोग—"मार गदा पुईं पुईं।" मै.

पुक्की-सं., सोर करैक काल जोर सँ पू कहैत सोर करैक ध्वनि। मै.

पुक्की पाड़ब-क्रि., जोर सँ पू कहैक संग सोर करब। मै.

पुक्ख-सं., पुष्य नक्षत्र। प्रयोग—"पुक्ख नै राखए रुक्ख।" लोकोक्ति। सं. तद्भव/मै.

पुकार-सं., सोर करैक आह्वान करैक शब्द वा संकेत। मै.

पुकारब-क्रि., जोर शब्दे अथवा इशारा सँ ककरो सोर करब। मै.

पुख-सं., देखू—"पुक्ख"। मै.

पुगब-क्रि., अवधि अथवा सीमा पर पहुँचब, समाप्ति पर क्रियाक पहुँचि जाएब। मै.

पुगाएब-क्रि., पवित्र कराएब। लक्ष्य पर पहुँचाएब। मै.

पुच्छ-सं., नाङरि। सं. तत्सम

पुच्छक-सं., नमहर लटकल कोनो वस्तु। मै.

पुच्छलतारा-सं., पुच्छ जकाँ नमहर ज्योतिवाला तारा। मै.

पुच्छी-सं., माछक नाङरि दिशुक अंग (कुटिया)। मै.

पुचकारब-क्रि., अकृत्रिम स्नेह सँ दुलारब। मै.

पुछड़ी-सं., छोट सन नाङरि। मै.

पुछनिहार-विशे., पुछैवाला। मै.

पुछारि/पुछारी-सं., सरोसा, जिज्ञासा, कुशल वार्ताक ज्ञान। मै.

पुछारी भार-सं., कन्या वरक कुशल वार्ताक ज्ञान करैले भार देबाक विधि। मै.

पुछैवाला-विशे., १. (लाक्षणिक) स्नेह सँ कुशल वार्ताक ज्ञान रखैक विचारवाला। २. प्रश्न करैवाला। मै.

पुजाएब-क्रि., १. पूजा कराएब। २. विशिष्टताक कारणेँ लोक सँ अपन सम्मान कराएब। मै.

पुजेगरी-विशे., १. अधिक पूजा करैक स्वभाववाला। २. कोनो देवताक स्थानक पूजा कयनिहार। मै.

पुञ्ज-सं., एकत्र राशि, ढेरी। सं. तत्सम

पुट्ठा-सं., नितम्बक उपरका अंग। मै.

पुट देब-क्रि. गपक शेष अंश केँ पूर्ण करब। मै.

पुठिल-विशे., उपर नीचाँ दुहु दिश सँ बन्न। मै.

पुठ्पुरी-सं., आँखि आ कानक बीचक अंग। मै.

पुड़पुड़ करब-क्रि., बरक खेल नीचाँ देने ध्वनिक संग बसात छोड़ब। मै.

पुड़पुड़ाएब-क्रि., बारम्बार पदैक शब्द करब। मै.

पुड़पुड़ी-सं., मुह सँ फेनक संग शब्द। मै.

पुड़िया-सं., कागज केँ मोड़िकय वस्तु केँ बन्न करैक ढंग। मै.

पुण्य-सं., सत्कर्म। सं. तत्सम

पुण्याह वाचन-सं., उद्यापन आदि यज्ञ सभक पहिने सद्ब्राह्मणक द्वारा पुण्याह कहबैक विधि। अर्थात् ब्राह्मणक द्वारा कर्मक आज्ञा। सं. तत्सम

पुत्ता-सं., चुल्हा मे उपर देल तीन वा चारिटा माटिक बनाओल वर्तन अलगा रखैवाला साधन। मै.

पुत्ती-सं., मकआ आदि अन्नक दाना झारलाक उपरान्त दानाक उपरवाला मेंही पत्ती। मै.

पुतखौकी-विशे., १. एक प्रकारक सराप भरल गारि। २. अपने बच्चा केँ अपने खेनिहार जीव। मै.

पुतरा-सं., कपड़ा आदि सँ बनाओल मनुष्यक आकारवाला खेलौना। मै.

पुतरी-सं., स्त्रीक आकारवाला कपड़ाक रचित खेलौना। मै.

पुतोहु-विशे., पुत्रवधू, बेटाक गृहिणी। मै.

पुदीना-सं., स्वादिष्ट सुगन्धित छोट पातवाला लतीक रूपक जड़ी औषध विशेष। मै.

पुन्याह-सं., जमीन्दारीक लगान (कर) संग्रह करैक शुभारम्भ। मै.

पुन-सं., देखु—"पुण्य"। मै.

पुनर्वसु-सं., नक्षत्रक नाम। मै.

पुनानव-सं., पुनर्नवा। साग। मै.

पुनि-अव्यय, फेर, पुनः। सं. तत्सम

पुनीत-विशे., पवित्र, पुण्य फल देम'वाला। मै.

पुबरिया-विशे., पूब दिशाक घर। मै.

पुबहा-विशे., पूब दिशाक रहैवाला। मै.

पुबाहुत-विशे., लर्न मे पूबदिश दबल। मै.

पुबारि-विशे., पूब दिश रहैवाला। मै.

पुमुँक-सं., दुष्टता भरल साहस। मै.

पुर्जा-सं., कागजक टुकड़ी, लिखित टुकड़ा। मै.

पुर्जी-सं., आलेखवाला कागजक खण्ड। मै.

पुर्जा पुर्जा उड़ब-क्रि., कागजक टुकड़ी जकर टुकड़ा टुकड़ा होएब। मै.

पुर्जा काढब-क्रि., प्रमाणक लेख बाँटब। मै.

पुर्निमा-सं., पूर्ण चन्द्रक राति। पूर्णिमा। सं. तद्भव

पुर्री पाड़ब-क्रि., १. मुह सँ फेन सहित शब्द करब। २. मूर्ख बनबैक हेतु अनादर मे विकृत शब्द करब। मै.

पुर्वातार्इ-सं., सामना सामनी देखाक स्पष्टीकरण। समक्ष मे अभियोगक प्रमाणीकरण। मै.

पुर-सं., नगर। सं. तत्सम

पुरखा-विशे., वर्तमान व्यक्तिक पहिलुक पुरुष। मै.

पुरखाह-विशे., प्रौढ़, निर्भीक, ढीठ। मै.

पुरखाही-विशे., १. पुरुषक करैक योग्य। २. पुरुषक गुण आ चिह्नवाला। ३. पुरुष जकाँ करैवाली स्त्री। मै.

पुरखिन-विशे., पुरुषक शौर्य, गुण आ चेष्टा भरलि स्त्री। मै.

पुरबरा-विशे., पुष्ट अथवा पूर्ण रूपक। मै.

पुरना-विशे., अधिक दिनवाला, पुरान भेल। मै.
पुरनाएब-क्रि., पुरान बनि जाएब। मै.
पुरब-क्रि., पहुँचब, व्यवस्थाक अनुसार चलब। प्रयोग–"नोत पुरब, आइ ममियौतक ओतं उपनयनक नोत अछि। हम अपन कर्तव्य पुरै छी।" मै.
पुरब-सं., पूर्व फल्गुनी नक्षत्र। सं. तद्भव
पुरश्चरण-सं., कामना सँ देवताक उपासना। सं. तत्सम
पुरहर-सं., शुभ काजक अवसर पर रंगल शुभसूचक चित्रकारीवाला घैल। मै.
पुरहित-विशे., कोनो कर्म पूजा पाठ आ मन्त्रोच्चारण करवैवाला पंडित। सं. तद्भव
पुरहिताइ-सं., पुरोहिती। पुरहितक काज। मै.
पुरहिया-विशे., वर्षे वर्षे गर्भ रखैवाली गाय एवं महिस। मै.
पुराएब-क्रि., आपूर्ति करब, पूर्ण बनाएब, भरैत रहब। मै.
पुराओन-विशे., घटल बढ़ल कें पुरबैवाला वस्तु। मै.
पुराण-सं., धार्मिक प्राचीन कथा निबन्ध। सं. तत्सम
पुरान-विशे., अधिक दिनक भेला सँ जर्जर। मै.
पुरि जाएब-क्रि., पूर्णता पाबि जाएब, जतबेक ततबेक मे सन्तुष्टि होएब। मै.
पुरिबा-विशे., पूव दिशक बसात। मै.
पुरी-सं., विशेष नगर, शहर। सं. तत्सम
पुरुष-सं., नर जाति अर्थात् पुलिङ्ग। सं. तत्सम
पुरैन-सं., जन्मक काल बच्चाक शरीर सँ लागल गर्भक जरायु। मै.
पुरैनि-सं., १. कमल फूलक गाछक पानि पर पसरल पात। २. घरक चारक छहनिक नीचाँ गोल पुरैनिक पातसन पसारल खड़। मै.
पुरौत-विशे., घटल कें पुरबैक हेतुक वस्तु। मै.
पुरोहित-विशे., देखू—"पुरहित"। मै.
पुरौना-विशे., संख्या पुरबैवाला। मै.
पुल्ला-सं., लम्बा आ पातर बान्हल आँटी। छोट पुल्ली। मै.
पुल-सं., नदी, नाली टपैक हेतु उपर सँ बनाओल सेतु, मुसाएल बाट। मै.
पुलक-सं., रोमाञ्च, देहक भुलकन। सं. तत्सम
पुलकब-क्रि, पुलकित होएब। सं. तद्भव
पुलिया-सं., १. छोट छोट पुल्ली। २. छोटका पुल। मै.
पुलिस-सं., आरक्षी वर्ग। अं. तत्सम
पुष्ट-विशे., भरल पुरल। सं. तत्सम
पुष्टाइ-सं., शरीर के पुष्ट करैवाला पदार्थ। मै.
पुष्टि-सं., भरब। पूर्णता। सं. तत्सम
पुष्प-सं., फूल। सं. तत्सम
पुष्पांजलि-सं., देवताक आराधनाक एक अंग। सं. तत्सम
पुष्पित-विशे., फुलाएल, विकसित। सं. तत्सम
पुष्य-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम
पुस्त-सं., वंश परम्परा। उ. तत्सम
पुस्तक-सं., पोथी। सं. तत्सम
पुस्त पुस्तानि-अव्यय, दूर वंशपरम्पराधरि। मै.
पुस्ता-सं., घर लागल घरक आगू बिना छतवाला चबूतरा। उ. तत्सम
पुस्तिका-सं, छोट आ पातर पोथी। सं. तत्सम
पुस्तैनी-विशे., कुल परम्परागत। उ. तत्सम
पुसबगिया-सं., पुस मासक विशिष्ट भोजन बगिया। मै.
पुसिया-विशे., पुस मास मे होइवाला। मै.
पुसौठ-सं., नव बच्चा के बगिया लं क' पुस मे देरैक मनोरञ्जन। मै.

पू

पू-सं., थोड़ घी मे गील चिक्कन कें पसारि कय पकाओल मधुर पकवान। मै.
पूऽऽऽः-अव्यय, सोर कयला उत्तर सम्बोधित व्यक्तिक अपन साकांक्षताक द्योतना तथा साकांक्ष करैक शब्द। मै.
पूआ-सं., आँटा मैदा मे विशेष वस्तु मसाला दय छानल पकवान। मै.
पूंगीफल-सं., सुपारी। सं. तत्सम
पूछ-सं., प्रश्न करैक उपक्रम। (लाक्षणिक) लोकक बीच मान्यता। मै.
पूँछ-सं., नमहर नाड़रि। मै.
पूछताछ-सं., पूछि कय जानकारी लैक चेष्टा। मै.
पूछब-क्रि., १. प्रश्न करब। २. (लाक्षणिक) आवेश करब। मै.

पूछापूछी-सं., कोनो विषय पर सब सँ अथवा दुहू पक्ष सँ पूछैक आवश्यक। मै.

पूजक-विशे., पूजा कयनिहार। सं. तत्सम

पूजन-सं., पूजा करैक कम। सं. तद्भव

पूजब-क्रि., पूजा अर्थात् आत्मसमर्पणक विधि। देवताक आराधना करब। मै.

पूजा-सं., आराधना कय देवताक आगू अपन उत्सर्ग सं. तत्सम

पूजापाठ-सं., देवताक बृहत् प्रक्रिया सँ उपासनाक संग वचन सँ आराधनाक कम। मै.

पुँजी-सं., कोनो व्यापार मे लागल वा लगैवाला धनराशि। लागत, लगता। मै.

पूठ-सं., पोन (नितम्ब) क दुनू कातवाला अंग। मै.

पूड़ा-सं., १. नाकक दुनू कातक रन्ध्र (भुर)। २. पात कें मोड़ि गाँथल कटोरी। मै.

पूड़ी-सं., १. धातुक अत्यन्त छोट कटोरी। पुटिका। चन्दन आदि रखैक बासन। २. दालिक फूटि दय कें बनाओल सोहारी सन पकवान। मै.

पूत-विशे., पुत्र। सं. तद्भव

पून-सं., पुण्य, सत्कर्म। सं. तद्भव

पूब-सं., पूर्व दिशा। स. तद्भव

पूबअर-अव्यय, पूब दिशाक स्थान मे। मै.

पूबा-सं., १. माटिक बासन विशेष। विशे., पूब दिशाक लोक। मै.

पूबाद्वार-विशे., पूब दिश झुकल। मै.

पूभर-अव्यय, लगैक पूब दिशा मे। मै.

पूर्ण-विशे., भरल पूरल। सं. तत्सम

पूर्णिमा-सं., इजोरियाक पन्द्रहम तिथि, पूर्ण चन्द्र-वाली राति। सं. तत्सम

पूर्ति-सं., भरैक। पूर्ण करैक भाव। सं. तत्सम

पूर्व-अव्यय, पहिने। विशे., पहिलुक। सं., दिशा। सं. तत्सम

पूर्व फल्गुनी-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम

पूर्वभाद्र-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम

पूर्वाषाढ़-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम

पूर्वी-सं., रागिणी विशेष मै.

पूर-विशे., गुणक अधिकतावाला। प्रयोग—"ई अपने बड़ पूर छथि जे अनकर निन्दा करै छथि।" मै.

पूरक-विशे., पोषक, पूर्ति करैवाला। सं. तत्सम

पूरब-सं., देखू—"पूर्व"। सं. तद्भव

पूरमपूर-विशे., नापतौल मे समतुल। मै.

पूरा-विशे., पुष्ट, पूर्ण। मै.

पूराराल-विशे., तृप्तिक अनुकूल, अत्यन्त पूर्ण। मै.

पूरापूरी-विशे., अनुमान आ भविष्यवाणी। जोख तौल आ नापक अनुकूल। मै.

पूरे-अव्यय, पूर्ण अनुमानक अनुसार। मै.

पूला-सं., नदीक उपरक कृत्रिम स्थल मार्ग। मै.

पूस-सं., पौष, मास विशेष। मै.

पूसी-विशे., १. पूस मासवाला। २. अधिक दुलारू खिलाड़ि। मै.

पृ

पृथ्वी-सं., धरती। सं. तत्सम

पृथक्-अव्यय, अलग। सं. तत्सम

पृथा-सं., अर्जुनमाता। सं. तत्सम

पृथिवी-सं., धरती। सं. तत्सम

पृथुल-विशे., पैघ। सं. तत्सम

पृष्ठ-सं., पीठ, पाछू। पन्ना। स. तत्सम

पे

पेखब-क्रि., नीक जकाँ देखब। विचारपूर्वक दृष्टि देब। मै.

पेड़ना-सं., हरदम प्रेरणा करैक साधन। मै.

पेड़ब-क्रि., कोनो वस्तुक द्वारा प्रेरित करब। मै.

पेड़रा-सं., भारी वस्तु कें चलबैक डन्टा। मै.

पेड़ा-सं. प्रेरणा। मै.

पेड़िया-विशे., प्रेरित करैवाला। मै.

पेंच-सं., १. सक्कत सँ बैसबैक हेतु बनाओल गुना। २. प्रपञ्च। मै.

पेंचकस-सं., कोनो पेंच कें गुना पर बैसबैवाला यन्त्र। मै.

पेंचगर-विशे., १. गुनादार। २. प्रपञ्चवाला। मै.

पेंचा खेलाएब-क्रि., प्रपञ्च चलाएब। मै.

पेंचाह-विशे., १. पेंच भरल। २. प्रपञ्ची। ३. पेंच लागल। ४. प्रपञ्च भरल। मै.

पेंचिल-विशे., प्रपञ्च करै मे चतुर। मै.

पेंची-सं., ऐ नामक कन्दवाला तरकारी अल्आ। मै.

पेचुआ-विशे., पेंचवाला गहना आदि मे बनल कील। मै.

पेंचुल-विशे., प्रपञ्च द्वारा काज करैवाला। मै.

पेट-सं., देहक अंग विशेष, उदर। मै.

पेटकट-विशे., अनकर पेट भरैक अन्न मे कपचि लेनिहार। उचित परिमाण मे थोड़ कपनिहार। मै.

पेटकनाहि-विशे., सतत पेट भरैक लेल असन्तोष रखनिहारि। पेट नै भरैक हरदम दुखी। मै.

पेट कसब-क्रि., १. पेट कें कनिकय सम्हूने रहब। २. (लाक्षणिक) कनिकय खाएब। मै.

पेट काटब-क्रि., आनक भोजनक परिमाण मे सँ कम्मे भोजन देब। मै.

पेटकान देब-क्रि., दुख वा शोक प्रकट करै लेल पट (नीचाँ मुहें) पड़ल रहब। मै.

पेटकान मारब-क्रि., पेटक भरें विशेष स्थिति मे सूतैक चेष्टा करब। मै.

पेटकान लायब-क्रि., (लाक्षणिक) चुप्प रहें तामस वा रुष्टता सँ पेटक भरें सूतिकय मनक क्षोभ प्रकट करब। मै.

पेटकुनियाँ-सं., पेटक भरें सूतैक प्रकार। मै.

पेट कुलकुलाएब-क्रि., भूखक द्वारें पेटक अँतरी सँ ज्वाला उठब अर्थात् अत्यन्त भूख सँ व्याकुल होएब। मै.

पेट कुहाक-सं., अधिकतर पेटे भरै पर उपस्थित संकट। मै.

पेटगर-विशे., १. कोनो कृत्रिम वस्तुक बीचक अधिक वा उचित फाँक (अवकाश)। २. अधिक खय-निहार। मै.

पेट डेड़ाएब-क्रि., (लाक्षणिक) पेट भरैक कारणें सदति असन्तोष रखैत कलेशमे रहब। मै.

पेट दुखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) पातर दस्त होएब। निराल पानिसन मल उतरब। मै.

पेट पीटब-क्रि., (लाक्षणिक) उद्योग सँ बेसी प्रधा-नता पहिने पेटे भरैक भावना राखब। खाइक लेल उद्यत बनल रहब। मै.

पेट पोसब-क्रि., आनैक भरोसें अपन भरण पोषण करब। मै.

पेटफुल्ली-सं., अनपच सँ पेट फुलैक रोग। मै.

पेटबद्धी-सं., ऐ नामक गहना विशेष। मै.

पेट बान्हब-क्रि., भूख पियास रोकि क' तथा भूखल रहि क' काज करब। पातर दस्त रुकब। मै.

पेटबाहि-सं., (लाक्षणिक) पेट अधिक झरैक क्रम। मै.

पेटभरा-विशे., १. थोड़बहि सँ पेट भरि दैवाला। २. कोनो वस्तुक भीतर खाली स्थान कें भरि दै-वाला। मै.

पेटमरवा-विशे., (लाक्षणिक) खाइक लोभें सब ठाँ उपस्थित रहनिहार। मै.

पेटरा-सं., बड़का पेटी। मै.

पेटरागी-विशे., भंडारा सब मे पेट भरैले बनल बाबाजी (साधु)। मै.

पेटहा-विशे., पेट भरैक लोभ सँ सबठाँ अनेर खाइक चेष्टा रखनिहार। खाइक लोभी। मै.

पेट होयब-क्रि., गुप्त गर्भ रहब। मै.

पेटा-विशे., १. पेटी सब मे पैघ। २. बड़का पेट-वाला। मै.

पेटाइ-सं., पन्नीक बनाओल मसाल सँ उड़ैवाला गुब्बारा। मै.

पेटाड़ी-सं., कदहुरक को मे उपर सँ झारल समकत परत। मै.

पेटापेटी-विशे., (लाक्षणिक) चुप्प रहें एक दोसरक जानकारीवाला बात। मै.

पेटारा-सं., बाँसक कमनीक बनाओल बड़का झप्पा-वाला बासन। पेटरा। मै.

पेटारी-सं., हलसभू छोट पेटी वा बाँसक बीनल वस्तु रखैक बासन। मै.

पेटाह-विशे., खाइक लोभें सबठाँ बिन कारणो ढुकै-वाला। मै.

पेटी-सं., १. वस्तु सुरक्षित रखैक चदरा आदि सबकरा पदार्थक छोटका सन्दूकचा। २. बाँस आदि फाँकवा वस्तुक भीतरक गूड़ा। मै.

पेटू-विशे., खयपाक लोभी। खाइ पर भर देनिहार। मै.

पेठिया-सं., हाट, चलता (अस्थायी) बाजार। मै.

पेंड़-सं., गाछ। हि. तद्भव

पेड़न-सं., पीड़ाक परम्परा। मै.

पेड़ब-क्रि., पीड़ा देब। मै.

पेड़ा-सं., खोआ सँ बनल मधुर विशेष। मै.

पेड़िया-सं., पीड़ा देक बुद्धि। मै.

पेड़ाएब-क्रि., पीड़ित होएब। मै.

पेड़ुआ-विशे., पीड़ा देनिहार । मै.

पेन्ट-सं., पेंन्ट । अं. तद्भव

पेन्हन-सं., देह पर धरैक अनेक रूपक कपड़ा । मै.

पेन्हब-क्रि., पहिरब । मै.

पेन-सं., कोनो वासनक निचला भाग । मै.

पेनकट्टा-विशे., पेन काटिकय जोड़लवाला तथा पेन काटलवाला वासन । मै.

पेनड़-सं., पेना, हाथक पातर ठेंठा सँ ठोकर दैक प्रक्रिया । प्रेरणा देवाक चेष्टा । मै.

पेनब-क्रि., पेनाक हुर सँ बराबरि ठोकर देब । मै.

पेना-सं., मालजाल कें प्रेरित करैवाला आ हँकै-वाला बाँसक पट्ठीक छोट ठेंठा । मै.

पेनाठ-सं., पेनाक मारि तथा हुर सँ ठोकर । मै.

पेनिया-विशे., अनावश्यक संग लगनिहार जकर उत्तरदायित्वो रखैक पड़ए । मै.

पेनियाएब -क्रि., सुरक्षाक नरोँ संग लागब । मै.

पेनी-सं., कोनो वासनक भीतरी तरका अंग । मै.

पेनी छानब-क्रि., कोनो वस्तुक बनबैक, बीनैक आ गढ़ैक लेल आरम्भक पृष्ठभूमि (जड़ि) प्रस्तुत करब । मै.

पेंप-सं., पाइप, भीतर शून्य नली । अं. तद्भव

पेपच पड़ब-क्रि., १. पाल पानिक द्वारें पूषित लागब । २. कोनो वस्तुक अधिकताक कारणें उपे-क्षित रहब । मै.

पेंपी-सं., नव मूड़ी चलैक अंकुर । मै.

पें पें करब-क्रि., बेसूरा बाजाक शब्द बनब । मै.

पेमारा-सं., तेजी सँ बहराएल प्रवाह । मै.

पेमाल-विशे., नष्ट भ्रष्ट । मै.

पेय-विशे., पीबैवाला । मै.

पेरन-सं., निचोड़ि कय रस बहार कयला पर जमल विकार । मै.

पेरब-क्रि., कोनो वस्तु सँ दाबि कय रस निचोड़ब । मै.

पेराइ-सं., कुशियार सरिसो आदि निचुड़ैवाला वस्तुक रस निचोड़ैक लगातार क्रम । मै.

पेराएब-क्रि., अनका सँ रस वा तेल चुबबैक क्रिया करब । मै.

पेरा-सं., बाट, रास्ता । मै.

पेरू-सं., मूत्राशयवाला डाँड़ीक नीचाँवाला अंग । मै.

पेल-सं., जन प्रवाह, मेला । मै.

पेलता-सं., भारी वस्तु के चलबैवाला बाँसक टोना । मै.

पेलना-विशे., लकड़ी आदि भारी वस्तु कें घुसक-बैवाला टोंटा । मै.

पेलब-क्रि., भारी वस्तु कें बाँसक टोना सँ चला-एब । मै.

पेला-सं., पेलैक क्रम । मै.

पेशकार-विशे., वादीक आवेदन न्यायकर्त्ता लग धरैवाला । मै.

पेशी-सं., अपन आवेदन अधिकारीक आगू पहुँच-बैक प्रक्रिया । उ. तत्सम

पेसगी-सं., नियत मूल्यक अग्रिम किछु अंश । उ. तत्सम

पेसना-विशे., पेसैक लकड़ी वा बाँस । मै.

पेसब-क्रि., कोनो स्थान कें सामान्य रूप दैक हेतु भीतर सँ गोल लकड़ी वा बाँस घुसाएब । मै.

पेसुआ-विशे., पैसाकय देल गेल लकड़ी वा बाँस । मै.

पै

पैं-सं., अंगक वा स्वभावक दुर्गुण वा दोष । मै.

पैंकड़-सं., पैंर जिञ्जिरवाला भारी बेड़ी । मै.

पैकार-विशे., एकठाँ सँ कीनिकय दोसर ठाँ बेचै-वाला बनियाँ । मै.

पैकारी-सं., कीनै आ बेचैक व्यवसाय । मै.

पैखना-सं., १. चढ़ैक पसरल पाँखि । २. मानिक चम्हू सँ धरनि धरि लागि धरबैवाला लकड़ी । मै.

पैखाना-सं., मनुष्यक मल आ मलत्यागक स्थान । उ. तत्सम

पैघ-विशे., आकार प्रकार आ विचार सँ नमहर, श्रेष्ठ । मै.

पैघत-सं., उच्चता, महत्ता आ विशालता । मै.

पैघहा-विशे., पैघवाला । उच्चतावाला । मै.

पैंच-सं., उधार, बिना कोनो नियमक ऋण । मै.

पैंचन-विशे., सूप सँ टघराकय बहार कयल अन्नक अतिरिक्त वस्तु । मै.

पैंचब-क्रि., मिलल जुलल अन्न कें सूप सँ टघराकय पृथक् करब । फरिछाएब । मै.

पैंचार-सं., पैंच लेबा देबाक व्यवहार । मै.

पैंजनी-सं., पैरक घुघरू, नूपुर । मै.

पैठ होएब-क्रि., प्राप्त होएब, भोग होएब । मै.

पैत्रिक-सं., पिताक परम्परागत कुल एवं स्थान । सं. तत्सम

पैंता-सं., पवित्र करैक हेतु कुशपत्र । मै.

पैंतालीस-संख्या, चारि दहाँइ पाँच एकाँइक अंक । मै.

पैंतीस-संख्या, तीन दहाँइ पाँच एकाँइक अंक । मै.

पैन-सं., पानि बहैक सार्वजनिक बाट । बाहा । मै.

पैबन्द-विशे., विवश, बाध्य । परवश । मै.

पैबन्दी-सं., विवशता । मै.

पैँर-सं., चरण, पाद, गोड़ । मै.

पैँरकन्ह-विशे., जोड़ा बड़दक एकक नीचाँ छोट कन्हावाला । मै.

पैरवी-सं., प्रार्थना । उ. तत्सम

पैर लागब-क्रि., प्राप्त होएब । मै.

पैरी-सं., पैँरक अलंकार । मै.

पैली-सं., अन्न नपैक बासन । नप्पा । तम्मा । मै.

पैस-सं., खन्ती, खुरपी आदि अस्त्रक बेंट मे नारि पैसबैक छेद । मै.

पैसठि-संख्या, पाँच एकाँइ छः दहाँइक अंक । मै.

पैसब-क्रि., घुसब, जाएब, प्रवेश करब । मै.

पैसा-सं., पाइ, छोट सँ छोट राजकीय सिक्का । मै.

पैसाएब-क्रि., घुसाएब । मै.

पैसान-सं., पैसैक प्रक्रम । मै.

पैसार-सं., प्रवेश करैक निरन्तर क्रम । मै.

पैसुआ-विशे., पैसाओलवाला । मै.

पैसू-विशे., पैसैवाला । मै.

पैसौनिहार-विशे., पैसबैवाला । मै.

पो

पोँ-अव्यय, गाड़ी आदिक फुक्कीक ध्वनि । पदैक ध्वनि । मै.

पोआ-विशे., वंशधर, सद्यः जनमल साँप आदिक सन्तति । मै.

पोआर-सं., दाओन कयलाक उपरान्त धानक डंटीक ढेर । मै.

पोक करब-क्रि., विरोध मे गुप्त रूपेँ उकसाएब । मै.

पोंक पाड़ब-क्रि., कनेक कनेक कय अनेक ठाम मल त्याग करब । मै.

पोख-विशे., अत्यन्त पुष्ट । प्रयोग–"भरि पोख खाएल ।" मै.

पोखल-विशे., पुष्ट रूपक । मै.

पोखला-विशे., अत्यन्त पुष्ट रूपक । मै.

पोङा पंडित-विशे., बिना विषयक ज्ञानवाला पण्डित । मै.

पोङा पन्थी-विशे., परम्परावादी, रहस्य बिनु जनने रूढ़ि कँ पकड़निहार । मै.

पोचकार-सं., उचित सँ बेसी देह मे लेप । मै.

पोचकारब-क्रि., देह मे तेल आदि अधिक लेपब । मै.

पोचारब-क्रि., देवाल आ कोठा आदि घर कँ चून सँ रङि कय उज्जर करब । ढौरब । मै.

पोचारा-सं., ढौरैक कार्यक्रम । मै.

पोछब-क्रि., हाथ सँ टारि कय गील कँ रुक्ख करब । गमछा सँ देहक पानि कँ सोखब । मै.

पोछबाएब-क्रि., चिक्कन कराएब । मै.

पोछाइ-सं., पोछैक अर्थात् कपड़ा आदि सँ चिक्कन करैक प्रक्रिया । मै.

पोछुआ-विशे., पोछिकय सुखल बनाओल पु आदि । मै.

पोटब-क्रि., गुप्त रूपेँ मन्त्रणा द' क' अनुचित विश्वासक संग उत्साह देब । मै.

पोटरी-सं., छोट गेंठरीवाला मोटा । मै.

पोटहा-विशे., (अनादर मे) सदिखन नाक सँ नमरल कफवाला बच्चा । मै.

पोटा-सं., नाकक कफ । मै.

पोटाह-विशे., पोटा भरल नाकवाला । मै.

पोठी-सं., पोठी माछ । मै.

पोत-सं., ऊपर सँ देल गाढ़ लेप । मै.

पोतब-क्रि., गाढ़ लेप कय चिक्कन करब । मै.

पोता-विशे., पौत्र । मै.

पोताइ-सं., लेपाइ, लेपैक, छछारैक पोचकारैक कार्यक्रम । मै.

पोताएब-क्रि., पोत कराएब । मै.

पोतान-सं., पोतैक व्यवस्था । मै.

पोतुआ-विशे., पोतवाला । मै.

पोथा-सं., नमहर आ मोट पैघ पोथी । मै.

पोथी-सं., सामान्य पुस्तक । मै.

पोथीना-सं., सूतल लोकक पैरक दिशा । मै.

पोन-सं., डाँरक नीचाँ पाछू दिसक मांसल अंग। चूतर । मै.

पोनखसक-विशे., सुखाएल पोनवाला । मै.

पोनचटक-सं., पोन परक देल मारि । मै.

पोनगड़-सं., ऊँच आ पैघ पोन । मै.

पों पों मचब-क्रि., अनेक बाजा सभक एक संग ध्वनि होएब । मै.

पोर-सं., बाँस तथा आङुर आदिक गीरहवाला स्थान । मै.

पोरगर-विशे., १. बेसी दूर दूर पर पोरवाला । २. (लाक्षणिक) नमहर धूआ कायावाला । मै.

पोरो-सं., लत्तीवाला पातक साग विशेष । मै.

पोल-सं., १. रहस्य भरल बात । २. बिजलीक खम्भा । ३. मतदान । मै./अं. तत्सम

पोलखाह-विशे., बीच मे कतौ पातर तथा खखल काठ । मै.

पोल खोलब-क्रि., भेदक बात प्रकट क' देब । मै.

पोलहाएब-क्रि., स्नेह सँ मधुर वचन द्वारा परतारि क्य अपन पक्ष मे बनाएब । मै.

पोला-सं., तागक एक मानक लपेटल गुच्छा । मै.

पोलाओ-सं. मांसक संग घी मे रान्हल अनेक कटुक भरल भातक विशिष्ट पाक । पुलाव । उ. तद्भव

पोली-विशे., १. अपन मतपत्र खसबैवाला । २. तागक छोटका लपेटल गुच्छा । मै.

पोलो-सं., विशेष प्रकारक अंग्रेजी खेल । अं. तत्सम

पोष-सं., पुष्टि । सं. तत्सम

पोषक-विशे., पुष्टिकारक । सं. तत्सम

पोस्तादाना-सं., पकवान मे देमवाला सूक्ष्म कण-वाला मसाला । उ. तत्सम

पोस-सं., पोसैक गुण । पालन । मै.

पोसब-क्रि., पालन करब । पालब । मै.

पोसा-विशे., पालल जाइवाला, पालतू । मै.

पोसाइ-सं., पोसैक लाभ, पारिश्रमिक । मै.

पोसाउ-विशे., पोसैक योग्य । मै.

पोसाएब-क्रि., १. अनका ओतय अपन कोनो जीव पोसैक लेल देब । अनका द्वारा पोसैक प्रक्रिया करब । २. (लाक्षणिक) लगाओल लगताक लाभ होएब । मै.

पोसाओन-सं., पोसैक भार आ तकर लाभ । मै.

पोसाक-सं., वेशभूषा, पहिरना आ गहना । हि. तद्भव

पोसिया-सं., पोसैक लाभक नियमक अनुसार पशु पोसैक भार । मै.

पोसियादार-विशे., पोसिया रूपेँ माल केँ रखैवाला । मै.

पोसुआ-विशे., बहुत दिन सँ पालल जाइवाला । पालित होमवाला । मै.

पोसौनी-सं., देखू—"पोसिया" । मै.

पोह करब-क्रि., १. धोग सान्हि मे अन्वेषण करब । २. दिशाक क्रमहीन सूतक बिल करब । मै.

पौ

पौआ-सं., १. एक कीलोग्रामक चौठाइ भाग। चौठाई । २. खाट चौकी आदि काठक वस्तुक चारू टाङ, खड़ाइक अंग । मै.

पौआही-सं., एक पाओक नप्पा । मै.

पौब-सं., दाना झारल अन्नक पातर पात आ डन्टी। मै.

पौछ-सं., केराक गाछक अंकुर आ छोट गाछ । मै.

पौत्र-विशे., बेटाक बेटा । स्त्री० पौत्री । सं. तत्सम

पौती-सं., स्त्रीगणक शृङ्गारक वस्तु रखैक चौनल झप्पावाला बासन, पेटी । मै.

पौथान-सं., बिछाओन मे पैर दिसुक भाग । मै.

पौदान-सं., गाड़ी सब मे पैर धरैवाला स्थान विशेष । मै.

पौध-सं., छोट छोट गाछ । हि. तत्सम

पौन दोबर-विशे., एक पूर्णांक एक बटे तीन गुना । मै.

पौने-अव्यय, चारि भाग मे केवल तीन भागक परि-माण मे । मै.

पौना-सं., प्राप्त करैक वस्तु वा राशि । मै.

पौनी-विशे., कोनो विशेष अवसर पर अपन अंश पबैक अधिकारी पसारी । मै.

पौर-सं., अन्न दोनी मे पसारल चक्राकार झरल अन्नक दानाक पसार । मै.

पौरब-क्रि., मधुर रस वा दूध आदि द्रवणशील वस्तु के विशेष बर्तन मे जमबैक हेतु सावधानी सँ ढारब। मै.

पौड़-सं., १. पड़ु । २. तरुण महिस । सं. तद्भव

फ

फआओ-अव्यय, बताह गीदड़क बजैक ध्वनि तथा बताह गीदड़। मै.

फ्राक-सं., अंग्रेजी ढंगक छोट कन्याक पहिरना। अं. तत्सम

फ्री-विशे., उन्मुक्त, छुट्टा। अं. तत्सम

फक्कड़-विशे., कोनो धनक एकदम अभाववाला। मै.

फक्का-सं., भुजाएल (भूजल वा करहर) वस्तुक हाथ सँ लोकैत मुह मे फेंकि खाइक प्रक्रिया। मै.

फक्काडोका-सं., फाँकिकय सब सुख खाइवाला वस्तु। मै.

फक्की-सं., गर्दीवाला औषध, त्रिफला आदि। मै.

फकचोद-सं., निरर्थक अनर्गल विवाद। मै.

फक द' रहब-क्रि., अचानक आशा टूटि गेने शून्य होएब। मै.

फक द' निसास छाड़ब-क्रि., एकाएक मन पर सँ बोझ उतरब। मै.

फक डोलबा-विशे., अव्यवस्थित वचनवाला। मै.

फंकना-विशे., फाँकैक बेशी अभ्यासवाला। मै.

फकफक करब-क्रि., दुर्बलता सँ शक्तिहीन रहब। मै.

फकफकी-सं., दुर्बलता सँ नाकक बदला मुह सँ अधिक निसास छाड़ब। मै.

फकरब-क्रि., जोर जोर सँ कानब, आक्रन्द करब। मै.

फकरा-सं., ग्राम्य भाषा मे छोट छोट लाक्षणिक रूपक तुकबन्दीवाला पद्य। प्रयोग-"हम सुनरी पिया सुनरी। गामक लोक बनरा बनरी।" मै.

फकसियार-सं., गीदड़क जातिवाला, बाघ सँ आगूए आगू चलैत जकाँ शब्द करैत जंगल मे चलैवाला छोट पशु। मै.

फकसियारी काढ़ब-क्रि., बहुत जोर जोर सँ एकै सुरे बहुत काल धरि कानब। मै.

फकारि-सं., बसात जोर पर मेघ खण्ड सँ कनेक वर्षा। मै.

फकिरना-विशे., साधु सन्त कें देल भूमि। मै.

फकीर-विशे., साधु संन्यासी। मै.

फकैत-विशे., फाँकी दैवाला, किछु बजैवाला आ किछु करैवाला, वचन आ क्रियाक मिलान नहि रखैवाला। मै.

फगुआ-सं., फागुन पूर्णिमा दिन उन्मुक्त आनन्दक पर्व। मै.

फगुनहरि-सं., फागुन मासक प्रकृति। मै.

फगुनी-विशे., फागुन मास मे होम'वाला। मै.

फच्च द' उठब-क्रि., अत्यन्त गील वस्तु मे भारी वस्तुक अचानक चोट पड़ने ध्वनि होएब। मै.

फचका-विशे., मुह सँ गाउज उड़बैत बजैवाला। मै.

फचका उठाएब/फचकाएब/फचकारब/फचकार करब-क्रि.,सगरे गील बनाएब। मै.

फचड़-विशे., अनेर बिना रोक टोकक गप बजैवाला। मै.

फचफच-विशे., बिना व्यवधानक वचन। मै.

फचफचाएब-क्रि., व्यर्थ फचफच बाजब। मै.

फचर फचर-अव्यय, व्यर्थ गप्प बजैक प्रवाहित रूप। मै.

फचराह-विशे., अनेर अधिक बजैक स्वभाववाला। मै.

फचाँड़ि-विशे. सब बात कें स्वीकार कय बात कें नहि निमाहैवाला। मै.

फजहति-सं., क्रोध सँ दुर्वाच्यक कथन। भंजन, फजीहत। उ. तद्भव

फट्-अव्यय, १. अङ्गन्यासक मन्त्र। २. संक्षेप मे हँटैक शब्द। मै.

फट्ट द'-अव्यय, झुटितैं तुरन्त, एकोक्षणक देरी नै। मै.

फट्टा-विशे., फाट (दरक्का) वाला। मै.

फट्टो-विशे., कोइली धरि फाटलवाला रोगाह आम। मै.

फट्टा-सं., बाँसक चारि चीरा। मै.

फट्ठी-सं., १. चीरल बाँसक छोट टुकड़ा। देहक हड्डी। मै.

फटक-सं., फाटक, बाँसक फट्ठी आ झाँखन सँ बनाओल केवाड़। मै.

फटकन-सं., १. फटकि कय बहार कयल गर्दा। २. फटकैक प्रक्रिया। मै.

फटकनिहारि-विशे., सूप सँ फटकैक काज कयनिहारि। मै.

फटक फन्द-सं., चारू दिशक घेराओ। मै.

फटकब-क्रि., सूप सँ अन्नक परिष्कार करब। मै.

फटकबाहि-सं., अधिक फटकैक कार्यक्रम। मै.

फटका-सं., फटकैक क्रम । मै.

फटकार-सं., दूर हटबैक तिरस्कृत वाक्य । फज्झति । मै.

फटकारब-क्रि., फज्झति करब । मै.

फटकिया-सं., लगातार फटकैक क्रम । मै.

फटकी-सं., १. छोट फटक । २. दूर । प्रयोग– १. "फटकी भिड़ा दियौ । २. अशुद्ध वस्तु कें पूजा पाठ सँ फटकी राखू ।" मै.

फटना-सं., बड़ जल्दी फटैवाला । मै.

फट फट-अव्यय, लगले लागल । मै.

फटफटाएब-क्रि., कोनो वस्तुक विकट फट फट शब्द करब । मै.

फटफटार-विशे., अधिक भड़कदार आ चमकदार ओढ़न पहिरनवाला । प्रयोग–"बेस फटफटार भेल मेला ।" मै.

फटफटिया-विशे., एवं सं., १. फट फट शब्द करैवाला । २. मोटरसाइकिल । मै.

फटफटी-सं., फट फट बाज करैक आ शब्द करैक प्रकृति । मै.

फटब-क्रि., फाटि जाएब । (स्वतः विदीर्ण होएब) । मै.

फटर फटर-अव्यय, अनेर अनर्गल बजैत रहैक क्रम । मै.

फटहाल-विशे., फटेहाल, अन्न वस्त्रक अभाववाला । मै.

फटाओल-सं., दूधक फटला सँ बनल खिरसा । विखण्डित दूधक कण । मै.

फटाक द'-अव्यय, ओही क्षण, लगले । मै.

फटाक द' उठब-क्रि., बाँस फटैक सन अचानक जोर सँ विकृत शब्द होएब । मै.

फटान-सं., फटैक विस्तृत रूप । मै.

फटाफटि-अव्यय, लगले लागल । मै.

फटीचर-अव्यय, देखू—"फटहाल" । मै.

फटैदार-विशे., हिस्सेदार, कानूनी बखरा लैवाला । मै.

फटोफट मे पड़ब-क्रि., विकट परिस्थिति मे रहब । मै.

फड़-सं., फल (गाछक फल) । सं. तद्भव

फड़क-सं., स्फुरण, जोर सँ अकस्मात् छिटकि कय चलायमान । मै.

फड़कब-क्रि., अंगक वा कोनो वस्तुक हठात् वेग सँ चंचल भ' जा क' छिटकब । मै.

फड़की-सं., देखू—"फटक" । मै.

फड़गोड़-विशे., तेजी सँ चलैवाला । मै.

फड़नमा-विशे., अधिक फड़ैवाला गाछ । मै.

फड़नसैर-विशे., फड़ैक योग्य वयसवाला गाछ । मै.

फड़ना-विशे., अधिक फड़ैक स्वभाववाला । मै.

फड़फड़ करब-क्रि., १. अधिक वेग सँ तेजी देखाएब । २. उड़ैक प्रयास मे पक्षी सँ पतङ्गधरिक पाँखि चलाएब । ३. बसात मे कागज आ ओहन सन वस्तुक उधियाएब । मै.

फड़फड़ी-सं., तेजी, चञ्चलता । मै.

फड़ब-क्रि., गाछ मे फल निकलब । मै.

फँरबन्ही करब-क्रि., (लाक्षणिक) लड़ैक हेतु उद्यत होएब । मै.

फड़ाक फड़ाक उठब-क्रि., कोनो कड़ा वस्तुक लगातार फटैक शब्द होएब । फुटैक ध्वनि होएब । मै.

फँड़ियाएब-क्रि., १. फाँड़ मे धरब । २. कोनो बातेँ फरिछाकय स्पष्ट करब, एक निर्णय पर निश्चित करब । मै.

फड़ी-सं.,फड़ होइक विशेषता । मै.

फँड़्आ-विशे., फाँड़िकय (चीरिकय) बनाओल । मै.

फड़्आ-सं., आर तेकुना आदिक फड़ । मै.

फण्ड-सं., सुरक्षित राशि । अं. तत्सम

फणा-सं., गहुमन साँपक मुहक छत्ता । सं. तत्सम

फतहा पड़ब-क्रि., एक दिशाहे तमसाएल बात एकै सूरें बजैत रहब । मै.

फतिङ्गा-सं., छोट छोट उड़ैवाला कीड़ा । मै.

फतिङ्गी-सं., सूक्ष्म (मेंही) उड़ैवाला कीड़ा । मै.

फतूल-अव्यय, व्यर्थ, निरर्थक, अनेर । मै.

फदकब-क्रि., एकै सूरें अनेर अरंदरं बजैत रहब । मै.

फदका-विशे., व्यर्थ अनर्थक बजैक प्रकृतिवाला । मै.

फदफदाएब-क्रि., अनेर विश्रृंखल बात बड़बड़ाइत रहब । मै.

फन्द-सं., विपत्तिजनक स्थिति । मै.

फन्दा मे पड़ब-क्रि., विकट स्थिति सँ जकड़ल रहब । मै.

फन्ना-सं., स्वत: बन्धन कसि जाइक योजना। मै.

फन्ना लगाएब-क्रि., बन्धन मे फँसबैक योजना करब। मै.

फन्नी-सं., कपड़ा बीनै मे सूत कें धसैक परतान। मै.

फन-सं., देखू-"फणा"। सं. तद्भव

फनकब-क्रि., कोधें उत्तेजित भ' क' बाजब। मै.

फनका-विशे., बात बात मे फनकैक प्रकृतिवाला। मै.

फनकी-सं., कोनो जीव जन्तु कें फँसबैक हेतु सूत वा डोरीक बन्धनक योजना। मै.

फन काढ़ब-क्रि., साँपक फणा पसारब। मै.

फनगर-विशे., चूड़ी लहठी आदि गहनाक बीचक विशेष शून्य स्थानवाला। मै.

फनफन करब-क्रि., मन आ शरीर सँ कोधें असन्तुलित रहब। मै.

फनफनाएब-क्रि., १. विशेष तामसक भाव सँ मुहक मुद्रा बनाएब। २. कोनो घाओ आदिक उपर फुटैत जकाँ पीड़ा होएब। मै.

फनफना कय जरब-क्रि., हल्लुक (सीन कागज आदि) वस्तुक तुरन्त जरि जाएब। मै.

फनफनी-सं., उत्तेजित होइक मुद्रा। मै.

फनाएब-क्रि., १. कोनो काठ परक वस्तु के टपाएब। २. कोनो वस्तु कें बन्हैक प्रक्रिया मे कुदाएब। मै.

फनिगा-सं., देखू—"फतिङ्गा"। मै.

फनू-अव्यय, फेर (ग्राम्य भाषा) पुनः। मै.

फनैत-विशे., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थ साधै लेल अनेक प्रयास करनिहार। मै.

फफक-सं., शून्य समयक अवधि। मै.

फफकब-क्रि., कनैक कम मे स्वरक स्वत: तीव्र कम्पन होएब। मै.

फफड़दलाली-सं., बल सँ दलाल बनैक चेष्टा। मै.

फफलब-क्रि., बेशी विस्तृत होएब। मै.

फफनाएब-क्रि., कोनो रोग वा घाओक अधिक बढ़ि जाएब। मै.

फफनाह-विशे., रोग आ घाओ बढ़बैवाला। मै.

फबकी-सं., अनेक काजक बीचक शून्य समय। लाभक अवसर। मै.

फबब-क्रि., १. अकस्मात् लाभक अवसर भेटब। २. विशेष वस्तु सँ सौन्दर्य निखरब। मै.

फबता-सं., फबैक अवसर। मै.

फर्द-सं., कागज वा पातक खण्ड, टुकड़ा। मै.

फर्बबाल-सं., दूनू अगिला टाँग उठाकय फनैत जकाँ घोड़ाक तेज चालि। गतिक वेग। मै.

फर-सं., माटिक भीतर फरैवाला कन्द, आड़ तथा तेकुना। मै.

फरक-अव्यय, अन्तर, फर्क। उ. तद्भव

फरकसरा/फरकसार-विशे., घनत्वहीन। एक सँ दूरी पर रहैवाला दोसर। परस्पर विशेष दूर पर अन्तर राखि कय रहैवाला। मै.

फरकब-क्रि., अकस्मात् अंगक कोनो भागक चञ्चलता सँ अनेर फड़फड़ा उठब। वस्तुक अचानक अनेर उछलि जाएब। स्फुरण होएब। मै.

फरका-विशे., अलग। मै.

फरकाह-विशे., अनेर फरकैत रहैवाला। मै.

फरकोस-विशे., चलै फिरै मे चरपट, तेज। मै.

फरजी-विशे., अनकर नामें छिपाओल। फर्जी। उ. तद्भव

फरफराएब-क्रि., १. अपन स्थान भरि मे चञ्चल होएब। २. फरफर शब्द करब। मै.

फरफंसी-सं., जोर सँ कूसि आरोप लगाकय दोषी बनबैक चेष्टा। मै.

फरब-क्रि., १. छोट नेनाक मलमूत्र त्यागब। २. स्त्रीक गर्भधारण करब। मै.

फरबी-सं., फसिल कटला उत्तर खेत मे आगि लगौला पर बनल अन्नक लावा। मै.

फरमा-सं., कोनो वस्तुक आकृति बनबैक साँच, खोली, ढाँचा। अं. तद्भव

फररोस-विशे., प्रौढ़, निर्भीक। मै.

फरसनाओ-विशे., फैलल पेटवाला नाओ। मै.

फरसा-सं., चन्द्राकार कुड़हरि जकाँ मारैवाला अस्त्र। परशु। मै.

फरहर-विशे., आधा सुखाएल। मै.

फरहरी-सं., दिक्कत, कठिनाइ, अभाव सँ आगल तंगी। प्रयोग—"हड़तालक द्वारें पैसा कौड़ीक बड़ फरहरी भ' गेल अछि। मै.

करही-सं., मछही जाल बीनै मे फाँक गढ़ैक बाँसक फट्ठीक बनाओल पटरी । मै.

कराक-विशे., अलग, दूर, भिन्न । मै.

कराकिल-विशे., अलग कयल । मै.

कराठी-सं., अत्यन्त पातर बाँसक फट्ठीक बनाओल ठेंङा । मै.

करार-विशे., भगोड़, नुकाकय पड़ाएल । उ. तद्भव

कराहिन-विशे., उद्धारक रूपेँ स्वच्छ अथवा फरिच्छ । मै.

करिआएब-कि., परस्पर निर्णय करब । मै.

करिच्छ-विशे., स्वच्छ, परिष्कृत । मै.

करिछाएब-कि., १. मिलल जुलल कें अलग कय एक रूप कें एकठाँ करब । २. आपसी विरोध कें जय वा क्षय रूपेँ निपटाएब । ३. स्वच्छ करब । मै.

करिछाओन-विशे., स्वच्छ । सं., स्वच्छता । मै.

करिछाह-विशे., स्पष्ट निखरैवाला । मै.

करिछौक-सं., कोनो विवादक निराकरण । मै.

करिछौट-सं., कोनो विवादक न्यायपूर्वक निर्णय । मै.

करी-सं., सम्पूर्ण (अभग्न, अखण्डित) पैघ माछ । मै.

करीक-विशे., पट्टीदार, देयाद । उ. तद्भव

करुआ-विशे., फरैवाला, फरैक योग्य । मै.

करुहा-सं., आरु आ तेकुना आदि कन्दक लत्तीक फर । मै.

करुहाल-विशे., अनावश्यक विषय । मै.

करेब-सं., षड्यन्त्र, गढ़िकय दोषी बनबैक प्रक्रिया । मै.

कलड़-विशे., देहक अनुसारेँ बेसी ढील, फैल । मै.

कल्ली-सं., ताड़ वा लकड़ीक मोट आ नाम चीरा कयल गोल । मै.

फल-सं., गाछक उपजा । मै.

फलक-सं., माला आदि आ शरक चोख अगिला भाग । सं. तत्सम

फलकब-कि., विकास करब, पसरब, विस्तृत होएब । मै.

फलकर-सं., फलक अर्थात् आम आदि फल केर उपभोगक राजस्व । (लगान) सं. तत्सम

फलका-सं., बगड़ा पक्षीक आकार प्रकारवाला छोट खाद्य पक्षी विशेष । मै.

फलका उड़ब-कि., अधिक जोत कोड़क द्वारेँ खेतक माटि कें गर्दा गर्दा बनि जाएब । मै.

फलकाएब-कि., विकसित करब, फैल करब, पसारब । मै.

फलको-सं., बच्चाक टोपीक चारू कात लागल झालरि । मै.

फलगर-विशे., अधिक फलवाला । मै.

फलगू-सं., कनीटा नेन्नाक टोपी मे पाछू दिश लागल झूल । मै.

फलत:-अव्यय, परिणाम मे । सं. तत्सम

फलना-विशे., अमुक । स्त्री० फलनी । मै.

फलना चिलना-विशे., अमुक अमुक । मै.

फल फलहरी-सं., फलक संग फलाहारक योग्य वस्तु । दूध कन्दमूल आदि । मै.

फलहार-सं., फलाहार । सं. तद्भव

फलहारी-विशे., फलाहारी, फल मात्र खयनिहार । मै.

फलाँ-सार्वनामिक विशेषण अमुक व्यक्ति । मै.

फलालैन-सं., कपड़ाक विशेष प्रभेद । मै.

फलित-विशे., १. फल रूपेँ प्रकट । २. फल कहैवाला ज्योतिष शास्त्र । सं. तत्सम

फलिहारब-कि., नीक जकाँ फसारि पसारि कऽ कपड़ा खींचब । मै.

फस द' उठब-कि., बिना प्रयासेँ निःशब्द भग्न होएब । मनुआएल रहब । मै.

फस द' रहब-कि., (लाक्षणिक) आशा पर निर्भर रहि हठात् निराश भ' जाएब । मै.

फसफस उठब-कि., मनुआएल रहैक द्वारेँ दाँतक बिना जोर लगौनें दबैवाला होएब । मै.

फँसब-कि., बन्धन मे पड़ि जाएब । मै.

फँसराह-विशे., ढील बन्धनवाला । हाथ फँसैवाला । मै.

फँसरी-सं., गर्दनि मे प्राण लेबाक हेतु देल बन्धन । फँसि जाइवाला डोरी । मै.

फँसाएब-कि., १. (लाक्षणिक) मिथ्या दोष लगाकय दोषी बनाएब । २. जाल आ पानी मेँ कोनो जीव कें बन्धन मे लाएब । मै.

फँसाद-सं., विरोधपूर्वक उत्पात । उ. तत्सम

फँसाद जगाएब-कि., उत्पात बढ़ाएब । मै.

फँसादी-विशे., फँसाद करैवाला । मै.

फसिल-सं., उपजा । अन्नक उत्पादन । मै.

फँसिहारा-विशे., वधिक, वध करैवाला, फाँसी दैवाला । मै.

फहरब-क्रि., उपर मे वसात सँ चञ्चल होएब । मै.

फहराएब-क्रि., उपर उठाकय उड़ाएब । उड़ब । मै.

फा

फा-विशे., फाओ, बिना परिश्रम आ दामवाला । मै.

फाइ फाइ करब-क्रि., अभावक कारणें अत्यन्त व्यग्र रहब । मै.

फाओ-विशे., देखू—"फा" । मै.

फाँक-सं., खण्ड । मै.

फाँक करब-क्रि., चीरिकय खण्डित करब । मै.

फाँकनि-सं., फक्का करैक प्रवृत्ति । मै.

फाँकब-क्रि., हाथ सँ मुह मे फेँकि क' सुखाएल वस्तु खाएब । मै.

फाँका-सं., शून्यता, उपास, फाँकि कय भोजन । मै.

फाँकी-सं., १. बीचक शून्य काल । प्रयोग—"एही फाँकी (अवकाश) मे बैद्यनाथ धाम सँ भ' अयलौं ।" २. शास्त्रीय बातक विस्तृत शास्त्रार्थ । मै.

फागु-सं., फागुन मासक गीत । मै.

फागुन-सं., मास विशेष । मै.

फाजुल-विशे., अतिरिक्त, अधिक, फाजिल । उ. तत्सम

फाट-सं., फटैक रूप रेखा चिह्न । मै.

फाँट-सं., १. बखरा, हिस्सा । २. शून्य मे (निर्जन मे) भयक आवेग सँ मानसिक प्रभाव । मै.

फाटचीट-विशे., भग्न भेल, फाटल, खण्डित । मै.

फाटनि-सं., फटैक लगातार क्रम । मै.

फाटब-क्रि., विदीर्ण होएब । खण्डित होएब । टूटब । मै.

फाँटब-क्रि., विभाजित करब । मै.

फाटाफाटी-सं., मानसिक रूपें बेलागि रहैक प्रकृति । मै.

फाँटि-सं., स्थितिक विकटता । प्रयोग-"अखन हड़तालक द्वारें फाँटि पर चढ़ि गेली ।" संकटक स्थिति । मै.

फाँड़-सं., समेटिकय कसल पहिरल धोती । मै.

फाँड़ कसब-क्रि., (लाक्षणिक) लड़ैले उद्यत होएब । मै.

फाँड़ा-सं., आम आदि कें चीराकय बनाओल अँचार । मै.

फाड़ब-सं., फाड़ैक, चीरैक, फाँक करैक प्रक्रिया । मै.

फाड़ब-क्रि., खण्ड खण्ड कय चीरब, फाँक करब । मै.

फाँड़न-सं., फल आदि वस्तु कें चीरिकय भीतर सँ विकृत वस्तु बहार करैक प्रक्रिया । मै.

फाँड़ब-क्रि., फाँक करब, दू चीरा करब । मै.

फाँड़ी-सं., बीच सँ फाड़ल खण्ड । मै.

फाँणी-सं., आरक्षी (पुलिस) क खेमा शिविर । मै.

फान-सं., १. चूड़ी, कँगना आदि गोल परिधिवाला गहना आदिक बीचक शून्य स्थान । २. उछलिकय टपैक अभ्यास । मै.

फानन-सं., कूदि जाइक प्रवृत्ति । मै.

फानब-क्रि., कोनो विशेष स्थान कें कूदिकय उपरें उपर टपि जाएब । मै.

फाननिहार-विशे., फानि जाइक अभ्यासवाला । मै.

फानी-सं., पशु पक्षी कें बझबै लेल बनाओल चीरहु पड़ि जाइवाला डोरी । मै.

फानी लगाएब-क्रि., डोरीक बन्धन मे पशु पक्षी कें बझबैक योजना करब । मै.

फाँफ-विशे., तेज आ खोंकार भाव भेली । मै.

फाँफर-सं., पहिरल धोतीक भीतर बनाओल वस्तु रखैक स्थान । झोरी वा पोटरीक आकार । मै.

फार-सं., खेत जोतै मे हर मे लागल नाम पातर लोहक अस्त्र । खेत कोड़ैवाला हरक अंग । मै.

फारक-सं., फारि कय देमं'वाला कागजी प्रमाण, रसीद । मै.

फारकती-सं., लेनदेन आदि राफ साफ करैक कम । मै.

फाँरा-सं., मोट अन्न मे लागि जाइवाला उड़ै योग्य कीड़ा । मै.

फारि-सं., फारल अंग, मुहक चीराक मान । मै.

फाल-सं., भाला बर्छा आदि अस्त्रक अगिला भाग । सं. तत्सम

फाँस-सं., बन्धन, विवशता । मै.

फाँसनि-सं., फँसैक स्थिति, बझैक लच्छन । मै.

फाँसब-क्रि., बझाएब, बन्धन देब, मोहित करब । मै.

फाँसी-सं., गर्दनि मे फँसरी लगाकय मृत्युक उपाय । मै.

फाँसी चढ़ब-क्रि., कोनो रूपेँ मृत्युक भागी बनब । मै.

फाहा-सं., कोमलतावाला वस्तु सँ आगू दिसक छोर बनल सूक्ष्म डन्टीक साधन । प्रयोग-''कान केँ स्वच्छ करै लेल पातर आ मक्कत काठी मे आगू तुर लपेटि कय फाहा बना लिअ' ।'' मै.

फाँहि ब' रहब-क्रि., (लाक्षणिक) अवसर पर वचनक वा योजनानुसार काज नहि भेने निरुपाय भ' जाएब । मै.

फि

फिक्का-विशे., कुस्वादु, विकृत स्वादवाला । मै.

फिकिर-सं., चिन्ता । उ. तद्भव

फिचकारी-सं., दवाओ पड़ला सँ प्रवाह रूपेँ वेग सँ छिद्र देने पानि फेंकैवाला यन्त्र । मै.

फिटकिरी-सं., रासायनिक द्रव्य विशेष । मै.

फिड्डी-विशे., खेल विशेषक हारल । मै.

फिता-सं., १. नपैक लेल बनाओल कपड़ाक नमहर कम चाकर पट्टी । २. केशक श्रृङ्गारक पट्टी । मै.

फिन-अव्यय, (ग्राम्य) फेर, पुनः । मै.

फिनाइल-सं., कीटनाशक तेल विशेष । मै.

फिफिआएब-क्रि., अभाव (खगी) क द्वारेँ व्यग्रता सँ हताश भेल बौआएब । मै.

फिरका-सं., सोच, चिन्ता । मै.

फिरंट-विशे., घुमक्कड़, अनेर घुमैत रहैवाला । मै.

फिरता-विशे., घुरा क' देमे' योग्य अधिक वस्तु । वस्तुक दामक अतिरिक्ति घुरबैक पाइ । मै.

फिरताभार-सं., विशेष अवसर पर मिथिलाक रीतिक अनुसार कुटुमैती मे गेल भार सब मे एकटा पठौनिहार केँ घुराकय पठाओल भार । मै.

फिरती-सं., घुमैक, वापस होइक समय । मै.

फिरनाइ-सं., लक्ष्यहीन रूपेँ घुमैक क्रम । मै.

फिरब-क्रि., घुमब, वापस होएब । मै.

फिराएब-क्रि., १. घुमा देब । २. पेट शुद्ध कराएब । मै.

फिराक-सं., उद्योग आ उपाय । मै.

फिराकी-विशे., फिराक मे रहैवाला । मै.

फिरीत-विशे., देखू—''फिरंट'' । मै.

फिरा देब-क्रि., वापस क' देब । मै.

फिरीसान होएब-क्रि., अत्यन्त व्याकुलता सँ परिश्रान्त होएब । मै.

फिरीसानी-सं., चिन्ता आ व्यग्रता सँ व्याकुलता । मै.

फिरुआ-विशे., फिराओलवाला, घुमाओल गेल । मै.

फिरौती-सं., फिरबैक अर्थात् वापस क' दैक निश्चित राशिक करार । मै.

फिल्ली-सं., पैर सँ उपर घुट्ठी सँ नीचाँ जोड़वाला अंग । मै.

फिलमाल-विशे., महौथवार, हाथीक चरवाह । मै.

फिस होएब-क्रि., काजक हेतु उत्साहितो भ' क' अवसर पर हँटि जाएब । मै.

फी

फी-अव्यय, प्रत्येक । प्रयोग-''घरक फी व्यक्ति केँ नोत देल गेल अछि ।'' मै.

फी !!-अव्यय, उपहासक हँसी । मै.

फीट-सं., मापदण्ड विशेष, बारह आङुरक मान । मै.

फीरब-क्रि., त्याग करब, लाक्षणिक शब्द संग एहि क्रियाक । प्रयोग-''दिशा, नदी फीरब अर्थात् मल-त्याग करब ।'' मै.

फीसा-विशे., कोनो क्रीड़ा विशेष मे द्वितीय स्थान पाब'वाला । मै.

फु

फुकना-सं., फूकि क' फुलबैवाला रबरक खेलौना ।

फुकबाएब-क्रि., अनका द्वारा फुकैक क्रिया करब । मै.

फुकाएब-क्रि., फूँक करबैक आयोजन करब । मै.

फुकान फूकब-क्रि., अधिक जोर सँ फूकब । मै.

फुकंया-सं., आवा तथा ईंटाक भट्ठा मे आगि लगबैक प्रक्रिया । मै.

फुच्च-विशे., गौरव आ भीतरी क्षोभ सँ मुह सँ गम्भीरता आ विचार सँ हीन बनल रहनिहार । मै.

फुच्च होएब-क्रि., भीतरेँ भीतर तमसाएल रहब । मै.

कुच्ची-सं., अत्यन्त छोट बासन । मै.

कुचकुच करब-क्रि., अपन अधिक वर्चस्व देखाएब । मै.

कुचकुची-सं., अपन शक्तिशाली होएब प्रदर्शन । मै.

कुचुक्का-सं., बाँसक पोर सँ बनाओल पिचकारी । मै.

कुट्टा-सं., १. प्रयोजन (दाम) सँ अलग फिरता रेजकी । २. फुटैक प्रकृति । मै.

कुट्टी उसिना-सं., अदनार धानक उसिनल धानक चाउर । मै.

फुटकब-क्रि., अलग भ' जाएब । मै.

फुटकर-विशे., अलग अथवा भिन्न प्रकारवाला । मै.

फुटकल-विशे., अलग मे रहैवाला । मै.

फुटकलहा-विशे., फूट मे रहैवाला । मै.

फुटका-विशे., फूट रहैक प्रकृतिवाला । मै.

फुटकाएब-क्रि., दू कें अलग अलग करब । मै.

फुटकाह-विशे., फूटे रहि मे प्रसन्न रहैवाला । मै.

फुटकुटिया-विशे., अलग अलग भँजाओल पाइ । मै.

फुटब-क्रि., भग्न होएब । मै.

फुटले आँखि नं सोहाएब-लोकोक्तिक क्रिया, (लाक्षणिक) अत्यन्त अप्रिय लागब । मै.

फुटहरबा-विशे., सब सँ सदा अलग रहैवाला । मै.

फुटहा-सं., दलिहन अन्न कें भुजिकय बनल खाद्य । मै.

फुटाएब-क्रि., अलग अलग करब । मै.

फुटाइ-विशे., फूट रहैक प्रकृतिवाला । मै.

फुटार-विशे., फूट करबैक प्रकृतिवाला । मै.

फुटानि-सं., विरोधक स्थिति । मै.

फुटानी करब-क्रि., एकक प्रति दोसर कें उकसाएब, प्रेरित करब । मै.

फुटाह-विशे., फूटैक योग्य, फूट पसिन्न करैवाला । मै.

फुटिया-विशे., अलग रेजकी । मै.

फुटौअलि-सं., फुटबैक चेष्टा । मै.

फुटौआ-विशे., फुटबैवाला । मै.

फुद्दी-सं., छोट सँ छोट पक्षी विशेष । मै.

फुदकब-क्रि., आनन्द सँ उछलब आ कूदब । मै.

फुदका-विशे., विनोदक क्रम मे उछलनिहार आ आनन्दित रहनिहार । मै.

फुदड़ी-विशे., अत्यन्त छोट आकारवाला फसिलक सीस । मै.

फुदना-सं., माला आदि वस्तु मे देल गुच्छा । मै.

फुदकुद करब-क्रि., आनन्द सँ अधिक चलायमान रहब । मै.

फुनगी-सं., गाछ वृक्ष मे सब सँ उपरक मुड़ी । मै.

फुनगुनी छूटब-क्रि., क्रोध, विस्मय आ आतंक सँ देह मे चिनकी जकाँ फुटैक क्रम होएब । मै.

फुनफुन करब-क्रि., पसाही लागि क' तुरन्त जरि जाएब । मै.

फुनसी-सं., मेंही मेंही फोंसरी तथा अत्यन्त मेंही वर्षाक बुन्नी । मै.

फुफकार-सं., साँप आदि जीवक क्रोध व्यंजक श्वासक त्याग । मै.

फुफकार काटब-क्रि., रहि रहि क' साँप आदि जीवक क्रोधित श्वास छोड़ब । मै.

फुफड़ब-क्रि., अधिक दिन भेला सँ सरस वस्तुक उपर विकार उपजब । मै.

फुफड़ी-सं., सरस वस्तु मे रौद बसातक अभाव मे विकार रूपें लागल दहिया अथवा फुकुन्दी । मै.

फुफुआएब-क्रि., फू फू क' क' क्रोध करब । मै.

फुफुस-सं., छोट सन उज्जर माथी जकाँ उज्जर कोढ़क अंग । मै.

फुतियाह-विशे., फुर्ती सँ होम'वाला । फुर्ती करैवाला । मै.

फुर्ती-सं., जल्दीबाजी, अत्यन्त शीघ्रता । मै.

फुर्तीबाज-विशे., शीघ्रता सँ काज कयनिहार । मै.

फुर्र-अव्यय, जल्दी आ शब्दसमेत । मै.

फुर्र द'-अव्यय, शीघ्रता सँ शब्द करैत । मै.

फुरफुर करब-क्रि., १. पाँखि फरफराएब । २. उड़ैत जकाँ चञ्चल होएब । मै.

फुरफुरी देब-क्रि., छोट नेन्ना के मल उतारैं लेल मल मार्ग मे औषध सँ प्रक्रिया करब । मै.

फुरर्के करब-क्रि., अव्यवस्थित रूपें धनक उठानि करब । मै.

फुरब-क्रि., कोनो विशेष बात बुद्धि वा कल्पना मे आएब । मै.

फुरसति-सं., अवकाश, छुट्टी, उन्मुक्तता, फुर्सति । उ. तद्भव

फुराएब-क्रि., बुद्धि मे विषय कें उपजाएब । कल्पना करब । मै.
फुरौनिहार-विशे., कल्पना कयनिहार । मै.
फुल्ला-सं., आँखिक रोग, मांस वृद्धि । मै.
फुल्ली-विशे., अत्यन्त कोमल आ सद्यः उत्पन्न फल । मै.
फुलका-विशे., फूल जकाँ हल्लुक । मै.
फुलकाएब-क्रि., फुलाएब, फलकाएब, विस्तार करब । मै.
फुलकाह्-विशे., फूल जकाँ हल्लुक । मै.
फुलकी-सं., १. सरही राड़ी खढ़ आ कुशियार आदिक फूल । २. फुलाकय बनाओल छोट सोहारी । मै.
फुलगर-विशे., फूल सँ भरल । मै.
फुलचठेंल-सं., बिना फड़वाला चठेंलक गाछ । मै.
फुलझरी-सं., बारुद द' क' बनाओल आगि लगाकय छोड़ैवाला विस्फोटक वस्तु । मै.
फुलझार-सं., पत्री सँ बनाओल फूल आ फूलक गाछ । विशे., फूल झरलवाला । मै.
फुलडाली-सं., चाकर पसरल बाँसक बीनल फूल तोड़ैक वासन । मै.
फुलतोड़ा-सं., १. पैंघ आ डन्टी लागल गहींर फूल तोड़ैक बाँसक वासन । विशे., फूल तोड़ैक काज मे नियुक्त व्यक्ति । मै.
फुलतोड़ी-सं., फुल तोड़ाक छोट रूप । मै.
फुलफुलाह्-विशे., सदिखन अंग मे फूलल रहैवाला । फूललसन लगैवाला । मै.
फुलबत्ती-सं., दूर सँ फूल जकाँ दीप जरबैक बनल बाती । मै.
फुलबसाती-विशे., बसात मे फूल जकाँ उड़ैवाला वस्तु । मै.
फुलबाड़ी-सं., फूलक हेतु बनाओल वन । मै.
फुलबाँस-सं., वनस्पति विशेष । मै.
फुलसाह्-विशे. फूलल जकाँ लगैवाला । मै.
फुलसज्जी-सं., फूल सँ सजाओल प्रथम मिलनक रातिक वर वधूक विछाओन । मै.
फुलही-विशे., १. फूल (विशिष्ट काँस) वाला वर्त्तन । २. फूलसन हल्लुक । मै.

फुलाएब-क्रि., विकसित होएब । मै.
फुलेल-सं., फूलक सुगन्धि सँ बनोओल तेल । मै.
फुलौकी-सं., उपर सँ छत्ता लागल विवाहक अवसर पर गौरी पूजाक सामग्रीक वासन । मै.
फुलौड़ी-सं., छोट छोट आ फूलल फूलल बड़ी । मै.
फुसकी करब-क्रि., कान लग सटि क' अत्यन्त थोड़ शब्दें अनका नहि सुनै योग्य गप करब । मै.
फुसकाएब-क्रि., धीरें धीरें टारब । चलाएब । मै.
फुस द'-अव्यय, अलक्षित भ' क' । मै.
फुसफुस-अव्यय, अनका नहि सुनै योग्य शब्दरहित रूपें । मै.
फुसफुसियाएब-क्रि., फूसि कहि क' ठकि देब । मै.
फुसफुसी-सं., अत्यन्त कम जोर सँ बिना शब्दें वायु त्याग करब । मै.
फुसराहटि-सं., परस्पर एकान्तीक वार्तालाप । मै.
फुसलाएब-क्रि., फूसि बाजि क' अपन मत पर लाएब । मै.
फुसियाएब-क्रि., परतारब । मै.
फुसियाह्-विशे., फूसि बजनिहार । मै.
फुहफुह करब-क्रि., १. गौरवें उन्मत्त जकाँ रहब । २. अधिक भोजन कयला पर असविस करब । मै.
फुहराम-विशे., अधिक शीघ्र आ तेजी सँ काज कयनिहार । मै.
फुहार (रा)-सं., मेंही बिन्दु सँ पिचकारी जकाँ पानीक छींटा । मै.
फुहास-सं., फुहारा जकाँ वर्षाक वेग । मै.
फुहियाएब-क्रि., थोड़ थोड़ कनेक काल ले बुन्नी पड़ब । मै.
फुहियाह्-विशे., फूही पड़ैवाला समय । मै.

फू

फूँक-सं., फूकैक प्रक्रिया । तन्त्रमन्त्रें झारैक विधि । मै.
फूँकन-सं., फूकैक विधि वा मुहक बसातक वेग । मै.
फूँकब-क्रि., मुह कें विशेष रूपें चेष्टा दय के जोर सँ वायु छोड़ब । मै.
फूक मारब-क्रि., जोर सँ मुहक बसात छोड़ब । मै.

फू करब-क्रि., फूकिकय परवारैक क्रमें चोट बिसराएब । मै.

फूका फूकी-सं., अधिक आ बारम्बार फूकि फूकि कय आगि प्रज्वलित करैक चेष्टा । मै.

फूकिया-सं., लगातार फूकैत रहैक क्रम । मै.

फूकि देब-क्रि., (लाक्षणिक) व्यर्थ खर्च कय धन कें उड़ा देब । नष्ट क' देब । मै.

फूजब-क्रि., खूजब, स्वतः बन्धन ढील होएब । मै.

फूजा-सं., धान रोपैक समय बीआक आँटी खोलि कय रोपैक पाहि पर देल खूजल बीआक मुट्ठी । मै.

फूट-सं., अलगाओ । विशे., पृथक् । मै.

फूट करब-क्रि., अलग करब । फुटाएब । मै.

फूट देब-क्रि., (लाक्षणिक) विरोध उत्पन्न होइक चेष्टा करब । मै.

फूटब-क्रि., १. भग्न होएब । २. अलग रहब । मै.

फूटि-सं., लत्ती मे फड़ैवाला स्वादिष्ट पेय फल विशेष । मै.

फूटि-सं., १. दलिपुड़ी तथा पिरुकिया आदि पकवान मे भीतर मे देल पदार्थ । विरोध । मै.

फूटे फूटे-अव्यय, अलग अलग । मै.

फूत्कार-सं., मुहक वसातक वेग । मै.

फू फू करब-क्रि., १. अधिक भोजन सँ अकसक करब । २. अधिक उत्तेजित रहब । मै.

फूल-सं., पुष्प । कुसुम । मै.

फूलब-क्रि., विस्तृत भ' क' विकास करब । मै.

फूला-सं., दाह संस्कारक उपरान्त जरल हड्डीक खण्ड । मै.

फूस-सं., लड़वाग एवं घास । मै.

फूसि-सं., मिथ्या, झूठ । मै.

फूसि फटक-सं., फूसि कल्पना सँ गढ़ल बात । गढ़ल फूसि बात । मै.

फूह-सं., लगले सूखि जाइवाला वर्षा तथा सिञ्चन । मै.

फूह खेलाएब-क्रि., उन्मुक्त भ' क' रहब, स्वच्छ भेल रहब । मै.

फूहड़-विशे., अव्यवस्थित विचारवाला । मै.

फूही-सं., सूखि जाइवाला मेघक बुन्नी । मै.

फे

फेंकनिहार-विशे., फेंकैवाला । मै.

फेंक फेंका-सं., एम्हर सँ ओम्हर अधिक नीको वस्तु फेंकैक क्रम । मै.

फेंकब-क्रि., जोर सँ दूर करब । अवहेलना सँ उठा कय दूर हटाएब । मै.

फेंकबाएब-क्रि., अनका द्वारा दूर कराएब । मै.

फेंकलाहा-विशे., उठाकय दूर क' फेंकलवाला । मै.

फेंकाएब-क्रि., फेंकल भ' जाएब । मै.

फेंकान-सं., दूर कय प्रक्षेपण । मै.

फेंकाफेंकी-सं., फेंकि फेंकि कय खेल । मै.

फेंकिया-सं., कूड़ कचरा आदि निरन्तर फेंकैक कार्य । मै.

फेंच-सं., १. साँपक फन । २. बेसी नमहर आ पुर्जा सन मुहक आकृति । मै.

फेंच काढ़ब-क्रि., गहुमनक फणा पसारब । मै.

फेंच नमरब-क्रि., (लाक्षणिक) लज्जा, क्रोध आ पश्चात्ताप सँ मूड़ी झुकब । मै.

फेंचराह-विशे., अधिक नमरल ठोर आ नाकवाला । मै.

फेंट-सं., मिझरौट, मिश्रण, मिलाओट । मै.

फेंट कसब-क्रि., १. पहिरल निचला धोती कें समेटि कय लड़ैक हेतु कन्छी जकाँ कसि कय बान्हब । २. मोरैठा कसिकय बान्हब । मै.

फेंटन-सं. अलग कयल फेंटल वस्तु । मै.

फेंटब-क्रि., मिलाएब, मिझराएब । मै.

फेंटबाएब-क्रि., दोसरा सँ मिझराएब । मै.

फेंटलाहा-विशे., मिझहरवाला । मै.

फेंटा-विशे., आन प्रकारक वस्तु सँ मिझहर । मै.

फेंटा-सं., मोरैठा बन्हैवाला कपड़ा । मै.

फेंटाएब-क्रि., मिश्रित भ' जाएब । मै.

फेंटुआ-विशे., फेंटल आनो वस्तु सब सँ मिलल । मै.

फेंड़-सं., डारि सँ बहराएल गाछक डारि । मै.

फेंड़ा छूटब-क्रि., गाछ मे शाखा सँ प्रशाखा बहराएब । मै.

फेदरति-सं., व्यग्रता भरल चिन्ता फिकिर । उ. तद्भव

फेदा-सं., लाभ, फायदा । उ. तद्भव

फेन-सं.; उपर मे फलकल जल वा दूधक विकार । मै.

फेनन-सं., फेनैक मथैक विशेष प्रक्रिया । मै.

फेनब-क्रि., फेन जकां बनबैक हेतु अधिक मथब । मै.

फेनाएब-क्रि., फेन सँ भरल होएब । मै.

फेनाएल-विशे., फेन भरल । मै.

फेनाह-विशे., फेन सँ छारल । मै.

फेनिल-विशे., फेन मिलल। सं. तत्सम

फेनी-सं., उपर अलगल फेनवाला पानि । मै.

फेनू-अव्यय, फेर, पुनः । मै.

फेफस-सं., तुरन्त काटल अंग मे शोणितहीन फूलल जीवित मांस । मै.

फेर-अव्यय, पुनः । मै.

फेर-सं., १. विपरीत भाग्य । आपत्ति एवं समस्या । २. घुमान । मै.

फेरन-सं., १. बदलिकय छोड़ल वस्त्र आदि । २. घुमबैक, चरफर बनबैक प्रक्रिया । मै.

फेर फेर-अव्यय, बारम्बार । मै.

फेर फेरा-सं., बारम्बार वस्तु कें ल' जाइक आ घुमा दैक क्रम । मै.

फेरब-क्रि., १. ल' जा क' घुमा देब । २. दच्छ, चतुर आ अपन चालि कें व्यवस्थित करैक अभ्यास बनाएब । ३. उनटाएब पुनटाएब । मै.

फेरबाएब-क्रि., अनका हाथें घुमा देब । मै.

फेरल-विशे., अपन काज मे निपुण कएल । अनुभव भरल । मै.

फेर लागब-क्रि., आपत्तिवाला समस्या ठाढ़ होएब । मै.

फेरलाहा-विशे., १. घुमा देलवाला । २. छोड़लहा वस्त्र । मै.

फेरा-सं., १. बारम्बार एक धुरी पर घूमैक क्रम । २. घुमान । ३. लौटादैक चेष्टा । ४. आपत्तिजनक स्थिति । ५. दहिन बरिया बड़द । (हर मे) मै.

फेराएब-क्रि., घुमा क' द' आएब वा पठा देब । मै.

फेरा देब-क्रि.,प्रदक्षिण (परिक्रमा) करब । मै.

फेरान-सं., फेरि दैक तथा घुमादैक क्रम । मै.

फेराफेरी-सं., अदला बदला करैत बोझ (भार) उठाकय ल' जाइक विधि । मै.

फेरि-अव्यय, पुनि । सं., संकटक स्थिति । मै.

फेरी-सं., १. ओझरौटक आ संकटमय परिस्थिति । २. घूमि घूमिकय बेचैक व्यवसाय । मै.

फेरीवाला-विशे., घूमि घूमिकय' बेचैवाला । मै.

फेरी लागब-क्रि., देखू—"फेर लागब" । मै.

फेरुआ-विशे., फिराओल वा फिरबैक योग्य वस्तु । फेरैक योग्य । मै.

फेरैया-विशे., फेरैवाला, प्रौढ़ बनबैवाला । मै.

फेरो-अव्यय, पुनः । मै.

फेरौआ-विशे., फेरिकय प्रस्तुत कयल । घुमा देल । मै.

फेल-विशे., असफल । अं. तत्सम

फेलहा-विशे., असफल भेल । मै.

फेलुआ-विशे., फेल करैवाला । फेल होमैवाला । मै.

फेहम-विशे., सूझि बूझिवाला, प्रौढ़ । मै.

फै

फैर-सं., बैलगाड़ीक मोट आ नमहर भार थम्है-वाला काठक अंग । मै.

फैल-विशे., विस्तृत, पसरल । मै.

फैलगर-विशे., अधिक विस्तृत। मै.

फैलहारी-सं., १. अधिक आ सवतरि प्राप्ति । २. विस्तार । मै.

फैलाह-विशे., विस्तृत वा पसरल सन । मै.

फो

फोंक-विशे., भीतर मे खाली, अन्तःशून्य । मै.

फोंकगर-विशे., उपर सँ फूलल फूलल, भीतर शून्य । मै.

फोंकबा-सं., माछक भीतरक एक अंग । विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त कोमल भ' क' सिद्ध । मै.

फोकट-अव्यय, बिना उद्देश्यक आ लाभक । मै.

फोंकना-विशे., सारहीन, थोथरिवाला । मै.

फोकराइन-विशे., काँच दूधक गन्धवाला । मै.

फोंकल्ब-विशे., भीतर मे खालीवाला । मै.

फोकस-सं., एक सोझें ज्योति पुंज । अं. तत्सम

फोंकहा-विशे., अन्तःशून्य (खाली) रहैवाला । मै.

फोंका-सं., १. रोग सँ वा आगिक ताप सँ उठल देहक चमड़ी पर गोल रंगक फाओ । २. द्रवणशील वस्तुक बुनबुना । ३. मखानक फूलल फूलल रूप । मै.

फोकाएब-क्रि., पाकोक फोँका जकाँ उपर उठब। मखान आदि वस्तुक अधिक फूलब। मै.

फोँकी-सं., धसात दैक यन्त्र। पंप। मै.

फोचकारब-क्रि., उचित सँ बेसी लेपब। मै.

फोटा-सं., तासक लेलक पत्तीक अंक। मै.

फोटार-सं., टीप, टिप्पा। मै.

फोटो-सं., चित्र, छापी। अं. तत्सम

फोड़-सं., भंग करैक चेष्टा। मै.

फोड़ना-सं., भंग करैक साधन। मै.

फोड़ब-क्रि., भंग करब। मै.

फोड़बैया-विशे., भंग करैवाला। मै.

फोड़ा-सं., देहक छोट छोट सक्कत उठल घाओ। मै.

फोड़ाएब-क्रि., भंग कराएब। मै.

फोड़ुआ-विशे., फोड़िकय बनल। मै.

फोता-सं., बढ़ल अण्डकोष। मै.

फोन-सं., दूरभाष। अं. तत्सम

फोंक-सं., निन्न मे नाकक ध्वनि। मै.

फोंक काट-क्रि., निन्न मे जोर सँ नाक द्वारा विकट शब्द करब। मै.

फोंफियाएब-क्रि., साँप आदि जीवक भयंकर शब्द करब। मै.

फोंफी-सं., भीतर ऐ पार सँ ओहि पार धरि शून्य-वाला बाँस आदिक खन्टी। मै.

फोँ फोँ करब-क्रि., क्रोध सँ तथा अधिक भोजन कय अकसक भेला सँ साँपक क्रोधित भ' क' फोंफ कटै-सन स्वास फेंकब। मै.

फोम-सं., आधुनिक रासायनिक द्रव्य। अं. तत्सम

फोरन-सं., खाद्य पदार्थ बनबैक समय तेल अरबैक हेतु मसाला जीर मेथी आदि। मै.

फोल-सं., कोनो गोल वस्तुक भीतरक शून्य स्थान। मै.

फोलब-क्रि., देखू—"खोलब"। मै.

फोंसरी-सं., छोट छोट अर्थात् मेंही मेंही चमड़ा पर उगल मांस बिन्दु। मै.

फोंसरी फोड़ि भोकन्नर करब-क्रि., (लाक्षणिक) साधारण बात कें बेधारि कय भयंकर बनाएब। मै.

फौ

फौज-सं., हुँसेरी, झुण्ड, सेना। उ. तत्सम

फौती-सं., मरकी, महामारी। मै.

फौब-विशे., बढ़ैवाला। मै.

फौदाएब-क्रि., बढ़ि क' नीरोग रहैत उपर मुहेँ उठब। बर्धिष्णु होएब। मै.

फौदार-विशे., समाजक बीच प्रभावशाली। मै.

फौदारी-सं., प्रशासनिक न्याय विभाग। फौजदारी। प्रशासनिक निर्णय। अं. तद्भव/मै.

फौरसा-सं., परशु, अस्त्र विशेष। मै.

ब

बक्!-अव्यय, कोनो बात पर घृणात्म निषेध। मै.

बककर-सं., विदेशी बड़की बकरी। मै.

बककस-सं., बकना, बौकय सन्दूक। अं. तद्भव

बकखो-सं., घरेँ घरेँ जाकए दम्पती गाबि कय भीख मङैवाला जाति। स्त्री० बखोनी। मै.

बक-सं., श्वेत पक्षी विशेष। मै.

बकछुछक खेलाएब-क्रि. खाकर खिटका कें पानि पर छछला कय खेलाएब। मै.

बकछुहुल लागब-क्रि., अत्यन्त अनकर बात होएब। मै.

बकझक-सं., विरोधक वाद विवाद। मै.

बकझोंझी-अव्यय, छोट बच्चा कें पीठ पर लादिकय एहि शब्दें मनोरंजन। मै.

बकटेंट/बकटेटहा/बकटेटही-विशे., शरीरें टेढ़ मेढ़ तथा प्रचण्ड मूर्ख। मै.

बकटेंटाह-विशे., शरीर बुद्धिधरि संतुलनहीन। मै.

बकठाई-सं., बाधा दय ढ़ें-मतिरोध, बाधा। मै.

बकतम्-सं., कथन। प्रयोग—"लिखतं आगू बकतं मै होए।" मै.

बकतब-क्रि., एकविगाहे बजैत जाएब। मै.

बकतब-विशे., वक्तव्य, बजैक योग्य। सं. तद्भव

बकताएब-क्रि., बुद्धिगत बात बजाएब। मै.

बकलुति-सं., व्यर्थ विवाद। मै.

बकतौआ-विशे., बजैक योग्य। मै.

बकनाएब-क्रि., रुकि जाएब बन्न भ' जाएब। मै.

बकनेड़-विशे., बिना बूझैवाला बिना बजैक बुड़ि-वाला बुड़ि। मै.

बकब-क्रि., अन्ट सन्ट बाजब, गंजन करब। मै.

बकबक करब-क्रि., अनेरो प्रसंगहीन बात बजैत रहब। मै.

बकबकाएब-क्रि., सक्कत सँ पकड़ब। मै.

बकबकाकय धरब-क्रि., कसिकय पकड़ब। मै.

बकवाई-अव्यय, दूर धुनैकाल धुनकीक ध्वनि । मै.
बक बुड़यने कुरेर-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) बुड़ भेला पर ककरो नहि सोहाइवाला । मै.
बकर बकर-अव्यय, अपलक दर्शन । मै.
बकरा-सं., पुरुष बकरी जाति । मै.
बंकरा-विशे., अत्यन्त झगड़ाहु, झगड़ा करै मे हरदम सब सँ आगु रहैवाला । मै.
बकरिहारा-विशे., बकरीक व्यवसाय करैवाला । मै.
बकरी-सं., बकरी नामक स्त्री पशु । मै.
बकलेल-विशे., बिना कहि आ बुझिवाला मूर्ख । मै.
बकलेलक टाड़ी-विशे., (लाक्षणिक) कोनो बात मस्तिष्क मे नै पैसैवाला मूर्ख । मै.
बकलेलहा-विशे., (अनादर मे) ज्ञान ध्यानहीन मूर्ख । मै.
बकलेलाह-विशे., अत्यन्त बेबुझ । मै.
बकलोल-विशे., बकैक आ बुझैक बेर मे कहुलो पर बक जकाँ टकक लगाकय देखनिहार । मै.
बकवास-सं., अनेर बातक वाद विवाद । मै.
बकसब-क्रि., अभय दान देब । मै.
बकसाएब-क्रि., अभयदान दियाएब । मै.
बँकहिया रहब-विशे., शेष बाँचल होएब । मै.
बकाइन-सं., बनैया औषध विशेष । मै.
बकार-सं., मनुष्यक बोल । मै.
बकार फूटब-क्रि., मुह सँ स्पष्ट बोल बहराएब । मै.
बकारा-सं., भविष्यक हेतु कयल सत्य वचन । भविष्यक वाणी । मै.
बंकाबीर-विशे., बहादुर, अत्यन्त शौर्यशाली । मै.
बँकिऔता-विशे., पहिलुक बाँकी बाँचल । मै.
बकुच्चा-सं., मनुष्यक पीठ पर कयल लाद । मै.
बकुची-सं., औषध विशेष । मै.
बकुटब-क्रि., हाथ सँ कसिकय पकड़ब । मै.
बकुटी-सं., हाथक मुट्ठी प्रमाण । मै.
बकुल-सं., फूल विशेष । मै.
बकेन-विशे., अधिक दिनुक वियाएलि बगहुरि माल । मै.
बकेनिया-विशे., अधिक दिनुक वियलो पर लगैत रहैवाली गै महिस । मै.
बकैत-विशे., अनेर बकबक करैत रहैवाला । मै.
बकोचनि-सं., मुह मे अधिक ठूँसैक चेष्टा । मै.
बकोचब-क्रि., संकीर्ण स्थान मे अधिक ठूँसब । मै.
बखरा-सं., हिस्सा, भाग, अंश । मै.
बखलोइआ-सं., कोनो वस्तुक उपरक सक्कत छारल चमड़ा, खोँइचा । मै.
बखान-सं., विस्तारपूर्वक वर्णन । मै.
बखानब-क्रि., विस्तारपूर्वक वर्णन करब । मै.
बखार-सं., बड़का अन्न भण्डार । मै.
बखारी-सं., अन्न रखैक छप्परवाला छोट स्थान । मै.
बखिया-सं., हाथ सँ कपड़ाक सीबैक ढंग । मै.
बखियान-सं., हाथ सँ कपड़ा सीबैक विशेषता । मै.
बखियाएब-क्रि., हाथ सँ सीयब । मै.
बखेड़ा-सं., झंझट, आपत्ति, विरोध बाधा । मै.
बखेड़िया-विशे., झंझटिया, विरोध ठाढ़ करैवाला । मै.
बखोड़-सं., केराक थम्हक तह । मै.
बखोनी-विशे., बक्खोक स्त्री । मै.
बखोब-विशे., मालजालक रोगक अस्त्र सँ औषधी करैवाला । मै.
बग्गी-सं., विशेष प्रकारक घोड़ागाड़ी । मै.
बग्घा लागब-क्रि., अंगक शक्तिहीन भेला सँ संचार मे विवश होएब । मै.
बंगट-विशे., उद्दण्ड उपद्रावक । मै.
बगदब-क्रि., बिगड़ब, बताह होएब, उत्तेजित बनब । मै.
बगबग करब-क्रि., स्पष्ट झलकब, समूह मे होएब । मै.
बगबगाएब-क्रि., स्पष्ट देखार होएब । मै.
बगबार-विशे., गाछी, कलम (बाग) क रक्षक । मै.
बगबारि-सं., १. गाछी कलमक रक्षाक भार । २. बागक रक्षाक पारिश्रमिक । मै.
बगय-सं., आकृति, रूप । मै.
बगयबानि-सं., छवि छटा, रूप रंग । मै.
बगरा-सं., पक्षि विशेष । छोट पक्षी । मै.
बगराएब-क्रि., समूहक विथरिकय पसरब । मै.
बगल-सं., एक कात, एक किनार । उ. तत्सम
बगलबन्दी-सं., प्राचीन अंगा विशेष । उ. तत्सम
बगलब-क्रि., कात होएब । मै.
बगलाएब-क्रि., एक दिश करब । मै.

बगलामुखी-सं., दस महाविद्याक एक महाविद्या । मै.
बगहा-विशे., बाओग कयलवाला फसिल । मै.
बगान-सं., फुलवाड़ी । मै.
बगिआ-सं., छोट गाछी वा कलम । मै.
बगिया-सं., चाउरक चिकसक खाद्यान्न विशेष । मै.
बगुल्ली-सं., छोट धातुक बर्तन । मै.
बगुनी-विशे., टेढ़ कुढ़ङ्ग फल । मै.
बगुला-सं., पैघ गर्दनिवाला बक । मै.
बगुली-सं., छोट जालीवाला बटुआ । मै.
बगुना-सं., धातुक बड़का बर्तन । मै.
बगुर-सं., बबूर, काँटवाला वनस्पति । मै.
बगेरी-सं., देखू—"फलका" । मै.
बघछाला-सं., बाघक छालक वस्त्र वा आसन । मै.
बघज्वर-सं., बाघक डर वा आघात सँ भेल ज्वर । मै.
बघण्डी-सं., छोटका वनस्पति विशेष । मै.
बघदुलार-सं., बाघ जकाँ नोचि पटकि कँ दुलार । मै.
बघनखा-सं., १. बाघक नहक बनल गुप्त अस्त्र । २. बाघक नहक अलंकार । मै.
बघवा-सं., बाघ । विशे., (लाक्षणिक) बाघ जकाँ भयंकर हिंसक । मै.
बघम्बर-सं. बाघक छाल (चमड़ा) क वस्त्र । मै.
बघमुहाँ-विशे., बाघ जकाँ भयंकर आ कुरूप मुहवाला । मै.
बगहा सँपहा-सं., बाघ आ साँप सँ मुइल लोकक मृत्युक तिथिक पितृपक्षक कर्म । मै.
बघार-सं., अपन महत्त्वक प्रकाश । मै.
बघारब-क्रि., अपन महान होयबाक बड़ाइ करब । मै.
बघुआएब-क्रि., बाघ जकाँ घात करैक ध्येय सँ कोढ़ें ताकब । मै.
बघेड़ा-सं., सवारी करैवाला पशु, याक । मै.
बघेला-सं., चीता, बाघ । छोटका बाघ । मै.
बङ्ग-सं., एक प्रदेश विशेष । सं. तत्सम
बङ्गाल-सं., देखू—"बङ्ग" । मै.
बङ्गाली-विशे., बंगालक लोक । मै.
बङ्गोपसागर-सं., बङ्गालक खाड़ी । सं. तत्सम
बङ्टाह-विशे., उपद्रावी, निर्भय उत्पाती । मै.
बङलभुट्ठा-विशे., अत्यन्त भुट्ठ तथा मोटगर । मै.
बङला-सं., ओसाराक चारू चार सँ अलग ऊपर चारू चारवाला घर । मै.
बङलाही-सं., लाल फलवाला काँटवाला बनैया लती विशेष । मै.
बङाला-सं., बाङ्गलादेश, पूर्वी बंगाल । मै.
बङौर-सं., बाड़ (कपास) क बीया । मै.
बचवा-विशे., शिशु । मै.
बच्चादानी-सं., गर्भाशय । मै.
बचबू-विशे., डरबैक आ धमकबैक समक सम्बोधन । मै.
बच्छा-सं., गाइक पुरुष बच्चा (नेरू) । मै.
बच-सं., कफक प्रकोपक औषध विशेष । मै.
बचकानी-विशे., बच्चाक प्रकृतिक समान । मै.
बचत-सं., बचबैक (जमा रखबैक) प्रवृत्ति । मै.
बचन्ता-सं., बचैक स्थिति, धनक जमा करैक स्थिति । मै.
बचपन-सं., बच्चाक गुण । मै.
बचब-क्रि., व्यय (खर्च) सँ अवशेष होएब । मै.
बँचब-क्रि., जीवित रहब, सुरक्षित रहब । मै.
बचवा-सं., माछ विशेष । मै.
बचबाएब-क्रि., पढ़बाएब, व्यय सँ धन केँ अवशिष्ट कराएब, सुरक्षित कराएब । मै.
बचलहा-विशे., खर्च सँ बाँचलवाला । मै.
बचाएब-क्रि., १. सुरक्षित बनाएब । २. धन सँ किछु कय जमा करब, शेष राखब । मै.
बचाओ-सं., बचबैक, रक्षा करैक चेष्टा । मै.
बचाम बचब-क्रि., अत्यन्त विकट स्थिति सँ सुरक्षित होएब । मै.
बचौआ-विशे., शेष बचाकय राखल । मै.
बछड़ा-सं., दूध छोड़ि दैवाला पुरुष नेरू । मै.
बछबाएब-क्रि., बीछि बीछि कय नीक अधलाहक विभाजन कराएब । मै.
बछरू-सं., नेरू । (गाइक कोनो बच्चा) मै.
बछलहा-विशे., बीछिकय अलग कयलहा । मै.
बछिया-सं., गाइक स्त्री नेरू । मै.
बछुआ-विशे., नीक बीछि लेला पर बचल अधलाह । मै.
बछेड़ा-सं., घोड़ाक पुरुष बच्चा । मै.

बझौरा-विशे., छोट खाँटक तेज माल एवं पोढ़ा । मै.

बज्जर-विशे., अत्यन्त सक्कत । वज्र । सं. तद्भव

बज्जा-विशे., बाजि उठैवाला । मै.

बज्झा-विशे., बझवैवाला । मै.

बज्र-सं., ठनका, बिजुरीक पतन । सं. तत्सम

बजक्कड़-विशे., विशेष बजैक प्रकृतिवाला । मै.

बजट-सं., योजनाक निर्धारित खर्च । अं. तद्भव

बजड़ा-सं., १. अन्न विशेष । २. असन्तुलित पतन । मै.

बजड़ाबजड़ी-सं., एक दोसराक पटकैक खेल । मै.

बजन्ता-विशे., अधिक बजैवाला । मै.

बजना-विशे., बजबैक प्रयास कयला पर बजैवाला । बजनिहार । मै.

बजनियाँ-विशे., बाजा बजौनिहार । ढोल पिपही बजबैवाला । मै.

बजब-क्रि., अपनैं बाजि उठब । मै.

बजबज-विशे., सड़ैक क्रम मे सरता आ बेसी फूलल घृणा उत्पन्न करैवाला । मै.

बजबजाएब-क्रि., सड़ैक क्रम मे अधिक आर्द्र आ फूलि उठब । मै.

बजबजी-सं., बजबज होइक गुण । मै.

बजबाएब-क्रि., बजैक प्रेरणा करब । मै.

बजबैया-विशे., बजबैवाला । मै.

बंजर-विशे., बिना जोत कोड़क भूमि । मै.

बजर-सं., सक्कत । कड़ा । मै.

बजरकेराइ-सं., वनस्पति विशेष । मै.

बजरगेंठ-सं., अत्यन्त सक्कत बन्हन । मै.

बजरब-क्रि., उपस्थित होएब । प्रयोग—"हम दुनू गप्पे करैत रही बतहु तखनै बजरि गेला ।" मै.

बजरबट्टू-सं., ताड़क फल । मै.

बजरम बजड़ा-सं., परस्पर बजाड़ि बजाड़ि कय झगड़ा । मै.

बजरुआ-विशे., बजार सँ कीनल वस्तु । मै.

बजाएब-क्रि., शब्द अथवा ध्वनि बहार करब । मै.

बजाँटी-विशे., अधिक दिनक भेली पर ने बढ़ैवाला ने बुढ़ैवाला । मै.

बजाणी-विशे., अत्यन्त सक्कत । मै.

बजार-सं., नगर रूपेँ व्यवस्थित अनेक बहुतरास वस्तु सभक कीनैक हुर धरि पसरल सामूहिक स्थान । स्थायी हाट । मै.

बजारू-विशे. बजार मे रहैवाला आ होइवाला । मै.

बजे-अव्यय, समयक मानक अनुसार । मै.

बझौआ-विशे., बझबैक स्थिति उत्पन्न करैवाला । मै.

बझौना-सं., बझबैक वस्तु । मै.

बझब-क्रि., १. ओझरा जाएब । २. झगड़ाक कोनो विवाद उठब । मै.

बझलहा-विशे., विवाद मे पड़ल, अनिर्णय मे राखल । मै.

बझाएब-क्रि., १. फँसाएब, ओझरा देब । २. भावनात्मक रूपेँ आकर्षित क' लेब । मै.

बझान-सं., ओझरौट, फाँस । आपस मे दू व्यक्तिक संकल्प विकल्पक स्थिति । मै.

बँझिनियाँ-विशे., (अनादर मे) वन्ध्या स्त्री । मै.

बँझिया-सं., बाँझीक ठहुरी । मै.

बझौआ-विशे., क्रिया वा बुद्धि सँ फँसाकय आनल । मै.

बँझौनी-सं., बेझबैक प्रक्रिया । मै.

बञ्चना-सं., ठकैक प्रकृति । सं. तत्सम

बट्टम-सं., अंगाक मुह जोड़ैक चापट छोट वस्तु । अं. तद्भव

बट्टा-सं., १. बड़का कटोरा । २. घट्टी । ३. कमी । ४. अशुद्धि । मै.

बट्टा लागब-क्रि., १. घटी होएब । २. अप्रतिष्ठा होएब । मै.

बट्टी-सं., हाट बजारक भूमि पति कें दोकानदारक देय कर । मै.

बट्ट्क-सं., काँसक रन्हा गोल बर्तन । मै.

बट-सं., १. मार्ग । २. बटवारा । ३. बड़क गाछ । सं. तत्सम/मै.

बटकड़वा-विशे., मार्गदर्शक । मै.

बटकर-सं., काँच दानावाला केराओ बदामक तीमन विशेष । मै.

बटखर्चा-सं., बाट मे खर्च करैक द्रव्य । मै.

बटगबनी-सं., बाट चलैत गबैक गीत विशेष । मै.

बटगमनी-सं., अभिसारिका । मै.
बँटब-क्रि., विभाजित होएब । मै.
बटवा-सं., हीन बाट । मै.
बटवार-विशे., बाट मे उत्पात करैवाला । मै.
बँटवारा-सं., विभाजन, फाँट । मै.
बटवारि-सं., बटोहीक बाटक उपद्रव । मै.
बटवैया-विशे., बाँटैवाला, बाँटिक' लैवाला । मै.
बटमारि-सं., बाटें बाटें चलैत मारि । मै.
बटलोही-सं., पित्तरिक पातर आ छोट बर्तन । मै.
बटाइ-सं., खेतक आधा उपजा दैक करार पर किसान कें खेत देबाक नियम । मै.
बटाइदार-विशे., उपजाक आधा बाँटि कय दैक कहावदी पर खेत जोति उपज'बैवाला । मै.
बँटाएब-क्रि., १. अपन (आधा) हिस्सा बहार कय अलग क' लेब । २. लोक सब मे वितरण कराएब । ३. भत्ता देयाकय डोरी बनवाएब । मै.
बँटाओन-सं., डोरी मे पाक दय डोरी बनबैक योनि । मै.
बटान-सं., १. वितरण करैक सिलसिला । २. डोरि बँटैक विशेषता । ३. हिस्सा अलग करैक क्रम । मै.
बटावटी-सं., प्रतीक्षा । प्रयोग-"कती काल सँ ने हम अहाँक बटावटी मे बैसल छी ।" मै.
बटाम-सं., १. देखू—"बटुम" । २. बरही मिस्त्रीक सोझ रेखा करैक अस्त्र । मै.
बटारी-सं., बरही मिस्त्रीक लकड़ीक छेद कें चिक्कन करैक अस्त्र विशेष । मै.
बटिखारा-सं., तौलै जोखैक मानक एकाइ । मै.
बटियारी-सं., नीचल अर्थात् ढाओं कयल बाट । मै.
बटी-सं., औषधक गोली । प्रयोग—"गोहामवटी ।" सं. तत्सम
बटुआ-सं., हृथलग्गू छोट थोकड़ी (बैग, पर्स) । मै.
बटुक-विशे., किशोर वयसवाला । सं. तत्सम
बटेर-सं., पक्षी विशेष । मै.
बटेदारी-सं., आधा बाँटिकय खेतक स्वामी कें उपजा देवाला किसानक खेती । मै.
बटैया-सं., देखू—"बटाइ" । मै.
बटोरब-क्रि., बीछि बीछि कय एकट्ठा करब । मै.
बटोही-विशे., बाट पर चलैत रहैवाला, पथिक । मै.
बँटौआ-विशे., १. बाँटि (विभाजन कय) प्राप्त । २. गुन (पाक) लगा क' बाँटल डोरी । मै.
बड्ड/बड्डें-विशे., अत्यधिक । मै.
बड़्डी-विशे., उचित सँ बेसी बढ़िकय शेष बाँचल । मै.
बड़-विशे., १. बहुत, अधिक । २. वनस्पति विशेष । मै.
बड़-सं., बेसनक बनल तरुआ तरकारी । मै.
बड़का-विशे., पैघ, महान्, विशाल । स्त्री० बड़की । मै.
बड़द-सं., हर, गाड़ मे जोतल जाइवाला पुरुष गोजाति । मै.
बड़दवार-विशे., बड़द चरबैवाला । मै.
बड़वहाला-विशे., अगिन कोनक हवा । मै.
बड़प्पन-सं., महत्त्वक प्रदर्शन । मै.
बड़बड़ करब/बड़बड़ाएब-क्रि., निरर्थक प्रलाप करब । मै.
बड़बड़ैनी-सं., विशेष रूपें बड़बड़ाइक स्वभाव । मै.
बड़र (रै)-सं., युवावस्था मे बहराएल मुह पर फोंसरी । मै.
बड़री-सं., कमल फूलक आ कुसुम फूलक फड़ । मै.
बड़रुख-सं., बड़क गाछक नमरल जटा जकाँ सीर । मै.
बड़हर-सं., अमजिहुल फलवाला वनस्पति । मै.
बड़ड़ा-सं., बड़का बड़ । मै.
बड़ाइ-सं., प्रशंसा, पैघताक गुण । मै.
बड़ारी-विशे., भरैतवाली भूमि । मै.
बड़िजना-विशे., बन्हुआ श्रमिक, मजूर । मै.
बड़िया-सं., औषधक टिकिया । गोली । मै.
बँड़ी-सं., १. घरक दूनू चारक आधारवाला नमहर गोल काठ वा बाँस । २. अत्यन्त छोट बँड़ । मै.
बड़ीखन-अव्यय, बहुत विलम्ब । बहुत देर । मै.
बड़ी मोइ-सं., जड़ीबूटीवाला औषध विशेष । मै.
बड़ुका-सं., माटिक छोट लोटकीक आकार प्रकार वाला बासन । मै.
बड़े-अव्यय, बहुत । मै.
बड़ेरी-सं., देखू—"बड़ी" । मै.
बढ़न्ती-सं., उन्नति । अभ्युदय । मै.
बढ़ना-विशे., बढ़ैक योग्य । मै.
बढ़नुक-विशे., बढ़ैक प्रकृतिवाला । मै.

बढ़ब-क्रि., उन्नति करब, पसरब, विस्तृत बनब । मै.

बढ़लहा-विशे., बढ़लवाला । मै.

बढ़ाएब-क्रि., उपर उठाएब, आगू करब, उन्नति कराएब । मै.

बढ़ावा-सं., बढ़ैक आशा, बढ़ै मे छूट, बढ़बाक सहायता । मै.

बढ़ार-सं., घर बढ़ारैक काज । मै.

बढ़ारन-सं., बढ़ारि जमा कयल गर्दीस । मै.

बढ़ारब-क्रि., बाढ़नि सँ झारि स्थान कें स्वच्छ करब । मै.

बढ़िआएब-क्रि., निश्चित सँ बेसी भ' जाएब । मै.

बढ़ियाँ-विशे., नीक, बेश, उत्तम । मै.

बढ़ुआ-विशे., अधिक भेल । बढ़िकय बेसी बनल । मै.

बढ़ोतरा-विशे., बढ़िकय निश्चित सँ अधिकवाला । मै.

बढ़ौआ-विशे., बढ़लवाला । मै.

बढ़ौतरी-सं., वृद्धि । मै.

बतक-सं., पक्षी विशेष । मै.

बत्ती-सं., १. बाँसक पातर चीरा । २. दीपक टेमी । मै.

बत्तीस-संख्या, दू एकाइ तीन दहाँइक अंक । मै.

बत्तीसा-विशे., बत्तीस छिमड़िवाला केरा । मै.

बत्तू-सं., बकरी कें गर्भधारण करबैवाला छोड़ल बकरा । मै.

बतकट-विशे., बात कें कटैक अभ्यासवाला । मै.

बतकहाँ-सं., नहूँ नहूँ अधिक गप । मै.

बतकही-सं., उलहन उपदरवाला गप । मै.

बतकुट्टनि/ बतकुटौवलि-सं., व्यर्थ विवाद । वितण्डा वाद । मै.

बतगड़हा-विशे., अपन कल्पना सँ बात बनाकय गप कहनिहार । मै.

बतगढ़ुआ-विशे., गढ़ि गढ़ि बात बजैवाला । मै.

बतङ्डर-सं., बढ़ि क' भयावह बनल साधारणो बात । मै.

बतखोयरि-सं., छोटो बात कें विस्तार करब । गुप्तो बात कें खोधि खोधि खोलैक चेष्टा । मै.

बतबैया-विशे., बुझबैवाला । मै.

बतमारि-सं., मर्म पर बातक आघात । बातक चोट । मै.

बतरख-सं., बाती कें तानि कें रखैवाला बाँसक छेद-वाला फाँक । मै.

बतसू-सं., डोरी पैसबैक हेतु बातीक बनल मुद्दा । मै.

बतहुनरू-विशे., बताह् जकाँ स्वच्छन्द अन्ट सन्ट आचरण कयनिहार । मै.

बतहा-विशे., बताह् जकाँ चालि रखनिहार । स्त्री० बतही । मै.

बतहिया-विशे., बताहक गुणवाली स्त्री । मै.

बताएब-क्रि., बुझाएब, सिखाएब । मै.

बताओन-सं., अभिनय, कलापूर्ण अंगक चालन । मै.

बतारी-विशे., समान वयसवाला । मै.

बतास-सं., वातावरण, बसात, बसातक बाट । मै.

बतासा-सं., फोका सन बनाओल चीनीक मधुर । मै.

बताह्-विशे.,उमतल । ज्ञान ध्यान शून्य । पागल । मै.

बतिया-विशे., बहराएल मात्र फल, अत्यन्त कम वयसक फल । मै.

बतियाएब-क्रि., १. बत्ती बनाएब । २. गप करब । ३. बाओग करैक योग्य खेतक माटि कें कोमल करब । मै.

बतियान-सं., बाओग करैक योग्य खेत कें कोमल करैक विधि । मै.

बतिहर-सं., पाओपोस मे देबाक योग्य कनड़ाक बाती । मै.

बतुआएब-क्रि., बतू जकाँ जोआएल होएब । मै.

बतुलाएब-क्रि., हिलडोल करैत ढेकीक चोट पड़ब । मै.

बथनियाँ-विशे., मालजालक चरैक हेतु चलता फिरता बथान बनबैवाला । मै.

बथान-सं., मालजाल बन्हैक स्थान । मै.

बथानी-विशे., बथानवाला । मै.

बथुआ-सं., १. साग विशेष । २. भदैया आम । मै.

बद्दी-सं., वचन क' प्रमाण । मै.

बद्धी-सं., रक्षा सूत्र, देव प्रसादवाला सूत । मै.

बद-विशे., दुष्ट, उपद्रावक, उत्पाती । उ. तत्सम/मै.

बदखाह-विशे., विरोधी मानिकय तिरस्कृत। उ. तद्भव

बदन-सं., मुह। मै.

बदनाम-विशे., दुर्नामी। कलंकित। उ. तत्सम/मै.

बदब-क्रि., शब्द द्वारा हृदयक भाव प्रकट करब। मै.

बदमासी-सं., कुटबुद्धि सँ दुष्टताक व्यवहार। बदमस्ती। उ. तद्भव

बदरियाह-विशे., बदरीक लक्षणवाला। मै.

बदरी-सं., मेघ छारल बुन्ना बुन्नी वर्षा। मै.

बदल-विशे., स्थानापन्न, एकक अभावक पूर्ति करैवाला दोसर। मै.

बदलन-सं., हेरफेर करैक प्रक्रिया। मै.

बदला-सं., ओजी एकक स्थान पर दोसर। मै.

बदला बदली-सं., परस्पर विनिमय, हेराफेरी। मै.

बदली-सं., एकठाँ सँ दोसर ठाँ फेरैक विधि। मै.

बदलुआ-विशे., बदला कयल। मै.

बदलेन-सं., एकक बदला मे लेल दोसर वस्तु। मै.

बदाएब-क्रि., कहाएब। मै.

बदाम-सं., चना, काबुली। मै.

बदामी-सं., बदामक रंग। मै.

बदि-सं., कृष्ण पक्ष। मै.

बदियल-विशे., बिगड़ैल, बदमाश। मै.

बध-सं., हत्या। सं. तत्सम

बधना-सं., मुसलमानक जलपात्र। मै.

बधबारि-सं., उपजल बाधक रक्षाक भार। मै.

बधहा-सं., डोरीवाला खड़ाओं। मै.

बधाइ-सं., धन्यवाद, आनन्दवर्धन। मै.

बधिक-विशे., बध करैवाला, हत्या करैवाला। मै.

बधिया-सं.; नपुंसकता, प्रजनन शक्तिक नाश। मै.

बधैया-सं., आनन्दवर्धनक प्रदर्शन। मै.

बन्टाढार करब-क्रि., नीकक स्थान मे सत्यनाश करब। मै.

बन्द-विशे., जकड़ल, मूनल। मै.

बन्दी-विशे., निगड़ (बेड़ी) मे बान्हल जहलक दण्डभागी। सं. तत्सम

बन्दूक-सं., दूरघाती आग्नेयास्त्र। मै.

बन्ध-सं., बन्धन, बन्हैक रूप। सं. तत्सम

बन्धक-विशे., कोनो विशेष नियमक अन्तर्गत द्रव्य (धातुक वस्तु) राखि कय लेल ऋण अर्थात् ऋणक विश्वासक रूपें देल धातुक वस्तु। मै.

बन्धकी-सं., बन्धक रखैक रीति। मै.

बन्धन-सं., बन्हैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

बन्न-विशे., निमीलन, देखू—"बन्द"। मै.

बन्हक-विशे., देखू—"बन्धक"। मै.

बन्हा-विशे., बान्हल रहैक प्रकृतिवाला। मै.

बन्हिसार-सं., जहल, जेल, कारागार। मै.

बन्हेज-सं., नियमक बन्धन। मै.

बन्होटा-विशे., हरदम बान्हल रहैवाला। मै.

बम-सं., हाथक चूड़ी लहठीक आगू सबकत मोट चूड़ी। मै.

बनब-क्रि., १. अपन ढंग छोड़ि दोसर ढंग धरब। २. रचल जाएब। मै.

बनबाएब-क्रि., रचाएब। मै.

बनरनी-सं., बानरक स्त्री जाति। मै.

बनरफांस-सं., १. बानर कें बझबैक यन्त्र। २. बन्धन विशेष। मै.

बनरबझा-सं., बानर बझबैक संयन्त्र। मै.

बनरमाछी-सं., गाछ पर रहैवाली माछी विशेष। मै.

बनरा-सं., (अनादर मे) बानर। मै.

बनसी-सं., माछ फंसबैक डोरी मे बान्हल लोहक पातर कमानीक छोट अस्त्र। मै.

बनसोह-सं., बनक छायाक शीतलता, बनक ओत। मै.

बनहुलुक-सं., बनैया छोट जीवक प्रभेद। मै.

बनाइ-सं., बनबैक पारिश्रमिक। मै.

बनाएब-क्रि., रचना करब। मै.

बनाओ-सं., परस्पर एकता, मेल। मै.

बनाओन-सं., बनबैक योनि। मै.

बनाओन सोनाओन-सं., कोनो वस्तु सँ सार भाग लँ लेला पर निरसल निकृष्ट भाग। मै.

बनिजारा-सं., १. भ्रमणशील। २. मूर्तिभंजक। मै.

बनिजारी-सं., मालजालक गर्दा मे बन्हैवाला डोरी। मै.

बनियाँ-विशे., वाणिज्य व्यवसाय करैवाला। मै.

बनियाइन-सं., १. आढ़ी (गञ्जी)। २. बनियाँक पत्नी। मै.

बनियौटी-सं., बनियाक मोल मोलाइ, दाम तोड़ैक नोकझोंक। मै.

बनौज-सं., एकठाँ सँ कीनिकय दोसर ठाँ विक्री। मै.

बनैया-विशे., वन मे जन्मैवाला आ रहैवाला। मै.

बनैल-विशे., वनवासी, नगरक अज्ञानी। मै.

बनैला-विशे., वन मे भेनिहार आ रहनिहार। मै.

बनौआ-विशे., बनाकय, रचिकय प्रस्तुत कयल। मै.

बनौतरी-विशे., अपना दिश सँ गढ़ल बात। मै.

बनौनिहार-विशे., बनबैवाला। मै.

बप्-अव्यय, डाँटैक आ विरोध करैक शब्द। मै.

बप्पाबैरी-सं., बापैक समय सँ अबैत विरोध। मै.

बपकोरा-सं., बापक अंक। मै.

बपमुह-विशे., बापक मुहसन मुहवाला बेटा। मै.

बपलहरि-विशे., बापैक कोरा जाइक बच्चाक झोंक। मै.

बपहारि काटब-क्रि., बाप रौ बाप करब। मै.

बपहिया-सं., गारि विशेष; जन्म दैवाला सँ भिन्न बाप। मै.

बपाइँ बपाइँ-अव्यय, भय आ आपत्ति मे बाप बाप करैक ध्वनि। मै.

बपौती-विशे., कुल पम्परा सँ अबैवाला। मै.

बब्बर-सं., बड़का बाप। मै.

बंबखेड़ा-सं., बिच्चहि मे देल आपत्ति, बाधा। मै.

बबब-क्रि., बाओग करब, खेत मे बीआ छीटब। मै.

बबुआ-विशे., अत्यन्त दुलारू नेना। मै.

बबुआन-विशे., जमीन्दार, विलासी सामन्त। मै.

बबुआनी-सं., सामन्ती। मै.

बबूर-सं., नमहर काँटवाला वनस्पति। मै.

बभनगामा-विशे., ब्राह्मणक अधिकतावाला गाम। मै.

बभनगोष्ठी-सं., ब्राह्मणैक प्रभाव। मै.

बभनटोली-सं., ब्राह्मणक टोल, बस्ती। मै.

बभनभोज-सं., ब्राह्मण भोजन। मै.

बभना-विशे., अनादरणीय ब्राह्मण। मै.

बभनाह-विशे., केवल ब्राह्मणैक छूबैक योग्य। मै.

बभनियाँ-विशे., अनादरणीय ब्राह्मणी। मै.

बभनी-सं., धानक गाछ मे लगैवाला रोग विशेष। मै.

बभनैठी-सं., ब्राह्मणक दाबी। मै.

बभनौज-सं., ब्राह्मणक जोरगरीक दाबी। मै.

बभनौती-सं., ब्राह्मणक आचारक आडम्बर। मै.

बम्मा-सं., आकाश लागल नाम आ गोल भीतर फोंक लोहाक धुआँ फेकैवाला यन्त्रक अंग। चिमनी। मै.

बम्मा देब-क्रि., अत्यन्त जोर सँ यन्त्र वा कारखानाक ध्वनि होएब। मै.

बम-सं., शंकर आराधनाक प्रणव (ओंकार) क अनुकल्प। बम बैद्यनाथ। मै.

बम-विशे., बैद्यनाथक उपासनाक हेतु गंगाजल लय गेनिहार तीर्थयात्री। मै.

बमक-सं., अनेक बेर टोकला पर एकै बेर खूब जोर सँ बाजि उठैक प्रकृति। मै.

बमकन्होर-विशे., बामा कात झुकल कनहोरवाला। मै.

बमकब-क्रि., आदि सँ चुप रहि अन्त मे खूब जोर सँ बाजि उठब। मै.

बमकाह-विशे., बमकैक प्रकृतिवाला। मै.

बमकी-सं., बमकैक प्रकृति। मै.

बमगोला-सं., आग्नेय प्रक्षेपास्त्र विशेष। मै.

बमछब-क्रि., कोधेँ गरजि उठब। मै.

बमण्डर-सं., बवण्डर, चक्रवात। हि. तद्भव

बमन-सं., औक, रद्द, उल्टी। सं. तत्सम

बमरोटिया-सं., बामा हाथेँ काज करैक प्रकृति। मै.

बमहत्था-विशे., सदिखन बामा हाथ चलबैक प्रकृतिवाला। मै.

बमार-सं., बामा कात। मै.

बमेरिया-विशे., हर, गाड़ी मे बामा कात बहैवाला। मै.

बयस-सं., आयु, जीवन मतिक अवधि। सं. तत्सम

बयसगर-विशे., अधिक बयसवाला। सं. तत्सम/मै.

बयसाह-विशे., उचित सँ बेशी बयस बीतल। मै.

बर्चस्व-सं., प्रभाव। सं. तत्सम

बर्छा-सं., भोंकैवाला अस्त्र। मै.

बर्छी-सं., भोंकैवाला छोट कमानीक अस्त्र । मै.
बर्जना-सं., रोक, निषेध, त्याग । सं. तत्सम
बर्फ-सं., घनीभूत जल, जलपिण्ड । मै.
बर्बर-सं., आदिवासी जाति । मै.
बर-सं., गुण । प्रयोग—"एकबर, दोबर, तेबर आदि ।" गुना । मै.
बरक्कति-सं., वृद्धि । बरक्कत । उ. तद्भव
बरकन-सं., पाक होइक कालक ओरक खलबला-इत क्रम । मै.
बरकब-क्रि., द्रवणशील वस्तुक खौलब । मै.
बरकरार-विशे., चौचल, वर्तमान, अपने रूप मे रहै-वाला । उ. तद्भव
बरकलहा-विशे., खौलाएल । मै.
बरकस-सं., कहारक उठबैवाला सवारी कें बाँस सँ बन्हैवाला डोरी । मै.
बरकाएब-क्रि., ओर द' क' राखब । खौलाएब । मै.
बरकान-सं., बरकैक प्रक्रिया । मै.
बरकुमारि-विशे., बरक अभिलाषावाली कुमारि । प्रयोग—"राँड़ कानय ऐहब कानय तें थाकू बर-कुमारि कानए ।" मै.
बरकौआ-विशे., बरकाकय प्रस्तुत कयल । मै.
बरख-सं., वर्ष । सं. तद्भव
बरखमा-विशे., वर्षे वर्षे होम'वाला । मै.
बरखा-सं. वर्षा । सं. तद्भव
बरखी-सं., वर्ष दिन परक श्राद्ध । मै.
बरखुआ-विशे., वर्ष दिनक वयसवाला बच्चा । मै.
बरगा-सं., कोठा मे ईंटा बैसबैवाला, ईंटाक आधार बनैवाला नम्मा मोट लकड़ी पर सँ देल पातर कम नाम लकड़ी । मै.
बरगाएब-क्रि., नापक अनुसार छूरी राशि बैसाकय सक्कत बनाएब । मै.
बरँगाही/बरकाही-विशे., गारि विशेष । मै.
बरजब-क्रि., त्यागब, छोड़ब, हटाएब । मै.
बरजलहा-विशे., छोड़लवाला । मै.
बरजाति-विशे., बदमास । मै.
बरजीत-सं., बाजी, हार जीतक क्रम मे जीतैवाला कें देवाला राशि, द्रव्य । मै.

बरतन-सं., १. वर्तन । २. निर्वाह, खेपब, समय काटब । मै.
बरतब-क्रि., निर्वाह करब, जीवन बिताएब । मै.
बरतिहार/बरतुहार-सं., बरक (कन्याक हेतु) अन्वेषण करैवाला । मै.
बरदाएब-क्रि., चलैत काज मे बाधा पड़ने रोकल रहब । निष्क्रिय बनब । मै.
बरदाठ-सं., मुख्य काजक रोक । निष्क्रियता । मै.
बरदौलाह-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त भरल, बरद पर लादिकय ल' जाइक योग्य भार । मै.
बरन-सं., १. रंग, अक्षर, जाति । वर्ण । २. पसिद्ध करैक चेष्टा । सं. तद्भव
बरनन-सं., वर्णन, बेकछाकय वस्तुक गुणक कथन । सं. तद्भव
बरनब-क्रि., वर्णन करब । मै.
बरना-सं., रोक, त्याग । मै.
बरनी-अव्यय, बेश, नीक (स्वीकारोक्ति) । मै.
बरनेका-सं., छोड़ैक प्रयास । त्यागैक चेष्टा । मै.
बरपँ-सं., वृद्धि, उन्नति, अभ्युदय । मै.
बरफी-सं., मिष्टान्न विशेष । मै.
बरब-क्रि., चूनब, बीछब । मै.
बरबरनी-विशे., वरवर्णिनी, अत्यन्त सुन्दरी । सं. तद्भव
बरबै-सं., भाषा काव्यक छन्द विशेष । मै.
बरमा-सं., लकड़ी मे छेद करैक कमारक यन्त्र । मै.
बरलाहा-विशे., त्यागलवाला । मै.
बरहचोदी-विशे., गारि, बारहगोटा सँ प्रसंग करै-वाली । मै.
बरहघना-विशे., अनेक ध्रान मिझहरवाला । मै.
बरहबद्दू-विशे., अनेक बाटवाला घर । मै.
बरहबरना-विशे., बारहो वर्णक अर्थात् सब जातिक छूबैक योग्य । मै.
बरहबरनी-विशे., सब वर्ण सँ सम्भोग करैवाली । मै.
बरहम-सं., ब्रह्म, ग्राम देवता । मै.
बरहमण्डल-सं. ब्रह्माण्ड, मस्तक । मै.
बरहमसिया-विशे., बारहो मास होम'वाला । मै.
बरहमासा-विशे., बारहो मासक वर्णनवाला गीत । मै.

बरहुरी-सं., बाँहि परक गहना विशेष । मै.

बरहुरुपिया-विशे., अनेक रूप धारणकय लोक कें मनोरंजन करबैवाला । मै.

बरहसिंगा-विशे., १. बारह डारि फूटलवाला सींग । २. बारह डारि फूटल सिंगवाला हरिण । मै.

बरहहत्थू-विशे., सभक हाथ मे जाइवाला । मै.

बरहा-सं., चौकी (पाटा) मे बन्हैवाला रस्सी । मै.

बरहाबरही-सं., रस्सीक दुनू छोर पकड़ि कय जोर सँ दुनू दिश खींचैक खेल । मै.

बरहिया-सं., बारह बोझ फसिल पर एक बोझ बोनि लैक नियम । मै.

बरही-सं., १. बरहिया । २. कमार जाति । मै.

बराइत-विशे., वर पक्षक लोक । मै.

बराएब-क्रि., हाथ पैर धोइबा हेतु पानि ढारब । मै.

बराँह-विशे., उपनयनक वयस कें पार कयलैवाला बड़ुआ । मै.

बराबरि-अव्यय, हरदम । विशे., एक रंग, सरि । मै.

बराह-सं., सुगर । सं. तत्सम

बराहिल-विशे., लगान देबाले प्रजा कें बजबैवाला नियुक्त दूत । मै.

बरिया-विशे., शक्तिशाली धनवान् । मै.

बरियाती-विशे., बरक संग जाइवाला लोक । मै.

बरियार-सं., छोट आड़वाला गाछ । मै.

बरिसकाल-सं., वर्षाक समय । मै.

बरिसन्हन-सं., कुमारि अवस्थाक पूजल गौरीक भसाओन । मै.

बरिसब -क्रि., वर्षा करब । मै.

बरिसाइत-सं., वट सावित्री व्रत । मै.

बरिसात-सं., वर्षाक समय । मै.

बरिसाती-विशे., वर्षा सँ बचबैवाला । मै.

बरी-विशे., निर्मुक्त, दोषहीन । मै.

बरी होएब -क्रि., अभियोग, दोषरहित बनब । मै.

बरु-अव्यय, विकल्पक शब्द । प्रयोग–"बैसल छी तैं बरु किछु लिखये करू ।" मै.

बरुआ-सं., बच्चा वयसवाला वर । मै.

बरुआर-सं., पैघ माटिक बासन । मै.

बरुकी-सं., चुकड़ी, अत्यन्त छोट माटिक बासन । मै.

बरेठ/बरेथ/बरंग-सं., झझराह टाट सँ घेरल आ छाँपल बरै (पान उपजबैवाला) क पानक गाछ लगबैक स्थान । मै.

बरै-सं., पानक व्यवसायी जाति, तमोली । मै.

बरैन-सं., हरिसक जड़ि मे हर कें अड़ौने रखैवाला कील । मै.

बरैबा-विशे., (अनादर मे) पान बेचैवाला । मै.

बरोत-सं., घरक माथी पर मड़हट पीढ़ैवाला वाती । मै.

बरौनी-सं., पिपनी, आँखिक पल परक केश । मै.

बरोबर-विशे., आधा सुखाएल अन्न । मै.

बरोबर-ग्राम विशेष । मै.

बरोबर करब -क्रि., आधा सुखाएब, सरता उड़ाएब । मै.

बरोबरि-विशे., १. एक वस्तुक समान दोसर वस्तु । २. सदिखन । मै.

बल्लम-सं., अस्त्र विशेष, सामन्ती यात्राक साज वाला वस्तु । मै.

बल्ला-सं., १. धातुक मेन फर्का गोल वस्तु खेल प्रतियोगिताक विशेष वस्तु । २. कोनो वस्तु के घरक चार आदि कें उपर तनैक हेतु देल बाँस वा काठक नम्मा टोना । मै.

बल्ली-सं., बाँस काठक छोटका टोन । मै.

बल्लौ-अव्यय, निरर्थक । मै.

बल-सं., शक्ति, धुरा । सं. तत्सम

बलकानन-सं., बल सँ कनैक अभिनय । मै.

बलकुत्ताहि-विशे., बालु मिलल पदार्थ । मै.

बलगम-सं., कफ । उ. तत्सम

बलगर-विशे., बलवाला, अधिक तकतत । मै.

बलगरी-सं., अधिक बल रखैक दावी । मै.

बलगोबिना-विशे., हिजड़ा, नपुंसक । मै.

बलजोरी-सं., बलात्कार, बल लगाकय कोनो क्रियाक प्रवृत्ति । जबरदस्ती । मै.

बलतोड़-सं., केश वा रोइआं उखड़ला सँ बनल घाओ आ पीड़ा । रोइ उपाड़ । मै.

बल दऽ-अव्यय, तेजी सँ । मै.

बलधउनि-सं., अनुचित आग्रह, दुराग्रह । मै.

बलबाब-क्रि., कनेको बल लगौला सँ बहराएल मासआलक गुप्ताङ्ग । मै.

बलधकेल-सं., जबरदस्ती, जोरें धकिया कय । मै.
बलधारा-सं., धार मे धन्नाक लागि रखै केल गान्हक कान्ह अड़ैक हेतु धान्हल बाँसक टोंटा । मै.
बलधिङरी-सं., व्यर्थ जिद्द रोपैक चेष्टा । मै.
बलफ-सं., ब्लफ, झपासा, धोखा । अं. तद्भव
बलबलाएब-क्रि., भीतर सँ ऊपर मुहेँ विकारक प्रवाह होएब । मै.
बलभुक्खा-विशे., बालु द' क' भूजल तथा वालुक संग भूजल । मै.
बलमस्त-विशे., बल रखैवाला । मै.
बलमा/बलमुआँ/बलुम-विशे., प्रियतम, स्वामी, पति । मै.
बलमारि-सं., व्यर्थक युद्ध, मारि करैक प्रवृत्ति । मै.
बलय-सं., कँगना । सं. तत्सम
बलरबलर-अव्यय, व्यर्थ असंगत गप्पक शब्द । मै.
बलशाली-विशे., बल भरल । सं. तत्सम
बलहा-विशे., बालु भरलवाला । मै.
बलही-सं., दू जुआ पर बैसाकय थान्हल बड़का बोझ । मै.
बलहुरध्वनि-सं., बिन कारणेँ निरर्थक दुराग्रह । मै.
बलात्कार-सं., १. जबरदस्ती । २. (लाक्षणिक) शीलहरण । मै.
बलाय-विशे., आपत्तिजनक, भार स्वरूप । मै.
बलाह-विशे., बालु भरल । मै.
बलि-सं., आत्मसमर्पण, अपन उत्सर्ग । सं. तत्सम
बली-विशे., बलवाला । सं. तत्सम/मै.
बलिकट्टू-विशे.,देवी पूजाक अवसर पर छागर आदि पशुक बलि कटनिहार । मै.
बलिदान-सं., देवीक आगू पशुक मूड़ी काटिकय प्रसाद चढ़बैक विधि । सं. तत्सम
बलिया-सं., हाथक निस्सन चानी वा सोनाक गहना गट्टा । मै.
बलुआह-विशे., बालुवाला । मै.
बलुआही-विशे., बालुमय भूमि । मै.
बलुआओल-विशे., बालु मिलाकय बनाओल भूजल । मै.
बलुगछैर-सं., धानक प्रभेद । मै.
बलू-अव्यय, गप्पक अलंकारक शब्द । वरु । मै.
बलूच-विशे., बलुचिस्तानक वासी । मै.
बलेल-विशे., अत्यन्त मूढ़, बुद्धि । मै.
बलैँ-विशे., देखू—"बलाय" । मै.
बलैया-सं., शुभकामनाक हेतु सब अकल्याणक ग्रहण । मै.
बस्तर-सं., वस्त्र । सं. तद्भव
बस्ता-सं., पोथी पतरा रखैक कपड़ाक मोटरी तथा झोरी । मै.
बस्ती-सं., लोकक वासक विभिन्न खण्ड । मै.
बस्तु-सं., पदार्थ । सं. तत्सम
बस्तुजात-सं., सामग्री । सं. तत्सम
बस्स-अव्यय, परिपूर्णता वा निषेधबोधक शब्द । मै.
बँसकट्टा-विशे., व्यवसाय सँ बाँस कटैवाला । मै.
बँसकट्टी-सं., शुभ कार्यक हेतु बाँस कटैक विधि । मै.
बसन्त-सं., ऋतु विशेष, मधु मास । मै.
बसन्ती-विशे., लाल पीयर मिलल रंग । मै.
बसना-सं., पोथी बान्हैक वस्त्र खण्ड । मै.
बसनिहार-विशे., बसैवाला । मै.
बसनी-सं., छोट आकार प्रकारवाला थैल । मै.
बसब-क्रि., खूटा गाड़िकय अर्थात् परजान्हि कय रहब । मै.
बँसबाड़ि-सं., बाँसक बाड़ी, बाँसक वन । मै.
बँसबिट्टी-सं., बाँसक जड़िक पसारवाला खण्ड । मै.
बँसहर-विशे., बाँसक बनल विभिन्न प्रकारक वस्तु । मै.
बँसहरी-विशे., बाँसक बनाओल वासन । मै.
बसहा-विशे., बाँसक बनल । सं., शिवक वाहन । मै.
बँसही-विशे., देखू—"बँसहरी" । मै.
बसाएब-क्रि., स्थापित करब, रहैक स्थान देब । मै.
बँसाड़ि-सं., सघन बाँसक वन । मै.
बसात-सं., हवा, वायु । मै.
बसिन्दा-विशे., बसैत रहनिहार । मै.
बसिया-विशे., १. निश्चित वास करैवाला । २. दोसर (पहिलुक) दिनक रान्हल विकृत अन्न । मै.
बसियाइन-विशे., बासि । अधिक कालक बिन खयने आ बहुत कालक रान्हल वर्का विकृत । मै.

बसियाएब-क्रि., बहुत कालक रान्हल रहने विकृत होएब । मै.

बसियाहा-विशे., अधिक कालक रान्हल भेने विकृत भेलवाला । मै.

बसिला-सं., कमारक काठ छीलैक विशेष अस्त्र । मै.

बंसी/बसुरी/बसुली-विशे., १. बंसवाला । २. बसुली । सं., बाँसक पोर सँ सातो स्वरक बाजन । मै.

बसूला-सं., ईंटा जोड़ै मे ठोकैक आ कटैक राजमिस्रीक अस्त्र । मै.

बसेड़ करब-क्रि., बलजोरी रहिकय अधिकार करब । मै.

बसेरा-सं., अस्थायी निवास । डेरा । मै.

बँसैला-विशे., बाँसक बनल खुट्टा आदि । मै.

बसौआ-विशे., बसाओल गेल । मै.

बसौड़ी-विशे., वासवाला भूमि । मै.

बस्ह्-सं., १. बहैक बाट । २. गाछक सीर सँ बहराएल गाछ । मै.

बहक-सं., उचित बाट छोड़ि कुमार्गक प्रवृत्ति । मै.

बहकब-क्रि., १. निकलब, फुटब । २. कुमार्ग दिश चल जाएब । मै.

बहक'बैवाला-विशे., कुवृत्ति सिखबैवाला । मै.

बहकलहा-विशे., १. कुपथ पर चलैत रहैवाला । २. निकललवाला । मै.

बहकाएब-क्रि., अनुचित बात सिखाएब, सनकाएब । कुमार्ग पर चलाएब । मै.

बहकान-सं., बहक'बैक विशेषता, चेष्टा । मै.

बहकी-विशे., लगले बहकि जाइक बुद्धिवाला, आनक कहल पर बिना उचित अनुचित सोचने चलैवाला । मै.

बहकौआ-विशे. बहकौनिहार । मै.

बहटब-क्रि., मालजालक जेरक चरैले अथवा बथान दिश एक संग चलब । मै.

बहडवार-विशे., हर मे बहैक योग्य बच्छा । मै.

बहटार-सं., मालजाल कें चरैले अथवा बथान पर जाइ लै एक संग हँकैक बेर आ प्रक्रिया । मै.

बहटारब-क्रि., मालजालक जेर कें एक संग हाँकब । मै.

बहत्तरि-संख्या, सात दहाइ दू एकाइक अंक । मै.

बहत्रा-विशे., १. उद्दण्ड उपद्रावी किशोर । २. ज्ञान ध्यानशून्य बूढ़ । मै.

बहत्रासि-विशे., अनट विलट करैवाला आ उनट पुनट अन्ट सन्ट बाजि उठैवाला सुधि बुधिहीन बूढ़ । मै.

बहतर-विशे., बात नहि मानिकय उद्दण्ड रहैवाला छौंरा, किशोर । मै.

बहता-विशे., हरदम प्रवाहित रहैवाला । प्रयोग– "बहता धार, बहता घाओ ।" मै.

बहताओन-सं., कोल्हू बहैक बोनि । मै.

बहतो-सं., छोट आ पातर नाली । मै.

बहन्नू-विशे., पुंयोग अर्थात् वाहैक योग्य मालजाल । साँड़ भैंसाक मैथुन योग्य । मै.

बहनरि-सं., पोखरि मे पानि अबैक आइक योग्य बाट । मै.

बहना-विशे., हरदम बहैत (सटैत) रहै मे दक्ष । मै.

बहपोत-सं., आडम्बरक विस्तार । मै.

बहपोर-विशे., दूर दूर पर पोरवाला बाँस आदि । मै.

बहब-क्रि., पानि आ बसातक गतिशील वेग युक्त रहब । बड़दक हर आदि मे चलब । मनुष्यक सटब । मै.

बहबह-विशे., उद्दण्ड आचरणवाला नेश्रा । मै.

बहबाएब-क्रि., मालजालक मैथुन कराएब । मै.

बहबाँड़ि-विशे., बहुमुखी वृत्तिवाला, निरर्थक बहुत प्रकारवाला । मै.

बहम-सं., अनर्गल जाड़ियाएल धारणा । उ. तलाम

बहरघरा-सं., बहारक बैसै उठैवाला घर । मै.

बहरपेन-विशे., बहार दिश जड़िवाला खुट्टा । मै.

बहरा-अव्यय, बहार । मै.

बहराएब-क्रि., बहार होएब । घर सँ वा शून्य सँ प्रकट होएब । मै.

बहरिया-विशे., बहार रहनिहार । मै.

बहरी-सं., घर आङन सँ बहारक स्थान । मै.

बहलमान-विशे., बैलगाड़ी हँकैवाला । मै.

बहलहा-विशे., अपन वासन सँ बहलवाला । मै.

बहलाएब-क्रि., मन कें फेरि विनोद मे भुलाएब । मै.

बहस-सं., १. तर्क वितर्कवाला विवाद । उ. तलाम २. अपन विनयशीलता सँ वा शालीनता सँ बहार भ' जाइक प्रवृत्ति । मै.

बहसब-क्रि., विनयशीलता आ शालीनता तेजि मर्य्यादा तोड़ब। मै.

बहसाएब-क्रि., मर्य्यादा तोड़ैक प्रेरणा देब। मै.

बहसी-विशे., १. अपन झोंक मे सीमा तोड़ैवाला। सं., २. उद्दण्डता सँ अनुचितो करैक प्रवृत्ति। मै.

बहाएब-क्रि., प्रवाहित क' देब। मै.

बहाओ-सं., बहैक बाट। मै.

बहांउ-सं., भरि बाँहिक प्रमाण। मै.

बहांउ फूटब-क्रि., पारदर्शी पैघ भूर होएब। मै.

बहान-सं., १. बहैक क्रम। २. मालजालक मैथुन करैक समयक प्रभाव एवं सिलसिला। मै.

बहाना-सं., छलनामय कारण, लाथ। मै.

बहार-अव्यय, छादन सँ निकलि प्रकट मे। सं., प्रकाश। मै.

बहारन-सं., बहारि कय जमा कयल गर्दोस। मै.

बहारब-क्रि., बहारैक काज, बाढ़नि सँ परद्वार स्वच्छ करब। मै.

बहारसोहार-सं., बाढ़नि सँ स्वच्छ करैक काज। मै.

बहारी-विशे., बहारक वस्तु वा लोक। मै.

बहाल-सं., नियुक्त, पदस्थापित। मै.

बहाली-सं., नियुक्ति, पदस्थापना। मै.

बँहि-अव्यय, मारि। प्रयोग—"धुर बँहि।" मै.

बँहिओ-विशे., १. बाँहि पर सघन धातुक चूड़ीसन गहना। २. काज मे हाथ बँटबैवाला। मै.

बहिकम-सं., अनुमानित वयस, तूर। मै.

बहिकिरनी-विशे., बहियाक स्त्री। मै.

बहिखत-सं., बहिया (बन्हुआ) बनबैक लेख। मै.

बहिङा-सं., बोझ उठबैवाला बाँसक फट्ठीक चापट दुनू छोर पर उतार लचकदार डण्डा। मै.

बहिङासारि-सं., धानक विशेष प्रभेद। मै.

बहिन-सं., सहोदरक सम्बन्ध जकाँ सम्बन्धी स्त्री। मै.

बहिन जमै-विशे., छोट बहिनिक पति। मै.

बहिनधी-विशे., बहिनिक बेटी। मै.

बहिनपा-सं., बहिनिक सम्बन्धक भाव। मै.

बहिना-विशे., बहिन जकाँ बनाओल संगी। मै.

बहिनो-विशे., बहिनिक स्वामी। मै.

बहिनौत-विशे., बहिनिक बेटा। मै.

बहिया-विशे., बन्धुआ मजदूर। मै.

बहियाएब-क्रि., पाछू लागल बेहारब। मै.

बहियार-सं., बाध, चौर। मै.

बहियारब-क्रि., पाछू लागि कय बेहारब। मै.

बहिरा-विशे., (अनादर मे) नै सुनैवाला। मै.

बहिरू-विशे., (अनादर मे) नै सुनैवाला। मै.

बहिला-विशे., बाँझ, बन्ध्या। मालजाल। मै.

बही-सं., लेखा जोखावाला नमहर पुस्तिका। मै.

बही हाँकब-क्रि., मरकी मे तन्त्र मन्त्रकय बड़द पर विशेष रूपक चेष्टा बनाकय दोसर दिश मरकी कें बिदा करैक विधि करब। मै.

बहीर-विशे., नै सुनैवाला। सुनैक शक्तिहीन। मै.

बहु-विशे., वधू, स्त्री, पत्नी। मै.

बहुआ-सं., आङीक बाँहिवाला भाग। मै.

बहुआसीन-विशे., घरक पुतोहु। (अनादर मे) मै.

बहुगुना-विशे., बहुत प्रकारक काजक उपयोगी बर्तन। मै.

बहुजुतिया-विशे., बहुत लोकक प्रधानतावाला काज। मै.

बहुजूती-विशे., पत्नीक मुख्यता मे चलैवाला। मै.

बहुत-विशे., अधिक, अनेक। मै.

बहुतर-विशे., अधिक प्रकार, अधिकतर। सं. तत्सम

बहुबात-सं., अनेक लोकक मत। मै.

बहुरंगी-विशे., अनेक रंगवाला। मै.

बहुर-सं., फेर फेर घुरि आएब विचार। मै.

बहुरब-क्रि., घुरब, लौटब। मै.

बहुराएब-क्रि., घुमा लाएब। मै.

बहुरिया-विशे., नव कनियाँ। मै.

बहुरूपा-विशे., बहुत रूप धारण करैवाला। मै.

बहेड़-सं., खच्चर, ने घोड़ा ने गदहा। मै.

बहोआ-विशे., बहाओल मैलवाला। मै.

बा

बाइ-सं., पेटक वायु विकार। मै.

बाइ-विशे., १. वेश्या। २. राजस्थानक धीयनि। मै.

बाइन-सं., क्रमबद्ध गुहनि तथा गेंठ। मै.

बाईं बाईं करब-क्रि., लोभक द्वारें व्यग्र होएब। मै.

बाइभिरिंग-सं., औषध विशेष, विडङ्ग। मै.

बाइस-संख्या, दू दहाँइ दू एकाँइक अंक। मै.

बाइस-सं., पहिलुक दिनक राखल भोरक जलपान। प्रयोग—"बासि बेरहट।" मै.

बाइसकिल-सं., दू चक्कावाला यान्त्रिक वाहन, साइकिल। अं. तद्भव

बाउ-विशे., स्नेहक सम्बोधन। मै.

बाउड़ी-सं., अति छोट जलाशय। मै.

बाउल-सं., बालू। मै.

बाएब-क्रि., मुह खोलिकय पसारब। मै.

बाओग-सं., खेत मे बीज (बीया) छींटैक प्रक्रिया। मै.

बाओग करब-क्रि., खेत मे बीया छींटब। मै.

बाओग बतियान-सं., जोत कोड़कय बीआ छींटैक कम। मै.

बाओन-विशे., भुट्ठ शरीरवाला। मै.

बाओनबोर-विशे., अत्यन्त छोट देहक मनुष्य। मै.

बाँक-सं., बाँहिक गहना विशेष। मै.

बाकल-विशे., निःसार काठ, काठक बकलोइआ। मै.

बाकस-सं., पैध बकसा, सन्दुकचा। मै.

बाँकी-सं., शेष। मै.

बाकुट-सं., आङुर तानिकय पकड़ल वस्तुक मान। मै.

बाँकुर-विशे., टेढ़ मेढ़, स्थान स्थान पर उभर खाभर। मै.

बाखर-विशे., अनेर उत्तेजित भ' क' गरजिकय बज-निहार। मै.

बाखूबी-विशे., नीक जकाँ, सम्पूर्ण रूपेँ। प्रयोग—"ओ बाखूबी कहाँ स्वस्थ भ' सकल छथि।" मै.

बाग-सं., उपवन, बगीचा, फलक वृक्ष समूह। मै.

बागगोटी-सं., कौड़ी लोकीकय खेड़ा विशेष। मै.

बागड़-विशे., मिशहूर, मिश्रित। मै.

बागपट्टा खेलाएब-क्रि., ठकैक ध्येय राखब। मै.

बागब-क्रि., बीछि बीछिकय हटाएब। मै.

बागल-विशे., निरसल। मै.

बाघ-सं., हिंसक पशु। स्त्री० बाघिन। मै.

बाघी-सं., शरीरक शिराक ग्रन्थि पर पीड़ा आ फूलब। गिल्टी। मै.

बाङ-सं., तूरक फड़। मै.

बाङ देब-क्रि., मुर्गाक बाजब। मै.

बाङनर-सं., मोट नाम जातिक केरा। मै.

बाँचब-क्रि., सुरक्षित रहब। मै.

बाचब-क्रि., कथा पुराण आदि कें शुद्ध उच्चारण-पूर्वक पाठकय अर्थ कहब। पढ़ब। मै.

बाछनि-सं., बीछि बीछिकय अलग करैक क्रम। मै.

बाछब-क्रि., बीछि बीछिकय अलग अलग करब। मै.

बाछा-सं., गाइक पुरुष बच्चा। स्त्री० बाछी। मै.

बाज/बाझ-सं., १. चिड़ैं पर झपट्टा मारैवाला पक्षी। २. कारा आ आनो गहना मे ध्वनि। मै.

बाज आएब-क्रि., विमुख होएब। मै.

बाजन-सं., शुभ अवसरक ढोल पिपही। बाद्य। मै.

बाजब-क्रि., मुह सँ शब्द बहारकय मनक भाव प्रकट करब। मै.

बाजा-सं., वाद्य। मै.

बाजाभूकी-सं., आपस मे बोलचाल। मै.

बाजार-सं., दूर धरि पसरल किनै बेसाहैवाला सब वस्तु मात्रक स्थायी स्थान। मै.

बाजी-सं., पण, कोनो क्रिया मे हारैं जितैक स्थिति मे कयल नियमक निश्चित वस्तु अर्थात् कौति। मै.

बाजी मारब-क्रि., अनलेख मे सफलता पाबि लेब। मै.

बाजूबन-सं., बीच बाँहि परक चूड़ी जकाँ गहना। मै.

बाजे मेंही-विशे., कोनो मेंही अन्न। मै.

बाझ-सं., बाधा, बझैक स्थिति। मै.

बाँझ-विशे., बन्ध्या। मै.

बाझनि-सं., ओझराओट। मै.

बाझब-क्रि., कोनो वस्तु मे फँसि जाएब। बन्धन मे पड़ब। ओझरा जाएब। मै.

बाँझी-सं., गाछक डारि पर जनमल डारि कें फल-शून्य करैवाला अन्य जातिक अंकुर। गाछक फल कें रोकैवाला रोग। मै.

बाट-सं., मार्ग, पेरा। मै.

बाँट-सं., प्रतिव्यक्ति कें कोनो वस्तु देबाक क्रम। मै.
बाट चलैत बटबारि-लोकोक्ति, बाटे बाटे चलैत अचलात् वा उपद्रव करब। मै.
बाट ताकब-क्रि., प्रतीक्षा करब। मै.
बाँटनि-सं., बाँटैक काज। मै.
बाट परक पानि तरपने पाबी-लोकोक्ति, अपन प्रगतिक वेग मे आएल बाधा सँ लड़नै लाभ। मै.
बाँटब-क्रि., वितरण करब, बाँट करब। मै.
बाँट बखरा-सं., अलग अलग रूपें विभाग कय बँटैक प्रक्रिया। मै.
बाट बाट मे जाएब-क्रि., बिना कोनो उद्देश्यक व्यर्थ नष्ट होएब। मै.
बाटा-सं., बहुत पैघ बाटीक आकारक बासन। मै.
बाटा बाटी ताकब-क्रि., विलम्बधरि प्रतीक्षा। मै.
बाटी-सं., कटोरा। मै.
बाटें बाटें-अव्यय, रस्तें रास्ता। मै.
बाटेंबाट-अव्यय, अनर्गल रूपें। मै.
बाटो बहिनो-सं., बाट पर रखैवाली सामा। मै.
बाड़ी-सं., तीमन तरकारी उपजैक योग्य घरक पास परोसक खेत। मै.
बाड़ी झाड़ी-सं., बाड़ीक संग गाछ वृक्षक भूमि। मै.
बाढ़नि-सं., घर आदि कें स्वच्छ करैक झाड़ू। मै.
बाढ़ब-क्रि., १. बढ़ैक क्रम होएब। २. बाढ़नि सँ स्वच्छ करब। मै.
बाढ़ि-सं., नव वर्षों आ जलक अम्बोही वृद्धि। मै.
बाण-सं., शर। सं. तत्सम
बाणप्रस्थ-सं., चारि आश्रमक एक भेद। घरक व्यवस्थाक अवस्थापूर्ने त्याग। सं. तत्सम
बाणी-सं., बोली। सं. तत्सम
बात-सं., वार्ता, वचन। मै.
बात गढ़ब-क्रि., अपन कल्पना सँ गप्पक संगति करब। मै.
बातचीत-सं., परस्पर वार्तालाप, सम्भाषण। मै.
बातर-विशे., दुःख वा रोग बढ़ैवाला। मै.
बातरोग-सं., वायु विकार सँ उत्पन्न व्याधि। मै.
बाताबाती-सं., परस्पर विवादक संग झगड़ा। मै.
बातास-सं., १. बसात। २. बसातक बवैक गर। मै.
बाती-सं., १. बाँसक चीरल खण्ड। २. दीपक टेमी। ३. प्रकाश, दीपक ज्योति। मै.
बातूनी-विशे., निरर्थक अधिक बजैवाला। अनावश्यक बजनिहार। मै.
बातेंबातें-अव्यय, प्रत्येक बात मे। प्रत्येक बात सँ। मै.
बातेंबात-अव्यय, बाते करैक क्रम मे। प्रयोग—"की कहू ओ दुनू गोटए बातेंबात झगड़ि उठला।" मै.
बाद-अव्यय, पाछू, पश्चात्। मै.
बादन-सं., बाजन बजबैक क्रम। मै.
बादब-क्रि., पाछू क' देब। बादक हेतु छोड़ब। मै.
बादरि-सं., बदरी। मै.
बादशाह-विशे., विशाल भूखण्डक स्वतन्त्र राजा। मै.
बादी-सं., मासा, मांस बढ़ैवाला अर्श रोग, बावासीर। मै.
बादुर-सं., १. रतिचर स्तनपायी पक्षी विशेष। २. घरद्वार मे दिनक अन्ध रहैवाला छोट चिड़ै। मै.
बाध-सं., धान उपजैवाला दूरधरि पसरल भूखण्ड। चौर। मै.
बाधक-विशे., बाधा (अड़चन) उपस्थित करैवाला। सं. तत्सम
बाधब-क्रि., बाधा करब। मै.
बाधबोन-सं., चौर आर जंगल समेत। मै.
बाधा-सं., अड़चन, विघ्न। सं. तत्सम
बान्ति-सं., वमन। सं. तत्सम
बान्ह-सं., १. ऊँचकय बान्हल चाकर बाट। २. नदीक जल कें रोकैक ऊँच पैरज। मै.
बान्हब-क्रि., कोनो वस्तु कें समेटि कय सक्कत गेंठ देब। विवश कय राखब। मै.
बान्हू-विशे., धोती वा साड़ी विभिन्न स्थान पर बान्हि बान्हि कय अनेक रंग मे रंगल। मै.
बान-सं., देखू—"बाण"। सं. तद्भव
बानगी-सं., छेका, वस्तु केर नमूना। मै.
बानर-सं., मर्कट, कपि। स्त्री० बनरनी। मै.
बाना-सं., रूपरंग, छवि। मै.
बाना बनाएब-क्रि., छवि काढ़ब, विचित्र रूपरंग बनाएब। मै.

बाना बान्हब-क्रि., भाषण कय लोक (समाज) कें आनक विरुद्ध बनाएब । मै.

बानि-सं., आचरण एवं छवि छटा, स्वभाव । मै.

बानी-सं., १. बोली । २. प्रकृति । मै.

बाप-सं., पिता (सं० वप्र) । उ. तत्सम

बापी-सं., बाउड़ी । सं. तत्सम

बापूत-सं., बाप आ पुत्र (युग्म शब्द) । मै.

बावन-संख्या, दू एकाइ पाँच दहाइक अंक । मै.

बाबब-क्रि., मुह फारब, खोलब । मै.

बावरी-सं., बाउड़ी । विशे., बेहाल । मै.

बाबा-विशे., मातामह, पितामह तथा परमश्रेष्ठ । मै.

बाबाजी-विशे., साधु संन्यासी । मै.

बाबू भैया-विशे., समाजक सभ्य शिक्षित श्रेष्ठ । मै.

बाभन-विशे., साधारण ब्राह्मण । स्त्री० बाभनि । मै.

बाम-विशे., विपरीत, दहिनाक उनटा । मै.

बामन-विशे., भुट्ट । सं. तत्सम

बामनावतार-सं., बामन, नुट्ट शरीर धारणकय जन्म लेनिहार भगवान् । सं. तत्सम

बामरि-सं., धूआंक एकाएक तीव्र वेग । मै.

बामा-विशे., १. दहिनाक प्रतिकूल । २. स्त्री । मै.

बामा भाग-सं., दहिनाक विपरीत दिश । मै.

बामी-सं., माछक एक प्रभेद । मै.

बायोलिन-सं., सारङ्गीसन अंग्रेजी बाजा । अं. तत्सम

बार्ता-सं., बातचीत । मै.

बार-सं., गुप्ताङ्ग लगक केश, रोइयाँ । मै.

बारन-सं., निषेध, रोक । त्याग । मै.

बारब-विशे., त्यागब, समाज सँ बहिष्कृत करब । मै.

बारह-संख्या, दू एकाइ एक दहाइक अंक । मै.

बारहोबाट-विशे., सब दिश सँ लूजलवाला । मै.

बारहो बिरही-सं., अन्न सभक अनेक प्रकार । मै.

बाराबारी-सं., परस्पर बारेक क्रम । मै.

बारि-सं., घोड़ाक लगाम । मै.

बारिक-विशे., भोज आदि मे परसैवाला । मै.

बारिग-विशे., विरक्त, पृथक्, अलग । मै.

बारिस-सं., वर्षा । हि. तद्भव

बारी-सं., माछ मारैक हेतु लगाओल जाली । मै.

बारुद-सं., विस्फोटक पदार्थ । मै.

बारे-अव्यय, विषय मे । मै.

बाल-सं., वालु । विशे., बच्चा । सं. तत्सम

बालक-विशे., बच्चा । सं. तत्सम

बालग्रह-सं., बच्चाक भौतिक रोग । सं. तत्सम

बालचर-विशे., स्वयंसेवक, स्काउट सैनिक । सं. तत्सम

बालबच्चा-सं., किशोर आ दुधमुहाँक समूह । मै.

बाल विधवा-विशे., बच्चा वयस भय गेल विधवा । मै.

बालम-विशे., देखू—"बलमुआ" । मै.

बाला-सं., स्त्री जाति । मै.

बालापन-सं., छुटपन, बचपन । मै.

बालि-सं., मकइक दाना भरल (गुत्थल) सीस । मै.

बालिग-विशे., राजकीय विधिक अधिकारी, चेतन, समर्थ । मै.

बालिका-सं., कन्या (जाति) । मै.

बाली-सं., कुण्डलक आकारवाला कानक गहना । मै.

बाली-विशे., विशेष रूपक परिचय मे जोड़ल शब्द । स्त्री० गामवाली, बुद्धिवाली आदि । मै.

बालूसाही-सं., विशेष प्रकारक मधुर । मै.

बालेसरी कौंटी-सं., दउआ काँटी । मै.

बाँस-सं., वंशवृक्ष । मै.

बास-सं., सौरभ, सुगन्धि । मै.

बासठि-संख्या, दू एकाइ छ दहाइक अंक । मै.

बासन-सं., कोनो वस्तु रखैक बर्तन । मै.

बासब-क्रि., जल मे कोनो वस्तु कें बोरि कय राखब । मै.

बासमती-सं., मेंही आ सुवासित धान विशेष । मै.

बासा-सं., डेरा, अस्थायी ठिकान । मै.

बासि-विशे., बहुत कालक सिद्ध अन्न । मै.

बाँसी-सं., घास विशेष । मै.

बासीमुह-विशे., बिना मुहक परिष्कारें भुखल । मै.

बाह !-अव्यय, साधुवाद । प्रोत्साहनक शब्द । मै.

बाह-सं., मालजालक मैथुन, संयोग । मै.

बाहक-विशे., लय जाइवाला, उगहैवाला । सं. तत्सम

बाहन-सं., सवारी, जाइक साधन। सं. तत्सम

बाहब-क्रि., मालजालक सम्भोग करब। मै.

बाहर-अव्यय, बहार, प्रकट रूपें। मै.

बाहबाही-सं., प्रोत्साहन आ प्रशंसा। मै.

बाहा-सं., पानि बहैक बाट, नाला आ नाली। मै.

बाँहि-सं., शरीरक भुजा। अंग विशेष। मै.

बाँहीं-सं., भरि हाथक धातुक कसल चूड़ी। मै.

बाहुर कीचब-क्रि., बिना दाँतवाला बच्चाक अर्थात् ल मखिया बच्चाक मसकूर पर मसकूर जोर सँ बैसाएब। मै.

बि

बिअहुआ-विशे., विवाह मे भेल अथवा विवाह मे प्राप्त। मै.

बिअहुती-विशे., विवाह मे काज अबैवाला वा विवाहक उपयोगी वस्तु। मै.

बिकबी-सं., प्रातःकालक सुखाएल आ सरस फलक अल्पाहार। मै.

बिकट-विशे., अत्यन्त कष्टकर, भयावह। सं. तत्सम

बिकटाह-विशे., कठिनाइ, विकट जकाँ। मै.

बिकला (माल)-विशे., बिकाइवाला। मै.

बिकनी (माल)-विशे., बिकाइक हेतु उद्यत। मै.

बिकब-क्रि., बेचल जाएब। मै.

बिकराल-विशे., भयंकर। सं. तत्सम

बिकरी-सं., बेचैक काज, विक्रय। मै.

बिकऊ-विशे., बिकाइक हेतु राखल। मै.

बिकल-विशे., दुखी, चिन्तित व्यथित। मै.

बिकलाहा-विशे., बिकाएलवाला। मै.

बिकसब-क्रि., फुलाएब। मै.

बिकाउ-विशे., बिकाइक योग्य। मै.

बिकाएब-क्रि., बिकरी होएब। मै.

बिकाठी-विशे., निर्लज्ज भ' क' उपद्रवी, हास विनोद रूपेँ उपद्रव कयनिहार। मै.

बिकान-सं., विक्रयवाक विशेषता। मै.

बिकारी-सं., लेख मे बात कें घेरि कोष्ठ बन्न करैक संकेत। मै.

बिकाल-सं., वायुमंडलक उग्रता, अत्यधिक सर्दी, पसाल, गरम आ वर्षा। मै.

बिकुआ-विशे., बिका गेलवाला। मै.

बिकौआ-विशे., विवाहार्थ स्वयं कें बेचि धन गढ़ै-वाला। मै.

बिखधर-विशे., (लाक्षणिक) विषवत्, संकटजनक। मै.

बिखरब-क्रि., छीँटल जकाँ पसरब। मै.

बिखराएब-क्रि., सगरे छीँटब। मै.

बिखाइन-विशे., विष जकाँ तेज। मै.

बिखाह-विशे., छक द' लगैवाला। तमसाह। विष भरल। विषवाला। मै.

बिखिन्न/बिखीन-विशे., आन्तरिक दुख सँ दुखी। मै.

बिखिया-सं., जोर सँ पकड़ आइवाला साँपक मन्त्र। मै.

बिखुआ-विशे., विषक प्रयोग करैवाला। मै.

बिगड़न-सं., कड़ा बात, तमसाइक शब्द। मै.

बिगड़ब-क्रि., १. तमसाएब। २. बेमत होएब। ३. बताह बनब। ४. महामारीक प्रयोग होएब। मै.

बिगड़ाएब-क्रि., १. अधलाह क' देब, अनर्गल करब। २. तामस उत्पन्न क' देब। अव्यवस्थित करब। मै.

बिगड़ा बिगड़ी-सं., परस्पर विरोध। मै.

बिगड़ाह-विशे., तमसाह, अनट सनट। मै.

बिगड़ुआ-विशे., बिगाड़ि कय साध करैवाला। मै.

बिगड़ैल-विशे., बात बात मे बिगड़ैवाला। मै.

बिगब-क्रि., फेंकब, निरसब। मै.

बिगलहा-विशे., फेंकलवाला। मै.

बिगहा-सं., प्राचीन कालक भूमिक सब सँ पैघ नापक मान। मै.

बिगाइ-सं., फेंकैक लगातार काज। मै.

बिगाड़ब-क्रि., अधलाह बनाएब, अव्यवस्थित करब। मै.

बिगाड़ि-सं., विरोध। परस्पर असमञ्जस। मै.

बिगुआ-विशे., फेंकल गेल, फेंकैक योग्य। मै.

बिगुल-सं., स्वचालित यन्त्रक चेतबैवाला उच्च ध्वनि। मै.

बिघटन-सं., अशुभ घटना, गड़बड़ी। संकट। मै.

बिचवा-सं., अंकुरवाला बीजक गाछ। मै.

बिचवी-सं., बीजक हेतु मेंही दाना। मै.

बिचड़ा-सं., बीछ, कीट विशेष। मै.

बिच्छी-सं., १. बीछैक काज। २. पैरक आङुर सभक गहना। मै.

बिच्छू-सं., डंक मारैवाला विखाह कीट वृश्चिक। मै.

बिचकब-क्रि., टेढ़ मेढ़तन चमकब। मै.

बिचकाएब-क्रि., मुह अथवा कोनो अंग कें विकृत कयें चमका कय असम्मति प्रकट करब। मै.

बिचड़ा-सं., गाछवाला धानक बीया। मै.

बिचबचाओ-सं., दू व्यक्तिक लड़ाइक बीच मे पड़ि-कय दुनू दिश लड़ाइ सँ बँचबैक चेष्टा। मै.

बिचबिचो-सं., दूक अन्तरक स्थान। मै.

बिचबिचौआ-विशे., दूक बीच मे रहैवाला। मै.

बिचलब-क्रि., विचलित होएब, डगमगाएब, अधीर होएब। मै.

बिचलित होएब-क्रि., अधैर्य करब। मै.

बिचला-विशे., बीच मे स्थित आ रहैवाला। मै.

बिचें-अव्यय, समयक भीतर। मै.

बिछका-सं., अबोध अर्थात् नसरैवाला नेनाक चुट-की सँ कँ कोनो वस्तु उठा उठाकय खाइक चेष्टा। मै.

बिछनि-सं., बीछैक प्रकार एवं काज। मै.

बिछनिहार-विशे., बीछैवाला। स्त्री० बिछनिहारि। मै.

बिछमी-विशे., बीछैवाली। मै.

बिछलहा-विशे., बिछलवाला। मै.

बिछाइ-सं., बीछैक कार्यक्रम। मै.

बिछाएब-क्रि., धरती पर पसारब। बिधारब। मै.

बिछाओन-सं., ओछाकए सुतैक वस्तु, बिधारिकय बनाओल शय्या। मै.

बिछाड़ि-सं., मनोनुकूल वस्तुक प्राप्ति करैक अधिक तारतम्य वा तर्क वितर्क। मै.

बिछाबोछी-सं., कोनो वस्तु बीछैक लगातार क्रम एवं ओवाउजि। मै.

बिछिया-सं., पैरक आङुरक गहना विशेष। मै.

बिछुआ-सं., गहना जकाँ हाथक आङुर मे पहिरल गुप्त घातक अस्त्र। मै.

बिछुड़न-सं., वियोग, विरह अलगाओ। मै.

बिछुड़ब-क्रि., अलग होएब। वियोगक दुख होएब। विरह होएब। छूटब। मै.

बिछुड़लहा-विशे., वियोग भेलवाला, अलग भेल वाला, छूटलहा। मै.

बिछोह-सं., विरह। मै.

बिछौटा-विशे., नीक नीक बीछिकय बहार कयल। मै.

बिछौना-सं., देखू—"बिछाओन"। मै.

बिछौनी-सं., बिछबैक पसारैक काज। मै.

बिज्जो-सं., छोट पशु विशेष। नेवला। मै.

बिज्जू-सं., बीज सँ बहराएल गाछ। मै.

बिजकब-क्रि., कनैक क्रम मे मुह विकृत बनब। मै.

बिजकाएब-क्रि., कनैक क्रम मे मुह विकृत करब। मै.

बिजकाठी-विशे., प्रत्येक बात मे विवाद रोपैवाला। मै.

बिजकी-सं., बात बात मे कनै लेल मुह विकृत बनैक अभ्यास। मै.

बिजली|बिजुली-सं., विद्युत्। मै.

बिजलोका-सं., छिटकैत विद्युत्। मै.

बिजहो-सं., समूह कें भोजन करैक हेतु विनीत प्रार्थना। भोजन प्रस्तुत होइक सूचना। मै.

बिजाठी-विशे., असंगत बात गढ़ैवाला। मै.

बिजाती-विशे., विजातीय, भिन्न जातिवाला। सं. तद्भव

बिजाती रंग-सं., भिन्न प्रकारक अधलाह चालि। मै.

बिजाधर-सं., मुर्दा कोरैवाला वणिक डम्टा। मै.

बिजे-सं., १. विजय। २. देखू—"बिजहो"। मै.

बिजो खेलाएब-क्रि., भगताक उपर देवताक अएलाक ढंग धरैक लेल अंग चालन कय कूदब। मै.

बिजोठ-सं., बाँहि परक गहना विशेष। मै.

बिझाइल-विशे., बीझ लागल जकाँ। मै.

बिझाएब-क्रि., बीझ लागब। मै.

बिझाठ-विशे., बीझ भरल। मै.

बिझाह-विशे., बीझ लागलवाला। मै.

बिझौआ-विशे., बीझ लागलवाला लोहा। मै.

बिट्ठू-सं., तर्जनी आ औंठा सँ दाबि कय जोर सँ चमड़ा कें पकड़ैक चेष्टा। मै.

बिट करब-क्रि., चिड़ैक उड़ैत मल छोड़ब। मै.

बिटगर-विशे., अनेक आ अधिक शाखा प्रशाखाक अंकुर भरल गाछ। मै.

बिटगरहाँ-सं., कौनो संख्या कें एगारह गुना सँ बीस गुना करैक रीति । मै.

बिटगहाँ पड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) अनेक राग द्वेष वाला बात कय बहाना करब । मै.

बिटण्डी-विशे., व्यर्थ असंगत विवाद कय कें अपन मत सिद्ध करैक यत्न करैवाला । सं. तद्भव

बिटारि-सं., परहन्त्र, वंश विच्छेद । मै.

बिटिया-विशे., अधिक दुलारू बेटी । मै.

बिटियाएब-क्रि., गम्भीरता सँ बात पकड़ि कय प्रकाश मे आनब । मै.

बिठुआ-सं., देखू—"बिठू" । मै.

बिड़बा-सं., माथ पर भार कें स्थिर करैवाला पैंच चक जकाँ बीच मे शून्य वस्तु । मै.

बिड़रो-सं., चक्रवात । बसातक चक्कर । मै.

बिड़हरा-सं., बाँस वा सीकी सँ बीनल एहन अर्ध गोल लम्बाकार बासन जकर एक खप्पा मे दोसर खप्पा पैसा कय बन्न कयल जाइछ । मै.

बिड़ार-सं., बीआ पाड़ैवाला खेत । मै.

बिड़ारू-विशे., बिड़ार सँ उखाड़ल धानक बीआ । मै.

बिड़िया-सं., बेसन मे साग लपेटिकय बनाओल गुलाओंत । मै.

बित्ता-सं., हाथक औंठा आ तर्जनी आङ्गुर पसारि कय बनाओल प्रमाण । मै.

बित्तुति-सं., बेर पर काज मे नहि अबैक स्थिति । अवसरक खगाट । मै.

बितना-विशे., बीत प्रमाणवाला अर्थात् अत्यन्त छोट आकार प्रकारवाला । मै.

बितराएब-क्रि., गोटेक आधके भेटब । मै.

बितरोचार-सं., यत्र तत्र छीटैक चेष्टा । मै.

बितलहा-विशे., बीतलवाला । मै.

बितहाँ-विशे., बीत भरिक लोक । मै.

बिताएब-क्रि., यापन करब, समय काटब । मै.

बितौआ-विशे., बितबैवाला । मै.

बिथरब-क्रि., पसरब । मै.

बिथारब-क्रि., पसारब । मै.

बिदृति-सं., उपद्रव सँ नाश । मै.

बिद्युल्लता-सं., बिजलोका । सं. तत्सम

बिदकब-क्रि., आतंक सँ चौंकिकय प्रतिक्रिया करब । मै.

बिदकाएब-क्रि., बल सँ आदङ्क द' क' चौंकाएब । मै.

बिदग्ध-सं., १. पण्डित । २. अत्यन्त क्रोध आ दुःख सँ घोर, व्याकुल । सं. तत्सम

बिदबिदाएब-क्रि., निरन्तर गोटेक आधके बुन्नी सँ वर्षा होइत रहब । मै.

बिदरब-क्रि., फाटब, विदीर्ण होएब । मै.

बिदल-विशे., विकसित, फुलाएल । मै.

बिदा-सं., प्रस्थान, यात्रा । अ. तद्भव

बिदाइ-सं., प्रस्थान कालक सत्कार । मै.

बिदागिरी-सं., बिदा (यात्रा) करैक विधि वा काज । उ. तत्सम

बिदार-सं., फाट, विदीर्ण होइक चिह्न । मै.

बिदारण-सं., फाड़ब । सं. तत्सम

बिदारब-क्रि., फाड़ब । मै.

बिदिर बिदिर-अव्यय, मन्द मन्द लगातार वर्षा । मै.

बिदेशिया-विशे., परदेश मे रहैवाला । मै.

बिदेह-सं., १. मिथिला । विशे., २. विशाल देहवाला । ३. बिना देहवाला । सं. तत्सम

बिदोरब-क्रि., १. प्रकट करब । २. अलग अलग कय ताकब । मै.

बिधकरी-विशे., विवाहक अवसर पर वर बधू सँ विधि करैक मार्गदर्शक स्त्री । सं. तद्भव

बिधनब-क्रि., वस्तुजात कें अव्यवस्थित आ उनट पुनट कय ताकब । मै.

बिधनी-सं., ताना मे बीनल कपड़ा चोपैवाला काठी । मै.

बिधवा-विशे., मुइल पतिवाली । सं. तद्भव

बिधान-सं., शास्त्रक अथवा राजकीय नियम । सं. तत्सम

बिधार-विशे., थोड़ मात्रावाला । मै.

बिधि-सं., १. विधाता । २. कर्तव्यक औचित्य तथा नियम । सं. तत्सम

बिधुआएब-क्रि., १. ठंढाक द्वारें शक्तिहीन भेला सँ हाथ पैरक आङ्गुरक ठेङ भ' क' संचारहीन होएब । २. दुख, पीड़ा सँ मुहक मलिन रहब । मै.

बिन्दा-सं., बिन्दु, अनुस्वारक चिह्न, शून्यक अंक । ठोप । गोलाकार छोट चिह्न । मै.

बिन्दी-सं., शोभाक हेतु बनल कपाड़ मे सटैबाला छोट अनेक रंगक बिन्दु सन पदार्थ । मै.

बिन्दु-सं., अत्यन्त छोट जल कण । ठोप । शून्य चिह्न । सं. तत्सम

बिन्ना-सं., देखू—"बिन्दा" । मै.

बिन्यास-सं., विशिष्ट रूपक आयोजन । सं. तत्सम

बिन्हकी-विशे., डंक मारि पीड़ित करैवाला कीड़ा । मै.

बिन्हब-क्रि., डंक मारि विष सँ पीड़ा देब । मै.

बिन्हा-विशे., १. बिन्हैबाला । २. (लाक्षणिक) मर्मभेदी बात सँ उत्तेजना दैवाला । मै.

बिन-अव्यय, बिना । सं. तद्भव

बिनकर-विशे., कोनो वस्तु बीनैक व्यवसाय करै-वाला । मै.

बिनकराइ-सं., बीनैक व्यवसाय । मै.

बिनका-सं., अनेक मेंही छोट बिन्दुक चिह्न । मै.

बिननिहार-विशे., बीनैक काज करैवाला । मै.

बिनबिन करब/**बिनबिनाएब**-क्रि., स्वच्छन्दता सँ असमय मे अनेर बूलब । मै.

बिनबैया-विशे., बीनैवाला आ बिनबैवाला । मै.

बिनलहा-विशे., बीननवाला । मै.

बिना-अव्यय, अभाव मे, बगैर, बेगैर । सं. तद्भव

बिनाइ-सं., बीनैक विशेषता, विधि आ ढंग । मै.

बिनाएब-क्रि., एक-एक मे एक एक कें अर्थात् तानी मे भरनी कें सूक्ष्मिकय विस्तार रूप देवाएब । मै.

बिनाओन-सं., १. बीनबैक पारिश्रमिक । २. बीनैक शैली । मै.

बिनिया-सं., बीनैक निरन्तर काज । मै.

बिनु-अव्यय, बिना । मै.

बिनुआ-विशे., बीनि कय बनाओल । मै.

बिनोला-सं., चरखा वा टकुड़ी मे सूत बहार करैक लेल फलकाओल तूरक लपेटन, पौर । हि. तत्सम

बिनौआ-विशे., बीनि कय प्रस्तुत कयल । मै.

बिनौट-सं., बीनैक शैली वा विशेषता । मै.

बिपटइ-सं., नाच नाटक मे हास्यक अभिनय । मै.

बिपटा-विशे., नाच नाटकक हास्यक नायक । मै.

बिपतब-क्रि., विपत्ति मे पड़ब । मै.

बिपति-सं., संकट, अनहोनी, अथलाह घटना, विपत्ति । सं. तद्भव

बिपतिक मारल-विशे., दुर्दशाक भोग मे पड़ल । मै.

बिपति पड़ब-क्रि., पतिक विनाश । मै.

बिपतिया-सं., विपत्ति, संकट, दुर्दशा, मृत्यु । मै.

बिपन/**बिपन्न**-विशे., संकटग्रस्त । सं. तद्भव

बिपाक-सं., १. अन्नक अपच । २. परिणाम । सं. तत्सम

बिपंत-सं., विपत्ति । सं. तद्भव

बिफरब-क्रि., एकाएक मरजि कऽ बिगड़ि उठब । हि. तत्सम

बिभरम-सं., बिभ्रम । विनाश एवं धोखा । मै.

बिम्ब-सं., छाया, मण्डल । सं. तत्सम

बिमन-विशे., दुखी, क्रोध भरल । सं. तद्भव

बियाएब-क्रि., प्रजनन करब, गर्भ सँ सन्तान कें उत्पन्न करब । मै.

बियान-सं., प्रजनन करैक क्रम । धान आदिक गाछक जड़ि सँ अनेक अंकुर फेंकैक क्रम । मै.

बियौड़ी-सं., कोनो वस्तुक बीया के बेसन मे मिला-कय अदौड़ी जकाँ बनाओल पदार्थ । मै.

बिर्त-विशे., वृत्त, प्रस्तुत, उपस्थित । सं. तद्भव

बिर्ती-सं., वृत्ति, जीविकाक हेतु देल भूमि । मै.

बिरखी-सं., मालजालक मुहक घाओ । मै.

बिरखी कटाएब-क्रि., बिरखी रोग कें कटवाकय जड़ि सँ उखाड़ि देब । मै.

बिरद-सं., कीर्तिगान । मै.

बिरनियाछत-सं., बिरनीक छत्ता (घर) जकाँ बनल घाओ । मै.

बिरनी-सं., विषवाला डंक मारनिहार मधुमाछी सन पतङ्गकीट । मै.

बिरलहा-विशे., बीरल अर्थात् अंग अंग छोड़ाओल वाला तूर । मै.

बिरले/**बिरलेक**-अव्यय, गोटेक, एक आध मात्र । मै.

बिरस-विशे., १. विकृत रसवाला भोजन वस्तु । २. विमत, स्नेहरहित । मै.

बिरह-सं., वियोग, बिछोह । सं. तद्भव

बिरहा-विशे., वैरागवाला गीत । मै.

बिरहिन-विशे., वियोगवाली । पु० बिरही । मै.
बिरहोबाट-सं., फुटाक्य नाश । मै.
बिराध-विशे., (लाक्षणिक) क्रूर । मै.
बिरान-विशे., १. जन्तुशून्य । २. सम्बन्ध सँ बाहली । आन । मै.
बिरानबे-संख्या, नौ दहाइ दू एकाइक अंक । मै.
बिरासी-संख्या, दू एकाइ आठ दहाइक अंक । मै.
बिराह-सं., १. पीड़ा सँ उपजल बैराग्य । २. फसिल लागल खेत मे गर मारैले हरक जोत । मै.
बिराहब-क्रि., खढ़ कें नष्ट करैले फसिल लागल खेत मे हर फेरब । मै.
बिरिछ-सं., गाछ, वृक्ष । सं. तद्भव
बिरिज-सं., ब्रीज, बान्ह । अं. तद्भव
बिरित-विशे., वृत्त, तैयार, प्रस्तुत । मै.
बिरुझब-क्रि., विरोध करब । मै.
बिरो-सं., व्यवस्था, प्रबन्ध । मै.
बिल !-अव्यय, बिलाड़ कें बेसवैक शब्द । मै.
बिलकुल-अव्यय, सम्पूर्ण रूपें । मै.
बिलखब-क्रि., हृदय सँ कानब । मै.
बिलग-विशे., सम्पर्करहित । मै.
बिलटब-क्रि., दुरवस्था मे पड़ि जाएब । दुर्दशाक द्वारें नष्ट होएब । मै.
बिलटलहा-विशे., नष्ट भेलवाला । मै.
बिलटा-विशे., विनष्ट । मै.
बिलटौआ-विशे., बिलटवैवाला । मै.
बिलड़नोच-विशे., बिलाड़िक नोचलसन । मै.
बिलड़ा-विशे., बिलाड़िक आकार प्रकारवाला । मै.
बिलबिलाएब-क्रि., ऊँटक बाजब । मै.
बिलबिलाओन-विशे., लगातार घटैवाला । मै.
बिलम्ब-सं., देरी । मै.
बिलमब -क्रि., देरी करब, रुकब । थम्हब । मै.
बिलमाएब-क्रि., रोकब, देरी करैक हेतु बाधा करब । मै.
बिलय-सं., अन्तर्भाव, विलीन होइक भाव । मै.
बिलहा-सं., बाँट, वितरण । मै.
बिलहा करब-क्रि., बाँटब, बिना दामक देब । मै.
बिलहाबाँट-सं., बखरा बाट । मै.
बिलाड़-सं., घर द्वारक जीव विशेष । मै.
बिलाएब-क्रि., विलीन होएब, आलोप होएब । मै.
बिला देब-क्रि., विलीन क' देब । लोप क' लेब । मै.
बिलाड़-सं., घरोआ जीव (पशु) क पुरुष जाति । मै.
बिलाँयत-सं., पश्चिमीय देश विशेष, अंगरेजक देश, ब्रिटेन । मै.
बिलायती-विशे., बिलाँयतक वासी तथा होइवाला । मै.
बिलेक-सं., ब्लैक, चोरि सँ बिकरी । अं. तद्भव
बिलेड-सं., दाढ़ी कटैवाला पत्ती, ब्लेड । अं. तद्भव
बिलैनी लागब-क्रि., निश्चितो वस्तुक लोप होएब । मै.
बिलैया-सं., भीतर अर्थात् घर दिश सँ केबाड़ बन्न करैक काठक यन्त्र । मै.
बिलोड़ब-क्रि., मथब, घोंकब । मै.
बिलो बिलो करब-क्रि., बिलाड़ि जकाँ भगबैक चेष्टा कय अपमानित कर' लागब । मै.
बिलौकी-सं., नव नव कनिया आ वर कें गामक घरें घरें ल' जा क' लोक कें देखबैक विधि । मै.
बिष्टी-सं., केवल गुप्ताङ्ग मात्रक आच्छादन हेतु चारि आङुर चाकर कपड़ा । मै.
बिष्ठा-सं., मनुष्यक त्यागल मल । मै.
बिसखब-क्रि., माललाल कें दूध नहि होएब तथा दूध होएब बन्न भ' जाएब । मै.
बिसखोपड़ा-विशे., (लाक्षणिक) वैमनस्य पसारैवाला । विरोध करवैवाला । मै.
बिसनाएब-क्रि., स्वप्न मे बाजब आ भावना के व्यक्त करब । मै.
बिसनारि-सं., जड़ीक वनस्पति विशेष । मै.
बिसबिषरी-सं., बीन्हैवाला, डंक मारैवाला कीट आ पतंग । मै.
बिसफोटक-विशे., विस्फोट करैवाला । (लाक्षणिक) गुप्त बात कें वेग सँ प्रकट करैवाला । मै.
बिसबिसाएब-क्रि., भीतर दिश छेदैत सन गतिशील वेदना होएब । मै.
बिसबिसी-सं., भीतर दिश छेदैत सन बढ़ैत पीड़ा । मै.
बिसरब-क्रि., विस्मरण करब, मोन नहि रहब । मै.
बिसरभोर-विशे., बिसरैवाला, सुधि नै रखैवाला । मै.

बिसराहु-विशे., बिसरि जाइक, सुधि नै रखैक प्रकृतिवाला । मै.

बिसरि जाएब-क्रि., मोन नहि राखब । मै.

बिसहरा-सं., मनसा देवी । नाग देवता । मै.

बिसाइन-सं., सूड़ल मांसक दुर्गन्ध । मै.

बिसाएब-क्रि., शंकित सम्भावित आपत्तिक होएब । मै.

बिसाँड-सं., कमल फूलक कन्द । मै.

बिसाँढ़ी-सं., १. माछ विशेष । २. कमल फूलक डंटी लागल जड़ि । मै.

बिसौबन्हन-सं., (लाक्षणिक) नाम मात्रो गहना । मै.

बिहुआरब-क्रि., १. बीयाक हेतु आन जातिक अन्नक सीस कें छाँटि कय बहार करब । २. गाछ आ घास कें चीरि कय हूलु कात टारब । मै.

बिहुँगड़ा-सं., मालजालक रोग विशेष । मै.

बिहुटार-सं., उच्चाटन, उपटि जाइक प्रवृत्ति । मै.

बिहुटारब-क्रि., उपटाकय दूर हटाएब । मै.

बिहुबिहुटार-सं., उपटाकय दहो दिश फेका जाइक स्थिति । मै.

बिहुराओन-विशे., बिहारिक लच्छनवाला । मै.

बिहरियाहाल-सं., बिहारिक संग वर्षा भेला पर भूमिक सरसता । मै.

बिहाग-सं., उषा काल मे गबैवाला राग । मै.

बिहान-सं., उषाकाल, परात । मै.

बिहार-सं., १. भारत संघक एक राज्य । २. आनन्द भोग । मै.

बिहारि-सं., प्रचण्ड वेगवाला बसात, अन्हड़ । मै.

बिहारि बसात बनब-क्रि., अन्हड़ जकाँ गति मे वेग होएब । मै.

बिहि-सं., विधि । सं. तद्भव

बिहुन-विशे., विहीन । सं. तद्भव

बिहुँसब-क्रि., १. कनेक हँसैक कम करब । २. (लाक्षणिक) रस सँ फलक विदीर्ण होएब । मै.

बिहुँसी-सं., मुसकुराइक छवि । मै.

बिहौती-विशे., विवाहक उपयोगक योग्य वा उपयोग कयल । मै.

बी

बीघा-सं., देखू—"बिगहा" । मै.

बीच-सं., १. अन्तर । २. मध्य । मै.

बीछ-सं., डंक मारैवाला नाम पातर विषैला सरीसृप छोट जीव । मै.

बीछब-क्रि., एक एककय उठाएब, चूनब । मै.

बीछा बीछी-सं., बीछैक नियत आवश्यक काज । मै.

बीज-सं., बीया, उत्पत्तिक आदि । मै.

बीजी पुरुखा-विशे., वंशक मूल प्रवर्तक । मै.

बीझ-सं., माटि पानिक संयोग सँ उत्पन्न सोहक विकार । मै.

बीट-सं., जड़ि सँ उगल अंकुरक कारणें घनीभूत बाँस आदि गाछक समूह । मै.

बीड़-सं., गहना विशेष । मै.

बीड़ा-सं., १. लगाओल पानक खिल्ली । २. थैल आदि वस्तु कें स्थिर रखै सेल पहिया जकाँ वा कुण्डल जकाँ आधार । मै.

बीड़ी-सं., १. खढ़ आ नारक मोड़ि कय बँसै सेल बनाओल नूड़ी । २. धूम्रपानक वस्तु । मै.

बीड़ुआ-सं., वर्तन सँ माण पसावै सेल वर्तनक मुह पर देमवाला घासक नूड़ा । मै.

बीणा-सं., वाद्य विशेष । सं. तद्भव

बीत-सं., १. वित्त, सम्पत्ति । २. हाथ पसारला पर औंठा सँ तर्जनी धरिक मान । मै.

बीतब-क्रि., कालक पाछू पड़ब, समय कटब । मै.

बीत बासन-सं., धनक रूप मे छोट सँ पैघ सब वस्तुक समूह । मै.

बीध-सं., अवसर परक व्यवहार । विधि । सं. तद्भव

बीन-सं., साँप मोहैवाला बँसुलीसन बाजा महुअर । मै.

बीभत्स-विशे., घृणित । सं. तत्सम

बीम-सं., कोठाक छत कें अड़बैवाला सोझ चौरस काठ । मै.

बीमा-सं., जीवनक संरक्षाक हेतु बचत योजनाक नियम विशेष । मै.

बीया-सं., बीज । मै.

बीयावान-विशे., प्रचारित, प्रकाश मे आएल । प्रयोग—"एक कान दू कान बीयावान ।" मै.

बीर-विशे., बहादुर । मै.

बीरपात-सं., केरा सँ सब सँ नव बहराएल पात । मै.

बीरन-सं., जमल तुर कें अलग करैक काज। मै.

बीरब-क्रि., जमल तुर कें अंग अंग छोड़ाकय फल-काएब। मै.

बील-सं., भूर, बिल, बीहरि। सं. तद्भव

बीस-संख्या, दू दहाइ शून्य एकाइक अंक। मै.

बीसी-सं., बीस संख्याक अवधिक मान। मै.

बीहन-सं., सघन घासपात कें बीच सँ फाड़ैत बाट बनबैक काज। मै.

बीहनि-सं., बीया लेल निहुछल अन्न। मै.

बीहड़-विशे., सघन आ भयंकर जंगल। मै.

बीहब-क्रि., सघन घासपात हूनु काल उनारैत बाट बनाएब। मै.

बीहरि-सं., भूर, भूमिक छेद बिल। मै.

बु

बुड़/बुड़आ-सं., धीयापूता कें डेरबैक हेतु भयंकरता जनबैसे कीटक निर्देश। मै.

बुइर-सं., स्त्रीक गुप्ताङ्ग। मै.

बुक्का फाड़िकय कानब-क्रि., एकाएक जोर सँ कानि उठब। मै.

बुकना-सं., चूर्ण, गरदी करैक साधन, बूकैक वस्तु। मै.

बुकनी-सं., बनाओल गरदी, चूर्ण। मै.

बुकलहा-विशे., बूकलवाला। मै.

बुकाइ-सं., बूकैक निरन्तर कार्य प्रणाली। मै.

बुकाएब-क्रि., अनका द्वारा चूर्ण (गरदी) बनाएब। मै.

बुकान-सं., बूकैक विशेषता। मै.

बुकाबुकी करब-क्रि., बराबरि व्यर्थ बूकैक कम राखब। मै.

बुकिम्रा-सं., बूकैक आवश्यक काज। मै.

बुकौर फाटब-क्रि. रहि रहि के कनैक वेग होएब। मै.

बुखार-सं., ज्वर। उ. तत्सम

बुच्च-विशे., ठोस भ' जाइक कारणें छोट आ चौक-चल। मै.

बुच्च होयब-क्रि., सुकुनि जाएब। मै.

बुच्चरखाना-सं., कसाइखाना, पशुक वधक स्थान। मै.

बुच्ची-विशे., अतिप्रिय कन्या। मै.

बुचकट-विशे., ओछ, उचित नाप सँ छोट। मै.

बुझक्कर-विशे., सरलता सँ बूझैक जनैक योग्य। मै.

बुझनुक-विशे., शीघ्र बुझैक बुद्धिवाला, बोधगर। मै.

बुझब सुझब-क्रि., जानकारी लेब, हालिचालि जानब। मै.

बुझबैया-विशे., बुझौनिहार। मै.

बुझलहा-विशे., बुझलवाला। मै.

बुझाएब-क्रि., बोध कराएब, जनाएब, ज्ञान कराएब। मै.

बुझारति-सं., वादी प्रतिवादी दूनू पक्षक बात बूझि कय पंचैती। मै.

बुझाल बूझब-क्रि., (लाक्षणिक) बुझैक विपरीत आपत्ति भोगब। मै.

बुझौअलि-सं., कोनो बालक अर्थ बहार करब। प्रयोग–''जी जान छोड़ि क' चारि टाँग ककरा।'' पहेली। मै.

बुझौनिहार-विशे., ज्ञान देवाला, बुझबैवाला। मै.

बुझौनी-सं., बुझबैक कम लागल काज। मै.

बुट्टा-सं., धान आदि फसिलक जड़ि एवं गाछ। प्रयोग–''धानक जेहन बुट्टा तेहन सीस नै भेलै।'' मै.

बुट्टी-सं., काटल गाछक जड़ि। मै.

बुटाम-सं., देखू—''बटुम''। मै.

बुड़ियाएब-क्रि., उपर सँ काटि काटि जड़ि मात्र गाछक छोड़ब। मै.

बुड़ब-क्रि., नष्ट होएब, धनक व्यर्थ जाएब। मै.

बुड़राक-विशे., जानक डर नहि रखैत आ नीक अधलाह बिना सोचने हूलैवाला। मै.

बुड़लहा-विशे., नष्ट भेलवाला। मै.

बुड़ाएब-क्रि., व्यर्थ नष्ट करब। मै.

बुड़ाक-विशे., व्यर्थ धनजन गमबैक प्रवृत्तिवाला। मै.

बुड़ाड़-विशे., उच्च कोटिक बुड़ि, मूर्ख विवेकशून्य। मै.

बुड़िआह-विशे., बुड़ि जकाँ लगैवाला। मै.

बुड़िआहि-विशे., बुड़ि लोकक जकाँ चालि। मै.

बुड़िल/बुड़िलब-सं., बुड़ि लोकक गुण। मै.

बुड़िधनही-विशे., बुड़ि मे सर्वश्रेष्ठ। मै.

बुड़िपन-सं., बुड़ि लोकक स्वभाव। मै.

बुड़िबक-विशे., विचार शक्तिहीन मूर्ख। मै.

बुड़िबकहा-विशे., बेवकूफ स्वभाव भरल। मै.
बुड़िबकी-सं., मूर्खता, अविवेक। मै.
बुड़ियाएब-क्रि., स्वभाव आ चालि सँ बूड़ि बनि जाएब। मै.
बुड़ियाह-विशे., बूड़ि बनल स्वभाववाला। मै.
बुड़ियाहा-विशे., बूड़िक स्वभाव भरलवाला। मै.
बुड़िबैनी-सं., नष्ट होइक स्थिति, बूड़ि बनैक गुण। मै.
बुड़ीअलि-सं., बारम्बार नष्ट करैक प्रवृत्ति। मै.
बुड़गोड़-विशे., बूढ़सन भय गेल। मै.
बुढ़पन-सं., बूढ़क अवस्था। मै.
बुढ़बा-विशे., (अनादर मे) बूढ़। मै.
बुढ़हा-विशे., (आदर मे) बूढ़। मै.
बुढ़ाइ-सं., बूढ़क अवस्था। मै.
बुढ़ाएब-क्रि., बूढ़ जकाँ लागब। मै.
बुढ़ाओन-विशे., बूढ़सन लगनिहार। मै.
बुढ़ाँठ-विशे., वयसेँ बूढ़ जकाँ बनल। रूपरंग सँ बूढ़सन लगैवाला। मै.
बुढ़ारी-सं., वृद्धावस्था। मै.
बुढ़िया-विशे., (अनादर मे) बूढ़ि स्त्री। मै.
बुढ़ौ-विशे., उपहसनीय बूढ़। मै.
बुत्त-विशे., निशाँ (मद) सँ ज्ञानध्यानहीन। मै.
बुत्ता-सं., शारीरिक शक्ति, बल। मै.
बुतें-अव्यय, बलक द्वारा। मै.
बुद्ध-विशे. १. अवतार विशेष, एतिहासिक पुरुष, शुद्धोदन राजाक पुत्र। २. महाज्ञानी, तत्त्वज्ञ। सं तत्सम
बुद्धि-सं., ज्ञान, अकिल सं. तत्सम
बुद्धिमान्-विशे., बुद्धिवाला। सं. तत्सम
बुद्धू-विशे., अत्यन्त मूर्ख। मै.
बुदबुद करब-क्रि., वर्तन मे रान्हल जाइत अन्न मे आँचक शब्द। मै.
बुदबुदाएब-क्रि., अस्पष्ट आ नीक जकाँ नै सुनि सकैवाला ध्वनि मुह सँ बहार करब। मै.
बुदबुदी-सं., १. अस्पष्ट ध्वनि। २. पातर बुन्न सँ निरन्तर वर्षा। मै.
बुधि-सं., बुद्धि। सं. तद्भव
बुधिबधिया-सं., शूद्रक ओतय राखिकय ब्रह्मणक बच्छा केँ वधिया करैक छल। मै.
बुधिमन्त-विशे., देखू-"बुद्धिमान्।" मै.
बुधिमानी-सं., बुद्धिमान् लोकक गुण। मै.
बुधियरबा-विशे., (प्रशंसा मे) बुद्धि सँ काज लैवाला। मै.
बुधियार-विशे., बुद्धि भरल। मै.
बुधियारी-सं., बुद्धि सँ काज लैक गुण। मै.
बुधुआ-विशे., अज्ञ, किछु नहि जानि सकैक शक्तिवाला। मै.
बुन्द-सं., द्रव वस्तुक लघुतम एकाइ। विन्दु। मै.
बुन्दपात-सं., (लाक्षणिक) एको बिन्दु वर्षा। मै.
बुन्दाबुन्दी-सं., एक एक बिन्दु सँ वर्षा। मै.
बुन्न-सं., देखू-"बुन्द"। मै.
बुन्ना-सं., बिन्दु, अनुस्वार, शून्यक गोल चिह्न। मै.
बुन्नी-सं., (लाक्षणिक) पातर बुन्नवाला वर्षा। मै.
बुनकर-विशे., कपड़ा बीनैक व्यवसायवाला, जुलाहा। हि. तत्सम
बुनका-सं., बिन्दु जकाँ उगल चिह्न। मै.
बुनका बुनका नहाँइत-विशे., अनेक बिन्दुक गोल सन चिह्न। मै.
बुनकी-सं., सघन बिन्दुक चिह्न। मै.
बुनछेक-सं., वर्षा होइक विराम। मै.
बुन छोड़ि बरिसब-क्रि., मुसलाधार वर्षा होएब। मै.
बुनब-क्रि., १. बाओग करब। २. वस्तु बीनब। मै.
बुनबुना-सं., द्रव वस्तु केर फेन फोंका जकाँ। मै.
बुनबुनाएब-क्रि., द्रव वस्तुक उपर फेंच फोंका जकाँ विकार जागब। मै.
बुनसहा-विशे., बाओग कैनवाला, बीनलवाला। मै.
बुनबैया-विशे., बीनैक काज करवैवाला। बाओग करवैवाला। मै.
बुनाइ-सं., १. बीनैक काज। २. बाओग करैक काज। मै.
बुनाएब-क्रि., १. बीनवाएब। २. बाओग कराएब। मै.
बुनाओट-सं., बीनैक शैली, ढंग। मै.
बुनिया-सं., बीनैक वा बाओग करैक लागल काज। मै.
बुनियाँ-सं., मेंही गोल बिन्दु जकाँ बेसनक छानल मधुर। मै.
बुबकब-क्रि., धनक गौरव सँ उन्मत्त बनब। मै.
बुबकी-सं., धनक मद। मै.

बुमकौर फुटब-क्रि., धरती फोड़िकय पानिक वेग होएब । मै.

बुर्जखाप-सं., पताम कें चिक्कन करैवाला अस्त्र । मै.

बुरका-सं., पर्दाक हेतु मुसलमानक स्त्रीक पहिरन सँ अतिरिक्त संपूर्ण देहक एक आवरण । मै.

बुराई-सं., अपकार । हि. तत्सम

बुलकाएब-क्रि., परतारिकय मन फेरि देब । मै.

बुलकी-सं., बीच नाकक खम्भा मे पहिरैवाला ठोस गोल आ छोट भूषण । मै.

बुलन्द-विशे., उजागर प्रसन्न । हि. तत्सम

बुलन्दी-सं., प्रसन्नता । हि. तत्सम

बुलन्ती-सं., बूलैत रहैक प्रवृत्ति । मै.

बुलना-विशे., अधिक बुलैवाला । मै.

बुलबुल-सं., पक्षी विशेष । मै.

बुलबुला-सं., द्रव वस्तुक उपर उठल विकार । मै.

बुलबुली देब-क्रि., वचन सँ मन मे भय आ दुःख जगबैत अपन काज साधैक प्रयास करब । मै.

बुलाएब-क्रि., घुमाएब, टहलाएब । मै.

बुलाकी-सं., बेशी लटकल पत्ती जकाँ नाकक गहना । मै.

बुलेट-सं., बन्दूकक गोली । अं. तद्भव

बू

बूकब-क्रि., कोनो वस्तु के चूरिकय गरदी बनाएब । मै.

बूझ-सं., ज्ञान । मै.

बूझब-क्रि., ज्ञान करब, जानकारी लेब । मै.

बूझि-सं., बूझैक शक्ति, बुद्धि । मै.

बूट-सं., काटल पेंच गाछक अड़ि । मै.

बूटी-सं., जड़ी, औषध । मै.

बूड़ि-विशे., अत्यन्त मूर्ख । मै.

बूढ़-विशे., वृद्ध । स्त्री० बूढ़ी । मै.

बूढ़ि गैक भेल-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त दुर्बल । मै.

बून-सं., बाओग करैक ढंग । बिन्दु । मै.

बूनब-क्रि., बाओग करब । मै.

बूलब-क्रि., घूमब, टहलब । मै.

बे

बे-अव्यय, बिना केर अर्थ मे उपसर्ग । मै.

बेडरेब-क्रि., बेमेल, मिलान नहि होमवाला । मै.

बेओरा-सं., उद्योग । मै.

बेक छाएब-क्रि., व्याख्याकय कहब । विस्तार सँ बुझा सुझाकय कहब । मै.

बेकति-सं., व्यक्ति । सं. तद्भव

बेकरी-सं., बिस्कुट आ पाँव रोटी बनबैक भट्ठी । मै.

बेकल-विशे., विकल । सं. तद्भव

बेकार-अव्यय, व्यर्थ, अनेर । मै.

बेकारी समस्या-सं., उद्यमहीन आ बिना बेओराक जीवन यापनक जटिलता । मै.

बेकाल-विशे., व्यापारी । मै.

बेकाली-सं., व्यवसाय, व्यापार । मै.

बेख-सं., वन सम्पत्ति । मै.

बेखबुनियादि-सं., वन आदि मूल सम्पत्ति । मै.

बेखर-विशे., निधोख अश्लील बात बजनिहार । मै.

बेखी-विशे., अधिक वन सम्पत्तिवाला । मै.

बेघर-विशे., घरद्वाररहित । मै.

बेगड़-विशे., उनट पुनट । मै.

बेगम-विशे., मुसलमानक माननीय पत्नी । मै.

बेगरता-सं., व्यग्रता । सं. तद्भव

बेगरतित-विशे., व्यग्रता भरल । मै.

बेगरतू-विशे., अपने टा स्वार्थ ले व्यग्र रहैवाला । मै.

बेगहा-विशे., सब काज मे शीघ्रताक स्वभाववाला । मै.

बेगाएब-क्रि., बेग सँ काज करब, झटकि चलब । मै.

बेगान-विशे., अपनापन हीन आन । मै.

बेगार-विशे., बन्हुआ जन । मै.

बेगारी-सं., बिना पारिश्रमिकक काज । मै.

बेगाह-विशे., जल्दीबाजीक प्रकृतिवाला । हड़बड़ाह । मै.

बेङ-सं., दादुर (मेढ़क) । मै.

बेङ्ची-सं., अत्यन्त छोट बेङक बच्चा । मै.

बेङ्ची फूलब-क्रि., देहक मांसल अंग कें दबला सँ हठात् मांसक आ शिराक ग्रन्थिक फूलब । मै.

बेन्च-सं., नाम आ कम चाकर बैसैक चौकी। अं. तत्सम

बेच-सं., मूल्यक स्थान मे देयवाला अन्न। मै.

बेचन-सं., बेचैक काज। मै.

बेचब-क्रि., दाम सँ क' कोनो वस्तु देबाक क्रिया करब। मै.

बेचबबिकिनब-क्रि., दोकानदारी करब, व्यापार करब। मै.

बेचबिकिन-सं., वाणिज्य व्यवसाय। मै.

बेचलहा-विशे., बेचलवाला। मै.

बेचारा-विशे., दयाक पात्र। मै.

बेजाय/बेजँ-विशे., अनुचित, असंगत। उ. तद्भव

बेजान-विशे., प्राण पण सँ। मै.

बेंट-सं., हँसु, खुरपी, कोदारि आदि अस्त्र मे लागल काठ। मै.

बेंटछुट्टू-विशे., १. बिना बेंट लागल अस्त्र। २. (लाक्षणिक) अनुशासनहीन, उद्दण्ड। मै.

बेटा-सं., पुत्र। स्त्री० बेटी। मै.

बेटिया-विशे., अधिक प्रिय बेटी। मै.

बेटियाहा-विशे., अधिक बेटीवाला। मै.

बेटै-विशे., बेगार। मै.

बेठीक-विशे., असमान, असंगत। मै.

बेड़-सं., करचिक चम्हक बनाओल नाओ। मै.

बेड़ा-सं., नदी आ समुद्र पार करैक साधन। मै.

बेड़ी-सं., बन्दी (कैदी) क हाथ पैरक कड़ी। मै.

बेडोल-विशे., बेमेल, मिलान नहि खाइवाला। कुरूप। मै.

बेढ़-सं., घेरन, अवरोध। मै.

बेढङ्ग-विशे., अनर्गल रूपवाला, काज करैक शैली नहि जननिहार। मै.

बेढ़न-सं., घेरैक क्रम, विशेष स्थान कें कोनो वस्तु सँ सुरक्षित बनबैक प्रक्रिया। मै.

बेढब-क्रि., अनुचित आकार प्रकारवाला। मै.

बेढ़लहा-विशे., घेरलवाला (क्षेत्र)। मै.

बेढ़ही-सं., मालजाल सँ सुरक्षाक हेतु गाछ वृक्षक चारूभर देल छोट क्षेत्रक घेरन। मै.

बेढ़ाइ-सं., बेढ़ैक कार्यक्रम। मै.

बेढ़ाएब-क्रि., अनका द्वारा बेढ़ दैक प्रयास करब। मै.

बेढ़ान-सं., कसिक' बेढ़ैक क्रम। मै.

बेढ़िया-सं., बेढ़ैक विशेष काज। मै.

बेढ़ुआ-विशे., बेढ़लवाला। मै.

बेढ़ी-सं., चारू दिश सँ टाटक अवरोध। मै.

बेणी-सं., १. केशक चुट्टी। २. नदी। सं. तत्सम

बेतु-सं., वसूली। सं. तत्सम

बेंत-सं., सकत आ पातर छोट बनैया वनस्पति बेतस। मै.

बेतन-सं., दरमाहा। सं. तत्सम

बेतब-क्रि., ब्योंत करब, प्रबन्ध करब। मै.

बेतरेक-अव्यय, व्यतिरेक, बिना। मै.

बेतहा-विशे., बेंतक जंगल। मै.

बेतही-विशे., बेंतक बनाओल वस्तु। मै.

बेताओ-विशे., क्रमशः उग्रता बढ़बैवाला। मै.

बेताक-विशे., तर्कहीन। उचित समयक उचित प्रक्रियारहित। मै.

बेताड़-विशे., वताहक व्यवहार रखनिहार। मै.

बेतारकतार-सं., बिना कोनो सम्पर्क वैज्ञानिक प्रक्रियावाला पठाओल ध्वनि। मै.

बेतासा-विशे., चिन्ता, व्यग्रता आ अन्देसाक संग व्याकुलता भरल चञ्चल। मै.

बेती लीचब-क्रि., चित्त भरें बेंत चकौ लीचब। मै.

बेतुकार-विशे., असंगत, अनर्गल, अनुचित। मै.

बेथा-सं., दर्द, मानसिक पीड़ा, व्यथा। सं. तद्भव

बेथित-विशे., व्यथित, पीड़ित। सं. तद्भव

बेद-सं., १. आदि कालक ज्ञान विज्ञानशास्त्र। २. (लाक्षणिक) जीवन यापक विधान। सं. तद्भव

बेदनमक-विशे., जन्म होइक कालक चेतनाहीन बच्चा। मै.

बेदम-विशे., शक्तिहीन, निःसार। मै.

बेदर्दी-विशे., दोसराक पीड़ा नहि बुझनिहार। मै.

बेदरंग-विशे., भिन्न-भिन्न रंगवाला, रंग मे नहि मिलैवाला। मै.

बेदरा-सं., बच्चा, नेन्ना। मै.

बेदी-सं., वैदिक कर्मक स्थान, विवाह विधिक विशेष प्रकारे रचित स्थान। सं. तत्सम

बेधड़क-विशे., बिना धड़ी धोखा तथा मर्य्यादा आ संकोचवाला। मै.

बेध-सं., १. अस्त्र आदि सँ भोंकल जाइक स्थिति। २. ग्रह नक्षत्र मे परस्पर संलग्न रहैक भयंकर दोष। सं. तद्भव

बेधन-सं., बेध करैक प्रक्रिया । मै.

बेधब-क्रि., अस्त्र सँ भोंकाब । फँसाएब । मै.

बेधलहा-विशे., अस्त्र सँ भोंकलवाला । मै.

बेधाएब-क्रि., काँट आदि भेंगाएब । बन्सी आदि सँ फँसाएब । मै.

बेधुआ-विशे., काँट वा पातर नाम अस्त्र सँ बेधि कय प्राप्त कयल । मै.

बेना-सं., १. कोनो वस्तुक कीनै बेचै मे बाग्दानक संग मूल्यक किछु मात्र अंशक प्रयोग । २. बीयनि । मै.

बेनाठी-सं., लाठी ठेङा आदिक उतार पछिला भाग । मै.

बेनामी-विशे., १. आनक नामे छिपाओल । २.नाम-हीन । मै.

बेनिया-सं., काठक वस्तु कें आन काठ सँ सम्बन्ध जोड़ैले देल छोट काठक टुकड़ी । मै.

बेनी-सं., १. कन्या द्वारा विवाह मे लावाक होम करै लेल बाँसक बीनल छोट बासन । २. केबाक पुट्ठी । ३. केबाड़क पट्टा मे पट्टी जोड़ैवाला पातर लकड़ीक टुकड़ी । मै.

बेपर्द-विशे., झाँपन (आच्छादन) हीन । उ. तत्सम

बेपार-सं., व्यापार, वाणिज्य । सं. तद्भव

बेपारी-विशे., व्यापार करैवाला । सं. तद्भव

बेबसँ-सं., व्यवसाय । सं. तद्भव

बेबा-विशे., विधवा । राँड़ । उ. तत्सम

बेबालि-सं., सुरक्षाहीन स्थान । मै.

बेबूझ-विशे., बुझौली पर बात नहि मानैवाला । मै.

बेमार-विशे., दुखिताह, बीमार । हि. तद्भव

बेमारी-सं., रोग व्याधि । बीमारी । हि. तद्भव

बेर-सं., १. समय, अवसर । २. माछ फँसबैक सर-कीक टाट । मै.

बेर उठब-क्रि., सूर्य गोलक ऊपर उठब । मै.

बेर उनहब-क्रि., उचित समयक बीति जाएब । मै.

बेरक-विशे., समय पर उपयोगी । मै.

बेरगुबेर-अव्यय, नीक अधलाह समय पर । मै.

बेरखन-सं., अपराह्न काल । मै.

बेरब-क्रि., अलग होएब । मै.

बेरबाद-विशे., बरबाद, नष्ट, ध्वंस । हि. तद्भव

बेर बेर-अव्यय, बारम्बार । मै.

बेरलहा-विशे., मिश्रित वस्तु सँ विशेष प्रक्रिया द्वारा अलग अलग कयल । मै.

बेरहट-सं., अपराह्नक जलपान । मै.

बेरहटिया-विशे., बेरहट बादवाला समय । मै.

बेरहा-विशे., बेरखन (अपराह्न) कालवाला । मै.

बेरा-सं., समय । मै.

बेराइ-सं., अन्न कें स्वच्छ कय अलग करैक काज । फुटबैक प्रक्रिया । मै.

बेराएब-क्रि., अलग करब, फुटाएब । मै.

बेरायन-सं., पूजापाठ आदिक हेतु सप्ताह मे निश्चित कयल शुभ दिन । मै.

बेरानबे-संख्या, नौ बहौँ दू एकाइक अंक । मै.

बेराबेरी-अव्यय, एकक बाद दोसराक पारक क्रम सँ । मै.

बेराम पड़ब-क्रि., दुखित पड़ब । मै.

बेरासी-संख्या, आठ बहौँ दू एकाइक अंक । मै.

बेरियाँ-अव्यय, बेरखन, अपराह्न मे । मै.

बेरुका पहर-सं., दिन झुकलवाला समय । मै.

बेरेत-अव्यय, कदाचित् सम्भव । मै.

बेरोह-विशे., निराशा सँ दुखी । मै.

बेल-सं., स्थूल फल विशेष । मै.

बेलकठ-सं., श्रीखण्ड चन्दनक स्थान मे बेलक चीर-वाला काठ । मै.

बेलग होएब-क्रि., संग सँ फूटि जाएब । मै.

बेलगान-विशे., वासक हेतु बिना लगानवाला भूमि । मै.

बेलचा-सं., भूमि पर सँ ढेरीक वस्तु उठबैक चाकर पैंप लोहक पत्र सँ बनल अस्त्र । मै.

बेलदार-सं., माटि काटैक व्यवसायी जाति । मै.

बेलन-सं., ऊपर खाभर कें समतल करैवाला गोल नाम आ भारी यन्त्र । मै.

बेलना-सं., रोटी कें पसारैवाला गोल नाम काठक साधन । मै.

बेलना बेलब-क्रि., (लाक्षणिक) पहिलुक अनुभवक अनुभव करब । मै.

बेलनोती-सं., दुर्गापूजा मे छठम पूजा दिन बिल्वा-भिमन्त्रण विधि । मै.

बेलपात-सं., पूजा मे चढ़बैवाला बेलक पात । मै.

बेलब-क्रि., चकड़ पर सानल आँटा कें बेलना सँ पसारब । मै.

बेलबा-विशे., बेलक आकार एवं स्वादवाला । मै.

बेलल्ला-विशे., हताशा सँ व्यग्र । मै.

बेलसि-विशे., परस्पर सम्पर्क नहि रखैवाला संलग्न नहि रहैवाला । अपेक्षाहीन । मै.

बेलसूँठि-सं., गाछ सँ खसला पर बेलक मुखाग्रीत । मै.

बेला-सं., १. बेर। २. बकका बेली फूल । मै.

बेलाइल-विशे., स्वाद आ रंग मे बेल जकाँ । मै.

बेलागि-विशे., परस्पर सम्बन्धहीन । मै.

बेलाह-विशे., बेलक रस लागल । मै.

बेली-सं., उज्जर सुवासित चैती फूल । मै.

बेलूरि-विशे., काज करैक ढङ्ग नहि अनैवाला । मै.

बेश्या-विशे., शरीर बेचैवाली स्त्री । सं. तद्भव

बेश-सं., १. अपन अनुकूल खेवक व्यवस्था । २. बनैवानि । सं. तद्भव

बेशभूषा-सं., बनयवानि । मै.

बेशिर पैरक बात-सं., (लाक्षणिक) बेमेल गप । कतो सँ कोनो बातक सम्बन्ध नहि । मै.

बेशी-विशे., अधिक । मै.

बेस !-अव्यय, स्वीकारक शब्द । मै.

बेसकार-विशे., बिना स्वीकारवाला । मै.

बेसन-सं., दलिहन अन्नक पीसल चाठि । मै.

बेसनाइल-विशे., बेसन भरल । मै.

बेसबाहा-विशे., नीक जकाँ, उत्तम प्रकारवाला । मै.

बेसम्हार-विशे., सम्हार सँ बहार भेल । मै.

बेसरम-सं., विस्मरण, चेतनाशून्य अवस्थाक स्थिति । प्रयोग—''निन बेसरम ।'' बेशर्म । सं./उ. तद्भव

बेसरि-सं., नाकक गहना विशेष । मै.

बेसरोकार-विशे., प्रयोजन संग सम्पर्कहीन अपेक्षा रहित । मै.

बेसहक-विशे., बेसाहु दैनिक भोज्य वस्तु कीनैवाला । मै.

बेसाती-विशे., विदेश सँ आएल व्यापारी । मै.

बेसाह-सं., भोजनार्थ अन्नक खरीद । मै.

बेसाहब-क्रि., नित्य खैकक अन्न कीनब । मै.

बेसियाल-विशे., उचित मान सँ बेसी बाँचल । छेठ। मै.

बेसुधि-विशे., निश्चेष्ट भ' क' चेतनाहीन ज्ञानशून्य । मै.

बेसुरा-विशे., बिना ताल मात्राक गीत । मै.

बेहुरी-सं., चन्दा, दान रूपक द्रव्यक आहरण । मै.

बेहुला-विशे., कन्यादान कर्यनिहारक औतयक आगत लोक । सरियाती । मै.

बेहाल-विशे., अन्देशा हताशा आ व्यग्रता सँ व्याकुल । मै.

बेहुड़ल खाम्ह-विशे., (लाक्षणिक) सदिखन अव्यवस्थित रहनिहार, जेम्हरे तेम्हरे झुकि जाइवाला । बातक कोनो नै ठेकानवाला । मै.

बेहोस-विशे., संज्ञाहीन, सोच विचारक शक्तिहीन । मै.

बै

बैं-सं., १. कपड़ा बीनैक संयन्त्र, ताना । २. स्वाभाविक जिद् समेत आसक्ति । एक वस्तुक सेल आसक्ति । मै.

बैआह-विशे., वायु बढ़ैवाला । मै.

बैं बैं करब-क्रि., गुप्तो बात कें सगरे प्रकट करब । मै.

बैग-सं., सक्कत वस्तुक विशिष्ट प्रकारक छोट आ पैंच थैला । मै.

बैगन-सं., तरकारी विशेष, भट्टा । मै.

बैगनी-सं., १. रंग विशेष । २. बिना पिठारें तरल भटबर । मै.

बैठक-सं., बहारी लोकक बैसै उठैक स्थान । मै.

बैठकी-सं., १. भगता द्वारा रोग व्याधिक निराकरण हेतु भाओ । २. उठै बैसैक व्यायाम । मै.

बैठल-सं., कोनो वस्तु कें स्थिर रखैक गर । मै.

बैठब-क्रि., टाङ मोड़िकय स्थिर भय रहब । मै.

बैठलहा-विशे., बैसल (स्थिर) भेलवाला । मै.

बैठा-सं., धोबीक उपाधि । मै.

बैठाबैठी-सं., बैसैवाला खेल । मै.

बैठार-सं., सभक बैसैक तथा विश्राम खेल आ बोनक उन्मुक्त स्थान । मै.

बैठारी-सं., बिना कोनो काजक बैसल रहैवाला समय । मै.

बैंठी-सं., कत्ता, तरकारी कटैवाला हाँसू । मै.
बैंड़चोध-विशे., गारिक शब्द । मै.
बैद्य/बैद/बैदा-विशे., चिकित्साशास्त्रक ज्ञाता ।
सं. तद्भव
बैदाइ/बैदागिरी/बैदइ-सं., चिकित्सा, औषधीक व्यवसाय । मै.
बैन-सं., उपहार, सनेस । मै.
बैन परसब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बात सगरे सब कें कहि आएब । मै.
बैना-सं., किछु अग्रिम मूल्य द' क' कीनैक वस्तु कें छेंकि रखैक नियम । मै.
बैब-सं., कपट कारण, बिन कारणौं गढ़ल कारण । प्रयोग—"कोनो बैब सँ घूटर कें झगड़े करैक मन रहै छनि ।" मै.
बैमान-विशे., असत्य व्यवहार करैवाला । बेइमान ।
उ. तद्भव
बैंर -सं., फल विशेष, बदरी फल । मै.
बैंल-सं., बड़द । मै.
बैंलगाड़ी-सं., बड़दक द्वारा चलैवाली गाड़ी । मै.
बैलाएब-क्रि., भगाएब, दूर करब । मै.
बैंस-सं., वयस, आयु । मै.
बैसक्खा-विशे., वैशाख मास मे भेनिहार । मै.
बैसकी-सं., विचार विमर्शक हेतु बैसैक विधि । मै.
बैसब-क्रि., देखू—"बैठब" । हाथ पैर मोड़ि आसन लगाएब । मै.
बैसबनिया-विशे., वैश्य जातिवाला व्यापारी । मै.
बैसार-सं., देखू—"बैठार" । मै.
बैहार-सं., बाध । देखू—"बहियार" । मै.

बो

बो-अव्यय, गारि दैक वस्तुक ध्वनि । मै.
बोअब-क्रि., बाओग करब । मै.
बोआइ-सं., बाओग करैक सामयिक क्रम । मै.
बोआर-सं., बोआरी जातिक बड़का माछ । मै.
बोआरी-सं., सामान्य बोआरी माछ विशेष । मै.
बोइआम-सं., सीसाक झँपनीवाला बासन । मै.
बोकड़ा-विशे., जोआएल, अधिक बैसक छागर । मै.
बोकबा-विशे., (अनादर मे) छ पाँच किछु ने जनैवाला मूर्ख । मै.
बोकरन-सं., वमन कयल पेटक अन्न आदि । मै.
बोकरना-विशे., अधिक वमन करैवाला बच्चा । मै.
बोकरब-क्रि., वमन करब । मै.
बोकराएब-क्रि., (लाक्षणिक) उगिलाएब, छिपाओल कें बहार करब । मै.
बोकल/बोकला-विशे., अकान सुन्न । मै.
बोकस-विशे., बिना कोनो काजक, अकर्मण्य ।
सं. तद्भव
बोका-विशे., मूर्ख बकलेल । मै.
बोकार-सं., १. वमनक वेग । २. बोकरल विकार । मै.
बोकियाएब-क्रि., वस्तु जकाँ बो बो शब्द करैत गरियाएब । मै.
बोको-सं., पीठ पर लादि क' ल' जाइवाला पहाड़क आ नेपालक मनुष्य वाहन । मै.
बोखला-सं., गाछ वृक्षक सुखाएल स्वतः ओदरल छाल । मै.
बोड़-सं., गुदा मार्ग मे जोर लगला सँ बहराएल मांस । मै.
बोड़हा-विशे., बोड़वाला । मै.
बोड़ बहराएब-क्रि., मल मार्गक नली सँ मांस उतरब । बवासीर होएब । मै.
बोड़ाठी-सं., मल मार्गक उतरल मांस । मै.
बोच-सं., हिंसक जलजीव, नकार । मै.
बोझ-सं., बान्हल नालवाला भार तथा आन वस्तुक समेटल आ बान्हल भार । मै.
बोझब-क्रि. उपर सँ लदैत जाएब वा लादब । मै.
बोझलहा-विशे., लादलवाला । मै.
बोझहा-विशे., अधिक भारवाला । मै.
बोझा-सं., भार । मै.
बोझाइ-सं., लदैक क्रम । मै.
बोझाएब-क्रि., लदाएब । मै.
बोझान-सं., लदैक वा बोझैक विशेषता । मै.
बोझौनी-सं., बोझैक निरन्तर काज । मै.
बोट-सं., यान्त्रिक नाओ । मै.
बोटी-सं., मांस खण्ड । लाक्षा प्रशाखा । मै.
बोड़ा-सं., खत्ती मे फड़ैवाला पातर आ नमगर तरकारीक फल । मै.

बोंड़ी-सं., घुट मुटार साँप विशेष । मै.

बोतल-सं., द्रव पदार्थ रखबाक गोल आ नाम पैघ सीसा (काँच) क बासन । अं. तद्भव

बों ँतब-क्रि., देखू—''धों ँतब'' । अंग कें नीचाँ दिस दबाकय विवश करब । मै.

बोदरि-विशे., अत्यन्त बाड़ँ । सं., जलक छोटका चिड़ै । मै.

बोदा-विशे., अत्यन्त अनबूझ, बुड़ि । मै.

बोध-सं., ज्ञान । सं. तत्सम

बोधगर-विशे., विषय कें झट द' बुझैवाला । मै.

बोधब-क्रि., बुझा सुझाकय मनक आवेग कें शान्त करब । मै.

बोधाएब-क्रि., बोध कराएब । मै.

बोधिवृक्ष-सं., महात्मा बुद्ध कें परिनिर्वाण देम' वाला वट वृक्ष । मै.

बोन-सं., वन, जंगल । मै.

बोनझार-सं., बोन जकाँ जनमैवाला छोट छोट झाँखुरक समूह । मै.

बोनट-सं., बन्दूकक अंग विशेष । अं. तत्सम

बोनस-सं., व्यवसाय मे सहयोगी कें देय लाभांश । अं. तत्सम

बोनहा-विशे., बोनवाला, बोन सँ भरल । मै.

बोना-सं., बोनक समूह । मै.

बोनाएब-क्रि., सघन स्थान मे नुकाएब । मै.

बोनाठ-विशे., बोन जकाँ भयंकर । मै.

बोनाहु-विशे., बोन जकाँ जनमैवाला । मै.

बोनि-सं., पारिश्रमिक, दैनिक पारिश्रमिक, अन्न वा पाइ । मै.

बोनिबुता-सं., बोनि करैक शक्ति । मै.

बोनियाँ-विशे., बोनि करैवाला, मजूर, जन । मै.

बोनियाती-विशे., बोनि मे देल वा दातव्य वस्तु । मै.

बोनैया-विशे., बोन मे रहैवाला, होड़वाला । मै.

बोम्बियाएब-क्रि., अनेर भरजि कय बाजब । मै.

बोम्बी देब-क्रि., अनेक प्रकारेँ दण्ड देब । मै.

बोर-सं., १. माछ कें फँसबैक हेतु बन्सी मे गँथैवाला माछक चारा । २. अम्मट बनबैक क्रम मे अम्मट मोटाइ ले अम्मट पर पसारैवाला आमक गाढ़ा । मै.

बोरब-क्रि., रस मे (पानि) मे डुबाएब । मै.

बोरलहा-विशे., द्रव पदार्थ मे डुबाकय राखल । मै.

बोरा-सं., पटुआ सोनक बीनल खोलड़ा । मै.

बोरिया-सं., छोटका बोरा । मै.

बोरिया बिस्तर-सं., बिछाओनक संग सब सामग्री । मै.

बोरैस-सं., आगिक बासन । मै.

बोल-सं., वचन । वाणी । मै.

बोलक मोल-सं., वचनक महत्त्व । मै.

बोलचाल-सं., परस्पर मैत्रीपूर्ण गपसप । मै.

बोल फूटब-क्रि., मुह सँ बोल बहराएब । मै.

बोलभरोस-सं., धैर्य एवं आश्वासनक वचन । मै.

बोलवचन-सं., बजैक मधुर क्रम । मै.

बोलारय-सं., नेन्ना कें बाजि बाजि कय मन बहटारैक क्रम । मै.

बोलाहटि-सं., आह्वान, बजबैक आदेश । मै.

बोली-सं., भाषा । मै.

बोली देब-क्रि., मिथ्या वचन सँ मन कें बढ़ाकय बुड़ि बनाएब । मै.

बोह-सं., हठात् आएल बाढ़ि । मै.

बोहनि-सं., पहिल बिकरीक आरम्भ तथा कोनो काजक शुभारम्भ । मै.

बोहा-सं., बाढ़ि सँ आएल पानि । मै.

बोहाएब-क्रि., १. अनर्गल रूपेँ धन नष्ट करब । २. भसियाएब । मै.

बोहियाएब-क्रि., पानि मे अधिक कालधरि नहाइत रहब । मै.

बौ

बौआ-विशे., स्नेह पात्र बच्चा । मै.

बौआएब-क्रि., निर्देशहीन दिशा मे व्यर्थ घुमब । मै.

बौआसीन-विशे., कुलवधु । मै.

बौक-विशे., गोंङ, बजैक शक्तिहीन । मै.

बौक बकलेल-विशे., शब्दहीनक संग मूर्ख । मै.

बौका-विशे., बौक लोक । मै.

बौकलाएब-क्रि., हठात् बजैत बिगड़ि उठब । मै.

बौड़ब-क्रि., अनिदिष्ट दिशा मे चल जाएब । मै.

बौड़ाहा-विशे., अपन मनमतङ्ग सँ बिना उद्देश्यें कोनो दिशा मे चल जाइवाला । मै.

बौड़ी-सं., बाउड़ी, छोट जलाशय । मै.

बौलबीर-विशे., अत्यन्त मूढ़ । मै.

बौला-सं., काठक वस्तु मे अलग सँ ठोकल जाइवाला काठक टुकड़ी । मै.

बौना-विशे., मूढ़ रहैक विशेषतावाला व्यक्ति । मै.

बौली-सं., लोहक खूट्टा जकाँ बर्तन पकड़ैक साधन । मै.

भ

भ्याओ/भ्याओन-विशे., भयानक । मै.

भ्रम-सं., धोखा । सं. तत्सम

भ्रमर-सं., भँभरा, भौंरा । सं. तत्सम

भ्रष्ट-विशे., चरित्रहीन, च्युत । सं. तत्सम

भ्राता-विशे., भाइ । सं. तत्सम

भ्रातृभाव-सं., भाइचारा । सं. तत्सम

भ्रातृस्नेह-सं., भाइक प्रेम । भाइसन प्रेम । सं. तत्सम

भ्रान्ति-सं., धोखा । सं. तत्सम

भ'-अव्यय, होइक क्रियाक पूर्वकालिक क्रिया । मै.

भइ-अव्यय, परिहास मे निषेधक शब्द । मै.

भकका-विशे., खूबैत मात्र भभरि जाइवाला सिद्ध । मै.

भकत-विशे., ककरो प्रेम मे श्रद्धा सँ समर्पित हृदयवाला । सं. तत्सम

भकित-सं., श्रद्धापूर्वक हृदयक समर्पण । सं. तत्सम

भकइजोत-सं., नाम मात्रक प्रकाश । मै.

भक आएब-क्रि., भ्रम मे पड़ि जाएब । मै.

भकचक लागब-क्रि., आश्चर्य मूढ़ होएब । मै.

भकचब-क्रि., निरर्थक लिखैक कारणें कागज कें रंगब । मै.

भकड़ा-विशे., धान कें सोझिकय बनाओल चाउर चूड़ा । मै.

भक द'-अव्यय, अचानक जागि क' । मै.

भकभक-विशे., अत्यन्त प्रकाशित । मै.

भकनकाएब-क्रि., चमड़ाक उपरी भाग पर वेदना होएब । मै.

भकभकी-सं., १. चमड़ाक उपरी भागक वेदना । २. (लाक्षणिक) कोनो कारणें तामस । मै.

भकमोड़-सं., अचानक मोड़ घूमि जाइवाला बाट । मै.

भकमोड़ी-सं., स्थान स्थान पर मुड़ि जाइवाला क्रम । मै.

भकरार-विशे., अत्यन्त प्रफुल्लित वृक्ष । मै.

भकलोल-विशे., बकलेल, अज्ञान जकाँ तकैवाला । मै.

भकली झोंकब-क्रि., प्राचीन कालक धूआँ सँ दम घोंटाकय मृत्युदण्ड देब । मै.

भकार-सं., 'भ' अक्षर । मै.

भकुआ-विशे., उसिनल धान कें सोरिकय बनाओल चाउर । मै.

भकुआएब-क्रि., अर्धनिद्रित अवस्था मे रहब, असमय निन्न टूटला सँ अलसाएब । मै.

भकुआह-विशे., सतत औंघाएल जकाँ रहैवाला । मै.

भकोभण्ड-विशे., शून्य स्थान । मै.

भकोल-विशे., बकलेल जकाँ मुह तकैवाला बूड़ि । मै.

भखब-क्रि., अशुभ बाजब । मै.

भखड़ब-क्रि., पुरान हयबाक कारणें सारहीन होएब । मै.

भखड़लहा-विशे., पुरान भेला सँ झरलवाला । मै.

भखड़ाह-विशे., छटसन सड़िकय झरैवाला । मै.

भखियौटी-विशे., अपन मातृभाषाक अनुवाद । मै.

भग्न-विशे., टूटल, खण्डित । सं. तत्सम

भग-सं., योनि, स्त्रीक लिङ्ग । सं. तत्सम

भगत-विशे., १. भाओ खेलाइवाला । २. भक्ति करैवाला । मै.

भगतइ-सं., भूतप्रेत आ रोग व्याधिक झारफूक आ तन्त्र मन्त्र करैक विधि । मै.

भगता-विशे., भाओ खेलाइवाला । मै.

भगति-सं., भक्ति, श्रद्धापूर्वक विश्वास । सं. तद्भव

भगतिन-विशे., भक्ति करैवाली । मै.

भगतिया-विशे., भगता होइक ढंग धरैवाला । मै.

भगन्दर-सं., गुप्तांग लगक भयंकर घाओ विशेष । मै.

भगवतिया-विशे., भागवत कथा मात्र कहैवाला पण्डित । मै.

भगवती-सं., देवी, विशेष कयँ स्त्री जाति । मै.

भगवा-सं., कौँड़की, डाँर कें घेरिकय लज्जा निवारक वस्त्रक टुकड़ा । मै.

भगवान-विशे., पूजनीय देवता । मै.

भगाएब-क्रि., बैलाएब, दूर करैक लेल खेहारब । मै.

भगिन जमाए-विशे., भगिनीक पति । मै.

भगिन पुतोहु-विशे., भगिनक पत्नी । मै.

भगिनमान-विशे., सम्बन्धेँ भागिनक कोटि मे अबै-वाला । मै.

भगिना-विशे., पुरुषक हेतु बहिनिक बेटा । मै.

भगिनी-विशे., पुरुषक हेतु बहिनिक बेटी । मै.

भगीड़ा-विशे., सदिखन भगैक चेष्टा रखैवाला । मै.

भङ्ग-सं., १. भाङ । २. खण्डन, टूट । सं. तत्सम

भङ्गी-विशे., १. हरिजन जाति । २. भङ पीबा । मै.

भङ-सं., लूरि, कला । मै.

भङघोंटना-सं., भाङ पीसैक खल । मै.

भङठब-क्रि., गड़बड़ाएब, कोनो यंत्रक व्यतिक्रम होएब । मै.

भङठल-विशे., (लाक्षणिक) बुद्धि सँ मतल जकाँ । मै.

भङठलहा-विशे., भङठल (गड़बड़ाएल) रहैवाला । मै.

भङठा-सं., बाधा, विघ्न, अड़चन । मै.

भङठाएब-क्रि., १. यन्त्र कें अकार्यक क' देब । २. बाधा करब । मै.

भङठाहु-विशे., १. अधिक बाधा करैवाला । २. अधिक भङठैवाला । मै.

भङठी-सं., कल आदि कें काज जोग बनबैक चेष्टा, सुधार । मै.

भङठी करब-क्रि., बिगड़ल यन्त्र कें सुधारि कें चालू बनाएब । मै.

भङतराहु-विशे., तुरन्त तुरन्त बिगड़ैवाला (गड़-बड़ा जाइवाला) यान्त्रिक वस्तु । (लाक्षणिक) अर्द्ध-बताहु । मै.

भङना-सं., फोड़ैक वा खण्डित करैक साधन । मै.

भङपीबा-विशे., अधिक भाङक धूआँ पीबैवाला । मै.

भङब-क्रि., टूटब, फूटब । मै.

भङाइ-सं., भड़ैक चलैवाला काज, भड़ैक पारि-श्रमिक (बोनि) । मै.

भङाएब-क्रि., फोड़ाएब, खण्ड कराएब । मै.

भङिया-विशे., पीसल भाङ अधिक खाइवाला । मै.

भङेरिया-सं., एक धन खेती मे होमैवाला जड़ी विशेष । मै.

भङेरी-विशे., अधिक भाङक सेवन करैवाला । मै.

भजकलदारम्-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) कलदारम् लोन कें भजन करु अर्थात् केवल लेना देना धनक संचय करु । मै.

भजन-सं., भक्ति सँ नामक कीर्तन । सं. तद्भव

भजनिया-विशे., भजन करैक व्यवसायवाला । मै.

भजनी-विशे., भजन करैवाला लोक । मै.

भजब-क्रि., भजन करब । मै.

भँजब-क्रि., पैघ मुद्राक छोट मुद्रा समूह बनब । मै.

भँजरब-क्रि., शुण्ड बनिकय चलब । मै.

भँजलहा-विशे., भँजाओलवाला । मै.

भँजहा-सं., मालजालक रोग विशेष । मै.

भँजाएब-क्रि., पैघ मुद्रा कें छोट मुद्राक समूह मे परिवर्तित कराएब । मै.

भजाएब-क्रि., संगक हेतु शुण्ड बनाएब । मै.

भजार-विशे., मैत्रीक सम्बोधन । मै.

भँजारब-क्रि., सन्तुलित कय जाँचब । मै.

भँजियाएब-क्रि., खोजबीन कय सत्यताक ज्ञान करब । मै.

भजुआ-विशे., भजैक योग्य । मै.

भजैत-विशे., हर जोतै मे एक बड़दक जोड़ा लगा कय पारापारी खेत जोतनिहार । मै.

भजैती-सं., पारापारी हर जोतैक नियम पर दोसरक बड़द सँ लगाओल जोड़ा । मै.

भञ्जन-सं., तोड़ब, ध्वंस करब । सं. तद्भव

भञ्जित-विशे., भँजाओल, तोड़ल । मै.

भट्ट-सं., विद्वान् मे श्रेष्ठ । मै.

भट्ठा-सं., १. नीचाँ दिस भूमिक गति । २. पकैबा पकैक लगाओल आबा । ३. भूमि पर लिखैक अभ्यास हेतु माटि आदिक ढेला । मै.

भट्ठी-सं., सतत जरैत रहैवाला विशाल चूल्हा । मै.

भट-अव्यय, कोनो भारी वस्तुक खसैक शब्द । मै.

भट-विशे., सैनिक । सं. तत्सम

भट-विशे., नीचाँ मुहेँ खसल । मै.

भटकन-सं., भोतियाइक स्थिति । मै.

भटकब-क्रि., उचित बाट सँ दोसर बाट पर भूलि जाएब । बाट बिसरि जाएब । मै.

भटकलहा-विशे., बाट भोतिया कय आएल । मै.

भटका-सं., शब्दसहित खसैक स्थिति । मै.

भटकाएब-क्रि., भ्रमित करब । मै.

भटकाहु-विशे., अधिक भटकैक प्रकृतिवाला । मै.

भटकि जाएब-क्रि., भोतिया जाएब । मै.

भटकौआ-विशे., भोतिअबैवाला । मै.

भट द'-अव्यय, खसैक शब्दकय । मै.

भटपुरैन-सं., छोट लत्ती विशेष । मै.

भटबर-सं., भाटाक चक्का काटि तरल तरकारी । मै.

भटबा-विशे., भाट जातिक लोक । मै.

भटभट-अव्यय, पेट आदिक शब्द विशेष । मै.

भटभटाएब-क्रि., भटभट शब्द करब । मै.

भटभटाहु-विशे., भटभट शब्द करैवाला । मै.

भटभटी-सं., भटभट शब्द करैक क्रम । मै.

भटभेर-विशे., अपवित्रताक सम्पर्कवाला । मै.

भटमाहु-विशे., जन्म सँ पहिने मुइल जेठ बन्धुवाला बच्चा । मै.

भटमेर-विशे., विभिन्न प्रभेदक मिलल अन्न । मै.

भटमेराहु-विशे., अनेक जातिक मिललवाला अन्न । मै.

भटरंग-विशे., कत्तौ गाढ़ आ कत्तौ कम रंग मे रंगल । मै.

भटर भटर-विशे., १. व्यर्थ कटु शब्द आ गप्पक उच्चारण । २. कड़ा वस्तुक पाकक शब्द । मै.

भटसन-अव्यय, शब्दसहित खसैक क्रम । मै.

भटाक द'-अव्यय, शब्दक संगेँ पतन । मै.

भटोत्तर-विशे., भाट केँ देल भूमि । मै.

भठा-विशे., नीचाँ दिशुक स्थान । मै.

भठा-सं., लिखैक हेतु गाचीस माटिक ढेला । मै.

भठा धराएब-क्रि., गाचीस माटि सँ लिखब सिखाएब । मै.

भठियार/भठियारा-विशे., स्वभाव सँ नीच कुल आ विचारक लोक । स्त्री० भठियारिन । मै.

भड़-सं., लड़ाकू जाति विशेष । मै.

भड़क-सं., आडम्बर । मै.

भड़कछ-सं., पुरुष भेष ध' क' मौगीक परिहासवाला विनोद । मै.

भड़कताली-सं., फूसि प्रभाव जमबैक अपन बड़ाई । मै.

भड़कदार-विशे., चमकदार, उज्ज्वल, दीप्यमान । मै.

भड़कन-सं., भड़कैक क्रम । मै.

भड़कब-क्रि., भय वा उत्तेजना सँ मालजाल आदिक भाग दौड़ करब । मै.

भड़कलहा-विशे., छिटकल, फुलाएल । पसरलवाला । मै.

भड़काएब-क्रि., पसारब, छिटकाएब । मै.

भड़काम-सं., भड़कैक स्वभाव । मै.

भड़काहु-विशे., भड़कैत रहैवाला स्वभाव भरल । मै.

भड़की देब-क्रि., फूसि डर देखाएब । मै.

भड़कीला-विशे., चमकदार, अधिक उज्ज्वल । मै.

भँड़छब-क्रि., नाना प्रकारक भोज्यक लोभ आ तृष्णा होएब । मै.

भँड़छाएब-क्रि., अनेक नीक निकूतक सेहन्ता करब । मै.

भँड़छूहु-विशे., नीक निकूतक लोभेँ खाइ पीबैक ठेकान रखनिहार । मै.

भँड़छूहा-विशे., नीक निकूतक लोभ सँ खाइक हेतु सब ठाँ मुह देनिहार । मै.

भँड़फुलहा-विशे., १. अव्यवस्थित रहनिहार, बातक ठेकान नहि रहने काज नष्ट कयनिहार । २. मानसक चुल्हा लग पहुँचनिहार घरक जमाय । स्त्री० भँड़फुलाहि । मै.

भँड़फोड़ी-सं., दुरगमनियाँ कनियाँक द्विरागमनक चारिम दिन विनोद रूप होमऽवाला विधि । मै.

भँड़बसना-सं., भाँड़कूर (मानसक वर्तन) रखैक स्थान । मै.

भँड़भूजा-सं., १. भूजा भूजैवाला जाति । २. कनसार । मै.

भड़री-सं., खापड़ि मे उलबैक काज । मै.

भँड़ली-सं., (लाक्षणिक) भाँड़ अर्थात् भानस चढ़बैक समय सन्ध्या । मै.

भड़हर-सं., नदीक कछेर मे कटाओ सँ कटि बेने बहुत ठाढ़ भूमि । मै.

भँरहर-सं., भाँड़ रखैक बनाओल निश्चित स्थान । मै.

भँड़हा-विशे., भाँड़क उपयोगी बासन । मै.

भड़ाक द'-अव्यय, अनेक बासनक एक संग खसैक शब्द कय । मै.

भँड़ार-सं., अन्न आदिक कोषागार । भण्डार । सं. तद्भव

भँड़ारी-विशे., कोषागार (भण्डार) सँ अन्न आदि वस्तुक आगम निर्गम करैवाला नियुक्त व्यक्ति । मै.

भँड़ास-सं., आतुरता भरल अभिलाषा एवं उत्कण्ठा । मै.

भँड़ाह-विशे., भाँड़ मे उपयोग कयल बासन । मै.

भड़ीम-विशे., उठबै मे अधिक दनगर । मै.

भँड़ुआ-विशे., वेश्यावृत्तिवाली स्त्रीक सहायक प्रचारक एवं ग्राहक अननिहार । मै.

भड़ुआ-विशे., भीजल अन्न कें खापड़ि में दय आँच पर सुखाकय बनाओल अन्न । मै.

भँड़ेर-सं., माटिक बासनक समूह । मै.

भण्ड-विशे., यत्र तत्र छिरियाएल, ओछ्राएल । मै.

भण्डाफोड़-सं., गुप्त बातक प्रकाश । मै.

भण्डार-सं., भाण्डागार । सं. तद्भव

भण्डारकोन-सं., वायुकोण । पश्चिम उत्तर कोन । मै.

भण्डारा-सं., अनेक लोकक एकठाँ भोज । साधु सन्तक भोजन । मै.

भण्डारी-विशे., भण्डारक रक्षक । मै.

भण्डुल-विशे., विश्वास द' क' समय पर गलाकोर देनिहार, अव्यवस्थित । मै.

भत्ता-सं., १. जीवनयापनक अनुदान । २. सून (पाक) देल डोरीक सूतक भाग । मै.

भत्थर-विशे., शरीर आ बुद्धिक मन्द । मै.

भतकढ़हा-विशे., बर्तन सँ भात बहार करैक साधन । मै.

भतखै-सं., परस्पर घर मे भात खाइक व्यवहार । मै.

भतखौका-विशे., भात खाइवाला लोक । मै.

भतगर-विशे., (लाक्षणिक) अधिक धानक कारणें धनिक । मै.

भतबरी-सं., परस्परक घर मे भात खाइक व्यवहारक त्याग । मै.

भतभोज-सं., भात खाइवाला भोज । मै.

भतरन्हा-विशे., भात रन्हैवाला बर्तन । मै.

भतरी-विशे., भात सड़ाकय बनाओल मद्य । मै.

भतरासि-सं., पावनि विशेष । मै.

भतरोंइ-सं., यत्र तत्र सघन उगल रोम । मै.

भतलोह-सं., कोमल लौह । मै.

भतहा-विशे., भाते टा पसिन्न करैवाला । मै.

भतहुलुक-विशे., १. भातक अधिक प्रिय । २. बिना बुद्धि जगबैवाला । मै.

भतार-विशे., भर्ता, पति । मै.

भतिजबा-विशे., (अनादर मे) भातिज । स्त्री० भतीजी । मै.

भतेर-सं., चाउर सिझाकय बनल उबटन । मै.

भतोल-विशे., भातक खाद द' क' उपजाओल ओल । मै.

भथन-सं., भरि जाइक क्रम । शून्य स्थानक भरण । मै.

भथब-क्रि., खाधि, इनार आ पोखरिक भरि जाएब आ भरब । मै.

भथम-विशे., माटि आदि सँ भरि गेल । मै.

भथाएब-क्रि., खाली स्थान कें भराएब । मै.

भथान-सं., विशेष प्रकारक भथन । मै.

भथियान-सं., वस्ति, मूत्राशयक अंग । मै.

भथुआ-सं., खाधि भरि क' ऊँच बनल स्थान । मै.

भद्दा-विशे., अशोभनीय, अदर्शनीय । मै.

भद्र-विशे., नीक, नीकलोक । सं. तत्सम

भद्रा-सं., अशुभ योग विशेष । सं. तत्सम

भदबरिया-विशे., भादव मासवाला । मै.

भदबा-सं., पञ्चक, छ वर्जनीय नक्षत्र । मै.

विशेष—धवणा सँ बेली धरि प्रतिमास छ टा नक्षत्र स्त्रीक यात्रा एवं खड़ काठक रचनात्मक कार्य

करब निषिद्ध होइत अछि। यथा—ज्योतिःशास्त्र मे अछि जे किछु दण्ड मात्र एहि सब नक्षत्र मे समय निषिद्ध अछि—श्रवणान्ते धनिष्ठा दौ मध्ये शत-भिषा तथा। भाद्रद्वे विलोमेन क्षेतीं सकलाम्लपजेत्।

भदवारि/भदवारी-सं., भादव मासवाला प्रकृति। मै.

भदरब-क्रि., भादव मास मे खेत कें जोतब। मै.

भदरसुक्खू-विशे., भादवक रौदीक कारणें सुखाएल खेत। मै.

भदरसोख-विशे., भादव मे सुखाएल। मै.

भदरा-सं., भादव मे होम'वाला अन्न (धान) विशेष। मै.

भदराह-विशे., भादव मे पनुघस घास भरल खेत। मै.

भदै-विशे., भादव मास मे उपजैवाला। मै.

भदैया-विशे., बरिसात मे होम'वाला। मै.

भदैया-विशे., भादवक लगभग मे होम'वाला। मै.

भदौसी-विशे., मन्द प्रगतिवाला। मै.

भन-सं., पातर, मेंही मन्द शब्द। मै.

भनक-सं., आभास, गुप्त रहस्यक श्रवण। मै.

भनकब-क्रि., दुर्गन्ध करब। मै.

भनकाएब-क्रि., दुर्गन्ध छोड़ब। मै.

भनकार-सं., दुर्गन्धसहित शब्द। मै.

भनकी-सं., गुप्त बातक चुपचाप आभास। मै.

भनब-क्रि., कहब। मै.

भनबैका-विशे., कहबैका, लोक मे बहुचर्चित व्यक्ति। मै.

भनबैया-विशे., लोकक बीच प्रसिद्ध बनैक चेष्टा कयनिहार। मै.

भनभन-विशे., मन्द आ मेंही मधुमाछी तथा लोकक शब्द विशेष। मै.

भनभनाएब-क्रि., भनभन शब्द कय रोष प्रकट करब। मै.

भनभनी-सं., भनभनाइक स्वभाव। मै.

भनर भनर-विशे., अनेर मन्द स्वरें लगातार होइ वाला अप्रिय शब्द। मै.

भनलहा-विशे., कथित शब्द। मै.

भनसा-सं., पाक करैक, भोजन रन्हैक प्रक्रिया। मै.

भनसाघर-सं., केवल भानसैक हेतु निश्चित कयल घर। मै.

भनसार-सं., पाक करैक भानसक प्रक्रियावाला स्थल। मै.

भनसिया-विशे., भानस करैक लेल निश्चित व्यक्ति। मै.

भनिता-सं., पदक अन्त मे अथवा गीतक अन्त मे कहल जाइवाला कविक परिचय। प्रयोग—"भनहि विद्यापति समदओं तोही।" मै.

भनुसार-सं., चुंगीघर। एक क्षेत्र सँ दोसर क्षेत्र ल' जाइवाला वस्तुक कर लैवाला कार्यालय। मै.

भनें-अव्यय, अनुकूल प्रकारें। मै.

भनेंनिकें-अव्यय, सुव्यस्त मनें। मै.

भनौआ-विशे., भनबैवाला। मै.

भफाएब-क्रि., अपने टा काज बनबैले अगुताइत व्याकुल रहब। मै.

भफाएल-विशे., अपन स्वार्थ ले अगुताएल। मै.

भफुआ-विशे., भाफ सँ सिद्ध कयल। मै.

भबब-क्रि., पसिन्न पड़ब, नीक लागब। मै.

भभक-सं., दुर्गन्ध। मै.

भभकब-क्रि., दुर्गन्ध करब। मै.

भभकाएब-क्रि., दुर्गन्ध पसारब। मै.

भभकौआ-विशे., दुर्गन्ध पसारैवाला। मै.

भभट-सं., रोष भरल जिद्द। मै.

भभटपन-सं., रोष भरल दुराग्रह। मै.

भभटनी-विशे., भभटपन करैवाली। मै.

भभटाह-विशे., दुराग्रहक स्वभाववाला। मै.

भभरब-क्रि., नीरस रहैक द्वारें अपनें विलग भ' क' झरब। मै.

भँभरा-सं., बाटक तर देने जल बहैक हेतु विस्तृत आ नाम एवं गोल वस्तु जे सीमेन्ट आ मिट्टी सँ बनाओल जाइछ। गोलाकार छोट पुल। मै.

भभराएब-क्रि., जानि जानि कय झारि झारिकय पसाएब। मै.

भभराह-विशे., झरि झरिकय खसैक प्रकृतिवाला। मै.

भभसन-सं., कनेक अंगक फूलि जाइक प्रकृति। मै.

भभसब-क्रि., अंगक कनेक फूलल सन लागब। मै.

भभसाह-विशे., तुरन्त फुलफुलाह् लगैवाला । मै.

भभसी-सं., फुलफुलाह होइक गुण । मै.

भभाएब-क्रि., अकस्मात् जोर सँ हँसि उठब । मै.

भभाकय हँसब-क्रि., हठात् जोर सँ हँसि उठब । मै.

भभारा-सं., अधिक लोकक जोग सँ उठल हँसी । मै.

भभास-सं., अंगक कनेक फुलैक स्वभाव । मै.

भभूत-सं., शरीर मे लेपल भस्म, विभूति । सं. तद्भव

भभोग-सं., ग्रह आ नक्षत्रक दैनिक मान । सं. तत्सम

भम्हरा-सं., भ्रमर, पैघ आ कारी उड़ैवाला कीट । सं. तद्भव

भम्होर-सं., जोर सँ नोछार । नह सँ भृकुटि कय आघात । मै.

भम्होरब-क्रि., नह वा दाँत गड़ाकय घाइल करब । मै.

भमर/भमी-सं., जलक वेग मे बन चक्राकार गति । मै.

भय-सं., डर । सं. तत्सम

भयंकर-विशे., डर बढ़वैवाला । सं. तत्सम

भयाकुल-विशे., डर सँ आर्त । सं तत्सम

भयात-सं., ग्रह आ नक्षत्रक निश्चित समय (इष्ट दण्ड) सँ पूर्व बीतल कालक मान । सं. तत्सम

भयातुर-विशे., डर सँ व्याकुल । सं. तत्सम

भयानक-सं., रस विशेष । विशे., डेराओन । सं. तत्सम

भयावह-विशे., डर जगबैवाला । सं. तत्सम

भर्ता-विशे., भरण करैवाला । (लाक्षणिक) पति । सं. तत्सम

भउर-सं., अवलम्ब, आसरा । मै.

भर-संयुक्त विशेषण, पूब भर उत्तर भर ।
सं., भरण, पूर्ति । प्रयोग—"उपर भर तर भर ताहि लोक कें कथीक डर ।" मै.

भरकच्छ बान्हब-क्रि., धोती कें समेटिकय कच्छी जकाँ बनाएब । मै.

भरकुस्सा-विशे., एक एक कण सँ पूर्ण बनल । मै.

भरखरि-अव्यय, सघन रूपें, अधिकता सँ । मै.

भरगर-विशे., अन्तर्बलवर्धक । मै.

भरगरी-सं., अन्तर्बल । मै.

भरणी-सं., नक्षत्र विशेष । मै.

भरत-सं., १. नाट्यशास्त्रक आदि प्रवर्तक । २. पौराणिक पुरुष विशेष । मै.

भरता-सं., साना, कोनो सीझल फल आ कन्द कें मलिकय बनाओल वस्तु । मै.

भरती-सं., नियुक्ति, अधिकार, आपूर्ति । मै.

भरदुतिया-सं., भ्रातृ द्वितीया । मै.

भरदूआ/भरदूल-सं., पक्षी विशेष । मै.

भरना-सं., रीनक तरें खेत दैक नियम । मै.

भरना देब-क्रि., बातक संपुष्टि (समर्थन) करब । मै.

भरनि-सं., नदीक जलक वेग सँ बनल उच्च भूमि । मै.

भरनियाँ-विशे., गहींर कें भरैवाला । मै.

भरनी-सं., वाम दहिन रूपें रेखा वा सूतक विन्यास। मै.

भरनै-सं., जलक बहाओ सँ आएल माटिक द्वारा बनल उच्चता । मै.

भरब-क्रि., पूर्ण (पूर्ति) करब । (लाक्षणिक) अधिक देब । मै.

भरबाहि-सं., लगातार भार उठबैक क्रम । मै.

भरभर-सं., लावा आदि फुटैक शब्द । मै.

भरम-सं., भ्रम । सं. तद्भव

भरमब-क्रि., भ्रम सँ उनट पुनट बाजब । मै.

भरमाएब-क्रि., भ्रम देब, भुलाएब । मै.

भरमाभुत-अव्यय, असंज्ञ अर्थात् चेतनाहीन जकाँ । मै.

भरमार-विशे., अधिकता सँ उपलभ्य । मै.

भरमाह-विशे., अधिक भरमैक स्वभाववाला । मै.

भरमाहु-विशे. भ्रम उत्पन्न करैवाला । मै.

भरमौआ-विशे., भ्रम दैवाला । मै.

भरर-विशे., शून्य स्थान कें भरैवाला कोनो वस्तु । मै.

भरलपुरल-विशे., धनजन पूर्ण । मै.

भरलहा-विशे., पूर्णवाला । मै.

भरसी-सं., सांझक अवसर । मै.

भरसह-विशे., भार (सनेस) क संग जाइवाला सहायक । मै.

भरसहा-सं., करीन पटबैक काल ठाढ़ होइक आधार, खुटरी पर देल बाँसक टोना । मै.

भरहा-विशे., भार (उपहार) मे दैक योग्य आ भार मे आएल। मै.

भराइ-सं., भरैक काज तथा भरैक बोनि। मै.

भराएब-क्रि., खाधि अथवा खाली स्थान कें पूर्ति कराएब। मै.

भराओ-सं., भरैक स्थिति। मै.

भराओन-सं., भरैक पारिश्रमिक। मै.

भराक-सं., खसैक शब्द। विशे., भरैक योग्य। मै.

भराठ-विशे., नव माटि भरल स्थान। मै.

भरान-सं., भरैक चलैत रहैवाला काज। मै.

भरि-सं., परिमाण। अनुमान। मै.

भरिआ-विशे., भार उठाकय ल' जाइवाला। मै.

भरिआएब-क्रि., सामान्यो सरल वा हल्लुक बात कें भारी बनाएब। मै.

भरिकय-अव्यय, पूर्ण कय। मै.

भरिगर-विशे., अधिक भारी। मै.

भरिगरसौं-अव्यय, गरदनि पर्यन्त। मै.

भरिछाक-अव्यय, पियास (तृष्णा) क अनुसार। मै.

भरिपें र-अव्यय, डेगक अनुकूल। मै.

भरिपोख-अव्यय, तृप्तिक अनुसार। मै.

भरिमुह-अव्यय, (खाइक अर्थ मे) मुहक स्थानक अनुसार। (वर्जक अर्थ मे) प्रकट भ' क', नीक जकां, खुलिकय। मै.

भरियाह-विशे., तुच्छो बात कें भारी बनबैवाला। मै.

भरियाहा-विशे., अधिक भारीवाला। मै.

भरिसक-अव्यय, प्रायः। मै.

भरिहत्था-विशे., सम्पूर्ण हाथक आवरणवाला। मै.

भरिहाथ-सं., एक हाथक मान। मै.

भरुआ-विशे., सरस वस्तु के खापड़ि मे उलाकय सुखाओल। मै.

भरें-अव्यय, अवलम्ब सँ। मै.

भरेठ-सं., चार आ भीत कें मिलबैवाला भरल माटि। मै.

भरैन-सं., देखू—"भरनें"। मै.

भरोस-सं., धैर्य, विश्वास। मै.

भरौक-सं., भरैक आवश्यक काज। मै.

भल-सं., हित, कल्याण। विशे., भद्र, नीक। मै.

भलमनसात-सं., भद्र लोकक गुण। मै.

भलमानुस-सं., मैथिलक एक प्रभेद। विशे., सज्जन। मै.

भला-सं., हित। अव्यय, सम्यक अर्थकार। मै.

भलाइ-सं., कल्याण। हित। मै.

भलेबी भले-अव्यय, नीके नीक। मै.

भव-सं., संसार, शिव। सं. तत्सम

भवन-सं., सुन्दर व्यवस्थित घर। सं. तत्सम

भवानी-सं., पार्वती। सं. तत्सम

भस्म-सं., राख, छाउर। सं. तत्सम

भसकाएब-क्रि., १. पादब। २. अनायास चूरि देब। मै.

भसब-क्रि., प्रवाह पर विवश भय के डूबब। मै.

भसभस उठब-क्रि., अनायास मुह मे घुसब। मै.

भरमभेर-विशे., मोट निम्न सँ सूतल। मै.

भसर भसर-विशे., बिना दाँतक जोर सँ पिसाइ-वाला। मै.

भसाएब-क्रि., प्रवाह पर बहाएब। मै.

भसाठ-विशे., भसियाकय आएल जंगल। मै.

भसाठी-सं., भासि कय जमा माटि। मै.

भसियाएब-क्रि., जल वेगक गति पर विवश भ' क' गतिमान होएब। मै.

भसीआ-विशे., भसिया कय आब'वाला। मै.

भहरब-क्रि., माटिक अनेर झरि क' खसब। मै.

भा-सं., १. भाओ, भाग। २. ज्योति। सं. तत्सम

भाइ-विशे., समान स्तरक पुरुष सम्बन्धी। मै.

भाउज-विशे., जेठ भाइक स्त्री (पत्नी)। भाउजि। मै.

भाउर-विशे., बलें, भारी, कष्टकर। सं., घुरमी भ्रमि। मै.

भाउल-सं., बनैया हिंसक पशु विशेष। मै.

भाउली-विशे., आधा उपजा (लाभ) मे नियमित भूमि। मै.

भाएब-क्रि., सोहाएब, पसिन्न पड़ब। मै.

भाओ-सं., १. बेचैक निश्चित कयल मूल्य। २. कोनो देवताक अपना पर आरोप, भगतै। मै.

भाकुर-सं., माछ विशेष। मै.

भाखब-क्रि., बाजब। मै.

भाग्य-सं., अदृष्ट, कर्मफल। सं. तत्सम/मै.

भाग-सं., १. भाग्य। २. गणितक एक नियम। ३. अंश। मै.

भागफल-सं., भाग देला पर शुद्ध निष्कर्ष । मै.

भागब-क्रि., पड़ाएब । मै.

भागमन्त-विशे., भाग्यशाली । मै.

भाग्ना-सं., फाटैवाला अंक । मै.

भागिन-विशे., बहिनिक बेटा (पुरुषक हेतु) । मै.

भागी-विशे., उत्तरदायी, फलभोगी । मै.

भाङ-सं., निचक बूटी, निशाँवाला वनस्पति जकर पत्ती कें पीसि पीयल जाइत अछि । मै.

भाङठ-सं., १. बाधा । २. (लाक्षणिक) मासिक धर्मक द्वारें स्त्रीक धर्म कर्मक अवरोध । मै.

भाङब-क्रि., तोड़ब, फोड़ब, काटिकय फाँक करब । मै.

भाज्य-विशे., भाग देला सँ तोड़ैवाला अंक । सं. तत्सम

भाँज-सं., १. कोनो विषयक तालमेल । २. कौड़ी आदि भँजैक (खेल मे फेंकि निश्चित मान अनैक) पारी । मै.

भाजक-विशे., स्थूल अंक मे भाग देम'वाला अंक । मै.

भाँजब-क्रि., १. खेल मे कौड़ी आदि उछालि कय फेरब । २. संग मिलि जाएब । मै.

भाँजल-विशे., संग मिलल बहुत लोक । मै.

भाँजा-सं., अनेक प्रकारक भूजल खाद्य । हि. तत्सम

भाँजि-सं., यातायातक चिह्न । मै.

भाँजी-सं., तेल आदि मे भूजिकय बनाओल भूजा-खाद्य तथा तरकारी । मै.

भाञ भाञ करब-क्रि., अत्यन्त सुनसान रहैक द्वारें घर आदिक भयावह होएब । मै.

भाट-विशे., शुभ अवसर पर तथा सामन्त राजाक द्वार मे शुभकामना आ प्रशंसात्मक कवित्त पढ़ैक व्यवसायी लोक । मै.

भाँटा-सं., व्यञ्जनवाला फल विशेष । मै.

भाटा-सं., समुद्रक लहरिक नीचा दिश उतरैक क्रम । मै.

भाँटि-सं., छोट वनस्पति (झार) विशेष । मै.

भाँटिन-सं., गोल आ पैघ भाँटा । मै.

भाठ-सं., बामा कातक अनादरक स्थान । मै.

भाठा-सं., १. नीचाँ मुह होइत स्थान । २. शिल्पक अभ्यासक हेतु माटिक ढेला । ३. पकैक हेतु विशेष प्रक्रिया सँ लगाओल ईंटा सभक राशि । मै.

भाठि-विशे., वाम भागक रहनिहार । मै.

भाँड़-सं., भाण्ड, माटिक बासन । सं. तत्सम

भाँड़कूर-विशे., भानस मे उपराहल अनेक माटिक बासन । मै.

भाँड़ब-क्रि., निश्चित वा अंकित कयके छोड़ि देब । मै.

भाँड़ बहरायब-क्रि., महिषिक योनि सँ गर्भाशयक ओत बहार होएब । मै.

भाँड़ा-सं., भानस मे प्रयोग करैवाला निमह दिनक अर्पेत माटिक बासन । मै.

भाड़ा-सं., आनक वस्तुक उपयोगक बदला देबा योग्य मूल्य । मै.

भात-सं., सिद्ध कयल चाउर । मै.

भातिज-विशे., भाइक पुत्र । मै.

भाथर-विशे., अकर्मण्य । मै.

भाथि/भाथी-सं., आगि कें प्रज्वलित करैक चामक बनल यन्त्र । मै.

भाद्रपद-सं., भादव मास । सं. तत्सम

भादव-सं., मास विशेष । मै.

भान-सं., आभास सँ ज्ञान । सं. तत्सम

भानस-सं., पाकक प्रक्रिया । मै.

भाना-सं., छवि, रंगरूप । मै.

भाने-क्रि., भनथि, कहथि । मै.

भाँपब-क्रि., अनुमानक द्वारा रहस्यक बात बूझब । मै.

भाफ-सं., आँच पड़ला सँ धुआँक रूपें उड़ैत जल-कण । मै.

भाफब-क्रि., उसिनब, अर्द्ध सिद्ध करब । मै.

भाफी-सं., गरम पानि सँ उठैत भाफक सेक । मै.

भाभट-सं., अपन आडम्बरक विस्तार । मै.

भाभन्स-सं., सदुपयोग सँ अभ्युदय । मै.

भाभरी-सं., भय प्रदर्शनक हेतु त्रासक बात । मै.

भाभा-सं., अर्क चुअबैक सरल यन्त्र । मै.

भाभी-विशे., भाउजि । हि. तत्सम

भाय-विशे., भाइ । मै.

भार-सं., गुरुता (तौल मे) । मै.

भारत/भारतवर्ष-सं., एक पूर्वी उपमहाद्वीप देश । मै.

भारती-सं., १. भारतवासी । २. सरस्वती । सं. तद्भव

भारतीय-विशे., भारतवासी । सं. तत्सम

भारचोर-सं., अनेक प्रकारक उपहार (सनेस) क सामग्री । मै.

भारपन-सं., गरिमा, गौरवशालिता । मै.

भारब-क्रि., भिजाओल धान आदि अन्न कें आँच पर सुखाएब । मै.

भार बहब-क्रि., १. निर्वाहक स्थायी व्यवस्था करब । २. नीक पर्ब पर दुहु दिस सनेस उठाकय कन्हा पर लऽ जाएब । मै.

भारभीस-सं., फूसि बड़प्पन । मै.

भारी-विशे., गुरुत्ववाला । वजनदार । मै.

भारु-विशे., कष्टकर, बलै । प्रयोग–"प्रान भारु भेल छोड़ जे आबि मे कूद' जाइ छह ।" मै.

भाव-सं., दोसर देशक प्रचलित सिक्का (रुपैया) मे विनिमय से देवा योग्य अधिक राशि । मै.

भाल-सं., कपाड़, ललाट । सं. तत्सम

भालरि-विशे., बिन फाटल सम्पूर्ण केराक पात । मै.

भालसरि-सं., बड़का वनस्पति मे सुगन्धवाला फूल । मेंही आ सुगन्धि भरल फूलवाला बड़का गाछ । मौलिसिरी । मै.

भाला-सं., अस्त्र विशेष । मै.

भालु-सं., हिंसक जंगली पशु । मै.

भाव-सं., १. शब्दक सारांश । २. प्रकृतिक अनुकरण । ३. अपेक्षितारब । मै.

भावना-सं., १. मनकथा, मन मे घूमैत विचार-धारा । २. कोनो वस्तु कें द्रव मे डुबबैक प्रक्रिया । मै.

भावब-क्रि., १. विचार करब, कोनो वस्तु कें डुबा कय राखब । मै.

भावा-सं., विक्रयक निश्चित मूल्य । मै.

भावी-सं., होनहार, भवितव्य, अदृष्ट । मै.

भावुक-विशे., अधिक सम्वेदनशील । मै.

भाष्य-सं., शब्द आ वाक्यक स्पष्ट तथा अर्थक प्रकाशन । सं. तत्सम

भाषण-सं., व्याख्यान । सं. तत्सम

भाषब-क्रि., बाजब । मै.

भाषा-सं., बोली । सं. तत्सम

भास्कर-सं., सूर्य । सं. तत्सम

भास-सं., १. तूरि, ढंग । २. गदीस । ३. गीतक स्वर । ४. अवगति । मै.

भासनि-सं., भासिकय आएल गदीस । मै.

भासब-क्रि., पानिक वेग पर बहब । मै.

भासा-सं., गदीसक ढेरी । मै.

भासा-विशे., दुगोड़वा चौकी बासा कातक बढ़द । मै.

भि

भिक्षा-सं., याचना, अन्नादि वस्तुक बिन मूल्य आ पूरबैक रूपें प्रार्थना । सं. तत्सम

भिक्षाटन-सं., जीवन निर्वाह ले अन्न वस्त्र कें मङैक हेतु भ्रमण । सं. तत्सम

भिक्षुक-विशे., भीख मङैवाला । सं. तत्सम

भिखमंगा-विशे., भीख मङैवाला । मै.

भिखमंगी-सं., भीख मङैक स्थिति । मै.

भिखमङनी-विशे., १. भीख मङैवाली स्त्री । सं., भीख मङैक अवस्था । मै.

भिखहारि-विशे., भीख मङनिहारि स्त्री । मै.

भिखारि/भिखारी-विशे., भीख मङनिहार पुरुष । भिक्षुक । स्त्री० भिखारिन । मै.

भिजबाएब-क्रि., दोसराक द्वारा आर्द्र बनाएब । मै.

भिजलहा-विशे., सरस अथवा पानि सं आर्द्र बनल रहैवाला । मै.

भिजलाह-विशे., कनेक सरस रहैवाला । मै.

भिजाएब-क्रि., पानि सं आर्द्र बनाएब । मै.

भिजुआ-विशे., पानि मे भिजा कय तैयार करैवाला । मै.

भिट्ठा-विशे., डीहार ऊँच खेत । सं., द्रव्य विशेष । मै.

भिड़काएब-क्रि., परस्पर सटाएब । मै.

भिड़गर-विशे., विशेष मेला भरल । मै.

भिड़न्त-सं., परस्पर विरोधक उग्रता । मै.

भिड़ना-विशे., सटैवाला आ सटबैवाला । मै.

भिड़नी-सं., डोरी लपेटैक विशेष साधन । मै.

भिड़ाइ-सं., परस्पर टक्कर लड़ैक क्रम । मै.

भिड़ाएब-क्रि., परस्परक टक्कर लड़ाएब । मै.
भिड़ान-सं., परस्परक टक्कर । मै.
भिड़ाह/भिड़ुआ-विशे., अधिक मेलावाला स्थान । मै.
भिण्डा-सं., पोखरि आदिक महार । इहुवाला स्थान । मै.
भिण्डी-सं., १. जीड़सन वस्तुक लपेटन । २. राम झिङुनी तरकारी । मै.
भित्ता-सं., किनारक उच्च भूमि । मै.
भित्ती-सं., भीत जकाँ बनाओल आरि । मै.
भितघर-सं., माटिक देवालवाला घर । मै.
भितघरा-सं., माटिक देवालवाला घरक समूह । मै.
भितटप्पा-विशे., (लाक्षणिक) चोराकय अनुचित बाटें समूह मे प्रवेश करैवाला । मै.
भितरका-विशे., भीतर (गुप्त) रहैवाला । मै.
भितरपेन-विशे., ऊपर सँ बहार दिश आ नीचाँ भीतर दिश रहैवाला खुट्टा । मै.
भितराएब-क्रि., भीतर मे नुकाएल रहब । छिपाकय राखब । मै.
भितराह-विशे., भीतर मे गुप्त रहैवाला । मै.
भितरिया-विशे., भीतर मे जमा गुप्त बात । मै.
भितरी-विशे., अन्तःकरणक बात । मै.
भितरें भीतर-अव्यय, अप्रकट रूपें । मै.
भितियाएब-क्रि., भीत जकाँ बोझ आदि पदार्थ कें छल्ली लगाकय राखब । मै.
भिद्दा-सं., रहस्य, भेद, तथ्य । मै.
भिन्न/भिन-विशे., दोसर, अलग । सं. तत्सम/सं. तद्भव
भिनकब-क्रि., कीड़ा मकोड़ा आ रौद बसात सब सँ घृणित बनब । मै.
भिनकलहा-विशे., घृणित बनल । मै.
भिनकाह-विशे., घिनौन । मै.
भिनकी-सं., घृणा । मै.
भिनभिनाएब/भिनभिन करब-क्रि., घृणित होएब । मै.
भिनसर-सं., प्रातःकाल । मै.
भिनसरवा-सं., उषा काल । मै.
भिनसरका-विशे., प्रातः कालवाला । मै.
भिनाउज-सं., परस्पर सम्पत्तिक पृथक् करैक प्रक्रिया तथा स्थिति । मै.
भिनिर भिनिर करब-क्रि., अधिक कालधरि उपेक्षित रहने घृणित होएब । मै.
भिनुसार-सं., भोर, उषाकाल । मै.
भिरखा-सं., अपैत (अपवित्र) क सम्पर्क । मै.
भिरखाह-विशे., अशुद्धक सम्पर्कवाला । मै.
भिरगर-विशे., कठिनाह । मै.
भिरगरहा-विशे., सब सँ अधिक कठिनवाला । मै.
भिरहगर-विशे., अत्यन्त भारी एवं श्रम साध्य । मै.
भिराएब-क्रि., सटाएब, सम्पर्क कराएब । मै.
भिरान-सं., सम्पर्क । मै.
भिरुआ-विशे., सम्पर्क रखैवाला । मै.
भिरौआ-विशे., बल सँ सम्पर्क रखैवाला । मै.
भिलल-सं., जंगली जाति, आदिवासी । मै.
भिलवा-विशे., आदिवासी । मै.
भिसिण्ड-विशे., स्थूल आ पैघ आकारवाला । मै.
भिहगर-विशे., मोट डाँट आ अधिक नाम रहैक द्वारें भयंकर । मै.

भी

भीख-सं., भिक्षा, याचनाक फल । मै.
भीजब/भीजब-क्रि., आर्द्र होएब । पानि वा द्रव पदार्थ सँ गील होएब । मै.
भीठ-विशे., डीहार भूमि । मै.
भीड़-सं., मेला । मै.
भींड़-सं., ऊँच भूमि, पहाड़क चोटी जकाँ बनल भूमि । मै.
भीड़ा भीड़ी-सं., परस्पर टक्कर लड़ैक प्रवृत्ति । मै.
भीड़ी-सं., जीड़ आदि वस्तुक लपेटन । मै.
भीड़ैवाला-विशे., विरुद्ध मे डटैवाला, प्रतिरोध करैवाला । मै.
भीत-सं., घरक माटिक देवाल । मै.
भीतर-अव्यय, अन्दर, अन्तःस्थल । मै.
भीन-विशे., देखू—"भिन्न" । मै.
भीनभिनाउजि-सं., अलग होइक प्रवृत्ति । मै.
भीनी-विशे., मन्द आ गम्भीर । शान्तिपूर्ण । मै.
भीम-सं., पौराणिक पुरुष । विशे., भयंकर । मै.
भीर-सं., कठिनाइ । मै.

भौंरा-सं., स्थूल वस्तुक लपेट । मै.

भौंरी-सं., पातर एवं छोट वस्तुक लपेट । मै.

भील-सं., आदिवासी जाति । मै.

भीह-सं., डर, भय । मै.

भु

भुइँ/भुइँआँ-सं., भूमि । जमीन । मै.

भुक्खड़-विशे., कहियो भरि पेट खाइक स्थिति नहि रखैवाला । मै.

भुकतान-सं., चुकती, देय वस्तुक दान । मै.

भुक द'-अव्यय, हठात् प्रकाश कय । मै.

भुकनमा-विशे., अधिक भूकैवाला । मै.

भुकना-विशे., भूकैवाला । मै.

भुकनी लागब-क्रि., एकै बात कें मर्दक कर्वे बराबरि बाजब । मै.

भुकभुक करब/भुकभुकाएब-क्रि., थोड़ इजोत करैत अपन अस्तित्वक आभास देब, आभासित होएब । मै.

भुकाएब-क्रि., बल सँ कुकुर आ हाथी आदि जानवर कें मुहक शब्द कराएब । मै.

भुखला-विशे., निरहु गरीबीक द्वारें पेट नहि भरैवाला । मै.

भुखाएब-क्रि., भूख सँ अधिक व्याकुल होएब । भूख सँ व्याकुल बनाएब । मै.

भुखिया-विशे., गरीब सँ अधिक काल भुखल रहनिहार । मै.

भुच्च-विशे., अज्ञ, किछु नै जनैवाला, ज्ञानहीन । मै.

भुच्चड़-विशे., बुझौलो पर किछु नै बुझैवाला । मै.

भुज/भुजा-सं., बाँहि । सं. तत्सम

भुजंग-सं., साँप । सं. तत्सम

भुजना-सं., भूजैक बासन । मै.

भुजनिहारि-विशे., कोनो अन्न भूजैवाली । मै.

भुजबन्द-सं., बाजूबन्द गहना । मै.

भुजबी-सं., विशेष ढंगें अत्यन्त मेंही खण्ड । मै.

भुजलहा-विशे., भूजलवाला । मै.

भुजाइ-सं., भूजैक लगातारक क्रम । मै.

भुजाएब-क्रि., खापड़ि मे दग सुखले सिद्ध करब । मै.

भुजाओन-सं., भूजैक बोनि । मै.

भुजान-सं., भूजैक क्रम । मै.

भुजाली-सं., नेपाली खाँड़ । अस्त्र विशेष ' मै.

भुजिया-सं., १. भूजल जकाँ मेंही पकवान । २. मेंही भुजबी कय तरल तरकारी । मै.

भुजुआ-विशे., तेल मे भूजि कय बनल खाद्य । मै.

भुजौआ-विशे., केवल भूजियैकय बनैवाला खाद्यान्न विशेष । मै.

भुट्ट-विशे., नट्टा, बौना, छोट धुआ कायावाला । मै.

भुट्टा/भुटबा-विशे., १. छोट शरीरवाला । २. मकैक दानावाला नेढ़ा । मै.

भुटकब-क्रि., कोनो कारणें देहक रोइआँ ठाढ़ होएब । मै.

भुटकुलमा-विशे., छोट मुदा चाकर आ नोट देहवाला । मै.

भुटकुरी-विशे., छोट मोट शरीरवाला । मै.

भुटखूँट-विशे., भुट्ट मुदा पुष्ट देहदशावाला । मै.

भुटपर-विशे., भुट्ट जकाँ लगैवाला । मै.

भुटभुट-सं., कोनो अन्न उसबै काल अन्न फुटैक शब्द । मै.

भुटाढ़ि-विशे., भुट्ट जकाँ देखै मे रहैवाला । मै.

भुटांस-विशे., देह दशा सँ भुट्ट बूझि पड़ैवाला । मै.

भुड़रब-क्रि., आगि मे द' क' पकाएब । मै.

भुड़भुड़ी-सं., चुट्टी आदि जीवक द्वारा धरती कोड़ि कय जमा कयल मेंही माटिक गर्दी । मै.

भुड़रा-विशे., आगि मे पाकि कय भुजाएल सिद्ध । मै.

भुण्डी-सं., १. भुङ्गराजक फड़ । २. कुटासक स्थान मे बनाओल गोल साधन । मै.

भुतचट्टू-विशे., भूर लगैत रहला सँ दुर्बल । मै.

भुतराकस-विशे., (लाक्षणिक) राति बिराति किछु नै बुझनिहार । बुड़राक । मै.

भुतलग्गू-विशे., भूत लगैक प्रकृतिवाला । मै.

भुतलप्पा-विशे., बिना दाढ़ भेने झारला सँ बराबरि चढ़ै उतरैवाला साँपक बिष । मै.

भुतहा-विशे., बहुत दिन सँ छोड़ल रहने अलक्षित भयावह पर मकान । मै.

भुतही-विशे., श्मशानवाली गाछी, भूतक उपद्रववाला स्थान । मै.

भुतान्सै-सं., भूतक आकस्मिक उपद्रव । मै.

भुताह-विशे., भूतक द्वारें भयावह। स्त्री० भुताहि। मै.

भुन्ना-सं., नाम चाकर माछ विशेष। मै.

भुन्नी-सं., छोट भुन्ना माछ। मै.

भुनचट्टी-सं., भुन्ना माछक बच्चा। मै.

भुभूआ-विशे., अत्यन्त जमजियार रंगवाला। मै.

भुमगोल-सं., १. अचानक गर्दा धूरा सँ आन्हर। २. (लाक्षणिक) अपवादक प्रचार। मै.

भुमफोड़-विशे., (लाक्षणिक) भूमि फोड़िकय बहराएल। अकस्मात् उत्पन्न। मै.

भुमहुर-सं., छाउर मे नुकाएल आगिक कण। मै.

भुर्रा होएब-क्रि., झरकि झरकिकय पाकब। (आगि सँ)। मै.

भुरकी-सं., कम पेटवाला भूर। मै.

भुरकुरी-सं., गोल छोट माटिक कोठी। मै.

भुरकुस्सा-विशे., चूर्ण विचूर्ण। अत्यन्त कण कण छूटल। मै.

भुरता होएब-क्रि., ताप कण सँ अनेक ठाम पाकि जाएब। मै.

भुरड़ी-विशे., आँच पर भूजि कय स्वादिष्ट बनाएब। मै.

भुरभुरा-सं., सुखाएल माटि ढील करैवाला कीड़ा। मै.

भुरसा-सं., गर्दावाला पदार्थ। मै.

भुरहा-सं., सुखाएल गर्दावाला गुड़। मै.

भुराह-सं., पैघ भूर। मै.

भुल्ल-विशे., ललाओन केशवाला। मै.

भुलर/भुलक्कर-विशे., अधिक बिसरैवाला। मै.

भुलकब-क्रि., देहक रोमाञ्चित होएब। सिहरब। मै.

भुलकी-सं., देहक सिहरन। मै.

भुलब-क्रि., बिसरब। मै.

भुलाएब-क्रि., बिसरि जाएब। मै.

भुलौआ-विशे., बिसराह। मै.

भुवन-सं., संसार। सं. तत्सम

भुसकाएब-क्रि., बिना शब्दें नीचाँ सँ वसात छोड़ब। मै.

भुसकौल-विशे., पढ़ै लिखै मे संस्कारहीन, बुद्धिक चोपट। मै.

भुसखाड़-सं., (लाक्षणिक) भुस्सा रखैक कृत्रिम साधन। अत्यधिक भुसहन खाइवाला। मै.

भुसना-विशे., गर्दा आ मट रंगवाला (सिन्दूर)। मै.

भुसबा-सं., छठिक उपासना मे चाउरक चिक्कस सँ बनाओल लड्डू। मै.

भुसभुस-सं., वायु छूटैक सांकेतिक शब्द। मै.

भुसभुसी-सं., भुस भुस क' क' अधोवायु छूटैक कम। मै.

भुसहन-सं., उपर खोइँचावाला अन्न धान गहूम आ राहरि आदि। मै.

भुसहा-विशे., भूसा भरल अन्न। मै.

भुसुर भुसुर-अव्यय, बिन प्रयासें मुह मे चिबबैक आ चूरैक योग्य। मै.

भू

भू-सं., पृथ्वी। सं. तत्सम

भूअंकर-विशे., विशालताक द्वारें भड़कदार। मै.

भूआ-सं., विषाक्त रोइआँवाला छोट आ नम्मा कीड़ा। मै.

भूकब-क्रि., कुकूर आदि जानवरक शब्द करब। मै.

भूकम्प-सं., धरतीक डोल, कम्पन। सं. तत्सम

भूख-सं., क्षुधा, शरीर कें खाद्य वस्तुक आवश्यकता। मै.

भूखल दूखल-विशे., अवसर पर भूखें आकुल। मै.

भूगोल-सं., १. शास्त्र विशेष। २. पृथ्वीक गोलाकार रूप। मै.

भूचाल उठब-क्रि., (लाक्षणिक) भूकम्पक समय जकाँ आतंकक संग चञ्चलता होएब। मै.

भूजब-क्रि., खापड़ि मे द' क' अन्न कें आँच सँ सुखाकय सिद्ध करब। मै.

भूजा-सं., भूजल अन्न। मै.

भूजाभुरड़ी-सं., भूजैक आ गरम'बैक काज। मै.

भूटा-सं., दाना भरल मकैक नेढ़ा। मै.

भूत-सं., मृतात्मा, अलक्षित रूप। मै.

भूतल-सं., धरातल। सं. तत्सम

भूत लागब-क्रि., मृतात्माक उपद्रव होएब। मै.

भूधर-सं., पहाड़। (लाक्षणिक) अत्यधिक मोट आदमी। सं. तत्सम

भूप-विशे., राजा। सं. तत्सम
भूमि-सं., जमीन, धरती। सं. तत्सम
भूर-सं., छेद, बिल। मै.
भूरभार-सं., अनेक प्रकारक बिल आ छेदक समूह। मै.
भूरा-सं., लाल चीनी, सक्कर। मै.
भूरा रंग-सं., कनेक खैरा रंगसन लाल। मै.
भूल-सं., गलती, चट्टी। मै.
भूलचूक-सं., चट्टी आ त्रुटि। मै.
भूलब-क्रि., बिसरब, गलती करब। मै.
भूलभुलैया-सं., मन कें भ्रम उत्पन्न करैवाला प्रक्रिया। मै.
भूसा-सं., अन्नक डाँटक गरदी कुन्नी धानक छिलका। मै.
भूसी-सं., अन्नक डाँटक खण्ड, टुकड़ी। मै.

भृ

भृङ्ग-सं., नचैवाला कीड़ा, भ्रमर। सं. तत्सम
भृङ्गराज-सं., भड़ेरिया घास। सं. तत्सम
भृङ्गी-सं., नन्दी, महादेवक परिकर। सं. तत्सम

भे

भेख-सं., वर्ण, रूपरंग। मै.
भेजब-क्रि., पठाएब, प्रेषण। मै.
भेज पूरब-क्रि., प्रतिनिधित्व करब। मै.
भेट-सं., १. पानि मे उपजैवाला राति मे फुलाइ वाला फूल जकर कन्द आ दानावाला फड़क फलाहार होइत अछि। मै.
भेंट-सं., साक्षात्कार। सामना सामनी। मै.
भेंटकी-सं., स्तनक अगिला गोल आ कारी रंगक अंग। मै.
भेंटघाट-सं., साक्षात्कार एवं सम्मेलन। मै.
भेटब-क्रि, प्राप्त होएब। मै.
भेटमाला-सं., देखू—"भेट"। कैरब फूल। मै.
भेटाइ देब-क्रि., अकस्मात् बराबरि प्राप्त होएब। मै.
भेटौंड़ी-विशे., छोट खाँट आ भट्ठ। मै.
भेंड़-सं., पशु विशेष। स्त्री० भेंड़ी। मै.
भेंड़बा-सं., अशुद्ध अक्षरक विकृति चिह्न। मै.
भेंड़ा-सं., देखू—"भेंड़"। मै.
भेंड़ारी-सं., भेंड़ बकरीक दानादार मल। मै.
भेंड़िया-सं., लाकर, हिंसक जानवर। मै.
भेंड़िया धसान-सं., बिन सोचने विचारने समूह लोकक एकमुहरी होएब। मै.
भेंड़िहर-विशे., भेड़ा पोसैक व्यवसायवाला। मै.
भेद-सं., १. फाटनि। २. रहस्य। ३. प्रकार। सं. तत्सम/मै.
भेद करब-क्रि., फुटाएब, अलग करब। मै.
भेद पीसब-क्रि., अनेक औषध कें एकठां मिलाकय पीसैक टोना। मै.
भेदभाव-सं., विचार आ व्यवहारक भिन्नता। मै.
भेदाएब-क्रि., कटाएब, फाँक कराएब। मै.
भेदिया-विशे., गुप्तचर, जासूस। मै.
भेंभिआएब-क्रि., बकरीक आकुलता सँ बाजब। मै.
भेम्ह-सं., भ्रमरसन कारी अशुभ कीड़ा। मै.
भेर-विशे., बेसुधि सूतल। मै.
भेर लागब-क्रि., समूह मे एकट्ठा रहब। मै.
भेरिखी-सं., अन्न मे मिलल घृणित आ अग्राह्य वस्तु। मै.
भेरी-सं., १. युद्ध बाजा। २. अत्यन्त गाढ़ निद्रा। मै.
भेल-विशे., होइक भूतकालक क्रिया। मै.
भेला-सं., औषधिक पदार्थ। मै.
भेला मेला पर-अव्यय, अन्त काल मे। मै.
भेली-सं., गोल आ मुठरावाला विशेष गुड़। मै.
भेष-सं., रूपरंग। मै.
भेसब-क्रि., काँट सँ ल' क' भाला बरछा आदि अस्त्र सभक शरीर मे प्रवेश कय घाइल करब। मै.
भेसाएब-क्रि., स्वतः भोंकल होएब। मै.

भै

भै-सं., १. भाइक सम्बन्ध। २. डर। मै.
भैं भैं करब-क्रि., बकरीक आर्त शब्द करब। मै.
भैंबट-सं., भाइ सभक बीच कयल बाँटवाला बाँट बखरा। मै.
भैमी-सं., विशेष (माघक) एकादशीक नाम। सं. तत्सम
भैया-सं., भाइक प्रति सम्बोधन। मै.
भैंस-सं., दूध देमऽवाला बड़का जीव। मै.

भैंसा-विशे., महिसिक गर्भाधान करैवाला पुरुष भैंस । मै.

भैंसुर-विशे., पतिक जेठ भाइ, भावस्वसुर । मै.

भो

भों-अव्यय, पदैक शब्दक अनुकरण । मै.

भोंकना-सं., भोंकैवाला अस्त्र । मै.

भोंकब-क्रि., भेंसवैक क्रिया, भेंसब । मै.

भोंक भोंका-सं., लगातार भोंकैक क्रम । मै.

भोकन्नर फूटब-क्रि., १. भयन्दर घाओ होएब । मै. २. (लाक्षणिक) गम्भीर आ अनन्त छेद होएब । भूर होएब । मै.

भोकरनमा-विशे., अधिक चिकरैवाला । मै.

भोकराहा-विशे., जोर सँ दर्जवाला । प्रयोग—"चिकराहा भोकराहा सँ लागी ननमुहाँ सँ नहि लागी ।" मै.

भोंकाएब-क्रि., काँट सँ ल' क' अस्त्रधरि शरीर मे भंसल भ' जाएब । मै.

भोकान-सं., विशेषता सँ भोंकैक भाव । मै.

भोकारि पाड़ब-क्रि., साधारणो बात मे जोर सँ कानि उठब । मै.

भोकासी देब-क्रि., अत्यन्त दुःख सँ शब्द करैत कानि उठब । मै.

भोंकाह-विशे., भोंकल जाइक योग्य । मै.

भोग्य-विशे., भोग करैक योग्य । सं. तत्सम

भोग-सं., जीवन मे सुख दुखक अनुभव । सं. तत्सम

भोगला-विशे., भोग करैक भाग्यवाला । मै.

भोगब-क्रि., सुख दुखक अनुभव करब । मै.

भोगाएब-क्रि., भोग कराएब । मै.

भोगान-सं., भोगक विशेषता । मै.

भोगार-विशे.,अत्यन्त प्रफुल्लित, पुष्ट आ सुन्दर । मै.

भोगी–विशे., भोग करैक अनुभववाला । सं. तत्सम

भोगीन्द्र-विशे., उत्तम भोग करैवाला । मै.

भोज्य-विशे., खाद्य पदार्थ । सं. तत्सम

भोज-सं., सामूहिक आ विशेष रूपक भोजन क्रम । मै.

भोजक बेर कुम्हड़ रोपब-क्रि., (लोकोक्ति) अधिक दिन सँ होम'वाला काज तुरन्त होइक इच्छा राखब । मै.

भोजखौका-विशे., भोज खाइक विशेष तृष्णा रखै-वाला । मै.

भोजघरा-सं., भोजक स्थान आ घर । मै.

भोजन-सं., खाएब । सं. तत्सम

भोजनी-सं., भोजन करैक बखरा । मै.

भोजपत्र-सं., कागज सन गाछक विशेष छाल । भूर्जपत्र । सं. तद्भव

भोजैत-विशे., भोज करैवाला व्यक्ति । मै.

भोट-सं., मतदान, वोट । अं. तद्भव

भोंट-सं., नम्मा आँत । मै.

भोंट बहकाएब-क्रि., (लाक्षणिक) पेट आँत कें आदङ्क द' क' फाड़ैक अनुभव कराएब । मै.

भोट देश-सं., पर्वतीय भूटान देश । मै.

भोटिया-विशे., भूटान देशक वस्तु । मै.

भोंटी-सं., पेटक विभिन्न प्रकारक आँत । मै.

भोंड़-विशे., अंगहीन, अपङ्ग । मै.

भोड़ही-सं., माछ विशेष । मै.

भोंड़ा-सं., पैघ माछ विशेष । मै.

भोतरी-सं., पेटक अन्नक कोश (थैला) । मै.

भोतियाएब-क्रि., भ्रमित होएब, भटकि जाएब । अज्ञान वश उचित बाट छोड़ि आन बाट ध' लेब । मै.

भोथ-विशे., मन्द बुद्धिवाला लोक आ मोट धार वाला अस्त्र । मै.

भोथका-विशे. मोट धारवाला हँसू आदि । मै.

भोथड़-विशे., देखू—"भोथ" । मै.

भोथएब-क्रि., नेना कें भंगकय दुलार करब । मै.

भोथहा-विशे., भोथवाला । मै.

भोथाएब-क्रि., बुद्धि आ धार मोट होएब । मै.

भोथुआ-विशे., भोथ रहैवाला । मै.

भोंदू-विशे., ज्ञान शून्य लोक । मै.

भोंपू-सं., स्वचालित यन्त्रक लोक कें सावधान करैक विशेष शब्द । मै.

भोंभों करब-क्रि., मालजालक लगातार शब्द करब । मै.

भोंभों संख-विशे., अधिक जोर सँ कनैवाला आ शब्द करैवाला । मै.

भोभाड़-सं., पैघ भूर आ छेद । मै.

भों भों-अव्यय, शब्द विशेष । मै.

भोम्हरब-क्रि., देहक अनेक ठाम दाँत आ नह सब सँ आघात करब । मै.

भोम्हूरा-सं., भ्रमर । मै.
भोर-सं., प्रभात । मै.
भोरका-विशे., प्रभात कालवाला । मै.
भोरगर-विशे., अत्यन्त उषाकाल । मै.
भोरंभोर-सं., अत्यन्त भोरक समय । मै.
भोरहरबा-सं., उषाकालवाला समय । मै.
भोरहरिया-विशे., प्रभात कालवाला समय । मै.
भोर होएब-क्रि., प्रभात काल होएब । मै.
भोरुका पहर-सं., दिनुक पहिलुक पहर । मै.
भोरहरिया-सं., ब्राह्म मुहूर्त । मै.
भोलबा साग-सं., साग विशेष । मै.
भोला-विशे., सदा प्रसन्ने रहैवाला । मै.
भोस-सं., उड़ैवाला छोट कीड़ा । मै.

भौ

भौँ-सं., १. विक्रीक वस्तुक दर । २. मगतई । मै.
भौँ ओंहेर-विशे., भौंह दिस उठल आँखिक डिम्भा वाला । मै.
भौँक-सं., बलात चाक जकाँ घूमब । मै.
भौँक मारब-क्रि., बलातक घूमि जाएब । मै.
भौकी काटब-क्रि., घूमैत जकाँ ठेड़ मेड़ भ' क' दौड़ब । मै.
भौजी-विशे., जेठ भाइक पत्नी । मै.
भौँड़ी-विशे., अपंग स्त्री । मै.
भौरी-सं., विक्री करैले भ्रमण । मै.
भौँह-सं., आँखिक उपरका अंग मै.

म्य

म्याउँ-अव्यय, बिलाड़िक बजैक अनुकरण । मै.
म्यान-सं., अस्त्र (तलआरि) क खोल । मै.
म्याद-सं., कालक अवधि । मै.
म-सं., सा रे ग म एहि मे चारिम स्वर, षड्ज । मै.
मइआ-सं., मैँ, माता, माँ । मै.
मइमुह-विशे., माइकसन मुहवाला नेन्ना । मै.
मक्का-सं., १. मकै अन्न विशेष । २. मुसलमानक तीर्थ विशेष । मै.
मक्खन-सं., दूधक नेनु, नवनीत । मै.
मक्खीचूस-विशे., (लाक्षणिक) कृपण, कदर्य । मै.
मकइ-सं., दाना गुहल नढ़ावाला अन्न विशेष । मै.
मकइआ-विशे., मकइक दानासन देखि पड़ैवाला तथा होम'वाला । मै.
मकड़मोड़-विशे., मकड़ जकाँ टेढ़ आ नाम पैरवाला । मै.
मकड़ा-सं., शरीरक सूत तनैवाला कीड़ा विशेष । मै.
मकड़ाजाल-सं., (लाक्षणिक) मकड़ाक जाल सन जटिल आ गुत्थीवाला समस्या । मै.
मकड़ी ऐंठब-क्रि., (लाक्षणिक) सुधरल काजक मूल मे बाधा क' देब । मै.
मकब-क्रि., उन्मत्त जकाँ मालजालक उछलि कूदि कय दौड़ब । मै.
मकमकाएब-क्रि., अवरुद्ध भ' जाएब । मै.
मकाएब-क्रि., उन्मत्त जकाँ मालजाल कें नचाएब । मै.
मकर-सं., १. हिंसक जलजीव विशेष । २. राशि विशेष । सं. तत्सम
मकर पचीसी-सं., १. उत्साह भरल युवावस्था । २. मकर संक्रान्ति सँ केवल २५ दिन धरि जाड़ । मै.
मकर संक्रान्ति-सं., सूर्यक मकर राशि मे प्रवेश । सं. तत्सम
मकराएब-क्रि., ससरैं बहैवाला वस्तुक गति मन्द होएब । मै.
मकराएल-विशे., मन्हुआ गतिवाला । मै.
मकान-सं., घर, स्थायी निवास । हि. तत्सम
मकार-सं., १. 'म' अक्षर । २. म आदि अक्षरवाला वस्तु । मै.
मकुआ-विशे., आगू सँ मोड़ल टेढ़ । मै.
मकुट-सं., मुकुट । सं. तद्भव
मकुना-विशे., गर्दनि दिस सँ झुकलवाला छोट खाटिक हाथी । स्त्री० मकुनी । मै.
मकैया-विशे., मकैक दानासन नमहर मैया (शीतला) । मै.
मखरब-क्रि., अपना के वैध बूझि देह चोरओने गौरव सँ बैसब । मै.
मखाएब-क्रि., कनेक मात्र लगाएब । मै.
मखाकय-अव्यय, कनेक छुआकय । मै.

मखान-सं., जलीय फल विशेष । मै.

मखाना-विशे., मखान सन मोट कड़ा आ कोमल छाल्हीवाला सक्कत दही । मै.

मखुआ-विशे., अधिक रूपें मखैवाला । मै.

मखौआ-विशे., कनेके सगाओलवाला । मै.

मखौलिया-विशे., हँसी ठट्ठाक विनोद प्रिय व्यक्ति । मै.

मग-सं., १. शाक द्वीपीय ब्राह्मण । २. आधुनिक ढ़ुग्मक जलपात्र । मै.

मगज-सं., घानि, कपाड़ सँ उपर माथक अंग । मस्तिष्क । उ. तद्भव/मै.

मगजी-सं., स्त्रीरकक चारू कातक शोभा करैवाला झालरि । मै.

मगन-विशे., तल्लीन, मग्न, मन सँ डूबल । सं. तद्भव

मंगल-सं., १. ग्रह विशेष, दिन विशेष । २. कल्याण । ३. शुभ । सं. तत्सम

मगह-सं., प्रदेश विशेष, मगध । मै.

मगहिया-विशे., मगध देश मे उत्पन्न । मै.

मगही-विशे., मगध देशक भाषा । मै.

मघही-विशे., माघ मास मे होम'वाला अन्न । मै.

मघा-सं., नक्षत्र विशेष । मै.

मघारि-सं., माघक वायुमण्डल । प्रकृति । मै.

मघुआ-विशे., माघ मासक उत्पन्न । मै.

मङता-विशे., मांङल चाङल । सं., देवता सँ दीनता पूर्वक प्रार्थना । मै.

मङनचन-सं., मङ'क मात्र स्थिति । मै.

मङनी-सं., याचना । मै.

मङरा-सं., खपड़ावाला घरक माथी पर (मुड़ेरा पर) देम'वाला खपड़ा । मै.

मङरैल-सं., कटुक (मसाला) वाला पदार्थ । मै.

मङलहा-विशे., अधिक देवता पितरक कबुलापाती आ आराधना सँ प्राप्त कयल । मै.

मङाएब-क्रि., १. अनका द्वारा अनाएब । २. आनक हेतु याचना करब । मै.

मङ्रीं-सं., माछ विशेष । मै.

मच्छर-सं., उड़ैवाला, देहक शोणित पीवैवाला छोटका (सूक्ष्म) जीव । मै.

मचक-सं., शरीरक अंग मे अधिक थाकनि तथा चोट आ मोड़ पड़ला सँ स्नायुक विकारक कारण आएल पीड़ा । मै.

मचकब-क्रि., स्नायु मे कोनो प्रकारें आएल विकार सँ पीड़ा होएब । मै.

मचकाएब-क्रि., १. विशेष कारणें अंगक स्नायु मे विकार कराकय पीड़ा देब । २. झोंक सँ अंग कें ऐंठब । ३. झोंक द' क' झुलाएब । मै.

मचकी-सं., झूला, विनोदक झूलि झूलि कय साधन । मै.

मचड़ा-सं., मचान जकाँ तकथा वैसाकय बनाओल ऊँचगर साधन । मै.

मच द'-अव्यय, भारी रहैक द्वारें कठिनता सँ उठाओल भ' क' । मै.

मचब-क्रि., विशेष परिस्थिति होएब । मै.

मचमच करब-क्रि., भारक द्वारें अधिक अवनतमय शब्दक संग भारी बनब । मै.

मचमचाएब-क्रि., टूटैक वा सर्वेक क्रम मे कोनो वस्तुक शब्द करब । मै.

मचमचौआ-विशे., भारी रहैक कारणें शब्द करैत अधिक झुकल रहैवाला । मै.

मचलहा-विशे., अधिक मन भ' क' उपजलवाला । मै.

मचाएब-क्रि., स्थिति मे तनाओ बढ़ाएब । मै.

मचान-सं., छ खुट्टा पर वाला (बाँस) द' क' बाँसक फट्ठी बिछाकय ऊँच चौकी जकाँ बनाओल सुतै बैसैक साधन । मै.

मचिया-सं., बैसै मात्र योग्य खाट जकाँ छोट पौआ लागल आसन । मै.

मचोर-सं., अंगक अकस्मात् मोड़ पड़ला सँ स्नायु आ शिरा मे पीड़ा । मै.

मचोरब-क्रि., बल सँ कोनो अंग कें ऐंठिकय पीड़ा उत्पन्न करब । मै.

मचौआ-विशे., मचवैवाला । मै.

मछखौका-विशे., अधिक माछ खयनिहार । मै.

मछगर-विशे., अधिक सुलभ माछवाला । मै.

मछगिध-विशे., माछक नाम लै बेहाल रहैवाला । मै.

मछगिद्धी-सं., साँप विशेष । मै.

मछतरा-सं., माछ तरैवाला बासन । मै.

मछबार-विशे., माछ मारैक अभ्यासवाला । मै.

मछबारि-सं., माछ मारैक प्रकिया । मै.

मछरिया-सं., गहना विशेष । मै.

मछरी-सं., छोटका माछ । मै.

मछहट्टा-सं., केवल माछ बेचैक हाट । मै.

मछहर-सं., माछ मारैक विशेष योजना । मै.

मछही-विशे., माछ मात्र रखैक बासन । मै.

मछाइन-सं., माछक गन्ध । विशे., माछक सम्पर्कवाला । मै.

मछारब-क्रि., पानि बहै सँ रोकैक हेतु कम ऊँच सेतक बीच आरि देब । मै.

मछारि-सं., पानि रोकैले बीच मे छोट छोट आरि । मै.

मछाल-सं., माछीक प्रचुरतावाला स्थान । मै.

मछाह-विशे., माछक सम्पर्कवाला बासन । मै.

मछियाएब-क्रि., कोनो खाद्य वस्तु पर अधिक काल धरि माछी बैसब । मै.

मछिआनि-विशे., अधिक माछी भरल । मै.

मछुआ-विशे., माछक व्यवसायवाला । मै.

मज्झा खसब-क्रि., १. मैं महिला कें बाहै सँ पहिने लस्सा सन पदार्थ योनि सँ खसब । २. डोरीक कड़ाम कें एक गलजोड़ सँ दोसर कें जोड़ैक लेल डोरी बान्हब । मै.

मज्झा चराएब-क्रि., गुड्डीक डोरी के अधिक कड़ा करैले लस्सा चढ़ाएब । मै.

मजगुत-विशे., सक्कत, मजबूत । उ. तद्भव

मजगुती-सं., दृढ़ता, सक्कतपना । उ. तद्भव/मै.

मंजन-सं., दाँत माँजैक पदार्थ । मै.

मँजर-सं., आमक मूड़ी आ मूड़ीक फुलाइक नवकल्प । मै.

मँजरब-क्रि., १. आम आदि वृक्ष सभक विकसित होएब । २. (लाक्षणिक) नदी तथा देहक पुष्ट होएब । मै.

मँजरलहा-विशे., मँजर भरलवाला । मै.

मँजरी-विशे., फूल सँ बहराएल मात्र अजोह फल तथा बिना जोआएल केरा आदि । मै.

मँजलहा-विशे., माँजल अर्थात् धोअल पखारलवाला । मै.

मजहूल-विशे., निम्न स्तरवाला, घटिया प्रकारवाला । मै.

मजा-सं., सांसारिक मनोरञ्जनक सुख । उ. तत्सम

मँजाइ-सं., माँजैक प्रकिया तथा मँजबाक पारिश्रमिक । मै.

मँजाएब-क्रि., स्वच्छ कराएब, चमकदार बनाएब । मै.

मजाक-सं., परिहास, ठट्ठा । उ. तत्सम

मजाकी-विशे., विनोदक प्रकृतिवाला । उ. तत्सम

मजा चिखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) भयंकर दण्ड देब । मै.

मजाल-सं., दर्प, दाबी, दम । उ. तत्सम

मजीठ-सं., काष्ठौषधि विशेष । मै.

मजीरा-सं., वाद्य समूह । उ. तत्सम

मजील-सं., दूरी । मै.

मंजु/मंजुल-विशे., आकर्षक सुन्दर । मै.

मजुरपंखी-विशे., मयूर पाँखिक सदृश रंगवाला । मै.

मजुरा-विशे., (अनादर मे) श्रमिक, जन । मै.

मजूर-सं., मयूर पक्षी । मै.

मजेदार-विशे., विनोदी मनोरंजन सँ भरल । उ. तत्सम

मँझधार मे पड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) जीवन सन्देहक संकट मे पड़ब । मै.

मँझिआएब-क्रि., बीच मे राखब, लेब करब । मै.

मँझिआम-सं., गामक बिचला भाग । मै.

मँझिला-विशे., बीचवाला, बिचला मध्य मे होम' वाला । मै.

मट्टी-सं., माटि मे लय एवं माटि । मै.

मट्ठा-सं., १. नेन्ना भुटकाक हाथक गहना । २. दहीक पानि । मै.

मटक-सं., आँखिक पलक । प्रयोग—"आँखिक मटक लय छिटक ।" मै.

मटका-सं., पैलसन द्रव्यक आकि माटिक छोट बासन । मै.

मटकाएब-क्रि., आँखिक पल नचाएब । मै.

मटका मटकी-सं., परस्पर आँखि नचाकय इसारा । मै.

मटकी-सं., १. माटिक छोट कोही सन बासन । २. कटाक्ष, आँखिक पलक संकेत । मै.

मटकी मारब-क्रि., आँखिक पलक संकेत करब । मै.

मटकुर-सं., उत्थर आ बहुत पैंघ दहीक बासन । मै.

मटकुरी-सं., धपोली सन छोट दही पौरैक बासन । मै.

मटमटाएब-क्रि., आँखि खोलै मे कष्ट होएब । मै.

मटमैल-विशे., माटिक रंग मे मलिन । मै.

मटर-सं., केराओ, केराओसन बड़का दानावाला केराओ । मै.

मटसुन-विशे., बात सुनितौं ध्यान नैं देनिहार । मै.

मटाल-सं., माटिक ढेरी । मै.

मटिआएब-क्रि., १. अनठाएब । बात कें तर क' देब । २. माटि लगाकय धोअब । मै.

मटिकम-सं., निरन्तर माटिक काज । मै.

मटिया-विशे., माटि सँ बनल (बासन) । मै.

मटियाएब-क्रि., माटिक संग वा माटि मे मिला-एब । मै.

मटियाइन-विशे., १. माटि मिलल । २. माटिसन बनल । मै.

मटियामेट-विशे., चिह्न समेत नष्ट, सब प्रकारें अलोपित । मै.

मटियारी-विशे., लस्सासन माटिवाला स्थान । मै.

मटियाह-विशे., माटि मिलल रहैक द्वारें घिनाओन । मै.

मटुक्का-सं., विशेष प्रकारक पैंघ तौला सन माटिक बासन । मै.

मटुक्की-सं., मटुक्काक छोट रूप । मै.

मठ-सं., धार्मिक संस्थाक स्थान । सं. तत्सम

मंठ-सं., शिव मन्दिर । सं. तद्भव

मंठ जाएब-क्रि., (लाक्षणिक) मृत्यु होएब । मै.

मठब-क्रि., छीलि छालिकय सुन्दर एवं चिक्कन बनाएब । मै.

मठहट-सं., फूसक घरक दू चारक जोड़वाला सब सँ उपरका स्थान । मै.

मठहट मारब-क्रि., उपर दूनू चारक मिलान कय छारब । मै.

मठलहा-विशे., छीलल बनाओलवाला वस्तु । मै.

मठाइ-सं., मठैक बोनि आ काज । मै.

मठाएब-क्रि.,चिक्कन कराकय सुन्दर बनबाएब । मै.

मठिया-सं., द्रव्यक कँगना सन निस्सन हाथक गहना । मै.

मठोमठार-विशे., वेषभूषा सँ भड़कदार बनल । मै.

मँड़मील-विशे., अधिक गलैक द्वारें माँड़ मिलल भात । मै.

मँड़फेंका-सं., भात पसाकय माँड़ फेंकैक माँड़ फेंकै वाला बासन । मै.

मंडप/मँड़बा-सं., यज्ञ आदि कार्यक हेतु बनल छोट घर । सं. तत्सम/सं. तद्भव

मड़र भाडब-क्रि., चन्द्रमण्डल जकाँ पसारल चौर कें चौठचन्द्र दिन घरक मुख्य पुरुष द्वारा अंकित करब । मै.

मड़रा-सं., बाँसक कोनो वस्तु बीनैक बेर उपर देल सक्कत क' क' बन्हल । मै.

मँड़राएब-क्रि., उद्देश्य सँ एम्हर ओम्हर बारम्बार घूमब । मै.

मँड़लटका-विशे., सिद्ध होइत होइत सुखाएल माण वाला भात । मै.

मँड़िया-सं., लोहा पीटैवाला लोहाक घन । हथौड़ी । मै.

मडुक-सं., छोट गोलाकार ठाढ़ जकाँ बीनल बखारी । मै.

मडुऐल-सं., अन्नक संग मेंही गोलाकार अखाद्य पदार्थ । मै.

मड़ेर-सं., अन्नक संग उपजल कदन्न । मै.

मड़ैया-सं., रौद वर्षा शीत माघ सँ बँचबै वा छोट फूसक घर । झोपड़ी । मै.

मढ़ब-क्रि., चुट्टी गूहब, चिनकिया आदि वस्तुक मुह कें कला सँ बन्न कय कें मोड़ब । कथीले कोनो वस्तु ठोकब । मै.

मढ़लहा-विशे., गूहल, मोड़ल आ ठोकलवाला । मै.

मढ़ही-सं., छोट मुदा नियत स्थान । मै.

मढ़ाइ-सं., मढ़ैक ढब, मढ़ैक बोनि । मै.

मढ़ाएब-क्रि., मढ़ैक काज कराएब । मै.

मणबब्बू-विशे., माण भरल भात । मै.

मणाएब-क्रि., माण भरि जाएब । मै.

मणि-सं., रत्न, स्वयं प्रकाशमान पाथर । मै.

मणिद्वीप-सं., देवीक निवास । सं. तत्सम

मणियाएब-क्रि., गाग जकाँ पसरल होएब । मै.

मत्त-विशे., १. कोनो निशा सँ मतल । बताह ।
सं. तत्सम

मत्ताहाथी-विशे., बिगड़ल हाथी । मै.

मत्ती-विशे., मन्द जाननिहार । मै.

मत-सं., विचार, अपन सिद्धान्त । पक्ष । सं. तत्सम

मतङ्-विशे., स्वेच्छाचारी । निश्चिन्त । मै.

मतब-क्रि., बुद्धि बिगड़ब, बताह होएब । मै.

मतलहा-विशे., बुद्धि भ्रष्ट, बताह लोक । मै.

मताएब-क्रि., निशां द्वारा बुद्धि भ्रष्ट कराएब । मै.

मति-सं., बुद्धि । सं. तत्सम

मतौआ-विशे., निशां सँ बुद्धि बिगड़' बैवाला लोक ।
मै.

मतौना-विशे., निशां लगबैवाला पदार्थ । मै.

मथदुक्खी-सं., माथ दुखाइत रहैवाला रोग । मै.

मथन-सं., कोनो द्रव पदार्थ कें बारम्बार घोंकैक प्रक्रिया ।
सं. तत्सम

मथनिर्या-विशे., मथैवाला व्यक्ति । मै.

मथनी-सं., चारक उपरका भाग । मै.

मथब-क्रि., बारम्बार घोंकब । सं. तद्भव

मथबाहि-सं., लगातार माथ दुखाइक क्रम । मै.

मथबिकनी-सं., प्रत्येक लोकक माथक निर्देश कय वितरण, बटवारा ।
मै.

मंथर-विशे., मन्द गतिवाला । सं. तत्सम

मथनहा-विशे., मथिकय प्रस्तुत कयल । मै.

मथाइ-सं., मथैक क्रम, मथैक मूल्य । मै.

मथाएब-क्रि., मथैक (घोंकैक) काज कराएब । मै.

मथाक दर्द-सं., मथाक पीड़ा । मै.

मथान-सं., मथैक विशेषता । मै.

मथानी-सं., मथैक नियमित साधन । मै.

मथां सोहार-सं., अक्षरक उपर अनुस्वार । मै.

मथां हाथ देब-क्रि., अचानक अत्यन्त चिन्ता करब ।
मै.

मथुआ-विशे., मथिकय बनाओल । मै.

मथौआ-विशे., मथला पर निःसत्व बनल । मै.

मद्दति-सं., सहायता । उ. तद्भव

मद्दी/मद्दो-सं., मान्यता, मानत, मुख्यता । मै.

मद्य-सं., दारू, मादक द्रव । सं. तत्सम

मद-सं., १. निशां । २. योजना विशेष, कार्य विशेष ।
मै.

मदक्की-विशे., अधिक मद्य पीबैवाला । मै.

मदन-सं., कामदेव । सं. तत्सम

मदब-क्रि., वरण करब । विशेष काजक हेतु विशेष व्यक्ति कें पनिभ्न कय पद देब । मै.

मदारी-विशे., वानर, साँप आ भालु आदि नचबै-वाला ।
मै.

मधछ-विशे., मध्यस्थ । सं. तद्भव

मधु-सं., १. वसन्त । २. चैत । ३. मधुमाछी सँ एकट्ठा कयल फूलक रस । मै.

मधुआएब-क्रि., मधु भरि आएब । मै.

मधुआएल-विशे., मधु टपकैत जकाँ प्रिय लगैवाला ।
मै.

मधुकुप्पा/मधुकुप्पी-सं., फूलक रस पीबैवाला छोट पक्षी ।
मै.

मधुप-सं., भ्रमर । सं. तत्सम

मधुमाछी-सं.; फूलक रस आनि आनिकय जमा करैवाला माछी ।
मै.

मधुर-विशे., प्रिय स्वादवाला । सं., रस विशेष ।
सं. तत्सम

मधुरइ-सं., मिठपन । मधुरता । मै.

मधुराइन-विशे., कनेक मीठ स्वादवाला । मै.

मधुराठ-विशे., मीठ लगैवाला । मै.

मधुराह-विशे., मधुरक सम्पर्क सँ विकृत स्वाद-वाला ।
मै.

मधुराहा-विशे., विशेष मधुरवाला । मै.

मधुरी-सं., फूल विशेष । मै.

मधुश्रावणी-सं., मिथिलाक नव कनियाक बेल गौरी पूजाक विशेष पर्व ।

विशेष—श्रावण शुक्ल तृतीया मे वर्षक भीतर विवाहित कनिया तथा तान्त्रिक विधि सँ केवल स्त्री जातिक हेतु गौरी पूजनक विशेष प्रक्रिया कयल जाइत अछि । श्रावण कृष्ण पंचमी सँ ई पूजा आरम्भ होइत अछि आ श्रावण शुक्ल तृतीया मे विस्तार होइछ । मधवा तृतीया कें केवल व्रत रखै अछि ।
मै.

मधोशिया-विशे., बीच देशक निवासी । मै.

मन्टिका-सं., सौंध परक स्त्रीक भूषण, सीथी । मै.

मन्डील-सं., मन्दिर, देवालय । सं. तद्भव

मन्तर-सं., सिद्ध शब्द, मन्त्र । विचार । मै.

मन्द-विशे., वेगहीन, गति मे शिथिल । सं. तत्सम

मन्दाकिनी-सं., गंगा, नदी विशेष । सं. तत्सम

मन्दार-सं., १. स्वर्गक फूल विशेष । २. मन्दर नामक पर्वत । सं. तत्सम

मन्दी-सं., १. बिकाइवाला वस्तुक सस्ती वा नरमी वा भावो घटब । मै.

मन-सं., शरीर मे रहनिहार मस्तिष्कक प्रेरक सूक्ष्म शरीर । सं. तत्सम

मनक्का-सं., द्राक्षा फल (बीजवाला) । मै.

मनकथा-सं., बीतल बात पर शोक युक्त सांसारिक कल्पना । सं. तद्भव

मनक बेंच मनें निस्तार-लोकोक्ति, लोकक कयल उपकार कें मन मे राखि बदला सँ पुरबैक चेष्टा । मै.

मनखप-सं., नियत मानक नियम सँ अन्न द' क' भूमिपतिक खेत पर अधिकार । मै.

मनगर-विशे., उदार विचारवाला महत्त्वाकांक्षी । मै.

मनघुटाह्-विशे., अपन भावना कें प्रकट करै मे असमर्थताक द्वारें मनेंमन विखिन्न भेनिहार । स्त्री० मनघुटाहि । मै.

मनचहा-विशे., मन मे चाहैक अनुसार होम'वाला । मै.

मनजइ-सं., खेतक मानक अनुसार खेतक उपजा । मै.

मनता-सं., कबुलापाती । मै.

मनतोड़-विशे., आशा कें तोड़ि देनिहार । मै.

मनन-सं., मनेंमन कोनो विषयक विवेचना । मै.

मनपतियाएब-क्रि., भरोस कय मन कें सन्तुष्ट करब । मै.

मनपतिआओन-विशे., आशा धराकय मन सन्तुष्ट रखैवाला । मै.

मन पाएब-क्रि., (लाक्षणिक) आनक इच्छा वा विचारक आभास करब । मै.

मन पाड़ब-क्रि., स्मरण करब । मै.

मनपै-सं., आनक कयल जोख मे ओकरा नियत अन्न दैक नियम । मै.

मनबेंच-सं., आनक कयल उपकार वा वैर पर देल वस्तुक कोनो लाथें बदला दैक मनेंमन भावना सँ उपजल प्रेरणा । मै.

मनबहटारब-क्रि., व्यस्त मन कें कोनो विनोदक क्रिया सँ शान्त करब । मै.

मनभरि-अव्यय, १. एक मनक मानक अनुसार । २. इच्छानुसार, भरिपोख । मै.

मनभवब-क्रि., मन मे पसिन्न होएब । मै.

मनमसोसब-क्रि., भावनाक वेग दबबैक कष्ट सहब । मै.

मनमानब-क्रि., मन मे सन्तोष होएब । मै.

मनमानी-सं., जे मन मे आबय तदनुसार काज । हि. तद्भव

मनमारब-क्रि., इच्छाक आवेगक दमन करब । मै.

मनमीलू-विशे., मन मिलैवाला, एक मतवाला । मै.

मनरंजन-सं., मनोरंजन । सं. तद्भव

मनरोग-सं., रोगक शंका सँ सतत मन मे होइत दुःख । मनोरोग । सं. तद्भव

मनसम्बे-विशे., अत्यधिक । (उपजा मे) । मै.

मनसरबा-विशे., पुरुष जातिवाला । मै.

मनसरी-सं., धानक प्रभेद । मै.

मनसा-सं., पुरुष जाति । मै.

मनसी-विशे.,मनस्वी,मुन्शी,लेखापाल । उ. तद्भव|मै.

मनसीहरि-सं., देह सिहरिकय आब'वाला ज्वर मलेरिया । मै.

मनसुआएब-क्रि., केवल आशा पर मन मे योजना करब । उत्सुक होएब । मै.

मनसूआ-सं., काजक उत्साह, योजना, जोश । मनसूबा । उ. तद्भव

मनसोख-विशे., सहृदयताशून्य, उसट्ठ, भावनाहीन । मै.

मनसोठ-विशे., भीतरिया शठ, दुष्टबुद्धि । मै.

मनहकार-सं., निषेधक घोषणा । मै.

मनहानि-सं., आशा टूटने मनक व्यथा, मनोहानि । सं. तद्भव

मनहूस-विशे., हतोत्साह । मै.

मना-सं., निषेध, रोक । मै.

मनाएब-क्रि., गोहराएब, अपन पक्ष मे आनब, प्रार्थना करब । रिझाएब । मै.

मनाओन-सं., सम्मानित कय रिझबैक विधि । मै.

मना करब-क्रि., निषेध करब, रोकब । मै.

मनामनी-सं., परस्पर आन्तरिक विरोध । मै.

मना मानब-क्रि., निषेधाज्ञा पालब । मै.

मनाही-सं., रोक, निषेध । मै.

मनिआर-विशे., मणिवाला साँप । मै.

मनिहारा दुकान-विशे., अनेक उपयोगी वस्तुक दोकान । मै.

मनीषा-सं., विवेचनाक बुद्धि । सं. तत्सम

मनीषी-विशे., विवेचनाशील । सं. तत्सम

मनु-विशे., धर्मशास्त्रक निर्माता । मै.

मनुक्ख-सं., मनुष्य जाति (जीव) । मै.

मनुक्खक माइ-विशे.,पशु समान अज्ञानी मनुष्य । मै.

मनुक्खगन्ह-सं., मनुष्य देहक गन्ध । मै.

मनुख देबा-सं., देवता रूपेँ मानल गेल प्रेतात्मा । मै.

मनुखाह-विशे., मनुष्यें लग रहब पसिन्न करैवाला जीव । मै.

मनुष्य-सं., देखू—"मनुक्ख" । मै.

मनुष्यता-सं., मनुष्यक धर्म । सं. तत्सम

मनुष्याभास-विशे., नामेंटा मनुष्य, वेलूरि निर्बुद्धि लोक । मै.

मनुहारि-सं., मनाओन । मै.

मनें-अव्यय, प्रायः, सम्भव, भरिसक । मै.

मनेजर-विशे., व्यवस्थापक, मैनेजर । अं. तद्भव

मनेजरा-सं., वनस्पति विशेष । मै.

मनें मनें-अव्यय, भीतरेँ भीतर । मै.

मने मने गजब-क्रि., भीतरेँ भीतर स्वार्थ सिद्धिक आनन्दकय नितराएब । मै.

मनेरक लड्डू-विशे., (लाक्षणिक) तृष्णा आ असम्भतिक केन्द्र । मै.

मनोज/मनोभव-सं., कामदेव । सं. तत्सम

मनोरथ-सं., सेहन्ता, इच्छा, लोचना । सं. तत्सम

मनोरम-विशे., अति सुन्दर । सं. तत्सम

मनोरी-सं., कपड़ा मे लागल गहना । मै.

मनोहर-विशे., सुन्दर । मै.

मनौआ-विशे., १. मनाकय अर्थात् चौसिकय आनल । २. मनबैवाला । मै.

मनौती-सं., कबुलापाती । मै.

ममत/ममता-सं., अत्यन्त मोह भरल स्नेह । सं. तद्भव/सं. तत्सम

ममरखा-सं., बाल रोग, पाँच वर्ष सँ छोट बच्चा कें अनेक प्रकारक रोग सँ अबल । मै.

ममरी-सं., दीपक राशि (शिखा) मे पड़ल राखवाला विकार । मै.

ममहर (रा)-सं., मामाक गाम, माइक नैहर । मै.

महार-सं., पोखरिक माटि सँ बनल चारूकातक पहाड़ जकाँ ऊँच भूमि । मै.

ममिया ससुर-विशे., पति आ पत्नीक माम परस्पर दूनू लेल ससुर । स्त्री० ममिया सासु । मै.

ममियौत-विशे., मामक पुत्रक भाइक सम्बन्ध । मै.

ममिला-सं., मामला, मोकदमा । उ. तद्भव

ममोड़-सं., अंगक अचानक कुगर घूमब । पेट मे अपच सँ अन्नक ऐंठब । मै.

ममोड़ब-क्रि., अचानक कुगर घुमाएब । मै.

ममोखा-सं., मनक लालसा । मै.

मय-सं., अधिकता द्योतक प्रत्यय । प्रयोग—"जलामय, धूँहाँमय आदि ।" मै.

मयूर-सं., देखू—"मजूर" । मै.

मयूर पंखी-विशे., मयूरक पाँखि जकाँ रंगवाला । मै.

मयूरी नृत्य-सं., १. मयूर जकाँ नर्तक कला । २. नचैत नचैत पैर सँ बालु वा मेंही धूरा पर मयूरक चित्र बनबैक कला । मै.

मर्जी-सं., स्वेच्छा । उ. तत्सम

मर्मर-विशे., सुखाएल खड़पातक शब्द । मै.

मर्यादा-सं., यथा योग्य व्यवहारक सीमा परिधि । सं. तत्सम

मरं !-अव्यय, कटुतापूर्ण विरोधक शब्द । प्रयोग—"मरं ! हम कहाँक आज्ञा मे रहब ?" मै.

मर !-अव्यय, वाक्यक आदि मे विस्मय बोधक शब्द । प्रयोग—" मर ! ओ चल गेला ।" मै.

मर-सं., असमय अप्रत्याशित वा अनुपयुक्त मरण । प्रयोग—"मर कें लगले घर ।" मैथिली लोकोक्ति । मै.

मरक-सं., अपच भेला सँ पेट मे अँटकल अन्नक विकार सँ उत्पन्न पीड़ा । मै.

मरकछ-सं., कृत्रिम मृत्युक अभिनय । मै.

मरकछ लाधब-क्रि., मृत्यु वा मूर्छाक चेष्टा सँ लोक कें धोखा देब । मै.

मरकट-सं., बानर । विशे., (लाक्षणिक) अधिक उपद्रावी लोक । मै.

मरकठ-सं., चिता जरै सँ बचल श्मशानक काठ । मै.

मरकत-सं., हरियर रंगक मणि । सं. तत्सम

मरकन-सं., १. खाद्यान्न मे मिलल दूषित कण । २. समय पर भेनिहार प्राकृतिक वस्तुक रोक । मै.

मरकब-क्रि., समय पर भेनिहार प्राकृतिक वस्तुक रुकब । प्रयोग–"रोपनियैक समय मे वर्षा मरकल (थकि गेल) ।" रौदीक द्वारें धान मरकि गेल। वृद्धि नहि क' सकल । मै.

मरकर-सं., १. मुमुर्षु अवस्था मे खाइक चेष्टा । २. समीप मे मूइल लोकक अछैत हबर हबर भोजन । मै.

मरकाई-विशे., जाहू बात आ वस्तु मे अपन नै लगैत होइ ताहू मे कृपणता केनिहार । मै.

मरकाएब-क्रि., प्राकृतिक प्रभाव रोकब । प्रयोग–"एहि बेर पालाक द्वारें मजरे मरका गेलै ।" मै.

मरकाठी-सं., अधजरू चिता खोरैवाला बाँसक टोंटा तथा लकड़ी ठहुरी । मै.

मरकाह-विशे., कनेको पानिक अभाव मे फसिल कें दुर्बल क' दैवाला तपनाह खेत । मै.

मरकी-सं., महामारी । प्राकृतिक प्रभाव सँ उत्पन्न विशेष रोग । हैजा, प्लेग आदि व्यापक रोग । मै.

मरखहिया-विशे., अनेरो लोक पर मारैले दौड़ैक स्वभाववाला माल मवेसी । मै.

मरखाह-विशे., हिंसक स्वभाववाला गै, महिस । मै.

मरघट-सं., श्मशान घाट, नदी कातक श्मशान । चिता जरबैक स्थान । मै.

मरचर-सं., श्मशान गाछी । मै.

मरछाउर-सं., चिताक भस्म । मै.

मरजर-सं., प्राण वियोग (मरैक) कालक ज्वर । मै.

मरजाब-सं., विशेष रूपें माननीय अतिथिक सत्कारक प्रक्रिया । मै.

मरणासन्न-विशे., निकट मृत्युवाला । सं. तत्सम

मरतरिया-विशे., अधिक मारि पीट करैक प्रकृति वा कलावाला । मै.

मरतौल-सं., कमार (बरही लोहार) क यन्त्र विशेष। भारी हथौड़ा । मै.

मरद-विशे., पुरुष जीव । मर्द । उ. तद्भव

मरदन-सं., मर्दन, कण कण तोड़ब, छिन्न भिन्न करैक प्रकार तथा तेल आदि वस्तु कें शरीर पर रगड़ैक चेष्टा । सं. तद्भव

मरदब-सं., चूरी चूरी (चूर्ण विचूर्ण) करब । मै.

मरदुआर-विशे., क्रमशः अधिक शक्तिहीन । मै.

मरदे !-अव्यय, निन्दा स्तुतिक अर्थ मे करैक सम्बोधन । मै.

मरन-सं., मरण । सं. तद्भव

मरनै-विशे., प्रवाहहीन, सुखाएल नदी । मै.

मरनौती-सं., मृत्युक लेखा । मै.

मरब-क्रि., मृत्यु प्राप्त करब । मै.

मरबाएब-क्रि., १. अनका द्वारा मारैक चेष्टा करब । २. अश्लील व्यापार कराएब । मै.

मरम्मति-सं., १. गड़बड़ यन्त्र आदिक सुधार, भठठी । २. (लाक्षणिक) शारीरिक दण्ड । उ. तद्भव

मरम-सं., १. देहक मूल तत्त्व (धमनी) । २. रहस्य। ३. (लाक्षणिक) छिपाओल वैर भावना । ४. मर्म । सं. तद्भव

मरमर करब-क्रि., दीनता दरिद्रताक द्वारें सतत कष्ट भोगब । मै.

मरमराएब-क्रि., अत्यन्त सुखाएल रहैक द्वारें चोट सँ मरमर शब्द करब । मै.

मरमरी-सं., रेशमी वस्त्र विशेष । अं. तद्भव

मरमिबाह-विशे., वैर छिपाकय रखनिहार । मै.

मरमी-विशे., भीतर मे दगावाला । मै.

मरमुठि लागब-क्रि., अधिक आश्चर्य, भय आ शोक सँ ज्ञानशून्य भ' क' चेष्टाहीन होएब । मै.

मरमेठब-क्रि., उचित सँ बेशी कोनो वस्तु के ऐंठि-कय घुमाएब । मै.

मरहन्ना-विशे., सुखाइक गुण सँ फसिल नष्ट प्राय भय विपन । वृद्धिहीन । मै.

मराएब-क्रि., अनका सँ पिटबाएब, अश्लील क्रिया कराएब। मै.

मराठी-सं., १. मरनिहार लोकक वस्तु। २. मरैक स्थिति। मै.

मरिचाइ-सं., कड़ु स्वादवाला कटुक। मै.

मरिचैया-सं., १. पैघ सीझ सककत काठवाला वनस्पति विशेष। २. छोट झार। मै.

मरिसेराएब-क्रि., (लाक्षणिक) अन्त मे आशाहीन भय अत्यन्त थाकनि होएब। मै.

मरी-सं., मुइल जीवक शरीर। मै.

मरीच-सं., कारी गोल आ छोट दानावाला कड़ु रसक कटुक। मै.

मरुअनि-सं., खेतक अन्नक संग उपजल अखाद्य मेंही दाना। मै.

मरुआ-सं., निम्न स्तरवाला अन्न विशेष। मै.

मरुआएब-क्रि., मरैक स्थिति मे आएब। मै.

मरछियाहि-विशे., बारम्बार मुइल बच्चावाली स्त्री। मै.

मरुभूमि-सं., निर्जल भूखण्ड, बालुकामय शुष्क प्रदेश। मै.

मरेड़-सं., १. अन्न संग मिलल कदम। २. कपड़ा मोड़िकय बनाओल काज। मै.

मरैकमान-विशे., मरैक स्थिति मे आएल। मै.

मरौआ-विशे., मरबैक अभ्यासवाला। मै.

मरौटी-सं., मरैवालाक फेंकल वस्तु। मै.

मरौत काढ़ब-क्रि., माथ सँ मुहधरि कपड़ा सँ झाँपि कय रहब। मै.

मरौना-विशे., मरबैवाला। मै.

मरौसी-विशे., कुल परम्परा सँ अबैवाला मौरूसी। उ. तद्भव

मल्ल-विशे., शारीरिक युद्ध करैवाला। सं. तत्सम

मल्ली-सं., लती। सं. तत्सम

मल्हनी-सं., चकरगर नाओ। मै.

मल्हाएब-क्रि., निश्चिन्तता आ भीतरक आनन्द आ मिथ्या दुलारूपन सँ अत्यन्त अगराएब। मै.

मल्हार-सं., बरिसातक राग विशेष, मलार। मै.

मल्हू-विशे., कम बूझैक शक्तिवाला। मै.

मल-सं., अन्नक विकार एवं मुख्यतया पेट मे पचला उत्तर बहराएल भोजन विकार। निःसार भाग। मै.

मलकब-क्रि., मालवालक उन्मत्त जकाँ उछलब, कूदब आ दौड़ब। मै.

मलकाएब-क्रि., बल सँ मालजाल केँ उन्मत्त बनाएब। मै.

मलकोका-सं., साँझ मे फुलाइवाला लाल कमल जकाँ पोखरि मे फुलाइवाला फूल। मै.

मलड-विशे., झंझट सब सँ दूर पेट भरै मात्र सँ प्रसन्न निश्चिन्त रहैवाला। मै.

मलना-विशे., मलैवाला, मर्दन करैवाला। मै.

मलब-क्रि., मर्दन करब। मै.

मलबा-सं., ध्वस्त वस्तुक वस्तुजात। हि. तत्सम

मलमल-सं., कोमल आ मेंही कपड़ा। मै.

मलमास-सं., प्रति तीन वर्ष पर चन्द्रमाक गति सँ बढ़ल एक मास। मै.

मलय-सं., कवि सम्प्रदाय मे प्रशस्त पर्वत। मै.

मलरब-क्रि., अलसाकय पड़ल रहब। मै.

मलसी-सं., कटोरी जकाँ (छोटकी बाटी जकाँ) माटिक बनल बासन। मै.

मलहम-सं., घाओ पर लगबैक लेप। मै.

मलहा-विशे., (अनादर मे) मलाह जातिवाला। मै.

मलही-विशे., मलाहक उपयोगी। मै.

मलाइ-सं., दूध दहीक निहुछल छाल्ही। मै.

मलाएब-क्रि., मर्दन कराएब। मै.

मलान-विशे., म्लान, मुरझाएल। मै.

मलार-सं., मल्हार राग। प्रयोग—"किदनि फाटए तेँ मलार गावी।" मै.

मलाल-सं., देखू—"ममोला"। मै.

मलाह-सं., माछक व्यवसायी जाति। मै.

मलाही-सं., कोनो खाम्ह केँ उपर तनेक लेल जड़ि मे बान्हिकय कन्हा लगाकय उपर उठबैवाला बोसक टोना। मै.

मलिच्छ-विशे., अधिक मलिन। म्लेच्छ। मै.

मलिकाइन-विशे., गृहस्वामिनी। उ. तद्भव

मलिछाइन-विशे., मलिछ जकाँ लगैवाला। मै.

मलिछाह/मलिछौन-विशे., मलिन रहैवाला। मै.

मलिन-विशे., मैल भरल। सं. तत्सम

मलिनता-सं., मलिनपन। सं., तत्सम

मलिमुह-विशे., उपर सँ कनेक मौलाएल। मै.

मलीन-विशे., देखू–"मलिन" । सं. तद्भव
मलुआ-विशे., मलिकय बनाओल । मै.
मशक-सं.,१. बजनियाक बाजा विशेष । २. मच्छर । सं. तत्सम
मशक्कूर-सं., दाँतक जड़िवाला सक्कत मांस । मै.
मशमशाएब-क्रि., बिना शब्दें कोनो वस्तु हूबर हूबर चिबा जाएब । मै.
मशान-सं., मरघट । मै.
मशाल-सं., तेल मे लत्ता भिजाकय डन्टा मे बान्हि जराओल इजोत । उ. तत्सम/मै.
मशालची-विशे., मशाल पकड़ैवाला । उ. तत्सम
मस्त-विशे., शरीरें पुष्ट आ मनें निर्द्वन्द्व लोक । उ. तत्सम
मस्तक-सं., माथ । सं. तत्सम
मस्तिष्क-सं., बुद्धि मण्डल, बुद्धिमय कोष । सं. तत्सम
मस्ती झाड़ब-क्रि., १. बलपरीक दाबी देखाएब । २. (लाक्षणिक) अनुरूप दण्ड करब । मै.
मस्तुल-सं., मन्दिर आदि उपर उठल वस्तुक विशेष रूपक सब सँ उपरका भाग । मै.
मस्ते (कँ)-अव्यय, उपरक अनुस्वार । मै.
मसक-सं., १. इनार सँ बहुत जल एक बेर खीचि खेत पटबैक काज मे अबैवाला चामक जलपात्र । २. अनायास पुरान वस्त्रक फटैक क्रम । मै.
मसकब-क्रि., पुरान वस्त्रक अनायास शब्दहीन फाटब । मै.
मसकाएब-क्रि., जानिकय फाड़ब । मै.
मसखरा-विशे., हँसोड़, विनोदी । उ. तत्सम
मसखरी-सं., हँसी ठट्ठा । उ. तत्सम
मसदग्धा-सं., मासादि, संक्रान्तिक प्रातवाला अशुभ दिन । मै.
मसनही-सं., परसौती तथा नव विवाहिता वधूक पोखरि वा नदी मे विधिपूर्वक स्नान । मै.
मसलइ-सं., गोल आ नाम मोट गेरुआ (ओठङैवाला) मसनद । उ. तद्भव
मसहरी-सं., मच्छरदानी । मै.
मसाला-सं., तीमन कें स्वाद दैवाला पदार्थ । कटुक । उ. तत्सम

मसिया सासु-विशे., सासुक बहिन । पु॰ मसिया ससुर । मै.
मसियौत-विशे., मौसीक बेटा ओ बेटी । मै.
मसीपात्र-सं., मोसियानी, मोसिक बासन । सं तत्सम
मसुआइ-सं., मासुक (मांसक) भोजन । मै.
मसुआइन/मसुआह-विशे., मांसक सम्पर्कैवाला अथवा मांसक गन्धवाला । मै.
मसुआएब-क्रि., सरस भेला सँ सक्कत भ' जाएब । मै.
मसुरी-सं., दलिहन अन्न विशेष । मै.
मसुवृद्धि-सं., मांसक गेंठ बढ़ब । मै.
मसोड़ब-क्रि., घाडि कय घोंकचा कय दूरि करब । मै.
मसोमात-विशे., विधवा, मुसम्मात । उ. तद्भव
मसोसब-क्रि., विवशता सँ पछत'बैत रहि जाएब । मै.
महँक-सं., गन्ध । मै.
महकब-क्रि., अपन गन्ध पसारब । मै.
महकाएब-क्रि., गन्ध प्रकट करब । मै.
महकारी-सं., काँटवाला लतीक फल विशेष । मै.
महकी-सं., महकैक क्रम । मै.
महकौआ-विशे., गन्ध छोड़ैवाला, महकैवाला । मै.
महखर-सं., मुख्य सम्मिलित सम्पत्तिक केन्द्र । मै.
महखरिया-विशे., १. मुख्य सम्पत्तिक सेवक । २. मुख्य सम्पत्ति सँ संबद्ध । मै.
महगी-सं., वस्तुक अप्राप्ति, वस्तुक मूल्य वृद्धि । मै.
महगोरिया-विशे., कम्मो दामक वस्तु कें दाम चढ़ा कय बेचैवाला । मै.
महगौआ-विशे., साधारणो वस्तु अधिक दामवाला । मै.
महजीद-सं., मुसलमानक देवताक मन्दिर, मस्जिद । उ. तद्भव
महत्त्व-सं., पैघत । सं. तत्सम
महत्तम-सं., गणितक प्रकार । सं. तत्सम
महतम-विशे., स्वामी । गृहस्वामी । मै.
महतमाइन-विशे., स्वामिनी । मै.
महतौं-विशे., स्वामी, गृहस्थ । मै.
महवेबा-सं., पालो मे उपर दिश हूनू छोर पर बनल शिखर जकाँ डिमकी । मै.

महन्थ-विशे., सार्वजनिक धार्मिक स्थानक ब्रह्मचारी सम्पत्तिक अधिकारी। मै.

महन्थी-सं., सार्वजनिक धार्मिक प्रतिष्ठानक सम्पत्तिक अधिकार। मै.

महनिहार-विशे., दूध आदि कें पेरि (मथिकय) माखन वा घी बहार कयनिहार। मै.

महफा-सं., कहारक द्वारा उठबैवाला मुरेड़ावाला सवारी। शिविका। मै.

महब-क्रि., दूध तथा छाल्ही कें मक्खन बहार करै ले मथब। (हाथ वा यन्त्र सँ)। मै.

महमह-सं., अत्यन्त सुगन्ध। सुवास। मै.

महल-सं., अट्टालिका। उ. तत्सम

महल-विशे., पेड़ल, मथल। मै.

महा-विशे., पैघ। सं. तत्सम

महाद-सं., महैक काज। महैक खर्च। मै.

महाउथ-विशे., हाथी कें चलौनिहार। मै.

महाएब-क्रि., मथाएब, पेराएब। मै.

महाओन-सं., महैक बोनि। मै.

महाग-विशे., पैघ। मै.

महाड़-सं., पोखरियेक माटि सँ पोखरिक चारूकात बनल पहाड़ जकाँ ऊँच भूमि। मै.

महात्मा-विशे., विशाल समदर्शी हृदयवाला साधु पुरुष। मै.

महातम-सं., बड़ाइ, प्रशंसा। माहात्म्य। सं. तत्सम

महान्-विशे., पैघ लोक, उदार हृदयवाला। सं. तत्सम

महानता-सं., पैघत्त। सं. तद्भव

महावर-सं., पैर रँगैक रंग। हि. तत्सम

महावरी-सं., १. औषध विशेष। २. घरक शृङ्गारक हेतु बनल रंग विरंगवाला कपड़ाक झालरि। उ. तद्भव

महामहि करब-क्रि., अत्यन्त सौरभ छोड़ब। मै.

महामहिम-विशे., सर्वोच्च व्यक्तित्ववाला। मै.

महामहोपाध्याय-विशे., शास्त्र मे सर्वोच्च रहनिहारक विशिष्ट पदवीवाला। मै.

महामहो होएब-क्रि., वेशभूषा आ रूपरंग मे प्रतिष्ठित समाज मे गरिमामय बनब। मै.

महारथी-विशे., सैनिक संगठन मे वीरता आ बुद्धिक द्वारें सर्वोच्च पदाधिकारी। सं. तत्सम

महाराज-विशे., अनेक राजा आ सामन्त कें अपन अधीन मे राखि स्वतन्त्र रहनिहार राजा। सं. तत्सम

महारानी-विशे., महाराजक राजमहिषी। मै.

महाल-सं., आर्थिक स्रोतक विभाग। प्रधाक अधीनक खण्ड। उ. तत्सम

महि-सं., जनि, लसि। प्रयोग-"उबेर तँ कयलक मुदा मेथक महि नै येल छै।" मै.

महिना-सं., मास, महीना। उ. तत्सम

महिमा-सं., गौरव, माहात्म्य। सं. तत्सम

महियाएब-क्रि., अधिक सँ अधिक मेंही बनाएब। मै.

महिषा-सं., दुर्गा कें बलि दैक जीव। मै.

महिस-सं., अधिक दूध दैवाला पोस जीव। मै.

महिसवार-विशे., महिसिक चरवाह। मै.

महिसवारि-सं., महिस चरबैक काज। मै.

महिसमोड़-विशे., महिस जकाँ मन्द आ ज्ञानशून्य। (लाक्षणिक) प्रचण्ड मूर्ख। मै.

महिसा-सं., महिस कें गर्भधारण करबै ले छोड़ल पुरुष महिस। मै.

मही-सं., १. महैक (मथैक) साधन मथानी। २. पृथ्वी। सं. तत्सम/मै.

महीन-विशे., मेंही, सूक्ष्म। उ. तत्सम

महु/महुआ-सं., वनस्पति विशेष तथा ओकर फड़। मै.

महुआरी-सं., मधु बनैक समय, वसन्त। मै.

महुआ लागब-क्रि., आमक मंजर आदि पर मधु लसैक द्वारें सगरे मधुमय होएब। आमक उत्पत्ति मे बाधक होएब। मै.

महुराएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) तामस सँ माहुर (विष) बनब। २. अत्यन्त पाकि जाएब। मै.

महेशवानी-सं., मैथिली गीतक विशेष लयवाला महादेवक गीत। मै.

महोमहो होएब-क्रि., उत्तमो मे उत्तम होएब। मै.

महोर भ' क' पाकब-क्रि., फलक अत्यन्त पुलकित पाकब। मै.

महौथ-विशे., हाथीक चालक। मै.

महौथवार-विशे., हाथी कें चरबै आ चलबैवाला। मै.

बना

माँ-सं., माता। विशे., जनका मैक सम्बोधन। मै.

माइ-विशे., मैं, माता। मै.

माई-सं., जड़ी बूटीवाला औषध। मै.

माई !-अव्यय, विस्मय, भय आ घृणा मे स्वतः बह-राएल शब्द। प्रयोग–"माई मै कोन विध राखब माइक मान। (सामा गीत)। मै.

माइङ (माङि)-सं., नाओक दुनू कातक छोर। मै.

माइधी-संयुक्त सं., मैं बेटी। मै.

माइन-सं., मान्यता। मै.

माइल-सं., माला कारक (मालीक) जाति। मै.

माउगि-सं., स्त्री जाति। मै.

माउगि मेहरि-विशे., घर मे रहनिहारि स्त्रीगण। (विवाहित, अविवाहित)। मै.

माउसि-विशे., मौसी, माइक बहिन। मै.

माए-सं., माता। मै.

माओल-विशे., विवश क' क' पकड़ल। मात। उ. तद्भव

माकरी-सं., मकराकार कुण्डल। स्त्री गहना। मै.

माकुल-विशे., पक्ष मे आएल, अनुकूल। उ. तत्सम

माँख-सं., गुप्त रूपक आन्तरिक रोष। मै.

माँखब-क्रि., चलैत चलैत घृणित वस्तु पैर मे लागि जाएब। मै.

माग-सं., १. स्त्रीगणक बीच माथक सीथ। २. याचना। मै.

माघ-सं., मास विशेष। मै.

माघी-विशे., माघ मे भेनिहार। मै.

माङ-सं., १. माथक सीथ। २. माङब। मै.

माङनि-सं., विवश कय कें मङैक चेष्टा। मै.

माङब-क्रि., याचना करब। मै.

माछ-सं., खाद्य आ बिना हाथ पैरक जल जीव। मै.

माछी-सं., छोट उड़ैवाला कीड़ा। मै.

माँजब-क्रि., विशेष रगड़िकय झलकाएब। असारब। मै.

माजूम-सं., भाङक संग विशिष्ट पदार्थ मिलाकय बनल मादक द्रव्य। उ. तत्सम

माँझ-सं., बीच, मध्य। मै.

माँझकारी-सं., औकारक मात्रा। मै.

माँझिल-विशे., स्थिति क्रम मे बीच मे रहनिहार आ भेनिहार। मै.

माझी-विशे., नाओ खेवनिहार। मै.

माट-सं., अधिक फैल साँकर मुहवाला अन्न आदि रखैक पकाओल माटिक बासन। मै.

माटि-सं., मृत्तिका। मै.

माटि होएब-क्रि., २४ मानधरिक मुइल नेना कें तथा विधर्मी सभक शव कें माटि मे गाड़ब। मै.

माठ-सं., सजबैक क्रम। (केवल अपना कें) प्रयोग–"शान माठ।" मै.

माठनि-सं., आन वस्तु कें सजबैक विधि। मै.

माठब-क्रि., काठ बाँस कें छीलि कय चिक्कन करब। मै.

माठर-विशे., अधिक पिङ्गल स्वभाववाला। मै.

माड़ब-सं., मड़वा। मंडप। मै.

माड़रि-सं., गोल (मण्डलाकार) आ विशेष रंगक परिधि। मै.

माड़रि लागब-क्रि., सूर्य चन्द्रमाक चारू दिस गोला-कार छाया बनब। मै.

माड़-सं., निम्न कोटिक अन्न विशेष। मै.

माण्ड-सं., भात सँ पसाओल गाढ़ पानि। मै.

माणी-सं., कपड़ा आदि मे घन करैले पोसल कृत्रिम माण। मै.

माण्डी छारब-क्रि., आँखिक डिम्भा पर रोग सँ पातर छाल पसरब। मै.

माणी बहकब-क्रि., सूतल मे मुहँ सँ नेर चूअब। मै.

माणें माउगि जीबए-लोकोक्ति, भाग्ये पौविकय स्त्री जाति जीवित रहि सकैये। मै.

मात्र-अव्यय, केवल। मै.

मात्रा-सं., विभिन्न स्वरक अर्थ मे बनाओल संकेत चिह्न। मै.

मात्सर्य-सं., १. दयाक संग आवेश। २. आनक नीक नहि देखैक गुण। सं. तत्सम

मात्सर्यी-विशे., १. ककरो हित चिन्तनक संग स्नेह करैक स्वभाववाला। २. आनक नीक नै सहन करै-वाला। सं. तत्सम

मातंग-सं., हाथी। सं. तत्सम

मातनि-सं., मतबैक प्रक्रिया । मै.

मातब-क्रि., निशाँ मे भुत्त होएब । ज्ञानशून्य बनब । मै.

माता-सं., माय । सं. तत्सम/मै.

मातामह-विशे., मायक बाप । स्त्री० मातामही । सं. तत्सम

मातु-विशे., १. मैं । प्रयोग–"मातु गंगे ।" २. शतरंजक खेल मे बादशाह विवश । मै.

मातृक-सं., मायक नैहर । सं. तत्सम

मातृका-सं., गोबर आदि पर दूभि आ सिन्दूर सँ षोडश देवीक आसनक चिह्न । सं. तत्सम

मातृका पूजा-सं., शुभ काज मे पहिने मातृका चिह्न पर देवी सभक पूजा । देवीक नाम-गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः । हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टि-रयात्म कुल देवता । (कात्यायन) सं. तत्सम

माथ-सं., मस्तक, शरीरक सब सँ उपर मुख्य अंग । मै.

माथ गरम होएब-क्रि., (लाक्षणिक) तामसक उन्माद बढ़ब । मै.

माथ चढ़ाएब-क्रि., १. (लाक्षणिक) बेचैक हेतु माथ पर ल' क' पूर्वक कष्ट करब । २. अधिक खुशामद आ दुलारक द्वारें बेसी महत्त्व देब । मै.

माथ भुकाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक बजाएब, अधिक टोकब । माड़ब तथा तंग करब । मै.

माथ मे घूमब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो विषयक रहस्यक मन मे संचार होएब । मै.

माथ मे घूमब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो विषय झट-दय मस्तिष्क मे पहुँचब, बूझि जाएब । मै.

माथा-सं., (लाक्षणिक) मस्तिष्क । मै.

माथाँ ठनकब-क्रि., (लाक्षणिक) सचेत होएब, दूरक तर्क करब । मै.

माथाँ ठोकब-क्रि., आशा टूटने हतोत्साह होएब । मै.

माथाँवाला-विशे., (लाक्षणिक) अधिक बुद्धिवाला । मै.

माथाँ बिगड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) बताह होएब । मै.

माथाँ हाथ देब-क्रि., (लाक्षणिक) निराशा आ चिन्ता मे पड़ब । मै.

माथी-सं., घर आदि वस्तुक सब सँ उपरका भाग । मै.

मादा-सं., कोनो जीवक स्त्री जाति । मै.

मादे-अव्यय, विषय मे । मै.

माधवकिहो-सं., माधव सिंहक चलाओल जलपात्र । मै.

माधवीलता-सं., वसन्ती फूलक लता विशेष । मै.

मान-सं., १. स्त्रीक प्रेमीक प्रति प्रणयक कोप । २. सत्कार, प्रतिष्ठा । ३. कोनो पशुक स्वरचित गुफावाला निवास । ४. साँप आदि जीवक भूर । मै.

मान करब-क्रि., १. ककरो सम्मान देब । २. प्रणय लीला मे स्त्रीक रूसब । मै.

मानता-सं., मान्यता, प्रतिष्ठा । मै.

मानब-क्रि., १. आदेश आ स्नेह करब । २. प्रतिष्ठा देब । ३. बूझब । मै.

मानव-सं., मनुष्य । सं. तत्सम

मानस-सं., मन । सं. तत्सम

मानहानि-सं., प्रतिष्ठाक क्षति। सं. तत्सम

मानि-सं., मान्यता, प्रतिष्ठा । मै.

मानिक-सं., माणिक्य, रत्न, हीरा। सं. तद्भव

मानिकचन्नी-सं., सुपारीक एक प्रभेद । मै.

मानिकथम्ह-सं., छपरिक बीच उपर मुहेँ ठोकल बरेड़ी तनैवाला खम्भाला काठ । मै.

मानिक रस-सं., माणिक्यक भस्मक औषध । सं. तद्भव

मानिजन-विशे. समाजक प्रतिष्ठित प्रधान । मै.

मानिजनी-सं., समाजक बीच मुख्यताक प्रभाव । मै.

मानिदानि-सं., स्नेह सत्कार । मै.

मानि देब-क्रि., प्रतिष्ठा देब, मान्यता देब । मै.

मानिनी-विशे., आत्माभिमानवाली स्त्री । मै.

मानी-विशे., १. मान्यतावाला । २. आत्माभिमानी पुरुष । सं. तत्सम

मानु-क्रि., आदेशात्मक मानैक क्रिया । मै.

मानुष-सं., मनुष्य । मै.

मानै-सं., अर्थ, पर्याय, विषयक अर्थ । मै.

माप-सं., नपैक मानक वस्तु । सं. तत्सम

मापक-विशे., नपैवाला, अमीन । सं. तत्सम

माँफ/माँफी-सं., क्षमा, दोष (अपराध) क मान्यता सँ मुक्ति । उ. तत्सम

माबा-सं., उर्वर, सार, तत्त्ववाला अंश । मै.

मामा/मामू-विशे., माइक भाइ । स्त्री० मामि, मामी । मै.

मामूली-विशे., साधारण । उ. तत्सम

माय-विशे., जन्म देनिहारि । मै.

माया-सं., मोह-प्रपञ्च । सं. तत्सम

मायावी-विशे., माया रचैवाला । सं. तत्सम

मार्क-सं., १. विशेष चिह्न । २. तर्क । अं. तत्सम

मार्कण्डेय-सं., पौराणिक चिरजीवी ऋषि । मै.

मार्कर-सं., सैन्य सज्जाक विशेष प्रकार । अं. तत्सम

मार्ग-सं., बाट । सिद्धान्त । सं. तत्सम

मार्गी-विशे., बाट पर रहनिहार । सिद्धान्त माननिहार । सं. तत्सम

मार्जन-सं., सिञ्चन, धोअब माँजब । सं. तत्सम

मार्मिक-विशे., आन्तरिक रहस्यवाला । सं. तत्सम

मार-सं., मरैक रूप, मरण । मै.

मारक-विशे., मारैवाला । सं. तत्सम

मारकेश-विशे., मारैक योगक गतिवाला ग्रह । सं. तत्सम

मारण-सं., १. मारैक प्रवृत्ति । २. एक तान्त्रिक प्रयोग विशेष । सं. तत्सम

मारन-विशे., मारैवाला । सं. तद्भव

मारब-क्रि., देह पर कोनो रूपेँ आघात कय कष्ट देब । प्राण लेब । मै.

मारमारकय छूटब-क्रि., भगबैक क्रम मे खिसियाइत ककरो मारैक रूपेँ दौड़ब । मै.

मारल बसात-विशे., वेग रोकलवाला बसात । मै.

मार लेब-क्रि., फँसिकय मरैक स्थिति मे आएब । मै.

मारा-सं., छोटका माछ विशेष । मै.

मारामारी-सं., हत्या करैक ध्येय सँ परस्परक अस्त्र सँ प्रहार । मै.

मारि-सं., लड़ाइ, युद्ध । मै.

मारि-अव्यय, अत्यधिक, अधिकता सँ । प्रयोग–"बजार मे तँ मारि आम किनीक अभाव सँ सड़ै छै ।" मै.

मारि करब-क्रि., आपस मे चोट कय लड़ाइ करब । मै.

मारि खाएब-क्रि., ताड़न भोगब । मै.

मारिगारि-सं., युद्धक संग संग अश्लील बातक परस्पर प्रयोग । मै.

मारिते-अव्यय, बहुतायत रूपेँ । प्रयोग–"आइ चौकरिही पर मारिते लोक एकट्ठा रहै ।" मै.

मारिपीट-सं., मुक्का थापड़ सँ अस्त्रक चोटवारि युद्ध । मै.

मारिमरौअलि-सं., बारम्बार एक दोसरा केँ मारैक प्रवृत्ति । मै.

मारुक-विशे., घातक, हानिकारक । मै.

मारुत-सं., बसात । सं. तत्सम

मारुति-सं., एहि नामक मोटर यान तथा हनुमान जी । सं. तत्सम

मारुन-विशे., अनेर मारि बैसैक प्रवृत्तिवाला । मै.

मारे-अव्यय, अधिक, अधिकता सँ । प्रयोग–"हमरा तँ मारे लिखैक सामग्री पड़ल अछि मुदा छुट्टी कहाँ ।" मै.

माल-सं., १. गै महिस आदि पोसैवाला पशु । २. चरखा मे घुमबैक साधनरूप ताँति (डोरी) । ३. बहुमूल्य विभिन्न सामग्री । मै.

मालक-सं., मालक चरैक योग्य उबेर । मै.

मालकोस-सं., पूर्वाह्न मे गबैक राग विशेष । मै.

मालघर-सं., १. पशुक रहैक स्थान । २. रेल सँ आएल विभिन्न वस्तु जात (सामग्री) केँ सुरक्षित रखैक स्थान । मै.

मालजाल-सं., पोसा पशुक समूहक संग चरखार आदि जीवनोपयोगी वस्तु । मै.

मालदह-सं., आमक विशेष प्रभेद । मै.

मालपुआ-सं., विशिष्ट रूपक स्वादिष्ट पकवान । मै.

मालभोग-सं., सुन्दर कोमल सुगन्धित धान तथा केराक प्रभेद । मै.

मालमेसी-सं., पोसा पशुक सम्पूर्ण समूह । मै.

माला-सं., १. फूलक हार । २. लकड़ी पर जाँति कय विभिन्न चित्रकारी । मै.

मालि-सं., मालाकार जाति । मै.

मालिक-विशे., स्वामी, अधिकारी । उ. तत्सम

मालिका-सं., छोट छोट अनेक अंगक माला । सं. तत्सम

मालिश-सं., मर्दन, मालिस्त । उ. तद्भव

माली-सं., तेल रखैक विभिन्न वस्तुक अत्यन्त छोट कटोरीसन बासन । मै.

मालोमाल होएब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त धनवान् भ' जाएब । मै.

मास-सं., ३० दिनुक एक मान । सं. तत्सम

मांस-सं., शरीरक गुद्दा, धातु विशेष । सं. तत्सम/मै.

मासा-सं., १. सोन आदि तौलैक सूक्ष्म माप । २. अर्शस् (बवासीर) रोग मे गुदा मे नमरल मांसक सूत तथा अन्य अंगक मसुवृद्धि । मै.

मासादि-सं., सौर मासक आरम्भक पहिल दिन । मसदम्धा । सं. तत्सम

मासान्त-सं., सौर मासक अन्तिम दिन । मै.

मासावधि-अव्यय, मासभरि, सम्पूर्ण मास । सं. तत्सम

मासिक-विशे., मास दिन पर नियमित रूपें होम' वाला। नौकरिद्वाराक वेतन । स्त्रीक रजःस्राव । मास दिनुक बच्चा तथा प्रति मासक श्रान काज । सं. तत्सम

मासी-विशे., मासवाला । मै.

मासु-सं., शरीरक गुद्दा । विशे., मांसलि । मै.

माहुल-सं., यान (सवारीक) भाड़ा । महसुल । उ. तद्भव

मासेक-अव्यय, गोटेक मासक लगभग । मै.

मासें मासें-अव्यय, प्रतिमास । मै.

माह-सं., मास । उ. तत्सम

माहवारी/माही-विशे., मासें मासें देय । मै.

माहुर-सं., प्राकृतिक विष । उ. तत्सम

मि

मिचराएब-क्रि., मन्द गति सँ चिबाकय खाएब । मै.

मिचलाएब-क्रि., रहि रहिकय वमनक वेग होएब । मै.

मिचली-सं., ओकक वेग । मै.

मिझर-विशे., मिलल जुलल, मिश्रित । मै.

मिझरा-सं., मिलल जुलल पदार्थ । मिलल वस्तुक समूह । मै.

मिझराएब-क्रि., सम्मिलित होएब । मिलि जाएब । मै.

मिझराह-विशे., मिलैक योग्य । मै.

मिझाएब-क्रि., आगिक शान्त(ठन्डा)होएब । दीपकक ज्योति लुप्त होएब । मै.

मिट्ठा-सं., गुड़ । (स्थान गुनें प्रयोग) । मै.

मिट्ठी-विशे., थोड़ मधुरएक मात्रावाला । मै.

मिट्ठू-विशे., चमचा, खुशामद मे मीठ बजैवाला । मै.

मिट-सं., लोप, मिटैक भाव, नाश । मै.

मिटब-क्रि., सब प्रकारें लुप्त होएब । मै.

मिटाएब-क्रि., ध्वंस करब । लुप्त होएब । मै.

मिठका-विशे., मीठ स्वादवाला । मै.

मिठाइ-सं., मधुर । मै.

मिठाएब-क्रि., मधुर करब, मधुर बनाएब । मै.

मिठास-विशे., कनेक मीठ स्वादवाला । मै.

मिठौआ-विशे., मीठ बनवैवाला, मीठवाला । मै.

मिड़ाएब-क्रि., हाथ आ लात सँ मर्दन कराएब । मै.

मिड़ुआ-विशे., मीड़ैवाला, मीड़िकय बनल । मै.

मित-विशे., मीत, मित्र, बन्धु । मै.

मितवा-विशे., मित्र कें अधिक स्नेहक सम्बोधन । मै.

मिताइ-सं., मित्रता । मै.

मितारब-सं., मीतक आलय (घर) । मै.

मिति-सं., दिनांक । मान । सं. तत्सम

मिथ्या-अव्यय, फूसि । सं. तत्सम

मिथक-सं., विभिन्न ऐतिहासिक संदर्भ । मै.

मिथिला-सं., एक प्राचीनतम सुसंस्कृत प्रदेश तिरहुत । मै.

मिनट-सं., घन्टाक साठिम भागवाला मान । मै.

मिनती-सं., विनती, प्रार्थना । मै.

मिनहा-सं., अन्तर्भाव, मिला जुला कय एकत्रित । मै.

मिमियाएब-क्रि., दीनता सँ मन्द आ अस्पष्ट बाजब । मै.

मियाँ-विशे., मुसलमान जातिवाला । मै.

मियादी-विशे., समयक निश्चित अवधि धरि रहैवाला । मै.

मियानी-सं., पैजामा मे वा सलवार मे दुनू टाँगक जोड़क बीच राग मे छोटमन अलग सँ जोड़ल चेफड़ी। उ. तत्सम

मिनुँकी-विशे., कोनो क्षण मे मरैक स्थितिवाला। मै.

मिरगी-सं., रोग विशेष, देहक छटपटाइटिक संग ज्ञानशून्यता। मै.

मिरगी उठब-क्रि., मनक कोनो अभिलाषा सिद्धि लै हाथ पैर पटकि बताह बनब। मै.

मिरजई-सं., मुसलमानी ढंगक प्राचीन कालक अंगा। मै.

मिरदङ-सं., बाजा विशेष, ताल मात्राक ध्वनिवाला मृदङ्ग। सं. तद्भव

मिरदङिया-विशे., मृदङ्ग बजबै मे निपुण। मै.

मिरमिराएब-क्रि., नहुँ नहुँ अस्पष्ट बाजब। मै.

मिरहिन्नी-विशे., मेंही दानावाला अन्न आदि। मै.

मिल्लति-सं., परस्पर सद्भाव, मिल्लत। उ. तद्भव

मिलन-सं., परस्पर संयोग। मै.

मिलब-क्रि., १. प्राप्त होएब। २. एक सँ दोसरा कें भेंट घाँट करब। ३. संयुक्त होएब। ४. जुटब। ५. कोनो पक्ष (दल) मे जाएब। मै.

मिलब जुलब-क्रि., आपसी सद्भावक आनन्द लेब। मै.

मिलाएब-क्रि., जोड़ब, संयोग कराएब। मै.

मिलान-सं., आपसक नीक सम्बन्ध। मै.

मिलिटरी-विशे., सेनाक लड़ाकू लोक। अं. तद्भव

मिलीमीटर-सं., आधुनिक सूक्ष्म माप। अं. तत्सम

मिलुआ-विशे., मिलान रखैवाला। मै.

मिलौट-सं., मिलावट, एक वस्तु मे दोसर वस्तुक अन्तर्भाव एकाकार। मै.

मिश्र-सं., नामक पाछू लागल उपाधि। मै.

मिश्रण-सं., कोनो वस्तु मे कोनो वस्तुक मेल। सं. तत्सम

मिस्त्री-विशे., स्थापत्य कला एवं लोहू काठ आदि वस्तुक रचना मे निपुण। मुखिहार तथा करिन्दा। उ. तत्सम/मै.

मिस्सी-सं., दाँत कें सुन्दर करैले दाँतक रंग। उ. तत्सम

मिस-अव्यय, व्याज, छल। मिष। सं. तद्भव

मिस-विशे., अविवाहित महिला। अं. तत्सम

मिसरी-सं., चीनीक जमाओल ढेला। मै.

मिसाइल-सं., आधुनिक दूरघाती अस्त्र। अं. तत्सम

मिसिया-सं., १. एहि नामक कदन्न। २. नापक आ संकेतक सूक्ष्मतम मान। प्रयोग—"रव्वी अन्न मे बहुत अकटा मिसिया अपने भ' जाइ छै। एकै मिसिया विष खेने प्राणे चल जाइ छै।" मै.

मी

मीचब-क्रि., मुहँ आँखि विकृत करब। मै.

मीजब-क्रि., कुड़िय'बैक क्रमे आँखि कान आदि अंग मलब। मै.

मीठ-विशे., स्वाद मे मधुर। मै.

मीड़ब-क्रि., मर्दन करब। मै.

मीत-विशे., मित्र। सं. तद्भव

मीता-विशे., स्नेहक सम्बोधन। मै.

मीनाकारी-सं., रंग विशेष सँ गहनाक शोभा बढ़ैबेक कला। हि. तत्सम

मीनी-विशे., छोट। अं. तत्सम

मीमा-सं., १. घास विशेष, धनखेतीक बरिसाती घास। २. अनादरक सम्बोधन। मै.

मीरा-विशे., कौड़ी टीप खेलाइक काल मे पहिल स्थानक योग्य। मै.

मील-सं., १. पैघ उद्योगक यान्त्रिक संगठन। कम्पनी। २. बाटक दूरीक नाम। अं. तत्सम

मील पड़ब-क्रि., मेलाक घन होएब। मेला लागब। मै.

मु

मुइल-विशे., निर्जीव बनल, मरल। मै.

मुक्का-सं., हाथक आङुर मोड़िकय चोट करैक लयँ बान्हल कड़ा मुट्ठी। मै.

मुक्का मुकीअलि-सं., परस्पर मुक्का सँ मारि। मै.

मुक्की-सं., हल्लुक हाथें, हल्लुक मुक्का। मै.

मुक्ता-सं., मोती, रत्न। सं. तत्सम

मुकियाएब-क्रि., मुक्का सँ मारब। मै.

मुकुट-सं., राजाक माथ परक राजचिह्न। मै.

मुकीअलि-सं., मुक्काक मारि। मै.

मुख्य-विशे., प्रधान। सं. तत्सम

मुख्यता-सं., प्रधानता । सं. तत्सम

मुख-सं., मुह । सं. तत्सम

मुखपात-सं., कपड़ाक शोभा ले जोड़ल आँचर । मै.

मुख पृष्ठ-सं., पुस्तक आदिक सब सँ पहिल उपर वाला पीठ । सं. तत्सम

मुखड़ा-सं., मुहक छवि । रूप । शोल । मै.

मुखारी-सं., भालजालक शोभा ले देल मुह पर विशेष प्रकारक डोरी । मै.

मुखिया-विशे., समाजक प्रधान पदाधिकारी । मै.

मुखोतर-सं., मुहाँ मुहीँ वाला उत्तर । मुखोतर । सं. तद्भव

मुखौटा-सं., मुहक कृत्रिम बनाओल खोल । मुलड़ा । हि. तत्सम

मुग्दर-सं., हथौड़ा, मजिया, ठोकिकय चोट दै-वाला कोनो भारी वस्तु । मै.

मुड़बा-सं., मुङक बेसन सँ लड्डू जकाँ बनल वेवी सँ पैघ प्राचीन कालक मधुर । मै.

मुङरबन-सं., व्यायामक हेतु बनल भारी काठक नाम वा उतार गदा । मै.

मुङरी-सं., नीचाँ चौरस कोनो वस्तु चूरैवाला बाँस काठक छोट वस्तु । मै.

मुचुर मुचुर-विशे., शब्दसहित मुह सँ चिबबै योग्य । मै.

मुजेली-सं., मड़ आ मूज सँ बीनल वान्हल छोट पथिया वा मौनी । मै.

मुट्ठा-सं., हाथक मुट्ठीक प्रमाणवाला । मै.

मुट्ठी-सं., आङुर सब मोड़िकय बन्न कयल हाथक आकार । मै.

मुठबार-सं., गोल रूप बनाओल कागजक मुट्ठा । मै.

मुठबाँसी-सं., मुट्ठी सँ पकड़ै योग्य पातर बाँस । मै.

मुठरा-सं., एक हाथक मुट्ठी सँ वान्हल पिण्ड । मै.

मुठिया-सं., मुट्ठीभरि अन्न । मै.

मुठियाएब-क्रि., मुट्ठी सँ पकड़ब । मै.

मुड़ना-सं., मुण्डन । नेन्नाक जन्म केश उतारब । मै.

मुड़ब-क्रि., परतारि कय छल सँ प्राप्त क' लेब । मै.

मुड़री-विशे., माथक काटल केशवाला । मै.

मुड़ियाएब-क्रि., कोनो गाछ, पातक मुड़ी टा छाँटि लेब । मै.

मुड़ियारी देब-क्रि., कोनो काज वा बात मे निर-र्थक मूड़ी डोलियाएब । मै.

मुड़हा-विशे., मूर्ख, मूढ़ । मै.

मुण्डन-सं., देखू—"मुड़ना" । मै.

मुत्ती-सं., लघुशंका । मै.

मुतना-विशे., अधिक मूतैवाला । सं., मूत बहराइक बाट । मै.

मुतबास लागब-क्रि., मूतैक इच्छा होएब । मै.

मुताइन-विशे., मूतक जकाँ रूप, रस, गन्धवाला । मै.

मुताएब-क्रि., बल सँ लघुशंका कराएब । मै.

मुता मुता भरब-क्रि., डर, मारि आ शीत उपचार द' क' बारम्बार मूतैक स्थिति बनाएब । मै.

मुतीर फूटब-क्रि., प्रसव सँ पहिने गर्भक संग पातर कोमल चमड़ाक जल भरल थैली बहराएब । मै.

मुद्दालह-विशे., जकरा पर मोकदमा कयल जाइछ से विपक्षी, प्रतिवादी । उ. तत्सम

मुद्दई-विशे., वादी, अभियोग लगौनिहार मुद्दई । उ. तद्भव

मुदा-अव्यय, परन्तु, लेकिन । मै.

मुन्हारि साँझ-सं., गाढ़ अन्हार होइत साँझ समयक पछिला अंश । मै.

मुन्हियाएब-क्रि., फसिलक दाना समयक कुप्रभाव सँ छोट होएब । मै.

मुन्ही-सं., १. फसिलक प्राकृतिक प्रभावे मेही दाना । २. कपड़ाक बनल भेटकीसन आङीक बुटामक बदलाक गोल वस्तु । मै.

मुनना-सं., कोनो वस्तुक मुह के मुपुट मुनैक वस्तु । मै.

मुनाएब-क्रि., १. दोसरा सँ मुनैक काज कराएब । २. स्वयं मुनल भ' जाएब । मै.

मुनि-विशे., ज्ञानी, तपस्वी । सं. तत्सम

मुनिगा-सं., सोहिजन । मै.

मुनियाँ-सं., बड़ छोट आकारवाला पक्षी । मै.

मुर्गा-सं., पक्षी विशेष । मै.

मुर्दघट्टी-सं., मुर्दा जरबैक स्थान । मै.

मुर्दा-सं., मृतक शरीर । मै.

मुर्दारी-विशे., मुर्दा जरबैक उपयोग मे अएला सँ बाँचल बाँस, काठ, कपड़ा आदि । मै.

मुरखाहा-विशे., अत्यन्त मूर्ख । मै.

मुरघण्ट-सं., एक व्यञ्जन विशेष, दालि मे माछ आ छागरक मीरा द' क' गरम मसाला आदि सँ बनल स्वादिष्ट पदार्थ । मै.

मुरछब-क्रि., १. तेज धारवाला अस्त्रक धार मोट होएब । २. बामे दहिने ज्ञानशून्य भ' क' खसैत रहब । मै.

मुरछाएब-क्रि., १. मूर्छा करब । २. धार भोथ करब । मै.

मुरझबा-क्रि., १. जीवनशक्तिक कमी होएब । २. मन्द पड़ब । मै.

मुरझाएब-क्रि., गाछ वृक्ष कें मरैक स्थिति मे मुखाएल सन होएब । मै.

मुरझार होएब-क्रि., मरैक स्थिति मे आएब । मै.

मुरदाशंख-सं., नेन्नाक घरौआ औषध विशेष । मै.

मुरधन-सं., १. कोनो वस्तुक अगिला (पहिलुक) अंश । पूँजी । मै.

मुरबड़-सं., मूरक बनाओल बड़ । मै.

मुरमुर-विशे., शब्दसहित चिबबै जोग । मै.

मुररी बटेड़-विशे., (लाक्षणिक) देहक रोइयाँ आ माथक केश सँ हीन । मै.

मुरहन-सं., पूँजी, तैयार फसिलक अगिला मुख्य दाना, अन्न । मै.

मुरही-सं., विशेष प्रकारक खाद्य । मै.

मुरुख-विशे., मूर्ख । सं. तद्भव

मुरुत-सं., मूर्ति । सं. तद्भव

मुरेठा-सं., माथक पगड़ी । मै.

मुरेड़ा-सं., घर आ देबालक उपरका मथनी । मै.

मुरै-सं., व्यञ्जनक कन्द विशेष । मै.

मुरौड़ी-सं., बेसनक संग मूरक भुजबी कें लपेटि बनाओल रौद मे सुखाओल बड़ी । मै.

मुलकी-विशे., सामूहिक रूपें अधिक । मै.

मुलहक्की-सं., मुख्य वस्तुक लक्ष्य । मै.

मुलहन-सं., मूलधन । मै.

मुलहा-विशे., असल मुख्य जड़िवाला । मै.

मुष्टिका-सं., मुट्ठी । मुक्का । सं. तत्सम

मुस्त-सं., बान्ह मुट्ठीक भीतरक अँट बराबरिक प्रमाण वस्तु । मै.

मुसार-सं., उक्खरि मे अन्न आदि कूटैक हेतु काठक गोल मोट आ नाम दण्ड । मै.

मुसकाएब-क्रि., कनेक हँसैक चेष्टा करब । मै.

मुसकाणी-सं., मूस बझबैक यन्त्र । कल । मै.

मुसकी-सं., कनेक ठोर ढील करैत हँसी । मै.

मुसकुराएब-क्रि., कनेक बिहुँसिकय, कनेक दाँत देखार कय हँसब । मै.

मुसरा-सं., फलक भीतरवाला रीढ़ । दाँतक उपरका भाग । डंडासन पकड़ैवाला कोनो वस्तु । मै.

मुसरी-सं., छोटका मूस । मै.

मुसलमान-विशे., इसलाम धर्म मानैवाला । स्त्री० मुसलमानी । मै.

मुसहर-सं., जाति विशेष । स्त्री० मुसहरनी । हरिजन । मै.

मुसहरी-सं., मुसहर जातिक बसती, टोल । मै.

मुसाइन-विशे., मूसक सन । (गन्ध) । मै.

मुसाह-विशे., अधिक मूस लगैवाला । मै.

मुह-सं., मुख । मै.

मुह आएब-क्रि., मुह मे घाओ (रोग) होएब । मै.

मुहकी खाएब-क्रि., मुहँ भरैं खसब । (लाक्षणिक) कोनो बात मे उनटे असरि पड़ला सँ असफल होएब । मै.

मुहखर-विशे., अशिष्ट बजनिहार, ठाईं पठाईं कहनिहार । निर्धोख बजनिहार, मुखर । सं. तद्भव

मुह खोलब-क्रि., १. स्पष्ट बाजब, कहब । २. कोनो वस्तुक मुनना (ढक्कन) हटाएब । मै.

मुहगर-विशे., सब ठाँ निर्धोख बजनिहार । मै.

मुहगरीक दाबी-सं., अधिक आ ढीठ भ' क' उचित बात कहैक घमण्ड रखैवाला । मै.

मुहचुक-विशे., १. मुह चकुचलवाला । २. (लाक्षणिक) टूटल घमण्डवाला हारल । असफल । मै.

मुहचोर-विशे., लोकक सोझाँ बजै मे धाख करैवाला । मै.

मुहछो मारब-क्रि., अदृश्य शक्तिक द्वारा गति बुद्धि कें रोकि राखब । मै.

मुहछुट्ट-विशे., सभक संग उद्धत जकाँ बाजब । मै.

मुहछुबौवलि-सं., औपचारिकता मात्रक निर्वाह । आग्रहहीनता । मै.

मुह छोड़ब-क्रि., याचना करब, दीनता सँ माङब । सम्पर्क छूटि जाएब । मै.

मुहजोर-विशे., १. (मनुष्यक हेतु) अधिक स्पष्ट सत्य आ निर्धोख बजनिहार । २. (मालक प्रसंग) अधिक चरनिहार । मै.

मुहठाल-सं., मुहक दप, अंगक छवि । मै.

मुहठाह-विशे., अप्रत्याशित व्यवहार सँ स्तंभित । क्षुब्ध । मै.

मुहठी-सं., आमक डंटी दिसुक अंग । मै.

मुहड़ा-सं., कोनो वस्तुक मुख्य अगिला अंश, रेलक इंजन आदि । मै.

मुहतक्की-सं., सतत भरण पोषणक हेतु आनक भरोस पर निर्भरता । पालकक भावक अध्ययन । मै.

मुहतोड़-विशे., (लाक्षणिक) बातक कठोर उत्तरा-निरुत्तर बात । मै.

मुहथारि-सं., आंगुक प्रधान स्थान । मै.

मुहदुब्बर-विशे., कम बजनिहार, दयनीय स्थिति वाला । मै.

मुहदुस्सी-सं., उल्लूक छोट प्रभेदवाला पक्षी । मै.

मुह दूसब-क्रि., आनक बाजब कें आ मुह कें अपन मुह सँ विकृति कय कें देखाएब । मै.

मुहदेखना-सं., नव कनियाँ आदिक पहिल बेर मुह देखैक क्रम मे आशीर्वाद रूपक द्रव्य । मै.

मुहदेखाई-सं., १. मुह देखैक विधि । २. मुह मात्र देखैक वस्तु । ३. अपन उपस्थितिक आभास । मै.

मुहदेखाओन-सं., १. मुह देखैक द्रव्य । २. मुह मात्र देखबैक काज । ३. मुह देखबाक पारितोषिक । मै.

मुहदेखि मुड़बा परसब-क्रि., (लाक्षणिक) जेहन जे लोक तकरे पक्ष मे खुशामद करैं भ' जाएब । मै.

मुह धरब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थक लक्ष्य सँ समर्थ लोकक खुशामद करब । मै.

मुहनाल-सं., कांटी धँसबैक हेतु कांटीसन कमारक लोहक अस्त्र । मै.

मुहनि-सं., कोल्हु सँ तेल बहैवाला अंग । मै.

मुहपुरुष-विशे., समाजक अगुआ । दलक नेता । मै.

मुहपोछना-सं., मुह पोछैक कपड़ा । मै.

मुहफट-विशे., तुरन्त निःसंकोच बजनिहार । मै.

मुह फेरब-क्रि., संपर्क तोड़ब । विमुख होएब । मै.

मुहबज्जी-सं., वर बधुक प्रथम वार्तालाप । परस्पर टोकचाल । मै.

मुह बजाएब-क्रि., मुह लागल बजैसे विवश करब । मै.

मुहबजाओन-सं., वर बधूक प्रथम टोकचाल मे वर दिस सँ देय गहना आदि पारितोषिक । मै.

मुह बनाएब-क्रि., मुह कें अवसरक अनुकूल विकृत करब । मै.

मुह बाएब-क्रि., सरलो बात कें देरी सँ मुह खोलि कय बुझैक प्रयास करब । (लाक्षणिक) बकलेल-पनाक प्रदर्शन करब । मै.

मुहबिजकाएब-क्रि., मुह टेढ़ करैत चनकाकय असम्मति आ विरोध प्रकट करब । मै.

मुहबौआ-विशे., बुझैलो पर नहि बूझि कय केवल मुह बाबिकय देखनिहार । मै.

मुहबौक-विशे., बजैक क्षमता रहितौं अवसर पर लोकक बीच बाजि नहि सकनिहार । मै.

मुह भरब-क्रि., द्रव्य सँ सन्तुष्ट करब । मै.

मुह मलान करब-क्रि., चिन्ता व्यग्रता आ सोच सँ अपना कें दुखी राखब । मै.

मुहरी-सं., १. कोनो निर्जीव वस्तुक अगिला भाग । २. अगिला अवसर । मै.

मुहलग्गू-विशे., (लाक्षणिक) अधिक प्रिय आ दुलारू रहैक कारणें अत्यन्त निकट रहनिहार । मै.

मुह लगाएब-क्रि., अयोग्य लोक सँ मुह लागल बात करब । अशिष्ट सँ गप करब । मै.

मुहलगुआ-विशे., देखू—"मुहलग्गू" । मै.

मुहसच्चा-विशे., बजै मे शालीनता रखनिहार, संकोच सँ कम बजनिहार । अप्रियो बातक उत्तर नहि देनिहार । स्त्री० मुहसच्चि । मै.

मुहानी-सं., धारक मुह फुटैक स्थान । मै.

मुहाँबज्जी-सं., समक्ष भ' क' परस्पर वार्तालाप । मै.

मुहाँ मुहीं-अव्यय, सामने सामनी समक्ष । मै.

मुहान-सं., खेतक विस्तृत चकला, भूखण्डक परिधि । मै.

मुहाँसी-सं., यौवनसूचक मुह पर उगल घन फोंसरी आ तकर दाग । मै.

मुहियाएब-क्रि., लक्ष्य दिश मुह करब । मै.

मुहूर्त-सं., केवल २४ मिनटक मानवाला समय । उचित क्रियाक उचित समय । सं. तत्सम/मै.

मुहेंमुह-अव्यय, मुहेक अंग पर (मारि) । प्रयोग– " मनोज कें गारिक कारणें मुहेंमुह मारि लग-लैन ।" मै.

मुहें मुहें-अव्यय, दुहू दिशक मुहेक द्वारा पठाओल सन्देश वाक्य । मै.

मू

मूक-विशे., गोंग, बौक । सं. तत्सम

मूङ-सं., ऐ नामक दलिहन विशेष । मै.

मूङा-सं., थोड़ दामक लाल रत्न । प्रवाल । मै.

मूड़ार-सं., फसिलक जड़ि आ डाँटक विस्तार । मै.

मूज-सं., सरपत (सड़क) फूलक कोसावाला गोभी । (कोमल) पातक डोरी । मै.

मूजी-सं., मूज सँ बीनल वासन । मै.

मूठ-सं., तरुआरि आदि अस्त्र कें पकड़ैक स्थान । मै.

मूठि-विशे., मुट्ठी जकाँ बान्हल अन्नक गाछ । मै.

मूठि खोलब-क्रि., उद्‌गार सँ दान करब । मै.

मूठि आनब-क्रि., अनेक प्रकारें अनायास लाभ होएब । मै.

मूठि भाँजब-क्रि., पचीसी आदि मे कौड़ी लय कें अपन पारीक कौड़ी छिड़िआएब । मै.

मूठि लेब-क्रि., देवता पितरक पहिले आराधना करैक हेतु तीन मुट्ठी नव धान काटब । मै.

मूड़-सं., उपर दिशक अगिला भाग । शिर, मस्तक । मै.

मूड़न-सं., मुण्डन । मै.

मूड़ पर मूड़ खसब-क्रि., कोनो वस्तु कीनै मे बहुत लोकक एकै बेर लैक चेष्टा करब । मै.

मूड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) ठकि कय आ छल कय कें ककरो मूल्यवान् वस्तु ल' लेब । मै.

मूड़ा-सं., गाछ वा छापरक मूड़ीवाला भाग । मै.

मूड़ी-सं., गरदनि सँ उपरक प्रधान अंग । मै.

मूड़ी उठाएब-क्रि., लोक मे प्रभावशाली बनब । मै.

मूड़ी खसब-क्रि., (लाक्षणिक) समाजक बीच लज्जित होएब । मै.

मूड़ी खसाएब-क्रि., समाज मे अप्रतिष्ठित बनाएब । मै.

मूड़ी झुकाएब-क्रि., समाज मे अपराध स्वीकार करब । मै.

मूढ़-विशे., महामूर्ख, जड़ । सं. तत्सम

मूत-सं., लघी, मूत्रमार्ग सँ बहराएल पेटक विकृत जल भाग । सं. तद्भव

मूतब-क्रि., लघी, लघुशंका करब । मै.

मूनब-क्रि., बीहरि आ कोनो बासनक मुह कें बन्न करब । मै.

मूर्ख-विशे., अज्ञानी, अनबूझ । सं. तत्सम

मूर्छा-सं., छम्पान, बेहोशी । सं. तत्सम

मूर्छित-विशे., अचेत । सं. तत्सम

मूर्ति-सं., प्रतिमा, अनुरूप आकार प्रकार । सं. तत्सम

मूर-सं., १. मूलधन । २. मूली व्यंजन । ३. अन्न आदिक अगिला । मै.

मूल्य-सं., दाम । मै.

मूल-सं., १. जड़ि । २. गोत्रक बीजी । ३. नक्षत्र विशेष । ४. पुरुषाक आदि स्थान । सं. तत्सम

मूलक-विशे., मूलवाला । बीजी पुरुषाक आदि स्थानवाला । सं. तत्सम

मूस-सं., बिल क' क' धरतीक भीतर रहनिहार उप-द्रावी छोटका जीव । मै.

मूसनि-सं., मूसक कोड़ल माटि । मै.

मृ

मृग-सं., हरिण तथा सामान्य बनैया पशु । सं. तत्सम

मृगचर्म-सं., १. बरुआ कें जनौ जकाँ पहिरैवाला । २. हरिण आ बाघक छालक आसन । सं. तत्सम

मृगछाला-सं., ओढ़ै पहिरैवाला हरिणक छाल । मै.

मृगा-सं., छोटका हरिण । मै.

मृत्यु-सं., मर, मरण । सं. तत्सम

मृतक-विशे., निर्जीव, मूइल । शव । सं. तत्सम

मृदङ्ग-सं., वाद्य विशेष । मिरदङ्ग । सं. तत्सम

मे

मेँ-अव्यय, बकरी बजैक शब्द । मै.

मे-अव्यय, शब्द मे अधिकरणक चिह्न । मै.
मेकचों-सं., समस्या भरल बाधा । मै.
मेघ-सं., मेघ, जलधर । मै.
मेघउनार-सं., मेघक फाटब, मुक्ति । मै.
मेघडम्बर-सं., बाँसक कमचीक बीनल छत्ता । मै.
मेघदिनाय-सं., मेघक लगला पर होइवाला दिनाय चर्मरोग । मै.
मेघाओन-सं., मेघक विस्तार, मेघ लगैक स्थिति । मै.
मेच-सं., अचानक मोड़ पड़ला सँ उपजल अंगक कष्ट । झोंक सँ कोनो वस्तुक उपर जोर । मै.
मेचन-सं., झोंक सँ कोनो वस्तु पर देल एके दिश क' जोर । मै.
मेचब-क्रि., झोंक सँ एक दिश कय जोर लगाएब । मै.
मेजन-सं., कोनो व्यञ्जनक स्वाद बढ़बैवाला, मेल खाइवाला दोसर पदार्थ । प्रयोग–''कोबी मे आलूक भाँटा मे अदौड़ीक मेजन बड़ दिव्य होइ छै ।'' मै.
मेठ-विशे., श्रमिक जन सभ मे मुखिया मजदूर । मै.
मेटन-सं., मेटाइक चिह्न । मै.
मेटब-क्रि., हटाएब, दूर करब । मै.
मेटाएब-क्रि., लोप करब । मै.
मेटिआ-विशे., जन सभक अगुआ, मुख्य । मै.
मेटिया-सं., दूध राखैक बड़का डाबा, चर्त । मै.
मेटौना-सं., मेटबैक वस्तु । विशे., मेटबैवाला । मै.
मेठनि-सं., एकै काज कें बारम्बार करैत रहैक क्रम । मै.
मेड़-सं., खेतक पानि रोकैले देल जाइवाला उँचगर आरि । मै.
मेढ़ब-क्रि., कोनो वस्तु कें ऐंठि कय सक्कत करब । मै.
मेथी-सं., फोरनक कटुक विशेष । मै.
मेद-सं., चर्बी, देहक धातु विशेष । सं. तद्भव
मेधा-सं., १. धारणा शक्ति (बुद्धि) । २. परस्परक समञ्जस । मिलान । सं. तत्सम/मै.
मेधावी-विशे., बुद्धिक धारणा शक्तिवाला । मै.
मेन-सं., सनैक काल चिक्कस मे मिलाओल घी । मै.
मेनदार-विशे., चिक्कस मे घी पियाओल पकवान । मै.

मेनसिल-सं., मन: शिला, पहाड़ सँ पघिलल द्रव, औषध विशेष । मै.
मेनहूर-सं., कीट विशेष । मै.
मेनी-विशे., डोलैत आ मोड़ल सिंगवाली गाय । मै.
मेवा-सं., सुखाएल फलक समूह । अखरोट किसमिस आदि । मै.
मेम-सं., विदेशी (युरोपीय) स्त्री जाति । मै.
मेमियाएब-क्रि., बकरीक अधिक बाजब । मै.
मेमना-सं., भेड़ीक बच्चा । मै.
में में करब-क्रि., भेंड़, बकरीक आर्त बाजब । मै.
मेर-सं., मण्डली, दल । मै.
मेरब-क्रि., दोसर मे मिलि जाएब तथा मिलान खाएब । मै.
मेराएब-क्रि., दोसराक संग सब प्रकारें मिलाएब । मै.
मेरिचाइ-सं., कड़ु रसक प्रधान फल । मै.
मेरिया-विशे., मण्डलीक लोक । मै.
मेल-सं., परस्पर समर्पित भाव । मिलान मतक एकता । हिं.
मेल खाएब-क्रि., समानता मे आएब । मै.
मेलजोल-सं., परस्पर स्नेह सद्भाव । मै.
मेल पाँच-सं., छोट पैंच नीक अधलाहक उचित मिलान । मै.
मेलब-क्रि., पीसी माल करब । अंग अंग तोड़ि देब । मै.
मेलमिलाप-सं., मतें आ शरीरें एकता । मै.
मेला-सं., मित, करमान, एकट्ठा जनसमूह । मै.
मेलुआ-विशे., एक मत वा विचारवाला लोक । मै.
मेष-सं., भेंड़ा (पशु विशेष) । बारह राशि मे प्रथम राशि । सं. तत्सम
मेसी-सं., मावजाल, गै महिस । मै.
मेह-सं., अधिक लघुशंकावाला रोग । सं. तत्सम
मेंह-सं., दौनी करैं मे बरदक समूह कें एक धुरी पर घुमबैवाला खुट्टा । मै.
मेहतर-सं., हलालखोर, मल उठबैवाला हरिजन जाति । मै.
मेहनति-सं., परिश्रम, खटनी, मिहनत । उ. तद्भव
मेहनतिया-विशे., अधिक परिश्रम करैवाला । उ. तद्भव

मेहबी-सं., छोट गाछक पात सँ बनल हाथ मे सिखनि दैवाला रंग। मै.

मेहब-क्रि., मथन करब। मै.

मेहरि-सं., स्त्री जाति। उ. तद्भव

मेहल्ला-सं., पीसल आ मथल वस्तुक गोला। मै.

मेहाएब-क्रि., सरस हेबाक द्वारेँ ढील भ' जाएब। मै.

मेहियाँ-सं., मेंही धान चाउर आदि। विशे., मेंही वस्तु। मै.

मेहियाएब-क्रि., अधिक मेंही करब। मै.

मेंही-विशे., अत्यन्त सूक्ष्म। मै.

मेहौलिया-विशे., मेहलम (दाउन काल मे) रहैवाला बड़द। मै.

मेहौती-सं., कड़ाम जोड़ैले देल सक्कत आ मोट डोरी। मै

मै

मैं-सं., माय। मै.

मैओ-अव्यय, आश्चर्य, भय, शोकक सम्बोधन। मै.

मैथिल-विशे., मिथिलावासी। मै.

मैथिली-सं., मिथिलाक भाषा। मै.

मैदा-सं., मेंही आ कोमल एवं स्वच्छ चिकस। मै.

मैदान-सं., समतल झारपातविहीन भूमि। मै

मैदान जाएब-क्रि., शौच क्रिया हेतु जाएब, मल त्यागैले जाएब। मै.

मैना-सं., पक्षी विशेष। मै.

मैया-सं., मैं। मै

मैयाँ-विशे., पितामही। मै.

मैल-सं., मलिनता, देहक दूषण, कपड़ाक मटियाइन रंग, मनक कलुष (पाप), चमल माटिसन पदार्थ। मै.

मैलका-विशे., बिन स्वच्छ। मै

मैलखोर-विशे., मैल केँ पचबैक रंगवाला कपड़ा। मै.

मैलखौक-विशे., मैल सहैवाला। मै.

मैलगर-विशे., मैल रहैवाला। मै.

मैलछन-विशे., मैल सन लगैवाला। मै.

मैलन-सं., मर्दन कयला सँ बहराएल विकार। मै.

मैलब-क्रि., कोनो वस्तु केँ ऐंठैत जकाँ मर्दन करब। मै.

मैलमुह-विशे., कनेक मुरझाएल। कनेक सुखाएल। मै.

मैलहा-विशे., अतिशय मलिनवाला। मै.

मैला-सं., विष्ठा, मनुष्यक मल। मै.

मैलाह-विशे., मैल भरल। मै.

मैली-सं., नीचाँ जमल वस्तुक दूषित भाग। मै.

मैहरि-सं., मजा, आनन्द आ सुख। मै.

मो

मोक्ष-सं., उद्धार, छुटकारा, मुक्ति। सं. तत्सम

मोकन-सं., जड़ी, वनौषधी विशेष। मै.

मोकब-क्रि., पकड़िक' नीचाँ दबबैत कष्ट देब। मै.

मोकर/मोका-क्रि., पैंत आँटवाला बड़का बीहरि। मै.

मोँछ-सं., ठाटक बाम दहिनक अन्तिम ओर। मै.

मोँछ मारब-क्रि., ठाटक बाम दहिन कात बातीक मुह कँपैसँ सब बान्हिकय चिक्कन बनाएब। मै.

मोगल-सं., मुसलमानक एक जाति विशेष। मुगल। उ. तद्भव

मोगली-सं., शतरंजक एक चालि। मै.

मोगली भरब-क्रि., दण्ड देबा ले पीठ दिस हाथ पैर बान्हिकय ओहि मे लाठी देब। मै.

मोच-सं., अचानक अंगक कुगर भेने शीर (शिरा) क तनला सँ पीड़ा। मै.

मोचण्ड-विशे., नीक अधलाह बिन सोचने काज कयनिहार बजनिहार मूर्ख। मै.

मोचन-सं., छोड़ओन, मुक्ति, उद्धार। मोननाइ। सं. तत्सम

मोचब-क्रि., सोनब। मै.

मोचरन-सं., ऐंठिकय तोड़ैक चिह्न। मै.

मोचरब-क्रि., कोनो वस्तु केँ अमेठि कय तोड़ब। मै.

मोचराह-विशे., मोचरला सँ बनल दूषित। मै.

मोचरिया-सं., मोचरैक काज। मै.

मोछार-सं., ऐंठिकय तोड़ैक प्रयास सँ टूटैक स्थिति। मै.

मोछ-सं., १. कटहरक केवल फूलवाला छोट आँटेवाला फल। २. उपरका ठोरक उपर बहराएल केश पंक्ति। मै.

मोछाएब-क्रि., कटहर मे मोछ बहराएब, पहँल चिह्न होएब। मै.

मोजर-सं., १. आम आदि फलक फूलक डन्टी। २. मिन्हा, आन मे मिलान। मै.

मोजरब-क्रि., देखू—"मजरब"। मै.

मोजरलहा-विशे., मोजर बहराएलवाला। मै.
मोजरा-सं., वेश्याक गाओल गीत। मै.
मोजरिया-सं., आन ढंगक खर्च मे मिलान। मै.
मोट-विशे., १. स्थूल (थुलथुल) शरीर। २. सबटाक एकट्ठा जोड़ (गणना)। मै.
मोटका-विशे., अधिक मोट शरीरवाला। मै.
मोटगर-विशे., देखै मे मोटगर, थोड़ेक मोट। मै.
मोटगरहा-विशे., मोटवाला। मै.
मोट डॉट-विशे., मोट आ नाम एक रंग। मै.
मोट बन्हना-सं., मोटा कसिकय बन्हैक डोरी। मै.
मोटर-सं., १. स्वचालित यन्त्र। २. स्वचालित तेज गामी गाड़ी। मै.
मोटरा मोटरी-सं., अन्न सँ अतिरिक्त वस्तुक छोट पैघ सबटा मोटा। मै.
मोटरी-सं., छोट मोटा। मै.
मोटा-सं., बिना अन्नक बड़का गोल कयल बान्हल वस्तुजात। मै.
मोटाइ-सं., मोटपनाक गुण, मोट होइक मान। मै.
मोटाएब-क्रि., मोट होएब। मै.
मोटान-सं., मोटाइक क्रम। मै.
मोटामोटी-विशे., (अव्यय) संकलित अनुमान रूपें। मै.
मोटिया-विशे., मोटा उगहैवाला। मै.
मोटूमल/मोटेमल-विशे., मोटाएल शरीरवाला। (निन्दा मे)। मै.
मोटैल-विशे., मोटावाला। मै.
मोठ-सं., इनार सँ बड़दक द्वारा पानि खींचैवाला चामक गोल बड़का छोकरा (थैला)। मै.
मोड़-सं., घूमैक टेढ़ स्थान। मै.
मोड़न-सं., मोड़ैक क्रम। घुमाकय टेढ़ करैक प्रक्रिया, झुकबैक चेष्टा। मै.
मोड़ब-क्रि., लिबाकय टेढ़ करब। घुमाएब। झुकाएब। मै.
मोड़लहा-विशे., मोड़लवाला। मै.
मोढ़ा-सं., १. पितरक कर्मक उपयोगी ऐंठल आ मोड़ल कुश। २. उपर विस्तार मुँहवाला (फैलल मुँहवाला) गोल आ नाम कोठी जकाँ काँच माटिक बनाओल बासन। मै.
मोड़ाइ-सं., मोड़ैक काज तथा वेतन। मै.
मोड़ाएब-क्रि., मोड़ैक काज कराएब। मै.
मोढ़ि-सं., नार पोआर सँ बनाओल थैला मे धान राखि बान्हल गोल पोटरी। मै.
मोढ़ुआ-विशे., कोनो वस्तु मोड़िकय बनाओल। मै.
मोड़नि-सं., मोड़ैक (घुमाकय बन्हैक) विधि। मै.
मोड़ब-क्रि., घुमा घुमाकय मुह बान्हब। प्रयोग—"दाइ कने पितकिया मोड़ि दिअ'।" मै.
मोढ़ा-सं., १. काठक गीरहवाला मैंही। २. एक गोटए कँ बैसैक उँचगर विशेष प्रकारक काठक आसन। मै.
मोढ़ाइ-सं., १. काठ आदि मे चित्र मोड़ैक काज आ पारिश्रमिक। २. नक्कासी। मै.
मोढ़ी-सं., गीरहवाला काठक छोट मैंही। मै.
मोढ़ुआ-विशे., नक्कासीदार, घुमा घुमाकय चित्र बनाओलवाला। मै.
मोति/मोती-सं., मुक्ता। रत्न। मै.
मोतियाबिन्द-सं., आँखिक रोग। मै.
मोतीचूर (लड्डू)-सं., मेंही बुनियावाला लड्डू। मै.
मोती झाबा-क्रि., गुच्छावाला लतीक फूल विशेष। मै.
मोथा-सं., घासक एक प्रभेद विशेष। मै.
मोथी-सं., बहुत पैघ डन्टावाला पटिया बीनैक उपयोगी मोथा जातिक जलीय प्रदेशक खड़। मै.
मोदक-सं., १. अनेक पदार्थ जड़ी बूटी सँ बनाओल मधुर औषध विशेष। लड्डू। सं. तत्सम
मोदियाइन-विशे., मधुर खाद्य पदार्थ बनबैवालाक पत्नी (स्त्री)। मै.
मोदी-सं., मधुर खाद्य पदार्थ बनबैवाला जाति। मै.
मोन-सं., १. तौलक पैघ मान। २. मन। मै.
मोन छोट करब-क्रि., निराशा सँ मन मे दुखी रहब। मै.
मोन पाड़ब-क्रि., स्मरण करब। मै.
मोन रहब-क्रि., स्मरण रहब। मै.
मोन राखब-क्रि., स्मरण राखब। मै.
मोनहा-विशे., एक मोन अँटैवाला बासन। मै.
मोनहानि होएब-क्रि., आशाक प्रतिकूल भेला सँ मनक उदास होएब। मै.

मोनही-विशे., एक मोनक आधारवाला वासन । मै.

मोनाह्-विशे., १. हरदम मन मे गुनि धुनि करैत रहने अप्रसन्न मुखाकृतिवाला कम बजनिहार । २. केवल कमरीवाला कटहर । मै.

मोनि-सं., चक्कर कटैत पानिक प्रबल प्रवाह सँ बनल धारक बीच गहींर गड्ढा । मै.

मोभौ-विशे., मोन भरि अन्न समाइवाली कोठी । मै.

मोफत-अव्यय, मुफ्त, बिना खर्च आ परिश्रम सँ । उ. तद्भव

मो फौं करब-क्रि., फूसि दावीकय समाज मे प्रभाव जमबैक चेष्टा करब । मै.

मोम-सं., कोमल पघिलैवाला घी सँ अतिरिक्त ठोस भ' क' जमैवाला तेलाह द्रव । मै.

मोमजामा-विशे.,मोम सँ जमाओल । मै.

मोमबत्ती-सं., मोमक भीतर बाती द' क' बनाओल दीप । मै.

मोर-सं., मयूर । हि. तत्सम

मोर-सर्वनाम, हम शब्दक सम्बन्धकारक । मै.

मोरी-सं., घिनाओन पानि के धूरि फिरिकय बहबैक बाट । छेद नाली । मै.

मोल-सं., १. मूल्य, दाम । २. (लाक्षणिक) महत्त्व । मै.

मोल करब-क्रि., मूल्य निश्चित करब । मै.

मोलगर-विशे., अधिक दामवाला । मै.

मोल मोलाइ-सं., दाम निश्चित करै मे बातक झीका झोरी । मै.

मोलहा-विशे., कीनल । मै.

मोलाइ-सं., कोनो वस्तुक चढ़ाकय दामक बात । मै.

मोलाएब-क्रि., कोनो वस्तुक दाम बूझब । दाम घटबैक प्रयास करब । मै.

मोलाह्-विशे., अधिक दाम सँ भेटैवाला । मै.

मोलान करब-क्रि., कोनो वस्तु कीनै मे दाम घटबै बढ़बै ले अधिक नोंक झोंक करब । मै.

मोलामा-सं., १. ककरो अपन मत मे सबै ले प्रिय आ आकर्षक बातक रंग । २. सोन आ चानी आ चानी आदिक द्रवक लेप । मै.

मोवुआ-विशे., कीनिकय आनल । मै.

मोस्टण्ड-विशे., सक्कत मस्सल विशाल धुआ कायावाला । मै.

मोस-सं., मच्छर, उड़ैवाला डंसक सूक्ष्म जीव । मै.

मोसब्बर-सं., रासायनिक पदार्थ । मै.

मोसम्मात-विशे., निःसन्तान विधवा मुसम्मात । उ. तद्भव

मोसाफिर-विशे., यात्री, बटोही, मुसाफिर । उ. तद्भव

मोसाह्-विशे., मोस (मच्छर) भरल । मै.

मोसियानी-सं., मोसि (रोसनाई) रखैक वासन । मै.

मोह्-सं., कोनो वस्तु मे मनक अत्यन्त लागि । सं. तत्सम

मोहन भोग-सं., दूध, घी, उत्तम फल सब सँ बनल मधुर भोजन । मै.

मोहनमाला-सं., बहुमूल्य रत्न सब सँ गाँथल मनहर माला आ फूलक गजरा । मै.

मोहब-क्रि., मन मे लागि जगाकय आकर्षित करब । मै.

मोहर-सं., पद आ नामवाला ठप्पा, नाम निशान छपैक वस्तु । मै.

मोहरा-सं., जड़ी विशेष । मै.

मोहाएब-क्रि., कोनो वस्तु पर मुग्ध भ' क' खिंचा जाएब । मै.

मोहित होएब-क्रि., मुग्ध भ' जाएब । वासना सँ प्रेरित बनब । मै.

मौ

मौआसी-सं., पानिक वेग सँ बहिकय आएल खेतक उर्वर शक्ति (खाद) । मै.

मौका-सं., अवसर । उ. तत्सम

मौगा-विशे., मौगीक स्वभाववाला पुरुष । मै.

मौगियाइन-विशे., मौगी जकाँ स्वभाव आ आचरण । मै.

मौगियाह्-विशे., स्त्रीगणक बीच रहब अधिक पसिन्न करैवाला । मै.

मौगियाही-विशे., स्त्री जातिक उपयोगवाला । मै.

मौगी-सं., स्त्रीगण । मै.

मौगीमेहरि-सं., नेन्ना सँ बूढ़ आ धिया सँ पुतोहु धरि सब स्त्री जाति । मै.

मौज-सं., निधख़धपनाक सुख । उ. तत्सम

मौजी--विशे., मौज करैवाला । निधख़्ध रहैवाला । उ. तत्सम

मौजे-सं., निबन्धित ग्रामक नाम । उ. तत्सम

मौत-सं., १. शतरंज खेलक बादसाहक धड़ पकड़ । २. मृत्यु । उ. तत्सम

मौध-सं., मधु । मै.

मौन-विशे., गुम्म रहैवाला, चुप रहैवाला । सं. तत्सम

मौनता-सं., चुप्पी । सं. तत्सम

मौनापंचमी-सं., श्रावण कृष्ण पंचमी, नागमाताक उपासना तिथि । मै.

मौनाह्-विशे., टोकलो पर चुप्पे रहैक अभ्यासवाला । मै.

मौनी-विशे., सदिखन चुप्पे रहैक व्रतवाला । मै.

मौनी-सं., बाँस आ सीकी खढ़क बीनल छोट सँ छोट बासन । मै.

मौर-सं., मुकुट, विवाह आदि मे वरक मस्तक पर रखैवाला वस्तु । मै.

मौलवी-विशे., मुसलमानक पण्डित । मै.

मौला-विशे., मुसलमानक वैध पण्डित, महात्मा । उ. तत्सम

मौलाएब-क्रि., सुखाइक कम होएब । मै.

मौलि-सं., माथ । सं. तत्सम

मौलिसिरी-सं., मालसरि फूल । हि. तद्भव

मौली-सं., शुभ अवसर पर हाथ मे कंकण बन्हैक लाल सूतक गुच्छा । मै.

मौसी-विशे., माइक बहिन । मै.

मौह-सं., बनस्पति विशेषक फड़ महुआ । मै.

मौहक-सं., मोहक, नव वर वधूक परस्पर थारी मे पहिने अन्नक कउर फेंकैक विनोद । मै.

य

यकार-सं., 'य' अक्षर । मै.

यज्ञ-सं., यज्ञ । जग्य । सं. तत्सम

यज्ञोपवीत-सं., जनौ । सं. तत्सम

यजन-सं., यज्ञ । सं. तत्सम

यजमान-विशे., यज्ञ कयनिहार । स्त्री० यजमानी । सं. तत्सम

यत्न-सं., प्रयास, उद्योग । सं. तत्सम

यथा-अव्यय, जाहि प्रकार, जेना । सं. तत्सम

यथाजाल-सं., चल अचल सब सम्पत्ति । मै.

यथेष्ट-अव्यय, परिपूर्ण, इच्छानुसार । सं. तत्सम

यथोचित-अव्यय, उचितक अनुसार । सं. तत्सम

यद्यपि-अव्यय, औना तँ । सं. तत्सम

यदाकदा-अव्यय, जखन कखनो । सं. तत्सम

यदि-अव्यय, जँ । सं. तत्सम

यन्त्र-सं., कल । सं. तत्सम

यन्त्रणा-सं., जकड़न, बन्धन कष्ट । सं. तत्सम

यम-सं., मृत्यु देवता । सं. तत्सम

यमदिरी-सं., शुक्ल रात्रि सँ एक दिन पहिने राति मे यमक उद्देश्य सँ देल दीप । मै.

यमराज-सं., मृत्यु देवता । सं. तत्सम

यमुना-सं., नदी विशेष । मै.

यमुनीरंग-विशे., यमुनाक जलक रंगवाला । मै.

यश-सं., नाम कीर्ति । सं. तत्सम

यशस्वी-विशे., सगरे विख्यात कीर्तिवाला । सं. तत्सम

या

याक-सं., हिमालयक पशु विशेष । चमरी गाय । मै.

याचक-विशे., मङनिहार । प्रार्थी । सं. तत्सम

याचना-सं., मङनी । सं. तद्भव

याज्ञिक-विशे., यज्ञ सम्बन्धी, यज्ञक उपयोगी । सं. तत्सम

याजन-सं., यज्ञ करबैक पुरोहिती । सं. तत्सम

यात्रा-सं., प्रस्थान, विदा । गमन । सं. तत्सम

यात्री-विशे., बेनिहार, बटोही । पथिक । सं. तत्सम

यातायात-सं., आवाजाही । सं. तत्सम

याद-सं., स्मरण । उ. तत्सम

यादव-विशे., यदुवंशी । सं., गोप जाति । सं. तत्सम/मै.

यान-सं., सवारी । सं. तत्सम

याम-सं., पहर । सं. तत्सम

यार-सं., मित्र । दोस । मै.

यावत्-अव्यय, जावधरि । सं. तत्सम

यु

युग-सं., कालक एक स्थूल मान । सं. तत्सम

युक्त-विशे., संगत । सं. तत्सम

युक्ति-सं., तर्क, जोगाड़ । सं. तत्सम

युद्ध-सं., लड़ाइ, मारि । सं. तत्सम

यू

यूप-सं., इनार पोखरिक याग मे गाड़ल पुरुषाकार लकड़ी । सं. तत्सम

यो

योग्य-विशे., शिक्षा आ व्यवहार मे निपुण उपयुक्त । सं. तत्सम

योग्यता-सं., बुद्धि ज्ञान आदि सामर्थ्य । सं. तत्सम

योग-सं., जोड़, मिलन, आत्मसाधना । सं. तत्सम

योगाभ्यास-सं., आत्मसाधनाक अभ्यास । सं. तत्सम

योगी-विशे., योग साधना कयनिहार । सं. तत्सम

योद्धा-विशे., मारि आ लड़ाइ कयनिहार । सं. तत्सम

योनि-सं., गर्भ बहराइक मार्ग । स्त्री चिह्न । सं. तत्सम

र

र-विशे., बिन चोआ (सुगन्धि) वाला गोलि । मै.

रए/रऔ-सम्बोधन अव्यय, नीच वा छोटक सम्बोधन । मै.

रक्त-वि. (सं.,) १. लाल रंगवाला । २. लाल रंग । ३. शोणित । सं. तत्सम

रक्त चानन-सं., लाल चाननक हेतु लाल काठ विशेष । मै.

रक्षा-सं., बचाओ, त्राण, पालन । सं. तत्सम

रक्षाबन्धन-सं., सलोनी पूर्णिमा दिन अपना सँ छोट कें तथा बहिन द्वारा भाइ सब कें रक्षाक हेतु कल्याण सूतक बन्हन । मै.

रक्षिका-सं., गणपति दुर्गा समेत षोड़श मातृकाक गोबर थोपि कय बनाओल चिह्न । सं. तत्सम

रकतकोई-सं., राति मे कमलसन फुलाइवाला फूल । मलकोका । मै.

रकती रंग-सं., आले रंग, अलता रंग । मै.

रकबा-सं., खेत (भूमि) क क्षेत्रफल । उ. तत्सम

रकम-सं., १. द्रव्यक (मुद्रा) राशि । २. कम, हालि चालि । उ. तत्सम/मै.

रकाब-सं., घोड़ा पर चढ़ला उत्तर पैर रखैक कड़ी । उ. तत्सम

रखना-सं., रखैक वासन । मै.

रखवरबा/रखवार-विशे., रक्षक । रक्षा करैवाला । मै.

रखवारि-सं., रक्षा करैक भार । मै.

रखवैया-विशे., रखैवाला, प्रतिपाल करैवाला । मै.

रखरखाओ-सं., रक्षा करैक आवश्यक स्थिति । मै.

रखलहा-विशे., निजी उपयोग ले सुरक्षित । धयल । मै.

रखाइन नै राखब -क्रि., अपशब्द सँ अत्यन्त अपमानित करब । प्रयोग—"रिनियाँ कोनो रखाइन नै रखलकैन ।" मै.

रखाएब-क्रि., रक्षित कराएब, सुरक्षित धराएब । मै.

रखाउ-विशे., रखबाक योग्य । मै.

रखाओँत-सं., मालजाल चरैक हेतु सुरक्षित क्षेत्र । मै.

रखाओर-विशे., संचित कय के धयल । मै.

रखान-सं., गुप्त रूपेँ सुरक्षा । मै.

रखुआ-विशे., बहुत दिन सँ राखल । मै.

रखेली-विशे., केवल भोगक हेतु भरण पोषण कयल जाइत अवैध सम्बन्धवाली स्त्री । मै.

रखौआ-विशे., धयल, धरहर । मै.

रग-सं., १. स्नायुशक्ति । २. कम्बल । मै.

रंग-सं., विभिन्न वर्ण । मै.

रगड़-सं., घर्षणक चिह्न । मै.

रगड़न-सं., घर्षण । मै.

रगड़ना-सं., रगड़ैक साधन । मै.

रगड़पन-सं., बारम्बार कोनो वस्तुक आग्रह वा जिद्द सँ लेबाक चेष्टा । मै.

रगड़ब-क्रि., घर्षण करब । मै.

रगड़बाएब-क्रि., अनका द्वारा रगड़ैक काज कराएब । मै.

रगड़ा-सं., १. घर्षण । २. (लाक्षणिक) झगड़ा । मै.

रगड़ाएब-क्रि., १. रगड़ल भ' जाएब । २. अनका सँ अपन रगड़ कराएब । मै.

रगड़ा करब-क्रि., (लाक्षणिक) बल सँ झगड़ा करब । मै.

रगड़ा लागब-क्रि., घिसाट लागब । मै.

रगड़ी-विशे., एकै बात के पकड़ि धेने रहैवाला । मै.

रगाड़-सं., घिसाठ (घर्षणक चिह्न) । मै.

रगड़ुआ-विशे., रगड़िकय बनाओल गेल । मै.

रंगति-सं., लक्षण, अनुमानित संभावित रूप । मै.

रंगमञ्च-सं., नाट्यशाला । सं. तत्सम

रंगारंग-विशे., अनेक प्रकारेँ रोचक । मै.

रङ-सं., पानि मे घोरल रंग । मै.

रङताल मचब-क्रि., विकट स्थिति होएब । मै.

रङब-क्रि., रंगल होएब, रंग सँ सराबोर करब । मै.

रङबाज-विशे., अधिक वासनावृत्तिवाला । मै.

रङबाजी-सं., ठकिकय खेलाइक चेष्टा । मै.

रङ बिरङ-विशे., अनेक प्रकारक तथा भिन्न रंग । मै.

रङरभस-सं., केलि क्रीड़ा । विलास । मै.

रङ रङ खेलाएब-क्रि., परस्पर रंग दैक खेल करब । मै.

रङरेज-विशे., कपड़ा आदि रङ' मे निपुण। मै.

रङसाज-विशे., चित्र आदि मे रंग भरैवाला । मै.

रङाएब-क्रि., रंग सँ चमकाएब । मै.

रङिया-विशे., हास परिहास आ विनोद पसिन्न करैवाला वा ओहि मे लिप्त रहैवाला । मै.

रङिया पतिया-सं., धानक अगता भेद । मै.

रङीन-विशे., रंगवाला, रंगल कपड़ा आदि । मै.

रङीला-विशे., ललित कला आ आमोद प्रमोद एवं महिला सब मे भूलल रहैवाला । मै.

रङुआ-विशे., रंग मे डुबाकय असल रंग के छोपल वाला । मै.

रङेरङ-विशे., खूब रंग सँ भरल भ' गेल । प्रयोग—"बजार मे हमरा सब रङेरङ क' देलक होरीक दिन ।" मै.

रच्छक-विशे., रक्षक । सं. तद्भव

रचना-सं., रास्ना, वनौषधि विशेष । मै.

रचना-सं., निर्माण, बनबैक क्रिया, सृष्टि । सं. तत्सम

रचनाकार-विशे., बनबैवाला, सृजनकर्ता । निर्माता । सं. तत्सम

रचनिहार-विशे., गढ़ि गढ़ि कय बनौनिहार । मै.

रचब-क्रि., गढ़ि गढ़ि कय बनाएब । मै.

रंचमात्र-विशे., थोड़बो परिमाणवाला, कनेको । मै.

रचाएब-क्रि., १. रचना कराएब । २. (लाक्षणिक) परिस्थिति जगाएब । मै.

रचुआ-विशे., गढ़ि गढ़ि कल्पना सँ बनैवाला । मै.

रछपाल-विशे., रक्षा करैवाला । मै.

रज-सं., १. धूरा, गर्दा । २. स्त्रीक मासिक धर्म । सं. तद्भव

रंज-सं., मानसिक क्रोध, अप्रकट तामस । मै.

रजक-विशे., धोबी । सं. तत्सम

रंजक-विशे., रङ्गवाला, प्रसन्न करैवाला । सं. तत्सम

रंजकगंज-विशे., ढेरक ढेर । अधिकता सँ भरल । मै.

रजगिद्ध-सं., गिद्धसन आकारवाला उज्जर पक्षी । मै.

रजाइ-सं., शीरक, तुराइ । हि. तत्सम/मै.

रजिस्टरी-सं., निबन्धन, राजपुरुष प्रमाणित आलेख । अं. तत्सम

रजोधर्म-सं., मासिक धर्म, ऋतु धर्म । सं. तत्सम

रँ झ' करब-क्रि., निष्कर्षक हेतु विवाद कयला उत्तर मत के समञ्जस करब । मै.

रट्टूमल-विशे., केवल रटिकय पढ़निहार । मै.

रटना करब-क्रि., निरुद्देश असमय मे घूमल फिरब । मै.

रटनी लागब-क्रि., एके अभिलाषा पूर्ण करैले बारम्बार बजैत रहब । मै.

रटब-क्रि., बारम्बार उच्चारण कय अभ्यास करब । मै.

रट लगाएब-क्रि., अपन इच्छाक वस्तु ले बारम्बार अभिलाषा प्रकट करब । मै.

रट लागब-क्रि., बारम्बार माङब । मै.

रटाएब-क्रि., अभ्यास कराएब । मै.

रटुआ-विशे., रटिकय अभ्यास कय । मै.

रँड़खेप खेपब-क्रि., राँड़ (विधवा) जकाँ कोनो रूपेँ जीवननिर्वाह करब, दुख काटब । मै.

रड़चालि-सं., असभ्यक व्यवहार । मै.

रँड़चालि-सं., विधवाक आचरण । मै.

रड़धूमस-सं., राड़ (असभ्य) जकाँ उद्दण्डता भरल खेल । मै.

रड़पनी-सं., राड़क गुणवाला स्वभाव । मै.

रड़पोस-विशे., राड़ केँ अधिक पोसैवाला । मै.

रड़हा-विशे., राड़क उपयोगी । मै.

रडार-सं., शून्यक चित्र लैवाला यन्त्र । अं. तत्सम

रड़ाह-विशे., राड़क चालि आ गुण एवं संग रहनिहार । मै.

रड़िनियाँ-विशे., असभ्य उद्दण्ड स्त्री । मै.

रँड़ुआ-विशे., विधुर (मृत पत्नीवाला) । मै.

रण्डा-विशे., निरंकुश विधवा । सं. तत्सम

रण्डी-विशे., वेश्या । मै.

रण-सं., लड़ाइ । सं. तत्सम

रत्तासाग-सं., लाल रंगवाला ठढ़िया साग । मै.

रत्ती-सं., बाट (तौलवाला) मानक प्राचीन कालक सब सँ छोट मान । मै.

रत्ती रत्ती उड़ब-क्रि., एक एक कण झरि जाएब । मै.

रत्न-सं., हीरा । सं. तत्सम

रतजगा-सं., रातुक जागरणा । मै.

रतन-सं., रत्न । सं. तद्भव

रतनार-विशे., लाल प्रतिबिम्बवाला । मै.

रतरत-विशे., अत्यन्त उज्ज्वल । मै.

रति-सं., १. सम्भोग । २. अनुराग । ३. शृङ्गार रसक स्थायी भाव । सं. तत्सम

रतिगर-विशे., अधिक रातिवाला समय । मै.

रतिचर-विशे., रातिये टा के भ्रमण करैवाला । मै.

रतिया-सं., स्नेहिल राति । मै.

रतुआ-सं., विशेष प्रकारक व्यञ्जन । मै.

रतुका-विशे., रातिवाला पदार्थ । विषय । मै.

रतौन्ही-सं., रातिकय नै सूझैक रोग । मै.

रथ-सं., घोड़ा जोतल चारि पहियावाला सवारीक गाड़ी । सं. तत्सम

रथयात्रा-सं., जगन्नाथपुरीक प्रसिद्ध पर्व । सं. तत्सम

रद्द-सं., औक, वमन । उल्टी । उ. तत्सम

रद्दा-सं., भीत वा पजेबाक देवाल मे माटि आ ईंटा बैसबैक लेप । मै.

रद्दी-विशे., उपयोगहीन, अनुपयोगी। काज मे नै अबैक योग्य। उ. तत्सम

रन्ना-सं., कमारक काज करैक काल काठ कें चिक्कन करैक अस्त्र। मै.

रन्ना करब-क्रि., चिक्कन बनबैले काठ पर रन्ना चलाएब। मै.

रन्हा-सं., भानस, भोजन पाक। मै.

रन्हा करब-क्रि., भानस करब। मै.

रन्हुआ-विशे., रान्हिकय पकाक्य बनाओल। प्रयोग-"रन्हुआ चाउरक चिकसक रोटी कोमल होइ छै। विशेष-खौलैत पानि मे चिकस देला सँ रन्हुआ कहबै छै।" मै.

रन करब-क्रि., बारम्बार तेजी सँ एम्हर ओम्हर दौड़ करब। मै.

रमरम करब-क्रि., १. अधिक सुखयला सँ अन्न आदि पदार्थक शब्द करब। २. (लाक्षणिक) अभ्यास आ विषयक ज्ञान सँ बुद्धिक तेजी प्रकट होएब। मै.

रनिवास-सं., अन्तःपुर, स्त्रीगणक हेतु राजालय मे सुरक्षित स्थान। मै.

रनेबने-अव्यय, भयंकर स्थान सब मे। मै.

रपट-सं., १. डोरीक रचनाक सक्कत पदार्थ। २. असमय मे खेलाइक दौड़। मै.

रपटब-क्रि., असमय मे खेलक कमे नेन्ना सभक दौड़ब। मै.

रफ-विशे., काट खोंटवाला लेख। अं. तत्सम

रफ्कड़-सं., वृक्ष विशेषक सक्कत लस्सा। मै.

रब्बी-सं., चैतधरि तैयार होइवाला फसिल। मै.

रब्बी रत्ती-सं., चैती अन्नक समूह। मै.

रब-सं., १. ध्वनि। २. सुखाइक क्रम। ३. शुद्धता। मै.

रबगर-विशे., १. सुखायल (अधिक)। २. चानी आदि धातुक शुद्धतायुक्त। मै.

रबरल-विशे., अधिक तेज गतिवाला (चालि मे)। मै.

रबब-क्रि., शब्द सँ स्पष्ट कहब। मै.

रबर मचाएब/रबरब-क्रि., निरर्थक एम्हर ओम्हर दौड़ब। मै.

रबा-सं., अधिक सुखायला सँ बनल दाना। सं. तत्सम

रबाइस-सं., विस्फोटक पदार्थ सँ बनल शून्य मे शब्दयुक्त आग्नेय चित्र। उ. तत्सम

रबाएब-क्रि., अत्यन्त सुखा जाएब। मै.

रबाकरन-सं., घोल सँ दाना बनबैक वैज्ञानिक विधि। मै.

रबाना-सं., प्रस्थान (विदा)। उ. तत्सम

रबियाली-सं., वसन्त समय सम्बन्धी उपजा। मै.

रभस-सं., आमोद प्रमोद। मै.

रभसल-सं., आमोद प्रमोद एवं केलि करैक अधिक चेष्टा। मै.

रभसब-क्रि., वासना भरल अधिक मनोरञ्जन करब। मै.

रमण-सं., केलि, खेल, आनन्द, रति। सं. तत्सम

रमता योगी-विशे., सतत घूमैत रहैवाला साधु। मै.

रमना-सं., बहारक समतल हरियरी भरल घूमै फिरै वाला स्थान। मैदान। मै.

रमब-क्रि., घुसा जाएब, तल्लीन भ' जाएब। मै.

रमराहटि-सं., एकै बात पर झगड़ाक कमे अधिक परस्पर विवाद। मै.

रमा-सं., लक्ष्मी। सं. तत्सम

रमाएब-क्रि., तल्लीन बनाएब। बहलाएब। मै.

रवि-सं., १. दिनक नाम। २. सूर्य। सं. तत्सम

रस्सा-सं., अत्यन्त मोट अनेक भत्तावाला पैघ डोरी। मै.

रस्साकसी-सं., रस्साक दुहु छोर पर पकड़ि दू दलक द्वारा खींचैक खेल। मै.

रस्सी-सं., तीन भत्तावाला मोटगर पैघ डोरी। मै.

रस-सं., १. भौतिक पदार्थक विभिन्न छः प्रकारक स्वाद—मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय आ तीत। २. अन्तःकरणक आनन्दमय साहित्यिक पद पदार्थक विशेष विशेष प्रकारवाला स्वादक अनुभूति। ३. चीनीक घोल। ४. आर्द्र करैवाला द्रव। ५. वासना। सं. तत्सम

रसगुल्ला-सं., रस मे डुबाओल छैनाक बनल गोल मधुर। मै.

रसदार-विशे., झोरवाला (व्यञ्जन) पदार्थ। मै.

रसनचौकी-सं., बाजन विशेष । मै.

रसपीपरि-सं., रासायनिक औषध । मै.

रसमें रसमें-अव्यय, धीरें धीरें । मै.

रसरी-सं., पातर तीन भत्तावाला डोरी । मै.

रसाएब-क्रि., १. (खेतक विषय मे) उर्वरता भरब, उपर्युक्त भौतिक शक्ति आएब । २. (लोकक विषय मे) वासनाक भावना जागब । ३. (कोनो वस्तुक विषय मे) अधिक काल धरि द्रव वस्तु मे फूलैत रहब । मै.

रसिक/रसिया-विशे., १. साहित्यिक विषयक तत्त्वज्ञ । २. लौकिक वार्ता मे अधिक शृङ्गार रसक भावना रखैवाला । मै.

रसी-विशे., रस भरल लोक । मै.

रसीला-विशे., शृङ्गार रसवाला गप करै मे रुचि रखैवाला । मै.

रसें रसें-अव्यय, नहुँ नहुँ, क्रमे क्रम । मै.

रसौं-सं., मद्धिम ताप । मै.

रसौंसी-विशे., निकट मे भेल वर्षा सँ खेतीक काज । मै.

रहटि-सं., अधिक काल अर्थ जाइक क्रम । मै.

रहठि-सं., इनार सँ पानि खींचैक विभिन्न प्रकारक कल आ बड़का डोल । मै.

रहड़िया-सं., छोट छोट गाछवाला राहरिसन दाना वाला खेत मे उपजैवाला अन्न । मै.

रहन सहन-सं., दैनिक जीवनचर्य्या । मै.

रहनि-सं., गृह व्यवहारक व्यवस्था । आचरण । मै.

रहब-क्रि., थम्हब, ठहरब, वास करब । सत्ता राखब । मै.

रहस-सं., रहस्य । सं. तद्भव

रही-सं., दालि मिलबैक काठक बनल साधन विशेष । मै.

रहीस-सं., विशेष धनवान रहैक कारणें, सामन्ती विचारधारावाला । मै.

रहुआबोआर-सं., अधिक पेंघ आ विशेष जीआ रेला सँ लाल मुँहवाला बोआरी माछ । मै.

रा

रा-सं., सर्वोच्च भारतीय सत्ताधारी गुप्तचर संस्था । शब्द संक्षेपित अंग्रेजी

राइ-सं., रैंची, गोटक आकारवाला मेंही तेलहन । मै.

राइछित्ती-विशे., जेना रैंची छिड़िएला सँ उठाओल नै जा सकैये तहिना छिड़िआएल वस्तु । मै.

राइँ बाँइ-विशे., अव्यवस्थित रूपें पसारला सँ गाड़ होइक स्थिति मे पड़ल । मै.

राइ भेला-सं., भेला (औषध विशेष) क संग रैंची आदि अनेक वस्तुक मिश्रण सँ बनाओल औषधक गेंठ । मै.

राइ मेराइ-सं., रैंचीक संग उपजे मे मिलाओल अनेक अन्न । प्रयोग—"आधा चिन्ना राइ मेराइ आधा चिन्ना औ केराइ ।" मै.

राइस राइसक-विशे., अनेक रूपक, अनेक प्रकार वाला, रंग रंगक । मै.

राउटी-सं., कपड़ाक चलता फिरता घर । मै.

राओट-सं., लोहाक छड़क ठेङागन टुकड़ा । अं. तद्भव

राक्षस-सं., सद्भावनाशून्य आदिम मनुष्य जाति । हिंसक मनुष्य । स्त्री० राक्षसी । सं. तत्सम

राकस-सं., श्मशान ज्योति । मै.

राका-सं., पूर्णिमाक राति । सं. तत्सम

राख-सं., छाउर, भस्म । उ. तत्सम

राखपति रखापति-लोकोक्ति, पहिने आनक प्रतिष्ठा राखू तखन अपन प्रतिष्ठा रहत । मै.

राखब-क्रि., धरब, पकड़ब, रक्षा करब । मै.

राखी-सं., रक्षा सूत्र, श्रावण पूर्णिमा दिन रक्षाक कामना सँ बहिन द्वारा भाइ कें आ मंगल कामना सँ पुरुष द्वारा सब कें बन्हैक सूत । मै.

राग-सं., १. इन्द्रिय आ पोषक चीन्हवाला अंग । २. भितराएल विरोध । मै.

राग-सं., १. आसक्ति, प्रेम । २. गीतक लय । सं. तत्सम

राग कुश्यारब-सं., विरोध सँ दोषक उद्घाटन आ आरोप । मै.

रागा रागी-सं., परस्पर गुप्त विरोधक द्वारें जागल मनक मलिनता । मै.

रागिणी-सं., १. प्रेम करैवाली । २. शास्त्रीय गीतक विभिन्न लयक भेद । सं. तत्सम

रागी-विशे., राग रखैवाला, प्रेम करैवाला । मै.

राङ-सं., शीघ्र पघिलैवाला निकृष्ट धातु । मै.

राठी-सं., अगता अगहनी धान विशेष। मै.

राज्य-सं., एक सत्ता (शासन) क विशाल विस्तृत भूखण्ड। प्रदेश। सं. तत्सम

राज-विशे., १. राजा। २. पजेबा जोड़ंवाला मिस्त्री। सं., राज्य। सं. तद्भव/मै.

राजकीय-विशे., शासक वा शासन सँ सम्बन्ध रखैवाला। सं. तत्सम

राजतन्त्र-सं., राजा अर्थात् एक व्यक्तिक शासनवाला शासन प्रणाली। सं. तत्सम

राजदरबार-सं., राज सभा। मै.

राजनीति-सं., शासन करैक विधि विधान। सं. तत्सम

राजपाट-सं., राज्य आ ओकर उपकरण। मै.

राजपुत-विशे., राजाक सन्तान। मै.

राजमहल-सं., राजा महाशय, रहैक स्थान। मै.

राजस-सं., राजभोगक विन्यास एवं व्यवहार। मै.

राजा-विशे., व्यक्ति आ सामन्तवादवाला शासक। सं. तत्सम

राजा दैब-सं., (लाक्षणिक) आकस्मिक आपति। मै.

राजासाही-विशे., लोटाक विशेष प्रभेद। मै.

राजी-विशे., सहमत, मनमीलू। उ. तत्सम

राजीनामा-सं., प्रमाणित सहमति पत्र। मै.

राँट-सं., पाकिकय पाथर सन (झाम) बनल ईंटा। माटिक बासन। मै.

राटन-सं., कुशियार आदि बहुत भारी वस्तु कें तौलैक हेतु यान्त्रिक तराजूक स्थान। मै.

राँड़-विशे., विधवा स्त्री। मै.

रैाड़-विशे., पिछड़ाएल, असभ्य आ असंस्कृत। मै.

राँड़ साँड़ सीढ़ी सन्यासी- (लोकोक्ति) पहिलुक चारूटा बुद्धि प्राण आ अर्थक संकट उपस्थित करै वाला होइत अछि तें ओकर उपदेश अछि-ऐ सब सँ बची तँ बसी काशी। मै.

राँड़ी-विशे., (गारि) राँड़ (विधवा) होइवाली। मै.

राड़ी-सं., सवकट बाँटवाला घर छारैक लड़ विशेष। मै.

राँड़ी बेटखौकी-विशे., (गारि) स्त्रीगणक गारागारी करैक सम्बोधन। सँ बेटा खाइवाली। मै.

राढ़ि-सं., आम विशेष। मै.

राढ़ीय-विशे., बंगाल, उड़ीसाक ब्राह्मण आदिक भेद। मै.

रात्रि-सं., राति। सं. तत्सम

राताराती-अव्यय, रातुक काल, भरि रातिक भीतर। मै.

राति-सं., सूर्यास्त सँ सूर्योदय पर्यन्तक काल। रात्रि। मै.

राति बिराति-अव्यय, रातुक समय मे। मै.

रातिम-सं., उपनयनक चरिया दिन होम'वाला रतुका विधि। चुमाओन। मै.

रातुक-विशे., रातिवाला। मै.

रादा-सं., देखू-"रद्दा"। मै.

राधा-सं., प्रसिद्ध पौराणिक देवी। मै.

रान्ह-सं., थोड़ आँचवाला पाक। मै.

रान्ह करब-क्रि., थोड़ ताप सँ सिद्ध करब। मै.

रान्हब-क्रि., भानस करब, चुल्हा पर सिद्ध करब। मै.

रानी-विशे., राजाक पत्नी। मै.

राब-सं., कुशियारक रसक मैलीवाला विकृत अंश। मै.

राबड़ी-सं., दूध मे मथिकय छाल्हीक बनाओल भोज्य पदार्थ। मै.

राबा-सं., गोल गोल कृत्रिम सूक्ष्म कण। मै.

राबी-सं., १. पंजाबक नदी विशेष। २. दाना-दार गुड़ तथा घी (जमला पर) आदि। मै.

राबीस-सं., ईंटाक भट्ठा मे देल कोइला सँ बनल राख। (छाउर)। मै.

राम-सं., १. दशरथक पुत्र। २. परमात्मा। मै.

राम झिङ्गी/राम तरोई-सं., हरियर व्यंजनवाला छोट गाछक फड़। मै.

रामदाना-सं., मैंही दानावाला लावावाला अन्न विशेष। मै.

रामरुचि-सं. बदामक बेसन सँ विभिन्न प्रकारें अनेक कटुकक सहयोगें उत्कृष्ट व्यञ्जन। मै.

रामेश्वर-सं., चारू धाम मे दक्षिणक एक धाम। मै.

राय-सं., विचार, सम्मति। उ. तत्सम

रारि-सं., बढ़ियाएल विरोध, लड़ाइ। मै.

राल-सं., चरखाक अंग विशेष। मै.

राशि-सं., १. ढेरी। २. मेष, वृष आदि १२ टा ग्रह चक्रक घर। ३. धन (रकम)। सं. तत्सम

रास्ता-सं., बाट। उ. तत्सम

रास-सं., गोकुलक प्रसिद्ध नाचक भेद। मै.

राशन-सं., घरक दैनिक खाद्य सम्बन्धी पदार्थ। अं. तत्सम

रासि-सं., १. दीपक शिखा। २. घोड़ा बरद कें गाड़ी मे खींचैवाला डोरी। मै.

राहठ-सं., राहरिक फरक डांट। मै.

राहरि-सं., दलिहनक मुख्य। मै.

रि

रिआज-सं., अभ्यास। उ. तद्भव

रिङ-सं., गोल फांक वाला वस्तु। गोल परिधि। अं. तत्सम

रिङ मास्टर-विशे., पशु कें अनुशासित करैवाला। (सर्कसक महत्त्वपूर्ण लोक)। अं. तत्सम

रिङरिङ-सं., खेल विशेष। मै.

रिझाएब-क्रि., अपना दिश विश्वासपूर्वक आसक्ति बनाएब। अनुकूल करब। मै.

रिझान-सं., अनुकूल करैक, आसक्ति बढ़बैक प्रयास। मै.

रिञ्च-सं., कल (यन्त्र) क पेंच (बोल्ट) कसैक साधन यन्त्र। अं. तत्सम

रिट्ठा/रिट्ठी-सं., विशेष वनस्पतिक गोल छोट दानावाला फड़, छोटी मे पेंच दाना रिट्ठा हैठा आ छोट आँठी हैठी। मै.

रित्ती छित्ती- विशे., सगरे अव्यवस्थित क' क' छीटल अन्न आदि वस्तु। मै.

रिताएब-क्रि., अपन परिवेशक लोक मे सब प्रकारें विश्वास सँ मिलि जाएब। एक भावना भ' जाएब। मै.

रिन्हब-क्रि., रान्हब। मै.

रिन्हुका-सं., सिद्ध अन्न (यथा: रान्हल भात) क प्रातः कालक जलपान। मै.

रिनियाँ-विशे., रीन (कर्जा) दैवाला। मै.

रिबरिब-विशे., जीह पर कड़ू स्वाद सँ हल्लुक वेदना दैवाला। मै.

रिबरिबहा-विशे., रिबरिब स्वादवाला। मै.

रिबरिबी-सं., कड़ू स्वाद सँ जीह पर उत्पन्न होइ-वाला कनेक पीड़ा। मै.

रिवाज-सं., रीति। मै.

रिमझिम-अव्यय, वर्षाक पातर बुन्नी मुदा लगातार अधिक काल। मै.

रिरियाएब-क्रि., अनेर विकृत ध्वनि सँ कनैत रहब। मै.

रिरियाह-विशे., अनेर विकृत स्वरें कनैत रहैवाला। मै.

रिरिबैनी-सं., रिरियाइक स्वभाव। मै.

रिसब-क्रि., कनेक कनेक कय बहब। चूअब। मै.

रिसाह/रिसियाह-विशे., साधरणों कनेकें बात पे बिगड़िकय रूसि रहैवाला। मै.

री

रीछ-सं., हिंसक पशु, भालु। मै.

रीठा-सं., कीड़ीक प्रभेद। दंशक। मै.

रीझब-क्रि., मोहित होएब, अनुकूल होएब। आसक्त बनब। सहमीलू भ' जाएब। मै.

रीत-सं., रीति, परिपाटी। सं. तद्भव

रीतब-क्रि., अपन परिवेशक वातावरण मे मिलि जाएब। मै.

रीन-सं., ऋण, कर्जा। सं. तद्भव

रीनरिनसँ-सं., अगणित, अपरिमित रीन। मै.

रीबन-सं., बीच मे फांकवाला गोल केश कें बान्हल रखैवाला साधन। फीता। अं. तत्सम

रीम-सं., कागजक पैंच मान। ५०० पन्ना। अं. तत्सम

रील-सं., नमहर लपेटल वस्तुक विशेष प्रमाण। (ताग, चलचित्रक पत्र (फिल्म) आदि वस्तु। अं. तत्सम

रीस-सं., इर्ष्या सँ उपजल क्रोध। मै.

रीसारिसी-सं., परस्पर ईर्ष्या क्रोधक भाव। मै.

रु

रुइआ-सं., तूर। हि. तत्सम

रुक्का-सं., रुपैया आदि लैक स्वलिखित प्रमाण। मै.

रुखल-विशे., कनेक सुखाएल माटि आदि। मै.

रुकता-विशे., रुकि रुकि चलैवाला। मै.

रुकब-क्रि., थम्हब, ठाढ़ भ' जाएब, ठहरब। विलमब। मै.

रुकारुकी-सं., कोनो यात्रा मे समय समय पर जा स्थान स्थान पर विलमैक क्रम। मै.

रुखसुख-सं., सुखाएल स्थान आ समयक द्वारें सरलता वा आसानी अथवा सुविधा। मै.

रुखहा-विशे., सुखाएलवाला । मै.

रुखाइ-सं., (बोली मे) रुखता बेलसिपन । स्वान मे सुष्कता । मै.

रुखाएब-क्रि., सुखाएल होएब । आर्द्रताहीन बनब । मै.

रुखान-सं., काठ गढ़ैक बरहीक मुख्य अस्त्र । मै.

रुखानी-सं., कम चाकरवाला छोट रुखान । मै.

रुचि-सं., १. सोझाँ । २. घरद्वारक सम्मुखक अवकाश । ३. (लाक्षणिक) जड़ चेतन शरीरक उन्नति क्रम । अवकाश । मै.

रुचिगर-विशे., १. आगूक प्रकाश आ निस्तार वाला । २. विकास आ उल्लासवाला । ३. विकास प्रकाश आ अवकाशवाला । मै.

रुच्छ-विशे., रुक्ष, बेलसि, रसहीन । सं. तद्भव

रुचब-क्रि., स्वादिष्ट लागब । मै.

रुचि-सं., भोजन एवं कोनो विषय प्रति हार्दिक आकर्षण सँ जागल तृष्णा । सं. तत्सम

रुचिकर-विशे., रुचि बढ़बैवाला । इच्छा जगबैवाला । मै.

रुचिगर-विशे., आकर्षण भरल, रुचि सँ भरल । मै.

रुदन-सं., कनैक क्रम । मै.

रुनझुन-सं., (लाक्षणिक) गहना बाजन आदिक मधुर शब्द । मै.

रुनू झुनू-विशे., मधुर शब्दैं भरल । मै.

रुपैगर-विशे., अधिक रुपैयावाला । मै.

रुपैया-सं., वस्तुक विनिमय लेल राजकीय मुद्रा । मै.

रुसी-सं., माथ आदिक मेंही चमड़ाक तह स्वयं उखड़िकय उज्जर भ' क' खसैक रोग । मै.

रुसना-विशे., अधिक रुसैवाला । मै.

रुसनिहारि-विशे., रुसि क' पड़ाइवाली स्त्री । मै.

रू

रूई-सं., तूर कपास । हि. तत्सम

रूक्ष-विशे., सरसतारहित । रुक्ष । मै.

रूढ़ि-विशे., परम्परा सँ चलैवाला । सं. तत्सम

रूप-सं., छवि, आकृति, वर्ण । सं. तत्सम

रूपा-सं., १. १ रुपैया । २. चानी प्रभेदक धातु । विशे., ३. रूपवाला । मै.

रूल-सं., संविधान, नियम । छोट छड़ी । अं. तत्सम

रूस-सं., एक महाशक्तिवाला राष्ट्र । देशज

रूसब-क्रि., चुप्पहि क्रोध प्रकट करैत सब वस्तु सँ मुह मोड़ि लेब । मै.

रूसाफूली-सं., एक दोसरा पर क्रोध प्रकट करैत बाजब टोकब बन्न केने रहैक व्यवहार । मै.

रूसाकसी-सं., परस्पर रूसल रहैक क्रम । मै.

रे

रे -सं., १. संगीत वाचक दोसर मूल स्वर । सा, रे, ग, म, प, ध, नी मे दोसर सूर । मै.

रे !-अव्यय, नीचता द्योतक सम्बोधन । सं. तत्सम

रेकड़-सं., रिकार्ड । चरित्राङ्कण तथा शब्दक आबन्धन । अं. तद्भव

रेकन-सं., हरदम निरर्थक यत्र कुत्र उद्धत जकाँ दौड़ब । मै.

रेकब-क्रि., १. गवहाक बाजब । २. निरर्थक गवहा जकाँ दौड़ैत रहब । मै.

रेका-विशे., अनेर उद्दण्ड जकाँ एत' तत' दौड़ैत रहैवाला । मै.

रेकातोंकी-सं., झगड़ाक रूपेँ परस्पर रे तों (नीच) शब्दक प्रयोगक क्रम । मै.

रेकार-सं., रे, रे, शब्दक अनुचित प्रयोग । मै.

रेखा-सं., चीच । आगत, एक मेंही चिह्न, लकीर । सं. तत्सम

रेघा-सं., रेखा, डाँरि । सं. तद्भव

रेङनी-सं., कटगैनी, जड़ी विशेष । मै.

रेङब-क्रि., एके टाङ सँ उछलि उछलि चलब । मै.

रेङ रेङ खेलाएब-क्रि., एके टाङ सँ कूदि कूदिकय खेलाएब । मै.

रेङाएब-क्रि., बल सँ चलाएब । मै.

रेचक-विशे., कोठी (पेट) क मल ढील कय बहार क' दैवाला भोज्य वा औषधीय पदार्थ । सं. तत्सम

रेचन-सं., कोष्ठबद्धता (कब्जियति) भेला पर मल उतारैक प्रक्रिया । सं. तत्सम

रेजा-विशे., राजमिस्त्रीक संग काज करैवाला सहायक जन । मै.

रेजी (चाकू)-विशे., छोट अत्यन्त तेज छूरी । मै.

रेठान-सं., एक स्थान पर अनधिकार आएब । मै.

रेठान मचाएब-क्रि., अनधिकार लोकक आएब जाएब । मै.

रेड़न-सं., १. बातक हुवान। २. अपने बात पर जोर। ३. एक मुहुरी हठात् लोकक झोंक वा गति। मै.

रेड़ब-क्रि., हठात् बहुत लोक एक मुहुरी गति होएब। कोनो वस्तु कें गर लगवैले झोंक सँ जोर द' क' ठेलब। मै.

रेड़ा-सं., एक मुहुरी हठात् लोक समूह (मेला) क झोंक, वेग। मै.

रेड़ियाएब-क्रि., भारी वस्तु कें एक दिसक झोंक देब। मै.

रेणु-सं., धूरा, गर्दा, कण। सं. तत्सम

रेत-सं., प्रवाहक तीव्र वेग। मै.

रेताएब-क्रि., १. प्रवाहक वेग पकड़ब। २. रेती सँ तेज करब। मै.

रेती-सं., अस्त्र तेज करैवाला कठोर लोहक साधन। मै.

रेतुआ-विशे., रेती सँ विशेष तेज कयल। मै.

रेफ-सं., अक्षरक उपर र अक्षरक मात्रा। मै.

रेबा-सं., माछ विशेष। मै.

रेबाड़-सं., १. बातें अधिक घुसब (हुथब)। २. पाछाँ सँ खेहारब। मै.

रेबाड़ब-क्रि., १. बातें धूसब अर्थात् दोष पर बालक मारि देब। २. पाछू सँ दौड़िकय खेहारब। मै.

रेरम बहेरम-सं., अपन अपन बात पर अड़ल रहि झगड़ा कमाक विवाद। मै.

रेरि मचाएब-क्रि., १. बारम्बार जिद् पूर्वक कोनो वस्तुक माङ करब। अपन जिद् पर अड़ब। मै.

रेरान-सं., एक दिशाह बिगड़ब। मै.

रेल-सं., स्वचालित एक रेखा पर दौड़ैवाला धूम-यान। अं. तत्सम

रेलपेल-सं., अत्यधिक भीड़क आवरजात। हि. तत्सम

रेस-सं., वेग भरल दौड़। अं. तत्सम

रेसनि-सं., फूटल धातुक वर्तनक छेद फूटल अंश कें बन्न करैक जोड़ैक प्रकार। मै.

रेसनिहार-विशे., फूटल वर्तनक छेद बन्न कय-निहार। मै.

रेसब-क्रि., फूटल वर्तन कें रासायनिक द्रव्य सँ बन्न करब। मै.

रेसम-सं., पाटक सूत। मै.

रेसमी-सं., पाटक सूत सँ बनल कपड़ा। मै.

रेस लागब-क्रि., गुप्तचर (खुफिया) लागब। मै.

रेसा-सं., १. केशसन सूक्ष्म वस्तुक अंगक तन्तु। विशे., वर्तन रेसैवाला। मै.

रेसाएब-क्रि., वर्तनक छेद बन्न कराएब। मै.

रेसुआ-विशे., फूटल वर्तन रेसिकय बनाओल काजक जोग। मै.

रेह-सं., रेखा। मै.

रेहल-सं., मोट पुस्तक रखैक काठक बन्हन। फ्रेम। उ. तत्सम

रेहल खेहल-विशे., पूर्ण परिचय सँ अनुभव कयल। मै.

रेहों रेहों-अव्यय, अत्यन्त मन्द गतियें। मै.

रै

रैअति-सं., अधीनक प्रजा, राजकीय भूमिक जोतैवाला। रैयत। उ. तद्भव

रैची-सं., गोटसन अत्यन्त मेंही कारी तेलहन। मै.

रैता-सं., देखू—"रतुआ"। मै.

रैनि-सं., राति। मै.

रो

रोआब-सं., नै रोकै योग्य कड़ा आदेश। उ. तत्सम

रोआबी-विशे., कठोर आज्ञा देब'वाला। उ. तत्सम

रोइआँ-सं., रोम, सम्पूर्ण शरीरक सूक्ष्म केश। मै.

रोइआँ डाहब-क्रि., (लाक्षणिक) फूसि आरोप सँ मन मे पीड़ा देब। मै.

रोइयपाड़-सं., रोइआँ उपड़ला सँ बनल पाओ। मै.

रोक-सं., निषेध। नियम सँ मनाही। मै.

रोकटोक-सं., निषेध, मना करैले टोकब। मै.

रोकड़-सं., स्थायी लेखा जोखाक पुस्तक। उ. तत्सम

रोकनिहार-विशे., निषेध कयनिहार। मै.

रोकब-क्रि., मना करब, निषेध करब। मै.

रोकवैया-विशे., रोकैक आज्ञावाला। मै.

रोकाओ-सं., रोकैक प्रक्रिया। मै.

रोकान-सं., रोकैक दृढ़ता। मै.

रोकावट-सं., रुकि जाइक बाधा, अवरोध। घेरन। मै.

रोकुआ-विशे., रोकाओलवाला। मै.

रोग-सं., शारीरक विकलता। सं. तत्सम

रोग व्याधि-सं., प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रूपे शारीरक विकलतावाला। मै.

रोगहा-विशे., हरदम रोगी रहैवाला। मै.

रोगाएब-क्रि., रोग सँ ग्रसित होएब। मै.

रोगाह-विशे., रोग ग्रस्त। मै.

रोगिवाह-विशे., रोगी जकाँ लगैवाला। मै.

रोगी-विशे., रोगयुक्त। सं. तत्सम

रोब-सं., आत्मीयताक प्रभाव। अनुरोध। सम्मान। मै.

रोचक-विशे., पसिन्न पड़ैवाला। सं. तत्सम

रोचनि-सं., प्रिय बनबैक प्रयास। मै.

रोब राखब-क्रि., आत्मीयता आ पैघत्वक द्वारेँ अविरुद्ध करैक विचार राखब। मै.

रोज-सं., दिन, प्रतिदिन। उ. तत्सम

रोजगार-सं., उद्यम, व्यौसा। हि. तत्सम

रोजहा-विशे., प्रतिदिन बोनि लैवाला जन, श्रमिक। मै.

रोजा-सं., मुसलमानक एक मास धरि दिनभरिक व्रत। अर्ध चान्द्रायण। उ. तत्सम

रोजी-सं., निश्चित जीविका। उ. तत्सम

रोजीरोटी-सं., जीविकाक संग पेट भरैक प्रबन्ध। (लाक्षणिक) एहन जीविका जाहि सँ सुविधा सँ जीवन निर्वाह। मै.

रोट-सं., बहुत मोट आ चाकर रोटी। मै.

रोटी-सं., सामान्य प्रकारक रोटी। फुलकी। मै.

रोटी बाटी-सं.,(लाक्षणिक) भात सँ अतिरिक्त किछु खाकय निर्वाहक स्थिति। मै.

रोढ़-विशे., उसबैवाला वस्तु अधिक ताप सँ विशेष कड़ा। मै.

रोड़ा-सं., ईंटा पाथरक छोट छोट टुकड़ी। मै.

रोड़ा अंटकाएब-क्रि., (लाक्षणिक) बीच मे अड़ङ्गा लगाएब। मै.

रोड़ाबाजी-सं., परस्पर रोड़ा चलाकय मारि। मै.

रोढ़ाह-विशे., कड़ा आ अप्रिय शब्दें बजैवाला। कटु बोलीवाला। मै.

रोड़ी-सं., अधिक छोट ईंटा पाथरक टुकड़ी। मै.

रोदना पसारब-क्रि., अतीतक दुखे टा बाजब। (लाक्षणिक) लोकक शोक दुख मे बढ़ि चढ़िकय शोक प्रकट करैक नाटक करब। लोक देखावक कानब। मै.

रोप-सं., रोपैक कम। मै.

रोपनि/रोपनी-सं., रोपैक निरन्तर चलैत क्रिया। मै.

रोपनियाँ-विशे., रोपैवाला जन। मै.

रोपब-क्रि., कोनो गाछ वृक्ष आ धान आदिक बीआ कें भूमि मे गाड़ब। मै.

रोपलाहा-विशे., रोपलवाला। मै.

रोपा-सं., रोपैक काज। मै.

रोपाइ-सं., रोपैक चालू क्रिया। मै.

रोपाएब-क्रि., रोपैक काज कराएब। मै.

रोपाओ-विशे., रोपैक योग्य। मै.

रोपाओन-सं., रोपैक बोनि। बंश। मै.

रोपान-सं., रोपैक विशेषता। मै.

रोपी-सं., रोपैक प्रक्रिया। मै.

रोपुआ-विशे., रोपिकय होमवाला, रोपिकय भेल फसिल। मै.

रोफ-सं., सूजल स्थानक स्वच्छ रौद बसात। प्रयोग—"जाड़ मास रोफ मे बैसने बड़ सुख।" मै.

रोब-सं., प्रभाव, अटल आज्ञा। उ. तत्सम

रोबकारी-सं., मुहामुही सत्यताक प्रतीति, प्रकाशन। मै.

रोब जमाएब-क्रि., फूसि प्रभाव जमाएब। लोक दुखाबक कठोर शब्दें आज्ञा करब। मै.

रोब झाड़ब-क्रि., बिगड़ि बिगड़िकय आज्ञाक अवहेलना सँ दुर्वाद कहब। मै.

रोम-सं., १. रोइयाँ। २. निश्चित स्थान सँ जीव जन्तु कें दूर करैक, वैलबैल, हाँकि लबैक काज। मै.

रोमब-क्रि., आन जीवजन्तु कें हुँटाएब, भगाएब, रोकब। मै.

रोमश-विशे., अधिक रोइआँवाला। सं. तत्सम

रोर-सं., गर्जन। हल्ला। मै.

रोर मचाएब-क्रि., निरन्तर कोनो एकै बात ल' क' हल्ला करब। मै.

रोरि-सं., अनेरो गरजिकय बजैक प्रकृति। मै.

रोरी-सं., सिन्दूरक एक प्रभेद । कुंकुम । मै.

रोल-सं., गोल आ नाम डाँरि खींचैक डन्टा । मै.

रोलर-सं., सड़क कें चौरस आ समतल करैवाला स्वचालित यन्त्र । अं. तत्सम

रोष-सं., तामस । सं. तत्सम

रोषाह-विशे., तुरन्त तामस करैवाला । मै.

रोस-सं., उत्साहक वेग । झोंक । मै.

रोह-सं., स्मृति, सुधि । मै.

रोहानी-सं., छवि आ रूप रंगक नीक प्रगति । मै.

रोहिन/रोहिणी-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तद्भव

रोहिनियाँ-विशे., रोहिणी नक्षत्रवाला तथा नक्षत्र मे होइवाला । मै.

रौ

रौ-अव्यय, अत्यन्त नीच सम्बोधन । मै.

रौटी-सं., देखू—"रावटी" । मै.

रौद-सं., सूर्यक उत्कट प्रकाश । मै.

रौदपक्कू-विशे., रौदक ताप सँ पकैवाला । मै.

रौदबसात-सं., ताप आ वायुक प्रभाव । मै.

रौदमुहाँ-विशे., रौद-सूर्यक तापक सम्मुख जाइवाला । मै.

रौदाएब-क्रि., रौद सँ व्याकुल होएब । मै.

रौदियाह-विशे., रौदीसन समयवाला । मै.

रौदी-सं., अकाल, अनावृष्टि । मै.

रौनब-क्रि., दौड़ि दौड़ि कय खुँडने नाश करब । मै.

ल

लइ-सं., चाउरक चिक्कस वा मैदा कें पानि मे घोरिकय रान्ह क' क' बनाओल लस्सा । मै.

लक्कड़ लगाएब-क्रि., वैधानिक बाधा उपस्थित करब । मै.

लक्ष्मण-सं., दशरथ पुत्र, रामायणक प्रसिद्ध पात्र । मै.

लक्ष्मी-सं., शोभा सम्पत्ति तथा नारायणक पत्नी शक्ति । मै.

लक्ष्य-विशे., दृष्टि बिन्दुक केन्द्र, निशान । उद्देश्य । सं. तत्सम

लक्ष-संख्या, लाख । सं. तत्सम

लक्षण-सं., चिह्न, परिचयक आधार । सं. तत्सम

लखतल-अव्यय, निरन्तर । मै.

लकखन-सं., अनुमानक साधन । मै.

लक-सं., १. भाग्य । प्रयोग–"बौआक लक नीक छनि जे एम० ए० मे सर्वप्रथम भेला ।" २. तृष्णा सँ भरल दृष्टि । प्रयोग–"हुनका तीन वर्ष सँ लक लागल छल जे पोतीक विवाह करावी ।" ३. सुतार । मै.

लकठी-सं., पातर आ छोट बाँस । मै.

लकड़पेंचा-सं., (लाक्षणिक) समस्या भरल बाधा । मै.

लकड़बग्घा-सं., लाकड़, भेड़िया बाघ । मै.

लकड़हारा-विशे., लकड़ी (जारनि) बेचैक व्यापार करैवाला । मै.

लकड़ी-सं., काठ । मै.

लकथक-विशे., झोरक अभाव सँ कादोसन बनि गेल । मै.

लकथक-अव्यय, कोनो कालक समीप आगाँ पाछाँ । मै.

लकवा-सं., पक्षाघात महारोग । मै.

लक लक-विशे., लकड़ीक कामिसन (पातर) । मै.

लंक लेब-क्रि., अत्यन्त वेग सँ पड़ाएब । मै.

लंका-सं., एक छोट द्वीपवाला देश । मै.

लकी-विशे., भाग्यशाली । मै.

लकुटी-सं., ठेड़ा, फराठी । मै.

लखन-सं., लक्ष्मण । मै.

लखपति-विशे., लाख मुद्राक स्वामी । मै.

लखब-क्रि., देखब, लक्षित करब । मै.

लखाएब-क्रि., देखल जाएब । देखाएब । मै.

लखेड़ा-विशे., व्यवस्थाहीन बातवाला । मै.

लखौरिया/लखौरी-सं., पातर आ चाकर प्राचीन कालक ईंटा । लाख शिवक पूजा । मै.

लग्गा-सं., खेत नपैवाला नापवाला पातर बाँसक टुकड़ा । मै.

लग्गी-सं., दूर उपर गाछ आदि सँ फल आदि तोड़ैक हेतु नोकसीवाला पातर बड़का बाँसक दण्ड । मै.

लग्न-सं., राशि (मेष, वृष, आदि) सभक दैनिक उदय । सं. तत्सम

लग-अव्यय, समीप । मै.

लंगट-विशे., निरहट्ट बदमास । मै.

लंगटा-विशे., हेहर निर्लज्ज दुष्टबुद्धि । मै.

लंगटाह-विशे., उद्दण्ड दुष्ट प्रकृतिवाला । मै.

लगता-सं., कोनो व्यवसायक मूल खर्च । मै.

लगता लागब-क्रि., उत्पादन मे खर्च लागब । मै.

लगति-सं., कोनो वस्तु आदि सँ अन्तधरिक व्यय । सम्पूर्ण खर्च । मै.

लगन-सं., विवाह आदि शुभ समय । मै.

लगनी-सं., जाँत चलबैक कालक स्त्रीगणक गीत विशेष । मै.

लगब-क्रि., गै महिस आदिक दूध देब । मै.

लगबार-विशे., १. स्त्रीक चोरनुक्का प्रेमी । २. लागि पड़ैवाला । मै.

लगबारि-सं., लागि पड़ैक जिद्द । मै.

लगबाही-सं., बराबरि बिना नागावाला काज । मै.

लगभग-अव्यय, करीब, प्रायः अनुमान सँ अनिश्चित संख्या काल आ दूरी मे । मै.

लगम्भी-विशे., लवङ्गक आकारवाला । मै.

लवम-सं., लवङ्ग । सं. तद्भव

लंगर-सं., नाओ अड़बैक मोट लोहक काँटाक गुच्छा । मै.

लंगर झंगर-सं., ओझरौटवाला पसरल सामग्री । मै.

लंगर लागब-क्रि., ओझरौट होएब । मै.

लगले-अव्यय, तुरन्त । मै.

लगले लागल-अव्यय, लगातार, तुरन्ते तुरन्त । मै.

लगहर-सं., शुभ लगुन मनबैक भरल बैल । मै.

लगहरि-विशे., दूध दैवाली गै महींस । मै.

लगहा-विशे., लगवाला । मै.

लगाइ-सं., कोनो वस्तु कैँ कोनो वस्तुक सम्बन्ध जोड़ैक काज, भाव, वेतन तथा सम्बन्ध । मै.

लगाएब-क्रि., १. सटाएब । २. सम्बन्ध जोड़ब । ३. रोपब । ४. शास्त्रीय पाठक पुनरावृत्ति करब । मै.

लगाओ-सं., अपेक्षा, सम्बन्ध, सम्पर्क । मै.

लगाकय-अव्यय, १. जोड़िकय, सम्पर्क कराकय, सम्बन्ध राखिकय । मै.

लगातार-अव्यय, लबखता, निरन्तर । मै.

लगान-सं., भूमिक अधिकारी द्वारा देय राजकीय कर । माल गुजारी । मै.

लगानी-सं., लोक कैँ देल ऋण । मै.

लगाम-सं., घोड़ा कैँ वश रखैवाला मुहक कड़ी लागल डोरी । मै.

लगारि-सं., वासन मे लागल द्रव पदार्थ । मै.

लगारि राखब-क्रि., सम्पर्क राखब । मै.

लगारी-विशे., कोनो काज मे धैर्य सँ भिड़ल रहनिहार । मै.

लगिचाएब-क्रि., १. लग होएब । २. (लाक्षणिक) मृत्युक अति निकट पहुँचब । मै.

लगीच-विशे., लग मे होइनिहार । मै.

लगुआ-विशे., आश्रय मे रहनिहार, पालनीय । मै.

लगुआ भगुआ-विशे., मालिकक आशा पर रहनिहार नोकर चाकर । मै.

लगुआ-विशे., अत्यन्त कोमल, सुकुमार । मै.

लगेज-सं., यात्राक कालक छोट पैघ सामग्रीक समूह । अं. तत्सम

लगेलगे-अव्यय, वीरताक प्रोत्साहन शब्द । मै.

लगेलग-विशे., परस्पर समीप । मै.

लगौरी-विशे., पाछू काल जोड़नवाला । मै.

लघी-सं., लघुशंका । मूत्रण । मूत । मै.

लघु-विशे., हल्लुक, शीघ्र । सं. तत्सम

लघुशंका-सं., मूतैक इच्छा वेग । सं. तत्सम

लंघन-सं., नौषध, उपवास । सं. तत्सम

लङ्ङूर-सं., बड़का नाङरिवाला वानर । मै.

लंङ-सं., लवङ्ग, पानक मसाला विशेष । मै.

लङोट/लङोटा-सं., केवल गुप्तांग कैँ कसिकय झँपैवाला वस्त्र । मै.

लङोटिया-विशे., (लाक्षणिक) धरिया अर्थात् चिप्ठी पहिरैक वयसक नेन्ना अवस्थावाला संगी । मै.

लच्छ-सं., लक्ष्य । उद्देश्य । सं. तद्भव

लच्छन-सं., तर्क करैक आधार, लक्षण। सं. तद्भव

लच्छा-सं., ताग सँ डोरी आदि वस्तुक पैघ भीरी । मै.

लच्छी-सं., लच्छाक अत्यन्त छोट रूप । मै.

लचक-सं., दबला आ दबेला सँ बंक होइक आ कम्पन होइक गुण । दोलन । मै.

लचकब-क्रि., दबि दबिकय कम्पनक संग डोलब । मै.

लचकलहा-विशे., डोलिकय दबलवाला । मै.

लचका-सं., बाँसक टोना आ बाती सँ बनल दबिकय डोलैवाला प्रवाहक पुल । मै.

लचकाएब-क्रि., बल सँ टेढ़ कय डोलाएब, कँपाएब । मै.

लचब-क्रि., दबि दबिकय डोलब । मै.

लचर-सं., शरीर आ अर्थसंकट सँ असमर्थता । मै.

लचरब-क्रि., शरीर आ अर्थसंकट सँ असमर्थ होएब । मै.

लचलच-विशे., दबि दबिकय कँपैवाला आ डोलैवाला । मै.

लचलचाएब-क्रि., दबि दबिकय उपर नीचाँ कँपैक क्रम होएब । मै.

लचलची-सं., उपर नीचाँ दबि दबिकय कँपैक क्रम । मै.

लज्जति-सं., शक्ति, आन्तरिक सार भाग । उ. तद्भव

लज्जा-सं., लाज । सं. तत्सम

लज्जालु-विशे., अधिक लाजवाला । मै.

लज्झा-सं., गै महिंसिक रजोधर्म । गर्भधारण करै सँ पूर्व योनि सँ गाढ़ रूपक बहराइवाला द्रव । मै.

लजकोटर-विशे., अनेर लोकक सोझाँ जाइ मे संकोच कयनिहार । स्त्री० लजकोटरि । मै.

लजबोजी-सं., लाजबन्ती जंगली बूटी । मै.

लजमुह-विशे., लोकक सोझाँ बर्ज मे लजाइवाला । स्त्री० लजमुहि । मै.

लजाएब-क्रि., उचित सँ बेशी लाज करब । मै.

लजीला-विशे., अधिक लाज सँ व्यवहार करैवाला । हरदम लजाएल रहैवाला । मै.

लजौआ-विशे., लोक मे लज्जा उत्पन्न करैवाला । मै.

लट्टू-सं., घिरनी जकाँ नचैवाला गोल खेलौना । मै.

लट्ठ-सं., मोट आ बड़का लाठी । मै.

लट्ठा-विशे., अत्यन्त कठोर कय सानल । मै.

लट्ठी-विशे., स्नेहातुर, प्रेम विह्वल । मै.

लट-सं., केशक गुच्छा । केश गुच्छक एक अंश । मै.

लटकन-सं., लटकैबैक साधन । मै.

लटकब-क्रि., उपरक आधार पर टिकिकय भूमि दिश (नीचाँ) निराधार रहि झूलब । मै.

लटकलहा-विशे., उपर मे स्थिर रहि नीचाँ दिश नमरि क' झूलैवाला । मै.

लटका-विशे., मौगी सब सँ हास विनोद मे लिप्त रहैवाला । एकर उनटा लटकी । मै.

लटकाएब-क्रि., उपरक आधार पर नीचाँ शून्य मे नमरल राखब । मै.

लटकेना-विशे., लटकाकय ल' जाइवाला अनेक वस्तु । अनेक विभिन्न वस्तुवाला । मै.

लटखुट-सं., अनेक प्रकारक छिड़ियाएल वस्तुक समूह । मै.

लटपट-विशे., एक दोसर मे ओझराएल । मै.

लटपट करब-क्रि., परस्पर गुत्थम गुत्थाकय खेल करब । मै.

लटपटाएब-क्रि., ओझरौट मे पड़िकय हीन स्थिति मे चल जाएब । (लाक्षणिक) मृत्युशय्या पर रहब । ओझराएब । मै.

लटपटाहू-विशे., १. ओझरौट भरल । २ अवडंग । मै.

लटपढ़िया-विशे., ओझराकय रखैवाला । अशुद्ध आचरणवाला । झमेलिया । मै.

लटपटी-सं., ओझरौट । झमेल । मै.

लटपटी लागब-क्रि., ओझराएल स्थिति सँ प्रगति मे बाधा पड़ब । मै.

लटब-क्रि., दुबराकय पातर होएब । मै.

लटबा-सं., चरखा आदिक सूत कें लपेटैवाला डण्टा लागल पैघ चक्र । मै.

लटबा पटबा होएब-क्रि.,१. दू नेना मिलिकय खेलाएब । २. दुलरपनी सँ अधिक अगराएब । ३. लाभ सँ खुशामदक खेल अधिक नम्र भ' जाएब । मै.

लटबौरा-विशे., दुलाक, अधिक जिद सँ अनर्गल क' दैसैवाला । मै.

लटरपटर-विशे., अस्पष्ट बात । मै.

लटलट करब-क्रि., कोनो काज मे बिन कहने आगू आगू करब । मै.

लटलहा-विशे., दुर्बलता सँ खिन्नवाला । मै.

लट लागब-क्रि., आगू पाछूक विषय कें परस्पर मेल लाएब । मै.

लटाई-सं., गुड्डीक ताग लपेटैवाला डन्टा लागल घिरनी । मै.

लटाएब-क्रि., १. घुमा घुमाकय घुन देब। २. लटों मे घुमा घुमाकय मुड़ीक ताग समेटब। मै.

लटापटी-सं., खेलक कारणें वा झगड़ाक द्वारें परस्परक गुत्थम गुत्था। मै.

लटारहम-सं., प्रणय, आवेश (दुलार) आ बड़प्पनक द्वारें उत्पन्न आग्रह। मै.

लटिती बुढ़िती-अव्यय, दयनीयो स्थिति मे। मै.

लटुआ-सं., देखू—"लटाई"। मै.

लटुआएब-क्रि., भूख अथवा रोगक आधिक्य सँ अथवा मं' क' उत्साहहीन होएब। मै.

लठमर-विशे., कड़ा क' क' सानल। मै.

लठमरहा-विशे., कड़ा क' क' सानलवाला। मै.

लठियर-विशे., सतत हाथ मे लाठी रखैत मारि करैक दावी करैवाला। मै.

लठियाएब-क्रि., लाठी सँ खूब मारब। मै.

लठियाहा-विशे., सदिखन लाठी चलबैले धूत रहैवाला। मै.

लठैत-विशे., लाठी चलबै मे नामी। मै.

लड्डू-सं., मधुर विशेष। मै.

लड़क्का-विशे., लड़ैक प्रकृतिवाला। मै.

लड़क भुरभुरी-सं., थोड़ वयसक लोकक अदूरदर्शी विचार। मै.

लड़खगड़-सं., लातें मुक्कें बातें मारि। मै.

लड़ना-विशे., अधिक झगड़ा करैवाला। मै.

लड़ब-क्रि., युद्ध करब, झगड़ा करब। मै.

लड़बैया-विशे., दू व्यक्तिक बीच झगड़ा लड़ाइ करौनिहार। मै.

लड़ाइ-सं., युद्ध, झगड़ा, परस्पर मारि। मै.

लड़ाएब-क्रि., दू मे झगड़ा कराएब। मै.

लड़ाकू-विशे., युद्ध मे वीर। मै.

लड़ान-सं., लड़ैक चलैवाला क्रम। मै.

लड़िकिनी-विशे., (ग्राम्य) विवाहक योग्य कन्या। मै.

लड़िकौरी-विशे., नव छोट बच्चावाली। पिलकार। मै.

लड़ुआ-सं., लड्डू जकाँ बनाओल भुजल अन्नक लड्डू। (गुड़ मे पागल)। मै.

लड़ुब्बा-विशे., लड्डूसन गोल दैप आम। छोट लड़ुब्बी। मै.

लँड़ू-सं., (ग्राम्य) लड्डू। मै.

लण्ठ-विशे., अविवेकी, उद्दण्ड, अशिष्ट। मै.

लण्ड-सं., युवा पुरुषक लिङ्ग। मै.

लत्ता-सं., पुरान कपड़ाक खण्ड। मै.

लत्ती-सं., पसरैत लता। मै.

लत-विशे., १. भारी होइक द्वारें दोसर पलड़ाक अपेक्षया झुकल पहिल पलड़ा। २. अवनत, विनम्र। मै.

लतखुर्दनि-सं., बारम्बार लात सँ अधिक खूनब। मै.

लतखोर-विशे., लातक मारि खाइक अभ्यासवाला। मै.

लतखोरा-विशे., लात पोछैक साधन। मै.

लतपोछना-सं., पैर पोछैक वस्त्र। मै.

लतबाहि-सं., अधिक लात चलबैक काज। मै.

लतमर्दनि-सं., लात सँ मर्दैक क्रम। मै.

लतमारा-सं., करीनक माथी मे बड़ल लात मारि कय दुबबैवाला अङ्ग। मै.

लतर-सं., लत्ती। मै.

लतरब-क्रि., लताक चारू दिश पसरब। मै.

लत होएब-क्रि., १. नीचाँ झुकब। २. (लाक्षणिक) विनयी बनब। मै.

लता-सं., लत्ती। सं. तत्सम

लताम-सं., फल विशेष। अमरूद। सदिआम। मै.

लति-सं., स्वभावगत अभ्यास, बानि। व्यसन। मै.

लतियाएब-क्रि., लात सँ मारब। मै.

लतियाहा-विशे., लगले लातें सँ मारैक प्रकृतिवाला। मै.

लतें पतें-अव्यय, लगले अलक्षित रूपें। मै.

लथपथ-विशे., गाढ़ द्रव पदार्थ से लेपल। मै.

लथराह-विशे., लथार (पछिला पैर) पाछू दिश फेंकि आघात करैवाला माल। मै.

लथार-सं., मालजालक पछिला पैर सँ पाछू दिश आघात। मै.

लथारब-क्रि., १. लथार फेंकि मारब २. (लाक्षणिक) चतुरता सँ अचानक बौद्धिक चोट करब। मै.

लदगर-विशे., अधिक भार (बोझा) भरल । मै.

लदना-विशे., १. चढ़ल वा चढ़ाओल भारवाला । २. लदैक भर्ती करैक साधन । ३. लदैवाला । मै.

लदनियाँ/लदनी-विशे., लाद (बोझा) उगहैवाला पशु । मै.

लदफद-विशे., देह परक एगड़ बेगड़ भेल फलकल वस्त्र । मै.

लदफदाएब-क्रि., वस्त्रक बेसम्हार भ' क' ससरब । मै.

लदबद-विशे., पूर्ण समयक गर्भवाली । मै.

लदबदाएब-क्रि., पूर्ण गर्भक निकट मे प्रसव होइक संभावना होएब । मै.

लदबैया-विशे., वाहन पर बोझाक ढोलाइ करबैवाला । मै.

लदरफदर-विशे., ससरिकय चाक दिस फलकल । मै.

लदलद-विशे., बहराइक हेतु वेगवाला गर्भ वा मल । मै.

लदलदाएब-क्रि., भीतर सँ बहराइले अधिक वेग होएब । मै.

लदलदी-सं.,मल निष्कासनक बारम्बार अधिक वेग। मै.

लदहा-सं., हर लधैक (ठाढ़ करैक) सामग्री । डोरी । मै.

लदाइ-सं., उगहैक लेल वस्तुक बोझाइ । मै.

लदाएब-क्रि., वाहन पर बोझा रखाएब । मै.

लदालद-विशे., चढ़ाओल भार (बोझा) सँ अधिक भरल । मै.

लदुआ-विशे., सिचित बोझा उगहैवाला वाहन । मै.

लदैना-सं., करीनक छीप (बड़का बाँस) क पछिला छोर (जड़ि) पर दैवाला भार । मै.

लदैया-सं., बोझाइ करैक कम । मै.

लधहा-सं., करीन लधैक (ठाढ़ करैक) अनेक सामग्री । मै.

लन्द फन्द-सं., निरर्थक समस्या (झंझट) आ ओझरौटवाला अनेक विषय । मै.

लप्पर-सं., गाल परक थापड़ । मै.

लप्पा-विशे., हल्लुक तुरन्त बिलाइवाला आ थोड़ उपजैवाला अन्न । मै.

लप-सं., पसारल एक हाथ भरिक परिमाण । मै.

लपकन-सं., शीघ्र चालि । गतिक वेग । प्रयोग–"एकै लपकन मे तँ अहाँ पहुँचि जाएब ।" मै.

लपकब-क्रि., अलक्षित रूपेँ वेग सँ ल' लेब । पकड़ि लेब, धरब । मै.

लपका-विशे., तेजी सँ झपटिबैक प्रकृतिवाला । मै.

लपकाएब-क्रि., अलक्षित रूपेँ तेजी सँ उपरैं उपर पकड़ाएब । मै.

लपकान-सं., तेजी सँ गमन । वेग सँ पकड़ा देबाक कम । मै.

लपटचोंची-विशे., (अनादर मे) मूर्खता सँ सटले रहैवाला । मै.

लपटन-सं., पहलमानीक अभ्यास । प्रयोग–"धोपना बिद्या लपटन्त जोर ।" मै.

लपटब-क्रि., १. स्नेह सँ दोसरक देह मे सटिकय लागि जाएब । २. पहलमानीक अभ्यास करब । ३. झगड़ा एवं आश्वयक कारणेँ देह सँ देह बान्हि लेब । मै.

लपटा लपटी-सं., परस्पर पकड़ि पछारैक प्रयास । मै.

ल' पड़ौआ-विशे., वेदियेँ पर सँ बियाहिकय कनियाँ ल' पड़ाइक नियमवाला विवाह । मै.

लप द'-अव्यय, अचानक तेजी सँ । मै.

लपलप-अव्यय, हाथ आ मुहक व्यापार मे शीघ्र । मै.

लपलप करब-क्रि., तेजी सँ बहार भीतर होइत रहब । उत्तेजना सँ पकड़ैक क्रम होएब । मै.

लपलपाएब-क्रि., ओर ओर सँ उपर मुहेँ उठैत रहब । मै.

लपसी-सं., अत्यन्त गील वस्तु (भात आदि) । मै.

लपाइक-विशे., अवसर पबितैं ल' उड़ैवाला व्यक्ति । मै.

लपाक द'-अव्यय, अचक्के अलक्षित रूपेँ । मै.

लपालप-अव्यय, अत्यन्त शीघ्रता सँ । मै.

लपोड़ी-सं., मिथ्या बढ़ाइक अधिकता । मै.

लफड़्ङा-विशे., निर्लज्जता सँ फुसि बजनिहार । मै.

लफन्दर-विशे., वचन आ क्रिया मे भेल नै रहनिहार । मै.

लफरा-विशे., फूसिये टा बजनिहार । मै.

लफाँथि-विशे., अवसर पर बहुत बजनिहार आ किछु नहि करनिहार । मै.

लफुआ-विशे., फूसि कहिकय लोक के भटकौनिहार। मै.

लबबर-विशे., विश्वास नै करै जोकर फूसि बात बजनिहार । मै.

लबगर-विशे., अधिक उपजवाला निचरस खेत । मै.

लबङ्ग-सं., लगम, लङ । सं. तत्सम

लबङ्गलता-सं., लवङ्गगन फूलवाली लता । मै.

लबज-सं., शब्द, लब्ज । उ. तद्भव

लबडब-क्रि., पानि मे डूबैक स्थिति मे रहनिहार। मै.

लबनी-सं., पासी सभक ताड़ी रखैक छोट माटिक बासन । मै.

लबब-क्रि., नीचाँ झुकब । मै.

लबलाहा-विशे., नीचाँ झुकलवाला । मै.

लबर लबर-अव्यय, बिन सोचनै विचारनै झट द' नुकबैयोवाला बातक उच्चारण कय । मै.

लबरसटका-विशे. केवल हूँ मे हूँ मिलाकय वचनक अनुसार करै मे ठकि देनिहार, सटकैवाला । मै.

लबरा-विशे., केवल हूँ मे हूँ मिलाकय किछु नै कयनिहार । फूसि अपन बड़ाइ कयनिहार । मै.

लबलब करब-क्रि., बिन सोचनै आगाँ आगाँ अटदय बाजि उठब । मै.

लबलबाएब-क्रि., बहार कय कें कँपाएब । प्रयोग– "की हरदम जीह लबलबबैं छी ?" मै.

लबलबी-सं., कण्ठक द्वार पर बढ़ल माँसक नमरल दोलक छड़ अङ्ग । मै.

लबाएब-क्रि., झुकाएब, टेढ़ करब । मै.

लबाठी-सं., भूजल धानक लावा मे कनेक फूटल धानक समूह । मै.

लबान-सं., १. झुकैक क्रम । २. (ग्राम्य उच्चारण) नवाब । मै.

लबेजान-विशे., मरणासन्न । मै.

लभगर-विशे., लाभ करैक योग्य । मै.

लम्ब-विशे., नीचाँ सँ उपरवाली रेखा । सं. तत्सम

लम्बसम्ब-विशे., सन्तोषजनक । नै पुष्ट नै साधारण । मै.

लम्बा-विशे., अधिक नाम शरीरवाला । मै.

लमका-विशे., लम्बावाला । मै.

लमगर-विशे., नम्मासन लगैवाला । मै.

लय-सं., १. संगीतक स्वर (सुर) गति, भास । २. अन्तर्भाव । ३. कल्पान्त (प्रलय) । सं. तत्सम

लयगर-विशे., नीक भासवाला । मै.

लयलय करब-क्रि., स्नेह सँ अधिक उत्कण्ठित होएब । मै.

लरकब-क्रि., नीचाँ लमरिकय झूलब । मै.

लरकलहा-विशे., नीचाँ नमरिकय लटकलहा । मै.

लरकाएब-क्रि., नीचाँ नमराकय लटकाएब । मै.

लरकाह-विशे., नीचाँ नमरिकय लटकैवाला । मै.

लरखराएब-क्रि., अडलाह स्थिति मे पड़ि जाएब । मै.

लरगुज-विशे., कोमलता एवं भीतरी कड़ापन नहि रहैक द्वारेँ अत्यन्त ढील । मै.

लरजब-क्रि., अवस्था पुने शिथिल भ' जाएब । मै.

लरताङर-विशे., दुर्बलता सँ अत्यन्त असमर्थ । मै.

लरब-क्रि., बच्चाक प्रथम प्रथम डेग उठाकय चलब । मै.

लरबर-विशे., जड़ि सँ अत्यन्त हिलैवाला । मै.

लरबराएब-क्रि., जड़ि मूल सँ हिलैत रहब । मै.

लरम-विशे., (ग्राम्य) नरम । मै.

ल' री-सं., तागक लच्छी (ग्राम्य) नरी । मै.

लरेलरे-अव्यय, शिशुक पहिल डेग हलैक काल प्रोत्साहनक शब्द । प्रयोग-"चल रे बौआ लरेलरे ।" मै.

लरौना-विशे., छोट बच्चा कें चलब सिखबैवाला तीन पहियावाला गाड़ी । मै.

ललल-विशे., अभावक द्वारेँ अभिलषित वस्तुक लाभ नहि भेने विकल । मै.

ललक-सं., प्राप्त करैक अत्यन्त उत्कण्ठा । मै.

ललकन-सं., पोछक द्वारेँ जोर जोर सँ गर्जन । मै.

ललकब-क्रि., तामसेँ जोर जोर सँ गरजि कय खिसियाएब । मै.

ललका-विशे., लाल रंगवाला । मै.

ललकार-सं., अत्यन्त तामस सँ जोर सँ डपटाल । मै.

ललकारब-क्रि., अत्यन्त क्रोध सँ उच्च स्वरेँ डपटब। मै.

ललकारा देब-क्रि., प्रोत्साहन करब, जोश भरब। मै.

ललकालल्की-सं., क्रोध सँ एक दोसरा पर गरजि गरजिकय उत्तर प्रत्युत्तर। मै.

ललबौआ-विशे., मैय्यँ सँ अत्यन्त दुलारू। मै.

ललगर-विशे., लाल रंग सँ भरल। मै.

ललचब-क्रि., कोनो वस्तु पर लोभ करब। मै.

ललचाएब-क्रि., लोभ बढ़ाएब। मै.

ललछब-क्रि., भिन्न भिन्न वस्तुक इच्छा प्रकट करब। मै.

ललना-सं., मौगी। मै.

ललाइ-सं., लाली, लाल छवि, कान्ति। मै.

ललाएब-क्रि., १. कोनो वस्तुक हेतु विकल होएब। २. लाल रंग होएब। मै.

ललाओन-सं., थोड़ लालसन रंग। मै.

ललाट-सं., कपाड़। सं. तत्सम

ललाम-विशे., सुन्दरता मे वा गुण मे सर्वश्रेष्ठ। सं. तत्सम

ललाहू-विशे., लालसन लगैवाला। मै.

ललिआएब-क्रि., लालसन होएब। मै.

ललिछौन-विशे., लालसन लगैवाला। मै.

ललित-विशे., सुन्दर। सं. तत्सम

ललितगर-विशे., अधिक सुन्दर। रोचक। मै.

लली-विशे., अति दुलारू स्त्री मैन्ना। मै.

लल्ठम फल्ठम-सं., अधिक आत्मीयता (मैत्री) क संग लागि। मै.

लसगम-विशे., (खेतक विषय मे) अधिक गील रहैक द्वारेँ जोतै मे अयोग्य। मै.

लस्सा-सं., सटैवाला, लागि पकड़ैवाला रस। मै.

लस्सी-सं., दही मथिकय बनाओल सरबत। मै.

लसकन-सं., अड़ि जयबाक हेतु बाधा। रोक। मै.

लसकब-क्रि., ओझरोट सँ अटकि जाएब। रुकि जाएब। मै.

लसकलहा-विशे., विशेष कारणेँ अड़िकय अँटकि जाइवाला। रुकलाहा। मै.

लसकाएब-क्रि., अड़ड़्डा लगाकय अटकाएब। रोकब। मै.

लसका लागब-क्रि., अँटकि जाइक, रुकैक स्थिति भ' जाएब। मै.

लसकि जाएब-क्रि., अड़िकय अँटकि जाएब। रुकि जाएब। मै.

लसकी-सं., अँटकि जाइक कारण। रुकैक स्थिति। मै.

लसकौआ-विशे., लसका रखैवाला। रोकनिहार। मै.

लसफस-विशे., लस्सासन हाथ मे बुझि पड़ैवाला। लस्सासन गाढ़ रसवाला। मै.

लसफसाह-विशे., लस्सा जकाँ गाढ़ द्रववाला। मै.

लसरघंटी-सं., कोनो काज मे विलम्ब होइक कारण। मै.

लसरफसर-विशे., देखू–"लसफस"। मै.

लसराहटि-सं., झट होइवाला काज मे व्यर्थ विलम्ब। मै.

लसरि-सं., सरलतो सँ होइवाला काजक विलम्ब सँ आनो काजक बाधा। मै.

लसलस-विशे., लस्सा जकाँ कनेक सटैवाला। मै.

लसलसाह-विशे., लस्सा जकाँ कनेक सटैक गुण वाला। मै.

लसलसाएब-क्रि., लस्सा जकाँ बनि जाएब। मै.

लसाइङ लागब-क्रि., कोनो कारणेँ बनल काज के दूर चल जाएब। समय लागब। मै.

लसि-सं., सम्पर्क, मेल, संश्लेष, परस्पर मिलि जाइक गुण। लागि। मै.

लसिगर-विशे., सटून रहैक गुणवाला। लागि रखैवाला। मै.

लसियाएब-क्रि., लस्सा जकाँ बनि जाएब। मै.

लसुन-सं., खाद्यक कन्दवाला मसाला। मै.

लसुनियाँ-विशे., १. लसुन सँ बनल। २. लसुनसन होइवाला। मै.

लसेढ लागब-क्रि., अधिक सम्पर्क सँ दोसरक रोग आ गुण आदि वस्तुक प्रभाव पड़ब। संक्रमण। मै.

लहक-सं., हठात् उठल धधरा। मै.

लहकन-सं., हठात् धधरा फेँकैक गुण। मै.

लहकब-क्रि., आगि पजरि कय धधरा फेँकब। मै.

लहका-सं., बिन तरेरावाला उठाकय हिलबैत खेलाइ वाला बन्सी। मै.

लहकी-सं., १. लाभक अवसर। २. आगिक धधराक वेग। ३. अकस्मात् उठल दीपक तेज राशि। मै.

लहका-सं., नूआक तर मे स्त्रीगणक पहिरैवाला टुकड़ा। मै.

लहछी लागब-क्रि., कोनो काज मे अचानक बेर बेर बाधा पड़ि जाएब। मै.

लहछू करब-क्रि., पुनर्विवाह (सम्बन्ध) करें काल वर वधूक लहक लहू पान मे द' वर वधूक परस्पर खोआएब। मै.

लहजगर-विशे., १. लाभ करै जोग। २. सुन्दर। ३. लाभप्रद। मै.

लहटन-सं., छोट मोट सरीसृप विशेष। मै.

लहटा-सं., चिड़िया फँसबैक गक्कत लस्सावाला कमचीक फन्दा। मै.

लहठा-सं., चिड़ै विशेष। मै.

लहठी-सं., लाहक बनाओल हाथक चूड़ी। मै.

लहना-सं.,लोक कें ऋण रूपें देल लगानी। लहाना। उ. तद्भव

लहब-क्रि., १. अवसरक सदुपयोग होएब। २. झुकब। मै.

लहरब-क्रि., क्षीण आगिक पजरिकय तेज होएब। गरम पीड़ाक वेग होएब। मै.

लहराएब-क्रि., आगि कें उत्तेजित करब। मै.

लहरा-सं., इनारक चारू दिश ऊँच क' बान्हल गोल पक्काक चबूतरा। मै.

लहरि-सं., १. दाह उठैत पीड़ाक वेग। २. तरंग। मै.

लहरि फूँकब-क्रि., (लाक्षणिक) दबाओल क्रोधक सम्पूर्ण देह मे गरम गति होएब। मै.

लहरी-सं., १. उपार्जन तथा लाभ करैक समय। २. तरंग। मै.

लहरीनोचा-सं., फसिल काटिकय बोनिक संचय करैक अवसर। मै.

लहलह-विशे., कम्पन आ गति भरल। तेज संचारशील। मै.

लहलह करब-क्रि., उत्तेजना सँ तेज संचारशील होएब। मै.

लहलहाएब-क्रि., खेती आदि तथा गाछ वृक्षक बाढ़िक संग सुन्दर रूप होएब। मै.

लहसन-सं., शरीर मे कत्तौ गाम आ चाकर जन्मजात कारी चिह्न। मै.

लहाएब-क्रि., बीच मे नीचाँ धँसाएब। मै.

लहाठब-क्रि., लाह बैसाकय बश करब आ जोड़ब। मै.

लहान-विशे., एक दिश नीचाँ झुकल। मै.

लहालोट देब-क्रि., कष्ट आ पीड़ा सँ अक्षम होएब। मै.

लहास-सं., १. मृतक शरीर, शव, लाश। २. अधिक उठल धधरा आ दीपक राशि। उ. तद्भव/मै.

लहास उठब-क्रि., धधरा फेंकब। मै.

लहलही-सं., तेजी तथा प्रसन्नता आ चलती। मै.

लहू-सं., शोणित। मै.

लहू लुहान-विशे., शोणित सँ नहाएल सन। मै.

लहेरि-विशे., लाहक व्यवसाय करैवाला। मै.

लहेरिया बान्हू-विशे., स्थान स्थान पर बान्हिकय अनेक रंग सँ हिलकोर जकाँ रंगल साड़ी वा कपड़ा। लहरि जकाँ रंगल। मै.

ला

लाइ-सं., चूरा तथा मुरहीक गुड़ मे बनाओल लड्डू। मै.

लाइलपटाइ-सं., पुरखी फेनीवाला गप्प। मै.

लाएब-क्रि., आनब। मै.

लाओब-क्रि., परोक्षतीक निर्देश मे आनब। मै.

लाकर-सं., भेड़िया, लकड़बग्घा। मै.

लाख-संख्या, एक सै हजारवाला अंक। मै.

लाखनि-सं., अनेक लाखक संख्या। (लाक्षणिक) अनगनित। मै.

लाखपति-विशे., लाख मुद्रावाला धनक स्वामी। मै.

लाखराज-विशे., लगानरहित भूमि, लाखराज। उ. तद्भव

लागति-सं., उत्पादन मे लगैवाला खर्च। मै.

लागन-सं., जोतैक काल हाथ सँ पकड़ैवाला हरक अंग। मै.

लागब-क्रि., १. संयुक्त होएब। २. व्यय होएब। ३. सम्बन्ध होएब। नियुक्त रहब। मै.

लागल-विशे., सम्बद्ध भेल । मै.

लागल लागल-अव्यय, धीरें धीरें (क्रमशः) बढ़ैत । मै.

लागि-सं., १. जीत चलबै मे सहायता । २. कोनो प्रकारक आसक्ति । (प्रणय सँ वा स्नेह सँ वा अर्थक लोभ आदि सँ) ३. सम्पर्क । ४. सम्बन्ध । मै.

लागू-सं., कोनो विशेष नियमक चरितार्थताक स्थिति । मै.

लांघ-सं., नंर्घक, चढ़ैक चेष्टा । मै.

लांघब-क्रि., पार करब, चढ़ब, टपब । मै.

लाङड़-विशे., अथाह टाङक द्वारे विकृत रूपें चल-निहार । खञ्ज । स्त्री० लाङड़ि । मै.

लाज-सं., लज्जा । मै.

लाजधाख-सं., लज्जाशीलता । मै.

लाज सँ कठौत होएब-क्रि., लाजक द्वारें अत्यन्त सिकुड़ि जाएब । मै.

लाज लगाएब-क्रि., लोकक बीच दोष स्वीकार कराकय लज्जित करब । मै.

लाट-सं., १. कोनो रूपें आवाजाहीक सम्पर्क । २. प्रदेशक सर्वोच्च अधिकारी । मै.

लाठालाठी-सं., दुहू पक्षक लाठी सँ मारि । मै.

लाठा लठौअलि-सं., लाठी सुरि कय मारि करैक स्थिति । मै.

लाठी-सं., मारैवाला दण्ड । मै.

लाड़-सं., लाड़ैक फेरैक अर्थात् एम्हर ओम्हर उनट'-वैक क्रम, पसारैक काज । मै.

लाड़चार-सं., अन्न आदि कें सुखाइक लेल उपर नीचाँ कय एम्हर ओम्हर उनटाएब । मै.

लाड़ना-सं., कोनो वस्तु कें चलबैक लेल साधन । मै.

लाड़नि-सं., कोनो वस्तु कें खापड़ि मे चलबैक सक्कत मोटगर काठीक समूह । मै.

लाड़नी-विशे., कोनो बात कें एम्हर सँ ओम्हर पसारैवाली स्त्री । मै.

लाड़ब-क्रि., १. अन्न आदि पसारिकय पथार पर चलाएब । २. वस्त्र कें सुखाइक हेतु पसारब । ३. भेद (रहस्य) क बात कें कतौ सँ कतौ खोलब । मै.

लाडू-सं., लड्डू, लाइ । मै.

लाड़-सं., प्रार्थनापूर्वक हठ । मै.

लाढ़ि-सं., पोखरि मे जल पर पसरि कय झारि दै वाला जंगल । मै.

लाढ़ि मारब-क्रि., (लाक्षणिक) वस्तु विशेष हेतु अति दीनता देखाएब । मै.

लात-सं., पैरक सर्वाङ्ग । मै.

लातक देवता-विशे., (लाक्षणिक) दुर्जन, मारि खाइ वाला । मै.

लात मारब-क्रि., दूध नै देबाक इच्छा सँ महिसिक दुहै काल लात फेंकब । मै.

लाथ-सं., छल, बहाना । मै.

लाद-सं., बोझा, उपर चढ़ाओल भार । मै.

लादनि-सं., बोझाइक काज । बोझाइ । मै.

लादब-क्रि., बोझाइ करब, भार उपर चढ़ाएब । मै.

लाधब-क्रि., अधिक दिन मे सम्पन्न होइवाला काजक आरम्भ करब । चालू करब । मै.

लाफुसाग-सं., लसफस करैवाला साग विशेष । मै.

लाबन-सं., डिबिया (दीप) रखैक ऊँच आसन । मै.

लाबा-सं., १. धान आदि वस्तु कें भूजला सँ फूटल फूलल गुद्दा । २. ज्वालामुखी सँ उड़ल पघिलल पाथरक कण । मै.

लाभ-सं., उत्पादन सँ प्राप्ति । फायदा । मै.

लाभर औभर-विशे., (भोजनक प्रसंग) अरुचि सँ कने मने मुह मे लेल । मै.

लाम-विशे., नम्मा । मै.

लामा-विशे., बौद्ध धर्मक महात्मा । मै.

लार-सं., १. नार । २. सम्पर्क । ३. मुह सँ बहरैत नेर । मुहँक रस । मै.

लारूथाहू-विशे., आलस सँ शक्तिहीन होइक कारणें शिथिल शरीरवाला । चेतना क्षीण सँ असमर्थ । मै.

लाल-सं., लाल रंग । विशे., लाल रंग सँ रंगल । मै.

लालकी-सं., पालकी । मै.

लालच-सं., देखैत मात्र उपजल तृष्णा, लोभ । मै.

लालची-विशे., कोनो वस्तु पर तृष्णा सँ दृष्टि गड़ी-निहार । मै.

लालटुहटुह-विशे., भीतर सँ लालीक द्वारें दग दग करैवाला लाल । मै.

लालटेम-सं., बसात सँ सुरक्षित यन्त्र मे बाम्हल राशिवाला दीप। मै.

लालटेस-विशे., अत्यन्त लाल। मै.

लालन पालन-सं., स्नेह सँ भरण पोषण। मै.

लाल बुझक्कड़-विशे., अनरजानी, अनेक दावी वाला। मै.

लालबुन्द/लालभुभुक्ष-विशे., अधिक लाल। मै.

लालशर-सं., १. पक्षी विशेष। २. धानक प्रभेद। मै.

लालसिमरिक-विशे., सिमरिकसन लाल। मै.

लाला-विशे., कायस्थ। देशज

लाला छोछी-सं., अभाव सँ वस्तुक हेतु मन वचनक व्यग्रता। मै.

लाली-सं., लाल रंगक आभा। मै.

लाश-सं., मुर्दा। उ. तत्सम

लास-सं., लास्य, नाच। सं. तद्भव

लाह-सं., लाक्षा, द्रवणशील पदार्थ। मै.

लाहट-सं., लाह सँ (चपरा) कोनो वस्तुक मुहरबन्दी। लाहक चपड़ा पर मोहरबन्दी। मै.

लाह पटबा होएब-क्रि., अन्न जलक अर्थात् कोनो मे अन्नक बिना जीव तथा जलक बिना अजातिगाछ वृक्षक तुरन्त लटुआ जाएब। (लाक्षणिक) निराशा सँ अत्यन्त शक्तिहीन भ' जाएब। मै.

लाहब-क्रि., लाह पघिलाकय जोड़ब। छेद बन्न करब। मै.

लाही-सं., लाहसन मल छोड़ैवाला कीड़ा, अजातिक रोग। मै.

लाही लागब-क्रि., लाही सँ अजाति (फसिल) क रोगग्रस्त होएब। मै.

लाहेब करब-क्रि., दूरि नै करै जोग वस्तुक अप्रत्याशित नाश करब। उ. तद्भव

लि

लिखना-सं., प्रतिदिन लिखैक अभ्यास। मै.

लिखनि-सं., भित्ति चित्र। देहरि पुरखुर आदि मे हाथक लिखल चित्र। मै.

लिखब-क्रि., विभिन्न रंगक मोसि सँ वर्ण आ रेखा वा चित्र हाथ सँ निखारब। मै.

लिखा-सं., चिट्ठी। प्रयोग–"कुशल छेम लिखा सँ जानब।" मै.

लिखाएब-क्रि., दोसरा सँ लिखैक क्रिया कराएब। मै.

लिखापढ़ी-सं., प्रामाणिक लेख। मै.

लिखिया-सं., १. अत्यन्त छोट आ मेहीं बन्सी। २. चित्र (भित्ति चित्र) बनबैक कार्यक्रम। मै.

लिखुआ-विशे., हाथक लिखल अक्षरवाला तथा हाथक निखारलवाला चित्र। मै.

लिखौट-सं., लिखैक छटा। मै.

लिच्छोपलिच्छ-विशे., अत्यन्त शुद्ध स्वभाववाला। अनैतिक विचार सँ दूर रहैवाला। मै.

लिट्टी-सं., केवल भुभुर आगि मे पकाओल चापट गोलीसन रोटी। मै.

लिड़िआह-विशे., लाढ़ि भरल। मै.

लिड़िआही-विशे., लाढ़िवाला पोखरि। मै.

लिद्दी-सं., घोड़ा हाथीक मल। मै.

लिधुर-सं., शोणित। प्रयोग–"लिधुर पेन उठ फोंका।" मै.

लिबलाहा-विशे., झुकलवाला। मै.

लिबाएब-क्रि., झुकाकय मोड़ब, टेढ़ करब। मै.

लिलकण्ठ-सं., महादेवक प्रतीक शुभ पक्षी। मै.

लिलबरी-सं., ढेलावाला लीख। मै.

लिलसा-सं., (ग्राम्य) लालसा, सेहन्ता। मै.

लिलियाएब-क्रि., लीह लीह शब्दें बकरी भगाएब। मै.

लिलोह-विशे., अभावक द्वारेँ सेहन्ता पूरै मे अत्यन्त विकल आ निराश। मै.

लिलो होएब-क्रि., लालसा मात्र संयोगने राखब, पूर्ति नहि क' सकब। मै.

ली

लीक-सं., बाटक रेखा, गाड़ीक पहिया धँसैक रेखा। मै.

लीख-सं., १. रेखा रूपेँ बनल रथ आदिक पहियाक बाट। २. माथ मे कटैवाला मेही (सूक्ष्म) कीड़ी। मै.

लीची-सं., चीन देशक राष्ट्रीय मधुर फल। मै.

लीढ़-सं., १. पोखरिक जल पर जमल मोट जंगल। २. पीठक बीच डन्डासन हाड़। मै.

लीन-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त आसक्त। मै.

लीन भ' जाएब-क्रि., १. डूबि जाएब। २. (लाक्षणिक) आनक प्रभाव मे अपन अस्तित्व मिटा देब। मै.

लीपापोती-सं., (लाक्षणिक) झाँपि कय बात कें मेटबैक चेष्टा। मै.

लीबब-क्रि., झुकब, नत होएब। मै.

लीला-सं., जीवन व्यवहार। सं. तत्सम

लीली-सं., छोट लाल फूल विशेष। मै.

लीह्-अव्यय, बकरी कें भगबैक शब्द। मै.

लु

लुक्का-सं., पातर छोट डन्टा मे बान्हल तेल मे भीजल लत्ताक जराओल ऊक। मै.

लुक्खी-सं., वृक्षवासी, छोट जीव। गिलहरी। मै.

लुक्कड़-विशे., अधलाह चालिवाला। मै.

लुकझुक-विशे., अस्त होइत सूर्यवाला समय। मै.

लुकझुक करब-क्रि., दीपक मिझएबाक स्थिति मे आएब। मै.

लुकठी-सं., मुह पर आगिवाला काठी। मै.

लुकड़ी-सं., अत्यन्त छोट डन्टा। मै.

लुकमाह्-विशे., देखिते देखिते चोरालैवाला। स्त्री० लुकमाहि। मै.

लुकलुक करब-क्रि., डूबल वस्तुक कनेक उपरका भाग मात्र देखा पड़ब। मै.

लुगता-सं., अधनेठपना। मै.

लुच्चा-विशे., स्त्री युवती कें देखि निरर्थक अशोभनीय चेष्टा कयनिहार। स्त्री० लुच्ची। मै.

लुचक्कड़-विशे., कनेक असावधानी सँ किछु सँ किछु क' दैवाला। मै.

लुचपनी-सं., स्त्री वा पुरुष कें देखि हावभाव। मै.

लुचलुच करब-क्रि., स्थिर नै रहब, व्यर्थ एम्हर ओम्हर नेन्ना सभक दौड़ब, अनेर हाथ पैर चलबैत रहब। मै.

लुट्टी-सं., बहुत लोकक द्वारा बल सँ उठाकय ल' जाइक कम। मै.

लुटना-विशे., बल सँ उठा उठाकय ल' जाइवाला। मै.

लुटबाएब-क्रि., आनक वस्तु कें बहुत लोकक द्वारा बल सँ लैक प्रक्रिया करब। मै.

लुटवैया-विशे., लुटवा दैवाला। मै.

लुटाएब-क्रि., एकै काल मे बहुत लोकक बीच लैक हेतु छीटिकय उत्सर्ग क' देब। मै.

लुटान-सं., बराबरि लूटैक कम। मै.

लुटिहारा-विशे., बल सँ लोकक धन ल' लैवाला दल। मै.

लुटिया-सं., देख—"लुट्टी"। मै.

लुढ़कब-क्रि., अनेर गड़कि जाएब, औंधरा जाएब। मै.

लुत्ती-सं., आगिक उड़ैवाला कण। मै.

लुत्ती लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) गुप्त उत्तेजना बात कहिकय समाज कें उत्तेजित करब। मै.

लुतुक-सं., स्वभावगत अनुचित अभ्यास। मै.

लुद' द'-अव्यय, शिथिलपन भ' क' जल्दी सँ। मै.

लुदलुदी-सं., छन छन अपन मलक वेग। मै.

लुदुरलुदुर-अव्यय, सोझे टाङें बच्चाक तथा मोट लोकक मन्द चालि। मै.

लुधकब-क्रि., घन भ' क' गाछ आदि मे फल आदि लागब। मै.

लुधकाएब-क्रि., कोनो काज वा वस्तु कें घन क' क' झुण्डक झुण्ड लगाएब। मै.

लुधकी लागब-क्रि., सघन भ' क' फरल रहब। झुण्ड मे लोकक जमि जाएब। मै.

लुपलुप-अव्यय, जल्दी जल्दी मुह मे ल' क'। मै.

लुब्ध-विशे., ललचाएल, लोभ भरल। सं. तत्सम

लुबलुब-क्रि., अनधिकार वस्तु उठालैक चालि। मै.

लुबुधब-क्रि., चारू दिस गुच्छा गुच्छा लटकब। मै.

लुबुधल-विशे., कोनो विषय मे चारू दिस सँ झुण्डक झुण्ड लागल। मै.

लुरिगर-विशे., सब काजक अकलतिवाला। मै.

लुल्ह-विशे., हाथ सँ कज्जी, अपङ्ग। मै.

लुल्हुआ-सं., तरहत्थीक विपरीत भागक अंग। मै.

लुलुआएब-क्रि., बिगड़िकय अनादर सँ भगाएब। मै.

लुलुक-सं., अनेर बिगड़ि अपमान करैक चालि। मै.

लुलुहार-विशे., डारि पात सँ पुष्ट बढ़ैत रहैवाला गाछ वृक्ष आदि। मै.

लुसफुसाएब-क्रि., सोना कय कोनो दुर्य वस्तु कें प्राप्त करैक चेष्टा करब। मै.

लुहलुहाएब-क्रि., पुष्ट आरि पात सँ भरल हरियरि धेने गाछ वृक्षक बढ़ैत रहब । मै.

लू

लू-सं., सूर्य आ बसातक मिलल जुलल प्राणघाती तापक वेग । मै.

लूक-सं., बड़का बाँस मे बान्हिकय बनाओल ऊक । शिकारक साधन । मै.

लूँगी-सं., बिना ढेकावाला पहिरैक विशेष पुरुष वस्त्र । मै.

लूझब-क्रि., एकै बेर शीघ्रता सँ अपना अपनी कें उठा लैक चेष्टा करब । मै.

लूटब-क्रि., इच्छानुसार वा बल सँ ककरो दलक लोकक द्वारा कोनो वस्तु कें हथियाएब । मै.

लूटि/लूटियाटि-सं., देखू—"लूझी" । लूटैक संग उजारब । मै.

लूप-सं., (आधुनिक) गर्भ निरोधक यन्त्र । अं. तत्सम

लूरि-सं., कोनो काज करैक ढंग । अवगति । निपुणता । कार्य कुशलता । मै.

लूलू थूथू-सं., अत्यन्त अनादरपूर्वक गंजन । मै.

लूहा-विशे., ककरो असावधानी मे चट द' चोरी लै वाला । स्त्री० लूही । मै.

ले

ले !-अव्यय, आश्चर्य, भय आदि मे स्वतः बहराएल शब्द । प्रयोग—"ले ! हेराएली ?" मै.

ले-अव्यय, हेतु निमित्त । सम्प्रदान कारकक चिह्न । मै.

लेआओन-सं., आदरपूर्वक शुभ कार्य मे घरक सब व्यक्तिक आमन्त्रण । मै.

लेआओब कहब/लेआबक-क्रि., विशेष अवसर पर माननीय व्यक्ति कें आमन्त्रण कहैक भार देब । मै.

ले ऊँच-विशे., एक दिस गहींर एक दिस ऊँच स्थान । मै.

लेओर-सं., १. एक दिनक भुकान । २. अनुभवहीन, अप्रशिक्षित । मै.

लेख-सं., १. लिखैक छवि छटा । २. पाण्डित्यपूर्ण कल्पना सँ साधल निबन्ध । ३. हस्तलिखित प्रमाण । सं. तत्सम

लेखक-विशे., लिखैवाला । मै.

लेखन-सं., लिखैवाला काज । सं. तत्सम

लेखा-सं., गणना (हिसाब) रूप कें सबटाक एक ठाँ मिलान । सं. तत्सम

लेखाकार-विशे., हिसाब (गणना) करैक हेतु कुशल आ राखल लोक । सं. तत्सम

लेखाजोखा-सं., तौलक आ सुदराक एक ठाँ टोटल हिसाब । सं. तद्भव

लेखापाल-विशे., लेखा जोखाक मुख्य अधिकारी । सं. तत्सम

लेखेँ-अव्यय, विचारेँ, मत सँ । मै.

लेट-सं., विलम्ब । अं. तत्सम

लेटब-क्रि., भूमि पर वा बिछाओन पर लम्बा चौड़ा होएब । मै.

लेटराहा-विशे., सब काज बामा हाथे करनिहार । मै.

लेटाएब-क्रि., १. कपड़ा आदि वस्तुक भूमि पर खसि वा लटकि कय धूरा माटि पर ओंघराएब । २. पीड़ा वा आक्रोश वा अकस्मात् खसि कय भूमि पर छटपटाएब । मै.

लेढ़ल बेढ़ल-विशे., बहारि क' जमा कयल गढ़ीस जकाँ उपेक्षाक योग्य । ओंघराओल । मै.

लेढ़ब-क्रि., थाल पानि सँ भरल देहवाला होएब । मै.

लेढ़ल मेढ़ल-विशे., थाल पानि सँ लेपल । मै.

लेढ़हा-विशे., थाल माटि लागलवाला । मै.

लेढ़ाएब-क्रि., थाल माटि देह मे लगाएब । ओंघराएब । मै.

लेथ-विशे., १. अपने सँ किछु नहि क' सकैवाला बच्चा । २. पानि भरल नहि रहने सँ उखड़ैवाला धानक बीआक गाछ । मै.

लेथुरिया-विशे., अत्यन्त छोट बच्चा । मै.

लेन-सं., लाइन, रेखा । रेलक पटरी । अं. तद्भव

लेन-सं., १. आवास घरक विशेष टोल । २. लगाभी, लैक सिलसिला । मै.

लेनदेन-सं., लेबाक आ देबाक क्रम । मै.

लेप-सं., ऊपर सँ थोपि कय गाढ़ वस्तुक (औषध आदिक) लगबैक प्रक्रिया । मै.

लेपटब-क्रि., चारूकात सँ बन्हल जकाँ लागि जाएब । मै.

लेपटाएब-क्रि., अनेक फेरा द' क' चारूकात लगा-एब । मै.

लेपटान-सं., अनेक फेरा दय कें कपड़ा आदि वस्तुक मोड़ैक लगबैक कम । मै.

लेपटाहु-विशे., घूरि फिरि कय ओझराएल । मै.

लेपटौआ-विशे., परस्पर अक्षर सँ अक्षर लेपटाएल तथा सम्बन्ध लागल अंगरेजी वर्ण । मै.

लेपनि-सं., लेपैक काज । मै.

लेपब-क्रि., गाढ़ वस्तु कें सगरे पसारि लगाएब । मै.

लेपरसा-सं., बाम्हुल (स्थूल) भील वस्तु कें पीसि (हाथ वा देहक रगड़ा सँ) लेप जकाँ गाढ़ घोला । जेना गोबर कें ढील बनाकय घोप । मै.

लेपा-सं., लेपैक चलैवाला काज । मै.

लेपाएब-क्रि., लेपैक काज कराएब । मै.

लेपाड़-सं., लेप कयला उत्तर बनल चिह्न । मै.

लेब-क्रि., ग्रहण करब, पकड़ब । मै.

लेब-सं., १. ग्रहण करैक काज । २. भील आ ढील माटि सटैक कम । मै.

लेब देब-क्रि., लेबा देबाक काज । मै.

लेबनि-सं., लेबैक प्रकार । मै.

लेबब-क्रि., ढील आ भील विशेष प्रकारक माटि सँ टाट आ देवाल कें साटब । मै.

लेबा-सं., आँच सँ वर्तन कें रक्षा हेतु पेन दिश नीचाँ मे लगाओल माटि । मै.

लेबाइ-सं., लेबैक काज । मै.

लेबाड़ब-क्रि., अस्थायी रूपक माटि साटब । मै.

लेबाल-विशे., लेबाला । मै.

लेबिया-सं., लेबैक चलैत रहैवाला काज । मै.

लेभड़ब-क्रि., लेबल जकाँ सगरे लागब । मै.

लेभी-सं., व्यवसायी सँ व्यवसायक लाभांश लैक राजकीय व्यवस्था । अं. तत्सम

लेम' जाएब-क्रि., लैक क्रिया करैक हेतु जाएब । मै.

लेर-सं., मुहक रस । मै.

लेरहा/लेराहु-विशे., हरदम लेर चुबैत रहैवाला नेन्ना वा रोगी । मै.

लेराएब-क्रि., लेर सँ भरल रहब । मै.

लेल-अव्यय, हेतु, निमित्त । चतुर्थीक चिह्न । मै.

लेलहा-विशे., लटपटाएल बोली बजैवाला ज्ञान शून्य । मै.

लेली-अव्यय, हेतु, निमित्त । प्रयोग–"ई तँ देवताक लेली निहुछल छै ।" मै.

लेलाहु-विशे., अस्पष्ट शब्द उच्चारण केनिहार बक-लेल । मै.

लेश-सं., कनेक अंश । सं. तत्सम

लेशान-सं., दही जनम'बैवाला दही । मै.

लेसब-क्रि., १. दीप जराएब, बारब । २. (लाक्ष-णिक) झगड़ा बढ़ाएब । मै.

लेहू-सं., रुधिर, शोणित । रक्त, खून । मै.

लै

लै-सं., आटा मैदा सँ रान्हि कें बनाओल लस्सा । मै.

लै"-सं., ककरो ककरो प्रति अत्यन्त आवेश । मै.

लैन-सं., बिजली करेन्टक प्रवाह । अं. तद्भव

लैम्प-सं., यान्त्रिक दीप । अं. तत्सम

लै" लै" करब-क्रि., आवेश (स्नेह) क लेल सदिखन उत्कण्ठित रहब । मै.

लो

लोआठ-सं., १. अतिशय । २. ठेढाक निचला भाग (हूर) । ३. हाथक औंठा । मै.

लोआठब-क्रि., ठेढाक निचला भाग अथवा हाथक बुढ़वा आङुर देखाएब । मै.

लोइ-सं., सककल सानल वस्तुक पैघ आकार । मै.

लोइआ-सं., सककल सानल वस्तुक छोट छोट टुकड़ा । रोटी बेलैले सानल चिक्कस छोट खण्ड । मै.

लोक-सं., संसार, मनुष्य, व्यक्ति । सं. तत्सम

लोकगर-विशे., परिवार वा परिचारक भरल । मै.

लोकन-सं., उपरें उपर उछालल वस्तु कें पकड़िबैक कला । मै.

लोकनि-सं., सब । प्रयोग–"अहां लोकनि ।" मै.

लोकनिन-विशे., प्रथम प्रथम सासुर जाइवाली कन्याक संग लागल ओकर सहायक स्त्री । मै.

लोकनियाँ-विशे., दुरागमनियाँ कनियाँक संग जाइ-वाला भाइ तथा सहायक पुरुष । मै.

लोकब-क्रि., उपर उछलल वस्तु कें अथवा उपर सँ खसैत वस्तु कें उपरें उपर पकड़ब । मै.

लोकलोका-सं., परस्पर वस्तु उछालि उछालि उपरें उपर पकड़ैक चेष्टा । मै.

लोकवेद-सं., भौतिक आ आध्यात्मिक (ज्ञान एवं धर्मचर्या) कर्मक केन्द्र । एक व्यक्ति सँ ब्रह्माण्ड-धरिक कर्म । मै.

लोकाएब-क्रि., उपरें सँ उछालिकय पकड़ाएब । मै.

लोकारब-सं., अधिक लोक भरल स्थान । मै.

लोकित-विशे., वंशज, सम्बन्धित । मै.

लोकोकिल-सं., कहबी । प्रयोग–"कहबी कहै छी जे लोन चोरि जाय कोइला पर छाप ।" सं. तत्सम

लोखड़-सं., नौआक खुर आदि अस्त्र सब रखैक वासन । मै.

लोखरैया-सं., गाछक उखड़ल पुरान छाल । मै.

लोचन-सं., नयन, आँखि । सं. तत्सम

लोचना-सं., धीयापूताक शुभ कार्य देखैक उत्कट वेहन्ता । मै.

लोट-सं., नोट, राजकीय मुद्रा, राशि पत्र । अं. तत्सम

लोटकी-सं., लोटाक आकारक अत्यन्त छोट जल पात्र । मै.

लोटन परबा-विशे., उड़ैत काल उनटि पुनटिकय खेलाइवाला परबा पक्षी । मै.

लोटनि-सं., अत्यन्त दुःख अथवा अतिसै आनन्दक लेल पड़ल पड़ल उनटैत पुनटैत रहैक क्रम । मै.

लोटनियाँ मारब-क्रि., दुःख (व्याधि) अथवा शोक सँ भुइयाँ पर ओंघराएब । मै.

लोटपोट-सं., १. छका छकाकय पराजित करैक भाव । विशे., २. हँसैत हँसैत अस्त व्यस्त । ३. आराम । मै.

लोटपोट करब-क्रि., प्रतिवादियैक, विपक्षियैक बातें ओकरा परास्त करब । मै.

लोटा-सं., जलपात्र । मै.

लोटाएब-क्रि., धूरा माटि पर घूरि फिरिकय ओंघ-राएब । मै.

लोढ़नि-सं., खेत मे खसल दानावाला सीस बीछैक काज । मै.

लोढ़ब-क्रि., खेत मे छोड़ल दाना बीछब । मै.

लोढ़ा-सं., खेत मे खसल छोड़ल अन्नक दाना बीछैक चेष्टा । मै.

लोढ़ाबीछा-सं., अन्नक दाना बीछिकय जीवन निर्वा-हक उपाय । मै.

लोढ़ाशंख-विशे., पढ़ै लिखै मे महामूर्ख, अज्ञ । मै.

लोढ़ियाएब-क्रि., (लाक्षणिक) बूड़ि बनाकय नीक जकाँ दूसब । मै.

लोढ़ी-सं., सिलौट पर रगड़िकय किछु पीसैक काजक हेतु मुट्ठी सँ पकड़ैक जोग पाथरक गोल टुकड़ा । मै.

लोण-सं., नोन, लवण । सं. तद्भव

लोथ-विशे., हाथ पैररहित संचारहीन जीव । मै.

लोथड़ा-विशे., बिन आकार प्रकारवाला गोलाकार संचारहीन । मै.

लोध-सं., वनस्पति विशेष । रोध्र । मै.

लोन-सं., नोन । मै.

लोप-सं., अदर्शन, बिला जाइक भाव । सं. तत्सम

लोभ-सं., लालच । सं. तत्सम

लोभाएब-क्रि., ललचाएब, आकृष्ट होएब । मै.

लोर-सं., नोर, अश्रु (ग्राम्य) । मै.

लोराएब-क्रि., नोर भरि आएब । मै.

लोरि-सं., धीयापूता कें परतारि कय सुतबैक गीत । मै.

लोरिक-सं., लोरिक नामक वीर पुरुष एवं ओकर वीर गाथाक गीत । मै.

लोल-सं., नोकदार मुह, पक्षीक चञ्चु । मै.

लोलकी-सं., कनेक नोक जकाँ आगू मे बढ़ल । मै.

लोला-विशे., मुहलग्गु प्रिय नेन्ना । मै.

लोलाह-विशे., अधिक बढ़ल लोकवाला । मै.

लोलियाएब-क्रि., लोल मारिकय लोधब । मै.

लोली-सं., छोट छोट पातक नोक । मै.

लोह-सं., कठोर धातु विशेष । मै.

लोहकट-सं., उपर फैल आ नीचाँ साँकर लकड़ीक कटारि । कटैक साधन । मै.

लोहकम-सं., लोहारक उपयोगी लोहक साधन । मै.

लोहगर-विशे., अधिक लोह भरल । मै.

लोहक छड़-सं., लोहक बड़का छड़ । मै.

लोहकड़ी-सं., जूता मे काँटी ठोकैक गोल मोट लोहक ठोकना । मै.

लोहछब-क्रि., बिगड़ि उठब , क्रोध करब । मै.

लोहछाएब-क्रि., तामस जगाएब, मन कें कोधें विकृत क' देब । मै.

लोहछाह-विशे., तामसें बिगड़ि उठैवाला । मै.

लोहछि उठब-क्रि., मन मे क्रोधक विकार जागब । मै.

लोहअर लागब-क्रि., १. अशुद्ध लोहक कटला सँ ज्वर होएब । २. (लाक्षणिक) ज्वर होइक छल सँ बैसल रहैक बहाना करब । मै.

लोहझाम-सं., माटि मे गड़ल अत्यन्त पुरान लोहू । मै.

लोह दागब-क्रि., (लाक्षणिक) अभाव सँ सेहन्ताक तिरस्कार करब । मै.

लोहरस लागब-क्रि., पूब दिशा मे उषा मे लालिमा छिटकब । मै.

लोहराइन-सं., लेहूक दुर्गन्ध । मै.

लोहराएब-क्रि., क्रोधें लाल भ' जाएब । मै.

लोहार-विशे., लोहक व्यसायवाला मिस्त्री, लोहक कार्यकुशल । मै.

लोहारि-सं., अत्यन्त कारी अधिक विषवाला चीटी । मै.

लोहारी-सं., लोह गढ़ैक व्यवसाय । मै.

लोहिया-सं., तरकारी रन्हैवाला फैलल मुहवाला धातुक उत्थर बासन । मै.

लौ

लौं-सं., १. धधरा, ज्वाला, धाहू । २. कानून । अंग्रेजी/मै.

लौका-सं., सजमनि । मै.

लौका तुम्मा-सं., साधु सन्यासीक सुखाएल सजमनिक बासन वा ओकरे बनाओल वाद्य यन्त्र । मै.

लौकिक-विशे., सांसारिक, समाज मे प्रचलित । सं. तत्सम

लौकिया-विशे., नुकाकय गतिविधि देखैवाला गुप्तचर । मै.

लौकिया लागब-क्रि., धन चोरवैले चुपचाप चोरक संग लागि जाएब । मै.

लौकी-सं., गोल सजमनि । मै.

लौंग-सं., १. लवङ्ग । २. लवङ्गसन नाकक गहना । मै.

लौंडी-सं., अत्यन्त छोट अधिक कड़ू मेरिचाइ । मै.

लौटब-क्रि., घाछू घूमब, प्रत्यावर्तित होएब । हि./मै.

लौटाएब-क्रि., घेमिहार कें घुमा लाएब । मै.

लौंडा-विशे., बड़का कोढ़ारि एवं हर । मै.

लौठी-विशे., छोटकी खुरपी । मै.

लौड़ा-सं., तरुण पुरुषक लिंग । मै.

लौंडा-विशे., चालू छौड़ा । मै.

लौल-सं., चञ्चलतापूर्वक अत्यन्त आग्रहक संग अभिलाष, आवेग । मै.

लौलीबाजी-सं., फूसि बाजि कय समय खेपैक आचरण । मै.

लौंस-सं., घाटा, हानि, नोकसान । अं. तत्सम

लौसग-सं., सागक संग सजमनिक रान्हल तरकारी, व्यञ्जन । मै.

व्य

व्यक्ति-सं., लोक, एकत्व संख्या । सं. तत्सम

व्यंग्य-सं., शब्द सँ ध्वनि रूपें प्रकट होम'वाला अर्थ विशेष । सं. तत्सम

व्यञ्जन-सं., तरकारी । सं. तत्सम

व्यञ्जना-सं., व्यङ्ग्यार्थ प्रकाशक शब्दशक्ति । सं. तत्सम

व्यय-सं., खर्च । उठानि । सं. तत्सम

व्यवसाय-सं., जीवन निर्वाहक व्यापार । सं. तत्सम

व्यवहार-सं., १. परम्परागत सामाजिक विधि । २. वैयक्तिक चेष्टा । सं. तत्सम

व्यष्टि-सं., समूह सँ पृथक् कयल एकत्व संख्या । सं. तत्सम

व्यस्त-विशे., १. काज मे तल्लीन । २. मरणासन्न वा प्राणहीन । सं. तत्सम

व्यसन-सं., स्वभावगत अनिवार्यता । लति । सं. तत्सम

व्याकरण-सं., शब्दशास्त्र । भाषा शब्दक परिकलनाक विधान । सं. तत्सम

व्याख्याता-विशे., १. महाविद्यालयक विषय शिक्षक । २. सभा मे बजनिहार । सं. तत्सम

व्याख्यान-सं., समूहक बीच भाषण । सं. तत्सम

व्याघात-सं., काजक बीच बाधायुक्त हानि । सं. तत्सम

व्याज-सं., १. छल, बहाना । २. ऋणक बढ़ैवाला सूदि । हि. तत्सम/सं. तत्सम

व्याध-विशे., निर्दय, जंगली शिकारी । सं. तत्सम

व्याधि-सं., रोग । सं. तत्सम

व्याप्ति-सं., (लाक्षणिक) छट द' बात पकड़ैक बुद्धि । सं. तत्सम

व्यापक-विशे., सगरे पसरल (छाएल) रहैवाला । (लाक्षणिक) समूहक बीच प्रभावशाली रहैवाला । सं. तत्सम

व्याम्बोह-सं., व्यामोह, मिथ्या आसक्ति सँ बनल कुण्ठा । सं. तत्सम

व्यास-विशे., पुराण लेखक, पौराणिक पुरुष, पुराण-वाचक । सं. तत्सम

व्यास-सं., बीचक विस्तार, परिधि मध्य मे बनल अवकाश । सं. तत्सम

व्यासंग-सं., अनर्गल मनक आकर्षण । सं. तत्सम

व्रज-सं., मथुरा (गोकुल) क्षेत्र । भाषा विशेष । सं. तत्सम

व्रण-सं., घाओ । सं. तत्सम

व्रत-सं., धार्मिक कार्यक नियम । सं. तत्सम

वक्तव्य-विशे., देखू—"वकतव" । सं. तत्सम

वक्ता-विशे., बजनिहार । सं. तत्सम

वक्र-विशे., टेढ़ । सं. तत्सम

वक्ष-सं., छाती, वक्षस् । सं. तत्सम

वक्षोज-सं., स्तन । सं. तत्सम

वङ्ग-सं., एक प्रदेश । सं. तत्सम

वचन-सं., शुद्ध वर्णात्मक शब्दक बोली । सं. तत्सम

वज्र-सं., इन्द्रक अमोघ अस्त्र । (लाक्षणिक) अधिक कड़ा । सं. तत्सम

वज्रकील-सं., जे टुटै जोग ने हिलै जोग अर्थात् तथा खुट्टा । सक्कत वस्तु । मै.

वटवृक्ष-सं., बड़क गाछ । सं. तत्सम

वटी-सं., बड़िया । सं. तत्सम

वटुक-विशे., किशोरावस्थाक नेन्ना । सं. तत्सम

बड़बड़ मेला सँ मोछवाला अयला-लोकोक्ति, जे काज ककरो सँ नै भ' सकै छै से करैक दावी व्यर्थ । मै.

वत्स-विशे., बच्चा, स्नेह पात्र । सं. तत्सम

वधू-विशे., कनियाँ, नव विवाहित युवती, घरक पुतोहु । सामान्य पत्नी । सं. तत्सम

वन-सं., जंगल । सं. तत्सम

वनैया-विशे., वन मे भेनिहार, वन मे रहनिहार वासी । मै.

वनैल-विशे., वन मे हरदम नुकाएल रहैवाला । मै.

बम-सं., आधुनिक विस्फोटक अस्त्र । सं. तत्सम

बम-विशे., गंगाजल भरिकय वैद्यनाथधाम जाइ वाला भक्त यात्री । मै.

बमरी-विशे., जल बोझिकय वैद्यनाथधाम जाइवाली स्त्री तीर्थ यात्री । मै.

बमबम-सं., शिव कें प्रसन्न करैक ओंकारक विकल्प । मै.

वयस-सं., आयु । उमेर । सं. तद्भव

वर्ष-सं., बारह मासक एक मान । सं. तत्सम

वर्षा-सं., मेघ सँ सघन बुन्दपात । सं. तत्सम

वर्षान्न-सं., वर्षभरि खाइक अन्न । सं. तत्सम

वर-विशे., १. वधूक पति । २. श्रेष्ठ । ३. नीक । सं. तत्सम

वरण-सं., १. चाहब, विशेष काजक नियोजन । २. चुनब । सं. तत्सम

वरतुहार-विशे., विवाहक योग्य कन्याक लेल वर तकनिहार (अन्वेषण कयनिहार) । मै.

बराइत-विशे., वर पक्षक लोक । मै.

बरियाती-विशे., वर यात्राक लोक । मै.

बरिसकाल-सं., वर्षा ऋतु । मै.

बला-सं., बरिआर । सं. तत्सम

वश-सं., अधिकार अधीनता । सं. तत्सम

वंश-सं., परम्परागत सन्तान सँ अर्दवाला कुल । २. बाँस । सं. तत्सम

वंशकलोक-विशे., उच्च कुलक सम्बन्ध रखैवाला भलमानुष । मै.

वंशज-विशे., कुल मे होमवाला व्यक्ति । सं. तत्सम

वसा-सं., देहक धातु विशेष । सं. तत्सम

बस्ता-सं., पोथी पतरा बान्हि क' रखैक कपड़ाक विशेष खण्ड । मै.

वस्त्र-सं., कपड़ा । सं. तत्सम

बस्ती-सं., ग्राम खण्ड, गाम, टोल । मै.

वस्तु-सं., पदार्थ, द्रव्य, मौलिक विषय । सं. तत्सम

बस्स !-अव्यय, परिपूर्णता, अधिकता आ स्वीकार तथा निषेध सूचक । मै.

बसन्त-सं., छः ऋतु मे प्रमुख ऋतु । मै.

बसन्ती-सं., पीयर लाल मिलल रंग । मै.

बसन-सं., वस्त्र, कपड़ा । सं. तत्सम

बसना-सं., वर्त्तन । प्रयोग—"पनबसना ।" मै.

बसनी-सं., अत्यन्त छोट थैल । मै.

बसब-क्रि., चिरस्थायी रहब । वास करब । मै.

बसाएब-क्रि., घरद्वार सँ चिरस्थायी बनाएब । वास देब, रहैक स्थान देब । मै.

बसिन्ना-विशे., वासी, परम्परा सँ रहैवाला डीही । मूलवासी । मै.

बसोबास-सं., बसैवाला वा वासवाला भूमि । मै.

बसौड़ी-सं., वास भूमि, बसैक योग्य भूमि । मै.

बहन करब-क्रि., भार उठाएब, निर्वाह कराएब । सर्त्त अवधारब । मै.

बा

बा-अव्यय, अथवा, आकि । सं. तत्सम

बाक् चातुरी-सं., बजैक निपुणता, वचनक छटा । सं. तत्सम

बाक्य-सं., परस्पर सम्बन्ध रखैत शब्दक समूह, क्रियाकारक पद । सं. तत्सम

बाक्यालंकार-सं., बाक्यक भूषण स्वरूप शब्द जाल । सं. तत्सम

बाक-सं., वाक्, वचन । बात । सं. तद्भव

बाक फूटब-क्रि., मुह सँ बात बहराएब । मै.

बाकबन्न होएब-क्रि., मृत्युक समय पहिने बाजब रुकि जाएब । (लाक्षणिक) मृत्यु निकट होएब । मै.

बाङ्मय-सं., शास्त्र, साहित्य । सं. तत्सम

बाचब-क्रि., पढ़ि पढ़ि बेकछाएब । मै.

बाचाशक्ति-सं., छटापूर्वक बजै मे प्रवीणता । सं. तत्सम

बाट-सं., मार्ग, पथ । मै.

बाढ़ि-सं., वृद्धि । बढ़ैक शक्ति । मै.

बाण-सं., शर, तीर । सं. तत्सम

बाणी-सं., वचन, बोली । सं. तत्सम

बात-सं., वार्ता, बोली, वचन । मै.

बाताबाती-सं., परस्पर विवाद कयें बजैक उग्रता । मै.

बातूनी-विशे., अनेर अधिक बजनिहार । मै.

बाद-सं., पश्चात् काल, परस्पर बातें झगड़ा । मै.

बाद विवाद-सं., दू दलक बीच अपन अपन मतक तर्क वितर्क । मै.

बादी-विशे., १. मुद्दइ । २. मतक विरोध कएनिहार । ३. मासा बढ़ैवाला बावासीर रोग । सं. तत्सम/मै.

बाम-सं., अलग्य दहिनाक विपरीत । सं. तत्सम

बामदहिन-सं., (लाक्षणिक) एक दोसर विपरीत करैक फेरा । मै.

बामा-सं., नारी । सं. तत्सम

बायवी-विशे., वायुमय, वायु सम्बन्धी । सं. तत्सम

बायु-सं., बसात । सं. तत्सम

बार-सं., १. दिन । प्रयोग—"रविवार आदि ।" २. निषेध, रोक । मै.

बारब-क्रि., बहिष्कार करब । मना करब । मै.

बारम्बार-अव्यय, फेरफेर, लगले लागल । सं. तत्सम

बाराबारी-सं., परस्पर कें बहिष्कार करैक क्रम । मै.

बाल-सं., १. केश । २. नेन्ना । ३. सिकता, बालुका । सं. तद्भव

बालक-विशे., बेटा, बच्चा । सं. तत्सम

बालपन-सं., बचपना, नेनपनी । मै.

बास-सं., चिरकाल सँ घरक स्थान । सं. तत्सम

बासकसज्जा-विशे., साहित्यिक नायिकाक भेद । सं. तत्सम

बासन-सं., १. बसबैक काज । २. वर्तन । सं. तत्सम/मै.

बासना-सं., विषय तृष्णा, स्त्रीत्व आ पुरुषत्वक परस्पर आकर्षण । सं. तत्सम

बासर-सं., दिन । सं. तत्सम

बासा-सं., अस्थायी निवास । मै.

बाह !-अव्यय, साधुवाद । प्रोत्साहन । मै.

बाहक-विशे., उगहैवाला, ल' जाइवाला । सं. तत्सम

बाहन-सं., सवारी, यान । सं. तत्सम

बाह् बाह् !-अव्यय, अत्यन्त साधुवाद । मै.

वि

विक्रय-सं., बेचैक काज। सं. तत्सम
विखल-विशे., अनेक घातवाला। अनेक ठाँ काटल। सं. तत्सम
विक्षुब्ध-विशे., नैराश्य सँ दुखी। सं. तत्सम
विकट-विशे., भयंकरता सँ भरल कष्टकर। सं. तत्सम
विकटाह-विशे., अत्यन्त कठिनाह। मै.
विकब-क्रि., वेचल जाएब। मै.
विकराल-विशे., अत्यन्त भयावह। सं. तत्सम
विकल-विशे., अत्यन्त दुखी। सं. तत्सम
विकार-सं., प्रतिकूल भावना, वस्तुक मल। सं. तत्सम
विकारी-विशे., भेद जनबैवाला संकेत रूप बाधा घेरा। मै.
विकिरण-सं., वैज्ञानिक प्रक्रिया विशेष। मै.
विकाल-विशे., कष्टकर आ भयावह काल। मै.
विख्यात-विशे., प्रसिद्ध, नामी। सं. तत्सम
विखिन-विशे., विखिन्न, भावना मे दुखी। सं. तद्भव
विज्ञ-विशे., विद्वान्, विशिष्ट ज्ञानी। सं. तत्सम
विज्ञान-सं., विशिष्ट ज्ञान। सं. तत्सम
विट-सं., पक्षीक मल। सं. तत्सम
विड्ति-सं., उजाड़ि सँ हानि। मै.
विद्यमान-विशे., प्रस्तुत, उपस्थित। रहैत। सं. तत्सम
विद्या-सं., ज्ञान, विषय बोध। सं. तत्सम
विद्यार्थी-विशे., ज्ञान चाहैवाला। सं. तत्सम
विद्यालय-सं., पढ़ौनीक घर। पाठशाला। सं. तत्सम
विद्युत्-सं., बिजुली। सं. तत्सम
विद्वत्ता-सं., विद्वानक गुण। सं. तत्सम
विद्वान्-विशे., पण्डित, विवेकशील, विषयक ज्ञाता। सं. तत्सम
विदकब-क्रि., भ्रम आ भय सँ हड़बड़ाकय उछलि जाएब, चमकि उठब। मै.
विदकाएब-क्रि., अकस्मात् भय सँ चमकाएब। मै.
विदरब-क्रि., फाटब, पसरब, मुह फैलब। मै.
विदारब-क्रि., फैलायब, पसारब, फाड़ब। मै.
विधना-सं., भाग्य। मै.
विधवा-विशे., मृत पतिका। सं. तत्सम
विधाता-सं., सृष्टिकर्ता। सं. तत्सम
विधान-सं., व्यापक नियम। सं. तत्सम
विधि-सं., कार्य (व्यवहार) प्रणाली। सं. तत्सम
विधिकरी-विशे., विवाहक समय कनियाँ वरक निर्देशिका। सं. तत्सम
विधि विधान-सं., लोक व्यवहारक नियम, आडम्बर। सं. तत्सम
विधि विधाता-सं., लोक निर्माता, स्रष्टा। सं. तत्सम
विधुआएब-क्रि., शक्तिहीनता आ अधिक ठंढा सँ तथा पीड़ा सँ अंगक विकृत (संकुचित) होएब। मै.
विधुनब-क्रि., व्यवस्थित वस्तु कें उधेसब। मै.
विधुर-विशे., मुइल पत्नीवाला, वियोगी। सं. तत्सम
विन्यास-सं., विविध आयोजन। सं. तत्सम
विनय-सं., नम्रता भरल प्रार्थना। सं. तत्सम
विना-अव्यय, बेचैक अभाव मे। सं. तत्सम
विनाश-सं., ध्वंस, क्षय। सं. तत्सम
विपटइ-सं., अपन चेष्टा एवं रूप सँ हँसबैक विशेष गुण। मै.
विपटा-विशे., अपन चेष्टा वचन आ रूप सँ प्रहसनकारी। हँसबैवाला। मै.
विपत्ति/विपति-सं., संकट, अनिवार्य कष्ट आ दुख विनाश। सं. तत्सम/सं. तद्भव
विपतब-क्रि., संकट आ प्रलय मे पड़ब। मै.
विपति पड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) पतिक स्वर्गवास होएब। मै.
विपन-विशे., विपन्न, संकट मे पड़ल। सं. तद्भव
विपरीत-सं., उनटा। विशे., प्रतिकूलता। सं. तत्सम
विपाक-सं., अनपच। सं. तत्सम
विपाटी-विशे., भिन्न (पृथक्) वा दोसर लोक (आनमतक लोक) मे रहैवाला। मै.
विपिन-सं., वन। सं. तत्सम
विपुल-विशे., विशाल, भारी आ विस्तृत। सं. तत्सम
विफल-विशे., असफल। सं. तत्सम
विबुध-विशे., पण्डित आ देवता। सं. तत्सम
विभव-सं., सम्पत्ति। सं. तत्सम

विभाग-सं., खण्ड, बखरा, हिस्सा। सं. तत्सम

विभाजन-सं., बाँट। दलीकरण। सं. तत्सम

विभु-विशे., व्यापक। सं. तत्सम

विमान-सं., धरातल सँ उपर उड़ैवाला सवारी। सं. तत्सम

वियोग-सं., अलगाओ, विच्छेद। सं. तत्सम

वियोगी-विशे., वियोगक दुख सँ दुखी। सं. तत्सम

विरह-सं., पृथक् रहने स्नेहक उत्कण्ठा। सं. तत्सम

विरही-विशे., स्नेही वा प्रणयी ले उत्कण्ठित। सं. तत्सम

विराट-विशे., बहुत पैघ, अनन्त। सं. तत्सम

बिल-सं., भोकाड़, मोन्हि, भूर। सं. तत्सम

विलम्ब-सं., देरी, अतिकाल। सं. तत्सम

विलय-सं., मिलिकय विलाएब। सं. तत्सम

विलाप-सं., घवोना कय के क्रन्दन। सं. तत्सम

विलास-सं., रंग रभस, वासनोद्दीपक क्रिया। सं. तत्सम

विलीन-विशे., डूबल, अस्त। सं. तत्सम

विवरण-सं., विषयक परिचयात्मक उल्लेख। सं. तत्सम

विवश-विशे., पैबन्ध। सं. तत्सम

विवस्त्र-विशे., नाङट, नग्न। सं. तत्सम

विवाद-सं., वाचनिक झगड़ा। सं. तत्सम

विवाह-सं., कुमारि कन्या आ कुमार वरक परस्पर आत्माक बन्धन विधि। सं. तत्सम

विवाहित-विशे., विवाह कयल। सं. तत्सम

विविध-विशे., अनेक प्रकारवाला। सं. तत्सम

विश्व-सं., संसार। सं. तत्सम

विश्वास-सं., मानसिक आस्था। सं. तत्सम

विश्वासपात्र-विशे., विश्वास योग्य। सं. तत्सम

विश्वासी-विशे., विश्वास कयनिहार। सं. तत्सम

विशद-विशे., स्पष्ट, बेकछाओल। सं. तत्सम

विशाखा-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम

विशाल-विशे., आकार प्रकारें बहुत पैघ। सं. तत्सम

विशिष्ट-विशे., उत्तमता मे सब सँ भिन्न। सं. तत्सम

विशेष्य-विशे., विशेषताक योग्य। सं. तत्सम

विशेष-सं., अधिक, भिन्न प्रकार। सं. तत्सम

विशेषण-सं., संज्ञा शब्दक गुण बुझबैवाला शब्द। सं. तत्सम

विशेषता-सं., उत्तमता, विलक्षणता। सं. तत्सम

विष्ठा-सं., जीव मात्रक पेटक मल। सं. तत्सम

विष्णु-सं., नारायण। सामन्ती देवता। सर्वशक्तिमान् देव। सं. तत्सम

विष-सं., प्राणघाती पदार्थ। सं. तत्सम

विषधर-विशे., साँप। सं. तत्सम

विषम-विशे., १. दू सँ भाग लगैवाला सँ भिन्न संख्या। २. विकट, समस्यापूर्ण, जटिल। सं. तत्सम

विषय-सं., १. शास्त्रीय वस्तु। २. वस्तु। ३. वासनात्मक प्रवृत्ति। सं. तत्सम

विषयी-विशे., १. विषय जननिहार। २. सांसारिक वासना मे लिप्त। सं. तत्सम

विषहा/विषाह-विशे., विषवाला। सं. तत्सम

विषु-विशे., विषक प्रयोग करैवाला। सं. तत्सम

विस्तर/विस्तरा-सं., बिछाओन। मै.

विस्तार-सं., फैलाओ। प्रसार। मै.

विस्तारी-विशे., विस्तृत रूपें काज कयनिहार। मै.

विस्तीर्ण-विशे., खोलि पसारल। सं. तत्सम

विस्तृत-विशे., पसारल, फैलाओल। सं. तत्सम

विसनारि-सं., जलक प्रान्तक क्षार विशेष। मै.

विहङ्गमदृष्टि-सं., वेग मे कएक दृष्टिपात। सं. तत्सम

विहरण-सं., उन्मुक्त मन सँ प्राकृतिक आनन्द लैक प्रवृत्ति। सं. तत्सम

विहार-सं., उन्मुक्त मनें प्राकृतिक वस्तुक बीच विचरण कय आनन्दक उपलब्धि। सं. तत्सम

विहीत-विशे., विधि (नियम) मे आएल। सं. तत्सम

वी

बीज-सं., बीया, गाछ उत्पन्न करैक हेतु दाना आदि। सं. तत्सम

वीणा-सं., सारङ्गी (सितार), वाद्य विशेष। सं. तत्सम

वीर्य-सं., १. शरीरक सारभाग, सातम धातु। २. वीरता। सं. तत्सम

वीर्य्यपात-सं., मैथुन वा स्वप्न मे देहक मुख्य तत्त्वक स्खलन। सं. तत्सम

वीर-विशे., युद्धक हेतु बलवान् उत्साही । सं. तत्सम

वीरासन-सं., वीर पुरुषक बैसैक ढंग विशेष । सं. तत्सम

वीसां-सं., बीस गुना । मै.

वीसा-सं., विदेश भ्रमणक अनुमति पत्र । अं. तत्सम

वृ

वृत्त-सं., १. गोलाकार रेखा । २. आचरण । इतिहास । सं. तत्सम

वृत्त-विशे., प्रस्तुत, तैयार । सं. तत्सम

वृत्ति-सं., व्यवसाय, जीविका । सं. तत्सम

वृत्ती-विशे., विशेष व्यापार (उद्यम) वाला । सं. तत्सम

वृत-विशे., घेरल । सं. तत्सम

वृद्ध-विशे., बूढ़ । सं. तत्सम

वृद्धावस्था-सं., बुढ़ारी । सं. तत्सम

वृद्धि-सं., बाढ़ि । सं. तत्सम

वे

वेग-सं., गतिक तीव्रता । सं. तत्सम

वेद-सं., ज्ञान, ज्ञानक भण्डारशास्त्र । सं. तत्सम

वेदी-सं., हवन आदिक हेतु अग्नि स्थापनक परिष्कृत स्थान । सं. तत्सम

वेध-सं., शरीर मे क्षत करैक अस्त्रक आघात । सं. तत्सम

वेधब-क्रि., अस्त्र सँ भोंकब । मै.

वेधशाला-सं., आकाश मे ग्रह नक्षत्र सभक गतिक ज्ञान करैक यन्त्रशाला । सं. तत्सम

वेश्या-विशे., रूप यौवन बेचैवाली । सं. तत्सम

वेश !-अव्यय, स्वीकारक शब्द । मै.

वेश-सं., अपन स्थितिक दृढ़ताक हेतु सब दिशक प्रभाव । सं. तद्भव

वै

वैँ-सं., व्यसन, लति, हठवाला अभ्यास । मै.

वैद्य-विशे., चिकित्सक, आयुर्वेद ज्ञाता । सं. तत्सम

वैद्यनाथ-सं., रावणेश्वर शिवक ज्योतिर्लिंग । मै.

वैदिक-विशे., १. वेद जननिहार । २. वेद सम्बन्धी । सं. तत्सम

वैध-विशे., विधि (नियम) सँ समर्थित । सं. तत्सम

वैधानिक-विशे., राजकीय नियमानुकूल । सं. तत्सम

वैभव-सं., ऐश्वर्य शक्ति । सं. तत्सम

वैमनस्य-सं., आन्तरिक विरोध । सं. तत्सम

वैमान-विशे., असत्यवादी । बेइमान । उ. तद्भव

वैयाकरण-विशे., व्याकरण शास्त्र जनैवाला । सं. तत्सम

वैयाह-विशे., पेट मे वायु विकार उत्पन्न करैवाला । सं. तत्सम

वैर-सं., विरोध, शत्रुता, अरारि । सं. तत्सम

वैरी-विशे., शत्रु । स्त्री० वैरिन । सं. तत्सम

वैशाख-सं., मास विशेष । मै.

वैशाखनन्दन-सं., गदहा (पशु) । सं. तत्सम

वैशाखी-सं., पङ्गु लोकक चलैक हेतु कृत्रिम लाठी वाला टाङ । मै.

वैँशबनियाँ-विशे., वैश्यजातिक व्यापारी । मै.

वैँस-सं., वयस, आयु । सं. तद्भव

श

श्मशान-सं., मरघट । सं. तत्सम

श्याम-विशे., कारी रंग एवं कारी रंगवाला । सं. तत्सम

श्रद्धा-सं., ककरो प्रति अन्तःकरणक पवित्र आस्था । सं. तत्सम

श्राद्ध-सं., मृतकक हेतु दान कर्म । सं. तत्सम

श्रद्धेय-विशे.,श्रद्धाक योग्य । सं. तत्सम

श्रम-सं., खटनी, मेहनत । सं. तत्सम

श्रमण-विशे., जातिक अभिमान छोड़ि बौद्ध सम्प्रदाय मे रहनिहार । सं. तत्सम

श्रमिक-विशे., मजदूर, बोनिहार । सं. तत्सम

श्रवण-सं., सुनैक चेष्टा । सं. तत्सम

श्रान्ति-सं., थाकनि । सं. तत्सम

श्राप-सं., शाप, अशुभ वचनक चोट । मै.

श्री-सं., शोभा, लक्ष्मी । सं. तत्सम

श्रुति-सं., वेद वा वेदांग । सं. तत्सम

श्रेष्ठ-विशे., १. पैघ । २. उत्तम । ३. वयसँ बहुत जेठ । सं. तत्सम

श्रोत्रिय-विशे., वैदिक आचरण करनिहार, वेद जननिहार । सं. तत्सम

श्लाघा-सं., हार्दिक स्नेह सँ सागल मेल मिलाप । सं. तत्सम

श्लील-विशे., सभ्य वचन आ कर्म। सं. तत्सम
श्लोक-सं., लय आ गतिबद्ध पद्य। सं. तत्सम
शक्कर-सं., १. चीनी। २. सुखाएल (रवाकृत) गुड़। मै.
शक्की-विशे., सन्देही। मै.
शक्ति-सं., बल, दम। सं. तद्भव
शक-सं., १. बल। २. शंका। मै.
शकट-सं., ताङ्गागाड़ी। सं. तत्सम
शंका-सं., १. सन्देह। २. आपत्ति। ३. भय। सं. तत्सम
शंकालु-विशे., शंका कयनिहार। सं. तत्सम
शंकित-विशे., सन्देह मे पड़ल, डेराएल। सं. तत्सम
शकुन-सं., शुभ सम्भावना। सगुन। सं. तत्सम
शंख-सं., समुद्री जीवक कठोर हड्डीवाला चमड़ा। सं. तत्सम
शंखाचूड़ी-सं., शंखक बनल चूड़ी। सं. तत्सम
शत्रु-विशे., बैरी। सं. तत्सम
शत्रुता-सं., बैर। सं. तत्सम
शतक-सं., एक सै वर्षक मान। सं. तत्सम
शताब्दी-सं., एक सै वर्षक अवधि। सं. तत्सम
शतावरी-सं., जड़ी, औषध विशेष। मै.
शनि (शनैश्वर)-सं., ग्रह विशेष। मै.
शनैचरी-सं., शनि दिन कैं गुरु पूजाक सात्विक रीति। मै.
शपथ-सं., बातक सत्यताक प्रतिज्ञा। असत्य भेने अशुभकामना। मै.
शपथ शपतान-सं., परस्पर शपथ खाइक कम। मै.
शब्द-सं., कान सँ सुनैवाला ध्वनि। सं. तत्सम
शब्दब-क्रि., ध्वनि करब। मै.
शब्दाएब-क्रि., ध्वनि कराएब। मै.
शबर-सं., भिल्ल जाति। सं. तत्सम
शमन-सं., शान्त करैक मिझबैक चेष्टा। सं. तत्सम
शय्या-सं., बिछाओन। सं. तत्सम
शयन-सं., सूतैक कम। सं. तत्सम
शर्म-सं., १. संकोच। २. सुख। उ./सं. तत्सम
शर-सं., बाण। सं. तत्सम
शरण-सं., आश्रय। सं. तत्सम
शरणागत-विशे., रक्षाक हेतु आश्रय मे आएल। सं. तत्सम

शरद-सं., ऋतु विशेष। सं. तत्सम
शरपत-सं., धारदार पातवाला मोट डाँटक सरहीक प्रभेद। मै.
शरबत-सं., अनेक स्वादिष्ट मसालावाला चीनी के घोरि मधुर पेय। मै.
शरम-सं., लाज। उ. तद्भव
शरमाएब-क्रि., लजाएब। मै.
शराप-सं., देखू—"श्राप"। मै.
शरापब-क्रि., शराप देब। मै.
शराब-सं., मद्य। उ. तद्भव
शराबी-विशे., मदिरा (दारु) पीबैवाला। उ. तत्सम
शरारति-सं., उपद्रवयुक्त हँसी ठट्ठा। उ. तद्भव
शरीर-सं., अंग, देह। मै.
शल्य-सं., चीर फाड़, काँट। सं. तत्सम
शलाका-सं., काठी, काँटा। सं. तत्सम
शशि -सं., चन्द्रमा। सं. तत्सम
शस्त-विशे., प्रशंसनीय, प्रसिद्ध, सुलभ, कम दामवाला। मै.
शस्तौआ-विशे., कम दामवाला। मै.
शहतीर-सं., कोठाक छतक आधार स्वरूप मोट सक्कत आ नमहर काठ। मै.

शा

शाक-सं., १. वर्षक नाम। २. साग। सं. तत्सम
शाखा-सं., १. डारि। २. (लाक्षणिक) सन्तान। सं. तत्सम
शाड़ी-सं., नारीक पहिरैक विशेष प्रकारक नुआ। मै.
शान्त-विशे., चैन भेल। मिझाएल। सं. तत्सम
शान्ति-सं., निचैनी। सं. तत्सम
शान-सं., गौरव, ठाट बाट, दर्प। उ. तत्सम
शाप-सं., देखू—"श्राप"। सं. तत्सम
शापित-विशे., सरापल। सं. तत्सम
शाब्दिक-विशे., १. शब्दशास्त्र जनैवाला। २. शब्द सँ कहल। सं. तत्सम
शाल-सं., धरातल मे (भूमि मे) गड़ल हड्डी (जीवाश्म) आदि अपवित्र वस्तु एवं गाछ आदिक जड़ि। मै.
शाल-सं., ओढ़ैक लेल विशेष प्रकारक ओढ़ना। अं. तद्भव

शालब-क्रि., लकड़ी कें काटि छीलिकय काज आ वस्तुक योग्य बनाएब । मै.

शाला-सं., कुटी, घर, फूसक घर । सं. तत्सम

शालि-सं., फसिल, सस्य, जजात । सं. तत्सम

शाली-विशे., १. विशिष्ट गुणवाला । २. पत्नीक छोटि बहिन । सं. तत्सम

शाबर मन्त्र-सं., आदिवासीक प्राचीन कालक सिद्ध मन्त्र । मै.

शासक-विशे., शासन (हुकूमति) कयनिहार, संविधानक रक्षक, राजा । सं. तत्सम

शासन-सं., नियमक बन्धन । हुकूमति राजकीय संविधान । सं. तत्सम

शाहखर्ची-विशे., बनेर अनावश्यक खर्च कयनिहार । मै.

शाही-विशे., साम्राज्यक वस्तु, राजकीय सम्बन्ध वाला । उ. तत्सम

शाही-सं., सल्लकी, नमहर काँटवाला रोइआँ भरल जानवर । मै.

शि

शिक्षक-विशे., शिक्षा देनिहार । सं. तत्सम

शिक्षण-सं., पढ़ौनी । सं. तत्सम

शिक्षा-सं., दृश्य अदृश्य ज्ञानक अर्जन ज्ञान विज्ञानक बोध । सं. तत्सम

शिक्षित-विशे., पढ़ल लिखल । सं. तत्सम

शिकार-सं., हिंसक पशुक मारैक कलापूर्ण मनोरञ्जन । पाल । मै.

शिकारी-विशे., शिकार खेलयनिहार । मै.

शिखा-सं., १. आगिक धधरा । २. दीपक राशि । ३. माथक टीक । सं. तत्सम

शिकनी-सं., उपाधि, सिदहा । उ. तत्सम

शिताएब-क्रि., शीत (ओस) सँ भीजब । मै.

शिताहल-विशे., शीत भरल । मै.

शिया-सं., मुसलमानक एक सम्प्रदाय । उ. तत्सम

शियार-सं., गीदड़ । शृगाल । मै.

शिर-सं., माथ । सं. तद्भव

शिरमा-सं., सुतै मे माथ दिसक स्थान । मै.

शिरमौर-सं., माथ परक मुकुट, मुरेठा । पाग । मै.

शिरशिराएब-क्रि., अधिक जाड़ सँ विकल होएब । मै.

शिरहर-सं., शुभकाल मे शिर पर राखल मंगल घट । मै.

शिरहर प्रणामी (सलामी)-सं., मंगल घट आ कुल देवता लग देबाला द्रव्य (मुद्रा) । मै.

शिरहौना/शिरहौनी-सं., माथ तर रखैक साधन, तकिया, मेरुआ । मै.

शिराएब-क्रि., नीर पकड़ब, शिरा बढ़ब । मै.

शिराह-विशे., शिरा भरल, पैघ नीरवाला । मै.

शिरआ-सं., जूड़शीतल । मै.

शिल्क-सं., रेशमी कपड़ा । अं. तत्सम

शिल्ल-सं., बड़का मोट काठ (गाछ) क अंश । (टुकड़ा) । मै.

शिल्ला-सं., छोट मोट पाथर वा लकड़ीक टुकड़ा । मै.

शिल्ली-सं., १. पक्षी विशेष । २. ओलाओल धानक नामानामी ढेरी । मै.

शिलतोड़-विशे., परस्पर स्नेह सद्भाव कें नष्ट करैवाला । मै.

शिलशिला-सं., क्रम, डाठी, परम्परा । मै.

शिला-सं., पाथरक बड़का टुकड़ा, पाषाण खण्ड । सं. तत्सम

शिलौट-सं., शिलाखण्डक बनाओल मसाला आदि लोढ़ी सँ पीसैक योग्य पाथरक पट्टा । मै.

शिव-सं., १. महादेव । २. कल्याण । मै.

शिवदूती-सं., दैवी शक्ति । मै.

शिव निर्माल्य-सं., (लाक्षणिक) व्यवहार मे अयोग्य दोषावह । मै.

शिवराति-सं., शिव पार्वतीक विवाहक पर्ववाला राति । फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी । मै.

शिवालय-सं., शिवमन्दिर, शिवक उपासनाक स्थल । सं. तत्सम

शिविर-सं., खेमा, कैम्प, अस्थायी कृत्रिम वास । सं. तत्सम

शिवोत्तर-सं., शिव पूजाक व्यवस्था हेतु शिवमन्दिर मे देल धन आ भूमि । सं. तत्सम

शिशियाएब-क्रि., शीत्कार करब, मुह सँ सी सी शब्द करब । मै.

शिशिर-सं., ऋतु विशेष, वसात सँ उत्पन्न जाड़क समय । मै.

शिष्ट-विशे., सभ्यता आ विनयशीलता भरल लोक। सं. तद्भव

शिष्टता-सं., विनय, विवेक आ सभ्यता भरल गुण। सं तद्भव

शिष्टाचार-सं., विवेक। विनय भरल सभ्य व्यवहार। सं. तत्सम

शिष्य-विशे., चेला। छात्र। सं. तत्सम

शिहाएब-क्रि., अपन उत्तम वस्तु देखाकय अनका सेहन्ता आ लोभ जगाकय दुखी बनाएब। मै.

शी

शी !!-अव्यय, अनका चुप रहैक संकेत शब्द। मै.

शीघ्र-अव्यय, झबसन, जल्दी। सं. तत्सम

शीघ्रता-सं., अगुताइ। जल्दीबाजी। सं. तत्सम

शीटशाट-सं., सजबैक प्रक्रिया, प्रसाधन। मै.

शीत-सं., १. ओस विन्दु, ठन्हा (गुण)। विशे., २. ठन्हापन भरल। सं. तत्सम

शीतकाल-सं., जाड़क मास। सं. तत्सम

शीतल-सं./विशे., ठन्हा। स. तत्सम

शीतला-सं., मैया, देवी विशेष। सं. तत्सम

शीरक-सं., तूर भरल ओढ़ना, तुराइ, रजाइ। मै.

शीरा-सं., १. गृह देवताक कल्पित स्थान। २. छागरक मूड़ा। मै.

शीरा आगू-अव्यय, कुल देवीक आगाँ मे। मै.

शील-सं., नीक स्वभाव आ गुण। सं. तत्सम

शीलहरण-सं., महिलाक स्त्रीत्वक अपमान, बलात्कार। सं. तत्सम

शीशी-सं., काचक बनल गोलायम आ नाम छोट पेंच बासन। मै.

शीस-सं., माथ। हि. तत्सम

शीस झुकाएब-क्रि., माथाँ नमाएब, प्रणाम करब। मै.

शु

शुक्र-सं., १. दिन विशेष। २. ग्रह विशेष। ३. वीर्य। मै.

शुक-सं., १. पौराणिक मुनि। २. सुग्गा। सं. तत्सम

शुग्गर-सं., पिनाजोन हिंसक पशु विशेष। शूकर। सं. तद्भव

शुचि-विशे., पवित्र। सं. तत्सम

शुचि आचार-सं., पवित्र आचरण। सं. तत्सम

शुँठियाएब-क्रि., भूख पियास कष्ट सँ शरीरे सुखा जाएब। मै.

शुद्ध-विशे., १. स्वच्छ, पवित्र। २. शुभ कार्य करैक समय, लगन। सं. तत्सम

शुदि-सं., मासक इजोरिया पक्ष। मै.

शुभ-सं., मंगल, कल्याण। सं. तत्सम

शुभाशीः-सं., मंगल होइक आशीर्वाद। सं. तत्सम

शुभाकांक्षा-सं., कल्याण कामना। सं. तत्सम

शुष्क-विशे., सुखाएल। सं. तत्सम

शू

शूक-सं., अत्यन्त मेहीं भोंकाइवाला नाम पदार्थ। सूँघ (धानक दाना परक सूँघ)। सं. तत्सम

शूट-विशे., १. घाइल, आहत। अं. तत्सम

शूँठि-सं., सोधल आ सुखाएल आद। मै.

शूद्र-सं., सेवावृत्तिवाला वर्ग, जाति। सं. तत्सम

शून्य-विशे., खाली, रिक्त मै.

शून्यता-सं., खालीपन। मै.

शूप-सं., फटकै झाड़ैवाला बाँसक बीनल गोल चाकर बासन। मै.

शूर-विशे., साहसी। सं. तत्सम

शूरवीर-विशे., साहसी लड़ाकू। सं. तत्सम

शूल-सं., १. अस्त्र विशेष। २. व्यथा। सं. तत्सम

शूलबाहि-सं., व्यथाक संग आओवाला मल। मै.

शृ

शृङ्ग-सं., १. पहाड़क शिखर। २. मालजालक माथ परक नाम हड्डी। सं. तत्सम

शृङ्गार-सं., १. सजावट, मण्डन। २. साहित्यिक (काव्य) क रस विशेष। मै.

शृङ्गारहार-सं., सिंहारक फूल। सं. तत्सम

शे

शेष-सं., अनन्त नाग। विशे., बचल, बाँकी। सं. तत्सम

शै

शैली-सं., १. ढाठी, ढंग। २. (लाक्षणिक) प्रेरणा। सं. तत्सम

शो

शो-सं., देखाओ। अं. तत्सम

शोक-सं. आन्तरिक पीड़ा। सं. तत्सम

शोख-विशे., चमच्छक द्वारें उद्दण्ड आ अशिष्ट । उ. तत्सम

शोग-सं., हार्दिक पीड़ा । सं. तद्भव

शोगाएब-क्रि., शोग सँ भरल रहब । मै.

शोच-सं., दुख सँ भरल समस्याक विचार । मै.

शोचना-सं., हरदम शोचैक क्रम । मै.

शोचब-क्रि., दुख आ समस्याक विषय मे विचार करब । मै.

शोथ-सं., अंगक स्वतः फूलि जाइक दोष । मै.

शोध-सं., १. कोनो वस्तु कें विकारहीन बनबैक प्रक्रिया । २. कोनो विषयक रहस्य वा तत्व कें प्रकाश मे अनैक चेष्टा । सं. तत्सम

शोधब-क्रि., १. परिस्कृत करब । २. सत्यानाश करब । सं. तत्सम/मै.

शोफा-सं., कोठाक परिसरक साज सज्जा । अं. तत्सम

शोफासेट-सं., विश्रामप्रद गद्दीदार पैघ कुर्सी । अं. तत्सम

शोभा-सं., कान्ति, छवि लावण्य, सौन्दर्य । सं. तत्सम

शोभायमान-विशे., शोभित होइत । सं. तत्सम

शौ

शौँख-सं., वासनामय भावना । मै.

शौँख मनोरथ-सं., वासना पूर्तिक अभिलाषा । मै.

शौच-सं., मलत्यागक उपरान्त शुद्धीकरण । सं. तत्सम

शौचालय-सं., मलत्यागक स्थान । अंगक परिष्कारक घर । पैखाना । सं. तत्सम

शौँट-सं., १. संशेषण । २. झटका । अं. तत्सम

शौर्य-सं., युद्ध करैक साहसिकता आ निपुणता । सं. तत्सम

शौरा-सं., माछ विशेष । मै.

ष

षट्-सं., छ संख्या । सं. तत्सम

षट्कर्मी-विशे., पूजापाठ सम्बन्धी अनेक कर्मक नियम रखैवाला । मै.

षटरस-सं., छवो रसवाला अँचार । मै.

षटराग-सं., स्नेह आवेसक लोक देखाओ । मै.

षटरास-सं., नियम निष्ठाक केवल आडम्बर । मै.

षडङ्ग-विशे., छ अंगवाला वेद । सं. तत्सम

षड्ज-सं., संगीतक साती स्वर मे पाँचम 'प' स्वर । सं. तत्सम

षड्ंश-सं., छठम अंश. प्राचीन राजाक कर । छठमी हिस्सा । सं. तत्सम

षष्ठ-विशे., छठम । सं. तत्सम

षष्ठिका/षष्ठी-सं., १. बाल कल्याणकारिणी देवी । २. पक्षक छठम तिथि । सं. तत्सम

षो

षोड़शी-विशे., विशेष लक्षणयुक्त सोलह वर्षक युवती । सं. तत्सम

षोड़शाब्दी-सं., सोलह वर्षक अवस्थाक प्रसव । सं. तत्सम

स

स्कन्द-सं., पार्वतीक पुत्र, कार्तिकेय । मै.

स्कन्ध-सं., कन्धा, कन्हा । सं. तत्सम

स्कार्फ-सं., बालचर सैनिक सबक चिह्न स्वरुप वस्त्र खण्ड । अं. तत्सम

स्खलन-सं., अपन स्थान सँ पिछड़ब । सं. तत्सम

स्तन-सं., नारीक छातीक विशेष अंग । थन । सं. तत्सम

स्तव-सं., प्रशंसा वाक्य । सं. तत्सम

स्तुति-सं., देखू—"स्तव" । सं. तत्सम

स्तोत्र-सं., देवताक प्रसन्नताक हेतु महत्वक वाक्य । सं. तत्सम

स्थान-सं., ठाम । सं. तत्सम

स्थानीय-विशे., अपन क्षेत्रवाला । सं. तत्सम

स्थावर-विशे., १. वृक्ष, नै चलै फिरैवाला । २. अचल रहैवाला पदार्थ । सं. तत्सम

स्थिति-सं., हालि, हालत, अवस्था, रहैक ठेकान । सं. तत्सम

स्थिर-विशे., चञ्चलतारहित । सं. तत्सम

स्थूल-विशे., अत्यन्त मोट सोंट । सं. तत्सम

स्नपन-सं., देवता पर जल आदिक द्वार धारा । सं. तत्सम

स्नान-सं., नहाएब । सं. तत्सम

स्नेह-सं., निःस्वार्थ हार्दिक प्रेम । सं. तत्सम

स्नो-सं., १. शीतल सुरभित शृङ्गारक उपयोगी मुहक लेप । २. बर्फ । अं. तत्सम

स्पष्ट-विशे., स्पष्ट । साफ । सं. तत्सम

स्पष्टीकरण-सं., बेकछाकय प्रकाशन । सं. तत्सम

स्मरण-सं., सुमिरन, सुधि । सं. तत्सम

स्मृति-सं.,१. स्मरण । २. मानव धर्मक मूल ग्रन्थ । सं. तत्सम

स्याख-सं., धृष्टतापूर्ण बातक उघारि । मै.

स्यार-सं., सियार । मै.

स्याहु-सं., चमत्कारी रंग । मै.

स्याही-सं., १. रोसनाइ । २. तासक कारी पानक पत्ती । मै.

स्यौं-सं., सेब फल । काश्मीरी फल । मै.

स्खलित-विशे., चूकल । सं. तत्सम

स्राव-सं., चूऐक गति कम । सं. तत्सम

स्व-सर्व., अपन । अपनै आप । सं. तत्सम

स्वगत-अव्यय, अपनै आप । सं. तत्सम

स्वच्छ-विशे., चिक्कन, साफ, उज्जर । सं. तत्सम

स्वतः-अव्यय, अपनै आप, स्वभावें । सं. तत्सम

स्वप्न-सं., निद्रा एवं भिद्रा मे चरित्र दर्शन । सं. तत्सम

स्वप्नदोष-सं., सूतल (निद्र) मे सपना सँ वीर्य्यपातक कम । सं. तत्सम

स्वभाव-सं., प्रकृति । सं. तत्सम

स्वयम्-अव्यय, अपनै । सं. तत्सम

स्वर्ग-सं., देवलोक । मै.

स्वर्गीय-विशे., स्वर्ग मे रहनिहार । सं. तत्सम

स्वर-सं., १. मुह आदिक विशिष्ट ध्वनि । २. व्यंजन अक्षरक उच्चारण सहायक मात्रा वर्ण (अ, आ इत्यादि)। ३. वेद एवं संगीतक भास । ४. सा रे ग म······सातो स्वर । सं. तत्सम

स्वरस-सं., अपन मन्तव्य, विचारक ध्वनि । सं. तत्सम

स्वरूप-सं., वर्ण, आकार । सं. तत्सम

स्वस्ति-सं., शुभकामना । सं. तत्सम

स्वस्तिक-सं., कल्याण सूचक चिह्न । सं. तत्सम

स्वस्थ-विशे., नीरोग । सं. तत्सम

स्वांग-सं., कपट रूप । सं. तत्सम

स्वागत-सं., प्रशंसनीय आदरणीय आगमन । सं. तत्सम

स्वाती-सं., नक्षत्र विशेष । मै.

स्वाद-सं., रस रुचि । सं. तत्सम

स्वादिष्ट-विशे., नीक स्वादवाला । सं. तत्सम

स्वामी-विशे., १. पति । २. अधिकारी । सं. तत्सम

स्वार्थ-सं., अपन प्रयोजन । सं. तत्सम

स्वार्थी-विशे., अपने काज टा सँ प्रयोजन रखैवाला । सं. तत्सम

स्वास्थ्य-सं., आरोग्य । सं. तत्सम

स्वीकार-सं., मञ्जनाइ, मंजूरी । सं. तत्सम

स्वास-सं., जीव मात्रक नाक वा मुह द्वारा वायुक आकर्षण विकर्षण । श्वास । सं. तत्सम

स्वाहा-सं., होम मे आहुतिक समर्पण शब्द । सं. तत्सम

सइ-सं., गुप्त प्रेरणा । मै.

सक्कत-विशे., अत्यन्त कठिन, कठोर । मै.

सक्रिय-विशे., अपन उद्यम, चेष्टा आ व्यापार सँ भरल । सं. तत्सम

सक्षम-विशे., समर्थ, काजक योग्य । सं. तत्सम

सक-सं., बल, सामर्थ्य, शक्ति । मै.

सकचून-विशे., नीक जकाँ चूरल (सरस वस्तु लेल) । मै.

सकठे-अव्यय, सगरो । मै.

सकतगर-विशे., अधिक सक्कत, कठगरसन । मै.

सकदम-विशे., भय आ विस्मय सँ चेष्टाहीन । मै.

सकनाचूर-विशे., (सुखाएल वस्तु ले) नीक जकाँ चूरल । रत्ती रत्ती चूर्ण बनल । मै.

सकब-क्रि., काज मे शक्ति होएब । मै.

सकबक किछु नै बाजब-क्रि., किछु करैक हेतु अपन चेष्टा नहि रहब । सब प्रकारें बाधा रहब । मै.

सकबेध-सं., सक्कत क' क' घेरा, घैरन । मै.

सकबेधब-क्रि., सक्कत सँ घैरन (बेढ़) देब । मै.

सकरकन-सं., अल्हुआ । मै.

सकरता-सं., सामर्थ्य । मै.

सकरब-क्रि., कोनो कार्य मे उत्साह आ बल लगाएब । मै.

सकरांति-सं., संक्रान्ति । सं. तद्भव

सँकरी-विशे., संकुचित पातर छोट संकीर्ण । मै.

सकरौड़ी-सं., बुनिया आ मेवादय बनाओल विशेष दूधक विन्यास । मै.

सकल-विशे., सम्पूर्ण, अशेष । सबटा । सं. तत्सम

संकलन-सं., संग्रह, एकट्ठा करैक भाव । सं. तत्सम

सक लागब-क्रि., बल लागब, शारीरिक शक्ति होएब । मै.

सकलारिष्ट-सं., सब दोषक नाशक हेतु दान विधि । सं. तत्सम

सकलुच्ची-विशे., चंचलता भरल उकठ करैवाला बच्चा । मै.

सकसकाएब-क्रि., १. सक्कत भ' क' भरि जाएब अथवा बैसि जाएब (मुनना आदि) । २. स्तब्ध भ' जाएब । ३. आलसें असंधे करब । मै.

सकसब-क्रि., निपुन भ' जाएब, सक्कत सँ भरब । मै.

सकार-सं., स्वीकार, गछनाइ । मै.

सकारब-क्रि., मानब, स्वीकार करब । मै.

सकाल-सं., सवेर, सूर्य्योदयक उपरान्तक काल । मै.

सँकिआ-सं., कमारक अस्त्र विशेष । लोहू कें आ काठ कें सक्कत करैक यन्त्र । मै.

सकुचब-क्रि., लाजधाख सँ मन आ शरीर सँ समटि जाएब । ताप, बसात आ रगड़ सँ संकुचित भ' जाएब । चौकचि जाएब । मै.

सकुचाएब-क्रि., लजाएब । मै.

संकुचित-विशे., लजाएल, चौकरिआएल । मै.

संकेत-सं., गुप्त विशेष चेष्टा, इसारा । सं. तत्सम

सकेत/सकेस-विशे., सिकस्त, संकीर्ण, छोट स्थान । मै.

संकोच-सं., लाज, धाख । सं. तत्सम

संकोचित-विशे., लाजधाखक योग्य लोक । सं. तत्सम

सकोरा-सं., छौंकक आकारक अत्यन्त छोट माटिक बासन । सरबा । हि. तद्भव

संख्या-सं., गिनतीक अंक । सं. तत्सम

सँखारी-विशे., उपहँत, अपँत । मै.

सखा-विशे., संगी, मित्र । सं. तत्सम

सखापात-सं., सन्तान, शाखा पत्र । सं. तद्भव

सखारी-सं., वस्तुजात रखै लेल हाथक बीनल बाँसक काइमवाला चौतीसन पँप बासन । मै.

सँखिया-सं., महाविषक द्रव्य । मै.

सखी-विशे., स्त्री मित्र । मै.

सँखुआ-सं., साल वृक्ष । मै.

संग्रह-सं., सञ्चय, एकट्ठा करैक प्रवृत्ति । सं. तत्सम

संग्रहणी-सं., पेटक रोग विशेष । सं. तत्सम

संग्रही-विशे., सञ्चय (जमा) करैक प्रवृत्तिवाला । सं. तत्सम

संग-सं., सहगमन, मन वचन कर्म सँ सहयोग । मै.

संगठन-सं., दलक एकता । सं. तत्सम

संगति-सं., मेलजोल, सहवास । सं. तत्सम

संगम-सं., मिलान, प्रणय मिलान । सं. तत्सम

संगमर्मर-सं., उज्जर पाथर विशेष । मै.

सगबगाएब-क्रि., चेतना भरल होएब, संचार करब । मै.

सगबगी-सं., सञ्चार । मै.

संगलंग-अव्यय, एक लागल । मै.

सगर-विशे. सम्पूर्ण, सकल । भरि । मै.

सगरे/सगरो-अव्यय, सबठाँ, सर्वत्र । मै.

सगबा-विशे., साग खाकए मर्य्यादा रखैवाला । मै.

सगहा-विशे. निरामिष भोजन करैवाला । मै.

सगही-विशे., सगाइ (पुनर्विवाहवाली) पत्नी । मै.

सगाइ-सं., सम्बन्ध, पुनर्विवाह । मै.

सगाही-विशे., देखू—"सगही" । मै.

संगी-विशे., सहचर मित्र । मै.

संगीत-सं., बाजवाजक संग ताल लय पर गाओल जाइत गीत । सं. तत्सम

सगुन-सं., शुभ भावीक लक्षण । मै.

सगुन बान्ह-सं., बरेढ़ी पर चार (घरक ठाठ) चढ़ौलाक उपरान्त लागि धरबैले देल'वाला पहिल बन्धन । मै.

सगुनियाँ-विशे., शुभ लक्षणवाला । मै.

सगुन-सं., शुभ कार्यक सहयोगी पसारी कें पहिने दैवाला किछु द्रव्य । मै.

सगोत्र-विशे., एक गोत्रवाला । सं. तत्सम

सगोबगो-विशे., मनोरञ्जक भयंकर रूप ध' क' भिक्षाटनक व्यवसायी । मै.

संघटन-सं., ओरिआओन कय जमा करैक व्यापार । चेष्टा । सं. तत्सम

सँघाती-विशे., १. यात्राक दल मे रहैवाला, भेरिया। २. पटि बीनैक परतानक छेदक ब्यास। मै.

सङक सुख बनारस-लोकोक्ति, संगी रहनैं बनारस पूर्णक आनन्द भ' सकैये। संगीक महत्व। मै.

सङतुरिया-विशे., एकै वयसक संगी। मै.

सङर्व-विशे., संग संग रहनिहार। मै.

सङभार-सं., विदागरी मे कन्या वा वरक संग जाइवाला सौगाइत, उपहार। मै.

सङसङ-अव्यय, एकै संग। मै.

सङिता-विशे., एक वयसक अभिन्न मित्र। मै.

सङिलाम-सं., एक वयसक मित्रक संग परस्पर हँसी ठट्ठा। मै.

सङितारथ-सं., सङ्गीक भाव। मैत्री। मै.

सङील-विशे., सब विधियेँ युत। सभद्र। मै.

सच्चा-विशे., सत्य केँ पसिन्न कयनिहार। मै.

सचड़-विशे., उचित ढंग सँ झटदय काज करैक अवगतिवाला। मै.

संचब-क्रि., जमा करब। संग्रह करब। मै.

संचमंच-विशे., धैर्यपूर्वक स्थिर। मै.

संचय-सं., जमा, एकट्ठा, संग्रह। सं. तत्सम

संचर लागब-क्रि., तेजी सँ कोनो पाठ पढ़ै मे भ्रम सँ कतौ सँ कतौ पड़ऽ लागब आ चिन्हहु मे बिसरि जाएब। मै.

संच रहब-क्रि., स्थिर रहब, उछलकूद नै करब। मै.

संचार-सं., सगबगी, चेतना, अंगक चलन। सं. तत्सम

संचार लागब-क्रि., खाद्य एवं आनो वस्तुक विशिष्ट व्यक्तिक आगू सीटल सजाओल राखल रहब। मै.

सचिव-विशे., निकटवर्ती विचार विमर्श करैवाला। सं. तत्सम

सचेत करब-क्रि., सावधान करब, चेता देब। मै.

सज्जन-विशे., नीक लोक, विवेकशील। सं. तत्सम

सज्जित-विशे., सिंगारल, पहिरि ओढ़िकय महोमहा बनल। सं. तत्सम

सज्जी-सं., वस्त्र सँ मैल झाड़ैवाला रासायनिक पदार्थ। मै.

सजग-विशे., सावधान। मै.

सजन-विशे., प्रणयी, प्रियतम। स्त्री० सजनी। मै.

सजब-क्रि., बनि ठनिकय आ छीलि छालिकय सुन्दर बनब आ सुन्दर चिक्कन करब। मै.

सजबी-विशे., शुद्ध दूधक दही। मै.

सजमनि-सं., लत्तीवाला व्यञ्जन विशेष। मै.

सजमनियाँ-विशे., सजमनिक आकार प्रकारवाला। मै.

सजल-विशे., १. जल भरल। २. चिक्कन कयल। मै.

सजाएब-क्रि., अलंकृत करब। सुन्दर बनाएब। मै.

सजाओट-सं., सजबैक गुण, विशेषता। मै.

सजाओन-सं., सजबैक काज। मै.

सँजाप-सं., कपड़ाक आँचर मे जोड़ल अलंकारक विशेष वस्तु। मै.

सजीला-विशे., नीक जकाँ चिक्कन आ अलंकृत। मै.

सजैं-सं., दण्ड। उ. तद्भव

सजौआ-विशे., सजबैक योग्य। मै.

सजौड़ी-सं., सज। मै.

सझिया-विशे., अनेक पट्टीदारक अंशवाला। मै.

सझियासाझ-सं., सब हिस्सेदारक अधिकार। मै.

सँझिला-विशे., चारि मे तेसर सन्तान। मै.

सँझुका-विशे., साँझुक पहरवाला। मै.

सँझौती-सं., साँझ समयक काज। साँझुक बेरक दीप। मै.

सट्टा-सं., टाट फरक केँ ठाढ़ आ सक्कत रखैवाला खुट्टा। मै.

सट्टीपार-सं., (लाक्षणिक) जेना टाटक संग सट्टा समेत चोरा लैत अछि तेना एकक संग सब कथुक चोरि। मै.

सटकन-सं., पातर आ नमहर छौंकी। मारैक डण्टा। मै.

सटकब-क्रि., १. भय सँ नुका जाएब। भीतर मे छिपि जाएब। २. सिकुड़ब। मै.

सटक सीताराम-लोकोक्ति, तुरन्त भय सँ नुका जाइक प्रवृत्ति। मै.

सटका-सं., मारैवाला लचलच पातर डण्टा। मै.

सटकाएब-क्रि., तुरन्त समेटिकय नुका लेब। मै.

सटका लागब-क्रि., अनवधान मे नाम आ पातर वस्तुक (डण्टा) क झटका सँ चोट लागब। मै.

सट द'-अव्यय, अलक्षित रूपें तुरन्त । मै.

सटपट-अव्यय, लगले । मै.

सटब-क्रि., कोनो वस्तु मे भीरिकय लागि जाएब । सक्कत सँ भीरि जाएब । मै.

सटमसट-विशे., एक दोसरा सँ संकीर्ण भ' क' लागल । मै.

सटहा-विशे., अत्यन्त दुब्बर पातर । मै.

सटाएब-क्रि., कसिकय लागि कराएब । मै.

सटाक द'-अव्यय, लचलच पातर वस्तु सँ मारैक रूपें अचूक भ' क' । तुरन्त वा लगले । मै.

सटान सटब-क्रि., नहि छूटैवाला लागि धरा भीरब । मै.

सटिया-विशे., खुशामदें हरदम आगू पाछू लागल रहनिहार । मिलुआ । मै.

सटीक-विशे., अचूक, निश्चित लक्ष्य पर ठीक बैसैवाला, लागू होम'वाला । मै.

सटुआ-विशे., साटिकय, अलग सँ लागि धराकय दुरुस्त भेल । मै.

सटुआ साट-विशे., यत्र तत्र बेफरी (अलग) सँ जोड़ल खण्ड सँ कोनो प्रकारें निमहैवाला । मै.

सठब-क्रि., समाप्त होएब, नष्ट होएब, नि'घटि जाएब । मै.

सठाएब-क्रि., नि'घटाएब, समाप्त करब । मै.

सठि जाएब-क्रि., हीन भ' जाएब । ध्वंस होएब । मै.

सठियाएब-क्रि.,साठि वर्षक आयुक बूण भ' जाएब । साठिक लगभग वयस भ' जाएब । मै.

सड़क-सं., राजपथ । देशज

सड़कीया-विशे., सड़कक रक्षक एवं सड़क परक चट्टी (कर) लेनिहार । मै.

सड़ना-विशे., अधिक सड़ैक प्रकृतिवाला । मै.

सड़ब-क्रि., दुर्गन्ध भरि विकृत होएब । मै.

सड़र-सं., सुगन्धित, काठक धूपवाला हिमालयीय वनस्पति विशेष । मै.

सड़रा-सं., दीर्घकाल धरि चलैवाला विवाद । मै.

सड़लहा-विशे., विकृत बनलहा । मै.

सड़ल्लाही-विशे., अत्यन्त विकृतवाला । मै.

सड़सी-सं., लोहक पातर डंटा मे चुट्टा आगू मे दूनू जोटल आ वर्तन पकड़ै जोग मोड़ल वस्तु । मै.

सड़ाइन-विशे., सड़ल वस्तुक जकाँ दुर्गन्ध तथा सड़लसन भेल । मै.

सड़ाएब-क्रि., विकृत बनाएब, दूषित करब । मै.

सड़ाक द'-अव्यय,ऊपर दिस तेज वेग सँ । प्रयोग–"कल लगाकय पोखरिक पानि सड़ाक द' खींचि लेलकै ।" मै.

सड़ाठी-विशे., सड़ल जाड़वाला । मै.

सड़ारि-सं., अधिक तिलुक विवाद । मै.

सड़ाल-सं., मलत्यागक हेतु बनल गहींर गड्ढा । मै.

सड़ी-सं., लोहक वा काठक छोट छोट काटल टुकड़ा । मै.

सड़ुआ-विशे., सड़ल रहैवाला । मै.

सड़ुकी-सं., भेट (जल लत्ती) क कन्द । मै.

सड़ेरा-सं., गाछ वृक्षक नव चलल नाम आ पातर पैघ डारि । मै.

सड़ौआ-विशे., सड़ैवाला अथवा सड़बैवाला । मै.

सँड़हा-सं., साँढ़ (अनादर मे) । मै.

सण्ठी-सं., पटु आदि गाछक निःसार डाँट । मै.

सत-सं., सत्य । सं. तद्भव

सत्तरि-संख्या, शून्य एकाइ सात दहाइक अंक । मै.

सत्ता-सं., अधिकारक प्रभुता, शासन । सं. तत्सम

सत्ताइस-संख्या, सात एकाइ दू दहाइक अंक । मै.

सत्ती-विशे., सत्य रखैवाला । मै.

सत्तु-सं., गुड़ीच आदि सँ बहराएल तत्व । मै.

सत्तू-सं., सातु । मै.

सत्ते-अव्यय, सत्यपूर्वक । मै.

सत्तें-अव्यय, सात गुनें । प्रयोग–"दू सत्तें चौदह ।" मै.

सत्य-सं., यथार्थ बात । परमार्थ । असल । सं. तत्सम

सत्यदेव-सं., सत्य स्वरूप महान देवता । मै.

सत्यवादी-विशे., सत्ये टा बजैवाला । सं. तत्सम

सत्यसन्ध-विशे., सत्य प्रतिज्ञा करैवाला । सं. तत्सम

सत्यानाश-सं., सब विधिये विनाश । मै.

सत्यापन-सं., उच्चाधिकारी सँ सत्य बनाओल विषय प्रमाणित । सं. तत्सम

सत्र-सं., प्रतिवर्ष व्यवस्थित काजक आरम्भ करैक समयक मान। मै.

सत्रह-सं., सात एकाँइ एक दहाँइक अंक। मै.

सत्संग-सं., नीक, सज्जन आ पैघ लोकक सहवास। सं. तत्सम

सत्व-सं., १. जीव। २. गुड़ीच आदि औषधीय वस्तु सँ जमाओल सार पदार्थ। सं. तत्सम

सत-सं., प्रतिज्ञा। प्रयोग–"सत करु तखन कहब।" मै.

सत करब-क्रि., प्रतिज्ञा करब। मै.

सतगजा-विशे., सात गज (माप) बाला। मै.

सतजुग-सं., चारि युगक प्रथम युग, सत्ययुग। मै.

सतत-अव्यय, हरदम, सब काल। सं. तत्सम

सतधी-विशे., सौतिनिक बेटी। मै.

सतपुतिया-विशे., सातटाक झाबावाला। मै.

सतपुतोहु-विशे., सतौतक पत्नी। मै.

सतब-क्रि., दोसराक द्वारा पीड़ित होएब। मै.

सतबधि-सं., आपस मे कयल प्रतिज्ञा। लगाओल बाजी। बरजीत। मै.

सतबन्ती-विशे., सत्य पर चलैवाली। मै.

सतबन्हा-विशे., सात टा बन्धनवाला। मै.

सतबरिता-विशे., एक पतिक सत्यव्रत रखैवाली। मै.

सतभतरी-विशे., (गारि) सात टा भतार (पति) करैवाली। मै.

सतमसू-विशे., सातमे मासक गर्भक जनमल बच्चा। मै.

सतमाय-विशे., विमाता, मायक सौतिन। मै.

सतरकी-सं., शीघ्रता, जल्दीबाजी। मै.

सतरब-क्रि., काजक सम्हरब। मै.

सतरा-सं., धानक प्रभेद। मै.

सतरिया-सं., मेहीं, सुगन्धित धानक प्रभेद। मै.

सतसइ-विशे., सात सँक मानवाला। मै.

सतसासु-विशे., पति वा पत्नीक सतमाय। मै.

सतसीहुलि-सं., सेहन्ता पुरबैक निष्फल उत्कण्ठा। मै.

सतह-सं., धरातल। उ. तत्सम

सतहत्तरि-संख्या, सात एकाँइ सात दहाँइक अंक। मै.

सतहत्थी-विशे., सात हाथवाला। मै.

सताएब-क्रि., शोषण करब, पीड़ा देब। मै.

सतावन-संख्या, सात एकाँइ पाँच दहाँइक अंक। मै.

सतारब-क्रि., क्रमशः काज सम्पन्न करब। मै.

सतारि लागब-क्रि., सात दिनधरि लगातार बदरी (वर्षा) होएब। मै.

सतालू-सं., फल विशेष। मै.

सतासी-संख्या, सात एकाँइ आठ दहाँइक अंक। मै.

सतिया-सं., स्वस्तिक चिह्न। मै.

सती-विशे., पतिक सहगामिनी नारी। सं. तत्सम

सती-अव्यय, बदला मे। स्थान मे। प्रयोग–"बेतनक सती नेना तें नै काज करतै।" मै.

सतीत्व-सं., सती स्त्रीक धर्म, गुण, प्रभाव। सं. तत्सम

सतील करब-क्रि., बात कें साबित करब। प्रमाणित करब। मै.

सती प्रथा-सं., पतिक संग जीवित पत्नियोक जरबैक प्रचलन। मै.

सती होएब-क्रि., पतिक मृत्यु भेने पत्नीक स्वतः प्राण त्यागब। मै.

सतुआ-सं., सातु। मै.

सतुआइन-सं., मेष संक्रान्तिक पावनि। मै.

सतौआ-विशे., सतबैवाला। मै.

सतौत-विशे., सौतिनिक बेटा। मै.

सथारब-क्रि., कनेक विश्राम क' लेब। मै.

सद-विशे., सज्जन। मै.

सदच्छन-अव्यय, सब काल। मै.

सदति-अव्यय, हरदम। मै.

सदबद-विशे., कम झोरवाला खटपटी तरकारी। मै.

सदबदी-सं., खटपटी तरकारी। मै.

सदर-सं., मुख्यालय। उ. तत्सम

सदस्य-विशे., समितिक चुनल व्यक्ति। सं. तत्सम

सदा-अव्यय, सब काल। सं. तत्सम

सदावर्त-सं., प्रतिदिन लोक के हरदम दान करैक प्रवृत्ति। मै.

सदाय-सं., मुसहर जाति। मै.

सदिखन-अव्यय, हरदम। मै.

सदी-सं., एक सौ वर्षक मान, शती। सं. तद्भव

सबूल-सं., बहुत पैघ पक्षी विशेष । मै.
सवृश-विशे., समान । सं. तत्सम
सदै-अव्यय, सब समय । मै.
सबोबदो-विशे., पहिरना ओढ़ना समेत तीतल । मै.
सधब-क्रि., समाप्त होएब । निंघटि जाएब । मै.
सधम बधम होएब-क्रि., लेन देन बराबरि भ' क' देनक चुकता भ' जाएब । मै.
सधवा-विशे., पति जीवैवाली, सोहागिन । मै.
सधाएब-क्रि., चुकता क' देब । मै.
सधान-सं., चुकता करैक क्रम । मै.
सधुआनि-विशे., साधु बनल स्त्री । मै.
सधोरि-सं., गर्भिणीक इच्छा कयल सनेस । मै.
सधौआ-विशे., सधबैवाला । मै.
सधौआ पटैआ-सं., यावत् रीन सधे तावत् खेतक उपजा रीनक तरें लैक नियम । मै.
सधौनिहार-विशे., सधबैवाला । मै.
सन्त्रस्त-विशे., अत्यन्त डेराएल । मै.
सन्त-विशे., महात्मा । मै.
सन्तति-सं., पुत्र पौत्रादि जरोह । मै.
सन्तो-अव्यय, एक क्रियाक समाप्त भेला पर तुरन्त दोसर क्रियाक होइक चिह्न । प्रयोग—"हमरा गेला सन्तो गप्प बन्न भ' गेलै ।" मै.
सन्तान-सं., अपन आसूक पालि । मै.
सन्तानबे-संख्या, सात एकाइ नौ दहाइक अंक । मै.
सन्तानी बधानी-विशे., जन आ पशुधन भरल । मै.
सन्ताप-सं., आन्तरिक सोन सँ उत्पन्न दुःख । सं. तत्सम
सन्तोष-सं., धैर्य, सबूर । सं. तत्सम
सन्तोषी-विशे., धैर्य धरैवाला केहनो स्थिति मे सुखी रहैवाला । सं. तत्सम
सन्तोषब-क्रि., आश्वासन दय धैर्य धराएब । मै.
सन्दिग्ध-विशे., सन्देह करैक योग्य । सन्देह मे आएल । सं. तत्सम
सन्देह-सं., शंका, शक, संशय । सं. तत्सम
सन्ध्या-सं., साँझ समय । सं. तत्सम
सन्धान-सं., ठेकान, पता । अन्वेषण । सं. तत्सम
सन्धि-सं., १. जोड़ । २. मेलजोल । सं. तत्सम
सन्धुकवा-सं., काठक छोट बकसा । मै.
सन्धूक-सं., काठक बड़का मञ्जूषा । मै.
सन्न द'-अव्यय, अत्यन्त तेजी सँ । (दौड़ब, बाण चलब, कोप होएब अर्थ मे) । मै.
सन्न रहब-क्रि., अचानक अप्रत्याशित भय विस्मय आ शोक सँ ज्ञानशून्य होएब । मै.
सन्नाबट्टा-विशे., चूरि पीसि क' एकैठाँ सब वस्तु केँ मिला देल । मै.
सन्निपात-सं., कफ पित्त आ वात तीनूक उत्तेजित भेला सँ भयंकर ज्वर । सं. तत्सम
सन्नीसन्नी उड़ब-क्रि., एक एक सूतक विच्छिन्न होएब । मै.
सन्न्यास-सं., चारिम आश्रम, संसारक विषय वासना सँ वैराग्य । सं. तत्सम
सन्न्यासी-विशे., वैरागी, विषय वासना सँ मुक्त । सं. तत्सम
सन्हि फाड़ब-क्रि.,१. चोरक संकीर्णतो मे घोंसिआएक चेष्टा करब । २. (लाक्षणिक) विरोध जगबैक लेल छिद्र बनाएब । मै.
सन्हिआएब-क्रि., संकीर्ण स्थान मे प्रवेश करैक चेष्टा करब । छिद्र मे पैसाएब । मै.
सन-सं., पटुआक छालक रस्य, सनकल तन्तु । शण । सं. तद्भव
सनक-सं., १. उन्माद । २. अचानक क्रोधक वेग । मै.
सनकब-क्रि., १. विक्षिप्त (बताह जकाँ) बनब । २. एकाएक तमसा उठब । मै.
सनकाह-विशे., मति विक्षेपवाला, झोंकाह, अचानक तुरन्त क्रोध क' उठैवाला । मै.
सनकिरबा-सं., कीड़ा विशेष । मै.
सनकी-सं., १. मति विक्षेप । २. एकाएक तमसा जाइक गुण । मै.
सनगोद-विशे., पूरा पूरी अत्यन्त भीजल । मै.
सनगोहि-सं., थलचर छोट जन्तु । मै.
सनटिटही-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त दुर्बल । सटनी सँ क्षीण । मै.
सनपटुआ-सं., सन उपजैवाला फसिल । मै.
सनसन करब-क्रि., १. बल आ क्रोधक गर्व आवेग मे उत्तेजित होएब । २. बरिसैक हेतु मेघक स्थिति होएब । मै.

सनसनाएब-क्रि., १. वसातक वेग सँ 'सनसन' ध्वनि होएब। २. कानक विकार सँ 'सनसन' जकाँ ध्वनिक अनुभव होएब। ३. क्रोधक उत्तेजना होएब। मै.

सनसनी-सं., १. वेगक शब्द। २. बलक घमण्ड सँ क्रोधक उत्तेजना। मै.

सनहा-सं., चोरि आदिक वार्ता। मै.

सनाएब-क्रि., (लाक्षणिक) ककरो कथल अपराध मे बल सँ दोषी बनाओल जाएब। सानल जाएब। मै.

सनातन-विशे., भूत भविष्य आ वर्तमान काल मे एके रंग रहैवाला। मै.

सनाक द'-अव्यय, अत्यन्त वेग सँ। मै.

सनाथ-विशे., सहायक संरक्षकयुक्त। मै.

सनाथ करब-क्रि., (लाक्षणिक) तूरि (नष्ट) क' देब। मै.

सनान-सं., स्नान। प्रयोग—"जनम कृतारथ एकहि सनाने।" मै.

सनाहु-सं., जाँच कय विषयक सत्यताक ज्ञान। विशे., मेहीं तन्तु भरल आम आदि फल। मै.

सनीफ-अव्यय, समीप सं. तद्भव

सनुआ-विशे., सानि कय बनाओल। मै.

सनेस-सं., उपहार, सौगाइत। सन्देश। मै.

सनैं-सं., खेत मे उपजैवाला फसिल विशेष। मै.

सनोहब-क्रि., महिस गै कें दुहिकय दूधक परिमाणक ज्ञान करब। मै.

सनौआ-विशे., सानिकय बनैवाला। मै.

सप्तमी-सं., मासक सातम तिथि। सं. तत्सम

सप्ता विपता कथा-सं., स्त्रीगण सभक चैतक पहिल दिन डोरा बन्हैक पर्व। मै.

सप्ताह-सं., सात दिनुक परिमाण सं. तत्सम

सप्पत-सं., शपथ। सं. तद्भव

सप-सं., वार्तालाप, (गप) सप। मै.

सपटा-सं., सन पटुआक सूतक बनल वस्त्र। मै.

सपटब-क्रि., १. सहायताक हेतु प्रस्तुत होएब। २. मेल लगबैक चेष्टा करब। मै.

सपठाएब-क्रि., १. दोसराक बड़दक संग मेल लगा कय जोत करै मे जोड़ा लगाएब। २. काजक हेतु सहायता ले तैयार करब। मै.

सपठैत-विशे., बड़दक जोड़ा लगाकय जोतै केर मेल रखनिहार। मै.

सपत खाएब-क्रि., शपथ करब। मै.

सपयक-विशे., साँपक काटल विष भरल। मै.

सपना-सं., निन्द मे प्रत्यक्ष जकाँ दृश्यक दर्शन। मै.

सपनाएब-क्रि., निन्न मे भय आदि दृश्य सँ डेरा उठैक चेष्टा होएब। स्वप्न देखब। मै.

सपनौती-विशे., सपनें मे सीखल। मै.

सपनोर-सं., बिज्जी, छोट जंगली जन्तु। मै.

सपरतीब-विशे., सप्रतिभ (विध्वंसक रूपें) बड़ बुद्धि भरल। मै.

सपरब-क्रि., मानसिक रूपें वृत्त होएब। मन मे ठानब। मै.

सपहरब-क्रि., साँपक कटला सँ विष भरल होएब। मै.

सपहरा-विशे., साँप बझाकय पकड़ैवाला सपेरा। मै.

सपहा-विशे., साँपक कटने मूइल। मै.

सपहरिया-विशे., साँप मारिकय खाइवाला। मै.

सपाट-विशे., एक रंग चौरस। मै.

सपाटू-सं., फल विशेष। मै.

सपिण्ड-विशे., पिता, पितामह, प्रपितामह पर्यन्तक सम्बन्धी। मै.

सपूत-विशे., सज्जन, सुशील आ कर्तव्यनिष्ठ पुत्र। मै.

सपेत-विशे., उज्जर, स्वेत। मै.

सपेता-सं., आम विशेष। मै.

सपेरा-विशे., साँप पकड़ैवाला। मै.

सपोट-सं., समर्थन। सहायता। अं. तत्सम

सफका-विशे., साफ (स्वच्छ) वाला। मै.

सफगोल-सं., इसफगोल, औषधवाला अन्न। मै.

सफर-सं., प्रवास यात्रा। उ. तद्भव

सफरब-क्रि., नेन्ना आ पशुक मल छोड़ब। मै.

सफरिया-विशे., पर्यटनक उपयुक्त। मै.

सफरी-विशे., सफरे मे काज अबैवाला। मै.

सफल-विशे., सार्थक। मै.

सफलाइ-सं., वस्तुजात व्यवस्थित कय वा हटाकय स्थानक स्वच्छता। मै.

सफली-सं., फल विशेष, अनानास। मै.

सफा-विशे. स्वच्छ चिक्कन। उ. तत्सम

सफाइ-सं., स्वच्छता, चिकनाहटि । उ. तत्सम

सफाचट-सं., १. केश उड़बैवाला द्रव विशेष । २. सम्पूर्ण कयें समाप्ति । मै.

सफैया-सं., सफाइक काज । मै.

सब-सर्व., सकल । मै.

सब क्यो-अव्यय, जतेक जे से सब । मै.

सब जना-विशे., घरक सब लोकक निमित्तवाला । मै.

सबजी-सं., दूबि छारल सुन्दर भूमि । मै.

सबटा-अव्यय, सम्पूर्ण, सकल । अशेष । मै.

सबठाँ-अव्यय, सर्वत्र । मै.

सबतरि-अव्यय, सबठाँ, सर्वत्र । मै.

सबदिना-विशे., सब दिन होम'वाला । मै.

सबरङ-विशे., सब प्रकारक रंगवाला । मै.

सबरब-सं., बाँहि परक गहना विशेष । मै.

सबल-विशे., बलगर, सक्कर, दृढ़ । सं. तत्सम

संबल-सं., बटखर्चा, संगक आहार । सं. तत्सम

सबसब करब/सबसबाएब-क्रि., घिराक तन्तु सब मे सब दिस तनतनी भरब । मै.

सबा-विशे., सम्पूर्णक चारिम अंश समेतवाला मान। प्रयोग–"सबा हाथ, सबा सेर।" अर्थात् एक सेरक संग ओकर चौठाइ समेत । मै.

सबाइ-सं., रीनक (अन्नक रीन) एक मनक सबा मन । मै.

सबाद-सं., स्वाद । सं. तत्सम

सबार-विशे., अश्वारोही । मै.

सबार होएब-क्रि., १. यान (वाहन) पर चढ़ब । २. (लाक्षणिक) कोनो काजक हेतु ककरो पर तत्पर भ' क' प्रेरणा करब । मै.

सबारी-सं., यान, वाहन । चौपाला आ महफा लोकक द्वारा उठबैवाला । मै.

सबारी कसब-क्रि., मल्लाभ्यासक एक प्रक्रिया विपक्षीक पाछू चढ़ि ओकर अगिला धर पर अपन सम्पूर्ण भार देब । मै.

सबील-सं., उद्योग । उ. तत्सम

सबुजा रंग-सं., नील हरियर आ पीयर रंगक सम्मिश्रण । मै.

सबूर-सं., सन्तोष, आश्वासन । उ. तद्भव

सबूत-सं., प्रमाण । उ. तत्सम

सबेर-सं., सकाल, अति पहिने । मै.

सबैया-सं., १. सबा गुना । २. छन्द विशेष । मै.

सबैयें-अव्यय, सबा बेरें । मै.

सभ्य-विशे., नीक आचार व्यवहारवाला । मै.

सभ्यता-सं., लौकिक आचार व्यवहारक व्यवस्था । मै.

सभक-सर्व., सम्बन्धकारक । सब गोट एक । मै.

सभा-सं., अगणित लोकक सम्मेलन । मै.

सभागाछी-सं., वैवाहिक सभाक गाछी । मै.

सभैता-विशे., सभा मे सम्मिलित भेनिहार । मै.

सभैती-सं., एक गोलक विस्तृत क्षेत्र । मै.

सम्प्रति-अव्यय, अखन । मै.

सम्पत्ति-सं., जमीन धन, विभव । सं. तत्सम

सम्पन्न-विशे., १. भरल पुरल । २. सम्पूर्ण भेल । सं. तत्सम

सम्पर्क-सं., लाट, मेलजोल । घनिष्ठता । सं. तत्सम

सम्पुट-सं., ऊपर नीचाँ दुहू दिस सँ बन्न करैक गुण । सं. तत्सम

सम्पुटित-विशे., ऊपर नीचाँ दुहू दिस सँ बन्न । सं. तत्सम

सम्बन्ध-सं., संसर्ग, परस्पर योग । सं. तत्सम

सम्बन्धित-विशे., सम्बन्ध मे अबैवाला । सं. तत्सम

सम्भ्रम-सं., हड़बड़ी । सं. तत्सम

सम्भव-सं., अनिश्चय । सं. तत्सम

सम्भावना-सं., आशाक भावना । सं. तत्सम

सम्भोग-सं., पति पत्नीक मिलन । सं. तत्सम

सम्मत-विशे., १. मत कें स्वीकार करनिहार । २. सुस्थिर मत मे अबनिहार बताह । सं. तत्सम

सम्मति-सं., मत (विचार) क अनुमति, समर्थन । सं. तत्सम

सम्मन-सं., अभियोग पत्र । मै.

सम्मान-सं., आदर । सं. तत्सम

सम्मुख-अव्यय, प्रत्यक्ष, सामने । सं. तत्सम

सम्मेलन-सं., अधिक लोकक जुटान । सं. तत्सम

सम्वाद-सं., बातचीत । पठाओल मौखिक बात । सं. तत्सम

सम्हरस-सं., रोकैक, थम्हैक आ करैक शक्ति, ठेकान आ नियम । मै.

सम्हरब-क्रि., नीक जकाँ सम्पन्न होएब । मै.

सम्हार-सं., अनेक काजक संग लागल व्यवस्था आ सम्पादन । मै.

सम्हारब-क्रि., तन मन धन सँ सब काजक उचित रूपेँ निर्वाह करब । मै.

सम-विशे., १. अनुकूल, बराबरि । २. समान । सं. तत्सम/मै.

समकच्छ-विशे., सब प्रकारेँ तैयार, प्रस्तुत । मै.

समखबा-सं., समस्या भरल बात, समाचार । मै.

समगम-सं., १. संगम । २. एक रंगक स्थिति । मै.

समगरए-विशे., चारू कातक एक रंग ढलान आ उँचाइ । मै.

समङ्गर-विशे., परिवार मे अधिक लोकवाला । मै.

समच्छ-अव्यय, सोझाँ, समक्ष । सं. तद्भव

समचा-सं., साधन । सामग्री । मै.

समझौता-सं., सन्धि, मेल मिलाप । मै.

समञ्जस-सं., परस्पर मिलान । सं. तत्सम

समटब-क्रि., एकट्ठा करब, जमा करब । मै.

समतल-विशे., चौरस । सं. तत्सम

समता-सं., समानता, तुलना । सं. तत्सम

समथरि-विशे., एक रंग चिक्कन आ चौरस भूमि । मै.

समदब-क्रि., जीवनक सन्देह मे अपन सन्तान केँ उपदेश, जीवनक अनुभव आ गुप्त वस्तु (धन) क परिचय कहब । मै.

समदाओन-सं., यात्रा (बिदा) कालक मिथिलाक (स्त्रीगणक गबैक) विशिष्ट करुण गीत । मै.

समदावारी करब-क्रि., निर्देशवाला परस्पर वार्ता करब । विदा काल मे प्रवास मे रहैत उपदेश करब । मै.

समदिया-विशे., सम्वाद कहनिहार । मै.

समधान-विशे., सावधान । सं. तद्भव

समधि-विशे., वर वधु दुनू पक्षक श्रेष्ठ सम्बन्धी, वर वधूक बाप पित्ती आदि । मै.

समधियाउर-सं., समधिक गाम एवं घर । मै.

समधियारय-सं., समधि सम्बन्धक लागि । मै.

समधी-विशे., देखू—"समधि" । मै.

समन्धी-विशे., समन्ध (पुनर्विवाह) द्वारा बनल पत्नी । मै.

समधीत-विशे., समधिक सन्तान । मै.

समय-सं., काल । बेर । सं. तत्सम

समर्थ-विशे., १. शक्ति सम्पन्न । २. युवक, युवती । सं. तत्सम

समर्थन-सं., विषय परक जोर अनुमोदन । सं. तत्सम

समर्थाइ-सं., यौवन, युवावस्था । मै.

समर-सं., युद्ध । सं. तत्सम

समरथ-विशे., युवक । स्त्री० समरथि । सं. तद्भव

समरथ सकरथ-विशे., बलशाली आ कार्य दक्ष । मै.

समस्या-सं., स्थितिक जटिलता । सं. तत्सम

समसब-क्रि., कनेक भिजलाह जकाँ होएब । मै.

समसम-विशे., आर्द्र । कनेक भीजल जकाँ । मै.

समसान-सं., मुर्दघटी । श्मशान । सं. तद्भव

समहास-सं., खेतीक योग्य खेतक सरसता । मै.

समाइल-विशे., संगत, उपयुक्त । मै.

समाएब-क्रि., अँटब, घुसि जाएब । मै.

समाखि-सं., लाठीक उपरका आ निचला गीरहक एकै दिश मुह (दोष) । मै.

समाङ-सं., १. अपन लोक । आरोग्य, स्वस्थता । स्वाङ्ग । मै.

समाचार-सं., वृत्तान्त । सं. तत्सम

समाज-सं., गाम घर सँ लय केँ दूरधरिक एक संस्कृतिक समुदाय । सं. तत्सम

समाजी-विशे., समाजक काज करैवाला । मै.

समाठ-सं., एक दिश लोह पत्र सँ बनल काठवाला मुसर । मै.

समाद-सं., वार्ता । सम्वाद । सं. तद्भव

समादबारी-सं., वार्ता एवं कोनो प्रयोजनक विषय । मै.

समाधान-सं., समस्या वा प्रश्नक निराकरण । सं. तत्सम

समाधि-सं., आत्म तल्लीनता । सं. तत्सम

समान-विशे., एक रंग, एक रूपवाला । सं. तत्सम

समान धरब-क्रि., विभिन्न रूप बनाकय अभिनय करब । नाटकक पात्र जकाँ बनब । मै.

समाप्त-विशे., निःशेष । सं. तत्सम

समापन-सं., समाप्त करैक प्रक्रिया । अन्त क' दैक आयोजन । सं. तत्सम

समार-सं., पूब पच्छिम जोतला उत्तर उत्तर दच्छिन खेतक जोत । मै.

समारब-क्रि., पहिलुक जोतक प्रतिकूल पाछू खेत जोतब । मै.

समारोह-सं., कोनो विशेष काजक सम्पादन हेतु नाना प्रकारक आयोजन । सं. तत्सम

समास-सं., संक्षिप्तीकरण, व्याकरणक प्रक्रियाक विशेष अंग । सं. तत्सम

समाहब-क्रि., कीर्नं मे पसिन्न बड़द के हर आ चौकी मे जोतब । मै.

समिति-सं., विभागीय दलक संगठनवाला संस्था । सं. तत्सम

समिध-सं., होमक जारनि, लकड़ी । सं. तत्सम

समिल-विशे., सम्मिलित । प्रयोग—"हमहु अहाँ काज मे समिल भ' जाउ ?" सं. तत्सम

समीज-सं., गर्दनि सँ पैर धरि झँपैवाला स्त्री वस्त्र विशेष । फ. तद्भव

समीर-सं., बसात । सं. तद्भव

समीप-अव्यय, लग, निकट । सं. तद्भव

समुझब-क्रि., बुद्धि लगाकय ज्ञान करब । हि. तद्भव

समुझाएब-क्रि., दोसरा के ज्ञान कराकय बुझाएब । मै.

समुझि-सं., ज्ञान मे धरैक बुद्धि । मै.

समुद्र-सं., सागर । सं. तत्सम

समुद्री-विशे., समुद्र मे रहनिहार, भेनिहार । मै.

समुच्चा-विशे., सौंसे, सगरे । समस्त । मै.

समूल-विशे., जड़ि समेत । सं. तत्सम

समूह-सं., समुदाय, झुण्ड । सं. तत्सम

समृद्धि-सं., उन्नत धन समृद्धि । सं. तत्सम

समेकन-सं., सबटाक एकरूपता । सं. तत्सम

समेटब-क्रि., पसारल वस्तु कें एकठाँ करब । मै.

समेटि बटोरि कय-अव्यय, अनेक प्रकारक सब वस्तु कें बीछिकय एकट्ठा जमा कय । मै.

समेत-विशे., सहित । सं. तत्सम

समेना-सं., समियाना, अगणित लोक कें छाया दैक हेतु चौखुट पैघ कपड़ाक छप्पर । फ. तद्भव

समैया-विशे., उचित समय पर उपजैवाला । मै.

समैल-सं., पालोक हूनु विवाक पवित्रना । मै.

समोधब-क्रि., विगड़ल (रूसल) व्यक्ति कें स्नेह सँ बुझाएब । मै.

समोर करब-क्रि., ताकि ताकि कय जुटाएब । मै.

समोसा-सं., तिकोना (पकवान) । फ. तत्सम

सम्मौ-विशे., साम (लोहक मोट पत्र) क काढ़ा ठोकल समाठ । मै.

सम्मौआ-विशे., साम लागलवाला । मै.

संयन्त्र-सं., कलपुर्जा । सं. तत्सम

संयत-विशे., सद, अनुशासित । सं. तत्सम

संयम-सं., हिफाजति, उचित परिधिक भीतर रहैक चेष्टा, अनुशासित कार्यकलाप । सं. तत्सम

संयमी-विशे., स्वास्थ्यक हितकर आहार व्यवहार करैवाला । व्यवस्था सँ धन जमा करैवाला । सं. तत्सम

संयोग-सं., दैवी घटना, मिलन, सम्बन्ध । सं. तत्सम

सर्द-सं.,/विशे., ठन्ढा गुण । ठन्ढा गुणवाला । ठन्ढा प्रभाव । सरस, आर्द्र । मै.

सर्द लागब-क्रि., ठन्ढ लागब । मै.

सर्द लेब-क्रि., मरैक स्थिति मे हाथ पैर एवं अंग शीतल भ' जाएब । मै.

सर्दी-सं., अतिशय शीतलता । जाड़ । ठन्ढा सँ उत्पन्न रोग । मै.

सर्सिहोएब-क्रि., सरसता भेला सँ चिक्कन होएब । प्रयोग—"बजैत बजैत कण्ठ सुखा गेल । कनेक ठोंठ सरसि क' लै छी ।" मै.

सबंनेजा-सं., एकट्ठा कयल भोजन सामग्री । मै.

सर्वेसर्वा-विशे., सब काजक अधिकारी । मै.

सर-विशे., पेट मे सीझ पचिकय मल उतारैवाला भोज्य पदार्थ । सं. तत्सम

सरकण्डा-सं., गोल आ मोट पैघ डाँटवाला खड़ विशेष । मै.

सरकब-क्रि., १. खाइत पीबैत काल अन्न पानिक कण्ठ सँ उपर चढ़ि जाएब । २. ससरि जाएब । मै.

सरकस-सं., मनोरञ्जक देहक दारुण व्यायाम । मै.

सरका-सं., मालजालक गर्दनिक सिर संकोच । मै.

सरकाएब-क्रि., कनेक आगू बढ़ाएब । मै.

सरकार-सं., शासन संगठन । उच्चाधिकारी । मै.

सरकारी-विशे., शासकीय, राजकीय । मै.

सरकी-सं., चौसिक काइम सँ बीनल पर्दा । मै.

सरकुटुम-विशे., इष्ट अपेक्षित, अपेक्षित आ सम्बन्धी । मै.

सरकुटुमैती-सं., अपेक्षित आ सम्बन्धीक स्थान । तदनुकूल व्यवहार । मै.

सरगना-विशे., प्रमुख प्रभावशाली । मै.

सरङ-सं., स्वर्ग, आकाश । प्रयोग–"बेटी ससुरें नीक की सरङ नीक ।" सं. तद्भव

सरङगोलिया-विशे., सोझे उपर मुहवाला । मै.

सरङपताली-विशे., एक सिंघ उपर मुहें आ दोसर नीचा मुहेंवाला दोपाह माल । सं. तद्भव

सरङ्गी-सं., साधु बाबाजीक तारवाला बाजा सारङ्गी । सं. तद्भव

सरजूपारी-सं., कनौजिया ब्राह्मण । मै.

सरझेंपी-सं., सारा (चिता) क आगि मिझाकय ओहि स्थान पर माटि भरैक विधि । मै.

सर ड'-अव्यय, अलक्षित वेग सँ । मै.

सरदर-विशे., सम्पूर्ण, अखण्डित । मै.

सरदार-विशे., दलक नेता, सर्वोच्च व्यक्ति । उ. तत्सम

सरदियाह-विशे., सर्दीक क्लेश उत्पन्न करैवाला । मै.

सरधा-सं., देखू—"श्रद्धा" । मै.

सरधुआ-विशे., श्राद्धक योग्य, श्राद्धक उपयोगी । मै.

सरनर-सं., बाण मे बाण जोड़िकय बहुत ऊँची पर पक्षी मारैक विधि । मै.

सरनरिया-सं., व्याधा, सर मे सर जोड़िकय शिकार करैवाला । मै.

सरपंच-विशे., ग्राम पंचायतिक वैधानिक अधिकारी । मै.

सरपट-विशे., अविश्रान्त, बिना थकने अत्यन्त तेज (दौड़क विषय मे) । मै.

सरपत-सं., धारदार पातवाला मोट डाँटक नम्मा खड़ । मै.

सरपेटब-क्रि., सरस उत्तम पदार्थ भरि इच्छा खाएब । मै.

सरपेटा-विशे., खूब खाइवाला सरस उत्तम भोजन । मै.

सरपोख-अव्यय, सम्पूर्ण रूपें । प्रयोग–"जहाँ कें तें सरपोख ज्वर अछि तें सरपोख ओकरा छोड़ि लिअ' ।" समरे । मै.

सरफ-सं., देल अन्न रीनक सूदि । उ. तद्भव

सरब-क्रि., कनेक कनेक कय ससरब । मै.

सरबघोंट-विशे., बड़दक जीह पर उज्जर दागक दोष । एहन दोषवाला बड़द । मै.

सरबत-सं., अनेक मसालावाला बिना निशाँक मधुर पेय रस । उ. तद्भव

सरबती-विशे., सरबतसन स्वादवाला । मै.

सरबन-सं., सरकण्डाक वन । मै.

सरबब-क्रि., अत्यन्त मेहीं छेद सँ मन्द मन्द जल आदि द्रवक चूअब । मै.

सरबस-सं., धन सम्पत्ति । सर्वस्व । सं. तद्भव

सरबलोख-सं., बड़दक जीह पर कारी दाग रहैक दोष । मै.

सरबहारा-सं., श्रमिक वर्ग एवं श्रम । मै.

सरबा-सं., बहुत छोट ढक्कन पातर माटिक बासन । मै.

सरबेटा-विशे., सारक बेटा । मै.

सरमें भरमें-अव्यय, तुरन्ते, ओहिलाक तहिना । मुह बन्न रखने । मै.

सरमेर-विशे., संग मिलल । मै.

सरल-विशे., सोझ, सुलभ, आसान । सं. तत्सम

सरस्वती-सं., वाणी, वाग्देवी । सं. तत्सम

सरस -विशे., १. साहित्यिक रसक स्वाद लेनिहार । २. भीजल, सिमसिम । सं. तत्सम

सरस निरस-विशे., दू अंश मे एक अधिक आ एक कम । मै.

सरसठि-संख्या, सात एकाइ छ दहाइक अंक । मै.

सरसर करब-क्रि., सर्दी सँ नाक मुह मे श्वास प्रश्वास सँ कफक ध्वनि होएब । मै.

सरसरी नजरि-सं., अतिशीघ्रता सँ विहंगम दृष्टि । मै.

सरसों-सं., पीरा गोट, तेलहन विशेष । मै.

सरह-सं., बोनि आ लगानक परिमाणक नियम। ,मै.

सरहँची (साग)-सं., धन खेती मे अपनै होम'वाला कोमल आ स्वादिष्ट साग। मै.

सरही-सं., बीजू आमक गाछक फल। मै.

सरहोजि-विशे., सारक पत्नी। मै.

सराइ-सं., थारी जकाँ अत्यन्त छोट पूजा हेतु द्रव्यक बासन। मै.

सराएब-क्रि., छिद्र सँ जल आदि द्रव चूअब। मै.

सराक द'-अव्यय, खींचल जाइतसन तेजी सँ। मै.

सराढ़ि-सं., अप्रकट विरोध। मै.

सराध -सं., देखू—"श्राद्ध"। सं. तद्भव/मै.

सराना-सं., प्रयोगक क्षेत्र, शक्तिक उपयोगक स्थान। प्रभावक अवसर। उ. तत्सम

सराबोर-विशे., भीजल, डूबल। मै.

सरासरि-विशे., निराधार। मै.

सरासरी-अव्यय, अत्यन्त तेजी सँ। मै.

सराहब-क्रि., प्रशंसा करब, कृतज्ञता सँ बड़ाइ करब। मै

सरि-विशे., समतल, बिन ऊभड़खाभड़। मै.

सरिआम-विशे., समतल थल। मै.

सरिता-सं., नदी। सं. तत्सम

सरिखों-विशे., अव्यय, सत्ये, सतें। मै.

सरिआएब-क्रि., १. समतल बनाएब। २. सुव्यवस्थित करब। मै.

सरियाकय-अव्यय, व्यवस्थित केने धीरें धीरें। मै.

सरियाती-विशे., विवाह मे कन्या पक्षक लोक। मै.

सरीफा-सं., फल विशेष। मै.

सरूप-सं., स्वरूप। विशे., समान। सं. तद्भव/सं. तत्सम

सरे-अव्यय, खेल मे हारक मानि नहि दैक शब्द। मै.

सरेड़ा मचब-क्रि., विवाद बढ़ितें जाइक क्रम होएब। मै.

सरेंआ-विशे., सरौं खेलाइक मल्ल विद्याक अभ्यास वाला। मै.

सरैया-सं., थारी आ सराइक बीचक आकारवाला द्रव्यक बासन। मै.

सरैला-सं., पैध आकारवाला गोल नाम बाँसक फाड़न सँ बनल माछ फँसबैक यन्त्र। छोट आकार वाला सरैली। मै.

सरोकार-सं., सम्बन्ध, सम्पर्क, प्रयोजन। मै.

सरोकारी-विशे., सम्बन्धित, अपेक्षित। मै.

सरोकारित-विशे., सम्बन्ध रखैवाला। मै.

सरोज-सं., कमल फूल। सं. तत्सम

सरोद-सं., बाद्य विशेष। देशज

सरोवर-सं., विशाल जलाशय। स. तत्सम

सरौआ-विशे., सरबैवाला, चूबैवाला। मै.

सरौं खेलाएब-क्रि., मल्ल विद्याक अभ्यास करब। मै.

सरौत-सं., खड़क छारल घरक ऊपर ओठ आ बीच मे खड़ कें दबने रखैवाला बाँसक बाती। मै.

सरौता-सं., सुपारी कतरैक लोहक अस्त्र विशेष। मै.

सलका मारब-क्रि., तर सँ सरता आएब। मै.

सलग-विशे., एक सँ दोसर एक लागल, संलग्न। मै.

सलगा-सं., दू पाट सटा क' बनल ओढ़ना। मै.

सलगी-सं., १. एक पाटवाला मोट ओढ़ना। २. दूरधरि बनल सम्पर्क। मै.

सलच्छ-विशे., शुभ लक्षणवाला। स्त्री० सलच्छि। मै.

सलटब-क्रि., निर्णय करब। मै.

सलटाएब-क्रि., निर्णय कय व्यवस्था कराएब। मै.

सलसलाएब-क्रि., भीतर सँ आर्द्रता आएब। मै.

सलसलाह-विशे., भीतर सँ भिजलाह। मै.

सलहाल-सं., नीक जकाँ भूमिक हाल, आर्द्रता। मै.

सलाइ-सं., आगि बहार करैक काठी। मै.

सलाइ करब-क्रि., मल उतारैक हेतु साबुनक काठी मलमार्ग मे देबाक डाक्टरी प्रक्रिया। मै.

सलाद-सं., टोमैटो आदि चहटगर पदार्थक नोन तेल आदि दय कें बनल काँच व्यञ्जन। उ. तत्सम

सलाबी-सं., आर्द्रता। मै.

सलार लागब-क्रि., ऊँच नीच सबठरि पसरि समतल भ' क' जलक पसरब। मै.

सलाह-सं., सामञ्जस, सौमनस। मै.

सलाह सुतर-सं., मेल मिलान। मै.

सलेटब-क्रि., माटि मिला साटिकय चिक्कन करब। मै.

सलोक-विशे., स्त्री आदि समेत। प्रयोग-"की औ! सुमन बाबू नौकरी पर सलोक गेल छथि।" मै.

सलोनी-सं., साओनक (श्रावणी) पूर्णिमा। मै.

सशक्त-विशे., जीवन्त, चेतना आ प्रेरणायुक्त। सं. तत्सम

संस्कार-सं., १. पूर्वजन्मार्जित भावना। २. जीवन सँ मृत्यु पर्यन्तक वैदिक कर्म। सं. तत्सम

सस्त-विशे., कम मूल्यक वस्तु। मै.

ससरफानी-सं., विशेष प्रकारक बन्हन। मै.

ससरब-क्रि., सम्पूर्ण देहक भरेँ चलब। मै.

सँसरी-सं., श्वास लेबाक नली, कण्ठ। मै.

संसार-सं., भुवन, सृष्टि। मै.

ससार-सं., जोर दय कें अंग पर हाथ आगू दिश बढ़बैत चलैक क्रम। मै.

ससारब-क्रि., जोर सँ अंग पर हाथ चलबैत जाइब। मै.

ससुर-विशे., पत्नी वा पतिक पिता। मै.

ससुराड़ि-सं., ससुरक गाम घर। मै.

ससुहब/ससोहब-सं., बेटीक सासुक हाथ मे देल जाइवाला द्रव्य। मै.

सह-सं., १. दुष्टतापूर्ण गुप्त विचार। २. कनेक मात्र बल। ३. अधिक आदर आतक छूटि। ४. सतरञ्जक खेल मे बादशाह पकड़ैक घर। मै.

सहकारी-विशे., परस्पर सहयोग देवाला। मै.

सहचर-विशे., मित्र, हरदम संग रहैवाला। मै.

सहज (सहतें)-सं., बिना पुरस्कार देने वाला सहायता। मै.

सहजोर-विशे., प्रगतिशील, प्रभावशाली। पूर्णतया सम्पन्न। मै.

सहटब-क्रि., १. सुस्तें सँ हटि जाएब। २. धीरें धीरें ससरि समीप आबि जाएब। मै.

सहटारब-क्रि., धीरें धीरें समीप लाएब वा हटा देब। मै.

सहठुल-विशे., सद स्वभाववाला मिलनसार। देखितेँ आवेस करैक योग्य नेना। मै.

सहड़ी-सं., मांसक संग छोट आ पातर हड्डीक खण्ड। मै.

सहथी-सं., खाम्ह आदिक उपर मे बनाओल गोल आ नाम दोसर काठक छेद मे पैना कऽ जोड़ सक्कत रखैले कील। मै.

सहन-विशे., ऊँच नीच भूमि काटिकय समतल चौरस। उ. तत्सम

सहन-सं., बर्दास्त, सहिलैक शक्ति। पचबैक शक्ति। सं. तत्सम

सहनाइ-सं., मधुर वाद्य विशेष। उ. तत्सम

सहब-क्रि., १. बर्दास्त करब। २. निराहार रहब। मै.

सहमति-सं., मतक स्वीकृति, अनुमति सम्मति। मतक अनुमोदन। सं. तत्सम

सहमब-क्रि., धाख भय आ आतङ्क सँ संकुचित आ स्तब्ध होएब। हि. तत्सम

सहमर्दा-सं., धानक प्रभेद विशेष। मै.

सहमौलू-विशे., दोसराक संग मन वचन आ कर्म सँ मिलि लेनिहार। मै.

सहयात्री-विशे., संग लागि चलनिहार। सं. तत्सम

सहयोग-सं., सहायता लागि। सं. तत्सम

सहर-सं., नगर, पुर। उ. तत्सम

सहरगञ्जा-विशे., साधारण, सामान्य। मै.

सहर जमीन-सं., विवादक स्थल। उ. तत्सम

सहर फौंका-सं., औषधार्थ क्षार विशेष। मै.

सहरब-क्रि., १. धीरे धीरे झरि झरिकय ढहब। २. अबोध बच्चाक मलत्यागब। मै.

सहरू-विशे., सहर मे रहैवाला। मै.

सहलाएब-क्रि., प्रेम सँ हल्लुक हाथेँ ससारब। अंग कें हसोथब। हि. तत्सम

सहलोला-विशे., अनबूझ, बूड़ि, सदति खेलाइ मे मगन बकलेल दुलारू नेना। मै.

सहवास-सं., सब प्रकारेँ संग रहैक भाव। सं. तत्सम

सहस्र-सं., दश सैक एक संख्या। सं. तत्सम

सह सह करब/सहसहाएब-क्रि., छोट कीट आ सांप आदि असंख्य रूपेँ सघन आ एकत्र चलैत रहब। मै.

सहसा-अव्यय, अचानक, अकस्मात्। सं. तत्सम

सहसौल-सं., सहस्र दल कमल। मै.

सहाएब-क्रि., उपवास करा देब । मै.
सहाक-विशे., सहायक । मै.
सहाब-विशे., सहैक योग्य । सह्य । सं. तद्भव
सहाबिक-विशे., स्वाभाविक । मै.
सहानुभूति-सं., अनका प्रति दुख सुखक सम्वेदना । सं. तत्सम
सहाय-विशे., संग दैवाला । सं. तद्भव
सहायक-विशे., मद्दति करैवाला । सं. तत्सम
सहायता-सं., मद्दति । सहयोग । सं. तत्सम
संहार-सं., विनाश । सं. तत्सम
सहारा-सं., आश्रय, आधार । हि. तत्सम
सहाल-सं., भूमिक उचित सरसता । मै.
सहासति-सं., साहसपूर्वक श्रम कष्टक सहन । मै.
सहासी-विशे., साहसी । मै.
सहित-विशे., समेत । सं. तत्सम
सहिया-विशे., सखी । मै.
सहियारब-क्रि., सरियाकय राखब । मै.
सही-विशे., ठीक, अकरसाली, घर आदि वस्तुक उचित ढंगें दृढ़ होएब । मै.
सहीस-विशे., घोड़ा कें सिखौनिहार, चरवाह । मै.
सहेजब-क्रि., ओरियाकय धाती धरब । मै.
सहेँ सहेँ-अव्यय, ओरिया क' धीरें धीरें ठेलि । मै.
सहोदर-विशे., समान गर्भ (एक गर्भ) सँ उत्पन्न भेनिहार । सं. तत्सम
सहौआ-विशे., सहन करैवाला । मै.

सा

सा-सं., निषाद स्वर, संगीतक सातो स्वर मे पहिल स्वर । मै.
साँइ-विशे., स्वामी । १. भक्त महात्मा । २. पति । सं. तद्भव
साइ-सं., शुभ काजक सामग्री रचनिहार पसारी के नाम मात्रक सगुन द्रव्य द' क' वस्तु देबाक आदेश, अढ़ौती । मै.
साइत-सं., शुभलग्न, नीक बेर । मै.
साइत-अव्यय, भरिसक, शायद । मै.
साइत-विशे., क्षण । प्रयोग—"हमरा तँ आइ एक साइत विश्राम नै भेल ।" मै.
साओन-सं., मास विशेष । श्रावण । मै.
साकठ-विशे., मांसभक्षी व्यक्ति । मै.
साँकड़-विशे., संकीर्ण (बासन वा स्थान) । मै.
साँकर-सं., विवाहक हेतु गेनिहार वरक संग जाइ वाला चीनीक गोरी, भगवतीक उपासनाक सामग्री एवं कनियाँ आ हुनक माइक सम्मान मे अनेक सामग्रीक संकलन । मै.
साँकल-सं., केवाड़ आदि बन्द करैक जिञ्जीर । लोहक कड़ी । मै.
साकांक्ष-विशे., चौकस, चोकस, सावधान । मै.
साकार-विशे., नामरूपवाला (देवता) । मै.
साकीन-विशे., १. बसिन्दा । २. सर्वस्वहीन । मै.
साख-सं., प्रतिष्ठा, सम्मान । उ. तत्सम
साँख-सं., सिन्दूरदान मे सिन्दूरक संग हाथ मे रखैवाला शंख काटिकय बनल शुभ सूचक वस्तु विशेष । सिन्दूर दानक सामग्री । मै.
साँखर-सं., साँप विशेष । मै.
साखी-सं., नीति आ उपदेशक वचन । उ. तत्सम
साँखु-सं., सक्कत आ सोझ काठक वनस्पति । मै.
साग-सं., व्यञ्जनवाला हरियर कोमल पौधा । मै.
सागवान-सं., साँखु जातिक वनस्पति । मै.
साझरह-सं., जमा, एकट्ठा । मै.
साझरही-सं., संग्रहणी रोग । मै.
साङि-सं., भारी वस्तु उठबैक लेल रस्सी सँ भारी वस्तु कें बान्हि कन्हा पर उठब'वाला बाँसक टोंटा । मै.
साङि करब-क्रि., दुष्ट कें उत्पीड़न सँ सोझ करब । मै.
साँच-सं., आकार दैवाला लकड़ी आदि वस्तुक पट्टी । मै.
साँचा-सं., छवि । मै.
साँची-सं., आगू दिस धोतीक आगिला हूलू चुँट कोंचियाकय खोंसल धोती । मै.
साज-सं., १. भाँड़कूड़ रखैक फैल काँच माटिक बनाओल पैघ बासन । २. संगीत आ नाँचक समस्त सामग्री । मै.
साजबाज-सं., १. सजबैक आ बजबैक सामग्री । २. अंग सजबैक विशेषता । मै.
साजन-विशे., प्रियतम, प्रणयी, वर । मै.

साजनि-सं., सजवैक प्रक्रिया । मै.

साजब-क्रि., अलंकृत करब, चिक्कन करब । सजाएब । मै.

साजी-सं., बाँसक काइमक बनल महीरगर फूल डाली । मै.

साँझ-सं., दिन आ रातिक संगम समय । मै.

साँझबाती-सं., सन्ध्याकाल मे दीप नेसैक विधि । मै.

साँझिल-विशे., चारि सन्तानक तेसर । मै.

साझी-विशे., अनेक हिस्सेदारक मिलल जुलल अंश वाला । मै.

साझी गोझी-सं., एकैठाँ मिलाओल अंश । मै.

साझीवूढ़ साडियो नै चले-लोकोक्ति । (लाक्षणिक) छोटो वस्तु साझी रहने विवादक घर थिकै । ओ विवाद कहियो ने छूटि सकै अछि । मै.

साँझुक-विशे., सन्ध्याकालक । मै.

साठ-सं., मेल, संग । जोड़ । मै.

साटनि-सं., सटैक काज । मै.

साटब-क्रि., सम्पर्क मे जोड़ब, आसक्त करब । मै.

साट सट्आ-सं., बराबरि साटि जोड़िकय काज चलबैक चेष्टा । मै.

साटा-सं., कोनो लेनदेन तथा उत्तरदायित्वक विश्वास हेतु लिखित प्रमाण । मै.

साटि-सं., चुपचुपीआ संग, मेल । मै.

साँठब-क्रि., नीक जकाँ बासन मे सजाकय राखब । (लाक्षणिक) सजा सजाकय पठाएब । मै.

साठा-विशे., १. प्राचीन कालक बन्हुआ पाग । २. साठि वर्षक उमेरवाला । मै.

साठा तैं पाठा-विशे., (लाक्षणिक) साठि वर्ष पुरला सँ ज्ञान आ अनुभव परिपक्व भेने निर्भीक । मै.

साठि-संख्या एवं सं., १. शून्य एकाइ आ छ दहाइक अंक । २. षष्ठी देवी, बाल रक्षा देवी । मै.

साठि पूजन-क्रि., षष्ठी देवीक जन्मक छठम राति आराधना करब । मै.

साँड़-विशे., वृषभ, स्वतन्त्र छोड़ल बच्छा । मै.

साँड़नी-सं., ऊँटनी । मै.

साढ़ू-विशे., बहुक बहिनिक वर । मै.

साढ़े-सं., पूर्णाङ्कक उपर आधा । मै.

साढ़ेसाती-सं., सात वर्ष छ मास अर्थात् सात वर्ष एक बटे आधा वर्षक शनि ग्रहक फेरी । मै.

सात-संख्या, एक अंकक सातम अंक । मै.

सातु-सं., भूजिकय पीसल खाद्यान्न । मै.

साथ-सं., सार्थ, संग । हि. तत्सम

साथी-विशे., संग रहनिहार, संगी । हि. तत्सम

सादा-विशे., १. सामान्य । २. उज्जर । हि. तत्सम

सादासादी-विशे., साधारण रूपवाला । मै.

साध-विशे., १. साधैक अधीन करैक योग्य, साध्य । २. कामना मे रहैवाला । मै.

साधक-विशे., साधना करैवाला । सं. तत्सम

साधन-सं., अभ्यास रखैक नियम, नियम पर चलैक प्रवृत्ति । मै.

साधना-सं., तपस्या, धैर्य सँ सिद्धिक कार्य । सं. तत्सम

साधनिका-सं., व्युत्पत्ति करैक रीति । सं. तत्सम

साधब-क्रि., १. साधना करब । २. सकात करब । मै.

साधा-विशे., साधल, सम्पन्न कयल । मै.

साधीबाधी-विशे., साधक बाधक, ने सम्मति ने विरोध करैवाला । मै.

साधु-विशे., महात्मा, बाबाजी । मै.

साधुवाद-सं., वाह वाही । मै.

सान-सं., तेजी, सजाओट । मै.

सानदार-विशे., अत्यन्त उत्कृष्ट । मै.

सानन-सं., भोजन सनैक काज (बेरावेरी) । मै.

सानशीला-सं., विशेष रूपें देहक सजवैक विन्यास । मै.

सानब-क्रि., मिलाकय लपेटब । मै.

साना-सं., घूलल वस्तु कें मिलाकय ढील बनाएब । मै.

सानी-सं., १. माण वा पानि मे भूँसा आदि दय कें सानल मालक भोजन । २. दावी । मै.

साँप-सं., सर्प । मै.

साँपट भेड़िया-सं., दुर्जनक संसर्ग । मै.

साँपटपीटा-विशे., सगरो एक रंग घन । मै.

साँपिन-विशे., उपर नीचाँ पातर आ बीच मे कनेक मोट लाठी । साँपक स्त्रीलिंग । मै.

साफ-विशे., १. स्वच्छ । २. स्पष्ट । उ. तत्सम

साफल-सं., सफलता, साफल्य । सं. तद्भव

साफा-सं., अन्य प्रान्तीय लोकक विशिष्ट रूपक मोरैठा। देशज

साफी-विशे., चिक्कन, स्वच्छ करैवाला कपड़ा आदि वस्तु। मै.

साबिक-विशे., प्राचीन परम्परावाला। मै.

साबुन-सं., देह कपड़ाक मैल छारैवाला जमाओल द्रव्य। मै.

साबूदाना-सं., छोटसन उज्जर दानावाला फल वा पथ्यक विशेष आहार पदार्थ। मै.

साबै-सं., जौड़ बँटैवाला विशेष लट। मै.

साँभर-सं., हरिण (वन्य जन्तु) विशेष। मै.

साम्हरि-सं., विशेष प्रकारक नोन। मै.

साम-सं., १. मड़ँवा मेंही दानावाला अन्न विशेष। २. मुसरक मुह पर ठोकल लोहक गोल चाकर पत्र। मै.

सामग्री-सं., विशेष काजक उपयोगी अनेक प्रकारक वस्तुजात। सांग्रह। सं. तत्सम

सामरथ-सं., सामर्थ्य, शक्ति। स. तद्भव

सामा-सं., पौराणिक कथाक आधार पर भाइक कल्याणक कामना सँ मिथिला मे पूजल जाइवाली स्त्री पक्षी देवता। मै.

सामान्य-सं., साधारण। मै.

सामी-सं., घास विशेष। मै.

साँय साँय-सं., वेग सँ बसात बहैक शब्द। मै.

साया-सं., साड़ीक तर मे पहिरैवाला घघरासन कपड़ा। उ. तत्सम

सार-सं., १. मल साफ करैवाला खाद्य पदार्थ। २. वस्तु गर्भ मे अन्तर्हित तत्व। ३. पत्नीक भाइ। मै.

सारंग-सं., मृग विशेष। सं. तत्सम

सारंगी-सं., वाद्य विशेष। वीणा। मै.

सारफार-अव्यय, केवल, मात्र। मै.

सारस्वत-विशे., १. सरस्वती सम्बन्धी। २. ब्राह्मण। मै.

सारस-सं., पैघ पक्षी विशेष। मै.

सारा-सं., चिताक स्थान। मै.

सारि-सं., १. फसिल। २. स्त्रीक बहिन। प्रयोग—"हथिया बरिसे जँ दिन चारि, पुनहा पाछू उपजय सारि।" मै.

सारिल-विशे., भीतरी तत्व मे भरल शक्ति। सार-भाग। मै.

साल-सं., १. वर्ष। २. वृक्ष विशेष। ३. भूमिक भीतर गड़ल हाड़ वा खुट्टा खाम्ह आदिक अंश। मै.

सालब-क्रि., १. काटि छीलिकय लकड़ी कें चिक्कन बनाएब। रूप देब। २. भीतरें भीतर वेदना होएब। मै.

सालसा-सं., पेय औषध विशेष। मै.

सावधान-विशे., चौकस, सचेत। मै.

साँस-सं., श्वास। मै.

साँसी-सं., दम्मा रोग, साँस फूलैक रोग। मै.

सासु-विशे., पति वा पत्नीक माता। मै.

सासुर-सं., श्वसुरक गाम घर। मै.

साह खर्ची-विशे., खूब खर्च केनिहार। मै.

साह खसब-क्रि., कोनो वस्तु पर अधिक लोभक दृष्टि पड़ब। मै.

साहनि-सं., कनेक बल दय के उकसबैक कम। मै.

साहब-क्रि., कनेक जोर लगाएब। मै.

साहर-सं., दाओनिक समय नीचाँ झरल दाना। मै.

साहस-सं., कष्टकर कठिन प्रयास। मै.

साहसी-विशे., साहस कर्यनिहार। सं. तत्सम

साहाय्य-सं., सहायता। सं. तत्सम

साहित्य/साहित-सं., १. सहायता। २. शास्त्र विशेष। सं. तत्सम

साहि लागब-क्रि., एहि विषय मे बारम्बार प्रवृत्ति होएब। मै.

साही-सं., काँटसन पैघ रोइआँवाला जन्तु। मै.

साहु-विशे., बनियाँ। मै.

साहुकार-विशे., वाणिज्य व्यवसायवाला। मै.

साहुल-सं., ईंटाक देवाल जोड़ैक समय नीचा जोड़ल ईंटाक संग सोझ जँचैक हेतु लटकैवाला यन्त्र। मै.

साहेब-विशे., कबिराहाक महात्मा, मुसलमानक माननीय व्यक्ति, अंगरेज जातिक पुरुष। उ. तत्सम

साहोड़-सं., वनस्पति विशेष। मै.

सि

सिक्कठि-सं., बनैया झार। मै.

सिक्का-सं., राजकीय मुद्रा, धातुवाला रुपैया । देशज

सिक्का चढ़ब (चढ़ाएब)-क्रि., (लाक्षणिक) अपना मनें घमण्ड सँ पैघ बनब, तथा मिथ्या गौरव द' क' फुलाएब । मै.

सिकड़ी लागब-क्रि., अत्यन्त छोट नेना कें सिर संकोच (सिराक ओझरोट) होएब । मै.

सिकमी-सं., राजकीय प्रमाणित खेत बटैदारक स्थायी आधा अंश । उ. तत्सम

सिकरी-सं., सोन वा चानीक कड़ीवाला हार । मै.

सिकस्त-विशे., संकीर्ण । उ. तत्सम

सिकस्ती-सं., संकीर्णता, अभाव, कठिनाइ । उ. तत्सम

सिकिया पहलवान-विशे., अत्यन्त दुर्बल क्षीण काय । मै.

सिकिर सिकिर करब-क्रि., १. जाड़ें थरथराएब । २. (लाक्षणिक) लाज वा धाख एवं असमर्थता प्रकट करैं मे संकोच करब । मै.

सिकुड़ब-क्रि., संकुचित होएब (सिलवट पड़ब) । मै.

सिकोड़ब-क्रि., मोड़ब, संकुचित करब, घोंकचाएब । मै.

सिखलहा-विशे., शिक्षा पाओलवाला । मै.

सिखले सीखब-क्रि., कुल परम्पराक शिक्षा स्वतः आबि जाएब । मै.

सिखाएब-क्रि., मन्त्रणा देब । शिक्षा देब । मै.

सिखाओन-सं., सिखबैक चेष्टा । मै.

सिखाबुझी-सं., एक दोसरा कें सिखाकय बनाओल गुप्त योजना । मै.

सिखुआ-विशे., सीखिकय आएल । मै.

सिखौआ-विशे., सिखबैवाला । मै.

सिगनल-सं., रेलगाड़ीक वा आनो काजक संकेत । अं. तत्सम

सिगा-सं., शिवक स्नपन (धारावाही) स्नान करबैक नीचाँ साँकर उपर फैल मुहवाला नाम छेदवाला धातु सँ बनल घोंठा । मै.

सिगार-सं., पश्चिमी देशवालाक धूम्रपान करैक वासन । अं. तत्सम

सिगी-सं., माछ विशेष । मै.

सिङ्‌हा-सं., शृङ्गाकार टेढ़ बाद्य । धुतहू । मै.

सिङरबाल-सं., शोभाक हेतु तिरछाकय बान्हल चारक कोरक बाती । मै.

सिङार-सं., शृङ्गार, सजाओट । मै.

सिङार पटार-सं., शृङ्गारक हेतु प्रसाधन, शोभा रचना । मै.

सिङिया विष-सं., विष विशेष । मै.

सिच्चा-सं., देखू—"छिच्चा" । मै.

सिंचाइ-सं., सिञ्चन, पटौनी । मै.

सिंचाएब-क्रि., पटवाएब, सिंचन कराएब । मै.

सिंझाएब-क्रि., सिद्ध करब । मै.

सिटपिटाएब-क्रि., पकड़ल गेलें देखार भेने भयैक चेष्टा वा लज्जाक भाव प्रकट करब । मै.

सिटिर पिटिर करब-क्रि., कोनो लक्ष्य सँ चंचल रहब । मै.

सितलपाटी-सं., खजूरक पातक बीनल पटिया । मै.

सितुआ-सं., खुरपन सनकत चमड़ावाला जल-जीव । मै.

सिद्‌ति-सं., संकट भरल पीड़ा, दुरवस्था । मै.

सिद्ध-विशे., परिपक्व, साधना मे सफल, रान्हला उत्तर मृदु बनल । सं. तत्सम

सिद्धान्त-सं., मतक, विचारक निश्चय, दृढ़ता । वैवाहिक सम्बन्धक निर्णय । सं. तत्सम

सिद्धि-सं., सफलता । सं. तत्सम

सिद्धा-सं., बिन रान्हल खाद्यान्न । मै.

सिन्दूर-सं., सौभाग्य सौन्दर्यवर्द्धक लाल रंगक विशेष प्रकारक धूलि । सं. तत्सम

सिन्ह-सं., चोरि करैक हेतु चोरक द्वारा कयल घर मे पैघ छेद । मै.

सिन्ह काटब-क्रि., घर मे पैसैक जोग छेद करब । मै.

सिन्हबारि-सं., सिन्ह कटैवाला अस्त्र । मै.

सिन्हाचोर-विशे., सिन्ह कटैवाला निपुण चोर । मै.

सिन्हुराएब-क्रि., सीँथ पर सिन्दूर मात्र द' क' विवाह क' लेब । मै.

सिनुरिया-विशे., सिन्दूरसन लालवाला । मै.

सिनूर-सं., देखू—"सिन्दूर" । मै.

सिनेमा-सं., चलचित्र, वायसकोप । अं. तत्सम

सिनेह-सं., स्नेह, अनुराग । सं. तद्भव

सिनेही-विशे., स्नेह रखैवाला । सं. तद्भव

सिपहिबा/सिपाही-सं., (अनादर मे) संरक्षक। सैनिक । उ. तत्सम

सिबित-अव्यय, केवल, मात्र, खाली । प्रयोग-"मनुष्य सिबित अन्ने टा खाकए जीबि सकैबे ।" मै.

सिखिया-सं., सविश्वन लागल सीबैक काज । मै.

सिमटब-क्रि., सिकुड़ि कय रहब । मै.

सिमरिक-सं., लाल औषधीय पदार्थ । मै.

सिमसिम-विशे., कनेक कनेक भीजल, सरस । मै.

सिमसिमाह-विशे., कनेक भीजलगर । मै.

सियाएब-क्रि., सीबैक-सीबैक काज कराएब । मै.

सियार-सं., गीदड़, शृगाल । सं. तद्भव

सिरका-सं., औंटल चीनीक रस । सामान्य वस्तुक झोर । मै.

सिरखार-सं., प्रारूप, रेखाचित्र । मौलिक छवि । मै.

सिरजन-सं., सृष्टि, निर्माण । सृजन । सं. तद्भव

सिरजब-क्रि., निर्माण करब । मै.

सिरपाइ-सं., बैलगाड़ीक मुहरा उठा क' अड़यैवाला दू योगक ठोकल चाम्हुख परस्पर जोड़ । सिरपैंया । मै.

सिरम-सं., सुतल अवस्थाक माथ दिशुक भाग । मै.

सिरसिर करब-क्रि., जाड़ें कँपला सँ नाक मुहक शब्द होएब । मै.

सिरहुमी-सं., माथ तर रखैं लेल ऊँच कोमल वस्तु । मै.

सिरहार-सं., फूल विशेष । शेफालिका । मै.

सिराउर-सं., हर सँ कोड़ल रेखा । मै.

सिराएब-क्रि., सीर धरतीक भीतर वा देहक भीतर शाखा बढ़ब । मै.

सिराह-विशे., बढ़ल अथवा बचल सीरवाला । मै.

सिरीस-सं., कोमलतम फूलवाला वृक्ष । मै.

सिरोबय-सं., जन्मक समय शिशुक गर्भ सँ माथ बहार होइक स्थिति । मै.

सिलपट्ट-विशे., १. एक रंग चौरस चिक्कन वस्तु । २. (लाक्षणिक) अत्यन्त निरक्षर मूर्ख । मै.

सिलबर-सं., चानीसन धातु विशेष । मै.

सिलाजित-सं., पर्वतीय औषधि द्रव । मै.

सिलेट-सं., मलिन पाथरक पातर पट्टी स्लेट । सं. तद्भव

सिलेटी-विशे., सिलेटसन मलिन रंग । मै.

सिलेब-विशे., करिछौन उज्जर गाय बड़द । मै.

सिलेबिया-विशे., सिलेब रंगवाला । मै.

सिसकँड़ली-सं., छोट फूलक झार विशेष । एक पुरुखिया नम्मा कम चाकर पातवाला झार । मै.

सिसकी-सं., बर्तन आदि मे अत्यन्त मेही छेद सँ चूबैक बाट । मै.

सिसबोनी-सं., सीसो गाछक बोन । मै.

सिसियाएब-क्रि., कण्ठ सँ 'सी' शब्द क' उठब । मै.

सिसुकब-क्रि., शब्दहीन केवल श्वास प्रश्वास द्वारा कानब । मै.

सिसोहब-क्रि., दाँत अथवा हाथ सँ कोनो वस्तुक उपरक रस वा खोइचा आदि खीचि साफ करब । मै.

सिंह-सं., १. राशि विशेष । २. बुद्धिमान् आ अत्यन्त बलवान् सब सँ उत्कृष्ट हिंसक पशु । मै.

सिहकन-सं., १. फूटैक वा फटैक कन । २. बसातक कनेक डोलैक कम । मै.

सिहकब-क्रि., १. फटैक वा फूटैक कम होएब । २. बसात अत्यन्त मन्द बहब । मै.

सिहकी-सं., १. बसातक अति मन्द गति । २. फटैक फूटैक चिह्न । मै.

सिहरब-क्रि., १. शीत सँ देहक भुलकब । २. कठि कय ऊँच माटि देवाल आदि के ससरिकय खसैक कम होएब । मै.

सिहाएब-क्रि., लोभ जगाकय तृष्णा बढ़ाकय लालित करब । मै.

सिहार-सं., पानिक उपर खसी मे फड़ैवाला फल विशेष । मै.

सिहार-सं., भीत आदि मे दूरधरि फटैक आ डँसैक चिह्न । मै.

सिहारी-सं., तीन दिश तिनकोनमा माथक गाँथ (माङ) । मै.

सिंहासन-सं., राजाक वा देवताक मुख्य बैसैक स्थान । मै.

सिंहिन-सं., सिंहक स्त्री जाति । मै.

सिंहिनियाँ-विशे., (गारि) क्रूर नीच स्त्री । मै.

सिहुलिया-विशे., भीतर लाल गुद्दावाला । (लताम आदि फल) । मै.

सिहुली-सं., चर्मरोग विशेष, देह पर सगरो उज्जर दाग । मै.

सी

सीक-सं., लटकाकय वस्तु रखैक लेल डोरीक आधारवाला लटकनी । छीका । मै.

सीक टुटल बिलाड़िक भाग-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) ककरो ध्वंस वा नाश सँ उनकाक लाभ । मै.

सीकी-सं., कातर खढ़क फूलवाला पातर डंटी । मै.

सीकें-अव्यय, सोझें । प्रयोग–"नाकैक सीकें चल जाउ ।" मै.

सीख-सं., शिक्षण । मै.

सीखब-क्रि., शिक्षा लेब । मै.

सींघ-सं., मालजालक माथ पर उगल नोकदार नमहर हड्डी । मै.

सींचब-क्रि., सिञ्चन करब । मै.

सींटब-क्रि., सौन्दर्य्य विन्यास करब । मै.

सीटल-विशे., स्वच्छ आ सुन्दर जकाँ सजाओल । मै.

सीटसाट-सं., शोभा वा सुन्दरताक हेतु अधिक सजबैक चेष्टा । मै.

सीटी-सं., चेतावनीक ध्वनि । अं. तत्सम

सीटी मारब-क्रि., वासना, हर्ष, आश्चर्यक कौतुक मे मुह सँ विलक्षण ध्वनि करब । मै.

सीढ़ी-सं., घर आदि पर चढ़ै उतरैक साधन सोपान । मै.

सीतलगढ़-विशे., कलाक भकठी करैवाला । मै.

सीधा-सं., १. सोझ, बिन रान्हल भोजन सामग्री । हि. तत्सम

सीन-सं., नाटकीय दृश्य । अं. तत्सम

सीप-सं., सितुआ, सुरचन । हि. तत्सम

सीपा-सं., औसक झटका, जाड़क प्रभाव । मै.

सीफति-सं., कला कौशल । मै.

सीम-सं., लतीक छिम्मड़िवाला व्यञ्जन फल । मै.

सीमा-सं., अड्डा, अधिकारक अवधि । मै.

सीयनि-सं., सीयैक क्रम, ढंग, कला, चिह्न । मै.

सीयब-क्रि., सूइ ताग सँ टुटा कोर के एकठाँ जोड़ब । मै.

सीर-सं., धरतीक भीतर पसरैवाला गाछ वृक्षक बिन पातक जड़िवाला शाखा । मै.

सीर पंचमी-सं., सरस्वती पूजावाला हर ठाढ़ करैक माघक इजोरियाक पंचमी । मै.

सीर बहकब-क्रि., (लाक्षणिक) धरती पर अचल भेल बैसल रहब । मै.

सीरा-सं., घर मे बनाओल कुल देवताक स्थानक पिण्डा । मै.

सीरी-सं., श्री, शुभ यज्ञ विवाह आदि सँ पहिने पूजनीय देवी । मै.

सीरी सवाइ-सं., उन्नति, वृद्धि । मै.

सीली-सं., धान आदि अन्नक नामानामी ढेरी । मै.

सीली झारब-क्रि., धान आदि अन्न के सूप सँ नामानामी एकैठाँ ओसबैले बारम्बार खसाएब । मै.

सीस-सं., धान आदि अन्नक दानाक गुच्छ । मै.

सीसा-सं., काँचक द्रव्य । मै.

सीसी-सं., १. द्रवक मात्राक मान । २. काँचक छोट बासन । अं. तत्सम/मै.

सीसो-सं., सुकाठ मे प्रसिद्ध वृक्ष विशेष । मै.

सु

सुअन-सं., सुपाच्य अन्न । सं. तद्भव/मै.

सुआ-सं., जीरक आकारवाला छत्तासन सौंसवाला गन्धयुक्त मसालाक दाना । मै.

सुआति गहुमन-विशे., असली, शुद्ध गहुमन साँप । मै.

सुआसीन-विशे., गामक कन्या सम्बन्धी स्त्री । मै.

सुइआ-सं., कपड़ा आदि सीयैक अस्त्र । सुइयासन बीज सँ बहराएल अंकुर । मै.

सुक्खा-विशे., बिना अन्न वस्त्रवाला केवल नगद दरमाहावाला नौकरी । मै.

सुकचब-क्रि., सिकुड़िकय छोट बनब । मै.

सुकठी-विशे.,सुखाकय अपन आकार मे क्षीण बनल । मै.

सुकठीक यनीज पशुपतिक दर्शन-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) एकै काज सँ दू लाभ । मै.

सुकड़ब-क्रि., नाक सँ श्वासक सोंकदय कफ झाड़ब । मै.

सुकर-विशे., आसान, सरल । मै.

सुकर होएब-क्रि., (लाक्षणिक) भाग्यक छन्न बनब । मै.

सुकराती-सं., कातिकक अमावास्याक राति, दीपावली पर्वक राति। मै.

सुकुमार-विशे., अत्यन्त कोमल अंगवाला। सं. तत्सम

सुकुमालकी-विशे., सरल। मै.

सुकुर मानब-क्रि., कल्याण, भला, माम्पें नीक बूझब। मै.

सुख-सं., सन्तृप्त अविकल मन। आनन्द। मै.

सुखद-विशे., सुख देवाला। सं. तत्सम

सुखरात्रि-सं., देखू—"सुकराती"। सं. तत्सम

सुखराह-विशे., सुखाएल सन लगैवाला, मरछुआर। मै.

सुखलहा-विशे., सुखाएल, रसहीन, आर्द्रता रहित वाला। मै.

सुखाइ-सं., सुखबैक काज। मै.

सुखाएब-क्रि., सरस, भीजल वस्तु कें कोनो ताप मे आर्द्रताहीन बनैक हेतु देब। आर्द्रताहीन बनब। मै.

सुखाऔंत-विशे., रौद आदि मे सुखाएल, आर्द्रता रहित पदार्थ। मै.

सुखाओन-सं., १. सुखबैक काज। २. सुखायला सँ वस्तुक भारीपनक कमी। मै.

सुखाड़-सं., रौदी, वर्षाक अभाव। मै.

सुखित-विशे., अनें धनें भरल। आनन्दित। मै.

सुखी-विशे., सुख सँ भरल। सं. तत्सम

सुखी सम्पन्न-विशे., मन आ धन सँ आनन्दित। मै.

सुखौती-सं., १. सुखाएल वस्तु। २. सुखाइक गुण। मै.

सुखौती लागब-क्रि., बिन कारणें शरीरक दुबराएल जाएब। मै.

सुग्गा-सं., पोसैक योग्य पक्षी विशेष। मै.

सुगत-सं., बुद्ध भगवान्। सं. तत्सम

सुगन्ध (न्धि)-सं., सुन्दर महक, सुवास। सं. तत्सम

सुगन्धित-विशे., सुवासित। सुन्दर गन्धवाला। सं. तत्सम

सुगबा-विशे., सुग्गासन आकार प्रकारवाला। मै.

सुगबा साँप-सं., हरियर फनैवाला साँप। मै.

सुगबुगाएब-क्रि., देह कें कनेक चलाएब। मै.

सुगम-विशे., सरल, आसान। मै.

सुगरकोना-सं., नैर्ऋत्य कोण। मै.

सुगरहा-विशे., (घृणायुक्त अनादरक गारि) सुग्गर सन आचार विचार रखैवाला। मै.

सुघट-सं., १. सुन्दर घाट २. विशे., नीक जकाँ संगत होम'वाला। मै.

सुघर-विशे., १. नीक घर। २. नीक अवगति आ विचार आचारवाला। मै.

सुँघानी लेब-क्रि., (लाक्षणिक) अलक्षित भ' क' विषय वस्तुस्थितिक ज्ञान करब। बात बूझैक चेष्टा करब। मै.

सुच्चा-विशे., शुद्ध, मिलौटहीन। मै.

सुचारु-विशे., अत्यन्त सुन्दर। मै.

सुचित-विशे., सुस्थिर बुद्धिवाला। मै.

सुजन-विशे., नीक लोक। सं. तत्सम/मै.

सुजाक-सं., गुप्ताङ्गक रोग विशेष। उ. तत्सम

सुजाति-विशे., शुद्ध जातिवाला। सं. तत्सम

सुजान-विशे., जानकार, नीक ज्ञानवाला। मै.

सुझाएब-क्रि., (लाक्षणिक) ज्ञान कराएब। मै.

सुटकब-क्रि., भय सँ सिकुड़ि जाएब, नुकाइक चेष्टा करब। मै.

सुटकुनमा-विशे., देह कें छोट कय नुकाइवाला। मै.

सुटकुनिया मारब-क्रि., देह कें छोट कय संकीर्ण स्थल मे नुका रहब। मै.

सुट द'-अव्यय, अलक्षित कयें तुरन्त। मै.

सुटपुट करब-क्रि., बिन कारणों जत' तें जाइक चाही तत्ते आइत अबैत रहब। मै.

सुटियाकय-अव्यय, बिन बजाओलो प्रवेश कय। मै.

सुटियाएब-क्रि., बिन सम्पर्कों घुसियाइक चेष्टा करब। मै.

सुटेबुल-विशे., उपयुक्त। अं. तद्भव

सुँठियाएब-क्रि., मुखें मुह सुखाएब। मै.

सुँठौरा-सं., आद सुंठ आ अन्य औषधीय द्रव्य सब सँ बनल परसौतीक औषध। मै.

सुड्डाह-विशे., नीक जकाँ डाहिकय भस्म बनि गेल। मै.

सुँड़ियाएब-क्रि., १. काजक बाट पकड़ब। २. बिगड़ल लोकक नीक मार्ग धरब। मै.

सुतनमा-विशे., अधिक काल सुतैत रहैवाला। मै.

सुतना-विशे., विशेष सूतंक लतिवाला । मै.
सुतनिहार-विशे., सूतँवाला । मै.
सुतरब-क्रि., अकस्मात् काज बनि जाएब । थोड़ प्रयासें नीक जकाँ स्वार्थ सिद्धि होएब । मै.
सुतरी-सं., सन पटुआक मेहीं डोरी । मै.
सुतलहा-विशे., सूतल लोक । मै.
सुतहारा-विशे., सूत गढ़िकय वेचैक व्यवसाय करै-वाला । मै.
सुताएब-क्रि., १. भूमि पर पाड़ि देब । नामा नामीकय राखि देब । २. बच्चा कें निन्न पाड़ब । मै.
सुताओल-सं., सूतैक काज, सूतैक श्रम । मै.
सुतार-सं., नीक जकाँ काज बनि जाइक संयोग । थोड़े प्रयासें कार्य सिद्धि । मै.
सुतारब-क्रि., नीक जकाँ अप्रत्याशितो काज संयोग सँ बना लेब । सिद्धि प्राप्त करब । मै.
सुतिबाएब-क्रि., सूत जकाँ पातर होएब । मै.
सुतियाह-विशे., सूतसन पातर (गाछ) । मै.
सुतिहार-विशे., शिल्पकार, स्थापत्य कलाक जान-कार, आधुनिक इंजीनियर । मै.
सुतिहारी-सं., अभियन्तृता, इंजीनियरी, शिल्पकारी । मै.
सुथनी-सं., खाद्य कन्द विशेष, फलाहारी वस्तु । मै.
सुदिन-विशे., १. (सामन्ती युगक) भोगक हेतु आश्रिता स्त्री (रखेली) रक्षिता । सं., २. नीक दिन (समय) । मै.
सुदीन-विशे., अत्यन्त गरीब, अकिञ्चन । मै.
सुधबाध-सं., विवाह आदि करतेबताक अधिक कालक समय । वृहस्पतिक नीक राशि मे रहैक समय । मै.
सुधरब-क्रि., नीक मार्ग आ उचित स्थिति पर प्राप्त होएब । मै.
सुधार-सं., नीक परिस्थिति, समस्याक निराकरण, सरल आ सहज स्थिति । मै.
सुधारब-क्रि., उचित मार्ग पर आनब । नीक स्थिति मे ल' जाएब । आपत्ति कें दूर करब । मै.
सुधि-सं., स्मरण सँ जागल उत्कण्ठा, स्मृति स्मरण शक्ति । मै.
सुधिबुधि-सं., ज्ञान ध्यान । मै.
सुधि लेब-क्रि., तत्परता सँ ध्यान देब, स्मरण करब । मै.
सुधी-विशे., विद्वान् । मै.
सुधुआ-विशे., छल कपट आ छ पाँच नहि जनै वाला । मै.
सुन्दर-विशे., रूप गुण भरल । मै.
सुन्न-विशे., १. शून्य । २. (अंगक हेतु) बहिर । मै.
सुन्नमसान-विशे., एकदम जनहीन । मै.
सुन्नर-विशे. ऐंत । मै.
सुन्ना-सं., शून्य अंक । मै.
सुन्नी-विशे., भिन्न सम्प्रदायवाला मुसलमान । शून्य-मतावलम्बी । मै.
सुनगब-क्रि., आगिक उत्तेजित होएब । (लाक्षणिक) सामाजिक उत्तेजनाक बात पसरब । मै.
सुनगाएब-क्रि., आगि कें जगाएब । (लाक्षणिक) समाज मे उत्तेजनाक बात बढ़ाएब । मै.
सुनझाएब-क्रि., वापस करब, घुरा देब । मै.
सुनटा-विशे., उचित स्थिति मे आनल वस्तु । मै.
सुनटाएब-क्रि., विपरीत स्थिति सँ वस्तु कें समुचित स्थिति मे करब । मै.
सुनता उपास-सं., कत्तौ होम'वाला विशेष आरा-धनाक विशेषतया सत्यनारायण पूजाक नामो सुनला सँ कयल गेल व्रत । मै.
सुनबहिरी-सं., चमड़ा पर आ कोनो अंगक शून्यता सँ स्पर्शक भेदवाला रोग, कुष्ठ । मै.
सुनबाहि-सं., आज्ञाक पालन, कहल बात पर ध्यान रखैक चेष्टा । मै.
सुनलहा-विशे., बिना मूलक ज्ञान कयने केवल ककरो मुहें सुनल बात । मै.
सुनलाक ढोलिया-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) ककरो मुहें कोनो बात सुनिकय प्रचार कयनिहार । मै.
सुनहकार-सं., एकदम निर्जनता । मै.
सुनहट-सं., क्षणिक निर्जनता । मै.
सुनाएब-क्रि., दोसरा कें फरिछाकय कहब । मै.
सुना पड़ब-क्रि., श्रवण गोचर होएब । कान मे शब्दक प्रवेश करब । मै.
सुनि सुनि लेब-क्रि., (लाक्षणिक) प्रत्यक्ष वा अनुमान सँ अथवा अकानिकय प्रसंगक रहस्य जनैक गुप्तचरी करब । मै.

सुनि मानि-सं., कोनो हितक बात वा कि उपदेशक बात सुनिकय ओकरा मानैक चेष्टा । मै.

सुपक-विशे., नीक जकाँ पाकल । मै.

सुपच-विशे., नीक जकाँ पचैवाला पदार्थ । सुपाच्य । सं. तद्भव

सुपत-सं., अगत, शुद्ध कमाइ । मै.

सुपती-सं., बाँसक जड़िवाला गीरहक कैंचुल । मै.

सुपथ-सं., १. नीक बाट । २. स्वास्थ्यक हितकर । मै.

सुपरिया-विशे., सुपारी एतेक मानवाला । मै.

सुपहा-सं., सूप पर ठोकि कय बनाओल गोइठा । मै.

सुपात-विशे., सुपात्र, सज्जन पुरुष । मै.

सुपान्थ-विशे., सूप स' ल' क' उछालैक सदृश मुसलाधार वर्षा । मै.

सुपारी-सं., गुआ, कसैली । देशज

सुपास-सं., सुपार्श्व, सुविधा, जर्मे मे सब आवश्यक वस्तु भेटैक गुण । सं. तद्भव

सुफल-सं., १. नीक फल । २. तीर्थक पण्डा द्वारा देल हृदय सँ आशीर्वाद । सं. तत्सम

सुबकब-क्रि., विनु शब्द जोर सँ श्वास खींचि खींचि कानब । मै.

सुबास-सं., सौरभ, सुगन्धि । मै.

सुब्यस्त-विशे., १. सुखी सम्पन्न । २. सब काज सँ निश्चिन्त । मै.

सुभग-विशे., सुन्दर । सं. तत्सम

सुभा-सं., चोरिक शंका । मै.

सुभीता-सं., सब वस्तुक सुविधा, भेटैक आसानी । मै.

सुम्मा-सं., काँटी धँसबैक काँटा । मै.

सुमन-सं., फूल । सं. तत्सम

सुमिरन-सं., स्मरण । मै.

सुमिरनी-सं., जपक संख्या मोन रखैक माला । मै.

सुमिरब-क्रि., मोन पाड़ब, स्मरण करब । मै.

सुमेर-सं., मालाक दुनू छोर जोड़ैवाला दाना । मै.

सुमेरु-सं., देव पर्वत । सं. तत्सम

सुरं द'-अव्यय, अलक्षित वेग सँ । मै.

सुर्रा-विशे., १. (लाक्षणिक) दुब्बर पातर नम्मा । २. डारि पात झारल केवल डन्टी मात्र बाँचल । मै.

सुर्रा लागब-क्रि., फूल पात झरिकय डन्टी टा बचैक रोग होएब । मै.

सुर-सं., देवता । सं. तत्सम

सुरकन-सं., मुहँ नाकक बसात सँ द्रव पदार्थ उपर खींचैक कम । मै.

सुरकब-क्रि., मुहँ नाकक बसात सँ उपर खींचब । मै.

सुरका-विशे., अधिक द्रव वस्तु तेजी सँ सुरकैक प्रकृतिवाला । मै.

सुरकाएब-क्रि., नाक मुहँ द्वारा द्रव पदार्थ कें दोसरा कें खींचैक अभ्यास कराएब । मै.

सुरकान भरब (मारब)-क्रि., १. अधिक जोर सँ सुरकब । २. बैसले बैसल तेजी सँ दौड़ब । मै.

सुरकिया मारब-क्रि., १. निहुरल अत्यन्त जोर सँ अलक्षित जकाँ भागब । मै.

सुरकी लेब-क्रि., नाकक द्वारा द्रव औषध सुरकब । मै.

सुरकौआ-विशे., सुरकैक योग्यवाला । मै.

सुरखी-सं., पजेबाक चूरल गर्दी । उ. तद्भव

सुरखुरू-विशे., बिना योग्यतें मिथ्या प्रभावी तथा अगुआ । मै.

सुरंग-सं., धरतीक भीतर मे बनब कृत्रिम गुप्त बाट । सोन्हि । सं. तत्सम

सुरगण-सं., १. मैथिलक मूलग्राम विशेष । २. देवताक समूह । सं. तत्सम

सुरड़ब-क्रि., डन्टी सँ सबटा फूल वा पत्ती वा फल तोड़िकय मुक्त क' देब । मै.

सुरड़ा-सं., डन्टी दाबिकय खींचैक कम । मै.

सुरड़ाएब-क्रि., अनका हाथें डन्टी सँ ससारिकय तोड़ाएब । मै.

सुरड़ान-सं., अत्यन्त रूपें फूल पत्ती झारैक कम । मै.

सुरत-सं., सम्भोग । सं. तत्सम

सुरता-सं., स्मरण, सुधि । मै.

सुरती-सं., तमाकू । हि. तत्सम

सुरफुराएब-क्रि., चेतना करब, चेष्टा करब । मै.

सुरफुरी-सं., चेष्टा, उपाय । यत्न । मै.

सुरभि-सं., १. सुगन्धि । २. वसन्त । सं. तत्सम

सुरभित-विशे., सुगन्धित । सं. तत्सम

सुरम्य-विशे., अत्यन्त मनोहर । सं. तत्सम

सुरमा-सं., आँखि कें सुशोभित करैक विशिष्ट आँजन । उ. तत्सम

सुरसा-सं., बर्तन वा अन्य कोनो वस्तु पकड़ैवाला लोहाक चुट्ठा । मै.

सुरसुर-विशे., सुरकि कय झोरक संग खाइवाला झोर वाला पदार्थ । मै.

सुरसुर मुरमुर-विशे., सुरकैक संगहि मुह मे कड़कड़ करैवाला भोजन पदार्थ । मै.

सुरसुराएब-क्रि., उबल होएब । मै.

सुरसुरी-सं., नाक मुह मे कड़ूक अनुभव । मै.

सुरहा-विशे., अपनें लोकें काज केनिहार । मै.

सुरा-सं., मदिरा (दारू) । सं. तत्सम

सुराख-सं., छेद, भूर, छिद्र । उ. तत्सम

सुराग-सं., वार्ताक गुप्त रूपें ज्ञान, विषयक सूक्ष्म उपाय । पता ठेकान । मै.

सुराह-विशे., एके बातक लोक मे तल्लीन । स्त्री० सुराहि । मै.

सुराही-सं., पाकल माटिक विशेष प्रकारक जलपात्र । मै.

सुरियाएब-क्रि., मत अथवा पक्ष मे आएब । मै.

सुरुङ-विशे., अत्यन्त ऊँच, उपर सोझ उठल । मै.

सुरुङवा-विशे., उपर उठलहा । सोझ ऊँच । मै.

सुरुह-अव्यय, आदि, आरम्भ मे । मै.

सुरेब-विशे., सुन्दर आ सब अंग सँ परिपूर्ण । मै.

सुरेबगर-विशे., सर्वाङ्ग सुन्दर । मै.

सुरैली भास-सं., सुन्दर स्वरवाला लय । मै.

सुलझब-क्रि., आपसी विरोधक मिलान भ' जाएब । मै.

सुलझाएब-क्रि., आपसी विरोध नष्ट कराकय समन्वय कराएब । मै.

सुलच्छन-विशे., नीक लक्षणवाला, शुभ देम'वाला । मै.

सुलझब-क्रि., समस्या सोझराएब । मै.

सुलझाएब-क्रि., समस्याक समाधान करब । मै.

सुलफा-सं., काठ लोह आ पाथरक डन्टा मे, एक दिश उतार आ अन्त मे अत्यन्त पातर भोंकैक योग्य बनल अस्त्र । मै.

सुलबाहि-सं., व्यथा कय लेहू पोटावाला अधिक बेर मलक वेग । मै.

सुलभ-विशे., सुगम आ सुगमता सँ प्राप्त होम'वाला । सं. तत्सम

सुलसुल करब-क्रि., अधिक स्थूलता मोटाइक कारणें अकर्मण्यता । (काज करैक असमर्थता होएब) । मै.

सुलसुली धरब-क्रि., मोटाइक द्वारें उठै बैसै मे कठिनता होएब । मै.

सुशील-विशे., नीक स्वभाववाला । मै.

सुस्त-विशे., मन्द, गतिहीन । उ. तत्सम

सुस्ताएब-क्रि., अल्पकालिक विश्राम करब । मै.

सुस्ती-सं., मन्दता । उ. तत्सम

सुस्तें-अव्यय, धीरें धीरें । मै.

सुसकारी भरब-क्रि., मुह सँ बँसुलीसन शब्द करब । मै.

सुसकी पाड़ब-क्रि., मुह सँ बलात बहार कय ध्वनि करब । मै.

सुसकें-अव्यय, सरलता, आसानी आ सुगमता सँ । मै.

सुसुआएब-क्रि., अत्यन्त कड़ू स्वाद सँ, अत्यधिक जाड़ सँ मुह सँ सू सू ध्वनि करब । मै.

सुसुम-विशे. कनेक गरम कवल । मै.

सुसुमाएब-क्रि., कनेक गरम करब । मै.

सुहकार-सं., स्वरस, बार्तक प्रति पक्षपात । स्वीकार । भेद (रहस्यक) प्राप्ति । मै.

सुहकार लागब-क्रि., स्वीकारक स्वरस पाएब । मै.

सुहबी-विशे., घर मे स्नेह सँ देखल जाइवाली बेटी । मै.

सुहवं (वा)-विशे., सधवा । ऐहव । मै.

सुहाल-सं., खेतक आ भूमिक सरसता । मै.

सुहिया-विशे., अधिक नाम कम चाकर आ पातर कदोआवाला उत्थर हूर । मै.

सुहृदय-विशे., परस्पर समर्पित मित्र । सं. तत्सम

सू

सूआ-सं., १. बोरा आदि सीयैवाला सूई जकां लोहक कांटा । २. स्रोत । मै.

सूआगरय-विशे., अधिक ढालू परक चार । मै.

सूइ-सं., १. वस्त्र आदि सीबैक लोहक मेहीं अस्त्र । २. देह मे औषध सन्हिअबैक अस्त्र । मै.

सूकी-सं., चौअन्नी सिक्का, रुपैयाक चारिम भागक सिक्का । मै.

सूग्गा-सं., देखू—"सुग्गा" । मै.

सूगी-सं., छाताक कमानी मे छेद करैक अस्त्र । मै.

सूँघ-सं., जौ तथा धान गहुम आदि फसिलक आगू एवं मोस आदि दंशक कीट सभक मुह मे बड़ल पातर आ सूक्ष्म काँट । मै.

सूँघनी-सं., सूँघैत रहैवाला पदार्थ । नोसि । मै.

सूँघब-क्रि., नाक सँ गन्धक ज्ञान करब । मै.

सूड़-विशे., अत्यन्त जड़ता भरल लोक । मै.

सूचक-विशे., स्थितिक ज्ञान देम'वाला । सं. तत्सम

सूचना-सं., विशेष वार्ताक बोध । सं. तत्सम

सूची-सं., तालिका, क्रमबद्ध वस्तुक लेख । सं. तत्सम

सूजी-सं., दानादार अन्नक कोमल चूर्ण । मै.

सूझब-क्रि., आँखि वा ज्ञान सँ विषयक दर्शन करब । मै.

सूझि-सं., सूझैक शक्ति । दूरदर्शी बुद्धि । मै.

सूझिबूझि-सं., ज्ञान द्वारा आगू अर्थात निश्चित भविष्यक दर्शन करैक शक्ति । मै.

सूँठि-सं., सुखाएल आद । मै.

सूँढ़ा-सं., चाउर अन्न मे लगैवाला मेहीं कीड़ा । मै.

सूँड़ि-सं., व्यावसायिक जाति विशेष । मै.

सूँड़-सं., हाथीक कर (शुण्डा) । मै.

सूढ़ि चढ़ब-क्रि., कोनो विशेष बातक शौंक होएब । मै.

सूत-सं., कपास, तूर सँ बाँटल ताग, वस्त्र आदिक मूल वस्तु । २. सारथी । मै.

सूतब-क्रि., १. देह के नम्माकय भूमि पर पड़ि रहब । २. निन्न पड़ब । मै.

सूता-सं., सूत, बाँटल कपास आदिक तार । मै.

सूति-सं., गरदनि मे पहिरैवाला मोट भारी ठोस गहना । हँसुली । मै.

सूती-विशे., कपासक सूत सँ बनल वस्त्र । मै.

सूदि-सं., ऋणक वृद्धिवाला अंश, ब्याज । मै.

सूदी-विशे., सूदिवाला ऋण । मै.

सूनब-क्रि., शब्द पकड़ैक शक्ति होएब । मै.

सूनसान-विशे., जनहीन । एकदम शून्य । मै.

सूप-सं., १. बाँसक बीनल गोल डगरा वा चौकोर कोनिया नामक अन्न फटकैक साधन । २. शोर । शूर्प । सं. तद्भव/मै.

सूर्य-सं., दिनकर । सं. तत्सम

सूर्यमुखी-सं., फूल विशेष । सूर्यक दिशा मे घूमै वाला फूल । मै.

सूर-विशे., १. आँकाह लोक । २. आन्हर । मै.

सूरदास-विशे., नेत्रहीन, नहि देखि सकैवाला । मै.

सूरसार-सं., तैयारी प्रस्तुत (उद्यत) होइक चेष्टा । मै.

सूरि-सं., मनक शोक दिशक झुकाव । मै.

सूरि चढ़ब-क्रि., एके बात वा काजक शौंक होएब । मै.

सूल-सं., १. हार्दिक व्यथा । २. त्रिशूल अस्त्र । मै.

सूल होएब-क्रि.,१. कोनो बातक हेतु मन मे गम्भीर पीड़ा होएब । २. व्यथा कय आओवाला मल उतरब । मै.

सूली-सं., मृत्यु दण्डक विशेष विधि । मै.

सूहब-विशे., देखू—"सुहबे" । मै.

सूहा-सं., माछ विशेष । मै.

सूही-विशे., देखू—"सुहिया" । मै.

सृ

सृका-सं., प्राचीन अस्त्र विशेष । सं. तत्सम

सृजन-सं., संसार । सं. तत्सम

सृति-सं., सीढ़ी, पद्धति, मार्ग । सं. तत्सम

सृष्टि-सं., ब्रह्माण्ड, संसार । सं. तत्सम

से

से -सर्व., (निश्चयवाचक) ओ । (संयोजक) से । मै.

सेआस-सं., अप्रासंगिक आडम्बर आ अनुचित वार्ता । मै.

सेआसी-विशे., सदिखन सवठाँ सेआस कयनिहार । मै.

सेओ-सं., फल विशेष । सेब । मै.

सेक-सं., सहैक जोकर ताप लेब । मै.

सेकन-सं., सेक सेबाक विधि । मै.

सेकब-क्रि., ताप लगाएब । मै.

सेकलहा-विशे., ताप लगाओल । मै.

सेकाएब-क्रि., दोसरा द्वारा ताप लगबाएब । मै.
सेकासेकी-सं., निरन्तर ताप लगबैक प्रक्रिया । मै.
सेख-सं., मुसलमानक एक प्रभेद । मै.
सेखी-सं., बड़प्पनक अहंकार । मै.
सेज-सं., बिछाओन, शय्या । मै.
सेजपाट-सं., बिछाओल बिछाओन । मै.
सेजबन्ह-सं., बिछाओनक ओहार । आधुनिक दृष्टि मे मसहरी । मै.
सेजाओट-सं., उचित रूपें शय्या पसारैक प्रक्रिया । मै.
सेठ-विशे., धनीमानी व्यापारी । मै.
सेठाइन-विशे., सेठक पत्नी । मै.
सेड़र-विशे., स्वाद सेवा मे शक्तिहीन । प्रयोग—"पान खाइत खाइत ठोह सेड़र भ' गेल ।" मै.
सेतु-सं., बान्ह, पुल । सं. तत्सम
सेदब-सं., ताप लगाएब, रसौ सेद । मै.
सेदमाल-सं., सेदब आदि सब प्रक्रिया रूपें सेवा । मै.
सेना-सं., हँसेरी, लड़ाकू लोकक समूह । सं. तत्सम
सेब-विशे., बेंटक उपर दिश उठल (कोदारि आदि पाड़ैवाला अस्त्र) । मै.
सेबै-सं., मेहीं लच्छादार सूतसन बनाओल खाद्य विशेष । अरबी
सेमार-सं., जलाशय मे जलक भीतर पसरैवाला लत्ती । मै.
सेर-सं., प्राचीन बाट । (सोलह छटाँक) । मै.
सेराएब-क्रि., ठन्दा होएब । मै.
सेरी-सं., खरिहानक भाड़ा स्वरूप अन्न । मै.
सेवक-विशे., सेवा करैवाला । सं. तत्सम
सेवन-सं., नियम सँ उपचार एवं परिचर्य्या । सं. तत्सम
सेवब-क्रि., परिचर्य्या (सेवा) एवं रक्षा तथा पालन करब । मै.
सेवा-सं., नीक मानी, शुश्रूषा । सं. तत्सम
सेवाइत-सं., देवताक पूजा आराधनाक हेतु देल सम्पत्ति । मै.
सेवाबर्दाइस-सं., सेवा करैक संग संग पालन । मै.
सेवैक-विशे., दृढ़तापूर्वक सेवा करैवाला । मै.
सेहन्ता-सं., अपूर्ण अभिलाषा । मै.

सै

सै ँ-संख्या, शून्य एकाइ एवं दस दहाइवाला अंक अर्थात् दुइ शून्यवाला तीन अंक । मै.
सैँ-विशे., स्वामी, पति । मै.
सै -सं., देखू—"सइ" । मै.
सैकड़ा-सं., तीन संख्याक मान । मै.
सैक सै-विशे., अनेक सैक संख्या भरल । मै.
सैतन-सं., १. अपराधक दण्ड । २. सम्हारिकय रखैक चेष्टा । मै.
सैतब-क्रि., १. सम्हारिकय राखब । २. अनुशासन भंग करैक दण्ड देब । मै.
सैतालीस-संख्या, सात एकाइ चारि दहाइवाला अंक । मै.
सैतीस-संख्या, सात एकाइ तीन दहाइवाला अंक । मै.
सैन्धव-विशे., १. सिन्धु देशक नोन । २. सिन्धु देशक घोड़ा । सं. तत्सम
सैन्य-सं., सेनाक समूह । सं. तत्सम
सैनि-सं., इसारा । संकेत चेष्टा । मै.
सैनिक-विशे., सेना मे रहैवाला योद्धा । सं. तत्सम
सैँर-सं., स्वेच्छा सँ विचरण । मै.
सैर-विशे., समतल । देखू—"सरि" । मै.
सैरबराबरि-अव्यय, (लाक्षणिक) देख सेख एक रंग भेल । मै.
सैला बाघ-सं., सब सँ पैघ बाघ (शेर) । मै.
सैलो देब-क्रि., उकसाएब, कोनो विषय मे युक्ति देखाएब । मै.
सैलो करब-क्रि., सैनिक टा के प्रेरणा देब । मै.
सैँह-अव्यय, सैंह । मै.

सो

सो-सं., भूगर्भ सँ बहराइत जलक स्रोत । मै.
सोअदगर-विशे., रुचिकर स्वाद भरल । मै.
सोआ-सं., स्वादिष्ट सागक एक प्रभेद । मै.
सोआइत-अव्यय, पूर्वानुभवक वर्तमानक संगति सँ सत्यताक प्रतीति । मै.
सोइरी-सं., प्रसव गृह, सूतिका गृह, बच्चाक जन्म दैक विशेष घर । मै.

सोएम-विशे., तेसर (निम्न कोटि) प्रकारक वस्तु । मै.

सोँकाएब-क्रि., प्रच्छन्न (नुकाएलसन) घर मे घोंसियाएल रहब । मै.

सोकाभि (सोँकाणी)-विशे., १. अत्यन्त संकीर्ण स्थान । २. घर मे नुकाकय घोंसियाएल रहैवाला । मै.

सोख-विशे., अत्यन्त धृष्ट आ निडर उद्दण्ड । मै.

सोखब-क्रि., द्रव वस्तु कें सोंखब । शुष्क बनाएब । मै.

सोखर-सं., उजहुन उपदर भरल बीतल बातक वार्ता । मै.

सोखा समुद्र-विशे., खूब अधिक घट द' सोंखि लै वाला । मै.

सोग-सं., देखू—"शोक" । सं. तद्भव

सोगाइत-सं., उपहार, पठाओल जाइवाला भोज्य वस्तुक सनेस । मै.

सोगारथ-सं., सफलता, भोगक द्वारा कयल श्रमक सार्थकता । मै.

सोकर-सं., उपर तनने रहैक लेल आ अड़ने रखै लेल देल अस्थायी बांसक जोड़ । मै.

सोच-सं., पश्चात्ताप भरल विशेष विषय परक हार्दिक दुख । मै.

सोचना-सं., सदिखन अतीत वस्तु वा सम्भावित विषय पर दुख आ विचार । मै.

सोचब-क्रि., भावना करब, चिन्ता आ पीड़ा युक्त विचारब । मै.

सोझ-विशे., १. समक्ष । २. सीधा, कनेको टेढ़ नहि । ३. सरल । मै.

सोझ करब-क्रि., १. सरल (सीधा) बनाएब । २. (लाक्षणिक) अनुशासन मे बान्हब । मै.

सोझबराह-विशे., सरलता सँ (आसानी सँ) सम्पन्न होम'वाला । मै.

सोझबारब-क्रि., व्यवस्थित करब, क्रमबद्ध बनाएब । सरल बनाएब । मै.

सोझराएब-क्रि., जटिल अर्थात् ओझराएल कें सरल बनाएब । मै.

सोझराह-विशे., आसान, सरल । मै.

सोझाँ-अव्यय, समक्ष, सामने, सम्मुख । मै.

सोझाँसोझी-अव्यय,समानान्तर, सीधा रेखा पर । मै.

सोझुक्का-विशे., टेढ़ नहि, एक रंग सोटल । मै.

सोझेँ-अव्यय, एक दिशाहि, सोझ रेखा पर । मै.

सोँट-सं., रोसल, ने पातर ने मोट डन्टा । मै.

सोँटन-सं., १. डोरी एवं सूत आदि वस्तु मे गुन बैसबैक हेतु घसिकय मर्दैक प्रक्रिया । २. छीलिकय चिक्कन करब । मै.

सोटब-क्रि., १. (लाक्षणिक) अधिक भोजन करब । २. डोरी आदि मे पाक बैसबैक हेतु घसि घसिकय माजब । ३. छीलिकय चिक्कन करब । मै.

सोँटा-सं., १. अस्त्र विशेष (आसा सोँटा) राजकीय यात्राक प्राचीन रीतिक अलंकार । २. हृष्टपुष्ट डन्टा । मै.

सोँटाएब-क्रि., चिक्कन कराएब । मै.

सोँटाचन्द-विशे., अत्यन्त मूर्ख । मै.

सोँटूमल-विशे., अत्यन्त अधिक खाइवाला महामूर्ख । मै.

सोँठ होएब-क्रि., (लाक्षणिक) भूख सँ व्याकुल रहब । मै.

सोँठाएब-क्रि., भुखल रहब । मै.

सोँठि-सं., १. आदक सुखाएल अंश । २. दुर्बल । मै.

सोडर-सं., कपड़ा धोएबाक क्षारीय पदार्थ । मै.

सोढ़र-विशे., भोथ । मै.

सोड़हनि-विशे., सोलह अर्थात् अधिक संख्यावाला । मै.

सोढ़हि-सं , सोलह संख्याक एकमान । मै.

सोड़ा (नोन)-सं., नोन विशेष । मै.

सोँढ़-सं., गाछक जड़ि मे अनेक मोटगर सीर । मै.

सोढ़नाथ-विशे., (लाक्षणिक) आनकर भरोसेँ भोग करैक इच्छा रखैवाला निश्चिन्त आ अनपढ़ । मै.

सोत-सं., स्रोत । जलक सूक्ष्म प्रवाह । सं. तद्भव

सोता-सं., अत्यन्त मेहीं धारा । मै.

सोति-विशे., श्रोत्रिय । उच्च मैथिल ब्राह्मण । मै.

सोतिआइ-सं., श्रोत्रिय समाजक विशेष नियम निष्ठाक आग्रह । मै.

सोतिपुरा-सं., श्रोत्रिय ब्राह्मणक बस्ती । मै.

सोतियामी-सं., श्रोत्रिय ब्राह्मणक विशेष सरल आ सात्त्विक आचार विचार । मै.

सोतिवंशी-विशे., श्रोत्रिय ब्राह्मणक वंशज । मै.

सोतियाहा-विशे., आर्थिक आडम्बर शून्य श्रोत्रिय ब्राह्मणक सरल व्यवहार । मै.

सोथ-सं., विशेष कारणें देहक फूलैक क्रम । मै.

सोदर-विशे., सहोदर, एकें मायक गर्भ सँ उत्पन्न । सं. तत्सम

सोधनमूति-विशे., (निन्दा मे) नाशक दुर्भाग्यक लक्षणवाला । सोधँवाला । मै.

सोधब-क्रि., १. शोध करब (चुकाएब) । २. (लाक्षणिक) सर्वनाश करब । मै.

सोन्हनर-विशे., विशिष्ट रुचि दैवाला सुगन्ध भरल भोज्य पदार्थ । मै.

सोन्हाइ-सं., अनेक जड़ी बूटिक बनल छोट बच्चाक चानि पर दैवाला औषध । मै.

सोन्हाएब-क्रि., (लाक्षणिक) मूलक द्वारे अत्यन्त तबधब । मै.

सोन्हाओल (सोन्हान)-सं., पकेब (सुकराती) दिन अनेक जड़ी बूटी सँ बनाओल माल्यात्मक औषध । मै.

सोन्हि-सं., सुरंग, सोह । मै.

सोन-सं., १. सुवर्ण, सब सँ बहुमूल्य उत्तम धातु । २. पटुआ आदि गाछक छालक बहार कयल लच्छादार तन्तु । मै.

सोनहा-सं., औषध एवं मसालाक मिलित वस्तुक समूह । मै.

सोनहाक सखारी-सं., प्राचीन समयक बाँसक बीनल औषध एवं मसाला समूहक रखैवाला पेटी । मै.

सोनहुल-सं., फूल विशेष । मै.

सोनहुला रंग-सं., सोनक समान रंग । मै.

सोनाठी-सं., पटुआक छाल उतारल सुखाएल सन्ठी । देखू—"सनठी" । मै.

सोनामूड़-सं., दलिहन विशेष । मै.

सोनार-सं., स्वर्णकार जाति विशेष । मै.

सोनाह-विशे., लच्छादार तन्तु भरल । मै.

सोनिताएब-क्रि., लेहू भरल रहब । मै.

सोनीत-सं., रक्त, शोणित, लेहू । सं. तद्भव

सोपाएब-क्रि., विकृत बसातक प्रकोप सँ सीतक अन्नक सुखा जाएब । मै.

सोफ-सं., १. मसालावाला अन्न विशेष । २. बहुत नाम आ चाकर मोथीक बीनल बहुत मोटगर बैसै जोग पटिया । मै.

सोफा-सं., १. गद्दीदार कुर्सी । २. विभिन्न शिल्पकारी भरल कोठा आ बंगला घर । मै.

सोम-सं., १. दिन विशेष । २. अत्यन्त कृपण । ३. चन्द्रमा । सं. तत्सम

सोमवारी-सं., सोम दिन मे पड़ैवाला अमावास्या पर्व एवं शिवक उपासनाक सोम दिन । मै.

सोर-सं., उच्चर स्वर । शोर सँ शब्द । मै.

सोरठा-सं., भाषा काव्यक छन्द विशेष । मै.

सोरडीह-सं., कोनो रूपें बनल उच्च भूमि । शव समूहक दाह भस्मक भूमि । मै.

सोर पाड़ब-क्रि., चिकरिकय ककरो बजाएब, आह्वान करब । मै.

सोरफोर-अव्यय, अक्लेश सँ शोरे शोर । मै.

सोरसरबा-सं., लगातार शोर करैक क्रम । मै.

सोरहा-सं., बातक प्रचार, सबक जानल वृत्तान्त । मै.

सोरि-सं., दूरधरिक नामानामी भूखण्ड । मै.

सोलकन्ह-विशे., निम्न स्तर आ अधम आचार विचारवाला लोक । मै.

सोल करब-क्रि., बदला चुकाएब । घुमाएब । मै.

सोलह-संख्या, छ एकाइ एक दहाइक अंक । मै.

सोलहुनि-सं., विरोधक उपरान्त परस्पर मिलान । मै.

सोलहनी-विशे., (लाक्षणिक) सोलहो आना अर्थात् सम्पूर्ण । मै.

सोलहिया-विशे., सोलह सोलह संख्यावाला । मै.

सोंस-सं., जलचर हिंसक जन्तु विशेष । मै.

सोँसा-सं., श्वास प्रश्वास । मै.

सोँसियाएब-क्रि., सोँ सोँ शब्द करब । मै.

सोँ सोँ शब्द करब-क्रि., जल बसात आ अन्य वस्तुक उग्र वेग सँ सोँ सोँ शब्द होएब । मै.

सोह-सं., १. सोत । २. स्मरण, सुधि । मै.

सोहगैंलो-सं., सिन्दूरदानक काल सिन्दूरक संग रहै वाला विशिष्ट शुभवस्तु । मै.

सोहथ-सं., अनेक लोहक सुलफाक गुच्छावाला एक अस्त्र विशेष । मै.

सोहदा-विशे., विभिन्न लोकक विभिन्न बात मे आबि कय निर्ममता सँ धन उड़ौनिहार । मै

सोहनगर-विशे., आँखि आ मनक सुख देनिहार शुभ-प्रद । आनन्ददायी । रुचिगर । मै.

सोहनि-सं., खोदैंबा छीलि कात करैक प्रकार । मै.

सोहब-क्रि., कोनो वस्तुक खोदैंबा छीलब वा ओदारब । मै.

सोहर-सं., बच्चाक जन्म कालक गीत । मै.

सोहरब-क्रि., सम्पूर्ण अंग मे लागि जाएब । मै.

सोहरा-सं., प्रवाद । समाज मे पसरल बात । मै.

सोहरी लागब-क्रि., फल आदि गाछ आदि मे घन भ' क' लागल रहब । मै.

सोहरैं-सं., तीत बनैया दाना । मै.

सोहल सुघनी-लोकोक्ति, निःसार, अकर्मक । मै.

सोह लेब-क्रि., खोज पुछारी करब । मै.

सोहाएब-क्रि., नीक लागब । मै.

सोहाओन-विशे., सुन्दर आ सुखदायी । आनन्दप्रद । मै.

सोहाग-सं., सौभाग्य । अवैधव्य । मै.

सोहाग देब-क्रि., सद्यः विवाहित कन्याक हाथ मे सौभाग्य कामना सँ द्रव्य देब । मै.

सोहागा-सं., रासायनिक द्रव्य विशेष । मै.

सोहागिन-विशे., सधवा । मै.

सोहागी-सं., १. स्वच्छ वस्त्र (साड़ी) कें रंग विशेष सँ पाढ़ि जकाँ रंगल कोर । विशे., २. ढेंठी, कोष-कन्द आदि । मै.

सोहान्त-विशे., नीक लगैक योग्य । मै.

सोहार-सं., बहारला उत्तर घरद्वारक गदोस समेटि कय फेंकैक काज । मै.

सोहारब-क्रि., गदौस कात करब । मै.

सोहारी-सं., फुलकी बिन छानल रोटी । मै.

सोहाँस-सं., खीरा, लत्तीवाला फल । मै.

सोहिजन-सं., मुनिगाक एक प्रभेद व्यंजन । मै.

सोहुआ-विशे., सोहि कय काज मे आनल । मै.

सौ

सौं-संख्या, सै । हि. तत्सम

सौकीन-विशे., अधिक अपना कें लहकचहक सँ सज-बैक एवं उत्तम भोजनक विचार रखैवाला । उ. तत्सम

सौख-सं., मेहन्ता पुरैक प्रबल वेग । मै.

सौख मनोरथ-सं., (लाक्षणिक) स्त्री पुरुषक परस्पर संगम । मै.

सौखिया-विशे., सौख सँ कयल गेल काज । मै.

सौजन्य-सं., परस्पर सद्भाव । मै.

सौजन-सं.,सामाजिक रूपें खान पान आदि मे व्यव-हारिक एकता । मै.

सौजनियाँ-विशे., सिद्ध अन्न खाइक व्यवहारवाला समाजी । मै.

सौठ होएब-क्रि., ओर लागब, समाप्त भ' जाएब । मै.

सौताइ-सं., आदिवासी जाति विशेष । मै.

सौतिन-विशे., पतिक दोसर वैध पत्नी । मै.

सौतिनिया डाह-सं., सौतिनिक ईर्ष्या जकाँ उत्पन्न ईर्ष्या । मै.

सौती-सं., पातर धारावाली छोट नदी । मै.

सौंथ-सं., माथक केश कें दू भाग केने बनल रेखा । मै.

सौंथ कोखि-सं., स्त्रीक गब सँ पैघ सोहाग सधवापन आ सन्तान । मै.

सौंथी-सं., सौंथ परक गहना । मै.

सौदा-सं., कीनैं बेचैक सामग्री । मै.

सौदागर-विशे., कीनैं बेचैंवाला बनिया । मै.

सौदाबाड़ी-सं., दैनिक उपयोगवाला कीनल वस्तुक समूह । मै.

सौंपब-क्रि., समर्पण करब । मै.

सौर-सं., एक कपड़ाक संग दोसर कपड़ा कें मोट करैक हेतु अस्थायी मिलान । मै.

सौर करब-क्रि., अस्थायी रूपें कपड़ा मे कपड़ा साटब । मै.

सौरकी-सं., जल मे होमैवाला भेटक फूलक कन्द । मै.

सौरभ-सं., सुगन्धि । सं. तत्सम

सौरमण्डल-सं., सूर्यक चारूकात घूमैवाला ग्रह परिवार । मै.

सौरा-सं., माछ विशेष । मै.

सौराठी-सं., सौरा माछक बच्चा । मै.

सौरी-सं., बच्चा कें जन्म दैक हेतु विशेष घर । मै.

सौंस-विशे., अभग्न । सम्पूर्ण । मै.

सौँस-सं., फल आदिक जमाओल रस । सं. तत्सम

ह्र

ह्रस्व-विशे., १. लघु उच्चारणवाला मात्रा । २. छोट । सं. तत्सम

ह्रास-सं., अवनति, क्षीणता । सं. तत्सम

ह -अव्यय, मालवाहक गति कें (ठाढ़ करैक) रोकैक शब्द । मै.

हऽऽ-अव्यय, थाकनि, व्यथा आ खेदक शब्द । मै.

हँ -अव्यय, १. स्वीकार । २. मौर कथला पर उपस्थितिक ध्वनि । मै.

हइ-अव्यय, नीचक प्रति सम्बोधन । २. कि., छै, अछि । (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.

हओ-अव्यय, अपना सँ नीच पुरुषक प्रति सम्बोधन । मै.

हक-सं., सामर्थ्य । प्रयोग–"की कहू बेचारी कें दुइए दिनक दुख मे एक वियानक हक चल गेलै ।" २. अधिकार । उ. तत्सम/मै.

हकदरिद्र-विशे., अत्यन्त निर्धन । मै.

हकन्न कानब-कि., भीतरें भीतर अत्यन्त व्यथित रहब । मै.

हकपाड़ा-विशे., हाक (जोर सँ सोरकय) दय भिक्षा माङब । मै.

हकबकाएब-कि.,विस्मय आ भय सँ हतबुद्धि होएब । मै.

हकबाहि लागब-कि., एकै अभीष्ट वस्तुक हेतु बारम्बार बजैत रहब । मै.

हकमब-कि., अधिक श्रम सँ तेज श्वास प्रश्वास होएब । मै.

हकमी-सं., दम्मा आ कुकुर खाँसी आदि सँ हकमैत रहैक रोग । मै.

हकतिहार-विशे., हकार पुरैवाला । मै.

हकर हकर-सं., भोजन करै मे शीघ्रता । मै.

हकलीलो होएब-कि., अभीष्ट वस्तुक प्राप्ति नहि भेने अत्यन्त व्यग्र रहब । मै.

हँकाएब-कि., सुरक्षित रखैले पशु पक्षी कें भगाएब । मै.

हकार-सं., बिन भोजनक विशेष अवसर पर सम्मेलनक आमन्त्रण । मै.

हकारब-कि., सम्मिलित होइक आमन्त्रण करब । मै.

हकासल पियासल-विशे., तीव्र गतिक द्वारें श्रम आ भूख पियास सँ व्याकुल । मै.

हकुलाह-विशे., सन्तोषहीन, असन्तोषी । मै.

हकौआ-सं., बाल बच्चाक शून्य विभीषिका । मै.

हगना-विशे., विशेष मलत्याग करैक प्रकृतिवाला । मै.

हगनार-सं., अगणित लोकक मलत्यागक स्थान । मै.

हगबास लागब-कि., मलत्यागैक वेग होएब । मै.

हगहगी लागब-कि., बारम्बार मलत्यागक वेग होएब । मै.

हगाएब-कि., छोट नेना कें मलत्याग कराएब । मै.

हगामा-विशे., सर्वसाधारण लोकक समूह । मै.

हगी करब-कि., शिशुक मलत्यागब । मै.

हँ गे !-अव्यय, काकु अथवा स्वीकारक शब्द । मै.

हगोर-विशे., अधिक मल छोड़ैक प्रकृतिवाला । मै.

हज-सं., मुसलमानक प्रसिद्ध मक्का तीर्थक तीर्थाटन । उ. तत्सम

हजम-विशे., पेटक पाक लेल अन्न । उ. तत्सम

हजाम-सं., नौआ जाति । उ. तत्सम

हजार-संख्या, दश सैंक मानवाला संख्या । मै.

हजारा/हजारी-विशे., हजार (असंख्य) पत्ती वा केसरवाला फूल । प्रयोग–"हजारी गेना फूल ।" मै.

हट्ठा-सं., हर जोतल जाइवाला स्थान । मै.

हट्ठा कट्ठा-विशे., सबकल आ पुष्ट शरीरवाला । मै.

हट्ठोघड़ी-सं., आठो पहर, सदिखन । मै.

हँटब-कि., स्थान सँ विचलित होएब । दूर जाएब । बात सँ फिरि जाएब । मै.

हटब-कि., वर्जना आ तर्जना करब । ताड़न देब । मै.

हटबाहि-सं., हाट पर कीनै बेचैक काज। मै.

हटबाह-विशे., हाट पर वस्तु बेचैवाला बनियाँ। मै.

हटाएब-क्रि., दूर करब, स्थान सँ विचलित करब। बहिष्कार करब। मै.

हटिया-सं., अस्थायी बाजार, हाट। मै.

हटौंटा-सं., निषेध, निवारण, रोक। मै.

हठ-सं., जिद्द, जहनि, आग्रह। मै.

हठात्-अव्यय, एकाएक, अकस्मात्। मै.

हठी-विशे., आग्रही, जिद्दी। मै.

हड्डी-सं., खण्डित हाड़। अस्थि खण्ड। मै.

हड़कब-क्रि., अचानक मालजालक भागब। मै.

हड़कम्प-सं., हाड़धरि कँपवैवाला भय। मै.

हड़कम्प मचब-क्रि., भय भरल व्याकुलता होएब। मै.

हड़काइ-सं., अचानक मालजाल कें उत्तेजित करैक चेष्टा। मै.

हड़काएब-क्रि.,अचानक मालजाल कें भगा क' तितिर वितिर करब। मै.

हड़काछु-सं., काछुक एक प्रभेद। मै.

हड़गर कठगर-विशे., सबकत आ पुष्ट शरीरवाला। मै.

हड़गोड़ी-सं., गर्दनि लगायत पैरक बन्हन। दुष्ट माल कें साधैक प्रक्रिया। मै.

हड़जोड़वा-सं., एक जड़ी विशेष। मै.

हड़ताल-सं., कोनो विशेष लक्ष्य सिद्धि करैले कार्य क्षेत्रक कर्मचारी समूहक कार्य बन्न करैक हठ। मै.

हड़पब-क्रि., बल, कल आ छल सँ ककरो सम्पत्तिक हरण करब। मै.

हड़बड़ाएब-क्रि., अगुताइ सँ व्यग्र आ चंचल होएब। मै.

हड़बड़ी-सं., अगुताइक द्वारें मनक चंचलता। मै.

हड़बिरो मचब-क्रि., समूहक मन मे चिन्ता व्यग्रता आदक्क भरल चंचलता आ व्याकुलता होएब। नाशक कम बनब। मै.

हड़मुड़हा-विशे., अवच्छता आ मूर्खता भरल। मै.

हड़रोग-सं., हाड़ मे पैसल दीर्घ रोग। प्रयोग—"हड़ रोग छूटय मुदा वंश रोग नहि चलय।" मै.

हड़रो विड़रो लागब-क्रि., बिन कोनो कारणें दैवी घटना सँ शीघ्रता सँ नाशक कम होएब। मै.

हड़संहारि-विशे., दुर्भाग्यक लच्छवाली। मै.

हड़हड़ाएब-क्रि.,हड़हड़ ई विकट शब्द करब तथा विकट शब्द होएब। मै.

हड़हड़ी बरब-सं., ठनका। मै.

हड़ही मुरही-विशे., सकल साधारण लोक। मै.

हड़ाक द'-अव्यय, हड़हड़ शब्दक संग। मै.

हड़ाशंख-सं., डोकासन जीव विशेष। विशे., (लाक्षणिक) बुद्धिहीन आ अलच्छ। मै.

हड़ाह-विशे., दुर्बलता सँ अधिक भयैवाला (लोक, मालजाल)। स्त्री० हड़ाहि। मै.

हँड़िया-सं., भानस करैक वर्तन वासन। मै.

हड़िरा-सं., डाँर मे धोती साड़ीक कसिकय लपेटन। मै.

हड़ी-सं., काठक बनल बेड़ी। मै.

हड़ोखरि-सं., नाना प्रकारक ढेप चेप आ पाथर। मै.

हड़ोरब-क्रि., दुनू बाँहि सँ हसोथिकय एकट्ठा करब। मै.

हड़ौत-सं., बाँसक एक प्रभेद। मै.

हण्डा-सं., भात रन्हैवाला बड़का वर्तन। मै.

हत्-अव्यय, लाजवाला परिहासक शब्दक निषेध। मै.

हत्ता-सं., ऊँच कयल आरि, सीमा। मै.

हत्था-सं., १. आद आ केराक भिन्न भिन्न गुच्छा। २. सीड़ल मरुआ (अन्न) क झरल अन्न भरल पुत्ती। मै.

हत्थाबाँही-सं., १. परस्पर आवेश सँ हाथ के पकड़ि रहैक कम। २. हाथ बाँहि पकड़ैक झगड़ा। मै.

हत्थाहत्थी-सं., एक हाथ सँ दोसर हाथ चलैक प्रक्रिया। मै.

हत्थी-सं., उत्तान हाथवाला रूप। मै.

हतब-क्रि., हत्या करब। मै.

हताएब-क्रि., अस्त्र सँ मारल जाएब। मै.

हताश-विशे., टूटल आशाक व्याकुलतावाला। सं. तत्सम

हताहत-विशे., मारल आ घाइल कयल। सं. तत्सम

हतुआ-विशे., बधिक, हत्या कयनिहार। मै.

हतो प्रत्यास-विशे., निराशाक चिह्नवाला। प्रतीक्षा पूर्वक आशाक टूटने मलिन आकृतिवाला। हृत प्रत्याश। सं. तद्भव

हथकठ-विशे., उचितो मे कम दैवाला कृपण। मै.

हथकड़ी-सं., बन्दीक हाथ बन्हैवाला कठोर लोहक जिञ्जिर। मै.

हथकण्डा-सं., लक्ष्य सिद्ध करैक उपाय। मै.

हथकरघा-सं., हाथ सँ चलबैवाला कपड़ा बीनैवाला कल। मै.

हथगर-विशे., छूटिकय अधिक दैवाला। मै.

हथघड़ी-सं., हाथ मे बन्हैवाला घड़ी। मै.

हथछुट्टू-विशे., चट द' मारि दैबैक स्वभाववाला लोक। मै.

हथजोड़-सं., हाथक बाँटल डोरी। मै.

हथ (ह) ड़-सं., टोंटीवाला पैघ प्राचीन जलपात्र। मै.

हथड़ा-सं., जुता मे काँटी ठोकैक ठोकना। मै.

हथधरा-सं., धीपल बर्तन पकड़ैक लेल पैघ पात वा कपड़ा। मै.

हथधरी-सं., विवाह सम्बन्ध हेतु दूनू पक्ष सँ सम्मिलित भय निश्चयक विधि। मै.

हथना-सं., अत्यन्त छोट नेनाक हाथक गहना। मै.

हथनोत-सं., हाथ जोड़िकय निमन्त्रण करैक व्यवहार। मै.

हथबेच-सं., एक गोटयक हाथ सँ बिना सूदिक थोड़ समयक लेल ऋण। मै.

हथफेर-सं., एक गोटयक हाथ सँ रीन ल' क' दोसरक ऋणक शोध। मै.

हथरस-सं., कोनो अंग वा वस्तु पर हाथ फेरैत रहैक चेष्टा। मै.

हथरा-सं., चकरी (छोट जाँत) के चलबैक खूजल डन्टा। मै.

हथलग्गू-विशे., सरलता सँ हाथ मे उठबैक योग्य। मै.

हथसंकर-सं., हाथक पाँचो आङुर मे फँसाओल गहना। मै.

हथिगन-सं., हाथीक सूँड़सन फूल फलवाला जड़ी। मै.

हथिनी-सं., हाथीक स्त्री जाति। मै.

हथिया-सं., हस्त नामक नक्षत्र। मै.

हथियाएब-क्रि., छल बल कल सँ अधिकार कय लेब। मै.

हथियार-सं., अस्त्र, शिल्प एवं युद्धक शस्त्र। उ. तत्सम

हथिसार-सं., हाथीक ऊँच घर। मै.

हथोरब-क्रि., भूमि पर हाथ घुमाकय समेटब एवं कोनो वस्तुक अन्वेषण करब। मै.

हथोरिया देब/हथोरिया मारब-क्रि., अन्हार मे स्थान स्थान पर किछु तकैक हेतु हाथ घुमाएब। मै.

हथौटी-विशे., ककरो हाथेँ देल गेल वस्तु। मै.

हथौड़ा-सं., लोहा कें पीटैवाला लोहक बड़का घन। मै.

हथौड़ी-सं., छोटका घन। मै.

हद-सं., सीमा। मै.

हद करब-क्रि., (लाक्षणिक) अतिशय नीचता करब। मै.

हदमदाएब-क्रि., वमनक वेग होएब। मै.

हदमदी-सं., १. वमनक वेग। २. (लाक्षणिक) दुविधाक स्थिति। मै.

हदरब-क्रि., निराशाक बात करब। मै.

हदहद बैसब-क्रि., अत्यन्त दुब्बर होएब। मै.

हदियही-अव्यय, सदियान। मै.

हदियाएब-क्रि., निराशा सोचि व्यथित होएब। मै.

हदियाह-विशे., विशेष निराशावादी। निराशा सँ सतत दुखी रहनिहार। मै.

हन्ना-सं., पाया वा खाम्हक बीचक शून्य स्थान। घरक खण्ड। मै.

हनछिन करब-क्रि., असहयोगक चेष्टा करब। मै.

हनन-सं., हत्या। सं. तत्सम

हनपट-सं., विरोध। मै.

हनपटाहि-विशे., अधिक उछलि कूदिकय विरोध करैवाली। मै.

हनपट करब-क्रि., विरोध प्रकट करब। मै.

हनब-क्रि., १. कोनो अस्त्र उठाकय बजारब उताहब। पटकब। मै.

हनहन करब-क्रि., उत्तेजनापूर्वक उत्साह भरल होएब। मै.

हनहन पटपट-सं., उत्तेजना भरल विरोध प्रदर्शन । मै.

हनहनाएब-क्रि., १ शीघ्रता सँ प्रगति करब । २. वेग सँ आगू बढ़ब । मै.

हनाठब-क्रि., कसिकय पैसाएब । मै.

हनाहनी-सं., सम्पूर्ण समाज मे पसरल उत्तेजना । मै.

हनिकय-अव्यय, कसिकय, जोर स' क' । मै.

हपसब-क्रि., १. अधिक श्वास प्रश्वास छोड़ब । २. आतुरता सँ लेबाक चेष्टा करब । मै.

हपसिकय-अव्यय, आतुरतापूर्वक । मै.

हपसी-सं., अधिक जोर सँ श्वास प्रश्वास छोड़ैक रोग । मै.

हपहप खाएब-क्रि., भुकाकय तेजी सँ खाएब । मै.

हफनाएब-क्रि., तमसाइक चेष्टा करब । मै.

हफब-क्रि., लोक पर मालजालक छूटब । मै.

हफस-सं., हफैक चेष्टा, आडम्बर । मै.

हफ होएब-क्रि., भीतरैं भीतर तमसाएल रहब । मै.

हफाएब-क्रि., मारैक लेल मालजालक लोक पर जोर सँ छूटब । मै.

हफाह-विशे., लोक पर छूटैवाला मालजाल । मै.

हफिआएब-क्रि., १. बारम्बार हाफी करब । २. (लाक्षणिक) बारम्बार अधिकार करैक चेष्टा राखब । मै.

हफीम-सं., कठोर नस्सासन मादक द्रव्य । मै.

हफीमची-विशे., हफीमक बेसी सेवन करैवाला । उ. तत्सम

हफुआएब-क्रि., भीतरैं भीतर बिगड़ल रहब । मै.

हब-सं., सामर्थ्य, शक्ति । मै.

हबक-सं., दाँत सँ कोनो वस्तु कें कटैक वा धरैक कम । मै.

हबकब-क्रि., कटैक हेतु दाँत सँ धरब । मै.

हबकाएब-क्रि., दाँतें कटाएब । मै.

हबकान-सं., जोर सँ दाँतें कटैक चेष्टा । मै.

हबकाह-विशे., अधिक हबक मारैवाला । मै.

हबकौरा-सं., बिना परिश्रमे यथेच्छ लाभ । मै.

हबगब-सं., निश्चिन्त वार्तालाप । मै.

हबर हबर-अव्यय, शीघ्रता सँ, झट झट । मै.

हबलदार-विशे., आरक्षी (पुलिस) क विशेष निम्न अधिकारी । मै.

हबशी-सं., अफ्रिकाक एक विशेष जाति । मै.

हबस-सं., वासनाक आवेग । उ. तत्सम

हबहब-अव्यय, जलदी, जलदी । मै.

हबाग्स-सं., बल, सामर्थ्य । मै.

हबेली-सं., धनवानक घर आङनक विशाल आलय । मै.

हबोढ़कार-सं., ध्वनिक संग जोर बहुवेत कनैक कम । मै.

हम-सर्व., उत्तम पुरुषवाचक । बजनिहारक निर्देश करैवाला शब्द । मै.

हमर-सर्व., हम शब्दक सम्बन्धकारक । मै.

हमरा-सर्व., हम शब्दक कर्मकारक । मै.

हमला-सं., आक्रमण । उ. तत्सम

हमहम करब-क्रि., १. (लाक्षणिक) आगू आगू रहैक चेष्टा करब । २. अहंकार भरब । मै.

हमाम-सं., १. स्नानक पैघ जलपात्र । २. साबुन विशेष । उ. तत्सम

हमें-सर्व., हम (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.

हय-अव्यय, सम्बोधनक शब्द । मै.

हर्ता-विशे., हरण करैवाला । मै.

हर्ष-सं., आनन्द । मै.

हर्षित-विशे., आनन्दित । मै.

हर-सं., महादेव । मै.

ह'र-सं., खेत जोतैक अस्त्र । मै.

हरककति-सं., क्षति, हानि । उ. तद्भव

हरकट-विशे., मारि मारि वा कोनो नीक अधलाहक प्रभावरहित । मै.

हरकठ-सं., ह'र बनवैक योग्य लकड़ी । मै.

हरकततीत-विशे., अतिशय तीत स्वादवाला । मै.

हरकारब-क्रि., जेर कें हाँकिकय एक दिश मे लय जाएब । मै.

हरकारा-विशे., पशुक जेर कें हाँकनिहार । मै.

हरखरा-सं., हरक जोड़ल सब अंग । मै.

हरजना-सं., हानि होएबाक मूल्य । मै.

हरजा-सं., हानि, क्षति । हर्जा । उ. तद्भव

हरजाइ-विशे., दुःशील स्त्री आ पशु । मै.

हरजोता-विशे., हरवाहि कयनिहार। हर जोतिकय जीवन निर्वाह करैवाला। मै.

हरट्ठ-विशे., कलन्त, मूर्ख। मै.

हरण-सं., छीनब, चोराएब। मै.

हरथन भरथन-विशे., अधिकताक द्वारें अवहेलना सँ अधिक व्यवहारवाला। मै.

हरदम-अव्यय, सदिखन। उ. तत्सम

हरदर-अव्यय, प्रतिशत। मै.

हरदा-सं., खेल मे बाजिकय हारि मानैक विधि। मै.

हरदा लागब-क्रि., खेत मे फसिलक गाछ पीयर भ' जाइक रोग होएब। मै.

हरदि-सं., तीमनक आवश्यक आ प्रसिद्ध मसाला वाला पीयर रंगक कन्द। मै.

हरदिआइन-विशे., विशेष हरदिक द्वारें कुस्वाद। मै.

हरदियाह-विशे., हरदि मिलाओल। मै.

हरदी बजाएब-क्रि., कोनो प्रतियोगिता मे हारि मनाएब। मै.

हरप्पा-सं., प्राचीन इतिहासक ध्वंसावशेषक खनन वाला स्थान। मै.

हरपट करब-क्रि., वश मे नै रहैक चेष्टा करब। मै.

हरफडाहि-विशे., दुहैक काल उछलैं कूदैवाली गै महिस। मै.

हरफा-सं., अम्मत सन फल विशेष। मै.

हरफी-विशे., जकर प्रतिवर्ष नियत दरें अन्ने सूदि बढ़ैवाला रीन। मै.

हरफोड़-विशे., एके बास सँ बाओग कयल फसिल। मै.

हरब-क्रि., हरण करब। मै.

हरबाह-विशे., हर जोतैवाला। मै.

हरबाहि-सं., हर जोतैक व्यवसाय। मै.

हरबाही-सं., १. हर जोतैक हेतु श्रमिकक निश्चय। २. हर जोतैक बोनि। मै.

हरमरी-सं., खेत मे उगल घास कें हर जोतें सँ पहिने चौकी चलाकय विनाश। मै.

हरमाव-सं., बाधा कय कैं हानि। उ. तत्सम

हरमुड़हा-विशे., किछु नै बुझैवाला प्रचण्ड मूर्ख। मै.

हरमोठा-विशे., सक्कत मोट आ दुष्ट प्रकृतिवाला मूर्ख। मै.

हरमोनियाँ-सं.; संगीतक बाजा विशेष। हारमोनियम। अं. तत्सम

हररब-क्रि., अत्यन्त मोट चिकस पीसब। मै.

हररै-सं., हरीर, औषध विशेष। मै.

हरलवहा-सं., ह'र बन्हैक डोरी। हरता मे लगाओल जाइवाला डोरी। मै.

हरष-सं., देखू—"हर्ष"। मै.

हरषब-क्रि., हर्षित होएब। मै.

हरषाएब-क्रि., हर्षित बनाएब। मै.

हरसट्टे-अव्यय, हट्टेँ, अकस्मात्, सुगमता सँ। मै.

हरसी-सं., माछ मारैवाला बड़का परैला। मै.

हरहरा-सं., १. साँप विशेष। २. पुरुष (नेत्रा) क डाँरक हँरकसतन गहना। मै.

हरहा-विशे., हर जोतैवाला नीच ब्राह्मण। मै.

हराएब-क्रि., पराजित करब। मै.

हराठ-सं., हर जोतल जाइवाला स्थान। विशे., देखू—"हरकट"। मै.

हराठी कराठी-विशे., सक्कत आ कठोर अंगवाला। मै.

हरान-विशे., परिश्रान्त। हैरान। उ. तद्भव

हरान हारब-क्रि., विकल हारि होएब। मै.

हरान होएब-क्रि., परिश्रान्त होएब। मै.

हरानी-सं., परिश्रम। उ. तद्भव

हरारति-सं., अधिक थाकनि होइक कारणें उत्पन्न स्वास्थ्य मे विकार। मै.

हराश-विशे., कान्तिहीन क्षीण काय, ह्रास। सं. तद्भव

हराह-विशे., १. हर जोतैक कलावाला मूर्ख। २. अधम विचारवाला। मै.

हराहरी-अव्यय, देखू—"हरदर"। औसतन। मै.

हरि-सं., विष्णु भगवान, इन्द्र, सिंह, बानर, बेङ आदि। मै.

हरित-विशे., हरियर रंग भरल। सं., तद्भव

हरितालो-सं., भादव शुक्ल तृतीया कें गौरीक व्रत, तीज। सं. तत्सम

हरितिमा-सं., हरियर रंगक सघन प्रभाव। सं. तत्सम

हरिन-सं., पशु विशेष । हरिण । सं. तद्भव

हरिनकेर-सं., धानक एक प्रभेद । मै.

हरिनाजिन्न-सं., आधा पत्त खूजलवाला निम्न । मै.

हरियर-विशे., हरित वर्णवाला । मै.

हरियरकचोर-विशे., अत्यन्त हरियर । मै.

हरियरका-विशे., हरियर रंगवाला । मै.

हरियरी-सं., हरियर रंगक अत्यन्त प्रभाव । मै.

हरियल-सं., खाद्य पक्षी विशेष । मै.

हरिशयन-सं., आषाढ़ शुक्ल एकादशी के विष्णुक सूतैक धार्मिक प्रथा । मै.

हरिशो-सं., अगहन मे होम'वाला व्रत विशेष । मै.

हरिसँ-सं., अक्षर सभक ह्रस्व मात्रा । मै.

ह'री-सं., भूमिक स्वामी कें प्रतिवर्ष बटाइदारक देय हर । मै.

हरीक-विशे., कुटिल बुद्धिवाला । दुष्ट । मै.

हरीर-सं., देखू—"हररें" । त्रिफला औषधक एक भागवाला सुखाएल फल । मै.

हरीस-सं., ह'रक एक अंग विशेष । पँच काठक दण्ड जाहि मे पालो बान्हल रहै अछि । मै.

ह'रीह'र-सं., बटैदारक खेतक स्वामी कें प्रतिवर्ष नियम कयल देय हर । मै.

हरूबी-विशे., विशेष कठोर भूमि, सक्कत खेत । मै.

हरेक-विशे., प्रत्येक । मै.

हरेब-सं., हरदि । मै.

हरौआ-विशे.,१. अधिक हरवें (पराजित करैवाला) । २. हरन कय आनल । मै.

हल्ला-सं., बहुत लोकक एकै ठाँ बहुत जोर सँ बाजैक क्रम । कोलाहल । मै.

हल्लागुल्ला-सं., लोकक वर्बे भूकैक चेष्टा । मै.

हल्लुक-विशे., बहुत कम गुरुतावाला । लघु भार वाला । मै.

हलका-विशे., हल्लुक । हि. तत्सम

हलका-सं., १. क्षेत्रक नियमित सीमा । २. हाथीक दल एवं सैनिक । ३. हराहि मालक गर्दनि मे लटकै वाला भारी काठ । मै.

हलफ लेब-क्रि., न्यायालय मे शपथ खाएब । उ. तत्सम

हलभर-विशे., आवश्यक आर्द्रता (नमी) भरल खेत । मै.

हलचल-सं., चञ्चलतापूर्वक अगुताइक स्थिति । मै.

हलचलाएब-क्रि., चञ्चलता सँ अगुताएब । मै.

हलचली-सं., चञ्चलता सँ अगुताइक क्रम । मै.

हलतलबी-सं., शीघ्रता सँ कार्य सम्पादनक व्यग्रता । मै.

हलब-क्रि., शरीर सँ दुर्बल होएब । मै.

हलबलिया-विशे., चञ्चलता सँ काज करैक प्रकृति वाला । मै.

हलबली-सं., चञ्चलता सँ काज करैक प्रकृति । मै.

हलराएब-क्रि., बच्चा कें स्नेह सँ झुला झुलाकय प्रसन्न रखैक चेष्टा करब । मै.

हललखोर-सं., घिनाओन वस्तु कें हटाकय स्वच्छ आ परिच्छ करैवाला जाति । मै.

हलसब-क्रि., भीतर सँ आनन्द फूटब । मै.

हलसल फुलसल-विशे., भीतरे भीतर आनन्दें प्रफु-ल्लित भेल । मै.

हल हौर-सं., दोसराक द्वारा जगाओल उत्कण्ठा कौतूहल आ चञ्चलता । मै.

हलाल-सं., सँसरी काटि जीवक हत्या । उ. तत्सम

हलाहल-सं., सब सँ तेज विष । (संखिया) । सं. तत्सम

हलुआ-सं., चीनीक संग रान्हल सूजीक कोमलतम खाद्य पदार्थ । मै.

हलुआई-सं., मधुर आदि विभिन्न पकवान आ खाद्य पदार्थ रचैक व्यवसायी जाति । मै.

हलुक धना-सं., पहिने पकैवाला मेहीं अगहनी धानक प्रभेद । मै.

हलो ! -अव्यय, दूरभाष (टेलीफोन) सँ गप करै मे प्रथम सम्बोधन । अं. तत्सम

हवन-सं., अग्नि मे आहुति । सं. तत्सम

हवा-सं., बसात । उ. तत्सम

हवाइ जहाज-सं., वायुयान । मै.

हवागाड़ी-सं., मोटर गाड़ी । मै.

हवा बसात-सं., विशेष बसात लगैक अनुमान सँ उत्पन्न विकलता आ रोग । मै.

हविष्य-सं., पवित्र आ शुद्ध भोजन पदार्थ । सं. तत्सम

हस्त-सं., १. हाथ । २. हथिया नक्षत्र । सं. तत्सम

हस्ताक्षर-सं., अक्षरसाक्षी, अपन हाथें लिखल अपन नामक प्रमाण । सं. तत्सम

हस्ती-सं., धनक द्वारें उत्पन्न प्रभाव । उ. तत्सम

हंस-सं., १. पक्षी विशेष । २. आत्मा । ३. सूर्य । सं. तत्सम

हँसखोर-विशे., खूब हँसवैवाला व्यक्ति । मै.

हँसना-विशे., खूब हँसैवाला बच्चा । मै.

हँसब-क्रि., आनन्द सँ मुहक विकास करब । मै.

हँसमुह-विशे., हँसैत मुहवाला । मै.

हसरि-सं., गुण सँ उत्पन्न प्रभाव । मै.

हँसाएब-क्रि., हँसवैक चेष्टा करब । मै.

हँसारति-सं., अप्रतिष्ठा, तिरस्कार । मै.

हँसिया-सं., घास आदि कटैवाला, तरकारी कटैवाला अस्त्र । मै.

हँसाहँसी-सं., वार्तालापक बीच बराबरि हँसैक क्रम । मै.

हँसी-सं., १. हँसैक उद्गार । २. (लाक्षणिक) निन्द । ३. परिहास । मै.

हँसी करब-क्रि., परिहास करब । ठट्ठा करब । मै.

हँसीखुशी-सं., प्रसन्नता । मै.

हँसीठट्ठा-सं., परस्पर परिहास । मै.

हँसी होएब-क्रि., अप्रतिष्ठा, निन्दा होएब । मै.

हँसुआ-सं., घास आदि कटैवाला हाँसू । मै.

हँसुआकर्मक-विशे., हँसुआक बलें जीवन निर्वाह करैवाला श्रमिक । मै.

हँसुली-सं., हँसैत कालक मुहक मुद्रासन बनल गर्दनिक भारी गहना (नेकलेस) । मै.

हँसेरिया-विशे., सेना, लड़ाइ करैवाला दल मे रहैवाला । मै.

हँसेरी-सं., मारि करैवाला दल । सेना । मै.

हँसोथब-क्रि., केहुनी सँ नीचाँ हाथ सँ वस्तु कें समेटब । मै.

हसोथिया मारब-क्रि., आतुरतापूर्वक तेजी सँ हाथ आ केहुनीक अंग सँ झट झट समेटब । मै.

हँसोर-विशे. हँसैत रहैक स्वभाववाला । अधिक प्रसन्न रहैवाला, हास परिहास करैवाला । मै.

हँसौआ-विशे., अधिक हँसवैवाला । मै.

हँसौना कनौना-विशे., कखनो नीक आ कखनो अधलाह करैवाला स्थिति देनिहार । मै.

हऽ हू!-अव्यय, कार्यभार उतरलाक उपरान्त क्लान्ति अनुभवक शब्द । मै.

हहँकाल-सं., सामुदायिक अपराध । मै.

हहँकाल करब-क्रि., समूहक आर्तनाद होएब । मै.

हहरब-क्रि., क्षीण होएब, झरि झरि खसब, नीचाँ दिस खसैक क्रम होएब । मै.

हहराएब-क्रि., क्षीण बनाएब । मै.

हहारो मचब-क्रि., प्रसन्नता सँ हँसी ठट्ठाक वातावरण होएब । मै.

हहास-सं., बहुत लोकक एक व्यक्ति पर दोष । मै.

हहियासल-विशे., दीनता आ धैर्यहीनता भरल । मै.

हा

हा -अव्यय, दुःख आ शोक । सं. तत्सम

हाँ -अव्यय, मना करैक ध्वनि । मै.

हाँइ हाँइ-अव्यय, अत्यन्त शीघ्रता सँ । मै.

हाइर कौआ हाइर-अव्यय, कौआ हँकैक (भगवैक) शब्द । मै.

हाइरी तोरी भला के-अव्यय, निन्दा, विस्मय आ निषेधक ध्वनिवाला शब्द । मै.

हाउस हाउस करब-क्रि., अत्यन्त आतुरता आ तृष्णा सँ कोनो वस्तु लैक चेष्टा करब । मै.

हाए-अव्यय, खेद प्रकट करैक शब्द । मै.

हाए हाए करब-क्रि., दीनता, आतुरता आ अत्यन्त तृष्णा सँ धन बटोरैक चेष्टा करब । मै.

हाक-सं., अत्यन्त जोर सँ सोर करैक चेष्टा । मै.

हाक डाक-सं., असामयिक दुर्घटना सँ शोकक उत्पन्न स्थिति । मै.

हाक देब-क्रि., जोर सँ सोर पाड़ब । मै.

हाँकब-क्रि., चलाएब, पशुक समूह कें निर्दिष्ट स्थान दिस लऽ जाएब, भगाएब, दूर पठाएब । प्रयोग—१. "ओ अपनें गाड़ी हाँकै छथि ।" २. "कते हमरो मालजाल कें हाँकने जइहह ।" ३. "अहाँ कते तानत् कौआ हाँकू ।" ४. "ककरो हाँकि कय शीघ्र वार्ता बूझि लिअ ।" मै.

हाकरोस करब-क्रि., खूब चिकरि चिकरि कय कानब । मै.

हाँकलि डाइन-विशे., गाछ हाँकैवाली सिद्ध डाइन । मै.

हाँका करब-क्रि., शिकारी दलक द्वारा वन मे हरिण आदि पशु कें नचाकय दलक एक दिस लऽ जाएब । मै.

हाकिम-विशे., पदाधिकारी । उ. तत्सम

हाँजी हाँजी करब-क्रि., (लाक्षणिक) चापलूसी (खुशामद) मेँ हँ मे हँ मिलाएब । मै.

हाट-सं., चलैत फिरैत किछु कालक हेतु अस्थायी वेहाती बजार, कीनै बेसाहैक नियत स्थान । मै.

हाट चढ़ब-क्रि., बेचंक योग्य रहब, होएब । मै.

हाटक बाउर बाटक पानि-अव्यय, लोकोक्ति, (लाक्षणिक) अपन घरक किछु नै सबटा आनै ठामक भरोस । मै.

हाँटब डाँटब-क्रि., उच्च स्वरेँ निषेध करब । कड़ा शब्दे तर्ज सँ वर्जन करब । मै.

हाड़-सं., देहक अस्थि पंजर । हड्डी । मै.

हाड़काठ-सं., शरीर संरचनाक सन्तुलन । मै.

हाँड़ी-सं., पाक करैवाला वर्तन वासन । मै.

हाँड़ी पातिल-सं., पाकक बासन एवं पैल आदि । मै.

हाता-सं., ऊँच कयल खेतक आरि, आड़ा । मै.

हाथ-सं., हाथ । मै.

हाथ मलब-क्रि., पाछू काल, अवसर चुकला पर पछताएब । मै.

हाथ मिलाएब-क्रि., (लाक्षणिक) बराबरी करब । मैत्री एवं शिष्टताक स्नेह व्यवहार करब । मै.

हाथर-सं., जोत पुनर्बैक खेत ओहि मे ठोकल वन्दावाला लकड़ी । मै.

हाथ हाथ नं सूझब-क्रि., अत्यन्त घन अन्हार होएब । मै.

हाथाबाँही-सं., परस्पर हाथ बाँहि मिलौने रहैक चेष्टा । मै.

हाथाहाथी-सं., हाथक द्वारा पहुँचैक क्रम । मै.

हाथी-सं., विशालकाय अर्धज्ञानी सवारीक योग्य पशु विशेष । मै.

हाथे हाथ-अव्यय, एकाँ एकी हाथ सँ उठालैक क्रम । मै.

हानब-क्रि., जोर सँ पटकब, बजारब । मै.

हानि-सं., क्षति, घाटा, नोकसान । सं. तत्सम

हापस-सं., अत्यधिक लाभ करैक तृष्णा । मै.

हाफब-क्रि., (लाक्षणिक) हथिअबैक चेष्टा करब । इच्छा राखब । मै.

हाफी-सं., निन्नक आगम सँ स्वभावतः मुहक विकास । मै.

हाफी करब-क्रि., (लाक्षणिक) रहि रहि अधिकार करैक प्रयास करब । मै.

हाब डाब करब-क्रि., समय समय पर खोज पुछारी करैत रहब । मै.

हामस-सं., १. भयानक आडम्बर । २. फूसि धमकी । मै.

हार्दिक-विशे., हृदय मे उत्पन्न, गम्भीर । सं. तत्सम

हार-सं., रत्न आदि बहुमूल्य वस्तुक गैंथ माला । मै.

हारने हरिनाम-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) अपन सब चेष्टा करैक शक्ति समाप्त भेला पर ईश्वरक प्रार्थना । मै.

हारब-क्रि., पराजित होएब । मै.

हारल नटुआ झिटका बीछे-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) असफलता पर लोक केँ सफलताक भ्रम देक चेष्टा । मै.

हारा-सं., घास विशेष । मै.

हारि-सं., पराजय । मै.

हारी-सं., साधारण मोतीक माला । मै.

हारीडाली-सं., विवाहक अवसर पर बराइतक द्वारा कयल खर्च केँ लगाकय कन्या पक्षक दिश सँ बराइत केँ द्रव्य देबाक प्रथा । मै.

हारुन-विशे., भग्न । निराश । प्रयोग–"हमर हो हारुन नै करु ।" मै.

हाल-सं., १. खेतक सरसता । २. निकट समय । ३. स्थिति । ४. गाड़ीक पहिया केँ सुरक्षित रखै लेल बाहर सँ ठोकल लोहक मोट चदरा । मै.

हालति-सं., परिस्थिति । उ. तद्भव

हालब-क्रि., पीड़ा दय क्षीण बनाएब । मै.

हाला-सं., मदिरा । दारू । सं. तत्सम

हालि-सं., स्थिति, समय । मै.

हालिचालि-सं., कुशल समाचार । मै.

हाली-अव्यय, जल्दी । मै.

हालीहाली-अव्यय, झट झट । मै.

हावभाव-सं., शृङ्गारक विभिन्न चेष्टा । सं. तत्सम

हास्य-सं., १. रस विशेष । २. हँसी । सं. तत्सम

हांस-सं., पक्षी विशेष, हंस । मै.

हास-सं., हँसी, मुसकुरयनाइ । मै.

हास परिहास-सं., हँसी ठट्ठा । सं. तत्सम

हाता-विशे., सगरे एके रंगवाला । मै.

हाँसिनि-विशे., हँसिनी, सुन्दर सुलक्षण प्रसन्न स्त्री । मै.

हासिल-विशे., उपार्जित । उ. तत्सम

हाँसू-सं., हाथ सँ फसिल आदि कटैवाला चन्द्राकार लोहक पत्तक अस्त्र । मै.

हाह फूह-सं., सिंचन जकाँ अत्यन्त थोड़ कालक थोड़ रूपक वर्षा । साधारण अछार । मै.

हाहाकार-सं., सामूहिक पीड़ा, शोक आदक्षुक ध्वनि 'हा हा' । सं. तत्सम

हाँ हाँ-अव्यय, निषेध निवारण, भय, आतंक मे उच्चारित शब्द । मै.

हाहि-विशे., निरन्तर अत्यन्त तीव्र वेग रखैवाला बसात । मै.

हाहि काटब-क्रि., असन्तोषक कारणें हरदम अर्थक हेतु हा हा करैत रहब । मै.

हाही लागब-क्रि., असन्तोषक द्वारें हाय हाय करैक स्वभावे बनि जाएब । मै.

हाहुतपनी-सं., असन्तोष सँ हरदम अधिक लेबाक (प्राप्त करैक) स्वभाव । मै.

हाहुली-विशे., कतबो प्राप्त केलो असन्तुष्टे रहै वाला । मै.

हाहुस करब-क्रि., अर्थक हेतु धैर्य आ सन्तोषहीन रहब । मै.

हाहेबेरबा-सं., संकट वा विपत्तिक आतंक आ भय । चिन्ता । मै.

हि

हिक्का-सं., रुकि कय जोर सँ श्वासक उपर दिश अकस्मात् गमन । अन्त कालक श्वासक क्रम । मै.

हिकमति-सं., रहस्य, कौशल, कला, तथ्य । मै.

हिकमतिया-विशे., कलावाला, गूरिवाला । मै.

हिक लागब-क्रि., कोनो विशेष वस्तुक हेतु सदिखन सेहन्ता पुरैले मन लटकल रहब । मै.

हिकाहु-विशे., सुगमता सँ पहुँचै योग्य स्थान । मै.

हिकोहिको करब-क्रि., मन्द गतियें कोनो क्रिया मे लागल रहब । मै.

हिङाइन-विशे.,हीङ युक्त, हीङक गन्धवाला । हिङक स्वादवाला । मै.

हिङ्राएब-क्रि., रंग कें स्थायी आ कड़ा बनबै लेल चपड़ा अथवा गोंद मिलाएब । मै.

हिचक-सं., तारतम्य, संकल्प विकल्प, आगाँ पाछाँ । मै.

हिचकब-क्रि., मनक आगाँ पाछाँ करब । मै.

हिचकिचाएब-क्रि., तारम्य करब । मै.

हिचकी-सं., जोर सँ रहि रहिकय श्वासक उपर मुहें खिचान । मै.

हिचकोला खाएब-क्रि., गाड़ीक पहिया मे ठोकर लगला सँ एम्हर ओम्हर डोलब । मै.

हिज्जे-सं., अक्षरक मात्रा तोड़ि तोड़ि उच्चारण । मै.

हिजड़ा-विशे., पुरुषत्व आ स्त्रीत्व हीन, नपुंसक । मै.

हिजो करब-क्रि., वस्तुक मोल मोलाइ मे बहुत जिद करब । मै.

हिड़ोला-सं., मचकी, झूला । मै.

हिण्डोल-सं., प्रसिद्ध राग विशेष । मै.

हित-सं., कल्याण, नीक । सं. तत्सम

हितकर-विशे., कल्याण अथवा नीक करैवाला । सं. तत्सम

हिताइ-विशे., आनक कल्याण करैवाला, परोपकारी । मै.

हितू-विशे., हित चाहैवाला आ करैवाला । मै.

हितैषी-विशे., हित चाहैवाला । सं. तत्सम

हिदाइत-सं., चेतावनी, सावधानी, हिदायत । उ. तद्भव

हिन्दू/हिन्दू-सं., भारतीय सनातन धर्म मानैवाला जाति । मै.

हिनक/हिनकर-निश्चयवाचक सर्व., ई शब्दक सम्बन्धकारक । मै.

हिनका-निश्चयवाचक सर्व., ई शब्दक कर्मक रूप । मै.

हिनस्ताइ-सं., हीनता, नीचता । मै.

हिनहिनाएब-क्रि., घोड़ाक बाजब । मै.

हिनि-निश्चयवाचक सर्व., (आदर मे) ई शब्दक कर्त्तक रूप । मै.

हिनुआन-विशे., घटिया, दब, हीन। मै.
हिप्पी-विशे., पश्चिमी देशक विचित्र वेशभूषावाला युवक सम्प्रदाय। मै.
हिकाजति-सं., संयम, सेवा, परिचर्य्या। उ. तद्भव
हिम्मति-सं., साहस। उ. तद्भव
हिम-सं., पाला बर्फ। सं. तत्सम
हिमालय-सं., सर्वोच्च पहाड़। सं. तत्सम
हिय/हिया-सं., हृदय, अन्तःकरण। मै.
हियाओ-सं., काज सम्पादन करैक साहस। मै.
हियाएब-क्रि., अनुमान द्वारा निश्चित करब। संकल्प विकल्प सँ विचारि स्थिर करब। मै.
हियाओ टटब-क्रि., काज करैक साहस बटोरब। मै.
हियाहारब-क्रि., अत्यन्त निराश रहब। मै.
हिरामनि-सं., सुगाक प्रभेद। मै.
हिलकोर-सं., तरङ्ग, पानिक हेउ। मै.
हिलकोरब-क्रि., कृत्रिम तरङ्ग जगाएब। मै.
हिलडोल-विशे., अपन स्थान पर अस्थिर। मै.
हिलब-क्रि., अपन स्थान पर अस्थिर भ' क' रहब। मै.
हिलम डोलम-सं., अस्थिरता। मै.
हिलमिल कय रहब-क्रि.,परस्पर हित कामना करैत रहब। मै.
हिलरब-क्रि., सूप सँ अन्नक दाना चलाकय फरिछ करब। मै.
हिलस-सं., नेहन्ता, तृष्णा भरल लोभ। मै.
हिलस लागब-क्रि., मन लोभाएब। मै.
हिलसा-सं., माछ विशेष। मै.
हिलहिल करब-क्रि., अपन स्थान पर अस्थिर रहब। मै.
हिलाएब-क्रि., अस्थिर राखब, डोलाएब। मै.
हिलुआ-विशे., १. हिलैवाला। २. मन सँ मिलल रहैवाला, सब काज मे सहयोगी। मै.
हिलोर-सं., जलक उथल पाथल होइक क्रम। मै.
हिलोरब-क्रि., (लाक्षणिक) हूनू हाथेँ अपन इच्छानुसार कानक वस्तु कें उठा उठाकय अपन अधिकार मे करब। मै.
हिस्सा-सं., बखरा, अंश। उ. तत्सम
हिसब-सं., स्वाभाविक अभ्यास, प्राकृतिक नति। मै.
हिसाब-सं., लेखा, गणित। सं. तत्सम
हिसाबी-विशे., हिसाब जनैवाला, गणितज्ञ। उ. तत्सम
हिँहिँयाएब-क्रि., अनेर उद्दण्ड जकाँ हीँ हीँ कय कें विकट हुसब। मै.

ही

ही-सं., अन्तरात्मा, अन्तःकरण। मै.
हीँक-सं., हिचकी, दम उपर उठैत रहैक क्रम। मै.
हीङ-सं., हिंगु, तीमन कें स्वादिष्ट आ सुपच करैवाला मसाला विशेष। मै.
हीङराइ-अव्यय, शुभ अवसर पर लोकक अधलाह भावना नष्ट करैले उच्चारणीय शब्द। हीङक संग गोट। मै.
हीङ सँ हरदि-सं., सम्पूर्ण मसालाक छोट पैघ सब वस्तु। मै.
हीङबोरा-विशे., शुभ अवसर पर लोकक कुदृष्टि सँ बचबैले आ अनिष्ट भावनाक प्रभाव रोकैले टोना रूपेँ हीङ घोरि कय छीटल जाइवाला पात्र। मै.
हीँछब-क्रि., कोनो विषय वा काज मे भाव भङ्गी सँ नकारब, नै सकारब। मै.
हीड़-सं., बीचक सबकल आधार। मै.
हीन-विशे., नीच, त्रुटिपूर्ण, रहित। सं. तत्सम
हीनता-सं., नीचता, शून्यता, कमी। सं. तत्सम
हीबा-सं., साहस एवं उदारतापूर्ण उत्साह। मै.
ही भरब-क्रि., हृदय सन्तुष्ट करब। मै.
हीया-सं., १. अबोध बच्चा कें गाइक परिचय देबाक शब्द। २. हृदय। मै.
हीया सालब-क्रि., अपन वस्तु के अनका उपभोग मे देखि भीतरेँ भीतर सन्ताप होएब। मै.
हीरा-सं., रत्न। मणिवाला पाथर। मै.
हीरी-सं., हीरा के कटैवाला पाथर। मै.
हीहक-विशे., अधिक उपेक्षा निराशा सँ साहसहीन। निराश हृदय। मै.

हु

हुँः-अव्यय, विचार, उपहास, विस्मय व्यञ्जक। मै.
हुँआँ-अव्यय, गीदड़ बजैक ध्वनि। मै.
हुक्का-सं., सकल साधारणक धूम्रपान करैक काठक यन्त्र। नारिकेरवाला। मै.

हुँकड़ब-क्रि., गैक दीनता मे बाजब । मै.

हुँकना-सं., बसात उत्पन्न करैक पंखा, बीयनि वा आन कोनो साधन । मै.

हुँकब-क्रि., कोनो वस्तु सँ बसातक वेग कें जगाएब । मै.

हुकडुक करब-क्रि., मन्द श्वास प्रश्वास सँ जीवैक लक्षण मात्र होएब । मै.

हुँकहुँका-सं., निरन्तर पंखा सँ बसात जगबैत रहैक क्रम । मै.

हुकडुकाएब-क्रि., मन्द श्वास प्रश्वास सँ जीवैत रहब । मै.

हुकहुकी-सं., क्षीण होइत श्वास प्रश्वास सँ मुमुर्षुता । मरैक लक्षण । मै.

हुँकाएब-क्रि., ताप मेटयबा ले मनका द्वारा बसात जगाएब । मै.

हुँकार-सं., हूँ हूँ उच्चारण । मै.

हुँकार-सं., तर्जन करैवाला शोर्यक शब्द । सं. तत्सम

हुकारी-सं., अधिक थाकनि सँ मुहु सँ बहार कयल जाइत हू हू शब्द । मै.

हुँकारी भरब-क्रि., अबोध (छ मसिया) शिशुक हूँ हूँ शब्द होएब । मै.

हुच्ची-सं., उठ बैसवाला छोट छोट अनेक काजक समूह । मै.

हुज्जति-सं., निन्दा योग्य झमेल । मै.

हुड्ड-विशे., जिद्दी परम मूर्ख । मै.

हुड्डा-सं., साँतवाला गणितक एक भेद । प्रयोग– "एक हुड्डू साढ़े तीन दू हुड्डू सात आदि ।" मै.

हुड्डु-विशे., विचार आ तर्क शून्य मूर्ख । मै.

हुड-सं., यान्त्रिक गाड़ीक आगू भाग । अं. तत्सम

हुड़कब-क्रि., एकाएक ककरो पर तामसेँ गर्जन करैत छूटब । मै.

हुड़काह-विशे., हुड़कि उठैक स्वभाववाला । मै.

हुड़दंग-सं., उन्मुक्त रूपेँ उद्धत खेल । मै.

हुड़दुल्ल-सं., उद्दण्डतापूर्वक उपद्रावी खेल । मै.

हुड़दुल्ली-विशे., उपद्रव भरल उद्दण्ड खेल कयनिहार । मै.

हुड़हुड़ाएब-क्रि., पेटक विकार सँ विकृत शब्द होएब । मै.

हुण्ड-विशे., बिना आगू पाछू सोचि ध' तननिहार मूर्ख । मै.

हुण्डा-सं., एकैठाँ अनुमानित वस्तु । मै.

हुण्डी-सं., निश्चित जमा धनक राशि । निश्चित आयक पारम्परिक स्रोत । मै.

हुतकार-सं., बारम्बारक प्रेरणा । मै.

हुतकारब-क्रि., बारम्बार प्रेरणा करब । प्रयोग– "हुन तँ कहन सँ ने बचनू कें पहिले हुतकारै छिथैन ।" मै.

हुथवाहि-सं., एकै बातक हेतु बारम्बार नीच बनबैक प्रक्रिया । दुर्गति सँ दण्ड । मै.

हुथलोक-विशे., बिना गजने बात ने सुननिहार ने बुझनिहार । मै.

हुथाएब-क्रि., गञ्जन कराएब । मै.

हुथान हुथब-क्रि, अपराध पर अत्यधिक दुर्गति सँ गञ्जन । मै.

हुथारब-क्रि., बिन कारणोँ गञ्जन करब । मै.

हुथियाएब-क्रि., बिन दोषोँ दोष मढ़िकय गञ्जन करब । मै.

हुदुक्का मारब-क्रि., दूध पीबैक काल थन मे गाइक नेरुक मुहु सँ ठोकर देब । मै.

हुदबुदी बैसब-क्रि., चिन्ता अन्देसा सँ शंका आ व्यग्रता जागब । मै.

हुनक|हुनकर-निश्चयवाचक सर्व., ओ शब्दक सम्बन्धकारकक रूप । मै.

हुनका-उपर्युक्त सर्व., कर्मकारकक रूप । मै.

हुनि-निश्चयवाचक सर्व., कर्ताक रूप । मै.

हुबास-सं., प्रसन्नता एवं प्रफुल्लता । मै.

हुमचब-क्रि., झोंक सँ जोर लगाएब । मै.

हुमड़ब-क्रि., गम्भीर ध्वनि होएब । मै.

हुमना-सं., भारी काठक मारैवाला मुङरन । मै.

हुमहुमा-सं., समाजक मन मे उठल तनाओ । मारि झगड़ाक तनातनी । मै.

हुमेला-सं., एकै काल अनेक काज क' लैक व्यग्रता । मै.

हुरे होएब-क्रि., बड़ो दिन तुरन्त पैंचा गेला सँ शून्य होएब । मै.

हुरकी मारब-क्रि., गुवाकय देह छोट बनौने जोर सँ भागि जाएब । मै.

हुरधुर करब-क्रि., अति अगुताएल काज करब । मै.

हुरधुराएब-क्रि., आपत्तिक सम्भावना बिन सोचनैं अत्यन्त हड़बड़ी सँ काज करब । मै.

हुरपेटब-क्रि., मालजालक सिंग सँ मारैक चेष्टा करब । मै.

हुरबरेरा मचब-क्रि., आवड़ आ अन्देसा सँ हलचल मचब । मै.

हुरमारि-विशे., हुरा हुरी करैवाली मैं महिस । मै.

हुरहुर-सं., मसालाक दानावाला झार विशेष । मै.

हुरहुरी पैसब-क्रि., आवड़ू होएब । मै.

हुराह-सं., (लाक्षणिक) अधिक भोजन करैक क्रम । मै.

हुराएब-क्रि., कोनो वस्तुक जड़ि कें मजगूत करा-एब । मै.

हुराठ-सं., १. मोट लाठीक निचला भाग । २. कोनो वस्तुक जड़ि कें मोट वस्तुक द्वारा माटि कसिकय ठोकैक चेष्टा । मै.

हुराठी-सं., पूर खोरैक लेल छोट मोट डन्टा । मै.

हुराड़-सं., भेड़िया, हिंसक पशु विशेष । मै.

हुरान हुरब-क्रि., खुट्टा खाम्हक जड़ि मे माटि कसि अत्यन्त मजगूती सँ ठोकब । मै.

हुरिया लेब-क्रि., (लाक्षणिक) बल सँ संघर्ष करब । मै.

हुलक बैसि जाएब-क्रि., दीर्घकालक हेतु मन मे चिन्ता अन्देशा आदङ्ू जमल रहब । मै.

हुलकी-सं., गर मे बैसै जोग तथा असावधानी मे चोट लगैवाला उपल अंग । मै.

हुल्लड़-सं., अधिक लोकक एकैठाँ व्यग्रता भरल चंचलता । मै.

हुल्लड़बाजी-सं., बल सँ हुल्लड़ करैक प्रवृत्ति । मै.

हुलकब-क्रि., छिपिकय देखैक चेष्टा करब । मै.

हुलकाएब-क्रि., ककरो पर पीड़ित करैक हेतु प्रेरित कय उत्तेजित करब । मै.

हुलकाह-विशे., अनेर लोक पर छूटैक प्रकृतिवाला । (कुकुर आदि) । मै.

हुलकी देब-क्रि., देखू—"हुलकब" । मै.

हुलकीआ-विशे., लोक पर हुलकैक स्वभाववाला । मै.

हुलला-विशे., परद्वार मे तुरन्त घुसि जाइवाला । मै.

हुलबुल करब-क्रि., कोनो विशेष क्रियाक बीच कनहि एम्हर कनहिं ओम्हर सँ पहुँचैक चेष्टा राखब । मै.

हुलसब-क्रि., प्रफुल्लित होएब । मै.

हुलहुल करब-क्रि., जेम्हर तेम्हर सँ बारम्बार घुसैक चेष्टा करब । मै.

हुलाएब-क्रि., समूह कें एकै बेर घुसाएब । मै.

हुलाक-विशे., बिन सोचने निडर भेल जखन तखन परद्वार मे घुसि जाइवाला । मै.

हुलान-सं., समूहक एकै बेर प्रवेश । मै.

हुलास-सं., आन्तरिक प्रसन्नता । मै.

हुलुक बुलुक करब-क्रि., छिपकय देखैक चेष्टा करब । मै.

हुसाएब-क्रि., निशाना चुकाएब । मै.

हुँहु-अव्यय, कोनो बात पर स्वीकार ध्वनि । मै.

हुँहकारी भरब-क्रि., खिस्सा (लोककथा) सुनैक काल बीच बीच मे हुँ हुँ करैत रहब । मै.

हुँहुआब-क्रि., छमसिया नेनाक हुँ हुँ ध्वनि करब । मै.

हुहुआ उठब/हुहुआएब-क्रि., तामसक वेग मे एका-एक गरजि उठब । मै.

हू

हूँ-अव्यय, स्वीकार, तर्क आ निषेध । मै.

हूक-सं., दू वस्तु कें जोड़ै (पकड़ै) वाला तार वा लोहक बनल कड़ी । अं. तत्सम

हूक पैसब-क्रि., वात रोगक प्रभावें अंग (डाँर, पीठ आदि) अंग मे पीड़ा आ असमर्थता होएब । मै.

हूकब-क्रि., लक्ष्य चूकब । मै.

हूति करब-क्रि., मानब, ध्यान देब, आस्था राखब । प्रयोग—"कती काल सँ विद्यालय जाइ लै कहै छिऐन मुदा बूचन एकोरत्ती बातक हूति नै करै छथि।" मै.

हूथ-सं., दीर्घ काय पाथर आ काठ आदिक बेढरेब भारी ढेंढ़ । मै.

हूबब-क्रि., दोष कें आनु राखि गंजन करब । मै.

हूचर-विशे., दुःपवाहि सुनियोजित निश्चिन्त रहैवाला । मै.

हुचौड़ा-सं., सीजल मथल भोजन पदार्थ । मै.

हुचौआ-विशे., पेड़ आ दूध आदि, सारभाग निचोरल पदार्थ । मै.

हुमाहुमी-सं., दू दल मे संघर्ष फूटैक स्थिति । मै.

हूर-सं., १. लाठी ठेङाक निचला भाग । माटि कसिकय सक्कत करैक विधि चेष्टा । मै.

हूरनि-सं., दरी (जड़ि) मे माटि द' क' सक्कत बनबैक क्रम । मै.

हूरब-क्रि., दरी (जड़ि) मे माटि आदि द' क' ठोकि कय जड़ि सक्कत करब । मै.

हूराहूरी-सं., पर्व विशेष, सुखरात्रिक प्रात सींग द्वारा सुगरक बच्चा कें मारैक खेल । मै.

हूरि लेब-क्रि., बल सँ झगड़ा मोल लेब । मै.

हूलब-क्रि., एकाएक बिन सूचनाक प्रवेश क' लेब । मै.

हूलि-सं., अनेक काजक व्यग्रता । मै.

हूलि मचाएब-क्रि., एकै संग अनेक काजक पूर्ति करैक प्रयास करब । मै.

हूलिमालि-सं., अनेक काजक व्यग्रताक बीच नव काजक उपस्थिति आ अनेक काज सम्पादन करैक स्थिति । मै.

हूलिमे हुलामय-सं., अनेक काजक स्थिति मे नव नव काजक व्यग्रता । मै.

हूले-अव्यय, कोनो जीव पर कुकुर कें उकस'बैक शब्द । मै.

हूलेलेलै-अव्यय, बिना सोचने विचारने लोकक कहला पर । मै.

हूले हूले-अव्यय, देखू—"हूले" । मै.

हूलौआ-विशे., बिन कहने सुनने समूह (झुण्ड) कें एकाएक घुसा दैवाला । मै.

हूसब-क्रि., अवसर आ निशान चूकब । मै.

हूस होएब-क्रि., छोट आ कम होएब । मै.

हू हा-अव्यय, नेन्ना कें कड़ू (मेरिचाइ) क स्वादक परिचय । प्रयोग—"ई नै खाइ ऐ मे हूहा छै ।" मै.

हूँ हाँ करब-क्रि., १. छ मास धरि शिशुक मुहक ध्वनि होएब । २. स्वीकृति अथवा निषेधक शब्द कहब । मै.

हू हू करब-क्रि., शब्द मय अत्यन्त चंचल वेग होएब । मै.

हू हू गाड़ी-सं., (बच्चाक हेतु) रेलगाड़ी । मै.

हृ

हृदय-सं., जीव मात्रक सम्वेदनशील सूक्ष्म शरीरक एक अंग । सं. तत्सम

हृष्ट पुष्ट-विशे., शरीरें भरल । सं. तत्सम

हे

हे -अव्यय, सम्बोधनक चिह्न । मै.

हे आ-अव्यय, मालजाल कें जल पिअ'बैक शब्द । मै.

हे इयै-अव्यय, स्त्री जातिक सम्बोधन । मै.

हे औ-अव्यय, पुरुष जातिक सम्बोधन । मै.

हेंक-सं., माल मेसी चलैक कारणें थाल पानि सँ अत्यन्त ढील कादो । मै.

हेंकब-क्रि., गदहाक बाजब । मै.

हें`कल-सं., गरांक गहना विशेष । मै.

हेंका-सं., १. गदहाक शब्द । २. अत्यन्त ढील पैर धँसैवाला बाटक कादो । मै.

हेंकामय-सं., दूरधरि पसरल बाटक कादो । मै.

हेंकार करब-क्रि., पानि हेराकय कादो करब । मै.

हेंगा-सं., हरक संग जोतल खेत के सरिअ'बैवाला चौकी, पाटा । मै.

हेंज-सं., झुण्ड, समूह । मै.

हेजा-सं., रद्द दस्तवाला मरकी (महामारी) । मै.

हेठ-अव्यय, नीचाँ । मै.

हेठ करब-क्रि., नीचाँ उतारब । मै.

हेठपन-सं., नीचता । मै.

हेठानी-सं., नीचाँ दिशुक भूमि । मै.

हेठी उतारब (झारब)-क्रि., (लाक्षणिक) नीचताक दण्ड देब । मै.

हेड़-सं., एक मतक दल । मै.

हेड़गर-विशे., अधिक पैघ दलवाला । मै.

हेड़िया-विशे., दलक लोक । मै.

हेन्ज-सं., विभिन्न मतवाला दलक समूह । मै.

हेतु-सं., कारण, निमित्त, लेल । सं. तत्सम/मै.

हेतुक-विशे., हेतु (कारण) वाला । सं. तत्सम

हेल्लय-अव्यय, एम्हर । (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.

हेबनि-अव्यय, निकट भूतकाल मे । मै.

हेमछेम-सं., आवरजात, अधिक मिलान, अभिन्नता । परस्पर सहयोगक भावना । आपकता । मै.

हेमती-सं., धाड़ (कपास) क प्रभेद । मै.

हेमन्त-सं., ऋतु विशेष, प्रारम्भिक जाड़ । मै.

हेमनचल-विशे., अत्यन्त ठन्ढा । मै.

हेमन जिस्ता-सं., औषध आ मसाला कूटैवाला लोहक उक्खरि मुस्सर (खल) । मै.

हेमाल-विशे., १. मेही जोतल माटिवाला खेत । २. ठन्ढा । मै.

हेय-विशे., त्यागैक जोग । सं. तत्सम

हेय बुद्धि-सं., उपेक्षाक भावना । सं. तत्सम

हेयौ-अव्यय, पुरुषक सम्बोधन । मै.

हेर-सं., दृष्टिपात । मै.

हेरखन भेरखन-सं., अन्नक दानाक संग मिलल दूषित पदार्थ । मै.

हेरफेर-सं., स्थान परिवर्तन । मै.

हेरब-क्रि., ध्यान द' क' देखब, दृष्टिपात करब । मै.

हेराएब-क्रि., १. असावधानी मे वस्तुकेँ नष्ट करब / होएब । २. उझिलब बसा देब । मै.

हेराफेरी-सं., एम्हर सँ वस्तु ल' क' ओम्हर रखैक ल' जाइक क्रम । मै.

हे रे-अव्यय, नीचक प्रति सम्बोधन । मै.

हेरौ-अव्यय, नीचक प्रति सम्बोधन । मै.

हेलक्कर-विशे., अधिक हेलैक अभ्यासवाला । मै.

हेलब-क्रि., पानि पर अनगले ससरब । मै.

हेलमा बेलमा होएब-क्रि., अनादरणीय उपेक्षणीय होएब । मै.

हेला-विशे., मेहतर जाति । मै.

हेलाएब-क्रि., १. पानिक विशेषता करब । २. पानि मे बहाएब । मै.

हेलाओ-विशे., हेलैक स्थितिवाला । मै.

हेलान हेलब-क्रि., कसिकय यथेष्ट हेलब । मै.

हेलि जाएब-क्रि., दुर्बल भ' जाएब । मै.

हेहर-विशे., मना कयलौं पर नहि मानैवाला, मना कयलौ उत्तर वैह काजक जिद् रखैवाला । मै.

हेहरपना-सं., अपने मनें जिद् कय अड़ल रहैक स्वभाव । मै.

हे है-अव्यय, नीच स्त्रीक प्रति सम्बोधन । मै.

हे हौ-अव्यय, नीच पुरुषक प्रति सम्बोधन । मै.

है

है:-अव्यय, कोनो बात केँ निवारणक ध्येय सँ कटैक शब्द । मै.

है-अव्यय, १. नीच स्त्रीक सम्बोधन । क्रि., २. अछि । सं., ३. आवागमन रहैक द्वारें उपद्रव । प्रयोग-१. "है दाइ ।" २. "ऐ जन लोक सुखी है ।" ३. "मालक हैक द्वारें ऐ खेत मे अजात नै होइ छै ।" मै.

हैठा-सं., रिट्ठा फलक पैघ कारी दाना । मै.

हैठी-सं., छोट दाना । मै.

हैँब-क्रि., होइक क्रिया । मै.

हैया रे हैया-अव्यय, जोर लगबैक शब्द । मै.

है रे है-अव्यय, उपहास निन्दाक शब्द । मै.

हैसो-अव्यय, जोर लगबैक शब्द । प्रयोग–"लगे जोरा हैसो ।" मै.

हो

होइछ/होइ अछि/होइत अछि-क्रि., हुयबाक क्रिया । मै.

होएब-क्रि., होइक क्रिया । मै.

होठ-सं., उपरका ठोर । मै.

होड़ करब-क्रि., समान रूपेँ ठठब, प्रतियोगिता करब । मै.

होडाचक्र-सं., ज्योतिषक नक्षत्रक चरण ज्ञान करैवाला कोष्ठ । सं. तत्सम

होत सँ होता होएब-क्रि., नीक होइक ध्येय सँ कयल क्रिया सँ अनिष्ट भ' जाएब । मै.

होनहार-विशे., भवितव्य मे नीक होइवाला । उन्नतिशील । मै.

होनिहारी-सं., भावी । मै.

होनी-सं., अदृष्ट, भवितव्यक भाग्य । मै.

होम-सं., यज्ञक समय अग्नि मे आहुति । सं. तत्सम

होरिल-विशे., नवजात शिशु, अनाम बच्चा । मै.

होरी-सं., होलिका, फगुआक पर्व । मै.

होल-सं., बीचक शून्यता, छिद्र जकाँ खोंखलापन । मै.

होलिका-सं., होरी पर्व । सं. तत्सम

होश-सं., ज्ञान ध्यान भरल बुद्धि । उ. तत्सम

होसगर-विशे., सुधि बुधिवाला, बुझनुक । मै.

होसियार-विशे., सजग सावधान लोक । उ. तत्सम

होसियारी-सं., सावधानी, सतर्कता । उ. तत्सम

होहकार-सं., पशु सब केँ भगबैक लेल होहो शब्द । मै.

होहकारब-क्रि., हो हो शब्द क' क' उपद्रावी पशु कें भगाएब। मै.

होहकारा देब-क्रि., देखू—"होहकारब"। मै.

हो हा होएब-क्रि., विशेष उत्सव आदि मे लोकक चंचलतापूर्ण कोलाहल करब। मै.

होहियार-विशे., आनक खेत पथार आ गाछी बिरछी सँ अन्न आ फल बटोरैवाला। मै.

होहियारी-सं., होहियारक काज। मै.

होहियाह-विशे., साधारणो बात पर बिन कारणों उत्तेजित भ' क' बजनिहार। मै.

हो हो-सं., १. हल्ला गुल्ला। २. लोकगीत वा कीर्तन गानक बी दैवाला भनिता। मै.

हौ

हौ -अव्यय, छोटक प्रति सम्बोधन। मै.

हौआ-सं., अदृश्यक भयावह वस्तु। मै.

हौआएब-क्रि., तरंग उठै भ' क' कुड़ियाएब। मै.

हौंकब-क्रि., (लाक्षणिक) १. एक दिसाहे तकैं द' क' अपन बड़प्पन बर्जैत जाएब। २. बसात गति पर सुहाह क' देब। ३. पंखा आदि सँ बसात करब। मै.

हौज (द)-सं., पानि रखैक कृत्रिम छोट जलाशय। अं. तत्सम

हौँड़ब-क्रि., आलोड़न विलोड़न होएब। मै.

हौदा-सं., हाथीक पीठ परक आसन। उ. तत्सम

हौँन-क्रि., अछि, छौह। मै.

हौक होएब-क्रि., आन्तरिक क्रोध भरल रहब। मै.

हौफाएब-क्रि., भीतरें भीतर तमसाएब। मै.

हौल पैसब-क्रि., डर, आदङ्क अन्देशा होएब। मै.

हौला-विशे., हल्लुक। मै.

हौलि हौलि-अव्यय, धीरें धीरें। मै.

हौसाएब-क्रि., असन्तोष सँ सेवाक चेष्टा करब। मै.

हौहड़ि-सं., खुजली कुड़ियैनी रोग। मै.